

साहित्य भवन पब्लिकेशन्स

आधुनिक पश्चिम का उदय

The Rise of Modern West

(1453 ई. से 1789 ई. तक)

डॉ. ए. के. मित्तल

आधुनिक पश्चिम का उदय

(THE RISE OF MODERN WEST)

(1453 ई. से 1789 ई. तक)

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
बी.ए. प्रथम वर्ष (द्वितीय प्रश्न-पत्र) हेतु

डॉ. ए. के. मित्तल
डी. लिट्.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
संशोधनकर्ता
डॉ. आर. अग्रवाल
पी. एच. डी.

2013



साहित्य भवन पब्लिकेशन्स : आगरा

Code : 2249 **Price : ₹ 175.00**

First Edition

Paper—Superior Quality

Printed and Published by



SAHITYA BHAWAN PUBLICATIONS

HOSPITAL ROAD, AGRA-282 003

Tel. : 0562-4058468, 4030565; Fax. : 0562-2851568

Email : sales.sbp1960@gmail.com; info.sbp1960@gmail.com

भूमिका

■ आधुनिक पश्चिम के उदय, का अध्ययन करना सम्पूर्ण मानव समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। पुनर्जागरण मानव-इतिहास की एक प्रमुख घटना थी। इसने न केवल रूढ़िवादी परम्पराओं व पुरातन व्यवस्था का विरोध किया वरन् जनसाधारण में तार्किकता का विकास किया। **पाश्चात्य जगत में निरंकुशवाद का विरोध तथा भ्रातृत्व, स्वतन्त्रता व समानता के लिए संघर्ष आधुनिक युग की विशेषताएं थीं।** उल्लेखनीय है कि पाश्चात्य जगत के देशों में जहां एक ओर स्वतन्त्रता व समानता की भावनाएं प्रबल हो रही थीं, वहीं दूसरी ओर उन्हीं देशों द्वारा अफ्रीका व एशिया को साम्राज्यवादिता का शिकार बनाया जा रहा था। स्वतन्त्रता की भावनाओं व साम्राज्यवादी नीतियों का यह पारस्परिक संघर्ष न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से वरन् आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, अतः इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

■ **पुस्तक पूर्णतया नवीन एकीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की गई है। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए मानचित्रों द्वारा विषय को समझाने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक अध्याय से सम्बन्धित लघु एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी पुस्तक में दिए गए हैं।**

■ पुस्तक की भाषा सरल एवं परिमार्जित है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद होगी।

■ अन्त में, मैं पुस्तक के प्रकाशक श्री के. एल. बंसल का आभार व्यक्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूं, जिनके सतत् प्रयत्नों से पुस्तक का समय से प्रकाशित होना सम्भव हो सका।

लेखक

NEW SYLLABUS

B. A. Part-I

Paper : Second

THE RISE OF MODERN WEST (1453-1789)

Unit-1

(i) Renaissence—Causes and Features.

(ii) Reformation—Causes and upshots, Martin Luther, Calvin.

(iii) Counter Reformation—Jesuit Society and other agencies.

(iv) Rise and decline of Spain.

Charles V, Philip II.

Unit-2

(v) Thirty year's war—Cause, expansion and consequences.

(vi) France—Henry IV, Rechelieu, Mazarine and Louis XIV.

(vii) The age Enlightened despotism. Frederick the great.

(viii) Russia—Peter the great and Catherine II.

Unit-3

(ix) England—Struggle between the Parliament and the first two Stuart Rulers, Growth of cabinet system and Industrial Revolution.

(x) Austria—Maria Theresa and Joseph II.

Unit-4

(xi) The war of Austrian Succession.

(xii) The seven year's war.

(xiii) Division of Poland.

(xiv) France on the eve of French Revolution.

विषय-सूची

1

पुनर्जागरण
[RENAISSANCE]

पुनर्जागरण से तात्पर्य
(MEANING OF THE RENAISSANCE)

नवयुग के अवतरण की सूचना देने वाला तथ्य पुनर्जागरण था।[1] पुनर्जागरण को प्रायः **'पांडित्य के पुनः उदय'** का नाम भी दिया जाता है। प्राचीन काल में आर्य संस्कृति के समान यूनानी तथा लैटिन संस्कृतियां भी महान् समझी जाती थीं। मध्यकाल[2] में यूनानी तथा लैटिन साहित्य को भुलाकर यूरोप की जनता अन्धविश्वासों में पड़ गयी थी, उसमें निराशा की भावना एवं उत्साहहीनता ने जन्म ले लिया था। यूनानी एवं लैटिन साहित्य का अध्ययन यद्यपि मध्य युग में होता था, परन्तु वह मध्ययुगीन पूर्वगृहीत धारणाओं पर आधारित होता था। **मध्य युग के समान अधिकांश बातों को प्राचीन युग में बिना आलोचना तथा विवाद के स्वीकार नहीं किया जाता था। इसी तथ्य को आधुनिक युग में स्वीकार किया गया तथा पुनर्जागरण को मानव इतिहास में इतना महत्वपूर्ण बनाने का श्रेय भी, मुक्त समीक्षा तथा स्वीकृत परम्परागत विचारों की परीक्षा के उपरान्त, उनका अनुसरण करने की भावना के उत्पन्न होने को है।**[3] अत: इस पुनर्जागरण के समस्त यूरोप में विचारों में क्रान्ति उत्पन्न हुई। जनता का जीवन के प्रति मोह उत्पन्न हुआ। सांसारिक सुखों ने भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। पुनर्जागरण से मध्ययुगीन आडम्बरों, अन्धविश्वासों एवं प्रथाओं को समाप्त किया तथा उसके स्थान पर व्यक्तिवाद, भौतिकवाद, स्वतन्त्रता की भावना, उन्नत आर्थिक व्यवस्था एवं राष्ट्रवाद को प्रतिस्थापित किया। **फर्गूसन** तथा ब्रून ने लिखा है—**''पुनर्जागरण का युग महत्वपूर्ण परिवर्तनों का युग था, जिसमें बहुत कुछ मध्यकालीन था, कुछ स्पष्टतः आधुनिक तथा कुछ स्वयं में विशिष्ट था। इसने मध्य एवं आधुनिक युगों के बीच के रिक्त स्थान को पाट दिया, परन्तु इसके साथ ही यह महान् राजनीतिक, सामाजिक**

1 रेनेसां शब्द फ्रांसीसी भाषा का है जिसका अर्थ पुनर्जन्म अथवा पुनर्जागरण होता है। रेनेसां शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग इटली के एक लेखक वैसारी ने भवन-निर्माण व मूर्ति कला में हुए परिवर्तनों के लिए किया था। कालान्तर में फ्रांसीसी विद्वान दिदरो ने नवीन साहित्य एवं कला के लिए इस शब्द का प्रयोग किया।

2 यूरोप एवं पश्चिमी देशों में मध्य युग सामान्यतया 500 ई. से पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक माना जाता है।

3 "But the essence of Renaissance, and what makes it so important in human history, is the free criticism, the testing of accepted traditional ideas, to which it led." —*Ramsay Muir*

एवं बौद्धिक जागृति का सांस्कृतिक काल था।"[1] इसी प्रकार रॉबर्ट इरगेंग ने पुनर्जागरण के विषय में लिखा है, "सांस्कृतिक पुनरुत्थान की कोई एक परिभाषा नहीं दी जा सकती।......सीमित रूप से इसका अभिप्राय उन विशेष सांस्कृतिक परिवर्तनों से है जो 1300 ई. से 1600 ई. के मध्य हुए थे।"[2] डेविस ने पुनर्जागरण की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है, **"पुनर्जागरण शब्द मनुष्य की उस वैचारिक स्वतन्त्रता और साहस का द्योतक है जिसे मध्य युग में धार्मिक ठेकेदारों ने कैद कर रखा था।"**[3]

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं
(SALIENT FEATURES OF RENAISSANCE)

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थीं—

1. मानववाद (Humanism)

इतिहासकार हेज के अनुसार, **"नवजागरण की प्रस्तुति मानवतावाद द्वारा हुई।"**[4] 'मानववाद' का तात्पर्य उन्नत ज्ञान से लिया जाता है। दूसरे शब्दों में, मानववाद वह धारणा थी जिसने एक ओर तो प्राचीन साहित्य में ही सभी गुण, मानवता, माधुर्य, सौन्दर्य एवं जीवन का वास्तविक सार देखा, वहीं दूसरी ओर आध्यात्मिकता, वैराग्य एवं धर्मशास्त्रों की सार्थकता से स्पष्ट इन्कार कर दिया। इस धारणा को स्वीकार करने वाले मानववादी कहलाए। **प्राचीन यूनानी सभ्यता एवं संस्कृति का पक्षपाती पैट्रार्क** (Petrarch) **मानववाद का पिता** (Father of the Humanism) **कहा जाता है।** माइकेल ऐंजेलो, दोनातेलो, मैकियावेली, फेचिनोपोलिशियन, पेरुजिनो, लियोनार्डो द विंची, ल्यूका देल्ला रोबिया, फ्रा फिलिप्पो लिप्पी, सैंड्रो बातिचेली, दान्ते एवं अलबर्टी आदि पुनर्जागरण काल के अन्य प्रमुख मानववादी थे। इन मानववादियों ने तत्कालीन समाज की प्रमुख समस्याओं पर कड़ा प्रहार किया। मध्ययुगीन विचारधारा में धर्म एवं धर्म की आड़ पर अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों का बाहुल्य था, जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष होने के कारण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु धर्म ग्रन्थों का अध्ययन था। ऐसी स्थिति में स्वतन्त्र चिन्तन का विकास अवरुद्ध हो गया था।

मानववादियों ने मध्ययुगीन व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई और **धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास एवं भूगोल जैसे विषयों के अध्ययन-अध्यापन पर बल दिया, संयोग-वियोग, प्रेम-घृणा, नारी सौन्दर्य एवं दाम्पत्य जीवन जैसी सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों को अधिक महत्व दिया न कि मोक्ष को।** मानववादियों ने इहलोक को ही स्वर्ग बनाने

1 "The age of the Renaissance was an age of chaotic change, in which there was much that was still medieval, much that was recognizably modern, and much also that was peculiar to itself. It bridged the gap between the high middle ages and modern times, but it was also a cultural period in its own right, filled with a great political, social and intellectual ferment." —*Ferguson & Bruun*

2 "The world Renaissance used as a historical concept, admits of no simple definition......In a more limited sense the term is used to denote certain cultural changes which look place, broadly speaking during the centuries from 1300 to 1600." —Robert Ergang—*Europe from the Renaissance to Waterloo.*, p. 40.

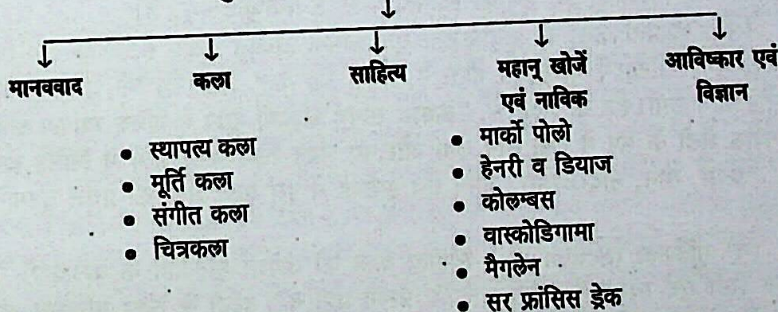
3 "The word 'Renaissance signifies the rebirth of the freedom loving adventurous thoughts of man, which during the middle ages, had been fettered and imprisioned by religious authority." —*An outline History of the world*, p. 384.

4 "New Learning was attended by 'Humanism" —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 99.

पर जोर दिया। मानव-स्वतन्त्रता एवं राष्ट्रीय निष्ठा पर बल दिया। यह उल्लेखनीय है कि 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक मानववादी आन्दोलन का प्रबल ज्वार इटली में था। इसका सबसे प्रमुख कारण यह था कि इस समय इटली में शान्ति एवं सुव्यवस्था थी। दूसरी ओर जब पूर्वी यूरोप एवं कुस्तुन्तुनिया पर तुर्कों का आधिपत्य स्थापित हो गया तो वहां से अनेक विद्वान, विद्यार्थी एवं अध्यापक, कलाकार आदि भागकर इटली आ गए और **शीघ्र ही इटली का प्रसिद्ध नगर फ्लोरेंस मानववादी आन्दोलन का गढ़ बन गया।**

मानववादियों के भरसक प्रयत्नों से मध्ययुगीन व्यवस्था की दीवारें हिलने लगीं। इटली के सभ्य एवं सुसंस्कृत वर्ग ने प्राचीन साहित्य एवं कला का अध्ययन जीवन का आवश्यक अंग बना लिया। लोगों के हृदय में लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रति जो धारणाएं मध्यकाल से चली आ रही थीं उनके प्रति आस्था समाप्त हो गई। मठों की क्रियाओं को हास्यास्पद समझा जाने लगा। भौतिकवादी शिक्षा को सम्बल मिला। हेज के अनुसार, **"विश्वविद्यालयों में ग्रीक-इतिहास का परिचय दिया जाने लगा।"**[1] विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना होने लगी। **इतिहासकार हेज ने इसी प्रकार की एक संस्था का उल्लेख किया है जिसने मानववाद को पोषित किया।**[2] अब मानववाद इटली तक ही सीमित नहीं रहा, उसकी जड़ें यूरोप में फैलने लगीं और धीरे-धीरे मानववाद ने यूरोप में पुनर्जागरण पैदा कर धर्म सुधार आन्दोलन के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएं



2. कला (The Fine Art)

इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"मध्ययुगीन यूरोप की कला मुख्यतः ईसाई धर्म से सम्बन्धित थी।"**[3] इस युग की कला शैली को गैथिक शैली (Gathic Art & Style) के नाम से जाना जाता है। धर्म के साथ जुड़े होने के कारण मध्ययुग में कला का अपना कोई स्वतन्त्र एवं पृथक् अस्तित्व नहीं था, किन्तु पुनर्जागरण काल में कला के विषयों में परिवर्तन आया। हेज

1 "Greek and profane history also were introduced into the curricula of the universities." —*Ibid*. p. 99.

2 "Outside the universities, the 'humanities' were especially fostered by a new institution, the academy, a voluntary association which arose in a particular city or locality in imitation of the ancient academy of Plato and which patronized the pursuit and publication of scholarly, literary and finally, scientific studies." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 99.

3 "The chief art of the middle ages has been essentially Christian. It sprang from the doctrine and devotions of the church and was inextricably bound up with Christian life." —*Ibid*. p. 106.

ने **इसका सबसे बड़ा कारण मानववाद को बतलाया है।**[1] पुनर्जागरण काल में साहित्य एवं प्राचीनता का विशेष प्रभाव कला पर पड़ा और यूरोपीय कला में प्राचीनता के आदर्शों को स्थान मिला। **कला के क्षेत्र में सम्पूर्ण यूरोप में इटली के कलाकारों की श्रेष्ठता सबसे ऊपर थी।** अतः जब पुनर्जागरण का केन्द्र इटली कला के क्षेत्र में सम्पूर्ण यूरोप का विजेता बन गया। प्राचीन कला शैली में कला के विविध अंगों (स्थापत्य कला, मूर्ति कला, संगीत कला व चित्रकला) का विकास हुआ, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है :

(अ) स्थापत्य कला (Architecture)—इटली के कलाकारों ने प्राचीनतम यूनानी एवं रोमन कलाकारों की शैली को पुनर्जीवित करने का जो प्रयास किया उसने मध्ययुगीन गैथिक शैली की ओर से लोगों का ध्यान हटने लगा और एक नई कला शैली का उद्भव हुआ जिसे **रेनेसा स्थापत्य कला के नाम से जाना जाता है।** रॉबर्ट इरगैंग के अनुसार, "**रेनेसा स्थापत्य कला वास्तव में कोई विशेष अलग एवं विशिष्ट शैली नहीं थी। यह तो कई समूहों की समष्टि थी। इसका स्वरूप व्यक्तिवादी था एवं प्राचीन रोमन-यूनानी तथ्यों में इसकी समता पायी जाती है। इसमें मौलिकता एवं नवीनता पर्याप्त रूप में थी।**" रेनेसा स्थापत्य कला का प्रारम्भ **फिलिप्पो ब्रूनेलेस्की** (Filippo Brunelleschi) ने किया। यह फ्लोरेन्स निवासी था। इसने स्तम्भ एवं मेहराब शैली को अपनाया। शृंगार, सज्जा, विशालता एवं डिजाइन इस नवीन शैली की प्रमुख विशेषता थी। व्यक्तिगत भवनों की खिड़कियों को क्लासिकल पंक्तियों, प्लास्टर अथवा मेहराबों से सुसज्जित किया जाने लगा। फ्लोरेन्स स्थित प्रसिद्ध मेडिसी गिरजाघर, एवं रोम स्थित सन्त पीटर का नया गिरजाघर इस युग की स्थापत्य कला के सर्वोष्कृष्ट नमूने हैं।

रेनेसा स्थापत्य कला की सर्वोत्कृष्टता एवं क्रमिक विकास यद्यपि इटली के रोम एवं फ्लोरेन्स नगर राज्यों में परिलक्षित होता है, किन्तु यह कला शैली पश्चिमी यूरोप में भी अपनाई जाने लगी। हेज के शब्दों में, "**क्रमशः सम्पूर्ण पश्चिमी यूरोप में गैथिक स्थापत्य कला को गंवारू शैली के रूप में देखा जाने लगा और नए भवन रेनेसा कला शैली में निर्मित होने लगे।**"[2] फ्रांस, स्पेन, नीदरलैण्ड्स, जर्मन एवं इंग्लैण्ड में इस कला शैली का प्रवेश द्रुतगति से हुआ।

(ब) मूर्तिकला (Sculpture)—स्थापत्य कला की अपेक्षा मूर्तिकला के कलाकारों ने यूनानी शैली एवं स्वरूप से अधिक विशेष प्रेरणा प्राप्त की। **इटली में रेनेसा मूर्तिकला का पथप्रदर्शक दोनातेलो** (Donatello) **था।** दोनातेलो प्रकृति से अत्यधिक प्रभावित था। उसने प्राचीन आदर्शों की रक्षा करते हुए तत्कालीन बच्चों एवं पुरुषों की अद्वितीय मूर्तियां बनाईं। ल्यूका देला रोबिया (Luca della Robbia), वेराकक्यो (Veracchio) एवं माइकेल ऐंजिलो (Michael Angelo) ने जो कि उसके परवर्ती कलाकार थे उसकी मूर्तिकला से एक प्रेरणा प्राप्त की। माइकेल ऐंजिलो द्वारा बनायी गयी कृतियों के उत्कृष्टतम नमूनों को **मोसेज एवं फ्लोरेन्स में स्थित मेडिसी के गिरजाघरों की मूर्तियों के रूप में देखा जा सकता है।**

(स) संगीत-कला (Music)—पुनर्जागरण में संगीत-कला में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। संगीत की ध्वनि, मात्रा, राग एवं पद्धति में हुए परिवर्तनों के साथ-साथ यन्त्रीय संगीत

1 "........humanism recalled to men's mind the existence of an earlier art, simpler and more restrained, if less deeply spiritual in its appeal. The resulting 'Classicism' meant esteem for pagan culture in all its aspects." —*Ibid.*, p. 106.

2 "More and more, throughout wesetern Europe, Gathic architecture was looked upon as barbarous, and never buildings were eracted in the renaissance style." —Hayes. *Modern Europe to* 1870, p. 107.

का भी विकास हुआ। संगीत कला पर यूनानी, हिब्रू एवं रोमन आदर्शों का व्यापक प्रभाव पड़ा। **जान बुल, विलियम बर्ड, पेलित्रिना** इत्यादि इस युग के महान् संगीतज्ञ थे।

(द) **चित्रकला** (Painting)—चित्रकला को चर्च द्वारा सर्वाधिक प्रोत्साहन प्रदान करने के कारण पुनर्जागरण काल में यथार्थवादिता को स्वीकार करने के पश्चात् भी इस युग की चित्रकला में धार्मिक प्रतीकों की परम्परा बनी रही। **धार्मिक परम्परा से यथार्थ की ओर चित्रकला को मोड़ने का प्रथम प्रयास माजासिओ** (Masaccio) **ने किया।** उसके इस प्रयास को फ्रा फिलिपो लिप्पी एवं फ्रा ऐंजेलिको ने आगे बढ़ाया। बातिचेलि ने रहस्यवादिता एवं यथार्थवाद का सम्मिश्रण अपने चित्रों में किया। लियोनार्डो द विंशी (1452 to 1519) जो कि फ्लोरेन्स का निवासी था के मिलान के '**अन्तिम भोज**' एवं पेरिस के '**मोनालिसा**' नामक चित्र विश्व प्रसिद्ध हैं। माइकेल ऐंजेलो द्वारा चैपेल की दीवारों में '**अन्तिम निर्णय**' नामक चित्र में तो ईश्वर की दया व प्रेम के अनुपात में भय एवं आतंक का अधिक पुट है। उसके चित्रों का प्रभाव इटली के चित्रकार **रैफेल** द्वारा निर्मित विश्व प्रसिद्ध '**सिस्टाइन मेडोना**' एवं '**मेडोना आफ दी चेयर**' नामक चित्रों में देखा जा सकता है। टीशियन (1470-1576) के चित्र रंग-सौन्दर्य के लिए प्रख्यात हैं।

3. साहित्य (Literature)

15वीं शताब्दी में इटली के विद्वानों द्वारा प्राचीन यूनानी एवं लैटिन साहित्य के प्रति उत्कृष्ट रुचि ने इटली में इटैलियन लोक भाषा के विकास में बाधा डाली। **हेज** के अनुसार, **"वे (इटैलियन विद्वान) सोचते थे कि प्राचीन लैटिन एवं यूनानी भाषा ही साहित्यिक प्रस्तुतीकरण का एकमात्र सम्माननीय वाहन है। फलतः वे लोक भाषाओं को असभ्य एवं साधारण मानकर हेय समझते थे।"**[1] इस प्रकार की विचारधारा से अभिभूत विद्वानों ने होरेस, वर्जिल एवं सिसरो की रचनाओं का अनुगमन किया। उनके इस प्रयत्न ने वैज्ञानिक आलोचना के द्वार अनावृत कर दिए। **लोनेन्जोवल्ला** (Lonenzovalla) **ने तो चर्च के प्रति "कांस्टेंटाइन के दान" की ऐतिहासिकता को अस्वीकार कर दिया।** इतना होते हुए भी लैटिन एवं यूनानी भाषाओं में लिखा गया यह साहित्य सामान्य जनमानस की समझ के बाहर था। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि सामान्यजन अशिक्षित एवं रूढ़िवादी होने के कारण इन ग्रन्थों के रहस्यपूर्ण तथ्य को समझने में असमर्थ थे। उल्लेखनीय है कि इस ओर मात्र सुरक्षित वर्ग ही आकृष्ट हुआ, अतः 16वीं शताब्दी में स्थिति में परिवर्तन आया। **हेज** के शब्दों में, **"सोलहवीं शताब्दी राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता, दूरस्थ भौगोलिक आविष्कार, पूंजीवादी विकास तथा सामाजिक व धार्मिक अशान्ति से परिपूर्ण थी। लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य की मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी क्योंकि सामान्य जनता कठिन लैटिन व यूनानी भाषाओं के स्थान पर लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य को अधिक पसन्द करती थी।"**[2] अतः राष्ट्रीय एवं लोकभाषाओं में लिखे गए साहित्य का सृजन सामने आया।

---

1 "They thought that classical Latin and Greek were the respectable vehicles for literary expression and they consequently despised the vernaculars as uncouth and vulgar." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 113.

2 "The sixteenth century was too full of national rivalries, for off discoveries, capitalistic activities, and social and religious unrest....... The sixteenth century witnessed a rapidly widening demand for national literature in the vernacular languages and at a time when financial profits were eagerly short form whatever source, the supply soon corresponded with the demand." —*Ibid.*, pp. 113-114.

मार्टिन लूथर ने बाईबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया। क्रामर ने बुक ऑफ कामन प्रेयर (Book of Common Prayer) की रचना की। जान काल्विन ने इंस्टिट्यूट्स ऑफ दि क्रिश्चियन रिलिजन (Institutes of the Christian Religion) की रचना की। दांते, पेट्रार्क, बोक्सासियो, चौसर, शैक्सपियर, मिल्टन, स्पेन्सर, थामस मूर एवं मार्लो आदि के राष्ट्रीय साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रीय साहित्य के विकास में **'मैकियावेली'** (Mechiavelly) ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैकियावेली फ्लोरेन्स का निवासी था। अपने जीवनकाल में वह सचिव के पद पर भी कार्य कर चुका था। अतः उसे राजनीति ज्ञान भी प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैकियावेली के इस अगाध राजनीतिक अनुभव को 'डिस्कोर्सिस ऑफ लिवि', 'हिस्ट्री ऑफ फ्लोरेन्स' एवं 'द प्रिन्स' में देखा जा सकता है। **मैकियावेली ने स्पष्ट किया कि धर्म एवं राजनीति दोनों अलग-अलग हैं। धर्म को राजनीति से अलग रहना चाहिए क्योंकि धर्म राज्यों की शक्ति को निर्बल करता है।** उसकी दृष्टि में धर्म नैतिकता का सन्देश देता है जबकि राजनीति में राज्य के हित के लिए नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। आवश्यकतानुसार राज्य को कठोर एवं निर्मम साधनों का आश्रय लेना पड़ सकता है। राजनीतिक का मूल उद्देश्य सफलता प्राप्त करता है चाहे इसके लिए किसी भी नीति का आश्रय क्यों न लेना पड़े। **इस प्रकार राष्ट्रवादी साहित्य ने मध्ययुगीन मान्यताओं को तर्क के आधार पर स्पष्ट चुनौती दी एवं नई मान्यताओं को प्रतिष्ठित किया।**

4. महान् खोजें एवं नाविक (Great Discoveries)

यूरोप में सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं धार्मिक जागृति के परिणामस्वरूप यूरोप के नाविकों द्वारा अनेक यात्राएं की गयीं। इन यात्राओं के परिणामस्वरूप अनेक नवीन मार्गों का पता चला तथा नए स्थानों की खोज हुई। एशिया महाद्वीप के लिए नवीन जलमार्गों का पता इसी काल में लगाया गया। भौगोलिक खोजों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए ग्राण्ट ने लिखा है, **"नए देशों की खोज के द्वारा न केवल अन्वेषण करने वालों को नए-नए उपनिवेशों के साथ व्यापार करने के लिए प्रोत्साहन मिला, वरन् उन्होंने वहां अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का प्रचार करने का भी संकल्प किया। इसका अर्थ यह हुआ कि इन लोगों ने महाद्वीप के बाहर एक वृहत्तर यूरोप की स्थापना करने का भी निश्चय किया।"**[1] आधुनिक युग के पूर्व समुद्री यात्रा करना अत्यन्त दुरुह कार्य था। सुदूर सागर में जाने वाले जहाज् समुद्री लहरों एवं तूफानों के कारण दिशा से भटक जाते थे जिसके कारण सही लक्ष्य तक पहुंचना तो दूर उनका सकुशल लौटना भी कठिन हो जाता था। इसी कारण मध्ययुगीन यूरोप में समुद्री यात्रा अत्यन्त जोखिम का कार्य माना जाता था। उस समय किसी ऐसे यन्त्र का भी आविष्कार नहीं हुआ था जिससे समुद्र में दिशा का अनुमान लगाया जा सके। सही दिशा का अनुमान न लगने के कारण समुद्री यात्रा राह भटक जाते थे। उस समय तक पृथ्वी की सही भौगोलिक स्थिति का भी ज्ञान न था। अतः लोग केवल यूरेशिया को ही अपनी दुनिया समझते थे, किन्तु **जब यह ज्ञात हुआ कि पृथ्वी गोल है और प्राचीन यूरेशिया के अतिरिक्त एक 'नई दुनिया' भी है तो यूरोप के कई् देशों के नाविक, अपने प्राणों को जोखिम में डालकर उसकी खोज में निकल पड़े।**

1 "The discoveries of new lands not only inspired the explorers with increasing their trade in the colonies, but they resolved to spread their culture, literature and also their culture, literature, and also their religion in them. This meant that they aimed at establishing a greater Europe outside the continent."
—A. J. Grant—*A History of Europe from* 1494 to 1610, p. 12.

आधुनिक युग के आगमन के साथ ही **कुतुबनुमा** (दिशा सूचक यन्त्र) का आविष्कार हुआ। इस यन्त्र के आविष्कार ने समुद्री यात्राओं को सुगम बना दिया। इस यन्त्र की सहायता से नाविक समुद्र में कहीं भी अपनी सही स्थिति जान सकते थे। इससे नाविकों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई औंर वे लम्बी समुद्री यात्रा करने में सक्षम हो गए। आधुनिक युग में पुरानी पद्धति पर निर्मित पानी के जहाजों के स्थान पर पक्के व मजबूत जहाज बनने लगे जो आंधी-तूफान, हवा व समुद्र की विशाल लहरों का सरलतापूर्वक सामना कर सकते थे। इन मजबूत व नवीनतम तरीके से बने जहाजों से समुद्री यात्रा के दौरान नाविकों को अपनी जान-माल का भय कम हो गया, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। नवीनतम आविष्कारों के परिणामस्वरूप यूरोपीय नाविकों को समुद्री लहरों, हवाओं तथा समुद्री जलधाराओं के बहने की गति एवं उनकी दिशा का भी ज्ञान हो गया, जिससे वे समुद्री यात्राएं करते समय उन खतरों से भी बच सकने में सफल हो गए।

मध्य युग में सामुद्रिक व्यापार पर अरब के निवासियों का प्रभुत्व था। अरबवासी भारत, पूर्वी द्वीपसमूह व यूरोप से व्यापार करते थे। यूरोप के लोग भी पूर्वी देशों के साथ व्यापार करना चाहते थे, किन्तु 1453 ई. में **कुस्तुन्तुनिया पर अरबों का अधिकार हो जाने के कारण यूरोप व पूर्वी देशों के मध्य थल मार्ग बन्द हो गए। अतः यदि यूरोपवासी पूर्वी देशों से व्यापार करना चाहते तो उनके लिए नवीन जलमार्गों की खोज करना आवश्यक हो गया।** इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूरोप के देशों के अनेक नाविकों ने साहसिक व खतरों से भरी यात्राएं कीं व नवीन देशों व जलमार्गों का पता लगाया व अपने उद्देश्य में सफल रहे। ऐसे प्रमुख नाविक निम्नलिखित थे—

(i) मार्कोपोलो—आधुनिक युग के नाविकों को समुद्री यात्राओं के लिए मध्ययुगीन यात्री मार्कोपोलो के यात्रा-वृत्तान्तों ने बहुत प्रेरित किया। मार्कोपोलो इटली का निवासी था जो विभिन्न देशों से व्यापार करता था। मार्कोपोलो ने चीन, जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूहों की यात्रा की थी। मार्कोपोलो ने अपनी यात्रा 1271 ई. में इटली के वेनिस नगर से प्रारम्भ की। वह थलमार्ग से गोबी मरुस्थल होता हुआ चीन पहुंचा। चीन से वह जापान तथा पूर्वी द्वीपसमूह होते हुए समुद्री मार्ग से इटली लौटा। वेनिस पहुंचकर उसने अपना यात्रा-वृत्तान्त लिखा। उसके यात्रा-वृत्तान्तों को पढ़कर अनेक यूरोपवासियों ने भी, पूर्वी द्वीपसमूह की यात्रा कर धर्म प्रचार व धन कमाने की योजना बनायी। इससे समुद्री यात्राओं को बहुत प्रोत्साहन मिला।

(ii) हेनरी व डियाज—मार्कोपोलो के पश्चात् पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी ने भी समुद्री यात्राएं कीं। उसने अपनी सामुद्रिक यात्राओं के द्वारा पश्चिमी अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तटीय मार्ग का पता लगाया। उसके जहाजों ने समुद्र में दक्षिण की ओर दो हजार मील की यात्रा की थी। हेनरी ने पश्चिम अफ्रीका के तट पर दो टापुओं पर अधिकार करके उन्हें पुर्तगाल का उपनिवेश बनाया। हेनरी ने अफ्रीका के अन्य प्रदेशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध भी कायम किए। इस प्रकार हेनरीं ने समुद्री यात्रा के साथ-साथ उपनिवेश स्थापित करने की प्रणाली को प्रारम्भ किया। राजकुमार हेनरी ने 1442 ई. में अपने यात्रा वृत्तान्तों को लिखा, जिन्हें पढ़कर अन्य नाविक भी समुद्री यात्रा के लिए प्रेरित हुए। **हेनरी की यात्राओं के विषय में जानकर पुर्तगाल के ही एक अन्य नाविक बारथोलोम्यु डियाज ने**

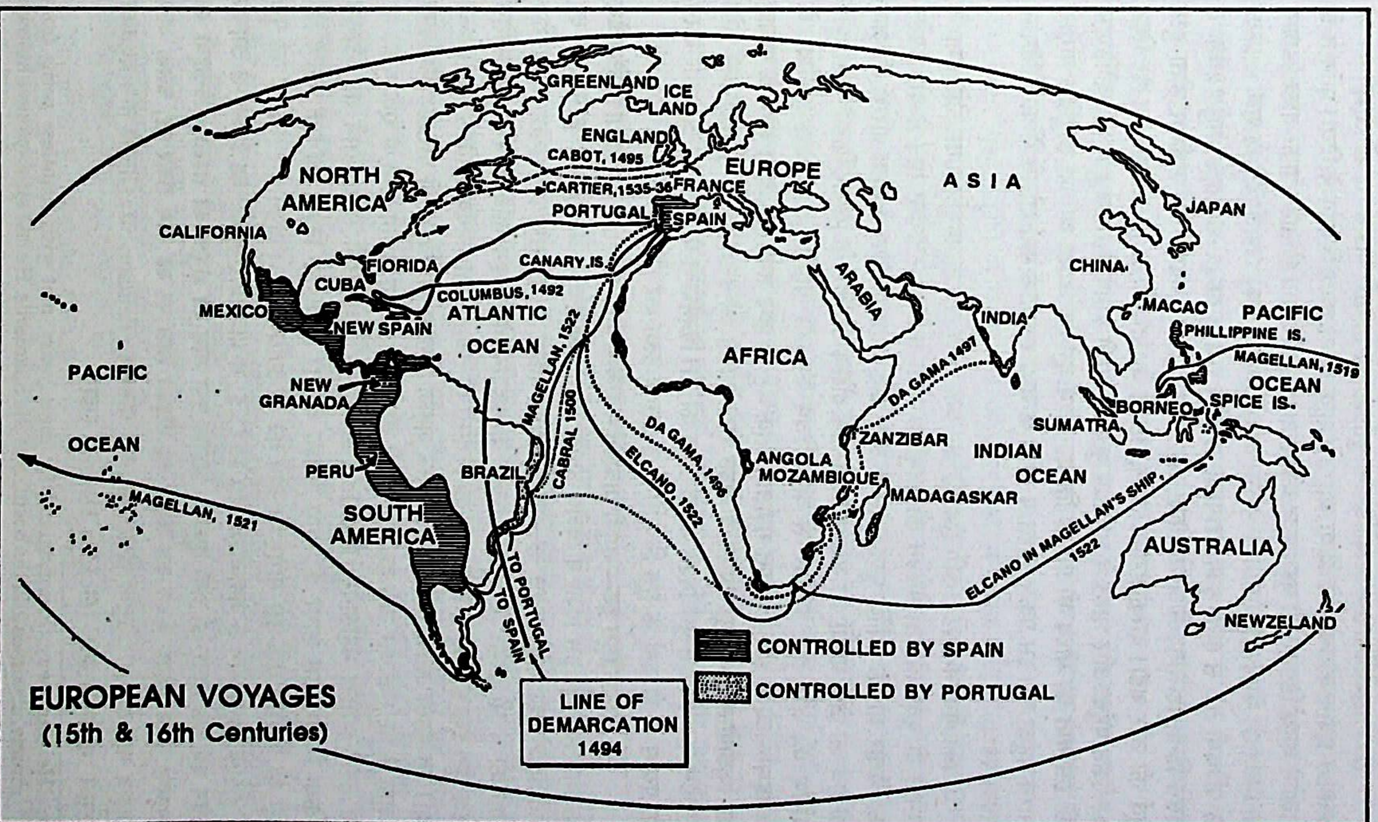
1486 ई. में पूरे पश्चिम अफ्रीका के तट की यात्रा की। दक्षिण अफ्रीका के अन्तरीप तक पहुंचने में उसने सफलता प्राप्त की। उसने इस अन्तरीप का नाम **'उत्तमाशा अन्तरीप'** रखा।

(iii) **कोलम्बस**—पुर्तगाल के नाविकों की सफलताओं व कुतुबनुमा के आविष्कार ने स्पेन के नाविकों को भी समुद्री यात्राओं के लिए प्रेरित किया। स्पेन के राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने भी अपने देह के नाविकों को समुद्री यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया। स्पेन के एक साहसी नाविक ने भारत के लिए जल मार्ग का पता लगाने के लिए 1492 ई. में जल यात्रा प्रारम्भ की। उसकी इस यात्रा में राजा फर्डिनेण्ड व रानी ईसाबेला ने उसकी बहुत सहायता की। उस समय तक यह प्रमाणित हो चुका था कि दुनिया गोल है, अतः कोलम्बस ने पश्चिम की ओर से सीधे भारत की यात्रा प्रारम्भ की। कोलम्बस ने तीन जहाजों के साथ यात्रा प्रारम्भ की व 33 दिन की समुद्री यात्रा के पश्चात् वह एक नयी धरती पर पहुंचने में सफल रहा। कोलम्बस का विचार था कि वह भारत खोजने में सफल हो गया है, किन्तु वास्तव में वह **'नई दुनिया'** ही थी, भारत नहीं। कोलम्बस द्वारा नई दुनिया की खोज के कुछ समय पश्चात् ही **इटली का एक नाविक अमेरिगो भी नयी दुनिया पहुंचा।** उसी के नाम पर इस नयी दुनिया का नाम **'अमरीका'** (America) पड़ा।

कोलम्बस व अमेरिगो की यात्राओं व खोज से प्रेरित होकर अन्य यूरोपीय नाविकों ने भी समुद्री यात्राएं कीं। इंग्लैण्ड के राजा हेनरी-VII ने 1497 ई. में इटली के ही एक नाविक जान कावेट (John Covet) को आर्थिक व राजनीतिक सहायता प्रदान कर पश्चिम समुद्र की ओर भेजा। जान कावेट उत्तरी अटलाण्टिक महासागर को पार करके लेब्रोडोर के समुद्रतट के किनारे-किनारे अपना जहाज ले गया। इस प्रकार वह कनाडा के समुद्रतट पर पहुंचने में सफल रहा।

15वीं-16वीं शताब्दी की प्रमुख खोजें

वर्ष	खोजकर्ता का नाम	खोजकर्ताओं को संरक्षण देने वाले देश/राजा का नाम	खोजे गए क्षेत्र का नाम
1486 ई.	वार्थोलम्यू डियाज	पुर्तगाल/जॉन II	उत्तमाशा अन्तरीप
1492 ई.	कोलम्बस	स्पेन/इसावेला प्रथम	अमरीका
1498 ई.	वास्कोडिगामा	पुर्तगाल/मेनुएल I	भारत (कालीकट)
1500 ई.	कैबरल	पुर्तगाल/मेनुएल I	भारत
1500 ई.	कैबरल	पर्तुगाल/मेनुएल I	ब्राजील (दक्षिण अमरीका)
1499-1501 ई.	अमेरिगो वेस्पुक्सी	स्पेन/इसाबेला प्रथम	अमरीका
1510 ई.	अलबुकर्क	पुर्तगाल/मेनुएल I	गोवा (भारत)
1511 ई.	अलबुकर्क	पुर्तगाल/मेनुएल I	मलक्का
1515 ई.	अलबुकर्क	पुर्तगाल/मेनुएल I	ओरमुज
1519 ई.	मैगलन	स्पेन/चार्ल्स I	पूरी दुनिया की यात्रा एवं फिलिपीन्स द्वीप समूह की खोज
1519 ई.	कोरटेज	स्पेन/चार्ल्स I	मैक्सिको
1532 ई.	पिजारो	स्पेन/चार्ल्स I	पेरू
1497-98 ई.	केबॉट	इंग्लैण्ड/हेनरी सप्तम	उत्तरी अमरीका
1534 ई.	कार्टियर	फ्रांस/फ्रांसिस प्रथम	उत्तरी अमरीका
1577 ई.	ड्रेक	इंग्लैण्ड/एलिजाबेथI	सम्पूर्ण दुनिया का चक्कर लगाया


GREENLAND
ICE
LAND
ENGLAND
CABOT, 1495
CARTIER, 1535-36
FRANCE
EUROPE
PORTUGAL
SPAIN
NORTH
AMERICA
CALIFORNIA
FIORIDA
CUBA
MEXICO
NEW SPAIN
CANARY IS.
COLUMBUS, 1492
ATLANTIC
OCEAN
MAGELLAN, 1522
CABRAL 1500
PACIFIC
OCEAN
NEW
GRANADA
PERU
BRAZIL
SOUTH
AMERICA
MAGELLAN, 1521
TO PORTUGAL
TO SPAIN
AFRICA
DA GAMA, 1498
ELCANO, 1522
ANGOLA
MOZAMBIQUE
ZANZIBAR
MADAGASKAR
ARABIA
A S I A
INDIA
DA GAMA 1497
INDIAN
OCEAN
SUMATRA
BORNEO
CHINA
MACAO
JAPAN
PACIFIC
PHILLIPPINE IS.
MAGELLAN, 1519
OCEAN
SPICE IS.
ELCANO IN MAGELLAN'S SHIP, 1522
AUSTRALIA
NEWZELAND
CONTROLLED BY SPAIN
CONTROLLED BY PORTUGAL
LINE OF
DEMARCATION
1494
EUROPEAN VOYAGES
(15th & 16th Centuries)

(iv) **वास्कोडिगामा**—वास्कोडिगामा पुर्तगाल का निवासी था। भारत को खोजने का जो असफल प्रयत्न कोलम्बस ने किया था, उसे साकार रूप वास्कोडिगामा ने दिया। पुर्तगाल के राजा ने वास्कोडिगामा की बहुत मदद की। राजा की सहायता व प्रोत्साहन पाकर वास्कोडिगामा ने 1498 ई. में अपनी यात्रा प्रारम्भ की। वास्कोडिगामा अपने जहाजी बेड़े के साथ अफ्रीका के पश्चिमी तट से होता हुआ उत्तमाशा अन्तरीप (cape of good hope) पहुंचा। वहां से उसने हिन्द महासागर में प्रवेश किया और उत्तर कीं ओर बढ़कर वह जंजीबार होता हुआ पूर्व की ओर बढ़ा। वास्कोडिग़ामा अपने जहाजों के साथ भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट पहुंचा और भारत में सर्वप्रथम पुर्तगाली बस्ती बसाने में सफल हुआ। वास्कोडिगामा को इस बात का गौरव भी प्राप्त है कि वह प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था, जो सामुद्रिक मार्ग से भारत पहुंचा था। इस प्रकार भारत व यूरोप के मध्य सामुद्रिक मार्ग खोजने में वास्कोडिगामा सफल रहा।

(v) **मैगलेन**—15-16वीं शंताब्दी का एक अन्य प्रसिद्ध सामुद्रिक वास्कोडिगामा के समान ही पुर्तगाली था। मैगलेन को सामुद्रिक यात्रा करने में सहायता स्पेन ने दी। मैगलेन का विचार था कि क्योंकि पृथ्वी गोल है अतः यदि पश्चिमी दिशा से यात्रा प्रारम्भ की जाए तो पूर्व की ओर पहुंचा जा सकता है। मैगलेन दक्षिण अफ्रीका के किनारे-किनारे होता हुआ दक्षिण की ओर बढ़ा है। वहां से वह पश्चिम की ओर बढ़ता हुआ दक्षिण अमरीका के जलडमरूमध्य से होकर प्रशान्त महासागर तक पहुंचा। **लम्बे समय तक यात्रा करने के पश्चात् वह फिलीपीन्स द्वीप समूह खोजने में सफल रहा।** मैगलेन को इस यात्रा में पूरे तीन वर्ष लगे। मैगलेन ने लगभग सम्पूर्ण विश्व की परिक्रमा की थी। फिलीपीन्स के द्वीपों पर अधिकार करने के प्रयास में ही वहां के मूल निवासियों ने उसकी हत्या कर दी।

(vi) **सर फ्रांसिस ड्रेक**—समुद्री यात्राओं में इंग्लैण्ड पीछे नहीं रहना चाहता था। एलिजाबेथ के शासनकाल में इस दिशा में विशेष उन्नति हुई। एलिजाबेथ ने अपने समय के नाविकों को नए प्रदेशों की खोज करने के लिए प्रोंत्साहित किया व हर सम्भव सहायता दी। अंग्रेज नाविकों ने भी अपार वीरता एवं साहस का प्रदर्शन किया। इन नाविकों में प्रमुख फ्रांसिस ड्रेक था। ड्रेक इंग्लैण्ड में डर्बीशायर का निवासी था तथा प्रसिद्ध नाविक हाकिन्स का सम्बन्धी था। वह पहला अंग्रेज नाविक था, जिसने जहाज द्वारा सम्पूर्ण विश्व की परिक्रमा की। कहा जाता है कि एक बार जब वह पनामा की यात्रा पर जा रहा था तो रास्ते में एक पर्वत पर से उसने प्रशान्त महासागर (Pacific Ocean) को देखा। उसी समय उसने यह निश्चय किया कि वह इस सागर की यात्रा अवश्य करेगा। उसके इस निर्णय का एक कारण यह भी था कि तब तक उस सागर पर स्पेन का ही आधिपत्य था। अपने इस निश्चय को पूरा करने के लिए उसने 5 जहाजों के साथ 1577 ई. में यात्रा प्रारम्भ की। **वह इंग्लैण्ड से लगभग तीन वर्ष तक बाहर रहा तथा तूफानों, विद्रोहों तथा स्पेन की शत्रुता की सहस्रों कठिनाइयों का सामना उसने किया। केवल उस जहाज को छोड़कर जिस पर वह स्वयं सवार था, उसके अन्य जहाज नष्ट हो गए।**[1] उसके जहाज का नाम **पेलिकन** (Palican) था, जिसका नाम बदलकर उसने **'गोल्डेन हाउण्ड'** (Golden Hound) रखा।

1 "He was away from England for three years, met with countless perils from stroms, mutinies and the hostility of the Spaniards. He lost all ships save his own vessel." —*Tout.*

ड्रेक दक्षिण अफ्रीकी अटलाण्टिक महासागर को पार करके अनेक खतरों का सामना करता हुआ मैगलेन जलडमरूमध्य होता हुआ प्रशान्त महासागर तक जा पहुंचा। प्रशान्त महासागर में उसने स्पेन के जहाजों को लूटा और अन्त में लूट की अपार धन-सम्पत्ति को जहाज में भरकर हिन्द महासागर होते हुए 1580 ई. में इंग्लैण्ड पहुंचा। **वह विश्व का पहला नाविक था जो संसार का चक्कर लगाकर जीवित अपने देश लौटा था।**

महारानी एलिजाबेथ ने ड्रेक की इस महान् उपलब्धि की अत्यन्त प्रशंसा की तथा अपने हाथों से उसे **नाइट** (Knight) की उपाधि से विभूषित किया।

ड्रेक एक कुशल नौ सैनिक भी था। उसने अपने आक्रमणों से स्पेन के जहाजों को लूटना व जलाना प्रारम्भ कर दिया। उसकी निरन्तर लूटों ने स्पेन को अत्यधिक परेशान किया। रैम्जे म्योर ने उसे **'अज्ञात संसार का दस्युराज'** कहा है।

इस प्रकार यूरोप में पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप अनेक भौगोलिक अन्वेषण व सामुद्रिक यात्राएं हुईं। समुद्र पर विजय प्राप्त करने में यूरोपीय सफल रहे। सामुद्रिक यात्राओं के द्वारा नवीन भू-भागों पर अधिकार हुआ जहां के साधनों से नवीन आविष्कार हुए। फलस्वरूप, यूरोप में भौतिकवाद व वैज्ञानिक युग का श्रीगणेश हुआ। इन नवीन प्रदेशों पर अधिकार करने के लिए यूरोपीय देशों में प्रतिस्पर्धा होने लगी, जिससे उपनिवेशवाद (colonialism) का जन्म हुआ। नवीन उपनिवेशों की खोज व स्थापना के पीछे यूरोप निवासियों की मूल भावना भारत व पूर्वी द्वीप समूहों से व्यापार के नवीन रास्ते खोजने की थी। **स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैण्ड, इटली, फ्रांस आदि सभी यूरोपीय देशों ने व्यापारिक मार्ग खोजने के लिए ही समुद्री यात्राएं की थीं। इस प्रकार व्यापारिक उन्नति के लिए यूरोप के देशों में उपनिवेश स्थापित करने की प्रतिस्पर्धा होने लगी।**

5. आविष्कार एवं विज्ञान (Inventions and Science)

आधुनिक युग की उल्लेखनीय बात वैज्ञानिक उन्नति होना थी। मध्ययुगीन यूरोप में विज्ञान के प्रति लोगों में रुचि न थी। मध्य युग अन्धकारमयी युग था। जनता व राज्य पर चर्च का प्रभाव छाया हुआ था। लोग अन्धविश्वासी थे तथा किसी भी आविष्कार अथवा परिवर्तन को जादू-टोना समझते थे। चर्च के अधिकारी भी परिवर्तन नहीं चाहते थे, क्योंकि इससे उनके एकाधिकार के आहत होने का खतरा था। **इस प्रकार धर्माधिकारी वैज्ञानिकों एवं विज्ञान के विरोधी थे तथा विज्ञान की उन्नति में बाधक थे। वैज्ञानिकों को ये नास्तिक मानते थे। रोजर बेकन का विचार है कि लोगों की अज्ञानता, पुरानी परम्पराओं पर अटूट विश्वास तथा लोगों का यह भ्रम कि वे सर्वज्ञानी थे, मध्ययुगीन पिछड़ेपन के प्रमुख कारण थे।**

पुनर्जागरण ने विज्ञान के क्षेत्र में क्रान्ति की। नवीन विचारधारा व साहित्य का सृजन होने लगा, जिससे लोगों में व्याप्त अन्धविश्वास के बादल छंटने लगे। धीरे-धीरे धर्माधिकारियों का प्रभाव कम होने लगा तथा जनता में तार्किकता का विकास हुआ। नवीन विचारधारा व साहित्य के कारण लोग बिना सोचे-समझे किसी बात को मानने के लिए अब तैयार न थे। परिणामस्वरूप मध्यकालीन मान्यताएं टूटने लगीं व नवीन आविष्कार होने लगे। एक के बाद एक इतने आविष्कार हुए कि इस युग को लोग **'वैज्ञानिक क्रान्ति का युग'** (Age of Scientific Revolution) कहने लगे। पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक उन्नति हुई व बाद में वैज्ञानिक उन्नति के कारण लोगों के विचारों में और भी परिवर्तन हुए। इस प्रकार विज्ञान व बौद्धिक विकास एक-दूसरे के पूरक बन गए।

आधुनिक युग के आगमन के साथ ही अनेक वैज्ञानिक आविष्कार हुए। पहला व प्रमुख आविष्कार छापेखाने का था। छापेखाने के आविष्कार से पूर्व पुस्तकें अत्यन्त परिश्रम से हाथ से ही लिखी जाती थीं। छापेखाने का आविष्कार जर्मनी में गुटनबर्ग ने किया। इसने शिक्षा के प्रसार में अत्यन्त सहयोग दिया, जिससे जनता का बौद्धिक विकास हुआ। रोजर बेकन नामक वैज्ञानिक ने सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार किया, जिसने विज्ञान के अन्य आविष्कारों में अत्यन्त सहायता की। इटली के वैज्ञानिक गैलीलियो ने एक दूरबीन (Telescope) बनायी। इस यन्त्र से खगोलशास्त्र के अध्ययन में अत्यन्त सहायता मिली। गैलीलियो ने यह भी प्रमाणित किया कि अलग-अलग भाग की वस्तुएं भी ऊपर से समान वेग से गिरती हैं। इसके अतिरिक्त पैण्डुलम के नियमों की खोज भी गैलीलियो ने ही की जिसके आधार पर घड़ियों का निर्माण हो सका।

देकार्ते नामक एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने बीजगणित के ज्यामिति में प्रयोग करने का तरीका खोजा। स्टेविन ने दशमलव व नेपियर ने प्रतिफल पर नयी खोजें कीं। तारतगलियो ने घन-समीकरण के नियमों को प्रतिपादित कर गणित को एक नयी दिशा प्रदान की। कैपलर ने ग्रहगति के नियमों का प्रतिपादन किया।

कोपर्निकस की उपलब्धि भी महान् थी। उसने टॉल्मी की विचारधारा को गलत प्रमाणित किया। टॉल्मी का विचार था कि सौरमण्डल का केन्द्र पृथ्वी है जिसके चारों ओर अन्य ग्रह घूमते हैं। पोलैण्ड के विद्वान कोपर्निकस ने प्रमाणित किया कि सौरमण्डल का केन्द्र सूर्य है जिसके चारों ओर पृथ्वी घूमती है। कोपर्निकस के इस विचार को लोगों ने आसानी से स्वीकार नहीं किया व उसे चर्च द्वारा डराया-धमकाया गया।

चिकित्साशास्त्र में भी उन्नति हुई। 16वीं शताब्दी में 'एंडियन बेसालियस' ने अनेक औषधियों की खोज की तथा 'मनुष्य के शरीर की रचना' (Structure of the Human body) नामक ग्रन्थ की रचना की। इस पुस्तक में उसने शल्य चिकित्सा किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। हारवे नामक विद्वान ने प्रमाणित किया कि मानव-शरीर में रक्त प्रवाह होता रहता है। इस आविष्कार के कारण ही रक्त चढ़ाने व हृदय रोग की चिकित्सा सम्भव हो सकी।

इस प्रकार विभिन्न वैज्ञानिक खोजों ने मानव समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।

पुनर्जागरण से सम्बन्धित प्रमुख व्यक्ति
(PROMINENT PERSONS RELATED TO RENAISSANCE)

यूरोप में पुनर्जागरण विभिन्न विद्वानों के सहयोग से हुआ था। इन विद्वानों के कार्यक्षेत्र अलग-अलग थे, किन्तु बौद्धिक चेतना जाग्रत करने में सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूरोप के ऐसे ही प्रमुख विद्वानों, साहित्यकारों, विचारकों एवं वैज्ञानिकों से सम्बन्धित वर्णन निम्नवत् हैं :

1. लियोनार्दो द विंसी (Leonardo de Vinchi : 1452-1519 ई.)—पुनर्जागरण का एक रूप प्राचीनकला का पुनर्जन्म भी था। पुनर्जागरण के समय प्राचीन कला का पुनरुद्धार हुआ। मध्यकालीन यूरोपीय कला में स्वतन्त्रता एवं प्राकृतिकता का अभाव था, क्योंकि उस समय का कलाकार धार्मिक प्रतिबन्धों से मुक्त नहीं था। वह सन्तों व संन्यासियों अथवा धार्मिक विषयों के अतिरिक्त कुछ सोचने में समर्थ न था। पुनर्जागरण के काल में कला पर लगे यह

प्रतिबन्ध समाप्त हो जाने से कला की सजीवता में वृद्धि हुई। इस युग के कलाकारों ने पुरानी मान्यताओं का परित्याग कर नवीन एवं स्वतन्त्र शैली का विकास किया।

ऐसे ही कलाकारों में से एक लियोनार्दो द विंसी था, जिसका जन्म इटली में हुआ था। लियोनार्दो केवल एक चित्रकार ही नहीं, वरन् एक कुशल शिल्पी, संगीतज्ञ, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक भी था। फ्लोरेंस में रहने वाले लियोनार्दो ने चित्रकला में अद्भुत दक्षता प्राप्त की थी। उसके चित्रों में अंग-प्रत्यंग का गठन तथा प्रकाश, छाया एवं रंगों का समन्वय देखने लायक है। लियोनार्दो ने अपने जीवन में अनेक चित्र बनाए, किन्तु दुर्भाग्यवश अब केवल 17 चित्र ही उपलब्ध हैं, जिनमें कुछ चित्र अधूरे भी हैं। लियोनार्दो की शैली में विविधता एवं मौलिकता थी। उनके बनाए हुए चित्रों में सादगी व भावों की अभिव्यक्ति के साथ-साथ आदर्श की झलक भी दृष्टिगत होती है। लियोनार्दो के चित्रों में प्रमुख **'मोनालिसा'** तथा **'लास्ट सपर'** हैं। इन चित्रों की तुलना विश्व की श्रेष्ठतम कृतियों से की जा सकती है। मोनालिसा नामक चित्र अत्यन्त सुन्दर है तथा उनमें मोनालिसा की मुस्कान अत्यन्त मोहक एवं स्वाभाविक है। 'लास्ट सपर' (अन्तिम भोजन) नामक चित्र लियोनार्दो के मिलान ने सेण्ट मारिया चर्च की भित्ति पर बनाया था। इस चित्र में ईसामसीह को अपने साथियों के साथ अन्तिम भोजन करते हुए दिखाया गया है। इस अवसर पर ईसामसीह ने यह कहा था कि यहां उपस्थित लोगों में से एक उन्हें धोखा देगा। ईसामसीह के मुख पर असीम शान्ति के भाव प्रदर्शित किए गए हैं। उनके अनुयायियों को आश्चर्यचकित व एक व्यक्ति के मुख पर अपराध-बोध दिखाया गया है। लियोनार्दो, निस्सन्देह अपने युग के एक महान् चित्रकार थे। साइमौंड ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, **"जो कुछ दांते ने काव्य के माध्यम से किया, वह इन्होंने चित्र के माध्यम से किया।"**

2. राफेल (Rephael : 1483-1520 ई.)—पुनर्जागरण काल का एक अन्य महान् चित्रकार राफेल था। 37 वर्ष की अल्प आयु में ही राफेल की मृत्यु हो गयी, किन्तु उसने अनेक चित्र बनाए। उसके चित्रों पर माइकेल ऐंजेलो का प्रभाव दृष्टिगत होता है क्योंकि उसके साथ राफेल ने अनेक वर्षों तक कार्य किया था। **राफेल के प्रमुख चित्रों में 'सिस्टाइन मेटोना' को कला-पारखियों ने विश्व की अमूल्य निधि माना है।** उसके चित्रों में आकृतियों की सजीवता, सरलता व चेहरों पर कोमलता देखने लायक है। राफेल के चित्रों में मातृत्व, वात्सल्य व भक्ति भाव की प्रधानता है। राफेल द्वारा पोप के प्रासाद में बनाए गए भित्ति चित्र भी कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। सौन्दर्य एवं लावण्य में उसके बनाए चित्र अद्वितीय हैं। राफेल चित्रकार होने के साथ-साथ कवि व वास्तुकार भी था। सैंट पीटर केथेड्रल की रूपरेखा राफेल ने ही तैयार की थी।

3. माइकेल ऐंजेलो (Michel Angelo : 1475-1564 ई.)—माइकेल ऐंजेलो इटली के फ्लोरेन्स नामक स्थान का निवासी था। ऐंजेलो 15-16वीं शताब्दी का सर्वश्रेष्ठ कलाकार और अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था। **ऐंजेलो स्वयं को मूलतः एक मूर्तिकार मानता था, किन्तु उसको यश चित्रकला के द्वारा प्राप्त हुआ।** उसके बनाए हुए सैकड़ों चित्र आज भी प्राप्त होते हैं। ऐंजेलो सुन्दरता का पुजारी था तथा अपने चित्रों में सजीवता लाने के लिए पुरुषों का नग्न चित्रण करता था। यद्यपि ऐंजेलो के चित्र कलात्मक दृष्टि से अद्भुत थे, किन्तु लोगों ने उसको सहारा नहीं दिया। इसी कारण ऐंजेलो अपने जीवनकाल में अत्यन्त निराश रहा। उसकी निराशा का प्रभाव उसके चित्रों पर भी पड़ा। उसने **वेटिकन के सिस्टाइन गिरजाघर की दीवारों**

पर बीस वर्ष के अथक परिश्रम से जो विशाल चित्रमाला चित्रित की, वह उसकी महानता को द्योतक है। इसी चित्रमाला में 'अन्तिम निर्णय' (Last Judgement) नामक चित्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस चित्र में घोर निराशा और आन्तरिक वेदना को अभिव्यक्त किया गया है।

माइकेल ऐंजेलो ने अनेक प्रसिद्ध मूर्तियों का भी निर्माण किया था। उसकी मूर्तियों में दो अत्यन्त प्रसिद्ध हैं—प्रथम, फ्लोरेन्स के नागरिकों के लिए बनायी गयी डेविड की विशाल मूर्ति तथा दूसरी रोम के सेंट पीटर गिरजाघर के द्वार पर रखी हुई मूर्ति। माइकेल ऐंजेलो ने रोम में कैथेड्रल की गुम्बद की रूपरेखा भी बनायी थी जिसे आधुनिक समय में भी अद्भुत माना जाता है।

4. **दांते** (Dante : 1265-1321 ई.)—दांते का जन्म इटली के फ्लोरेन्स नगर में एक साधारण परिवार में हुआ था। इटली में उस समय दो प्रमुख दल—सम्राट समर्थक व पोप समर्थक थे। दांते सम्राट-समर्थक दल का सदस्य था, अतः उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। 1302 ई. में उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति छीन ली गयी तथा उसे फ्लोरेन्स से निष्कासित कर दिया गया। परिणामस्वरूप दांते को अपने जीवन के अन्तिम बीस वर्ष इधर-उधर भटकते हुए व्यतीत करने पड़े। अपने निर्वासन काल में दांते ने इटली में व्याप्त पारस्परिक द्वेष, हिंसा, कलह आदि को देखा तथा वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इटली में व्याप्त अराजकता एक सुदृढ़ शासन-व्यवस्था के द्वारा ही समाप्त की जा सकती है। इसी उद्देश्य से उसने 1310 ई. **में एक पुस्तक 'डी-मोनार्किया'** (De-Monarchia) **अर्थात् 'राजतन्त्र' की रचना की।** इस ग्रन्थ में दांते ने एक सार्वभौम ईसाई साम्राज्य की कल्पना की जिसका सर्वोच्च शासक सम्राट हो तथा जो पोप की सत्ता से पूर्णतया स्वतन्त्र हो। दांते की यह पुस्तक तीन भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में विश्व के कल्याण के लिए एक साम्राज्य या 'सम्राट-तन्त्र' की आवश्यकता का, दूसरे भाग में रोमन लोगों के साम्राज्य का निर्माण तथा तीसरे भाग में पोप तथा सम्राट के पारस्परिक सम्बन्धों का वर्णन तथा सम्राट की पोप से स्वतन्त्र राजसत्ता का समर्थन किया गया है।

दांते का मूलभूत सिद्धान्त यह था कि वह राजसत्ता को पोप के नियन्त्रण से मुक्त कराना चाहता था। उसका विचार था कि एक सार्वभौम सत्ता का होना आवश्यक है। उसने 'मोनार्किया' में लिखा है, **"विश्व कल्याण के लिए साम्राज्य एक अनिवार्यता है।"** राजसत्ता को धर्म सत्ता से मुक्त कराने के सिद्धान्त के प्रतिपादकों में दांते का नाम उल्लेखनीय है। दांते पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गैटिल ने लिखा है, **"उसकी विचारधारा साम्राज्यवादी सिद्धान्त की सर्वाधिक तर्कसंगत और व्यवस्थित अभिव्यक्ति थी। यद्यपि उसके आदर्श स्पष्टतया मध्ययुगीन थे, तथापि उनमें इस आधुनिक विचार के कुछ चिह्न भी विद्यमान हैं कि राज्य को व्यक्ति के लिए अस्तित्व में रहना चाहिए तथा उसके संचालन में व्यक्ति का भाव होना चाहिए।"**[1]

दांते की कल्पना यद्यपि मध्ययुगीन है, किन्तु उसमें दो बातें आधुनिक युग के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। **प्रथम,** राष्ट्रीयता तथा स्थानीय स्वायत्तता में सन्तुलन और सामंजस्य का सुझाव। दांते अपने द्वारा प्रतिपादित साम्राज्य के सिद्धान्त की कल्पना इसी आधार पर करता है और

1 "The most logical and systematic statement of the imperial theory of Dante.........Although his ideas were distinctly medieval he revealed traces of the modern idea that the statre should exist for the sake of the individual and that the individual should have a share in its management."

—Gettle, *History of Political Thought*, p. 115.

सम्राट का एक निरंकुश शासक के रूप में नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षक के रूप में वर्णन करता है, आधुनिक संघवाद (Federalism) का यह एक आधारभूत सिद्धान्त है। इस प्रकार दांते को संघवाद का प्रतिपादक माना जा सकता है। **द्वितीय**, दांते द्वारा शान्ति की उद्घोषणा। दांते का विचार था कि शान्ति की स्थापना विश्वशान्ति के द्वारा ही सम्भव है। प्रादेशिक अथवा जातीय आधार पर शान्ति की स्थापना नहीं की जा सकती। इस दृष्टिकोण से दांते अन्तर्राष्ट्रवाद का सन्देशवाहक था।

1321 ई. में दांते की रावेन्ना नामक नगर में मृत्यु हो गयी।

5. **विलियम शेक्सपियर** (William Shakespeare : 1564-1616 ई.)—विलियम शेक्सपियर की गणना विश्व के महानतम् साहित्यकारों में की जाती है। विलियम शेक्सपीयर का जन्म 1564 ई. में स्मिथफील्ड नामक ग्राम में हुआ था। स्मिथफील्ड स्ट्रेटफोर्ड (इंग्लैण्ड) के समीप था। विलियम शेक्सपीयर के पिता जॉन शेक्सपीयर (John Shakespeare) तथा पितामह रिचर्ड शेक्सपीयर (Richard Shakespeare) साधारण किसान थे। शेक्सपीयर की मां का नाम मेरी आरडन (Mary Arden) था। शेक्सपीयर के कुल चार भाई व दो बहिन थीं, किन्तु शेक्सपीयर से बड़े एक भाई व बहिन की बचपन में ही मृत्यु हो गयी थी। शेक्सपीयर के जीवन के प्रथम तेरह वर्ष आर्थिक सम्पन्नता में गुजरे। 1577 ई. में उसके पिता के व्यापार की स्थिति बिगड़ने पर विलियम शेक्सपीयर को स्कूल छोड़ना पड़ा तथा उसके पिता ने उसे भी व्यापार करने के लिए प्रेरित किया। अठारह वर्ष की उम्र में 15 नवम्बर, 1582 ई. को विलियम का विवाह ऐन हेथवे (Anne Hathaway) से हुआ, जो उससे उम्र में आठ वर्ष बड़ीं थी। अगले वर्ष उनके एक पुत्री हुई जिसका नाम सुसाना रखा। उसके बाद विलियम शेक्सपीयर को जुड़वां बच्चों की प्राप्ति हुई जिसके नाम हेमनेट (Hamnet) तथा जूडिथ (Judith) थे।1586 ई. के लगभग विलियम शेक्सपीयर ने स्ट्रेटफोर्ड के निकट गांव में कुछ समय के लिए अध्यापन कार्य भी किया।

1586 ई. में विलियम शेक्सपीयर ने आर्थिक विपन्नता के कारण लन्दन जाने का निर्णय लिया। **लन्दन में वे 1586 ई. से 1609 ई. तक रहे तथा अभिनय करते रहे।** अभिनय के क्षेत्र में शेक्सपीयर ने नाम कमाया तथा विभिन्न थियेटरों में कार्य किया। रानी ऐलिजाबेथ के समक्ष भी उन्होंने नाटक प्रस्तुत किया। नाटकों में कार्य करने व उसकी रचनाओं से शीघ्र ही शेक्सपीयर की आर्थिक स्थितिं सुधरने लगी। उसके अपने पिता पर चढ़े ऋण को भी उतारना प्रारम्भ कर दिया। महारानी एलिजाबेथ की मृत्यु 1603 ई. में हुई। उसके बाद इंग्लैण्ड का शासक जेम्स प्रथम बना। जेम्स प्रथम के समय में शेक्सपीयर की प्रसिद्धि चरम सीमा पर पहुंच गयी। क्राम्पटन तथा रिकेट ने लिखा है, "**कोई भी राजकीय उत्सव बिना शेक्सपीयर के आयोजित नहीं होता था। उसके नाटकों की मांग निरन्तर बढ़ रही थी।**"[1]

विलियम शेक्सपीयर ने साहित्यिक लेखन का कार्य 1588 ई. से 1612 ई. तक किया। उसके रचनाकाल को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। **पहले भाग (1588-1594) में ऐतिहासिक नाटकों का प्रभुत्व है।** इस काल की उसकी प्रमुख रचनाएं—**'रोमियो तथा जूलियट'** (Romeo and Juliet), **'द मर्चेण्ट ऑफ वेनिस'** (The Merchant of Venice), **'लव्स**

1 "No great court festivities were complete without Shakespeare and his company and there was a constant demand for the great writer's plays."
—Crompton-Rickett, *A History of English Literature*, p. 131.

लेबरस लोस्ट' (Love's Labour's Lost), **'द कामेडी ऑफ एररस'** (The Comedy of Errors), **'द जेण्टलमेन ऑफ वेरोना'** (The Gentlemen of Verona) आदि हैं।

इसी दौरान उसने पहली कविता **'वीनस एण्ड एडोनिस'** (Venus and Adonis) भी 1593 ई. में लिखी।

रचनाकाल का दूसरा भाग (1594 ई. से 1600 ई.) तक रहा। इस काल के नाटकों में उत्कृष्टता है। अधिकांश लघुकाव्य (Sonnets) भी इसी काल में शेक्सपीयर ने लिखे। इस युग की प्रमुख रचनाओं में **'द टेमिंग ऑफ द शुरू'** (The Taminn of the Shrew), **'द मेरी वाइव्स ऑफ विन्डसर'** (The Merry Wives of Windsor), **'एस यू लाइक इट'** (As You Like it), **'तारक्विन एण्ड ल्यूक्रीस'** (Tarquin and Lucrece) प्रमुख हैं।

तीसरे भाग (1600-1608 ई.) में शेक्सपीयर की अधिकांश रचनाएं दुखान्त हैं। इस युग की प्रमुख रचनाएं—**'आल इज वेल दैट एण्ड इज वेल'** (All's Well that End's Well) **'मीजर फार मीजर'** (Measure for Measure), **'जूलियस सीजर'** (Julius Caesar), **मेकबेथ** (Macbeth), **'हेमलेट'** (Hamlet) हैं।

चौथे भाग (1608 ई. 1612 ई.) की भी प्रमुखतया दुखद रचनाएं ही हैं। **'एण्टोनी और क्लीओपेट्रा'** (Antony and Cleopatra), **'पेरीक्लीज'** (Paricles), **'टाइमन ऑफ एथेन्स'** (Timon of Athens) इस युग की प्रमुख रचनाएं हैं।

शेक्सपीयर के नाटकों की विशेषता यह है कि जीवन के प्रत्येक पक्ष को इसमें दर्शाया गया है।[1] इसी कारण विश्व साहित्य के अग्रगण्य रचनाकारों में विलियम शेक्सपीयर को माना जाता है। शेक्सपीयर के बिना अंग्रेजी साहित्य अधूरा है। **उसकी महानतम् कृति 'हैमलेट' मानी जाती है।** शेक्सपीयर को विश्व साहित्य का प्रतीक भी माना जाता है। शेक्सपीयर की कृतियों पर कुछ आलेचकों ने आरोप लगाया है कि वे अन्य लेखकों के द्वारा लिखी गयी थीं। इन लेखकों में बेकन, अर्ल ऑफ आक्सफोर्ड, न्यूमांट, फ्लेचर तथा मारलो का नाम लिया जाता है, किन्तु इस प्रकार के आरोप को आलोचक प्रमाणित नहीं कर सके हैं। अतः समस्त रचनाओं को शेक्सपीयर द्वारा रचित ही मानना चाहिए।

52 वर्ष की आयु से शेक्सपीयर का स्वास्थ्य गिरने लगा। शेक्सपीयर लन्दन छोड़कर अपने पैतृक निवास स्ट्रेटफोर्ड आ गया, किन्तु 1616 ई. में उसे तीव्र ज्वर हुआ, जिसके कारण 23 अप्रैल, 1616 ई. को उसका स्वर्गवास हो गया। 25 अप्रैल, 1616 ई. को स्ट्रेटफोर्ड के चर्च में उनको दफन कर दिया गया। विलियम बेसी (William Basse) ने शेक्सपीयर के दफन किए जाने के समय के लिए लिखा है, **"इस संगमरमर के पत्थर के नीचे बहादुर, किन्तु दुखान्त नाटक का रचयिता अकेला सो रहा है।"**[2]

6. सरवेण्टीज (Cervantes : 1547-1616 ई.)—सरवेण्टीज का जन्म स्पेन में 1547 ई. में हुआ था। वह स्पेन का एक प्रमुख विद्वान तथा लेखक था। **उसकी सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक 'डानक्विक्सोट' है, जिसने उसे विश्व प्रसिद्ध बना दिया।** इस पुस्तक में उसने मध्यकालीन परिस्थितियों का वर्णन किया है तथा मध्यकालीन शूरता पर व्यंग्य किया है। इस पुस्तक का नायक विश्व को सुधारने का प्रयास करता है। इस दौरान उसे किन-किन कष्टों का सामना

1 "In Shakespeare drama almost every phase of the life of the age is mirrored."
—Compton Rickett, *op. cit.*, p. 134.

2 "Under this carved marble of thine own,
Sleep, brave tragedian, Shakespeare, sleep alone." —*William Basse*

करना पड़ता है, इसका अत्यन्त सुन्दर वर्णन सरवेण्टीज ने किया है। सरवेण्टीज द्वारा लिखे गए कुछ वाक्य अत्यधिक प्रचलित हुए हैं। उदाहरणार्थ—'प्रत्येक कुत्ते का अपना दिन आता है', 'एक से पंखों से पक्षी एक साथ रहते हैं' आदि।

1616 ई. में सरवेण्टीज की मृत्यु हो गई।

7. **डेसिडेरियस इरैस्मस** (Desiderius Erasmus : 1466-1536 ई.)—इरैस्मस का जन्म 1466 ई. में हालैण्ड के गौडा (Gouda) नामक स्थान पर हुआ था। **उसका प्रारम्भिक नाम हीरस्मस (Herasmus) था, जिसे उसने यूनानी व लैटिन धर्म से प्रभावित होकर बदला व अपना नाम डेसिडेरियस इरैस्मस (जिसका अर्थ 'The desired beloved' होता है) रखा।** इरैस्मस की प्रारम्भिक शिक्षा गौडा गांव में घर पर ही हुई। जिस समय इरैस्मस की उम्र 6 वर्ष की थी, उसकी माता की मृत्यु हो गयी। इसके बाद उसे पढ़ने के लिए डिवेण्टर (Deventer) नामक स्थान पर सैंट लीबुइन चर्च (St. Lebuin Church) भेज दिया गया। इसी चर्च में अध्ययन करने के दौरान इरैस्मस में अध्ययन व मानवता के प्रति प्रेम ज़ाग्रत हुआ। यहीं पर उसने लैटिन भाषा व साहित्य का भी अध्ययन किया। 1484 ई. में उसके पिता ने उसे मठों का जीवन व्यतीत करने के लिए भेज दिया। मठों में रहते हुए ही उसने मठों व धर्म में फैले हुए भ्रष्टाचार को देखा। 1492 ई. में तक वह एक पादरी के रूप में कार्य करता रहा। 1494 ई. में वह केम्बाई के बिशप का सचिव बन गया। इस कार्य के दौरान उसने बिशप को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि वह उसे पेरिस विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए भेज दे। 1495 ई. से 1499 ई. तक इरैस्मस पेरिस व हालैण्ड आता-जाता रहा व शिक्षा ग्रहण करता रहा। 1499 ई. में उसे इंग्लैण्ड के एक बैरन (सामन्त) विलियम ब्लौंट (William Blount) ने इंग्लैण्ड आमन्त्रित किया। इरैस्मस की इस इंग्लैण्ड यात्रा ने उसके जीवन की दिशा को ही बदल दिया।

इंग्लैण्ड की यात्रा के दौरान उसकी भेंट इंग्लैण्ड के प्रमुख विद्वानों थामस मूर, जॉन कालेट तथा थामस लिनेकर आदि से हुई। इरैस्मस इन विद्वानों से अत्यधिक प्रभावित हुआ। ये विद्वान भी इरैस्मस की योग्यता से प्रभावित हुए तथा जब उन्होंने लन्दन में सेण्ट पाल स्कूल की स्थापना की तो उसके संविधान की रचना करने का श्रेय इरैस्मस को ही दिया गया। 1500 ई. में इरैस्मस ने एक पुस्तक '**कालेक्टेनिया एडेगिओरम** (Collectanea Adagiorum) की रचना की, जो अत्यन्त लोकप्रिय हुई व उसके अनेक भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हुए। इसके बाद उसने '**कोलोक्वीज**' (Colloquies) तथा '**हैण्डबुक ऑफ ए क्रिश्चियन सोल्ज़र**' (Handbook of a Christian Soldier) प्रकाशित कीं।

उसकी योग्यता का यश धीरे-धीरे फैलने लगा तथा विभिन्न स्थानों से लोग उसके विचारों को सुनने के लिए उसे आमन्त्रित करने लगे। उसने अपनी रचनाओं के द्वारा यूरोप में व्याप्त अन्धविश्वास, अज्ञानता व असहिष्णुता को दूर करने का प्रयास किया। **उसकी महानतम् कृति 'द प्रेज ऑफ फौली' (The Praise of Folly) है।** इस पुस्तक में व्यंगात्मक शैली में उसने धर्माधिकारियों का मजाक उड़ाया व चर्च में व्याप्त बुराइयों पर आघात किया।

उसके विचारों से प्रभावित होकर मार्टिन लूथर ने उससे पत्र-व्यवहार किया व चर्च के विरुद्ध संघर्ष में उससे सहायता मांगी, किन्तु इरैस्मस उदारवादी व्यक्ति था। उसने लूथर से धीरे-धीरे परिवर्तन लाने के लिए कहा। लूथर ने उससे खुले रूप में धर्म सुधार आन्दोलन में भाग लेने को कहा, किन्तु इरैस्मस ने लूथर की इस प्रार्थना को ठुकरा दिया। इसी कारण इरैस्मस

को **'प्रबुद्ध किन्तु डरपोक विद्वान'** कहा जाता है। इरैस्मस आचार व व्यवहार पर अधिक जोर देता था क्योंकि उसका विचार था कि **वास्तविक धर्म हृदय से उत्पन्न होता है, चर्च के कानूनों से नहीं।**[1] यही कारण था कि उसने कहा, **"मेरा हृदय कैथोलिक है, किन्तु पेट लूथरवादी।"**[2]

इरैस्मस ने 1515 ई. में बाईबिल का लेटिन भाषा में अनुवाद भी किया, जिससे उसे अपार यश मिला।

60 वर्ष की आयु के पश्चात् उसका स्वास्थ्य खराब होने लगा, किन्तु फिर भी उसने अपने मानववादी कार्यों को जारी रखा। उसको गठिया, नींद न आना व अनेक अन्य बीमारियों ने घेर लिया। 6 जून, 1536 ई. को बेस्ले (Basle) में उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी कब्र पर बेस्ले के नागरिकों ने पत्थर पर **"प्रत्येक क्षेत्र में अतुलनीय पांडित्य वाला व्यक्ति"**[3] लिखवाया। ग्रीन ने इरैस्मस की प्रशंसा करते हुए लिखा है, **"अपने युग के सर्वाधिक तहजीब वाले व्यक्ति की मृत्यु उस समय हुई जब पुनर्जागरण का युग धर्म-सुधार के युग से मिल रहा था। इरैस्मस ने दोनों के मध्य रेखा को स्पष्ट किया तथा वास्तव में इसी कारण पुराने पुरोहितों व नवीन विचारों वाले व्यक्तियों, दोनों के द्वारा ही वह ठुकराया गया।"**[4]

8. पेट्रार्क (Petrarch : 1304-1374 ई.)—पुनर्जागरणकालीन इटली के साहित्यकारों में पेट्रार्क को महानतम् माना जाता है। पेट्रार्क का जन्म 1304 ई. में फ्लोरेन्स नामक नगर में हुआ था। पेट्रार्क को यूनानी एवं लैटिन साहित्य में विशेष अभिरुचि थी। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन यूनानी एवं लैटिन साहित्य के अध्ययन व प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों को ढूंढने में व्यतीत किया। उसने ऐसे ग्रन्थों के रख-रखाव के लिए यूरोप के विभिन्न स्थानों पर पुस्तकालयों व संग्रहालयों की स्थापना की। पेट्रार्क सिसरो का घोर समर्थक था।

पेट्रार्क ने अपना साहित्यिक जीवन इटैलियन भाषा में रचनाओं का सृजन करके किया। कालान्तर में लैटिन भाषा के स्तर को सुधारने के लिए उसने लैटिन में रचनाएं लिखीं। **पेट्रार्क को वास्तविक यश उसके द्वारा रचित सोनेटों के द्वारा प्राप्त हुआ। सोनेट चौदह पंक्तियों के लघुकाव्यों को कहते थे।** पेट्रार्क के सोनेटों के द्वारा इटली के साहित्य को विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की श्रेणी में ला खड़ा किया। पेट्रार्क ने रोम के प्रसिद्ध सेनानायक सीपीयो के जीवन पर आधारित एक लम्बा गीत भी लिखा। पेट्रार्क की एक अन्य प्रसिद्ध रचना **'फेमेलियर लेटरस'** थी।

उसकी रचनाओं व मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण पेट्रार्क को **'मानववाद का पिता'** कहा जाता है। पेट्रार्क एक महान् कवि व साहित्यकार होने के साथ-साथ कानूनशास्त्री भी था। उसकी सबसे बड़ी देन यूरोप के लोगों में यूनानी तथा लैटिन साहित्य में रुचि उत्पन्न करना थी। पेट्रार्क के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप मानववादी विचारधारा का यूरोप के दूसरे क्षेत्रों में भी प्रसार हुआ।

पेट्रार्क की 1374 ई. में मृत्यु हो गयी।

1 "It was his belief that true religion came from the heart and it did not need the complicated theology."
2 "My heart is Catholic but my stomach is Lutheran."
3 "A man of incomparable erudition in every branch of learning."
4 "The most cultured man of his time was dead at the moment when renaissance period was blending into the reformation. Erasmus had straddled the line of demarcation and had in effect paid the penalty of being rejected by the priests of the old and the prophets of the new." —Green, *Hundred Great Thinkers*, p.165.

9. थॉमस मूर (Thomas More : 1478-1535 ई.)—थामस मूर का जन्म 7 फरवरी, 1478 ई. को इंग्लैण्ड में हुआ था। उसके पिता जोन मूर व माता एगनेस ग्रेंगर (Agnes Granger) थी। उसके पिता जज थे। उन्होंने थॉमस मूर को प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त, आर्कबिशप कार्डिनल जान मोक्टन के सुपुर्द उच्च शिक्षा दिलाने के लिए कर दिया। तत्पश्चात् थॉमस मूर ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से कानून का अध्ययन किया। थॉमस मूर की इरैस्मस से मुलाकात ऑक्सफोर्ड में हुई। इरैस्मस के अतिरिक्त उसकी मित्रता तत्कालीन विद्वान लिनेकर, लिलि, कालेट, आदि से हुई जो जीवनपर्यन्त बनी रही।

थॉमस मूर ने शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वकालत का पेशा अपनाया। उसकी तर्क करने की अद्भुत क्षमता से प्रभावित होकर इंग्लैण्ड के राजा हेनरी VIII ने उसे शेरिफ (Sheriff) के पद पर नियुक्त किया। तत्पश्चात् उसने हेम्पशायर में 'शान्ति निरीक्षक' (Commissioner of Peace) तथा फ्लेण्डर्स में राजदूत के रूप में कार्य किया। 1539 ई. में हेनरी-VIII ने उसे 'हाई चांसलर' (High Chancellor of England) बनाया। मूर ने तीन वर्षों तक इस पद पर कार्य किया, किन्तु हेनरी-VIII की कैथरीन से विवाह के विवाद पर उसने 15 मई, 1532 ई. को त्यागपत्र दे दिया। थॉमस मूर के इस कार्य से हेनरी-VIII अत्यन्त क्रोधित हुआ। मूर पर रिश्वत लेने, आचरण ठीक न होने जैसे अनेक आरोप लगाए गए जो झूठे प्रमाणित हुए। फिर भी 17 अप्रैल, 1534 ई. को मूर को सजा देकर 'टावर' भेज दिया गया। मूर ने कहा, "**मैं राजा का अच्छा सेवक हूं, किन्तु ईश्वर का सर्वप्रथम।**"[1]

थॉमस मूर अपने राजनीतिक जीवन के लिए नहीं वरन् साहित्यिक रचनाओं व विचारों के लिए अधिक प्रसिद्ध है। उसकी प्रमुख कृतियों में '**एपोलोजी**' (Apology), '**डाइलोग्स**' (Dialogues) तथा '**कोनिकल ऑफ रिचर्ड-III**' (Chronicle of Richard-III) हैं। ये रचनाएं उसकी एक दार्शनिक, विद्वान एवं मानववादी होने की परिचायक हैं।

उपरोक्त समस्त रचनाओं से अधिक प्रसिद्ध उसकी महत्वपूर्ण कृति '**यूटोपिया**'[2] (Utopia) है, जो मूलतः लैटिन भाषा में लिखी गयी थी। इसकी रचना 1516 ई. में हुई थी तथा इसका प्रथम अंग्रेजी अनुवाद 1551 ई. में हुआ। 'यूटोपिया' ने ही मूर को वास्तविक यश दिलाया। 'यूटोपिया' का अर्थ '**कल्पित लोक**' है। इस ग्रन्थ में थॉमस मूर ने अपने युग के समाज और सरकार की हास्यपूर्ण आलोचना की। इस पुस्तक में मूर ने एक ऐसे राज्य की कल्पना की "**जिसमें न्याय का उद्देश्य लोककल्याण हो, जहां सबको धार्मिक स्वतन्त्रता हो, जो निर्धन न हो क्योंकि सारी सम्पत्ति पर सबका अधिकार समान होगा, जहां सब को काम हो, जहां प्रजा को प्रताड़ित करने वाले राजा तक को पदच्युत व दण्डित किया जा सके। जहां सभी बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो और जहां दण्ड का उद्देश्य अपराधी को सच के लिए सच्चरित्र बनाना हो।**" यही कारण है कि ग्रीन ने लिखा है, "**इस पुस्तक में व्यक्त विचार उसके समकालीन समाज को देखते हुए कहीं आगे के थे।**"[3]

---

1 "I am the king's good servant but God's first."

2 यूटोपिया की परिभाषा New World Dictionary में इस प्रकार दी गयी है—"An imaginary island described as having a perfect political and social system, subject and title of a book written by Sir Thomas More in 1516. Often any place, state, or situation of ideal perfection, any visionary scheme of system for an ideally perfect social order."

3 "The thoughts expressed in this satire of his contemporary society represent thinking advanced for beyond his age."

—Green, *Hundred Great Thinkers*, p. 128.

थॉमस मूर का विवाह जेन कालेट (Jane Colet) के साथ हुआ था, जिससे उनके चार बच्चे थे। थॉमस मूर को उनमें से मेग (Meg) से विशेष स्नेह था। दुर्भाग्यवश जेन कालेट की अल्पायु में ही मृत्यु हो गयी। मूर ने दूसरा विवाह डेम एलिस (Dame Alice) से किया। डेम एलिस अच्छी पत्नी साबित न हुई।

1535 ई. में थॉमस मूर की मृत्यु हो गई।

10. **फ्रांसिस बेकन** (Francis Bacon : 1561-1626 ई.)—फ्रांसिस बेकन का जन्म लन्दन में 22 जनवरी, 1561 ई. को हुआ था। उसके पिता सर निकोलस तूकन व माता ऐन कुक (Anne Cocke) थीं। ऐन कुक एक सच्चरित्र, साहसी, पढ़ी-लिखी तथा धार्मिक महिला थीं। वह धार्मिक आन्दोलन की समर्थक थीं। फ्रांसिस बेकन पर उनकी माता के विचारों का गम्भीर प्रभाव पड़ा। 12 वर्ष की अवस्था में उसने ट्रिनिटी कालेज, केम्ब्रिज में प्रवेश लिया। दो वर्ष वहां पढ़ने के उपरान्त फ्रांसिस ने लन्दन जाकर कानून का अध्ययन किया। 1576 ई. में वह पेरिस में इंग्लैण्ड के राजदूत सर नालेट का सहायक नियुक्त हुआ। वह दो वर्ष तक फ्रांस में इसी पद पर कार्य करता रहा। इसी समय अचानक पिता की मृत्यु हो जाने के कारण वह इंग्लैण्ड लौट गया। 1593 ई. में वह मिडिलसेक्स से कामन सभा का प्रतिनिधि बन गया। 1607 ई. में वह सोलिसिटर जनरल तथा 1613 ई. में एटोर्नी जनरल बन गया।

बेकन अत्यन्त प्रतिभाशाली व्यक्ति था। उसके निबन्ध आज भी विश्व में आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। बेकन का महत्वपूर्ण योगदान इंग्लिश गद्य में व्याप्त अस्पष्टता को दूर करना था। उसके द्वारा लिखित प्रमुख निबन्धों की संख्या 10 है, जिनमें प्रमुख—**'द न्यू एटलांटिस'**, (The New Atlantis), **'द हिस्ट्री ऑफ हेनरी-VII'**, (The History of Henry-VII), **'द एडवान्समेण्ट ऑफ लरनिंग'** (The Advancement of Learning) हैं। अपने इन निबन्धों में उसने विज्ञान पर आधारित एक नवीन दार्शनिक विचारधारा को स्थापित करने का प्रयास किया। बेकन का कहना था कि मध्यकालीन दर्शन के स्थान पर प्रकृति एवं भौतिक विज्ञान का अध्ययन करना चाहिए। इसी कारण बेकन को **'आधुनिक विज्ञान का पिता'** (Parent of Modern Science) कहा जाता है। काम्पटन एवं रिकेट ने बेकन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, **"मृत्यु के तीन सौ वर्षों के पश्चात् भी बेकन का नाम साहित्यिक एवं वैज्ञानिक जगत में, अन्य लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक देदीप्यमान है। उसके समकालीन किसी भी व्यक्ति में उसके समान दूरदर्शिता नहीं थी। स्पष्ट विचार तथा योग्य सुझाव देने में वह अतुलनीय था।"**[1]

बेकन के कोई सन्तान नहीं थी। 9 अप्रैल, 1626 ई. को बेकन की मृत्यु हो गई।

11. **गैलीलियो** (Galileo : 1564-1642) ई.)—गैलीलियो को विश्व के महानतम् वैज्ञानिकों में से एक माना जाता है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सत्य का पता लगाकर धार्मिक पुस्तक के कथनों एवं अन्धविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया।

गैलीलियो का जन्म इटली में 1564 ई. में हुआ था। उसका पूरा नाम गैलीलियो गेलीलि (Galileo Galilei) था। गैलीलियो को बचपन से ही विज्ञान एवं वैज्ञानिक बातों में विशेष अभिरुचि थी। वे विज्ञान से सम्बन्धित अनेक खिलौने भी बनाते थे। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु

1 "There are few names that shine with greater brilliance than Francis Bacon in the literary and scientific world at this day, nearly three hundred years after his death. No man of the age had greater foresight than he; for clear-headed, prudential considerations he was unequalled."

—*A History of English Literature*, pp. 142-44.

की गैलीलियो बहुत गौर से देखते थे। जब वे 17 वर्ष के थे तो एक बार पीसा के गिरजाघर में शाम के समय वे पहुंचे। उसी समय गिरजाघर के पादरी ने जंजीर से बंधे लैम्प को लटकाया। लटकाने के बाद लैम्प दाएं-बाएं झूलने लगा। लैम्प के ये झोंके धीरे-धीरे छोटे होते जा रहे थे। गैलीलियो ने देखा कि प्रत्येक झोंके, चाहे वह छोटा हो अथवा बड़ा, समय बराबर था इसी सिद्धान्त के आधार पर पेण्डुलम वाली घड़ियों का आविष्कार किया। **यहां पर एक दिलचस्प बात का उल्लेख करना अनुपयुक्त न होगा। गैलीलियो ने झोकों का समय नापने के लिए घड़ी का प्रयोग नहीं किया था, क्योंकि तब घड़ी का आविष्कार ही नहीं हुआ था। गैलीलियो ने अपनी नब्ज से हर झोंके का समय ज्ञात किया था क्योंकि वे जानते थे कि नब्ज की प्रत्येक धड़कन में समान समय लगता है।**

1587 ई. में 23 वर्ष की अल्पायु में गैलीलियो ने पीसा के विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर कार्य करना प्रारम्भ किया तथा 1589 ई. में उन्हें विश्वविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ प्राध्यापक घोषित किया गया। प्राध्यापक के रूप में कार्य करते हुए ही उन्होंने किसी पुस्तक में पढ़ा कि यदि एक ही ऊंचाई से विभिन्न भार की वस्तुओं को गिराया जाए तो भारी वस्तु हल्की वस्तु से पहले जमीन पर गिरेगी। गैलीलियो ने इस सिद्धान्त को गलत प्रमाणित किया। उन्होंने पीसा की मीनार से हजारों दर्शकों के समक्ष 100 पौण्ड व 1 पौण्ड के दो गोले एक साथ गिराकर सिद्ध कर दिया कि दोनों गोले साथ-साथ गिरेंगे। **वस्तु के गिरने पर भार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, यह उन्होंने इस प्रयोग से प्रमाणित कर दिया।**

गैलीलियो ने दूरबीन (Telescope) का भी आविष्कार किया। दूरबीन की सहायता से उन्होंने आकाश सम्बन्धी अनेक वस्तुओं की जानकारी प्रदान की। उन्होंने बृहस्पति के उपग्रहों व आकाश गंगा का भी अध्ययन किया। गैलीलियो ने कोपर्निकस के सिद्धान्तों का सत्य होना प्रमाणित किया। कोपर्निकस का विचार था कि पृथ्वी इस ब्रह्माण्ड का केन्द्र नहीं है। पृथ्वी सौर परिवार का सदस्य है। **गैलीलियो ने प्रमाणित किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है।** गैलीलियो को अपने आविष्कारों के कारण अत्यन्त परेशानी का सामना करना पड़ा। वृद्धावस्था में उसे चर्च के अधिकारियों के समक्ष उपस्थित होना पड़ा। गैलीलियो पर इस बात के लिए दबाव डाला गया कि वह अपने सभी कथनों व आविष्कारों को असत्य मान ले, किन्तु गैलीलियो ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। गैलीलियो ने कहा, "मैं आपके हाथों में हूं। ईश्वर जानता है सत्य क्या है, लेकिन मैं भी जानता हूं कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, सूर्य पृथ्वी के चारों ओर नहीं।"

गैलीलियो की वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टप्रद थी। धर्माधिकारियों द्वारा तो उन्हें परेशान किया ही गया, इसके अतिरिक्त 1637 ई. में वे अन्धे हो गए। 1642 ई. में गैलीलियो की मृत्यु हो गयी।

गैलीलियो निस्सन्देह एक महान् वैज्ञानिक थे।

12. **जोहन्नेस केपलर** (Johannes Keplir : 1571-1640)—केपलर को विश्व के महानतम् खगोलशास्त्रियों में से एक माना जाता है। **वह विश्व का पहला वैज्ञानिक था; जिसने सौर-मण्डल की गति के तीन आधारभूत नियमों का प्रतिपादन किया।** उसके इस कार्य ने उसे विश्व प्रसिद्ध बना दिया।

केपलर का जन्म 27 दिसम्बर, 1571 ई. को जर्मनी में वील (Weil) नामक स्थान पर हुआ था। उसके पिता एक छोटी-सी सराय के रखवाले थे। केपलर की अपने पिता के व्यवसाय

में कोई रुचि न थी तथा वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता था। अध्ययन में उसकी रुचि को देखते हुए उसके पिता ने उसे ट्यूबिनिगन विश्वविद्यालय (Tubingen University) भेज दिया। विश्वविद्यालय में केपलर ने अध्यात्मवाद (Theology) की शिक्षा प्राप्त की।

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के दौरान ही एक प्रोफेसर ने निकोलस कोपर्निकस (Nicolaus Coperncus) के खगोलीय सिद्धान्त की व्याख्या की, जिसको केपलर ने सुना। कोपर्निकस ने अपना सिद्धान्त 1543 ई. में प्रतिपादित किया था जिसके द्वारा उसने टाल्मी (Ptolemy) के सिद्धान्त को गलत बताया। टाल्मी ने यह प्रतिपादित किया था कि खगोल मण्डल का केन्द्र पृथ्वी है तथा अन्य ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं। **कोपर्निकस ने प्रतिपादित किया कि सूर्य केन्द्र है जिसके चारों ओर पृथ्वी सहित अन्य ग्रह घूमते हैं।** इस सिद्धान्त को हेलिओसेण्ट्रिक सिद्धान्त (Heliocentric theory) कहा जाता है। केपलर कोपर्निकस के सिद्धान्त से अत्यधिक प्रभावित हुआ व उसने इसी दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उसने सौरमण्डल की गति सम्बन्धी तीन प्रमुख सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। **केपलर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त निम्नवत् थे :**

(i) उसका प्रथम सिद्धान्त **लॉ ऑफ आरबिट्स** (Law of Orbits) कहलाता है। इसके अनुसार सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर गोलाई में नहीं वरन् अण्डाकार रूप में घूमते हैं।

(ii) दूसरा नियम **लॉ ऑफ एरियास** (Law of Areas) कहलाता है। इसके अनुसार किसी भी ग्रह की गति उसकी सूर्य से दूरी पर निर्भर करती है। जब कोई ग्रह सूर्य के निकट होता है तो उसकी गति तीव्र व दूर होने पर गति धीरे होती जाती है।

(iii) तीसरा नियम **लॉ ऑफ पीरियड्स** (Law of Periods) कहलाता है। इसके अनुसार किसी भी ग्रह द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने में लगे समय का वर्ग उसकी सूर्य से औसत दूरी के त्रिघात (Cube) के अनुपात में होता है।

केपलर को अपने द्वारा प्रतिपादित उपरोक्त नियमों के कारण अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। इसी कारण प्रसिद्ध खगोलशास्त्री टाइको ब्राहे (Tycho Brahe) ने उसे 1589 ई. में अपना सहायक नियुक्त किया। 1601 ई. में ब्राहे की मृत्यु हो जाने पर उसे सम्राट रूडोल्फ प्रथम (Rudolph-I) का अवैतनिक खगोलशास्त्री नियुक्त किया गया। केपलर ने भौतिकशास्त्र में भी महत्वपूर्ण शोध कार्य किया। केपलर का भौतिक शास्त्र में प्रमुख कार्य पृथ्वी चुम्बकीय क्षेत्र के विषय में था। केपलर गैलीलियो का समकालीन था, तथा दोनों समय-समय पर एक-दूसरे को अपने कार्यों से परिचित कराते थे।

केपलर का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त निर्धनता में व्यतीत हुआ। 15 नवम्बर, 1640 ई. को दक्षिण जर्मनी के रीगेन्सबर्ग (Regensburg) नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हुई।

पुनर्जागरण की प्रगति के कारण
(FACTORS RESPONSIBLE FOR RENAISSANCE'S PROGRESS)

मध्य युग में एशिया में मुसलमानों ने प्रभुत्व जमाना प्रारम्भ कर दिया था। इन मुसलमानों में अरब अपेक्षाकृत सभ्य थे, किन्तु क्रूर तथा निर्दयी तुर्कों ने अरबों की शक्ति का दमन कर यूरोप की ओर अपने कदम बढ़ाए। ये तुर्क 1453 ई. में यूनानी भाषा के मुख्य केन्द्र कुस्तुन्तुनियां पर भी अधिकार करने में सफल हुए। तुर्कों ने कुस्तुन्तुनियां के निवासियों पर अत्यधिक अत्याचार किए। हजारों व्यक्तियों को, जिसमें अनेक विद्वान भी सम्मिलित थे, मौत के घाट उतार दिया गया। तुर्कों ने तत्कालीन साहित्य को भी जलाना एवं नष्ट करना प्रारम्भ

कर दिया। यूनानी जनता तुर्कों के अत्याचारों से भयभीत होकर यूनान छोड़कर भागने लगी तथा इटली में इन्होंने बसना प्रारम्भ कर दिया। **यूनानी अपने साथ अपनी पुस्तकों को भी साथ लेकर गए थे, अतः यूनानियों ने इटली के निवासियों को यूनानी भाषा, संस्कृति, कला एवं आध्यात्मिकता का ज्ञान दिया। इस प्रकार कुस्तुन्तुनियां** (Constantinople) **के स्थान पर रोम शिक्षा का केन्द्र बन गया।** ये विद्वान् यूरोप के अन्य देशों में भी पहुंचे और नवीन विचारों से जनता को अवगत कराया। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों के विद्वानों ने रोम पहुंचकर प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा उनकी शिक्षाओं का अपने देशों में प्रचार किया।

एक दृष्टिकोण से 'पुनर्जागरण' शब्द अत्यन्त भ्रामक है क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मध्य काल में बौद्धिकता थी ही नहीं, जो कि असत्य है। इसी प्रकार यह मानना कि पुनर्जागरण एकाएक 1453 ई.. में हो गया सम्भव नहीं है। पुनर्जागरण वास्तव में मध्य काल में ही प्रारम्भ हो गया। व्यक्तियों की विचारधारा में चौदहवीं शताब्दी में ही परिवर्तन होने लगा था। पन्द्रहवीं शताब्दी में तो यूनानी साहित्य के अध्ययन के उत्साह ने इस आन्दोलन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की और इसके महत्वपूर्ण परिणामों का कारण यह था कि इस विकास के कारण लोग इस बात को समझने लगे थे कि यूनानी साहित्य का उनके समाज के लिए क्या महत्व है।[1] पुनर्जागरण की प्रगति के निम्नलिखित कारण थे—

(1) आविष्कारों एवं खोज का प्रभाव (Effect of Inventions and Discoveries)— इस पुनर्जागरण की प्रगति में तत्कालीन आविष्कारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में हुए विभिन्न आविष्कार व नवीन खोजें इस प्रकार थीं :

(क) छापाखाना (Press)—1453 ई. से पूर्व आविष्कारों के अभाव में पुनर्जागरण इतना सफल नहीं हो सका था जितना कि तत्पश्चात् हुआ। इन आविष्कारों में अत्यन्त महत्वपूर्ण आविष्कार छापाखाने का था। 1460 ई. में गुटनबर्ग (Guttenburg) नामक व्यक्ति ने सर्वप्रथम इसको जर्मनी में बनाया था। 1476 ई. में केक्सटन (Caxton) ने इंग्लैण्ड में छापेखाने के प्रयोग को प्रचलित किया। छापेखाने से विद्या-प्रसार में अत्यन्त सहायता मिली क्योंकि इससे पुस्तकों का अभाव दूर हो गया। इससे पूर्व पुस्तकों को हाथ से ही लिखना पड़ता था। अतः पुस्तकों की संख्या बहुत कम ही रहती थी, तथा उनका मूल्य बहुत अधिक होता था।

(ख) कागज (Paper)—आधुनिक युग से पूर्व जानवरों की खालों तथा पेड़ की छालों का प्रयोग लिखने के लिए करना पड़ता था, किन्तु अब एक प्रकार की विशिष्ट घास की खोज की गयी जिससे कागज बनाया जाने लगा जो कि खाल की तुलना में अत्यन्त सस्ती थी। अतः छापेखाने एवं कागज के आविष्कार ने पुनर्जागरण के प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(ग) बारूद (Gunpowder)—यद्यपि बारूद का प्रचलन यूरोप में पहले से ही था, किन्तु इस समय बारूद का प्रयोग तोप तथा बन्दूक के द्वारा होने लगा, जिससे इंग्लैण्ड के राजाओं

1 **"The truth is that the beginnings of the Renaissance can be traced far back into the middle ages. It was already very active in the fourteenth century; and a great change in men's outlook was already coming out. The enthusiasm of the fifteenth century for Greek studies only gave a special direction to the movement and reason why it produced such great results was that men had been prepared by earlier developments to appreciate what the Greek classics had to teach them."**
—Ramsay Muir.

ने शक्तिशाली सेना तैयार कर सामन्तों की शक्ति का दमन किया तथा देश में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया।

(घ) **कुतुबनुमा** (Mariner's Compass)—कुतुबनुमा का आविष्कारक इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो था जिसकी सहायता से एशिया के निवासियों ने दूर-दूर देशों की यात्रा एवं व्यापार किया। अब इस कुतुबनुमा का प्रयोग यूरोप में भी प्रारम्भ हो गया जिसने सामुद्रिक यात्रा को सरल बना दिया; जिससे व्यापार के अतिरिक्त नवीन विचारों का आदान-प्रदान भी सम्भव हो सका।

(2) **नवीन भौगोलिक खोजें** (New Geographical Discoveries)—मार्कोपोलो द्वारा कुतुबनुमा के आविष्कार तथा उसकी यात्राओं के विषय में जानकर अनेक व्यक्तियों में यात्रा करने का उत्साह संचारित हुआ। कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने दूर-दूर तक यात्राएं कर अनुभव प्राप्त किया तथा नवीन ज्ञान एवं विचारों के प्रसारण में सहायता दी।

(3) **अरबी अंक** (Arabic Numerals)—यूरोप में पहले रोमन अंकों (I, II, III, IV, V) का प्रयोग होता था, किन्तु अरबों के सम्पर्क में आने से अब अरबी अंकों (1, 2, 3, 4, 5) का प्रयोग होने लगा जिससे गुणा-भाग आदि करना सरल हो गया।

उपर्युक्त समस्त कारणों के अतिरिक्त इंग्लैण्ड में मध्य युग में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिसके कारण जनता ने मध्यकालीन विचारों को त्यागकर आधुनिक विचारधारा को स्वीकार किया। **ये प्रभावशाली घटनाएं—अकाल, सौ वर्षीय युद्ध, किसानों का विद्रोह तथा गुलाब के फूलों का युद्ध—थीं।** इन घटनाओं ने इंग्लैण्ड में जमींदारी प्रथा, सामन्तीय व्यवस्था तथा अन्य मध्ययुगीन कुप्रथाओं को समाप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान किया तथा पुनर्जागरण के रास्ते को साफ किया।

यूरोप में पुनर्जागरण
(RENAISSANCE IN EUROPE)

यूरोप में पुनर्जागरण इटली से प्रारम्भ हुआ जो कि एक धनी देश था। तत्पश्चात् इसकी लहर यूरोप में तीव्रता से फैली। **इटली तथा इंग्लैण्ड में इसका विशेष रूप से प्रभाव पड़ा**, जो कि इस प्रकार है—

(i) इटली में पुनर्जागरण (Renaissance in Italy)

क्रूर तुर्कों द्वारा कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार करने तथा यूनानियों पर अमानुषिक अत्याचारों के परिणामस्वरूप कुस्तुन्तुनिया से बहुत से व्यक्ति भागने पर विवश हुए। ये लोग भागकर इटली में बसने लगे, जहां इनका सम्मान किया गया क्योंकि कुस्तुन्तुनिया यूनानियों का शिक्षा का केन्द्र था वहां का साहित्य, कला, ज्योतिष विद्या, आध्यात्मिक ज्ञान यूरोप में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे। **इटली, यूरोप का एक धनी देश था, अतः यूनानियों को वहां बसने तथा अपने विचारों का प्रचार करने में सहायता मिली।** लैटिन तथा यूनानी भाषा के अनेक विद्यालय खोले गए तथा यूनानियों की अनेक पुस्तकों जिनमें अरस्तू (Aristotle) तथा अनेक यूनानी कवियों की रचनाएं सम्मिलित थीं का अनुवाद पहले ही लैटिन भाषा में किया जा चुका था।

दान्ते (Dante, 1265-1321 ई.), **इटली का एक प्रसिद्ध कवि था**, जिसकी यूनानी एवं लैटिन साहित्य में विशेष रुचि थी। अपनी विश्व-प्रसिद्ध कविता **'डिवाइन कामेडी'** (Divine Comedy) में उसने यूनानी साहित्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

पेट्रार्क (Petrarch, 1304-1374 ई.) **इटली का एक प्रसिद्ध विद्वान था।** उसने सम्पूर्ण इटली, फ्रांस तथा अनेक देशों की यात्राएं कर यूनानी तथा लैटिन पुस्तकों की हस्तलिपियां एकत्रित कीं और उनकी अनेक प्रतियां तैयार करवायीं।

बोकैशियो (Boccacio, 1313-1375 ई.), **यह पेट्रार्क का शिष्य था।** इसने यूनानी भाषा की प्रमुख पुस्तकें **'इलियड'** तथा **'ओडेसी'** (Iliad and Odessey) को खोजकर उनका अनुवाद किया। इसके अतिरिक्त उसने **डीकैमेरन** (Decameron) नामक पुस्तक की रचना की जिससे चॉसर (Chaucer) भी अत्यधिक प्रभावित हुआ था और उसकी विचारधारा इसी पुस्तक पर आधारित थी।

इन विद्वानों के कार्यों ने इटली में जनता को आकर्षित किया था। इसी समय यूनानी विद्वानों के भी इटली में आकर बसने से यूनानी तथा लैटिन साहित्य की प्रगति में तीव्रता आ गयी। इस प्रकार इटली यूरोप में शिक्षा का केन्द्र बन गया।

इटली में दो राज्यों में विशेष रूप से उन्नति हुई थी। ये राज्य थे—फ्लोरेंस तथा **रोम।** कुस्तुन्तुनिया से भागे हुए यूनानियों ने फ्लोरेंस में बड़ी संख्या में बसना प्रारम्भ किया था। यूनानियों के प्रयत्न से वहां विद्यालयों की स्थापना की गयी। **क्रिसोलोर्स** (Chrysolores) **ने फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान देने प्रारम्भ किए** तथा अन्य विश्वविद्यालयों में भी यूनानी भाषा की शिक्षा दी। क्रिसोलोर्स ने यूनानी भाषा का व्याकरण भी तैयार किया जिससे यूनानी भाषा का अध्ययन सुगम हो गया। **मेडिसी** (Medici) **वंश के शासकों ने भी यूनानी भाषा की उन्नति के लिए प्रयत्न किए** तथा फ्लोरेंस में एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना करवायी। **लोरेन्जो-डी-मेडिसी** (Lorenzo-de-Medici) ने अनेक यूनानी विद्वानों को आश्रय दिया तथा दो सौ से अधिक पुस्तकें मेडिसी पुस्तकालय में एकत्रित कीं। लिओनार्डो अत्यन्त विद्या-प्रेमी था, प्रतिवर्ष वह साठ हजार पौंड पुस्तकों पर व्यय करता था। इस प्रकार उसके प्रयत्नों से फ्लोरेंस शिक्षा का एक महान् केन्द्र बन गया।

फ्लोरेंस के अतिरिक्त रोम भी इस समय शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। फ्लोरेंस के समान रोम में अभी अनेक यूनानी विद्वानों ने आकर शरण ली थी। रोम में इन विद्वानों को पोप निकोलस पंचम ने संरक्षणता प्रदान की। **फ्लोरेंस के समान रोम में भी पुस्तकालय की स्थापना की गयी जिसका श्रेय तत्कालीन पोप को है। इस पुस्तकालय का नाम वेटिकन** (Vatican) **रखा गया।** लिओ दसवां भी विद्या-प्रेमी था। उसने रोम के विश्वविद्यालय में सौ अध्यापकों की नियुक्ति की। वह रोम को विश्व की राजधानी मानता था, क्योंकि उसका विचार था कि साहित्यिक क्षेत्र में कोई भी नगर विश्व में रोम की तुलना में नहीं है।

इटली तथा यूनानी विद्वानों की विद्वता उनकी राजकीय एवं पोप से संरक्षण, एवं उनके प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पुनर्जागरण की लहर तीव्र गति से फैली। इसी कारण इटली में प्रचलित था कि **'यूनान का पतन नहीं हुआ वरन् उसका इटली में देशान्तरण हो गया है।'**[1] यहां पर यह जानना आवश्यक है कि सर्वप्रथम पुनर्जागरण इटली में ही क्यों हुआ? **इसके निम्नलिखित प्रमुख कारण थे—**

1. वैदेशिक व्यापार के कारण इटली एक समृद्ध देश था। अतः धनी व्यापारियों ने विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय दिया, जिससे पुनर्जागरण में सहायता मिली।

---

1 **'Greece has not fallen, she has only migrated to Italy.'**

2. व्यापार बढ़ने से शहरों का विकास हुआ, जहां शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करने की बेहतर सुविधाएं थीं।

3. नगरों के विकास के कारण अनेक व्यापारी वहां आते थे। इसके अतिरिक्त धर्मयुद्धों से लौटने वाले सैनिक भी इन शहरों में आकर रुकते थे जिनसे विचारों का आदान-प्रदान सम्भव हुआ।

4. शक्तिशाली एवं धनी व्यापारी वर्ग ने सामन्तों को महत्व देना बन्द कर दिया।

5. इटली में समृद्धि होने से वहां धीरे-धीरे मध्य वर्ग का उदय हुआ। मध्य वर्ग के विचारशील होने के कारण पुनर्जागरण में सहायता मिली।

6. इटली विश्व प्रसिद्ध रोमन सभ्यता का देश था। इटली के निवासी पुनः इटली को उसी स्थिति में देखना चाहते थे।

7. पोप इटली में ही रहता था। अतः उससे मिलने विश्व के प्रमुख व्यक्ति आते थे, जिनमें अनेक विद्वान भी थे, अतः उनके विचारों का जनता पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था।

(ii) इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण (Renaissance in England)

यद्यपि इटली में हुए पुनर्जागरण का प्रभाव इंग्लैण्ड में एडवर्ड चतुर्थ के राज्यकाल में प्रकट होने लगा था, परन्तु हेनरी सप्तम के समय में पुनर्जागरण ने अपनी जड़ों को मजबूत बनाया। **इंग्लैण्ड में उस समय दो प्रसिद्ध विश्वविद्यालय, आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज थे।** ये विश्वविद्यालय ही इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण के केन्द्र बने। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कुछ छात्र इटली अध्ययन हेतु गए। 1465 ई. में **विलियम सैलिंग** प्रथम व्यक्ति था जिसने यूनानी लिपि का अध्ययन किया। **सैलिंग का शिष्य थॉमस लिनेकर** भी इटली गया तथा यूनानी भाषा के अध्ययन के साथ-साथ उसने ज्ञान की प्रत्येक शाखा का अध्ययन किया। उसने अपनी विशिष्ट रुचि औषधि-विज्ञान में प्रदर्शित की तथा चिकित्सक बनकर वह वापस इंग्लैण्ड आया। शीघ्र ही लिनेकर ट्यूडर शासकों का राजकीय चिकित्सक नियुक्त हो गया। लिनेकर ने लन्दन में चिकित्सकों का एक विद्यालय (Royal College of Physicians) स्थापित किया। इसके अतिरिक्त यूनानी साहित्य के विद्वान **ग्रोसिन** तथा **लाइनाक्रे** भी इटली गए तथा लौटकर विश्वविद्यालयों में यूनानी साहित्य पर व्याख्यान दिए। इनके अतिरिक्त कुछ विद्वान जिन्होंने पुनर्जागरण के लिए कार्य किया। इस प्रकार थे—**जान कोलेट** (John Colet) लन्दन के अमीर व्यापारी का पुत्र था। अध्ययन करने के लिए वह इटली गया तथा महान् आलोचक बनकर 1497 ई. में इंग्लैण्ड लौटा। वह सेण्टपॉल विद्यालय में अध्यापक बन गया तथा पोप एवं पादरियों की कटु आलोचना की। उसने अपने व्याख्यानों में परम्परागत विचारों के मूल में जाने का प्रयास किया। उसने अनेक विद्यालयों की भी स्थापना की जिनसे नवीन विचारों के प्रसारण में सहायता मिली। **इरैस्मस** (Erasmus) **एक फ्रांसीसी विद्वान** था तथा अपने समय के प्रकाण्ड पण्डितों में से एक था। इरैस्मस ने भी इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को गति प्रदान की। इरैस्मस ब्रह्मज्ञान (Divinity) के विद्वान के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत था। उसके व्याख्यानों ने जनता में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। छापेखाने के द्वारा सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला वह प्रथम व्यक्ति था। उसने एक पुस्तक **'प्रेज ऑफ फौली'** (Praise of Folly) की रचना की जिसमें उसने चर्च की बुराइयों का वर्णन किया। अपनी एक अन्य रचना **'ग्रीक टेस्टामेण्ट'** (Greek Testament) में भी इरैस्मस ने पोप तथा चर्च की आलोचना की तथा धार्मिक रूढ़िवादिता पर गहरा आघात किया।

इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण को सर्वाधिक शक्ति प्रदान करने वाला व्यक्ति टॉमस मूर था। टॉमस मूर, कालेट तथा इरैस्मस का मित्र था। टॉमस मूर ने राजनीति के क्षेत्र में मुक्त आलोचना की, नयी चेतना का प्रयोग किया तथा 1516 ई. में प्रकाशित अपनी कृति '*Utopia*' (काल्पनिक आदर्श राज्य) में एक ऐसे समाज का चित्र खींचा जिसमें सम्पत्ति का अच्छा फैलाव था, प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित था, कोई निर्धन अथवा पीड़ित न था। कोई क्रूर मालिक न था। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार ईश्वर की आराधना का अधिकार था यह पुस्तक इंग्लैण्ड के धनी वर्ग एवं चर्च पर व्यंग्य था। जनता पर इस पुस्तक का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस पुस्तक ने जनता को तत्कालीन इंग्लैण्ड में व्याप्त बुराइयों के विषय में सोचने पर बाध्य किया तथा आधुनिक युग के समाज का आदर्श प्रस्तुत किया। रैम्जे म्योर के शब्दों में, **"यूटोपिया एक पवित्र प्रजातन्त्र है जहां व्यवहारतः न तो कोई सरकार है, न कर-व्यवस्था है और न कोई अपराध ही होता है।"**[1]

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के समान ही कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के विद्वानों ने भी पुनर्जागरण का प्रसार किया। इन विद्वानों ने, जिनमें **रिचर्ड क्रोक, थामस स्माइट, चेके तथा गजा प्रमुख हैं,** अनेक पुस्तकों की रचनाएं कीं तथा अन्य साहित्यिक कार्य कर पुनर्जागरण को शक्ति प्रदान की।

इन विद्वानों के अतिरिक्त पुनर्जागरण की सफलता का श्रेय **ट्यूडर शासकों** को भी है। हेनरी सप्तम, हेनरी अष्टम ने अपना सम्पूर्ण सहयोग पुनर्जागरण की प्रगति के लिए दिया। महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में पुनर्जागरण अपनी सफलता की चरम सीमा तक पहुंच गया। उसके शासनकाल में विशिष्ट सांस्कृतिक उन्नति इस बात का द्योतक है।

इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण में अन्तर
(DIFFERENCE BETWEEN ITALIAN & ENGLISH RENAISSANCE)

इटली तथा इंग्लैण्ड के पुनर्जागरण के नेताओं में पर्याप्त अन्तर है। इटली के नेताओं ने धर्मशास्त्र में रुचि नहीं ली। उन्होंने इसे समाप्त होने वाले युग का अन्धविश्वास समझकर ठुकरा दिया तथा मैकियावेली जैसे राजनीतिक चिन्तक ने **(जिसकी 'द प्रिंस' नामक पुस्तक 1509 ई. में प्रकाशित हुई)** किसी काल्पनिक आदर्श राज्य का सपना नहीं देखा वरन् युद्ध और कपट के जिन साधनों से सत्ता प्राप्त की जा सकती है तथा प्राप्त सत्ता की रक्षा की जा सकती है, उसका अत्यन्त व्यावहारिक अध्ययन किया, किन्तु इंग्लैण्ड में आलोचना के प्रमुख विषय चर्च के भ्रष्टाचार, अन्धविश्वास तथा राज्य की क्रूरता थे। अतः पुनर्जागरण ने जो कार्य इटली में नहीं किया उसे इंग्लैण्ड में किया। इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार का रास्ता तैयार किया।

पुनर्जागरण के प्रभाव
(EFFECTS OF THE RENAISSANCE)

प्रायः यह माना जाता है कि पुनर्जागरण एक साहित्यिक क्रान्ति था, परन्तु यह उचित नहीं है। पुनर्जागरण ने जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया। मानव जीवन की श्रेष्ठता एवं उसका महत्व बढ़ गया। लोग आशावादी होने लगे। भौतिक सुखों एवं मनोरंजनों को भी मानव जीवन के लिए परम आवश्यक माना गया। तत्कालीन कला एवं साहित्य ने मानव

1 **"Utopia is a pure democracy in which there is practically no government, taxation or crime."** —*Ramsay Muir*

जीवन की कठिनाइयों तथा उनको दूर करने के उपायों को प्रस्तुत किया। **संक्षेप में, पुनर्जागरण के परिणामों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है :**

(I) वाणिज्यवादी क्रान्ति (Commercial Revolution)—पुनर्जागरण का महत्वपूर्ण परिणाम वाणिज्यवादी क्रान्ति के रूप में सामने आया। मध्य युग में सामन्तों ने कृषि को ही अर्थव्यवस्था का आधार मान लिया था। अतः स्थानीय उद्योग-धन्धे आवश्यकतानुसार सीमित उत्पादन ही करते थे। आदान-प्रदान का आधार भी वस्तु विनिमय था, किन्तु यह स्थिति अधिक समय तक यथावत् नहीं बनी रही। **पुनर्जागरण काल में हुए नवीन परिवर्तनों ने व्यापारिक विचारधारा को ही परिवर्तित कर दिया।** 16वीं शताब्दी के अन्त तक यूरोप के अनेक देशों एवं संयुक्त राज्य अमरीका के कतिपय भागों में सोने व चांदी की खानों का पता चल जाने से आदान-प्रदान के आधार मुद्रा विनिमय को अधिक प्रोत्साहन मिलना प्रारम्भ हो गया। मध्ययुगीन वस्तु विनिमय प्रथा अब व्यापार में बाधक मानी जाने लगी। इस स्थिति में व्यापार एवं उद्योग को नियमित करके सोना एवं चांदी प्राप्त करने की विचारधारा वाले एक वर्ग का उद्भव हुआ। इसे इतिहास में वाणिज्यवादी वर्ग एवं उनकी विचारधारा को वाणिज्यवादी विचारधारा के नाम से जाना जाता है। वाणिज्यवादियों ने नारा दिया '**अधिक सोना, अधिक धन एवं अधिक शक्ति।**'[1]

अपने उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वाणिज्यवादियों ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करने की बात कही। निर्यात में वृद्धि एवं आयात में कमी की नीति का मार्ग बतलाया। कृषि को कच्चे माल का स्रोत मानने पर बल दिया। उनकी इस नीति का इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन एवं जर्मनी में अवलम्बन किया गया। फलतः इन देशों के व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। यह स्पष्ट हो गया कि मुद्रा केवल विनिमय का माध्यम ही नहीं है अपितु धन-संचय का साधन भी है। **"इस प्रकार जो व्यापारिक एवं व्यावसायिक परिवर्तन सामने आए उन्हें ही इतिहास में व्यावसायिक/व्यापारिक क्रान्ति (Commerical Revolution) के नाम से जाना जाता है।"**

(II) पूंजीवाद के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन (Social & Economic changes of capitalism)—**16वीं शताब्दी में यूरोप में पूंजीवाद का जन्म एवं विकास एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना थी जिसने आधुनिक युग को पूर्णतः प्रभावित किया।**[2] पूंजीवादी व्यवस्था के परिणामस्वरूप 16वीं सदी में यूरोप के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। यूरोप में पूंजीवादी कृषि का आरम्भ हुआ। अब सामन्तों ने आधुनिक कृषि पद्धति को स्वीकार किया। सामन्तों द्वारा ही प्रताड़ित अर्द्धदास कृषक सामन्तों के नियन्त्रण से मुक्त हुए तथा मध्यम वर्ग का उत्थान हुआ। **अब समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया। प्रथम, धन-सम्पन्न एवं द्वितीय, निर्धन।** पूंजीवाद के विकास ने एक ओर औपनिवेशिक पद्धति को तो जन्म दिया, परन्तु साथ ही दास व्यापार का प्रारम्भ भी हो गया जो कि मानव इतिहास को पूंजीवाद की सर्वाधिक घृणित देन है। पूंजीपति वर्ग एवं मजदूर वर्ग में पारस्परिक संघर्ष ने कालान्तर में समाजवाद को जन्म दिया।

---

1 More Gold, More wealth and More power.

2 "A most significant effect of the expansion of Europe in the Sixteenth century was the stimulus it gave to the development of Capitalism in Europe. For Capitalism has been the prominent economic characteristic of modern times."

—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 79.

राष्ट्रीय व्यापार तथा उद्योग-धन्धों के विकास के लिए अब राज्यों की ओर से विधान प्रस्तुत किए जाने लगे। व्यापारियों के हितों की सुरक्षा के लिए राज्यों द्वारा नियम बनाए जाने लगे। अब पूंजीपति वर्ग राज्य की ओर संरक्षण प्राप्त करने के उद्देश्य से आकर्षित हुए। दूसरी ओर श्रमिक वर्ग भी अपने संरक्षण के लिए राज्य से मांग करने लगा। व्यापार के द्रुतगति से विकास ने यूरोपीय देशों में उपनिवेशों की स्थापना को लेकर भयंकर संघर्ष का आरम्भ कर दिया।

(III) **साहित्य एवं विज्ञान पर प्रभाव** (It Enriched Literature and Science)—मध्यकालीन जनता को विज्ञान तथा राजनीतिक सिद्धान्तों का विशेष ज्ञान था। पुनर्जागरण के समय अनेक विद्वानों के कारण साहित्य में वृद्धि हुई। अनेक पुस्तकें साहित्य एवं विज्ञान पर लिखे जाने तथा पढ़ने का विचार जनता में जाग्रत हुआ तथा अनेक वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार हुआ।

(IV) **बौद्धिक प्रभाव** (Intellectual effect)—इस आन्दोलन का सर्वाधिक प्रभाव जनसाधारण पर पड़ा। जनता में तर्कवादिता ने जन्म दिया। बिना किसी आधार एवं प्रमाण के अब जनता किसी बात को स्वीकार नहीं करती थी। अन्धविश्वास तथा रूढ़िवादिता का अन्त होने लगा।

(V) **राष्ट्रीयता की भावना** (National Feeling)—यूनानी एवं लैटिन भाषाओं से प्रभावित होकर प्रत्येक राष्ट्र एवं उसके समाज में स्वयं को उन्नत करने की भावना जाग्रत हुई। यूनानियों के समान अपनी भाषा को विकसित करने का प्रयास प्रत्येक राष्ट्र करना चाहने लगा। इंग्लैण्ड के लेखकों ने भी पुनर्जागरण से प्रेरित होकर अनेक रचनाएं कीं तथा जातीयता एवं राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित किया।

(VI) **इतिहास पर प्रभाव** (History Writing)—गोथों तथा हूणों के आक्रमणों ने प्राचीन तथा मध्यकालीन इतिहास के मध्य एक खाई बना दी थी। पुनर्जागरण के प्रभाव से जनता में पुनः इतिहास लिखने तथा पढ़ने की भावना उत्पन्न हुई। इस प्रकार पुनर्जागरण ने उपर्युक्त खाई को पाट दिया। इतिहासकारों ने पुनः वैज्ञानिक ढंग से इतिहास-लेखन का कार्य किया।

(VII) **नवीन उपनिवेशों की स्थापना** (Establishment of New Colonies)—पुनर्जागरण के प्रभाव से लोग साहसी हो गए तथा दूर-देशों की समुद्री यात्रा अनेक नाविकों ने की। पुर्तगाल में समुद्री यात्रा के प्रोत्साहन हेतु एक 'नाविक विद्यालय' की स्थापना की गयी। विभिन्न नाविकों द्वारा अपनी समुद्री यात्रा के समय नए-नए प्रदेशों की खोज की गयी। इन नाविकों में कोलम्बस, वास्कोडिगामा, जान कैवर, मैगलेन प्रमुख हैं।

(VIII) **कला पर प्रभाव** (Rebirth of Art)—पुनर्जागरण से जहां एक ओर साहित्यिक क्रान्ति हुई, दूसरी ओर कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण विकास हुआ।[1] **इसका प्रभाव सर्वप्रथम इटली में तथा तत्पश्चात् यूरोप के अन्य राष्ट्रों पर पड़ा।** लोगों का ध्यान पुनर्जागरण के पश्चात्, लैटिन और यूनानी कला तथा भवन-निर्माण की ओर आकर्षित हुआ। उससे प्रभावित होकर यूरोप के अन्य राष्ट्रों ने भी यूनानी कला के नमूने देखकर नवीन कलाकृतियों का निर्माण किया। उस समय का प्रसिद्ध कलाकार **माइकलेंजलो** (Michelangelo) था, जिसने मोसेज

1 'The new spirit stimulated men to marvellous deeds, and especially brought about a wonderful outburst of artistic creation, in Italy first, and later and more faintly in other countries of the West.' —*Ramsay Muir.*

तथा डेविड की मूर्तियों का निर्माण किया जो कला की दृष्टि से उच्च श्रेणी की मानी जाती हैं। माइकलेंजलो ने चित्रकला में भी प्रसिद्धि प्राप्त की। उसने **'लास्ट जजमेण्ट'** नामक चित्र बनाया। माइकलेंजलो के अतिरिक्त लिओनार्डो डा विन्सी, सीटियन आदि प्रसिद्ध चित्रकार उस समय हुए। स्थापत्य तथा चित्रकला के अतिरिक्त संगीत कला में भी विशिष्ट उन्नति हुई।

(IX) **धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रारम्भ** (Paved way for Reformation)—पुनर्जागरण के धार्मिक क्षेत्र में भी गम्भीर प्रभाव हुए। तर्क तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण से जनता के समक्ष पोप तथा चर्च की अनियमितताएं तथा बुराइयां स्पष्ट हो गयीं। विद्वानों ने पोप तथा चर्च पर अपनी लेखनी से प्रहार किया तथा धार्मिक आन्दोलन के मार्ग को साफ बनाया।[1] इसी कारण कहा जाता है—**"पुनर्जागरण के विद्वानों ने धार्मिक आन्दोलन रूपी आंधी को जन्म दिया जिसे बाद में धार्मिक आन्दोलन के पिता लूथर ने शक्ति प्रदान की।**[2]

महत्व
(SIGNIFICANCE)

इस प्रकार पुनर्जागरण होना यूरोप की एक महान् घटना थी। **पुनर्जागरण का विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा सम्पूर्ण समाज पर स्वास्थ्यप्रद प्रभाव पड़ा।** कोलेट ने 'सेंट पाल्ज स्कूल' को एक नवीन शिक्षण प्रणाली के आदर्श के रूप में स्थापित किया और उसका प्रभाव पुरानी संस्थाओं पर भी पड़ा। ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में नए कॉलेज खोले गए। उच्च वर्ग में शिक्षा-संस्कृति का प्रचलन हो गया। हेनरी अष्टम के दरबार में भी अनेक विद्वान थे। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पन्द्रहवीं सदी के **अन्तिम पच्चीस वर्षों में काव्य के महान् पुष्प खिले।** एक ऐसे युग का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें पृथ्वी के नए क्षेत्र, चेतना के नवीन आयाम एक साथ उद्घाटित हुए। वास्तव में यह एक महान् युग का प्रारम्भ था और उस सुप्रभात में जीवन स्वर्गीय वरदान ही था।

यद्यपि पुनर्जागरण ने उपर्युक्त समस्त लाभ तत्कालीन समाज को दिए, किन्तु इसका दूसरा पहलू भी था। **पुनर्जागरण के सभी परिणाम अच्छे न थे।** हर परिवर्तन समाज को उच्चता की ओर ले जाने वाला नहीं था। इटली में तो यह काल राजनीति, धर्म, आचरण संहिता और व्यक्तिगत चरित्र सभी में अन्तर्विरोधों का आभास देता है। सारे समाज और प्रत्येक व्यक्ति में जहां आधुनिक भावनाओं का प्रभाव था वहां मध्यकालीन परम्पराएं भी उस पर अपना प्रभाव बनाए हुए थीं।[3] पुनर्जागरण ने लोगों के मन में यह भावना उत्पन्न की कि वे नैतिकता के प्रतिरोध को दूर कर दें। मैकियावेली का 'राजकुमार' (The Prince) पुनर्जागरण का ही प्रतीक है जहां वह शासक के लिए नैतिकता के आदेशों का पालन करना आवश्यक नहीं

1 'The Reformation in religion was one outcome of the Renaissance.'
—*Ramsay Muir*

2 'The Renaissance scholars laid the eggs which Luther, the father of the reformation, later on hatched.'

3 'But there were also deep shadows, and the evolution away from medieval conditions was not always a progress toward higher standards. The age of Renaissance in Italy was above all an age of confusion and contrast in politics, in religion, in morality and in individual characters. Medieval and modern characteristics existed side by side in the society or the same person, producing violent contradictions and starting incongruities.' —*Ferguson and Bruun*

कहता है।'[1] किन्तु उपर्युक्त सभी दुर्गुणों के पश्चात् भी पुनर्जागरण के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पुनर्जागरण से क्या अभिप्राय है ? इसकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. पुनर्जागरण से आप क्या समझते हैं ? इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।
3. यूरोप में पुनर्जागरण की प्रगति पर एक निबन्ध लिखिए।
4. इंग्लैण्ड में हुए पुनर्जागरण का वर्णन कीजिए तथा इटली व इंग्लैण्ड में पुनर्जागरण में अन्तर बताइए।
5. पुनर्जागरण के प्रभावों की विवेचना कीजिए।
6. पुनर्जागरण कालीन वैज्ञानिक आविष्कारों पर एक लेख लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पुनर्जागरण का क्या अर्थ है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. मानववाद से आप क्या समझते हैं ? संक्षेप में बताइए।
3. यूरोप में पुनर्जागरण काल में कला की उन्नति पर प्रकाश डालिए।
4. यूरोप में पुनर्जागरण काल में साहित्य की उन्नति पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।
5. यूरोप में पुनर्जागरण काल में भौगोलिक खोजों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
6. भौगोलिक अन्वेषण में पुर्तगाल के प्रयासों पर प्रकाश डालिए।
7. भौगोलिक अन्वेषण में स्पेन के प्रयासों पर प्रकाश डालिए।
8. पुनर्जागरण से जनित सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए।
9. यूरोप में हुए पुनर्जागरण से शिआ, साहित्य और लोक भाषाओं पर पडने वाले प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।
10. पुनर्जागरण के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
11. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
    (1) मैकियावली, (2) शेक्सपीयर, (3) राफेल, (4) लियोनार्दो द विंसी, (5) माइकेल एंजेलो, (6) दांते, (7) इरैस्मस, (8) सर्वेण्टीज, (9) पैट्रार्क, (10) थामस मूर, (11) फ्रांसिस बेकन, (12) गैलीलियो, (13) केपलर, (14) वाणिज्यवादी क्रान्ति, (15) मार्कोपोलो, (16) हेनरी व डियाज, (17) कोलम्बस, (18) वास्कोडिगामा, (19) मैगलेन, (20) सर फ्रांसिस ड्रेक।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रेनेसां (पुनर्जागरण) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसके द्वारा किया गया ?
2. मानववाद का पिता किसे कहा जाता है ?
3. 'दी प्रिंस' का लेखक कौन था ?
4. अमेरिका की खोज किस नाविक ने की थी ?

---

1 'Rulers learnt to regard themselves as exempt from all moral restraints and the ideal prince seemed to be a sort of tiger-man, strong, pitiless and cunning, using every device of force and fraud without scruple or misgiving, to impose his will upon subjects or rivals.' —*Ramsay Muir.*

5. भारत की खोज किस नाविक ने की थी ?
6. 'मोनालिसा' व 'लास्ट सपर' (अन्तिम भोज) किसके बनाए चित्र हैं ?
7. छापेखाने का आविष्कार किसने किया था ?
8. सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार किसने किया था ?
9. दूरबीन का आविष्कार किसने किया था ?
10. कुतुबनुमा का आविष्कारक कौन था ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसे मानववाद का पिता कहा जाता है?
   (क) पेट्रार्क (ख) इरैस्मस (ग) दांते (घ) काल्विन
2. मानववाद से तात्पर्य लिया जाता है :
   (क) उन्नत ज्ञान से (ख) व्यक्तिवादी विचारधारा से
   (ग) हृदय की उदारता से (घ) मानव की धर्म के प्रति आस्था से
3. निम्नलिखित में पेरिस के 'मोनालिसा' नामक चित्र किस कलाकार के हैं?
   (क) लियोनार्दो द विंसी (ख) बातिचेलि
   (ग) माइकेल ऐंजेलो (घ) रैफेल
4. निम्नांकित युग्मों में से कौन-सा गलत है?
   (क) माइकेल ऐंजेलो — लास्ट जजमेण्ट
   (ख) पेट्रार्क — मानववाद का पिता
   (ग) लियोनार्दो द विंसी — मोनालिसा
   (घ) मैकियावली — दास कैपीटल
5. कुंतुबनुमा का प्रयोग किया जाता है :
   (क) समुद्र में कहीं भी अपनी सही स्थिति जानने के लिए
   (ख) बुखार नापने के लिए
   (ग) कुतुबमीनार की लम्बाई नापने के लिए
   (घ) इनमें से कोई नहीं
6. निम्नलिखित में से कौन विश्व का प्रथम नाविक था, जो सर्वप्रथम विश्व का चक्कर लगाकर जीवित अपने देश लौटा था :
   (क) कोलम्बस (ख) वास्कोडिगामा
   (ग) ड्रेक (घ) इनमें से कोई नहीं
7. सूक्ष्मदर्शी का आविष्कार किसने किया था :
   (क) रोजर बेकन (ख) गैलीलियो
   (ग) देकार्ते (घ) गुटनबर्ग
8. छापेखाने का आविष्कार किसने किया था :
   (क) देकार्ते (ख) गुटनबर्ग
   (ग) रोजर बेकन (घ) गैलीलियो
9. दूरबीन का आविष्कारक कौन था :
   (क) गैलीलियो (ख) देकार्ते
   (ग) गुटनबर्ग (घ) इनमें से कोई नहीं

10. कुतुबनुमा का आविष्कारक कौन था :

(क) मार्कोपोलो (ख) वास्कोडिगामा
(ग) गैलीलियो (घ) कोलम्बस

[उत्तर—1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (घ) 5. (क) 6. (ग) 7. (क) 8. (ख) 9. (क) 10. (क)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए :

1. सर फ्रांसिस ड्रेक विश्व का पहला नाविक था, जो संसार का चक्कर लगाकर जीवित अपने देश लौटा था।
2. देकार्ते नामक एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने बीजगणित के ज्यामिति में प्रयोग करने का तरीका खोजा।
3. 'मोनालिसा' नामक चित्र का चित्रकार माइकेल ऐंजेलो था।
4. 'डिवाइन कॉमेडी' के रचयिता दान्ते थे।
5. 'रोमियो तथा जूलियट' के रचनाकार सरवेण्टीज थे।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. असत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. 'द प्रिन्स' नामक पुस्तक के रचयिता...............थे।
2. पेट्रार्क................का निवासी था।
3. ....विश्व का पहला वैज्ञानिक था, जिसने सौरमण्डल की गति के तीन आधारभूत नियमों का प्रतिपादन किया।
4. पैण्डुलम के नियमों की खोज...............ने की थी।
5. 'मोनालिसा' तथा 'लास्ट सपर' नामक चित्रों का चित्रकार...............था।

[उत्तर—1. मैकियावली, 2. इटली, 3. जोहन्नेस केपलर, 4. गैलीलियो, 5. लियोनार्दो द विंसी।]

2

धर्म सुधार एवं धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन

[THE REFORMATION AND THE COUNTER REFORMATION]

धर्म-सुधार आन्दोलन
(THE REFORMATION)

जिस समय इंग्लैण्ड में **हेनरी अष्टम** और **वूल्जे** यूरोप की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए निरर्थक प्रयास कर रहे थे, उसी समय धार्मिक क्षेत्र में एक महान् परिवर्तन हो रहा था जिसे धर्म-सुधार आन्दोलन कहा जाता है। यह एक धार्मिक आन्दोलन था जिसे इतिहासकारों ने **'धर्म-सुधार'** (Protestant reformation) कहा है। मध्ययुग में यूरोप की बर्बर जातियों के आक्रमणों से सुरक्षा करने के उद्देश्य से निमित्त तथा धार्मिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए **रोमन कैथोलिक चर्च** की स्थापना की गयी थी। इस चर्च ने मध्ययुग में सभ्यता के प्रसार के लिए सराहनीय कार्य किए, किन्तु सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों तक यूरोप की स्थिति में गम्भीर परिवर्तन हुआ। **मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे।** गिरजाघर अब भ्रष्टाचार तथा विलासिता के स्थान बनने लगे थे। पोप, जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे। पोप किसी भी राजा को पदच्युत, किसी भी देश के गिरजाघरों को बन्द तथा किसी भी व्यक्ति को ईसाई धर्म से बहिष्कृत कर सकता था। पोप ने अपनी शक्ति से लाभ उठाना प्रारम्भ कर दिया था तथा वे धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगे थे। **इस प्रकार तत्कालीन चर्च एवं पोप में व्याप्त बुराइयों के विरोध में सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म-सुधार के नाम से जाना जाता है।**[1] वास्तव में, यह आन्दोलन यूरोप की धार्मिक प्राचीन रूढ़िवादिता के विरुद्ध था। **यद्यपि तेरहवीं शताब्दी से चर्च में कुछ परिवर्तन हुए थे, किन्तु यह परिवर्तन आधुनिक युग की आवश्यकताओं के समान न थे।**[2] आधुनिक युग के आगमन से तथा पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता तर्कवादी हो चुकी थी तथा

1 "The protestant Reformation was a revolt against Papal theocracy, Clergieal privitledge and the hereditary paganism of the Mediterranean races."
—H. A. L. Fisher, *A History of Europe*, 501.

2 "The Church, it is true, had changed in some respects since the thirteenth century, but not as a rule in ways that made it a more satisfactory minister to the needs of the new age."
—*Ferguson-Bruun*

अन्धविश्वासों को मानने के लिए तैयार न थी। इसी समय कुछ विद्वानों ने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता को देखकर जनता को अपने भाषणों एवं लेखों से पोप एवं अन्य पादरियों की वास्तविक स्थिति से परिचित कराया। परिणामस्वरूप जनसाधारण इस बात के लिए अब तैयार न था कि वह अपने धार्मिक कार्यों को इतने भ्रष्ट व्यक्तियों एवं कलुषित तरीकों से कराएं। अतः धर्म-सुधार आन्दोलन शक्तिशाली होता गया और शनैः-शनैः यूरोप के समस्त देशों में इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। इस आन्दोलन को सफल बनाने में जर्मनी के लूथर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। **उसने पोप का घोर विरोध किया तथा एक नवीन सम्प्रदाय को जन्म दिया जिसे 'प्रोटेस्टेण्ट'[1] कहते हैं।** लूथर के प्रयत्नों से पोप तथा तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध एक तीव्र आन्दोलन उत्पन्न हुआ, जिसके समक्ष पोप की शक्ति स्थिर न रह सकी। इस सन्दर्भ में वार्नर-मार्टिन ने लिखा है, **"धर्म सुधार आन्दोलन पोप पद की सांसारिकता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक नैतिक विद्रोह था।"**

धर्म-सुधार आन्दोलन के कारण
(CAUSES OF THE REFORMATION)

तत्कालीन यूरोपीय समाज द्वारा, लूथर के द्वारा स्थापित मत को, तुरन्त स्वीकार कर लेना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि धर्म-सुधार के अनेक कारण थे क्योंकि किसी एक कारण अथवा उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किसी मत को एकाएक इतना शक्तिशाली समर्थन प्राप्त होना असम्भव है।[2] अतः धर्म-सुधार आन्दोलन के कारणों को जानने के लिए उस युग की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन आवश्यक है; जो कि इस प्रकार है—

(अ) चर्च की बुराइयां (Abuses in the Church)—धर्म-सुधार आन्दोलन का सर्वाधिक प्रमुख कारण तत्कालीन चर्च में व्याप्त बुराइयां थीं। **पोप तथा पादरी, धनी होने तथा किसी प्रकार का प्रतिबन्ध स्वयं पर होने के कारण विलासी एवं भ्रष्ट हो गए थे।** उनके भ्रष्ट होने से गिरजाघर भी, जो पवित्र स्थल माने जाते थे, अब भ्रष्टाचार एवं विलासिता के केन्द्र बन गए थे। पहले पादरियों को विवाह करने की अनुमति नहीं थी, किन्तु अब उन पर ऐसा कोई प्रतिबन्ध न होने से वे सांसारिकता के मोहजाल में फंस गए थे। जनता को पादरियों का इस प्रकार का नैतिक पतन पसन्द न था। इसके अतिरिक्त पादरियों पर देश का कानून मान्य न था। उन पर राजा किसी प्रकार से भीं मुकदमा नहीं चला सकता था चाहे उन्होंने कोई भी अपराध क्यों न किया हो। उन पर ऐसे न्यायालयों में भी मुकदमा चल सकता था जहां न्यायाधीश पादरी ही हो। उनको दण्ड भी जनसाधारण की तुलना में बहुत कम मिलता था।

---

1 'प्रोटेस्टेण्ट' शब्द प्रोटेस्ट (Protest) से बना, जिसका अर्थ है : विरोध। अतः वे लोग जिन्होंने पोप का विरोध किया 'प्रोटेस्टेण्ट' कहलाए। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायी अलग-अलग देशों में अलग-अलग नाम से जाने जाते थे। उदाहरणार्थ—जर्मनी में उन्हें प्रोटेस्टेण्ट, इंग्लैण्ड में एंग्लिकन, फ्रांस में काल्विनादी अथवा ह्यूगनॉट, स्काटलैण्ड में प्रेसबीटेरियन तथा स्विट्जरलैण्ड में ज्विंग्लीवादी अथवा काल्विनवादी कहा जाता था। अमरीका में इन्हें एपिसकोपल कहा गया। प्योरिटन शब्द भी प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायियों के लिए ही प्रयोग होता है।

2 "The immediate acceptance of Luther's revolutionary doctrine by all kinds of people in all parts of northern Europe is sufficient proof that who welcomed the new movement did so for a vide variety of reasons. No such spontaneous reaction of popular sentiment could have sprung from any single cause of have been inspired by a single motive." —*Ferguson-Bruun.*

तत्कालीन चर्च में व्याप्त एक अन्य बुराई **प्लूरेलिटीज की रीति थी**, जिसके द्वारा एक पादरी अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष तथा अनेक पदों पर कार्य कर सकता था। इस रीति के कारण गिरजाघरों की व्यवस्था उचित नहीं हो पाती थी तथा पादरियों की अधिक आय होने के कारण उनकी विलासिता में वृद्धि होती थी।

चर्च में व्याप्त उपर्युक्त बुराइयों के अतिरिक्त **एक प्रमुख समस्या पोप की थी।** पोप ईसाई जगत् का अनधिकृत सम्राट समझा जाता था तथा वह स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझता था। पोप समस्त ईसाई राज्यों का संरक्षक होता था तथा प्रत्येक देश में उसने अपने प्रतिनिधि **लिगेट एवं ननसियस** (Legate and Nuncious) नियुक्त किए थे जो पोप के अतिरिक्त किसी की आज्ञा को स्वीकार करने को तैयार न थे। अपनी शक्तियों को और अधिक निरंकुश बनाने के लिए **पोप के पास दो विशेषाधिकार थे**, जिनका प्रयोग कर वह समय-समय पर अपनी निरंकुशवादिता को प्रमाणित करता रहता था। इन विशेषाधिकारों में से **एक अधिकार इण्टरडिक्ट (Interdict) था** जिसके द्वारा वह किसी भी देश के एक अथवा समस्त गिरजाघरों को बन्द करने का आदेश दे सकता था। ये एक महत्वपूर्ण अधिकार था क्योंकि गिरजाघरों के बन्द हो जाने से उस देश में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के अवसरों पर होने वाले समस्त धार्मिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लग जाता और जनता को इस प्रकार अपार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। **दूसरा विशेषाधिकार 'एक्सकम्यूनिकेशन'** (Ex-communication) **कहलाता था।** इस अधिकार के प्रयोग से वह किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से च्युत कर सकता था और इस प्रकार उसे उसके पद से हटा सकता था क्योंकि किसी अन्य धर्म का राजा ईसाई देश का शासक नहीं हो सकता था, इन विशेषाधिकारों के कारण प्रत्येक ईसाई देश का राजा तथा जनता, पोप से भयभीत रहती थी तथा उसका विरोध करने का साहस नहीं कर पाती थी। पोप ने इन अधिकारों का प्रयोग इंग्लैण्ड के राजा हेनरी द्वितीय पर किया था। पोप को इन अधिकारों ने निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी बना दिया था। आधुनिक काल के प्रारम्भ होते ही यूरोप के ईसाई देशों में से अनेक देशों की जनता पोप की इस निरंकुशवादिता को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो गयी।

पोप ने स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हुए धन अर्जित करने का भी उपाय ढूंढ़ निकाला था। उसने **क्षमा-पत्र** (Indulgence) देने प्रारम्भ किए। कोई भी व्यक्ति अपने आप से मुक्त होने के लिए धन देकर पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार धनी-वर्ग स्वेच्छा से अत्याचार करता था और अपने आप के परिणामों से परलोक से बचने के लिए पोप से क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेता था क्योंकि पोप ने यह प्रचार कर दिया था कि जो व्यक्ति मृत्यु से पूर्व उससे क्षमा-पत्र प्राप्त कर लेगा, वह मरणोपरान्त स्वर्ग प्राप्त करेगा। इसके अतिरिक्त धन अर्जित करने के लिए पोप प्रत्येक ईसाई राष्ट्र से उसकी वार्षिक आय का एक अंश, जिसे **ऐनेट्स या फर्स्ट फ्रूट** (Annates or First Fruit) कहते थे, प्राप्त करता था तथा गिरजाघरों में विभिन्न पदों को बेचा जाता था। इस प्रकार पोप ने तथा विभिन्न गिरजाघरों ने अपार सम्पत्ति एकत्रित कर ली थी। आधुनिक युगीन नेता गिरजाघरों एवं पोप में व्याप्त विभिन्न बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।

(ब) यूरोप के राजाओं की लालसा (Greed of European Princes)—गिरजाघरों की सम्पत्ति, भूमि तेजी से बढ़ रही थी अतः यूरोप के शासकों की गिरजाघरों एवं पोप की सम्पत्ति पर नजर लगी हुई थी तथा उस पर वे अधिकार करना चाहते थे, क्योंकि मध्यकालीन यूरोप

के राष्ट्रों के राजाओं को धन की भारी आवश्यकता रहती थी। अतः वे अवसर की प्रतीक्षा में थे। **रैम्जे म्योर ने भी धार्मिक आन्दोलन के प्रमुख कारणों में, चर्च में व्याप्त अनियमितताएं तथा यूरोप के राष्ट्रों के राजाओं की गिरजाघरों की सम्पत्ति पर अधिकार करने की लालसा को ही माना है।**[1]

(स) पोप से घृणा (Hatred against Pope)—1309 ई. में पोप ने अपनी राजधानी रोम के स्थान पर एयुग्नेन (Ayugnen) बनायी। यह एयुग्नेन फ्रांस की सीमा पर स्थित था। एयुग्नेन, पोप की राजधानी 1378 ई. तक रही, किन्तु इस लगभग सत्तर वर्ष के समय का तत्कालीन धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। **पोप के एयुग्नेन रहने से पोप पर फ्रांस के राजा का प्रभाव बढ़ गया जिससे यूरोप के ईसाई राष्ट्र जो फ्रांस के शत्रु थे पोप से नाराज हो गए तथा उससे घृणा करने लगे।** इसी कारणवश इंग्लैण्ड के शासक एडवर्ड तृतीय ने पोप एवं गिरजाघरों के अधिकारों को इंग्लैण्ड में कम करने का प्रयत्न किया। 1378 ई. में पोप के सम्मान को गम्भीर आघात लगा क्योंकि उस समय दो पोप हो गए तथा एक-दूसरे को नास्तिक कहने लगे। यह स्थिति 1417 ई. तक रही, जिससे पोप का आत्मसम्मान यूरोप में कम हो गया तथा उसकी शक्ति में पतन होने के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

(द) राष्ट्रीय भावना का प्रभाव (Influence of National Spirit)—पोप के प्रभाव के कारण लोगों को अपने देश के नियम के स्थान पर पोप के आदेशों को स्वीकार करना पड़ता था। आधुनिक युग के उदय के साथ ही प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना का जन्म हुआ और **जनता में यह भावना जाग्रत होने लगी थी कि पोप एक विदेशी था, अतः पोप के प्रभाव को समाप्त करने का प्रत्येक देश का कर्तव्य हो गया।** जनता अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहती थी। जनता देश को धर्म एवं गिरजाघरों से अधिक महत्वपूर्ण समझने लगी थी।

(य) पवित्र धर्म की आवश्यकता (Need of a Pious Religion)—प्रारम्भ में ईसाई धर्म एक सुन्दर और पवित्र धर्म था। उसमें किसी प्रकार की अपवित्रता व्याप्त नहीं थी, किन्तु शनैः-शनैः उसमें बुराइयां तथा अन्धविश्वास बढ़ने लगा। अतः आधुनिक युग के आगमन तथा पुनर्जागरण के प्रभाव से अब लोग ऐसे धर्म को अस्वीकार करने को तैयार न थे तथा एक नवीन धर्म की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे।

(र) पुनर्जागरण का प्रभाव (Impact of Renaissance)—पुनर्जागरण के कारण **लोग तर्कवादी** हो गए थे। अतः वे पर्याप्त प्रमाण के अभाव में किसी सिद्धान्त अथवा बात को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। पुनर्जागरण का इस कारण धार्मिक क्षेत्र में गम्भीर प्रभाव पड़ा। बाइबिल का अनुवाद राष्ट्रीय भाषाओं में किया गया तथा छापेखाने के आविष्कार के कारण बाइबिल का पढ़ना सुगम हो गया। यूरोप के अनेक धर्म-सुधारक इटली गए तथा अपने देश लौटकर पोप एवं धर्म में व्याप्त बुराइयों से जनता को अवगत कराया। इस प्रकार पुनर्जागरण ने धर्म-सुधार आन्दोलन को रास्ता दिखाया।

(ल) धर्म-सुधारकों द्वारा पोप का विरोध (Hostility of Reformers)—यूरोप में समय-समय पर अनेक धर्म-सुधारक हुए जिन्होंने तत्कालीन पोप एवं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को जनता के समक्ष रखा। **इन धर्म-सुधारकों में एक प्रसिद्ध नाम वाइक्लिफ** (Wycliff) **का है।** वाइक्लिफ इंग्लैण्ड में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। एडवर्ड तृतीय के

1 "Both of these elements, popular discontent and princely acquisitiveness were everywhere combined in the great upheaval known as the protestant reformation."
—*Ramsay Muir*

समय उसने गिरजाघरों के विरुद्ध आवाज उठाई तथा जनता के समक्ष धर्म पर व्याप्त राजनीतिक प्रभाव तथा उसके दुष्परिणाम रखे। वाइक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया, जिससे लोग उसका वास्तविक अर्थ समझ सके तथा पादरियों द्वारा गुमराह होने से बच गये। **वाइक्लिफ ने राजा को गिरजाघरों में व्याप्त भ्रष्टाचार का कारण धन बताया** तथा उसे सुझाव दिया कि गिरजाघरों एवं धर्म को पुनः पवित्र बनाने के लिए उनके धन एवं सम्पत्ति पर अधिकार कर ले।

वाइक्लिफ (Wycliff) के पश्चात् उसके अनुयायी उसके सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे। **दूसरा प्रमुख धर्म-सुधारक बोहेमिया में जान हुस हुआ।** हुस, प्राग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक था। उसने नवीन विचारों का प्रचार किया, जिसके परिणामस्वरूप 1415 ई. में उसे जीवित जला दिया गया। यद्यपि जान हुस की मृत्यु हो गयी, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित रहे। तीसरा धर्म-सुधारक सेवोनैरोला इटली में हुआ, उसे भी मृत्यु-दण्ड दिया गया।

यूरोप के देशों में धर्म-सुधार आन्दोलन
(REFORMATION IN EUROPEAN COUNTRIES)

यूरोप के विभिन्न देशों में हुए धर्म-सुधार आन्दोलन का वर्णन निम्नवत् है—

जर्मनी में धर्म-सुधार आन्दोलन
(REFORMATION IN GERMANY)

धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रणेता मार्टिन लूथर था। उसके विचारों एवं कार्यों ने जर्मनी में धार्मिक क्रान्ति को जन्म दिया।

मार्टिन लूथर (Martin Luther)—जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन के प्रणेता मार्टिन लूथर का जन्म 10 नवम्बर, 1483 ई. को आइबेन नामक गांव में एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। उसके पिता का नाम हान्स तथा माता का नाम मार्गरेथी जैंगलर था। मार्टिन लूथर के पिता की इच्छा थी कि उनका पुत्र वकील बने। इरफर्ट विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् उसने अपने पिता की इच्छानुसार कानून का अध्ययन प्रारम्भ किया, किन्तु वह वकील बनने के स्थान पर 1508 ई. में विटनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्म एवं दर्शनशास्त्र का शिक्षक नियुक्त हो गया। इस पद पर कार्य करते हुए उसने धर्म शास्त्र का गहन अध्ययन किया तथा इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि मानव की मुक्ति ईश्वर की भक्ति से ही सम्भव थी। लूथर स्वयं कैथोलिक धर्म का अनुयायी था तथा पोप के प्रति भी उसे अपार श्रद्धा थी।

1511 ई. में उसे रोम जाने का अवसर मिला। रोम की यात्रा के प्रति उसमें अपार उत्साह था, किन्तु रोम पहुंचने पर पोप के विलासमयी जीवन-शैली को देखकर उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। रोम में व्याप्त आडम्बर व भ्रष्टाचार को देखकर वह हतप्रभ हो गया। रोम में उसने देखा कि वहां धर्म अधिकारी किस प्रकार विभिन्न तरीकों से धन कमा कर सुखद जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी कारण उसने कहा, **"ईसाई धर्म रोम के जितना निकट है उतना ही दोषयुक्त है।"**[1] रोम की यात्रा से निराश होकर लौटने के पश्चात् भी उल्लेखनीय है कि लूथर ने रोम के पोप का विरोध नहीं किया वरन् चर्च में सुधार किए जाने के विषय में वह सोचने लगा।

लूथर द्वारा क्षमा-पत्रों का विरोध—इसी समय घटित कुछ घटनाओं ने लूथर को पोप विरोधी बना दिया तथा उसने खुलकर पोप का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। इसका मुख्य

1 **"The nearer to Rome the worse the christianity."** —*Luther*

कारण उसके द्वारा क्षमा-पत्रों (Indulgence) का विरोध करना था। क्षमा-पत्र एक ऐसा 'मुक्ति-पत्र' होता था जिसको कोई भी व्यक्ति धन देकर पोप अथवा उसके प्रतिनिधियों से खरीद सकता था। पोप का कहना था कि इस पत्र को खरीदने से खरीदने वाले व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाएंगे।

1517 ई. में पोप के प्रतिनिधि के रूप में टेटजेल क्षमा-पत्रों को बेचने के लिए विटनबर्ग पहुंचा। टेटजेल ने यह तक घोषणा की कि यदि कोई भविष्य में भी पाप करना चाहता है तो भी यदि वह क्षमा-पत्रों को खरीद लेगा तो वह पाप से मुक्त माना जाएगा। उसने क़हा, **"जैसे ही क्षमा-पत्रों के लिए दिए गए सिक्कों की खनक गूंजती है तो उस आदमी की आत्मा सीधे स्वर्ग में प्रवेश कर जाती है।"** लूथर ने क्षमा-पत्रों को बेचे जाने का घोर विरोध किया व जर्मनी की जनता को समझाया कि यह धन प्राप्त करने का एक साधन मात्र है। उसने यह भी कहा कि यह धर्म विरोधी है। अपनी बात को जनता तक पहुंचाने के लिए उसने अपनी बातें '95 **बिन्दुओं**'[1] में लिखकर 31 अक्टूबर, 1517 ई. को विटनबर्ग के गिरजाघर के प्रवेश द्वार पर चिपका दी। इसमें चर्च द्वारा इस तरीके से धन एकत्र करने की आलोचना की गयी थी तथा जनता को समझाया गया था कि पाप पश्चाताप करने से दूर होता है न कि क्षमा-पत्र खरीदने से। इस सन्दर्भ में सेवाइन ने लिखा है, **"क्षमा-पत्रों के विषय में बड़ी भ्रान्तियां थीं। इस प्रथा को टेटजेल ने अधिक धन प्राप्ति के लिए और अधिक भ्रष्ट बना दिया। लूथर ने इस प्रथा की भर्त्सना की और क्षमा-पत्रों की प्रथा को चुनौती दी।"**[2]

मार्टिन लूथर के विचारों का जर्मनी में स्वागत हुआ व शीघ्र ही वह जर्मनी में धार्मिक नेता बन गया। लूथर के बढ़ते हुए प्रभाव से पोप लिओ दशम् चिन्तित हो गया तथा उसने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए डॉ. जॉन नामक एक धर्मशास्त्री को जर्मनी भेजा। डॉ. जॉन से लूथर ने लिपजिग में वाद-विवाद किया व मनुष्य और ईश्वर के मध्य पोप को निरर्थक बताया। इसके साथ ही लूथर ने तीन पुस्तकें प्रकाशित कर पोप का विरोध किया व जनसाधारण को सत्य से अवगत कराया। ये पुस्तकें निम्नलिखित थीं—

(i) **एन एड्रेस टू द नोबिलिटी ऑफ द जर्मन नेशन** (*An address to the Nobility of the German Nation*)

(ii) **ऑन द लिबर्टी ऑफ द क्रिश्चियन मैन** (*On the Liberty of the Christian Man*)

(iii) **ऑन द बेबिलोनिश केप्टिविटी ऑफ द चर्च** (*On the Babylonish Captivity of the Church*)

उल्लेखनीय है कि इन पुस्तकों में वर्णित सिद्धान्त ही भविष्य में प्रोटेस्टेण्ट धर्म के प्रमुख सिद्धान्त बने।

लूथर के विरुद्ध पोप की कार्यवाही—लूथर के इन कार्यों से पोप अत्यधिक क्रोधित हुआ तथा उसने 1520 ई. में लूथर को आदेश दिया कि वह दो माह के अन्दर अपने विचार वापिस ले अन्यथा उसके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी। लूथर द्वारा ऐसा न करने पर पोप ने लूथर को धर्म से निष्कासित कर दिया, किन्तु लूथर ने निष्कासन के आदेश को जला दिया। उस समय पवित्र रोमन सम्राट चार्ल्स पंचम पोप का अनन्य अनुयायी था, अतः उसने इस समस्या

1 'The Ninety five Thesis'.

2 सेवाइन—**हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड सिविलाइजेशन**, पृ. 353.

का निराकरण करने के लिए **'वर्म्स की सभा'** आमन्त्रित की। इस सभा में लूथर से पोप का विरोध त्यागने को कहा गया, किन्तु लूथर ने कहा, "जब तक मुझे बाईबिल अथवा तर्क द्वारा गलत प्रमाणित न कर दें मैं कुछ भी त्यागने के लिए तैयार नहीं हूं क्योंकि अन्तःकरण के विरुद्ध आचरण करना न तो पवित्र है और न ही उचित।"[1] परिणामस्वरूप, लूथर एवं चार्ल्स पंचम में कोई समझौता न हो सका तथा चार्ल्स पंचम ने उसकी समस्त पुस्तकों को प्रतिबन्धित कर दिया व उससे कानूनी सुरक्षा का अधिकार भी छीन लिया। ऐसी स्थिति में सैक्सनी के शासक फ्रेडरिक ने लूथर को संरक्षण दिया। उसके संरक्षण में लूथर को लगभग एक वर्ष तक रहना पड़ा, किन्तु इस समय का सदुपयोग लूथर ने बाईबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करके किया।

प्रोटेस्टेण्ट धर्म का जन्म—जर्मनी में लूथर के द्वारा पोप का विरोध किए जाने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए धार्मिक विवाद का हल ढूंढने के लिए पवित्र रोमन साम्राज्य की एक सभा स्पीयर (Speyer) में 1526 ई. में आमन्त्रित की गई। इस सभा में लम्बा वाद-विवाद तो हुआ, किन्तु यह किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सकी। अतः 1529 ई. में स्पीयर में ही दूसरी धार्मिक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में लूथर के सुधारवाद का विरोध किया गया व उसके विरुद्ध कठोर आदेश जारी किए गए। इस सभा द्वारा इस प्रकार एक-पक्षीय निर्णय दिए जाने का लूथर के समर्थकों ने घोर विरोध किया तथा पोप एवं स्पीयर की द्वितीय सभा के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार चूंकि लूथर के समर्थकों ने पोप के आदेशों का विरोध (प्रोटेस्ट) किया था, अतः उसके समर्थकों द्वारा चलाया गया आन्दोलन **'प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलन'** कहलाया।[2] **इस प्रकार प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलनकारियों ने परम्परागत कैथोलिक धर्म का विरोध कर नए धर्म का प्रतिपादन किया। इस धर्म की विधिवत् स्थापना 1530 ई. में हुई जिसमें लूथर के सिद्धान्तों का पालन किया गया। इस प्रकार जर्मनी में प्रोटेस्टेण्ट धर्म की स्थापना हो गयी।**

लूथर के सिद्धान्त—मार्टिन लूथर के द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सिद्धान्त निम्नवत् थे—

(i) पोप अथवा चर्च के स्थान पर ईसा एवं बाईबिल को सर्वोच्च घोषित करते हुए पोप की सत्ता को नकारा गया।

(ii) ईश्वर की भक्ति व उसके प्रति श्रद्धा ही मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। अतः मुक्ति प्राप्त करने के लिए चर्च एवं पोप द्वारा निर्धारित कार्यों (क्षमा-पत्र आदि खरीदने) के स्थान पर ईश्वर की भक्ति पर जोर दिया गया।

(iii) चर्च द्वारा निर्धारित **सात संस्कारों**[3] में से उसने केवल तीन को मान्यता दी। ये थे—नामकरण, प्रायश्चित एवं प्रसाद।

(iv) लूथर ने चर्च की अपार शक्तियों व चमत्कारों को मानने से इन्कार कर दिया।

---

1 **"Unless I am convineted of error by the testimony of scripture or by clear reason......I can not and will not retract anything, since it is neither safe nor honest to act against one's conscience."** ***—Luther***

2 **स्पीयर की द्वितीय सभा के आदेशों का औपचारिक विरोध 19 अप्रैल, 1529 ई. को किया गया था। अतः 'प्रोटेस्टेण्ट' शब्द की उत्पत्ति इसी तिथि से मानी जाती है।**

3 **कैथोलिकों के सात संस्कार हैं—(1) जन्म संस्कार (Baptism), (2) नामकरण (Confirmation), (3) प्रायश्चित (Penace), (4) पवित्र प्रसाद (Holy Eucharist), (5) मान्यता प्रदान अथवा दीक्षा (Ordination), (6) विवाह संस्कार (Matrimony), (7) अन्तिम संस्कार (Extreme Unction)।**

(v) सभी के लिए समान न्याय-व्यवस्था मानी गयी चाहे वह पोप ही क्यों न हो।
(vi) रोम के चर्च के प्रभुत्व को समाप्त करके राष्ट्रीय चर्च की शक्ति को मान्यता दी गई।
(vii) धर्म ग्रन्थ सबके अध्ययन के लिए हैं, किसी को उनका अध्ययन किए जाने से रोका नहीं जाना चाहिए।
(viii) चर्च में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए पादरियों को भी विवाह करने की अनुमति दी गयी।

लूथर के ये सिद्धान्त जर्मनी में अत्यधिक लोकप्रिय हो गए। अतः प्रोटेस्टेण्ट धर्म का तीव्र विकास व कैथोलिक धर्म का विरोध होने लगा। लूथर की शिक्षाओं ने जन-साधारण, सदाचारी ईसाइयों व राष्ट्रवादियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। अतः उसके समर्थकों ने कैथौलिक चर्च के विरुद्ध विद्रोह कर दिया व चर्च की सम्पत्ति को छीन लिया।

ऑग्सबर्ग की सन्धि—लूथरवाद के बढ़ते प्रभाव से सम्राट चार्ल्स पंचम चिन्तित हो गया तथा उसने लूथरवादियों का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। चार्ल्स पंचम ने अन्ततः इस समस्या का निदान करने के लिए ऑग्सबर्ग में एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायियों द्वारा अपने सिद्धान्त सम्राट के समक्ष रखे गए, किन्तु उन्हें मानने से चार्ल्स पंचम ने इन्कार कर दिया। 1546 ई. के पश्चात् प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलन और तीव्र हो गया तथा उसने गृह-युद्ध का रूप धारण कर लिया। यह गृह-युद्ध 1555 ई. तक चलाता रहा, अन्ततः 1555 ई. में प्रिंस फर्डिनेण्ड[1] ने प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायियों के साथ ऑग्सबर्ग की सन्धि की। इस सन्धि की प्रमुख धाराएं निम्नलिखित थीं—

(i) प्रत्येक शासक को (उल्लेखनीय है कि जनता को नहीं) अपना व अपनी प्रजा का धर्म चुनने का अधिकार प्रदान किया गया।
(ii) प्रोटेस्टेण्ट धर्मानुयायियों द्वारा चर्च सें छीनी गयी जागीर व सम्पत्ति उन्हीं की मान ली गयी।
(iii) किसी को भी धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा।
(iv) साम्राज्य की परिषद में कैथोलिकों व प्रोटेस्टेण्टों को एक समान प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।
(v) लूथरवाद (प्रोटेस्टेण्ट) के अतिरिक्त किसी अन्य धार्मिक सम्प्रदाय को मान्यता नहीं दी गयी।

इस प्रकार इस सन्धि से प्रोटेस्टेण्ट आन्दोलन जर्मनी में समाप्त हो गया। उल्लेखनीय है कि इस सन्धि से पूर्व 1546 ई. में ही लूथर की मृत्यु हो चुकी थी, किन्तु उसके सिद्धान्त जीवित थे जिन्हें अन्ततः 1555 ई. की ऑग्सबर्ग की सन्धि से मान्यता प्राप्त हो गयी। इसी कारण इस सन्धि का विशेष महत्व है। ऑग्सबर्ग की इस सन्धि में कुछ दोष भी थे जिनके कारण कुछ समय पश्चात् प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिकों में पुनः संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस सन्धि के प्रमुख दोष निम्नलिखित थे—

(i) काल्विनवादी व ज्विंग्लीवादी विचारधाराओं को मान्यता नहीं दी गयी थी।

---

1 फर्डिनेण्ड सम्राट चार्ल्स पंचम का छोटा भाई था जो 1558 ई. में पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट बना, किन्तु चार्ल्स पंचम द्वारा 1553 ई. से जर्मनी सम्बन्धी कार्य छोड़ दिए जाने के कारण फर्डिनेण्ड ही जर्मनी सम्बन्धी कार्य देखता था।

(ii) इस सन्धि में सम्पत्ति पर अधिकार वाली धारा ने प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिकों के झगड़े को और बढ़ाया।

इन दोषों के कारण जर्मनी में पुनः धार्मिक संघर्ष प्रारम्भ हो गया जो अन्ततः तीस वर्षीय युद्ध के पश्चात् वेस्टफेलिया की सन्धि से समाप्त हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म-सुधार आन्दोलन का वास्तविक जन्मदाता लूथर ही था जिसने पोप एवं चर्च की व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों की ओर सर्वप्रथम जनता का ध्यानि आकर्षित किया व उसके विरुद्ध आवाज उठाई। उसके ये विचार न केवल जर्मनी वरन् यूरोप के अनेक देशों में गूंजे। इसी कारण इतिहासकारों ने उसकी अत्यन्त प्रशंसा की है। फिशर ने लूथर के विषय में लिखा है—**"मार्टिन लूथर को दुनिया में अद्वितीय स्थान इसलिए नहीं मिला कि वह मौलिक था बल्कि इसलिए मिला कि वह सच्चा प्रतिनिधि था।"**[1] इसी प्रकार टौट ने लूथर के प्रभाव के विषय में लिखा है, **"सैक्सनी के इस विचारक ने जोश के कारण वह सब कुछ प्राप्त कर लिया जो उसके पूर्वगामी अपनी भीरू नीति के कारण नहीं कर सके थे।"**

स्विट्ज़रलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन
(REFORMATION IN SWITZERLAND)

स्विट्ज़रलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का जो स्वरूप निखर कर सामने आया, वह लूथरवाद से थोड़ा भिन्न था। **इस परिप्रेक्ष्य में ज्विंग्ली (Zwingli) एवं काल्विन (Calvin) नामक धर्म सुधारकों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।** इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्विट्ज़रलैण्ड में काल्विन के विचारों जो कि काल्विनवाद के नाम से जाने जाते हैं कि पृष्ठभूमि ज्विंग्ली ने तैयार की थी।

ज्विंग्ली (Zwingli)—ज्विंग्ली का जन्म 1484 ई. में स्विट्ज़रलैण्ड के टोगेनबर्ग नामक प्रान्त में एक समृद्ध कृषक के घर में हुआ था। उसने वियना एवं बासेल के विश्वविद्यालयों में शिक्षा अर्जित की थी। शिक्षा ग्रहण करते समय से ही उसकी रुचि प्राचीन साहित्य एवं मानववाद की ओर उत्पन्न हुई। यह ठीक है कि वह एक कैथौलिक पादरी था, किन्तु उसने चर्च के दोषों एवं अपने देश की राजनीतिक विसंगतियों एवं गलत निर्णयों का जमकर विरोध किया। ज्विंग्ली को अपने विचारों का पूर्ण प्रसार करने का अवसर उस समय प्राप्त हुआ, जब वह कैथेड्रल में धर्मोपदेशक के पद पर था। उसने पोप की सर्वोच्चता के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए यह स्पष्ट किया कि जीवन-यापन की वास्तविक मार्गदर्शक तो बाइबिल है। इसके अतिरिक्त उसने सामूहिक प्रार्थना, मठों की व्यवस्था, पापों से शुद्धि, आदि कैथोलिक सिद्धान्तों की कड़ी आलोचना की। 1525 ई. **में उसने कैथोलिक चर्च से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया एवं एक नए प्रोटेस्टेण्ट चर्च की स्थापना की,** लूथर से उसके विचार **'यूकारिष्ट'** (ईसा के पवित्र भोजन) के प्रश्न पर टकराए, लूथर का मानना था कि 'यूकारिष्ट' की क्रिया में ईसा को अर्पित रोटी एवं शराब ईसा की भौतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के रूप में रूपान्तरित हो जाते हैं, ज्विंग्ली ने इस क्रिया को ईसा की मृत्यु एवं कार्यों का संकेत मात्र माना। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"सम्भवतः स्विस सुधारक की तत्वमीमांसा की सर्वाधिक विशिष्ट**

1 "Martin Luther, the Saxon peasant to whom the German Reformation owes its origin and character, was one of those men who achieve a commanding position in the world not because they are original, but because they are representative."
Fisher—*A History of Europe*, p. 503.

बात उसका यह सिद्धान्त था कि ईसा का अन्तिम भोजन (यूकारिष्ट की क्रिया) एक चमत्कार नहीं है अपितु साधारण स्मृति स्वरूप है।''[1]

ज्विंग्ली के विचार स्विट्ज़रलैण्ड के अनेकों प्रान्तों में फैलने लगे, किन्तु स्विट्ज़रलैण्ड के वन प्रधान पांच प्रान्तों ने कैथोलिक मत को नहीं त्यागा। फलतः स्विट्ज़रलैण्ड में 1529 में गृह युद्ध छिड़ गया। एक ओर ज्विंग्लीवादी थे तो दूसरी ओर कैथोलिक। गृहयुद्ध में ज्विंग्ली मारा गया। **उसकी मृत्यु के बाद 1531 ई. में दोनों दलों में 'कापेल की सन्धि' हुई।** इस सन्धि के अनुसार प्रत्येक कैण्टन को अपना धर्म निर्धारित करने का अधिकार प्रदान कर दिया गया।

जॉन काल्विन (John Calvin)—जॉन काल्विन जिसने ज्विंग्ली द्वारा संचालित सुधार आन्दोलन को पुनर्जीवित कर उसे अन्तर्राष्ट्रीय प्रोटेस्टेण्ट धर्म का स्वरूप प्रदान किया, का जन्म 1509 ई. में फ्रांस के नीओ नामक नगर में हुआ। उसने पेरिस के विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् कानून की शिक्षा अर्लेआं विश्वविद्यालय में प्राप्त की। इस समय **फ्रांस में धार्मिक उथल-पुथल चल रही थी जिसका प्रभाव काल्विन पर भी पड़ा और वह 1533 ई. में प्रोटेस्टेण्ट बन गया।** फ्रांस में चल रही धार्मिक उथल-पुथल को शान्त करने के उद्देश्य से फ्रांस के शासक फ्रांसिस प्रथम ने प्रोटेस्टेण्टों का कुचलना आरम्भ कर दिया। अतः जॉन काल्विन को भागकर स्विट्ज़रलैण्ड के वासेल नगर में आना पड़ा। यहां पर उस पर ज्विंग्ली के धार्मिक आन्दोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। 1536 में उसने **'दि इन्स्टीट्यूट्स ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन'** (The Institutes of Christian Religion) नामक पुस्तक की रचना की जिसमें उसने प्रोटेस्टेण्ट विचारधारा के सिद्धान्तों का समन्वित संकलन किया।

काल्विन ने बाईबिल की सर्वोच्च सत्ता एवं ईश्वर के सम्मुख सभी प्राणियों की असहाय स्थिति को स्वीकार किया। ईश्वर के सम्बन्ध में उसके विचार ओल्ड टेस्टामेण्ट पर आधारित थे। काल्विन ने **'पूर्व निर्धारित भाग्य के सिद्धान्त'** पर बल दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार उसका मानना था कि मानव का भाग्य पूर्व निर्धारित होता है। ईश्वर ही मनुष्य की आत्मा की मुक्ति का कर्ता-धर्ता है। वह प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था, पवित्र धार्मिक आचरण द्वारा व्यक्ति व राजनीति तथा समाज का पुनर्निर्माण करने का पक्षपाती था।

1536 में जॉन काल्विन जेनेवा गया, जहां जनता ने उसे प्रमुख धर्म-उपदेशक के रूप में मान्यता दी। शीघ्र ही उसके निर्देशन में उसके अनुयायियों ने वहां पर काल्विनवादी अधिनायकतन्त्र स्थापित कर लिया। नैतिकता एवं कठोर अनुशासन पर विशेष बल दिया गया। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **''काल्विन के नेतृत्व में जेनेवा की सरकार एक विचित्र धर्म प्रभावित संस्था थी, जिसका राजनीतिक एवं धार्मिक अधिनायक स्वयं वह था........काल्विन की अधिनायकता में जेनेवा सम्पूर्ण यूरोप में प्रोटेस्टेण्ट धर्म सुधार का प्रमुख केन्द्र बन गया।''**[2]

काल्विनवाद जेनेवा तक ही सीमित नहीं रहा। शीघ्र ही यह यूरोपीय महाद्वीप में सुधारित धर्म (Reformed Faith) के नाम से प्रसारित हुआ। हालैण्ड एवं स्काटलैण्ड में काल्विनवाद

---

1 **"Perhaps the most distinctive mark of the Swiss reformer's theology was his doctrine that the Lord's Supper is not a miracle but simply a memorial."**

—C. J. H. Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 148.

2 **"The government of Geneva under Calvin's leadership was a curious theocracy of which Calvin himself was both religioius and, political dictator...........under Calvin's theocratic dictatorship Geneva became famous throughout Europe as the central source of the Protestant Propaganda."**

—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 150.

RELIGIOUS DIVISIONS IN EUROPE (1600 A. D.)

का द्रुतगति से विकास हुआ। **विकास के इस क्रम में काल्विनवाद के महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए।** काल्विनवाद ने प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के रूप में उस समय कैथोलिक सम्प्रदाय की शक्ति का सामना किया जबकि लूथरवाद अधिक उपयुक्त नजर नहीं आ रहा था। काल्विनवाद के कठोर अनुशासन एवं नैतिकता सम्बन्धी नियमों ने ऐसे योग्य चरित्रों को जन्म दिया जो कि कैथोलिक सम्प्रदाय का प्रतिरोध करने में सक्षम थे। **यही नहीं, काल्विनवाद ने लोकतन्त्रात्मक पद्धति का मार्ग खोला।** काल्विनवाद ने चर्च की शासन पद्धति की जो रूपरेखा सामने रखी वह लोकतन्त्रात्मक पद्धति के पर्याप्त निकट थी। **नीदरलैण्ड** की जनता ने फिलिप द्वितीय के भ्रष्ट शासन का विरोध कर, उच्च गणतन्त्र की नींव डालने में जो सफलता प्राप्त की निःसन्देह वह काल्विनवाद का ही प्रभाव था। **स्कॉटलैण्ड** में नाक्स द्वारा **'प्रेसबीटेरियनवाद'**[1] की स्थापना हुई। यह स्कॉटलैण्ड की फ्रांसीसी प्रभुत्व की समाप्ति के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना थी। इस प्रकार काल्विनवाद ने स्कॉटलैण्ड में प्रेसबीटेरियन के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **इंग्लैण्ड** भी काल्विनवाद के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। इंग्लैण्ड में प्यूरिटन लोगों द्वारा स्टुअर्ट शासकों की निरंकुशता का प्रबल विरोध काल्विनवाद का ही प्रभाव था। इंग्लैण्ड की **'रक्तहीन क्रान्ति'** की पृष्ठभूमि तो काल्विनवाद ने ही तैयार की। फ्रांस में भी ह्यूग-नोट्स ने दीर्घकाल तक निरंकुश शासकों का विरोध जारी रखा। **आर्थिक क्षेत्र** में काल्विनवादी विचारधारा ने पूंजीवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **सांस्कृतिक दृष्टि से** काल्विनवाद के नैतिकता सम्बन्धी एवं तर्क-वितर्क को आधार मानकर चलने वाले सिद्धान्त निःसन्देह स्वतन्त्र विचारों की अभिव्यक्ति एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण थे।

लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में तुलना
(COMPARISON BETWEEN PRINCIPLES OF LUTHER AND CALVIN)

लूथर एवं काल्विन के सिद्धान्तों में अनेक समानताएं होने पर भी कुछ अन्तर थे, जिनमें से प्रमुख निम्नवत् हैं—

1. लूथर के सिद्धान्त राष्ट्रीय, किन्तु काल्विन के अन्तर्राष्ट्रीय थे।
2. काल्विनवाद में व्यक्ति की चारित्रिक पवित्रता पर विशेष बल दिया गया था, लूथरवाद में नहीं।
3. लूथर ने कैथोलिकों के सात संस्कारों में से केवल जन्म, ईसामसीह के भोज व प्रमाणीकरण को स्वीकार किया, किन्तु कॉल्विन ने केवल जन्म व भोज को ही स्वीकार किया।
4. लूथर ने ईश्वर के प्रति भक्ति व श्रद्धा को ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग माना, किन्तु काल्विन भाग्यवादी था। उसके अनुसार प्रत्येक को उसके भाग्य के अनुरूप ही फल मिलता है।
5. लूथर ने नए टेस्टामेण्ट का समर्थन किया जबकि काल्विन पुराने टेस्टामेण्ट का समर्थक था।
6. लूथरवाद राज्याश्रित धर्म था जबकि काल्विन का धर्म सैन्यवादी था।
7. काल्विनवाद में चर्च का संगठन लोकतन्त्रात्मक था जबकि लूथरवाद में ऐसा नहीं था।

---
1 वृद्ध पादरियों को 'प्रेस्बिटर्स' (Presbiters) कहा जाता था। उन्हीं के नाम पर इसे 'प्रेसबीटेरियनवाद' कहा गया।

इंग्लैण्ड में धर्म सुधार : 'एंग्लिकनवाद'
(REFORMATION IN ENGLAND : 'ANGLICANISM')

'एंग्लिकनवाद' प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय का वह स्वरूप है जिसे 16वीं सदी के इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय चर्च के लिए राज्य धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और कालान्तर में अमरीका में 'एपिसकोपल चर्च' के नाम से जाना गया। सोलहवीं सदी के आरम्भ में कैथोलिक धर्म का ही प्रचलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में उदीयमान शक्तिशाली राष्ट्रीयता की भावना कैथोलिक धर्म के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप से कब तक कदम मिलाकर चलती। अतः सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही इंग्लैण्ड में धार्मिक उथल-पुथल आरम्भ हो गयी।

इंग्लैण्ड के शासकों ने काफी समय पूर्व से पोप का विरोध करना प्रारम्भ किया था। सर्वप्रथम विलियम ने पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने का प्रयास किया यद्यपि वह स्वयं कैथोलिक विचारधारा का था। विलियम के पुत्र, विलियम रूफस ने भी पोप की शक्ति को सीमित करना चाहा। हेनरी द्वितीय ने भी **'क्लेरेण्डन कोड'** (Clarendon Code) पारित करके पोप की इंग्लैण्ड से सत्ता समाप्त करनी चाही, किन्तु असफल रहा। हेनरी द्वितीय के पुत्र जॉन भी अपने प्रयत्नों में असफल रहा और पोप का प्रभाव पूर्ववत् इंग्लैण्ड में विद्यमान रहा। चौदहवीं शताब्दी में वाइक्लिफ (Wycliff) ने इंग्लैण्ड में पोप तथा गिरजाघरों की बुराइयों का प्रचार किया तथा एडवर्ड तृतीय ने भी पोप का प्रभुत्व समाप्त करना चाहा, किन्तु असफल रहा। हेनरी सप्तम तथा प्रारम्भ में हेनरी अष्टम पोप के समर्थक थे। अतः 1529 ई. तक पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड में पूर्ववत् रहा, तथापि अनेक धर्म-सुधारकों ने वाइक्लिफ के सिद्धान्तों को अपनाया। **ऐसे सुधारकों में ग्रोसीन जॉन कोलेट तथा टॉमस मूर प्रमुख थे, किन्तु सर्वाधिक प्रभाव फ्रांस के इरैस्मस का हुआ।** उसने अपनी पुस्तक **न्यू टेस्टामेण्ट** (New Testament) तथा **'दि प्रेज ऑफ फौली'** (The Praise of Folly) द्वारा क्रान्ति उत्पन्न कर दी। न्यू टेस्टामेण्ट का लूथर ने जर्मन भाषा तथा टाइनेडल ने अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया, किन्तु फिर भी इंग्लैण्ड के हेनरी अष्टम के शासन काल के पूर्व कैथोलिक धर्म के स्थान पर किसी नवीन धर्म का प्रचलन न हो सका।

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रति इंग्लैण्ड के विभिन्न शासकों की नीति का वर्णन निम्न है :

(i) **धर्म सुधार आन्दोलन एवं हेनरी अष्टम** (Reformation and Henry VIII)—हेनरी अष्टम के शासन प्रारम्भ होने से पूर्व ही इंग्लैण्ड में कुछ विद्वानों ने धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ करने का प्रयत्न किया था। **इन विद्वानों में जॉन वाइक्लिफ, जॉन कोलेट, टॉमस मूर, इरैस्मस आदि प्रमुख हैं,** किन्तु इन विद्वानों के प्रयत्नों का इंग्लैण्ड पर विशेष प्रभाव न हुआ। अपने शासन के प्रारम्भ में हेनरी अष्टम भी पोप का समर्थक एवं धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोधी था। उसने इरैस्मस की पुस्तक **'न्यू टेस्टामेण्ट'** (New Testament) **के अंग्रेजी संस्करणों को जलवा दिया। पोप ने प्रसन्न होकर हेनरी अष्टम को 'धर्म रक्षक'** (Defender of the Faith) **की उपाधि प्रदान की थी।**

किन्तु, कैथराइन से तलाक लेने के प्रश्न पर हेनरी अष्टम तथा पोप में विरोधाभास उत्पन्न हो गया। हेनरी अष्टम कैथराइन से तलाक लेना चाहता था, किन्तु पोप ऐसा करने के पक्ष में नहीं था। अनेक इतिहासकारों का विचार है कि कैथराइन से तलाक लेने का प्रश्न ही इंग्लैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन का कारण था, किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। कैथराइन से तलाक लेने

के प्रश्न ने धर्म-सुधार आन्दोलन के लिए अवसर प्रदान किया, किन्तु यह इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आन्दोलन का कोई एकमात्र कारण नहीं था।[1]

हेनरी अष्टम ने पोप से नाराज होने के पश्चात् उसके विरुद्ध कार्य प्रारम्भ किया। अनेक नियम पारित करके हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के चर्च का सर्वोच्च अधिकारी बन गया तथा पोप से पूर्णतः सम्बन्ध समाप्त कर लिए। पोप के इंग्लैण्ड में प्रमुख अड्डे मठ थे, जिनको हेनरी अष्टम ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक बन्द कराया व उनकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यद्यपि हेनरी अष्टम ने धर्म-सुधार आन्दोलन में भाग लिया, **किन्तु लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन व हेनरी अष्टम की नीतियों में पर्याप्त अन्तर था।** लूथर का उद्देश्य कैथोलिक धर्म में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर करना था, जबकि हेनरी अष्टम का मुख्य उद्देश्य इंग्लैण्ड में पोप के प्रभाव को समाप्त करना था। इस प्रकार लूथर द्वारा संचालित आन्दोलन का स्वरूप धार्मिक व हेनरी अष्टम का राजनीतिक था।

(ii) **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एडवर्ड षष्टम** (Reformation and Edward VI)—हेनरी अष्टम की 1547 ई. में मृत्यु हो गयी। हेनरी अष्टम के उपरान्त उसका पुत्र एडवर्ड षष्टम इंग्लैण्ड का शासक बना। राजगद्दी पर आसीन होते समय वह अल्पवयस्क था, अतः 1547 ई. से 1549 ई. तक **उसके मामा ड्यूक आफ सोमरसेट तथा 1549 ई. से एडवर्ड की मृत्यु (1553 ई.) तक ड्यूक ऑफ नार्थम्बरलैण्ड ने उसके संरक्षक के रूप में कार्य किया।**

(क) सोमरसेट की नीति—सोमरसेट प्रोटेस्टेण्ट मत का समर्थक था, किन्तु प्रारम्भ में उसने धार्मिक स्वतन्त्रता की नीति का पालन किया। उसने राजद्रोह नियम व हेनरी अष्टम के शासनकाल में पारित छह धाराओं वाला कानून समाप्त कर दिया। अतः यूरोप से अनेक धर्म-प्रचारक इंग्लैण्ड आए। **सोमरसेट ने क्रैनमर की सहायता से गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया।** गिरजाघरों से चित्रों, मूर्तियों तथा स्मारकों को हटाया गया। कैथोलिकों के प्रार्थना भवनों (Chantries) को नष्ट किया गया। 1549 ई. में क्रैनमर ने एक नयी प्रार्थना पुस्तक '*English Book of Common Prayer*' तैयार की। यह पूर्णतः प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुरूप व अंग्रेजी में लिखी गई। एकरूपता अधिनियम (Act of Uniformity) के द्वारा उसे प्रत्येक पादरी के लिए अनिवार्य बनाया गया।

(ख) नार्थम्बरलैण्ड की नीति—नार्थम्बरलैण्ड भी प्रोटेस्टेण्ट था। उसने 1552 ई. में द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक निकाली जो पहली प्रार्थना-पुस्तक से भी अधिक प्रोटेस्टेण्ट सिद्धान्तों पर आधारित थी। **नार्थम्बरलैण्ड ने 42 धाराओं वाला एक कानून पारित किया जो पूर्णतः प्रोटेस्टेण्ट धर्म के पक्ष में था।**

इस प्रकार एडवर्ड षष्टम के शासनकाल (1547-53) में धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रगति हुई।

(iii) **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं मेरी ट्यूडर** (Reformation and Mary Tudor)—मेरी ट्यूडर कट्टर कैथोलिक थी, अतः उसने अपने शासनकाल में धर्म-सुधार आन्दोलन का विरोध किया व इंग्लैण्ड में पुनः पोप की खोई हुई प्रभुसत्ता एवं कैथोलिक धर्म को प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न किया। मेरी ने कैथोलिक एवं पोप को प्रसन्न करने के लिए, हेनरी अष्टम तथा एडवर्ड षष्टम के शासनकाल में पारित समस्त धर्म सम्बन्धी नियमों को समाप्त कर दिया। इतना

1 "Henry's wish to get rid of Catherine was the occasion rather than the cause of the English Reformation." —*Woodward.*

ही नहीं, मेरी ने प्रोटेस्टेण्ट लोगों पर अत्यधिक अत्याचार किए। अनेक व्यक्ति भयभीत होकर प्रोटेस्टेण्ट धर्म को त्यागने पर विवश हुए। **प्रोटेस्टेण्ट नेताओं क्रेनमर, रिडले, लेटीमर आदि को जिन्दा जला दिया गया। प्रोटेस्टेण्टों पर किए गए अत्याचारों के कारण मेरी ट्यूडर को 'खूनी मेरी'** (Bloody Mary) **कहा गया है।**

इस प्रकार मेरी के शासनकाल (1553-1558 ई.) में 'धर्म-सुधार आन्दोलन' (Reformation) को इंग्लैण्ड में गम्भीर क्षति पहुंची।

(iv) **धर्म-सुधार आन्दोलन एवं एलिजाबेथ** (Reformation and Elizabeth)—मेरी की मृत्यु के पश्चात् 1558 ई. में ऐन बोलेन की पुत्री **एलिजाबेथ** इंग्लैण्ड की शासिका बनी। एलिजाबेथ अत्यन्त व्यवहार-कुशल व बुद्धिमान स्त्री थी। एलिजाबेथ को धार्मिक मामलों में विशेष रुचि नहीं थी उसने कैथोलिक व प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायियों को अत्याचार करते देखा था। एलिजाबेथ व्यक्तिगत कारणों से पोप की विरोधी थी क्योंकि पोप ने उसे हेनरी अष्टम की अवैध सन्तान घोषित किया था। इसके अतिरिक्त पोप व उसके कैथोलिक समर्थक एलिजाबेथ के स्थान पर मेरी स्काट को इंग्लैण्ड की शासिका बनाना चाहते थे। अतः **एलिजाबेथ का झुकाव प्रोटेस्टेण्ट धर्म की ओर था।**

एलिजाबेथ एक कुशल शासिका थी, अतः देश को धार्मिक विवादों से बचाने के लिए उसने मध्यम मार्ग को अपनाया। एलिजाबेथ ने इंग्लैण्ड को पोप के प्रभुत्व से बचाने हेतु **सर्वोच्चता नियम** (Act of Supremacy) पारित कराया। इस अधिनियम के द्वारा पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड से समाप्त हुआ तथा एलिजाबेथ चर्च की सर्वोच्च अधिकारी बन गयी। उसने कैथोलिकों को प्रसन्न करने के लिए 'चर्च के प्रधान' के स्थान पर '**चर्च की शासिका**' की उपाधि धारण की। एलिजाबेथ ने एडवर्ड षष्टमकालीन द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक में से कैथोलिकों को अत्यधिक चुभने वाली धाराएं भी निकाल दीं। रविवार को प्रत्येक व्यक्ति के लिए चर्च में प्रार्थना करना आवश्यक था। ऐसा न करने वाले को प्रति रविवार एक शिलिंग दण्ड देना पड़ता था।

इस प्रकार एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टेण्ट एवं कैथोलिक धर्म के मध्य का मार्ग अपनाते हुए इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया। एलिजाबेथ का यह धार्मिक समझौता अत्यधिक उदार था। एलिजाबेथ ने इस धार्मिक समझौते के आधार पर एक नया चर्च बनाया जिसे **'एंग्लिकन चर्च'** (Anglican Church) कहा गया। यह एंग्लिकन चर्च प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक विचारधाराओं का सम्मिश्रण था। अतः इससे अधिकांश लोग सन्तुष्ट हो गए।

धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति
(NATURE OF THE REFORMATION)

इंग्लैण्ड में हुए धर्म-सुधार आन्दोलन एवं यूरोप के अन्य राष्ट्रों के धर्म-सुधार आन्दोलन की प्रकृति में पर्याप्त अन्तर था। **इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन, यूरोप के राष्ट्रों के आन्दोलनों के समान, मात्र धार्मिक न था, वरन् इसके राजनीतिक एवं सामाजिक पहलू भी थे।** यूरोप के अन्य देशों में धर्म-सुधार की मूल भावना का जन्म जनता में हुआ था जबकि इंग्लैण्ड में यह राजाओं से प्रारम्भ हुआ। **इंग्लैण्ड में हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को समाप्त कर चर्च को अपने अधीन लाना चाहता था। उसका उद्देश्य कैथोलिक धर्म में सुधार करना न था।**[1] इस प्रकार, जर्मनी तथा यूरोप के अन्य देशों में यह एक धार्मिक आन्दोलन था, किन्तु इंग्लैण्ड में हुआ आन्दोलन

1 **"His (Henry VIII) sympathies were neither with Luther nor with Swiss reformers. Papal authority was in his way and it must go. English Church must be ruled by the English King."**
—***Southgate.***

प्रमुखतः हेनरी अष्टम तथा पोप की पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता का परिणाम था तथा इसमें धार्मिक के अतिरिक्त अन्य कारण भी निहित थे। अतः अन्त में यह कहा जा सकता है कि **इंग्लैण्ड में धर्म-सुधार आन्दोलन वास्तव में, एक व्यक्तिगत एवं राजनीतिक आन्दोलन था, जिसको धार्मिकता का रंग एवं आधार देकर सफल बनाया गया।**[1]

धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणाम
(RESULTS OF THE REFORMATION)

धर्म-सुधार आन्दोलन अत्यधिक महत्वपूर्ण था। इसके यूरोप पर निम्नलिखित प्रभाव हुए :

(i) **प्रोटेस्टेण्ट धर्म का जन्म एवं प्रभाव** (Birth and effects of Protestant religion)—धर्म-सुधार आन्दोलन का यूरोप पर व्यापक प्रभाव पड़ा। धर्म-सुधार आन्दोलन सफल होने से पूर्व यूरोप में केवल एक कैथोलिक धर्म था, किन्तु इसके पश्चात् प्रोटेस्टेण्ट धर्म का प्रादुर्भाव हुआ और **दोनों धर्मों के संघर्ष के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को तीसवर्षीय युद्ध का सामना करना पड़ा।** यही नहीं, यूरोप धर्म-सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप दो धार्मिक गुटों में विभाजित हो गया। धार्मिक आन्दोलन के कारण ही इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट शासक और उनकी संसद के सम्बन्ध मधुर न रह सके।

(ii) **इंग्लैण्ड का विकास** (Development of England)—धर्म-सुधार आन्दोलन ने इंग्लैण्ड के विकास में सहयोग दिया। इसके पूर्व पोप न केवल धार्मिक अपितु राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करता था, जिसके कारण विकास में बाधा पड़ती थी, पोप अमरीका में, पुर्तगाल एवं स्पेन को ही व्यापार प्रदान करने की अनुमति प्रदान करता था। इंग्लैण्ड ने भी धर्म-सुधार आन्दोलन के पश्चात् अमरीका में अपने उपनिवेश स्थापित किए तथा यूरोप में स्वेच्छा से सम्बन्ध स्थापित किए।

(iii) **राजा की शक्ति में वृद्धि** (Increase in the powers of the King)—धर्म-सुधार आन्दोलन के संवैधानिक परिणाम भी हुए। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव चर्च का पूर्ण रूप से राजा के अधीन हो जाना था जिससे राजा के सम्मान तथा पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इससे राजा की व्यक्तिगत शक्ति में वृद्धि हुई तथा राष्ट्रीय भावना प्रबल हुई। गिरजाघरों का प्रशासन, जिसमें विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति, झगड़ों का फैसला आदि सम्मिलित थे, राजा के अधिकार में हो गए। गिरजाघर के अधिकारी अब राजा का विरोध नहीं कर सकते थे। लार्ड सभा पर भी धर्म-सुधार का प्रभाव पड़ा। मठों के समाप्त होने से मठों के अध्यक्षों का लार्ड सभा में स्थान स्वतः समाप्त हो गया। **राजा की शक्ति में वृद्धि होने का स्पष्ट उदाहरण, हेनरी अष्टम के शासनकाल में उत्तरी विद्रोहों को दबाने के लिए विभिन्न परिषदों की स्थापना किया जाना है।** एलिजाबेथ के शासन में हाई कमीशन न्यायालय की स्थापना की गयी, जो धार्मिक विद्रोहों के मामलों में दण्ड देता था। यह ट्यूडर शक्ति को बढ़ाने का ही एक अंश था। धर्म-सुधार आन्दोलन एवं उससे सम्बन्धित विद्रोहों ने, अपनी शक्ति बढ़ाने में ट्यूडर शासकों को पूर्ण सहयोग दिया।

(iv) **संसद पर प्रभाव** (Effects upon Parliament)—धर्म-सुधार आन्दोलन का इंग्लैण्ड की संसद पर भी प्रभाव पड़ा। ट्यूडर शासकों ने संसद को साझेदारी में प्रयोग करते हुए,

1 "Looking at its work as a whole two things emerge. To begin with there never was a Reformation so completely mundance. It was political and nothing else. The only sence in which it was partially religious is that it was sacrilegious."
—*Warner-Marten-Muir.*

अपनी शक्ति में निरन्तर वृद्धि की। इस साझेदारी, जिसके द्वारा संसद को धर्म-सुधार आन्दोलन का यन्त्र बनाया गया था, का प्रभाव संसद पर भी हुआ। **संसद को राज्य के प्रमुख कार्य करने का अनुभव प्राप्त हुआ जिसके उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हुई।** संसद को अपनी शक्ति व अधिकारों का भी अनुभव हुआ जिसका प्रमाण, एलिजाबेथ के शासनकाल में संसद की जागरूकता व स्टुअर्ट-शासक जेम्स को चुनौती के रूप में मिलता है। धर्म-सुधार आन्दोलन का संसद पर एक अन्य प्रभाव लार्ड सभा में मठाधीशों (Abbots) की संस्था का कम होना था जिससे लार्ड सभा में धार्मिक मत का प्रभाव भी कम हुआ।

(v) **सामाजिक प्रभाव** (Social effects)—इसने सामाजिक गुटों के सन्तुलन में परिवर्तन किया। एक ओर चर्च के अधिकारियों के धन व प्रभाव में कमी आयी, दूसरी ओर भूपति (Gentry) वर्ग का उत्थान हुआ जिसने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। धर्म-सुधार आन्दोलन का एक अन्य प्रमुख प्रभाव भिखारियों व चोरों की संख्या में वृद्धि होना था। मठों के समाप्त होने से ऐसा हुआ था क्योंकि मठ गरीबों के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। मठों में गरीबों को शरण एवं शिक्षा दी जाती थी, किन्तु मठों के समाप्त होने से ये गरीब असहाय हो गए, जिनसे अपराधों में वृद्धि हुई।

(vi) **आर्थिक सुधार** (Economic reforms)—धर्म-सुधार आन्दोलन का महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव इंग्लैण्ड पर पड़ा। **मठों के समाप्त होने से उनकी अपार सम्पत्ति पर राज्य का अधिकार हो गया।** इसके अतिरिक्त मठों को दी जाने वाली वार्षिक सहायता तथा पोप को भेजे जाने वाली धनराशि तथा उपहार आदि बन्द हो गए। इस प्रकार बची धनराशि का राष्ट्रीय विकास के लिए उपयोग किया गया।

(vii) **शिक्षा पर प्रभाव** (Effects on Education)—शिक्षा का भी धर्म-सुधार आन्दोलन से प्रसार हुआ, अनेक विद्यालयों की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय भाषा की महत्ता में वृद्धि हुई। बाईबिल का अनेक भाषाओं में अनुवाद किया गया। साहित्य एवं शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक समितियों की स्थापना की गयी। शिक्षा का कार्य अब चर्च के स्थान पर सामाजिक संस्थाओं द्वारा किया जाने लगा।

(viii) **गिरजाघरों की बुराइयों को दूर करने का प्रयास** (Effects to remove the ills of the Church)—पोप ने धार्मिक क्षेत्र में अनेक सुधार कर कैथोलिक धर्म को सशक्त बनाने का पुनः प्रयास किया। **उसने स्वयं गिरजाघरों में व्याप्त बुराइयों को स्वीकार किया तथा उन्हें दूर करने का प्रयास किया।**[1]

इस प्रकार धर्म-सुधार आन्दोलन ने, राजा की शक्ति, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांविधानिक स्थितियों को प्रभावित किया तथा जनसाधारण पर व्यापक प्रभाव डालकर, यूरोप के देशों को सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने में पर्याप्त सहायता की।

धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन
(COUNTER REFORMATION)

यूरोप के देशों में विकसित हुए प्रोटेस्टेण्ट धर्म तथा धर्म-सुधार आन्दोलन के विरुद्ध यूरोप में एक शक्तिशाली आन्दोलन हुआ, जिसे धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन कहा जाता है।

1 "One of the important results of the Protestant revolt was the impetus to reform with in the Roman Catholic Church."
—J. E. Swain, *A History of World Civilization*, p. 302.

इस समय तक यूरोप में कैथोलिक धर्म की स्थिति काफी क्षीण हो चुकी थी, अतः **पोप ने कैथोलिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए 1562 ई. में ट्रेण्ट नामक स्थान पर एक सभा का आयोजन किया, जिसमें कैथोलिक धर्म के लिए नवीन नियमों का प्रतिपादन किया गया।** ट्रेण्ट की सभा में निम्नलिखित मुख्य उपदेशों की पुष्टि की गयी :

(i) कैथोलिक चर्च का प्रधान पोप है।

(ii) चर्च को ही धर्म ग्रन्थों का अर्थ लगाने का एकाधिकार है।

(iii) कैथोलिकों के लिए लैटिन भाषा में एक नई बाईबिल तैयार की जाए।

इसके अतिरिक्त इस सभा में कुछ सुधारों की भी घोषणा की गयी, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे :

(i) चर्च के पदों को बेचने पर प्रतिबन्ध लगाया गया।

(ii) सभी बिशप अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करें।

(iii) पादरियों को उचित प्रशिक्षण व्यवस्था।

(iv) आवश्यकतानुसार जनसाधारण की भाषा में उपदेशों का प्रचार करना।

इन सुधारों का व्यापक प्रभाव हुआ। पोप ने भी इस सभा में भाग लिया था। इस घोषणा के पश्चात् योग्य व चरित्रवान लोगों को ही पादरी बनाया जाने लगा। स्कूलों मे बाईबिल के अध्ययन पर जोर दिया गया। परिणामस्वरूप, रोमन कैथोलिक धर्म पुनर्जीवित होने लगा तथा धर्म सुधार आन्दोलन कमजोर पड़ने लगा।

धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन का प्रमुख समर्थक स्पेन का राजा फिलिप था, जो विशाल साम्राज्य के अतिरिक्त नवीन संसार का भी स्वामी था। उसके पास अपार धन था तथा उसकी थल सेना अजेय समझी जाती थी। फिलिप की नौ-सेना भी अत्यन्त शक्तिशाली थी। **यद्यपि फ्रांस और स्पेन की राजनीतिक शत्रुता थी तथापि फ्रांस भी इस आन्दोलन में स्पेन की सहायता कर रहा था। वह समय प्रोटेस्टेण्ट (Protestant) धर्म के लिए अत्यन्त संकट था।** फ्रांस के ह्यूगनोट[1] तथा नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे थे। इंग्लैण्ड में इसी प्रकार का धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन फैलने की आशंका थी। यूरोप के राष्ट्रों में इंग्लैण्ड ही ऐसा था जिसकी शासिका व जनता मुख्यतया प्रोटेस्टेण्ट मानी जाती थी। अतः इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ को जीवन पर इस धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन का सामना करना पड़ा।[2]

इसी समय प्रोटेस्टेण्ट धर्म व धर्म सुधार आन्दोलन का विरोध करने के लिए जैसुइट संगठन (Order of Jesuit) की स्थापना की गयी। इस नवनिर्मित संगठन का प्रमुख उद्देश्य प्रोटेस्टेण्ट धर्म का विरोध तथा कैथोलिक धर्म का प्रचार करना था। इस संगठन की **स्थापना एक स्पेनी सैनिक इग्नेशियम लायला** ने की थी। सर्वप्रथम इस संगठन की स्थापना स्पेन में हुई, तत्पश्चात् इसकी अनेक शाखाएं यूरोप के अनेक देशों में स्थापित हुईं। इस संगठन का प्रशिक्षण अत्यन्त कठोर था। लायला ने धर्म के प्रति श्रद्धा एवं आचार से पवित्र रहने का संगठन के लोगों से प्रण करवाया। लायला ने धार्मिक न्यायालयों की भी स्थापना की, जिन्हें 'इनक्वीजीशन' कहा

---

1 काल्विन ने उग्र प्रोटेस्टेण्टवाद को जन्म दिया था, जिसे काल्विनवाद कहा जाता था। काल्विनवादियों को विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग नामों से जाना जाता था। कहीं प्योरिटन तथा कहीं प्रेस्बिटेरियन, फ्रांस में इन्हें ह्यूगनौट कहते थे।

2 "Elizabeth's reign then is one long struggle against the counter-reformation."
—*Warner-Marten-Muir*

जाता था। इस न्यायालय ने बड़ी संख्या में लोगों को मृत्यु-दण्ड व जीवित जलाने की सजा दी। जैसुइट संगठन ने पोप तथा पादरियों को भी सादगी का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश किया। इस संगठन ने अनेक स्कूलों की भी स्थापना की व उचित शिक्षा का प्रबन्ध कराया। जैसुइट संगठन के लोगों ने कैथोलिक धर्म का प्रचार यूरोप के बाहर भी किया।

जैसुइट संगठनकर्ताओं ने इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ को कैथोलिक बनाने का प्रयास किया। उनका विचार था कि एलिजाबेथ का विवाह किसी कैथोलिक राजा से होना चाहिए। अतः एलिजावेथ व स्पेन के राजा फिलिप के विवाह के लिए उन्होंने प्रयत्न किया, किन्तु एलिजाबेथ ने कूटनीति का सहारा लेते हुए इस विवाह को टाला। जैसुइट यह भी चाहते थे कि यदि यह विवाह न हो सके तो इंग्लैण्ड के सिंहासन पर स्काटलैण्ड की रानी मेरी को बैठाया जाए। यदि यह भी सम्भव न हो तो शक्ति द्वारा एलिजाबेथ तथा इंग्लैण्ड को कैथोलिक धर्म का अनुयायी बनाया जाए। उपरोक्त किसी भी तरीके से जैसुइट इंग्लैण्ड में कैथोलिक धर्म प्रतिस्थापित न कर सके।

फिर भी, धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन के परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेण्ट धर्म को गहरा आघात लगा व कैथोलिक धर्म की पर्याप्त उन्नति हुई। अतः धर्म-सुधार विरोधी आन्दोलन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

एलिजाबेथ और धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन
(ELIZABETH AND THE COUNTER REFORMATION)

एलिजाबेथ तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए कैथोलिक धर्म अपनाने को तैयार न थी, क्योंकि यदि वह ऐसा करती तो इंग्लैण्ड पर पोप का प्रभुत्व स्थापित हो जाता तथा इंग्लैण्ड की जनता जो कि मुख्यतः प्रोटेस्टेण्ट थी, इसे पसन्द न करती और तब उसे और भी गम्भीर परिस्थितियों का सामना करना पड़ता, परन्तु वह अपने शासन के प्रारम्भ में ही जैसुइट संगठन से सामना भी करना नहीं चाहती थी। अतः **एलिजाबेथ लम्बे समय तक फिलिप अथवा फ्रांस के किसी राजकुमार से विवाह करने का आश्वासन देती रही यद्यपि विवाह उसने जीवन पर्यन्त नहीं किया।** एलिजाबेथ अपनी कूटनीति का सहारा लेते हुए फ्रांस और स्पेन की शत्रुता से लाभ उठाती रही, अपने विवाह को उसने राजनीतिक अस्त्र के रूप में प्रयोग किया तथा लम्बे समय तक वह इसके द्वारा स्पेन की शत्रुता से बची रही, किन्तु सदैव के लिए इस संकट को टाल नहीं सकी और शीघ्र ही उसे जैसुइट द्वारा चलाए गए आन्दोलन के कारण अनेक संकटों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ा। **इस आन्दोलन के साथ एलिजाबेथ के संघर्ष को अध्ययन की सुविधा के लिए चार भागों में विभक्त कर सकते हैं—**

(i) स्कॉटलैण्ड का संकट (1558-1568 ई.),

(ii) एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र एवं विद्रोह (1568-1587 ई.),

(iii) स्पेन से संघर्ष (1588 ई.),

(iv) एलिजाबेथ का अन्तिम समय (1589-1603 ई.)।

(i) स्कॉटलैण्ड का संकट (The Scottish Problem)—एलिजाबेथ के लिए सर्वप्रथम स्कॉटलैण्ड संकट का कारण बना। स्कॉटलैण्ड की शासिका मेरी स्वयं को इंग्लैण्ड के सिंहासन की अधिकारिणी समझती थी। मेरी स्काट कैथोलिक धर्म की अनुयायी थी, अतः उसे समस्त कैथोलिक राज्यों का समर्थन प्राप्त था। **एलिजाबेथ की कैथोलिक जनता भी एलिजाबेथ के स्थान पर मेरी को इंग्लैण्ड की रानी बनाना चाहती थी। अतः मेरी को उनका समर्थन भी प्राप्त था।** मेरी

का विवाह फ्रांस के राजा के साथ हुआ था तथा उसने अपने समस्त अधिकार अपने पति को दे दिए थे जिससे मेरी की मृत्यु हो जाने पर वह स्कॉटलैण्ड का राजा तथा इंग्लैण्ड के सिंहासन का उम्मीदवार हो सकता था। अतः एलिजाबेथ के लिए आवश्यक था कि वह अत्यन्त कुशलतापूर्वक स्कॉटलैण्ड की समस्या का समाधान करे।

इस संकट काल में एलिजाबेथ ने फ्रांस और स्पेन की पारस्परिक शत्रुता से लाभ उठाया। स्पेन का शासक जानता था कि यदि मेरी का इंग्लैण्ड के सिंहासन पर अधिकार हो गया तो इंग्लैण्ड, फ्रांस और स्कॉटलैण्ड एक हो जाएंगे और उसके शत्रु फ्रांस की शक्ति में असीमित वृद्धि हो जाएगी, अतः वह इस प्रकार का गठबन्धन होते नहीं देख सकता था। एलिजावेथ ने स्पेन की इस विवशता से लाभ उठाया। एलिजावेथ जानती थी कि स्पेन मेरी स्काट को कभी भी इंग्लैण्ड की शासिका न होने देगा। अतः उसने स्पेन के राजा को यह प्रलोभन दिया कि वह उससे विवाह कर लेगी। स्पेन के शासक फिलिप ने उपर्युक्त दो कारणों से एलिजाबेथ का समर्थन किया। स्पेन के शासक की सहायता के अतिरिक्त एजिलाबेथ को सर्वाधिक सहायता स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों से हुई। स्कॉटलैण्ड ही यूरोप में एक ऐसा राज्य हुआ जिसने अपने शासक के विरुद्ध प्रोटेस्टेण्ट धर्म को स्वीकार करने में सफलता प्राप्त की।

जिस समय एलिजावेथ इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुई उस समय तक स्कॉटलैण्ड में कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट वर्ग में संघर्ष प्रारम्भ हो चुका था। अनेक प्रोटेस्टेण्ट धर्म-प्रचारक अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे। इन प्रचारकों में सर्वाधिक प्रमुख जॉन नॉक्स (John Knox) नामक व्यक्ति था जिसके विषय में कहा जाता था, "**एक घण्टे में उस व्यक्ति की आवाज हमको इतना जीवन प्रदान करती है जितना कि छह सौ बिगुल लगातार हमारे कानों पर बजने के बाद भी नहीं दे सकते।**"[1] उसकी कब्र पर मोर्टन द्वारा कहे गए शब्द भी उसकी महत्ता को सिद्ध करते हैं। मोर्टन ने कहा था—'**यहां वह व्यक्ति लेटा हुआ है जो किसी व्यक्ति से कभी नहीं डरा।**'[2] जॉन नॉक्स ने जनता को मेरी की माता मेरी ऑफ गाइस (Mary of Guise) जो मेरी की संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थी, के विरुद्ध भड़काया तथा शीघ्र ही अपने आन्दोलन की गति में तीव्रता लाते हुए स्कॉटलैण्ड को गृहयुद्ध की स्थिति में ला खड़ा किया। स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग को यह आशा थी कि इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ उनकी सहायता करेगी, परन्तु एलिजाबेथ ने फ्रांस के भय से ऐसा न किया। **एलिजाबेथ का विचार था कि यदि उसने स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट लोगों की कोई सहायता की तो फ्रांस उससे अप्रसन्न हो जाएगा तथा सम्भव था कि फ्रांस इंग्लैण्ड के कैथोलिकों को सहायता करने लगता।**

स्कॉटलैण्ड के इस गृह-युद्ध में प्रारम्भ में प्रोटेस्टेण्ट लोगों को सफलता मिली। प्रोटेस्टेण्ट जनता ने चर्च एवं मठों की सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया तथा एडवर्ड षष्टमकालीन '**द्वितीय प्रार्थना पुस्तक**' का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया। इसी समय प्रोटेस्टेण्ट वर्ग के दुर्भाग्य से फ्रांस के शासक हेनरी द्वितीय की मृत्यु हो गयी और मेरी का पति फ्रांसिस फ्रांस का शासक बना। अतः स्कॉटलैण्ड की सहायतार्थ फ्रांस की सेना आ पहुंची तथा उन्होंने स्कॉटलैण्ड के प्रमुख बन्दरगाह लीथ पर अधिकार कर लिया। फ्रांस के हस्तक्षेप से ऐसा प्रतीत होने लगा कि प्रोटेस्टेण्ट जनता का प्रयत्न असफल हो जाएगा। अतः एलिजाबेथ ने अब हस्तक्षेप करना

1 **"The voice of that one man is able in an hour to put more life into us than six hundred trumpets continually blustering in our ears."**
2 **'Here lies one who never feared the face of man.'** —*Morton*

आवश्यक समझा और **अंग्रेजी नौ-सेना ने लीथ पर आक्रमण कर 1559 ई. में लीथ पर अधिकार कर फ्रांस से सहायता मिलने का रास्ता बन्द कर दिया।** 1506 ई. के अप्रेल माह में अंग्रेजी सेना ने फ्रांस की सेना को पूर्ण रूप से परास्त कर उन्हें स्कॉटलैण्ड छोड़ने पर विवश किया। इस प्रकार अंग्रेज सेना की सहायता से प्रोटेस्टेण्ट वर्ग की विजय हुई, अतः अब एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से भयभीत होने की आवश्यकता न रही। **1560 ई. में ही एलिजाबेथ तथा स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग के पक्ष में दो घटनाएं और हुईं—प्रथम, मेरी ऑफ गाइज** (Mary of Guise) **की मृत्यु होना और द्वितीय, दिसम्बर 1560 ई. में मेरी के पति फ्रांसिस की मृत्यु होना था।** मेरी अब फ्रांस की रानी न रही तथा उसके कोई सन्तान न होने के कारण फ्रांस पर से उसका अधिकार समाप्त हो गया।

फ्रांस में अपना प्रभाव समाप्त होने पर मेरी स्कॉटलैण्ड आ गयी, परन्तु अब परिस्थितियां उसके विपरीत थीं। वह स्वयं कैथोलिक थी तथा उसकी प्रजा प्रोटेस्टेण्ट। जनता उससे अप्रसन्न थी। मेरी यद्यपि अत्यन्त चालाक स्त्री थी तथापि अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए इस समय उसने कुछ ऐसे कार्य किए जिससे जनता और अधिक क्रुद्ध हो गयी। मेरी ने 1565 ई. में डार्नले (Darnley) नामक अंग्रेज से विवाह किया था जिसे जनता ने पसन्द नहीं किया। मेरी के इस विवाह के विरुद्ध एक विद्रोह उत्पन्न हुआ जिसका मेरी ने कठोरतापूर्वक दमन किया, किन्तु मेरी और डार्नले के सम्बन्ध अधिक दिनों तक मधुर न रह सके। मेरी ने डार्नले को राजा के अधिकार नहीं दिए तथा वह अपने सचिव रिजिओ (Rizzio) से प्रेम करने लगी। अतः डार्नले ने उसके सचिव रिजिओ की हत्या करवा दी। मेरी डार्नले के इस कार्य से अत्यन्त क्रुद्ध हुई और उसने बाथवेल (Bothwell) नामक व्यक्ति की सहायता से 1567 ई. में डार्नले की हत्या करवा दी और बाथवेल से विवाह कर लिया। इस विवाह का जनता ने अत्यन्त विरोध किया और जनता ने विद्रोह कर दिया। कारबरी हिल (Carberry Hill) के निकट युद्ध हुआ। बाथवेल युद्ध क्षेत्र से भाग गया और मेरी को बन्दी बनाया गया तथा उस पर डार्नले की हत्या का आरोप लगाया। मेरी के स्थान पर उसके डार्नले से उत्पन्न पुत्र को जेम्स षष्टम के नाम से स्कॉटलैण्ड का राजा घोषित किया।

मेरी ने अपनी सुंदरता का लाभ उठाते हुए जेलर जार्ज डगलस को अपने प्रेमपाश में बांधने का नाटक किया और बन्दीगृह से भाग निकली। मेरी भागकर इंग्लैण्ड पहुंची तथा एलिजाबेथ से सहायता मांगी। **एलिजाबेथ अत्यन्त दूरदर्शी एवं बुद्धिमान स्त्री थी उसने ऐसे अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया और मेरी को बन्दी बना लिया,** क्योंकि यदि वह मेरी को स्वतन्त्र छोड़ देती तो मेरी फ्रांस से सहायता प्राप्त करती और वह यह नहीं चाहती थी। इसके साथ ही वह स्वयं भी अपने दुश्मन को सहायता नहीं देना चाहती थी। अपनी दूरदर्शिता प्रदर्शित करते हुए उसने मेरी को मृत्यु-दण्ड भी नहीं दिया और इस प्रकार स्पेन से मधुर सम्बन्ध बनाए रखे, क्योंकि मेरी के जीवित रहने पर स्पेन यदि एलिजाबेथ के विरुद्ध हो जाता तो स्वाभाविक था कि मेरी इंग्लैण्ड की शासिका बन जाती और इस प्रकार इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड तथा फ्रांस का गठबन्धन हो जाता जो कि स्पेन फ्रांस से शत्रुता के कारण कभी भी नहीं चाहता था।

इस प्रकार स्कॉटलैण्ड में मेरी के पतन तथा वहां प्रोटेस्टेण्ट धर्म की स्थापना होने से एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से भय न रहा।

(ii) एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र और विद्रोह (The Conspiracies and Plots)—1568 ई. तक एजिलाबेथ की स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आ गया था। स्कॉटलैण्ड से खतरा

समाप्त होने के अतिरिक्त फ्रांस में गृहयुद्ध प्रारम्भ होने के कारण फ्रांस इंग्लैण्ड से मित्रता का इच्छुक था। एलिजाबेथ ने इस प्रस्ताव का स्वागत किया तथा फ्रांस के किसी राजकुमार से विवाह करने का प्रलोभन देकर उसका समर्थन प्राप्त करती रही। इसके अतिरिक्त एलिजावेथ ने नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग को गुप्त रूप से स्पेन क़े विरुद्ध सहायता देकर उनके विद्रोह को सफल बनाने का प्रयत्न किया।

यद्यपि स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी के पतन के पश्चात् एलिजाबेथ को विदेशी शत्रुओं से भय न रहा, परन्तु स्वयं उसके देश के कैथोलिक निवासियों ने उसके विरुद्ध अनेक षड्यन्त्र किए। षड्यन्त्रकारी चाहते थे कि मेरी को स्वतन्त्र कर, एलिजावेथ के स्थान पर शासिका बनाया जाए। अतः एलिजाबेथ ने जब तक मेरी को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया तब तक ये विद्रोह होते रहे।

(क) उत्तरी इंग्लैण्ड में विद्रोह (The Risinc in the North)—एलिजावेथ के विरुद्ध सर्वप्रथम 1559 ई. में उत्तरी इंग्लैण्ड में विद्रोह हुआ। **इस विद्रोह का नेता नोर्फोक** (Norfolk) **नामक व्यक्ति था।** इसका विचार नीदरलैण्ड में स्पेन का कमांडर ड्यूक ऑफ अल्वा (Duke of Alva) से सहायता प्राप्त कर विद्रोह करने का था। इस षड्यन्त्र का भेद शीघ्र ही खुल गया तथा विद्रोहियों को बन्दी बनाने का आदेश दिया गया। विद्रोहियों ने मेरी स्काट को स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया, किन्तु असफल रहे। कुछ विद्रोही भाग गए तथा अन्य को, जो पकड़े गए, डरहम तथा यार्कशायर में मृत्यु-दण्ड दिया गया। इस विषय में उल्लेखनीय बात यह है कि जब विद्रोहियों ने विद्रोह का कारण कैथोलिक धर्म के प्रति श्रद्धा एवं कर्तव्य बताया, तब एलिजाबेथ ने केवल विद्रोहियों के समान उनके साथ व्यवहार किया तथा उनको बन्दी बनाने के लिए भी उसने एक कैथोलिक व्यक्ति अर्ल ऑफ ससेक्स (Earl of Sussex) को ही भेजा।

(ख) एलिजाबेथ का धर्म से निष्कासन (The Ex-communication)—एलिजाबेथ के विरुद्ध दूसरा षड्यन्त्र 1570 ई. में हुआ। 1570 ई. में पोप पायस पंचम (Pope Pius V) द्वारा एलिजाबेथ को ईसाई धर्म से निष्कासित कर दिया गया। अतः कैथोलिकों ने एलिजाबेथ को गद्दी च्युत करना चाहा। अनेक कैथोलिक धर्म-प्रचारक इंग्लैण्ड गए तथा कैथोलिक धर्म का प्रचार किया।

(ग) रिडोल्फी षड्यन्त्र (Ridolfi's Plot)—1571 ई. में रिडोल्फी (Ridolfi) का षड्यन्त्र हुआ। रिडोल्फी एक बैंक का कर्मचारी था, परन्तु रिडोल्फ के षड्यन्त्र की भी सूचना सरकार को मिल गयी। रिडोल्फी को बन्दी बनाया गया तथा उसको मृत्यु-दण्ड दिया गया।

(घ) थ्रोकमोर्टन षड्यन्त्र (Throckmorton's Plot)—1583 ई. में थ्रोकमोर्टन द्वारा षड्यन्त्र किया गया, किन्तु इसकी सूचना प्राप्त होने पर उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

(ङ) बेबिंगटन षड्यन्त्र (Babington's Plot)—एलिजाबेथ के विरुद्ध अन्तिम और सबसे शक्तिशाली विद्रोह 1586 ई. में हुआ। इंग्लैण्ड में कैथोलिकों ने एलिजाबेथ की हत्या करने के प्रयत्न तीव्र कर दिए। **सेवेज (Savage) नामक एक अधिकारी ने यह प्रतिज्ञा की कि वह एलिजाबेथ की हत्या कर देगा। उसकी सहायता बेबिंगटन** (Babington) **नामक अंग्रेज कैथोलिक कर रहा था। अतः इस षड्यन्त्र को बेबिंगटन के षड्यन्त्र** (Babington's Plot) **के नाम से जाना जाता है।** इस षड्यन्त्र में मेरी भी सम्मिलित थी। इस कार्य के लिए छह व्यक्तियों को नियत किया गया था। एलिजाबेथ के मन्त्रियों को इस षड्यन्त्र के विषय में सूचना प्राप्त हो गयी, उन्हें षड्यन्त्रकारियों तथा मेरी के मध्य हो रहे पत्र-व्यवहार का पता चल गया तथा

उन पत्रों को पढ़ा जाने लगा, किन्तु कोई भी कार्यवाही करने से पहले मन्त्री मेरी के विरुद्ध ठोस प्रमाण प्राप्त करना चाहते थे। शीघ्र ही उन्हें ऐसा प्रमाण मेरी के पत्र[1] के रूप में मिल गया। प्रमाण मिलते ही षड्यन्त्रकारियों को बन्दी बना लिया गया। समस्त षड्यन्त्रकारियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया। **मेरी को मृत्यु-दण्ड देने में एलिजाबेथ झिझक रही थी, किन्तु संसद तथा प्रिवी कौंसिल ऐसा करने के लिए दृढ़ थे।** अतः फरवरी, 1587 ई. में मेरी को मौत के घाट उतार दिया गया। मेरी की मृत्यु के साथ ही एलिजावेथ के विरुद्ध होने वाले विद्रोह भी समाप्त हो गए।

(iii) **स्पेन से संघर्ष** (The Armada)—स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय (Philip II) के साथ इंग्लैण्ड की रानी मेरी ट्यूडर (Mary Tuder) का विवाह हुआ था, परन्तु उसके समय में फिलिप केवल दो बार इंग्लैण्ड गया। मेरी ट्यूडर के पश्चात् एलिजाबेथ के इंग्लैण्ड की महारानी बनने के साथ ही इंग्लैण्ड के स्पेन से सम्बन्ध कटु हो गए, परन्तु फिर भी स्पेन और फ्रांस की पारस्परिक शत्रुता के परिणामस्वरूप स्पेन को एलिजाबेथ से मधुर सम्बन्ध बनाए रखने पर विवश होना पड़ा। फिलिप को भय था कि जब तक मेरी स्काट जीवित है, यदि एलिजावेथ अपने पद से हटी, तो मेरी स्काट इंग्लैण्ड की महारानी बन जाएगी और क्योंकि मेरी स्काट का विवाह फ्रांस के राजकुमार से हुआ था तथा वह स्वयं स्कॉटलैण्ड की भी रानी थी, अतः ऐसी परिस्थितियों में फिलिप को अकेले इस सम्मिलित शक्ति का सामना करना पड़ता। अतः जब तक मेरी स्काट जीवित रही स्पेन का राजा फिलिप विवश होकर कैथोलिक होते हुए भी प्रोटेस्टेण्ट धर्म की समर्थक एलिजावेथ का समर्थन करता रहा। **फिलिप यद्यपि एलिजावेथ से विवाह का इच्छुक था तथापि कभी उसे धमकी देता और कभी भयभीत करने का प्रयत्न करता, परन्तु एलिजाबेथ जानती थी कि वह इंग्लैण्ड से युद्ध नहीं करेगा।**[2]

बाद में स्पेन और फ्रांस के पारस्परिक सम्बन्ध कुछ सुधरने पर फिलिप ने एलिजाबेथ के विरुद्ध विद्रोह कर रहे विद्रोहियों को समर्थन देना प्रारम्भ किया, किन्तु जब तक मेरी स्काट को मृत्यु-दण्ड नहीं दिया गया तव तक स्पेन का शासक इंग्लैण्ड से युद्ध करने का साहस न जुटा सका। 1587 ई. में मेरी को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के पश्चात् फिलिप का भय समाप्त हो गया और अपने धार्मिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसके लिए आवश्यक हो गया कि इंग्लैण्ड को शक्ति के द्वारा परास्त करे। **स्पेन जैसुइट संगठन का नेता था तथा इंग्लैण्ड प्रोटेस्टेण्ट वर्ग के व्यक्तियों का।** स्पेन का आर्थिक तथा राजनीतिक हित पोप एवं कैथोलिक धर्म की रक्षा पर आधारित था, क्योंकि पोप के द्वारा उसे '**नवीन दुनिया**' का अधिकारी बना दिया था तथा पोप ही उसकी विद्रोही प्रोटेस्टेण्ट प्रजा को धर्म से पृथक् कर सकता था। दूसरी ओर, इंग्लैण्ड की सहायता से स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट धर्म की विजय हुई थी और इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा नीदरलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग का सहायक था। अतः स्पेन के लिए इंग्लैण्ड को परास्त करना तथा एलिजाबेथ को हटाना आवश्यक था।

इंग्लैण्ड और स्पेन के मध्य हुए युद्ध का धार्मिक कारण के अतिरिक्त स्पेन और इंग्लैण्ड की आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता थी। स्पेन का व्यापार भी अत्यन्त बढ़ा हुआ था। एलिजाबेथ इस व्यापार

1 **"Affairs being thus prepared, then shall it be time to set the six gentlemen at work."**
—Mary

2. **"This way partly due to the fact that both Elizabeth and Philip were some what irresolute in temprament and too timid to run the risk which was involved."**
—T. F. Tout

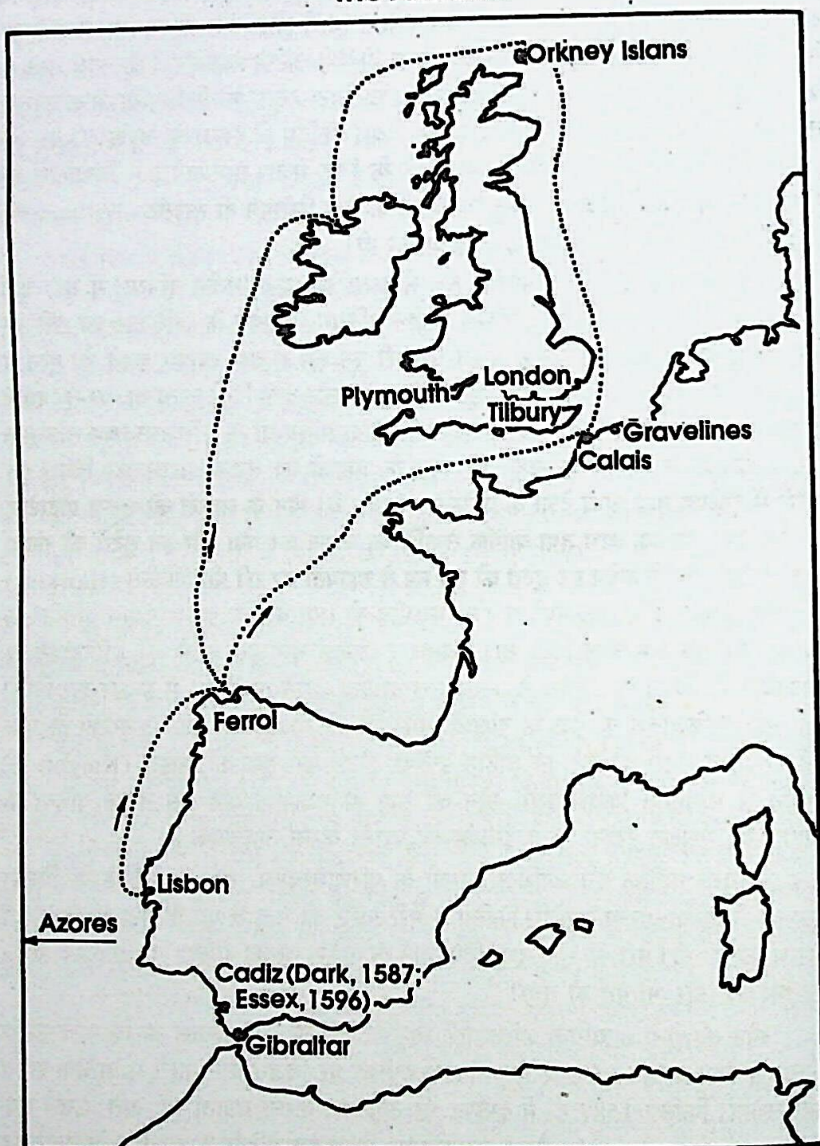
को इंग्लैण्ड के अधीन करना चाहती थी, परन्तु स्पेन के शक्तिशाली रहते ऐसा करना असम्भव था। नीदरलैण्ड से ऊन का व्यापार हेनरी अष्टम के समय से होता चला आ रहा था। नीदरलैण्ड, स्पेन के अधीन होने के कारण स्पेन का राजा फिलिप अंग्रेज व्यापारियों के साथ अत्यन्त कठोरतापूर्ण व्यवहार करता था। नीदरलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट जनता भी फिलिप के अत्याचारों से तंग आ चुकी थी, अतः उन्होंने विद्रोह कर दिया। फिलिप ने **अल्वा के ड्यूक** (Duke of Alva) को नीदरलैण्ड का विद्रोह शान्त करने के लिए भेजा। एलिजाबेथ ने विद्रोहियों को गुप्त रूप से सहायता पहुंचायी, परन्तु विद्रोहियों के नेता **विलियम दी साइलैंट** (William the Silent) की स्पेन के एक प्रतिनिधि ने हत्या कर दी।

नीदरलैण्ड के अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र में वास्तविक द्वन्द्व 'नवीन दुनिया' में था, जहां स्पेन ने अधिकार कर रखा था। इंग्लैण्ड 'नवीन दुनिया' पर स्पेन के अधिकार को स्वीकार करने को तैयार न था तथा अनेक अंग्रेज व्यापारी गुप्त रूप से वहां व्यापार करते थे। स्पेन ने इसका विरोध किया तथा जो अंग्रेज पकड़े जाते उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था, परन्तु **'नवीन दुनिया'** के धन के प्रलोभन के कारण तथा व्यापारिक प्रतिबन्धों के परिणामस्वरूप साहसिक अंग्रेज नाविकों ने व्यापार के स्थान पर स्पेन के जहाजों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इन लुटेरों में इंग्लैण्ड तथा अन्य देशों के प्रोटेस्टेण्ट व्यक्ति थे। **स्पेन के जहाजों को लूटना प्रोटेस्टेण्ट लुटेरों के लिए आर्थिक लाभ तथा धार्मिक सन्तुष्टि का कारण बन गया और इन लुटेरों की संख्या बढ़ती गयी। रानी एलिजाबेथ इन लुटेरों की गुप्त रूप से सहायता कर रही थी।** हॉकिन्स (Hawkins) तथा ड्रेक (Drake) के आक्रमणों से स्पेन भयभीत हो गया क्योंकि इसने 'नवीन दुनिया' के व्यापार को संकट में डाल दिया था। फिलिप ने अनेक बार इन लुटेरों की एलिजाबेथ से शिकायत की, किन्तु एलिजाबेथ ने उनका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने से इन्कार कर दिया। यही नहीं, एलिजाबेथ ने, ड्रेक के दक्षिणी अमरीका की यात्रा करने तथा अमरीका के पूर्वी तट पर स्थित नगरों को लूट कर वापिस इंग्लैण्ड लौटने पर, ड्रेक को **'नाइट'** (Knight) की उपाधि से सम्मानित किया। इससे स्पेन को स्पष्ट हो गया कि यदि उसे नवीन दुनिया के व्यापार को सुरक्षित रखना है तो इंग्लैण्ड को परास्त करना आवश्यक है।

उपर्युक्त धार्मिक एवं आर्थिक कारणों के परिणामस्वरूप, स्पेन ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ कर दीं। फिलिप ने मेरी स्कॉट की मृत्यु से पूर्व ही युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ कर दी थीं। मेरी को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के कारण उसका इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने का निश्चय और भी दृढ़ हो गया।

स्पेन की सेना अत्यधिक शक्तिशाली थी और फिलिप का विश्वास था कि यदि उसके सैनिक इंग्लैण्ड के तट पर उतर गए तो उन्हें इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त करने में अधिक समय नहीं लगेगा। फिलिप 1587 ई. में इंग्लैण्ड पर आक्रमण करना चाहता था, अतः उसने एक बड़ा जहाजी बेड़ा (Armada) तैयार करवाया था, किन्तु ड्रेक ने केडिज (Cadiz) के बन्दरगाह पर आक्रमण करके स्पेन के अनेक जहाजों को अग्नि की भेंट कर दिया। ड्रेक (Drake) ने सैंतीस जहाज तथा विशाल सैनिक भण्डार को नष्ट कर दिया था। इस घटना को **'स्पेन के राजा की दाढ़ी जलाना'**[1] कहा जाता है। इस घटना के परिणामस्वरूप, स्पेन को इंग्लैण्ड पर आक्रमण को कुछ समय के लिए टालना पड़ा। 1588 ई. में स्पेन का जहाजी बेड़ा तैयार हो गया। ड्रेक ने पुनः स्पेन पर आक्रमण करके उनके जहाजी बेड़े को नष्ट करना चाहा, परन्तु

1 'Singeing of the King of Spain's beared.'



The Route of the Armoda, 1588

एलिजाबेथ ने उसको ऐसा करनें की अनुमति नहीं दी क्योंकि उसे भय था कहीं ऐसा करने में इंगलिश चैनल सेना रहित न हो जाए।

20 मई, 1588 ई. को पोप का आशीर्वाद प्राप्त कर स्पेनी जहाजी बेड़ा लिस्बन (Lisbon) के बन्दरगाह से चला। इस जहाजी बेड़े में एक सौ तीस जहाज, उन्नीस हजार

सैनिक तथा आठ हजार मल्लाह थे। इसके अतिरिक्त उन्हें तीस हजार सैनिक नीदरलैण्ड से लेने थे। स्पेन के शक्तिशाली जहाजी बेड़े के समान इंग्लैण्ड का जहाजी बेड़ा न था। यद्यपि इंग्लैण्ड के जहाजी बेड़े में स्पेन से अधिक जहाज (एक सौ सत्तानवे) थे, किन्तु वे अत्यन्त छोटे थे। स्पेन के सैनिकों की संख्या भी अधिक थी, परन्तु वे अधिकांश थल-सैनिक थे। **इस प्रकार यद्यपि परोक्ष रूप से स्पेन की सेना अत्यधिक शक्तिशाली प्रतीत हो रही थी, परन्तु यह वास्तविकता न थी।** स्पेन के जहाजों की तोपें, उनके जहाज के अनुरूप बड़ी न थीं। दूसरी ओर इंग्लैण्ड के जहाज छोटे होने के कारण आसानी से किसी भी दिशा में मोड़े जा सकते थे। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की जल-सेना है कुशल एवं वीर ड्रेक, हाकिन्स, फ्रोबिस्टर जैसे अनुभवी नाविक थे। उल्लेखनीय बात है कि वास्तव में स्पेन के जहाजी बेड़े का निर्माण समुद्री युद्ध के लिए नहीं वरन् स्पेन के सैनिकों को इंग्लैण्ड के समुद्री तट तक पहुंचाने के लिए किया था, किन्तु अंग्रेज जल-सेना ने उन्हें समुद्र तट तक पहुंचने ही नहीं दिया।

इंग्लैण्ड ने भी अपने जहाजी बेड़े के अतिरिक्त स्थल-युद्ध की पूर्ण तैयारी की थी। टिलबरी में सत्तर हजार सैनिक एकत्रित किए गए थे, जिनका निरीक्षण स्वयं एलिजाबेथ ने किया तथा सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा था कि **"मैं यहां इसलिए आयी हूं ताकि अपने ईश्वर, देश, जनता, सम्मान तथा रक्त की रक्षा करते हुए आप लोगों के साथ ही जीवित रहूं अथवा मृत्यु को प्राप्त हो सकूं।"**[1]

स्पेन का जहाजी बेड़ा सकुशल इंगलिश चैनल में पहुंच गया। कैले (Calais) तक पहुंचने में यद्यपि जहाजी बेड़े को अंग्रेजों ने हानि पहुंचायी, परन्तु कोई विशेष प्रभाव डालने में अंग्रेज असफल रहे। 29 जुलाई, 1588 से 9 अगस्त, 1588 तक जल-युद्ध हुआ। कुशल और अनुभवी अंग्रेज डाकुओं द्वारा अंग्रेजों को सहायता करने के कारण स्पेनी बेड़े को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी। अंग्रेजों ने टूटे जहाजों में आग लगाकर उन्हें स्पेनी बेड़े की ओर छोड़ दिया। इसने स्पेन के अनेक जहाजों में आग लग गयी। 8 अगस्त, 1588 ई. को निर्णायक युद्ध हुआ। छोटे-छोटे अंग्रेजी जहाज तोपों और बन्दूकों से सुसज्जित थे तथा विशालकाय स्पेनी जहाजों पर निशानेबाजी करते थे। विशाल स्पेनी जहाज शीघ्र ही मुड़ नहीं सकते थे, अतः बहुत-से स्पेनी जहाज डूब गए। इसी समय एक तेज तूफान आया जिससे स्पेनी जहाज तितर-बितर हो गए तथा अनेक जहाज नष्ट हो गए। स्पेन का जहाजी बेड़ा उत्तरी सागर का चक्कर काट कर स्पेन भागा। स्पेन केवल 53 जहाज पहुंच सके। अंग्रेजों की विजय हुई और इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गयी।

इस पराजय के बाद स्पेन के राजा फिलिप ने अपने सैनिकों को आश्वस्त करते हुए कहा **"मैंने तुम्हें मनुष्य से युद्ध करने के लिए भेजा था न कि प्रकृति से।"**[2] इसी अवसर पर एलिजाबेथ ने अपनी विजय पर कहा—**'ईश्वर ने हवा चला दी और वे छिन्न-भिन्न हो गए।'**[3] इस प्रकार यद्यपि इंग्लैण्ड की विजय को भाग्य का समर्थन कहा गया, परन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं थी। **इंग्लैण्ड की समुद्र में इस विजय का कारण उसके नाविकों के युद्ध-कौशल, साहस एवं श्रेष्ठ जहाजों का परिणाम था।** वार्नर-मार्टिन ने इंग्लैण्ड की युद्ध-कुशलता के विषय में कहा

1 "I have come amongst you, as you see, at this time, being resolved in the midst and heat of battle to live or die amongst you all, to lay for my God and or my kingdom and for my people, my honour and my blood, even in the dust.'
—Elizabeth

2 'I sent you forth to fight with men, and not with the elements.' —Philip II

3 'God blew with His wind, and they were scattered.' —Elizabeth

है कि इंग्लैण्ड के प्रथम दिन 2 तथा सम्पूर्ण युद्ध में केवल 60 व्यक्ति मारे गए थे। **स्पेन के इतने जहाज नष्ट हो गए जितने कि इंग्लैण्ड के व्यक्ति नहीं मारे गए थे।**[1] इस विजय के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड का समुद्र में कोई भी राज्य सामना करने का साहस न कर सका तथा इंग्लैण्ड में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ।[2] ट्रेवेलियन ने इंग्लैण्ड की स्पेनी जहाजी बेड़े के विषय में लिखा है—**"आरमेडा की पराजय ने सम्पूर्ण विश्व को यह दिखा दिया कि समुद्रों का शासन भूमध्यसागरीय लोगों के हाथों से निकलकर उत्तरीय लोगों अर्थात् अंग्रेजों के हाथों में चला गया है।"**[3]

इस प्रकार पिछले चालीस वर्षों से स्पेन रूपी जो संकट इंग्लैण्ड पर छाया हुआ था, इस विजय से समाप्त हो गया। स्पेनी जहाजी बेड़े के परास्त हो जाने के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड को अब अपने भाग्य को स्वयं निर्धारित करने का अवसर प्राप्त हो गया तथा प्रोटेस्टेण्ट धर्म को भी बचाने में सफल हो गया। इंग्लैण्ड की सामुद्रिक शक्ति बढ़ने से भविष्य में व्यापार तथा उपनिवेश स्थापित करने के मार्ग पर वह अग्रसारित हुआ। इंग्लैण्ड की इस विजय का परिणाम केवल इंग्लैण्ड तक ही सीमित नहीं रहा, इसने कैथोलिक धर्म की उन्नति पर सर्वाधिक रोक लगायी।

(iv) **एलिजाबेथ का अन्तिम समय** (The Last days of Elizabeth)—स्पेनी जहाजी बेड़े पर विजय के पश्चात् एलिजाबेथ के शासन का अन्तिम समय शान्तिपूर्वक व्यतीत हुआ। इंग्लैण्ड को किसी भी विदेशी राज्य से भय नहीं रहा था, तथा कैथोलिकों का उत्साह भी क्षीण हो गया था। एलिजाबेथ को फ्रांस एवं नीदरलैण्ड में भी सफलता मिली। एलिजाबेथ की सहायता प्राप्त कर **हेनरी ऑफ नावारे** (Henry of Navarre) **कैथोलिकों के विरुद्ध सफल रहा और 1589 ई. में फ्रांस की राजगद्दी पर हेनरी चतुर्थ के नाम से बैठा।** नीदरलैण्ड भी एलिजाबेथ से सहायता प्राप्त कर स्पेन की परतन्त्रता से मुक्त हो गया।

इस प्रकार यद्यपि एलिजाबेथ को जीवन पर्यन्त जैसुइट संगठन के आन्दोलन का सामना करना पड़ा, परन्तु अन्त में वह इस प्रोटेस्टेण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन (Counter-Reformation) पर विजय प्राप्त करने में सफल रही। **उसने अपनी योग्यता एवं कुशल नीति से, सर्वाधिक शक्तिशाली कैथोलिक राज्य स्पेन की शक्ति को क्षीण कर नवीन दुनिया पर से भी उसका आधिपत्य समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट धर्म की सफलता, फ्रांस में प्रोटेस्टेण्ट धर्म के व्यक्ति का राजा बनना, नीदरलैण्ड को स्पेन के आधिपत्य से मुक्त कराना तथा इंग्लैण्ड के कैथोलिकों का एलिजाबेथ में विश्वास करना, प्रोटेस्टेण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन पर उसकी सफलता को प्रमाणित करते हैं।**

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. धर्म सुधार आन्दोलन से आप क्या समझते हैं ? धर्म सुधार आन्दोलन के कारणों एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

---

1 'The Spaininards lost more ships than we did men.'

2 'The destruction of the Armada marked a definite stage in the decline of Spain's power, while for England it was the start of a great era of ascendancy on the sea.'
—Ferguson-Bruun

3 'The importance of the defeat of Armada is that it demonstrated to all the power of the world that the rule of the seas had passed from the Mediterranean people to the folk *i.e.*, the English people.'
—Trevelyn

2. यूरोप में हुए धर्म सुधार आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
3. इंग्लैण्ड व जर्मनी में हुए धर्म सुधार आन्दोलनों का वर्णन कीजिए।
4. धर्म सुधार आन्दोलनों के परिणामों पर प्रकाश डालिए।
5. धर्म सुधार विरोधी आन्दोलनों का वर्णन कीजिए।
6. एक धर्म सुधारक के रूप में मार्टिन लूथर के योगदान का वर्णन कीजिए।
7. काल्विनवाद की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। क्या इसे विद्रोहियों का मत कहना उचित है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्म सुधार आन्दोलन से आपका क्या तात्पर्य है ?
2. ऑग्सबर्ग की सन्धि के बारे में आप क्या जानते हैं ? संक्षिप्त विवरण लिखिए।
3. उलरिक ज्विंगली के बारे में आप क्या जानते हैं ? धर्म सुधार आन्दोलन में उसकी भूमिका की विवेचना कीजिए।
4. सुधार आन्दोलन में काल्विन की भूमिका की विवेचना कीजिए।
5. इंग्लैण्ड में हुए धर्म सुधार आन्दोलन की प्रकृति क्या थी ? वर्णन कीजिए।
6. लूथरवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
7. काल्विन के धर्म की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
8. धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन (काउण्टर रिफार्मेशन) के परिणामों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. धर्म सुधार आन्दोलन को परिभाषित कीजिए।
2. 'प्रोटेस्टेण्ट' किसे कहते हैं ?
3. 'प्लूरेलिटीज की रीति' क्या थी ?
4. 'बाइक्लिफ' कौन था ?
5. जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन का प्रणेता कौन था ?
6. प्रोटेस्टेण्ट धर्म की विधिवत स्थापना कब हुई थी ?
7. मार्टिन लूथर की किन्हीं दो पुस्तकों के नाम लिखिए।
8. ऑग्सबर्ग की सन्धि कब हुई थी।
9. स्विट्जरलैण्ड के दो धर्म सुधारकों के नाम लिखिए।
10. काल्विन धर्म सुधारक किस देश का था ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. 'एक्स-कम्यूनिकेशन' नामक पोप के विशेषाधिकार के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन लागू होता है :
   (क) पोप किसी भी देश के राजा को ईसाई धर्म से च्युत कर सकता था
   (ख) इस अधिकार का प्रयोग पोप व्यक्ति को पाप से मुक्त होने के लिए करता था
   (ग) वह किसी भी पादरी को चर्च से निष्कासित कर सकता था
   (घ) इनमें से कोई नहीं
2. 'क्षमा पत्र' का प्रयोग होता था :
   (क) पाप से मुक्ति के सन्दर्भ में
   (ख) धनिक वर्ग को विशेष सहायता प्रदान करने के सन्दर्भ में

(ग) किसी भी देश के राजा को उसके पद से हटाने के लिए
(घ) इनमें से कोई नहीं

3. धर्म सुधार आन्दोलन का वास्तविक प्रणेता था :
(क) हेनरी अष्टम (ख) मार्टिन लूथर (ग) पोप (घ) इनमें से कोई नहीं

4. प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुयायियों को इंग्लैण्ड में कहते थे :
(क) एंग्लिकन (ख) ह्यूगनाट (ग) कांल्विनवादी (घ) प्योरिटन

5. 'क्षमा पत्र' कौन प्रदान करता था :
(क) बिशप (ख) राजा (ग) पोप (घ) इनमें से कोई नहीं

6. ज्विंगली किस देश का निवासी था :
(क) फ्रांस (ख) इंग्लैण्ड (ग) जर्मनी (घ) स्विट्जरलैण्ड

7. 'प्रेस्विटर्स' कहते थे :
(क) राजा को (ख) वृद्ध पादरियों को
(ग) मन्त्री को (घ) इनमें से कोई नहीं

8. जैसुइट संगठन की स्थापना किसने की :
(क) हेनरी अष्टमं ने (ख) एलिजाबेथ ने
(ग) इग्नेशियम लायला ने (घ) मार्टिन लूथर ने

9. बेविंगटन षड्यन्त्र किसके विरुद्ध किया गया था :
(क) हेनरी अष्टम (ख) एलिजाबेथ (ग) पोप (घ) हेनरी सप्तम

10. एलिजाबेथ ने किस नाविक को 'नाइट' की उपाधि दी थी :
(क) हॉकिन्स (ख) मैगेलन (ग) ड्रेक (घ) इनमें से कोई नहीं

[उत्तर—1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (ग) 6. (घ) 7. (ख) 8. (ग) 9. (ख) 10. (ग)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए :

1. चर्च एवं पोप में व्याप्त बुराइयों के विरोध में सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म सुधार आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।
2. 'प्रोटेस्टेण्ट' शब्द प्रोटेस्ट से बना है, जिसका अर्थ है विरोध। अतः वे लोग जिन्होंने पोप का विरोध किया 'प्रोटेस्टेण्ट' कहलाए।
3. धर्म सुधार आन्दोलन का प्रणेता काल्विन था।
4. 'एग्लिकनवाद' प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय का वह स्वरूप है, जो 16वीं सदी के इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय चर्च के लिए राज्य धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और कालान्तर में अमरीका में 'एपिसकोपल चर्च' के नाम से जाना गया।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. जर्मनी में धर्म सुधार आन्दोलन के नेता.......थे।
2. प्रोटेस्टेण्ट धर्म की स्थापना वर्ष........में की गई।
3. ऑग्सवर्ग की सन्धि वर्ष.........में हुई थी।
4. स्विट्जरलैण्ड में धर्म सुधार आन्दोलन के नेता थे।

[उत्तर—1. मार्टिन लूथर, 2. 1530 ई., 3. 1555 ई., 4. ज्विंगली और काल्विन]

3

राष्ट्रीय राजतन्त्रों का उदय

[RISE OF NATIONAL STATES]

भूमिका
(INTRODUCTION)

यूरोप के इतिहास में 16वीं शताब्दी के आरम्भ में नवीन प्रकार के राजनीतिक राज्यों का अस्तित्व सामने आया, जिनकी प्रकृति आटोमन साम्राज्य एवं पवित्र रोमन साम्राज्य की प्रकृति से नितान्त भिन्न थी। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"यह राज्य का एक प्रकार था, जो कि प्राचीन समय में अत्यन्त कठिनता से विद्यमान था और मध्यकाल में केवल शनैः-शनैः एवं मन्द गति से विकसित हुआ। यह बीच के प्रकार का राष्ट्रीय राज्य, राजनीतिक ईकाई था जो कि यूरोप के आधुनिक राज्य प्रकार की एक इकाई बना।"**[1] इस दृष्टि से वह उल्लेखनीय है कि आधुनिक युग के आरम्भ में जहां एक ओर पश्चिमी यूरोप में स्पेन, फ्रांस, इंग्लैण्ड, पुर्तगाल एवं स्काटलैण्ड जैसे नवीन एवं शक्तिशाली राजतन्त्रों का अस्तित्व परिलक्षित होता है वहीं दूसरी ओर दक्षिणी, पूर्वी एवं मध्य यूरोप में जर्मनी, इटली, बोहेमिया, हंगरी, पोलैण्ड, स्वीड़न, नार्वे, डेनमार्क, तुर्की, रूस, लिथुआनिया आदि अपनी अविकसित व्यवस्थाओं के कारण अप्रगतिशील राज्य थे, किन्तु जर्मनी, बोहेमिया आदि राज्यों में 14वीं-15वीं शताब्दी में जो जन-आन्दोलन हुए यद्यपि वे असफल हुए, किन्तु उन्होंने प्राचीन राजनीतिक संस्थाओं एवं व्यवस्थाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और आधुनिक राज्य के प्रकार की एक नवीन इकाई राष्ट्रीय राज्य के विकास के द्वार खोल दिए।

राष्ट्रीय राज्यों के उदय के कारण
(CAUSES OF THE RISE OF THE NATION STATES)

सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में पश्चिमी यूरोप में राष्ट्रीय राज्यों के उदय के निम्नलिखित कारण थे—

(1) सामन्तवाद का पतन (Downfall of the Feudalism)—मध्ययुगीन यूरोप की प्रमुख विशेषता सामन्तवादी व्यवस्था थी। सामन्तों ने शनैः-शनैः अपनी शक्ति में वृद्धि कर छोटे-छोटे राज्यों के समान राज्य करना आरम्भ कर दिया था। रेनर ने लिखा है, **"वास्तव में सामन्त लोग ही छोटे-छोटे राजा थे जो परस्पर युद्ध किया करते थे। यही नहीं, वे राजा से भी युद्ध**

1 "It was a kind of state which had hardly existed in Ancient times and which evolved only slowly and dimly during the middle ages. It was the medium sized 'national' state, the political entity which was to become the unit of the modern state-system of Europe." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 23.

ठान लेते थे।"[1] सामन्तों का प्रभाव इतना अधिक बढ़ गया था कि इंग्लैण्ड में **'गुलाब के फूलों के युद्ध'** (War of Roses) के तीस वर्षों तक चलने का प्रमुख कारण सामन्तवादी व्यवस्था ही थी। कृषकों की स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय थी। शोषण अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच चुका था। शोषण के सिद्धान्त पर आधारित सामन्तवादी व्यवस्था कब तक यथावत् बनी रहती। शोषित वर्ग के सिर उठाते ही सामन्तवाद का पतन हुआ। हेनरी मार्टिन का यह कथन कि **'सामन्तवाद की आस्तीन में ऐसा हथियार छिपा हुआ है जो किसी दिन उसी पर वार करेगा'**—सार्थक सिद्ध हुआ। सामन्ती व्यवस्था का दमन करने के लिए इधर इंग्लैण्ड के शासक हेनरी सप्तम ने अभियान आरम्भ कर दिया और अपनी शक्ति में वृद्धि की। शोषित प्रजा तो सामन्तवादी व्यवस्था से अत्यन्त पीड़ित थी। अतः जनता एवं राजा के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया। यूरोप के अन्य देशों में भी इंग्लैण्ड के समान सामन्तवाद का विरोध किया जाने लगा। जनता द्वारा राजा का साथ दिए जाने से सामन्तवाद का पतन हुआ। राजा की शक्ति में वृद्धि हुई। फलस्वरूप निरकुंश राजतन्त्रों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(2) **मध्यम वर्ग का उत्थान** (Rise of the Middle class)—सामन्ती व्यवस्था का पतन मध्यम वर्ग के उत्थान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में मध्यम वर्ग की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी। मध्यम वर्ग ने अपने व्यापार एवं वाणिज्य के विकास एवं सुरक्षा की दृष्टि से राजतन्त्र का समर्थन किया। राजाओं ने भी व्यापार एवं वाणिज्य को संरक्षण प्रदान कर मध्यम वर्ग की सहानुभूति प्राप्त कर ली। उपनिवेश स्थापना को बढ़ावा मिला, प्रबुद्ध वर्ग ने राष्ट्रीयता की भावना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **मैकियावेली द्वारा रचित 'प्रिन्स' नामक ग्रन्थ में राजा के 'दैवी अधिकारों के सिद्धान्त' की पुष्टि की।** अतः पश्चिमी यूरोप में राजतन्त्र की स्थापना के महत्व को स्वीकार किया गया।

(3) **नवीन आविष्कार** (New Inventions)—पुनर्जागरण काल में हो रहे नए आविष्कारों ने राजतन्त्रों के उत्थान में विशेष योगदान दिया। बारूद का आविष्कार, तोपों का प्रयोग, युद्धकाल में परिवर्तन, नए-नए उपनिवेशों की खोज, एवं छापेखाने के आविष्कार इस दृष्टि से अत्यन्त कारगर सिद्ध हुए।

(4) **पोपशाही की अवनति** (Downfall of Popacy)—मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। पोप जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगा। पोप ने धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र में भी हस्तक्षेप आरम्भ कर दिया, किन्तु आधुनिक युग के आगमन एवं पुनर्जागरण के कारण यूरोप की जनता अब तर्कवादी हो चुकी थी। उसने पोप की आचारहीनता, भ्रष्टता एवं विलासिता का विरोध किया। **इधर पश्चिमी यूरोप के शासकों ने जो कि राजनीतिक मामलों से पोप की सत्ता के विरोधी थे, जनता की भावनाओं का लाभ उठाया और पोप की सत्ता का जबरदस्त विरोध किया।** धर्म-सुधार आन्दोलन के फलस्वरूप चर्च पूर्णतः राजा के अधीन हो गया। इससे राजा के सम्मान एवं पद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। गिरजाघरों का प्रशासन अब राजा के अधिकार में आ गया। इस प्रकार राजतन्त्रों की शक्ति के विकास में पोपशाही की अवनति एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ।

1 **"As matter of fact, Feudal Lords were petty sovereigns, who often made private war on each-other, or even on the king himself."** —***Robert Rayner***

प्रमुख राजतन्त्र एवं उनका विकास
(MAIN MONARCHIES AND THEIR GROWTH)

सामन्तवाद के पतन, मध्यमवर्ग के उत्थान, नवीन आविष्कारों एवं पोपशाही की अवनति ने राष्ट्रीय राजतन्त्रों के विकास के द्वार खोल दिए।[1] अब पश्चिमी यूरोप के प्रमुख देश जिनमें स्पेन, फ्रांस, इंग्लैण्ड, पुर्तगाल एवं स्कॉटलैण्ड प्रमुख थे, राष्ट्रीय राजतन्त्र के विकास के मार्ग पर चल पड़े।

आधुनिक युग के प्रमुख राष्ट्रीय राजतन्त्रों का वर्णन निम्नवत् है :

स्पेन : 'फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला'
(SPAIN : 'FERDINAND AND ISABELLA')

पन्द्रहवीं शताब्दी से पूर्व स्पेन में राजनीतिक एकता नहीं थी।[2] आठवीं शताब्दी में उत्तरी अफ्रीका में रहने वाले 'मूर' मुसलमानों ने स्पेन पर अधिकार कर लिया था और वहां के मूल निवासियों को, जो ईसाई थे पहाड़ों में शरण लेने के लिए विवश किया था, किन्तु कालान्तर में धीरे-धीरे **ईसाइयों ने 15वीं शताब्दी तक 'ग्रेनाडा' को छोड़कर स्पेन के शेष भागों में अपना अधिकार स्थापित कर लिया।** पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक **स्पेन मुख्यतया दो प्रमुख राज्यों में विभक्त था। प्रथम अरागान** (Aragan) **एवं द्वितीय, कैस्टील** (Castile)। 1479 ई. **में अरागान राज्य के राजकुमार फर्डिनेण्ड के साथ कैस्टील की राजकुमारी (ईसाबेला) का विवाह हुआ।** इस विवाह के फलस्वरूप अरागान एवं कैस्टील राज्य मिलकर एक हो गए तथा स्पेन का राजनीतिक एकीकरण हो गया। ग्रेनाडा ही एक ऐसा राज्य था, जो मूरों के अधीन था। अतः 1492 ई. में फर्डिनेण्ड व ईसाबेला की संयुक्त सेनाओं ने मूरों को परास्त कर ग्रेनाडा पर अधिकार कर लिया। स्पेन के एकीकरण के लिए अन्तिम कदम 1512 ई. में उठाया गया, जब स्पेन ने फ्रांस को परास्त कर नावारे पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार स्पेन का एकीकरण सम्भव हो सका। निःसन्देह इसका सबसे बड़ा कारण फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला का विवाह ही था। अब स्पेन को यूरोपीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया।

फर्डीनेण्ड व ईसाबेला की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF FERDINAND AND ISABELLA)

फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला ने यूरोपीय राजनीति में स्पेन के महत्व को स्थापित कर तो दिया था, किन्तु उसे कायम रखना अधिक महत्वपूर्ण था। अतः अब स्पेन का ध्यान अपनी विदेश नीति की ओर केन्द्रित हुआ। **फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला ने अपनी विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य उपनिवेशों की स्थापना एवं फ्रांस को यूरोपीय राजनीति में एकाकी रखते हुए स्पेन के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को बनाए रखा,** अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम दोनों का ध्यान औपनिवेशिक विस्तार की ओर आकर्षित हुआ। 1492 ई. में कोलम्बस ने अमरीका महाद्वीप का पता लगाया। फलस्वरूप वृहत्तर स्पेनी साम्राज्य का अस्तित्व सामने आया। अब नेपल्स, सिसली एवं सार्डीनिया के राज्यों पर स्पेन ने अपने दावे स्पष्ट कर लिए। इस प्रकार एक ओर

---

1 **"The decay of feudalism, the growth of cities and the development of the trade and commerce were contributing causes of the marked increased in the spirit of nationalism." —J. E. Swain, *A History of World Civilization*, p. 370.**

2 **स्पेन में तीन ईसाई राज्य थे—पूर्व में अरागान, मध्य में कैस्टील व उत्तर में नैवारे। दक्षिणी स्पेन में एक राज्य ग्रेनाडा था, जहां मूर (मुसलमानों) का अधिकार था।**

इटली की राजनीति में जहां स्पेनिश प्रभुत्व छा गया वहीं दूसरी ओर भूमध्यसागरीय प्रश्न पर वह वेनिश का प्रबल प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध हुआ। अपने दावों के प्रति स्पेन कितना जागरूक था, यह इस बात से ही पता चल जाता है कि जब फ्रांस के शासकों चार्ल्स VIII एवं लुई XII इटली पर अधिकार करने का प्रयास किया तो स्पेन ने हस्तक्षेप कर फ्रांस को पराजित किया एवं इटली पर अपने प्रभुत्व को बनाए रखा। फर्डीनेण्ड ने पुर्तगाल, आस्ट्रिया एवं इंग्लैण्ड से स्पेन के सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए अपनी द्वितीय पुत्री मेरिया का विवाह पुर्तगाल के शासक से, अपनी ज्येष्ठ पुत्री जोआना का विवाह आस्ट्रिया के युवराज फिलिप प्रथम से एवं अपनी कनिष्ठ पुत्री कैथरीन का विवाह इंग्लैण्ड के युवराज आर्थर से एवं आर्थर की मृत्यु के बाद कैथरीन का विवाह हेनरी अष्टम से किया। इन विवाहों से स्पेन के प्रभाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इस प्रकार जनसंख्या तथा घरेलू संसाधनों के क्षेत्र में फ्रांस के बराबर न होते हुए भी स्पेन ने अपना प्रभाव बनाए रखा।

फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की गृह नीति
(HOME POLICY OF FERDINAND AND ISABELLA)

फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेल ने स्पेन में एक कुशल एवं सुदृढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना की। **गृह नीति मूलतः दो उद्देश्यों पर आधारित थी। केन्द्रीकृत शासन की स्थापना तथा धार्मिक एकता स्थापित करना।** इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राजपद के गौरव को प्रतिष्ठित करना आवश्यक था। बड़े-बड़े सामन्तों की शक्ति को कम कर दिया गया। कैस्टाइल की प्रतिनिधि संस्था के महत्व को भी कम कर दिया गया। सामन्तों के दुर्ग नष्ट कर दिए गए। अमीरों को मिलने वाली पेंशन तथा अनुदान बन्द कर दिए गए। सम्पूर्ण देश में एक जैसी अर्थव्यवस्था स्थापित की गयी। कर सभी वर्गों को समान रूप से देना अनिवार्य कर दिया गया। व्यापार एवं वाणिज्य को राजकीय संरक्षण प्रदान किया गया और आवागमन के साधनों में वृद्धि की गई। लुटेरों-डाकुओं का दमन किया गया। राजकीय शक्ति में वृद्धि कर दी गई तथा राजा के पद के सम्मान को भी बढ़ाया गया। रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति निष्ठा प्रदर्शित की गई, परन्तु इसके पीछे मात्र यह उद्देश्य छिपा था कि **धार्मिक एकता को राजनीतिक एकता का आधार बनाया जाए।** चर्च के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करने के कारण ही पोप अलेक्जेण्डर षष्ठम ने उन्हें **'कैथोलिक सम्राट'** की उपाधि से विभूषित किया। अब दोनों ने स्पेन के चर्च पर पोप की शक्ति को सीमित करने के लिए कैथोलिक चर्च को राज्याश्रित अंग बना दिया। राज्य के धर्म विरोधियों को दण्ड देने तथा राजपद की गरिमा को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से 1480 ई. में विशिष्ट **धार्मिक न्यायालयों की स्थापना की गई जिन्हें 'इन्क्वीसीशन' (Inquisition) कहा जाता था।** इन न्यायालयों द्वारा ईसाई धर्म स्वीकार न करने वालों को देश से निष्कासित अथवा मृत्यु-दण्ड दिया जाता था। अनेक व्यक्तियों को जीवित जलाने के लिए भी इन न्यायालयों ने आदेश दिए। 1504 ई. में ईसाबेला की मृत्यु हो गई और 1504 से 1516 तक फर्डीनेण्ड ने अकेले ही स्पेन पर शासन किया।

मूल्यांकन
(EVALUATION)

फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला के संयुक्त प्रशासन के विषय में विद्वानों में मिश्रित प्रतिक्रिया दृष्टिगोचर होती है। आलोचकों को मानना है कि दोनों का वैवाहिक सम्बन्ध वैयक्तिक एकीकरण

के अलावा कुछ नहीं था, क्योंकि अरागान एवं केस्टाइल दोनों राज्यों की आर्थिक व्यवस्थाएं एवं विधि-विधान एक-दूसरे से नितान्त भिन्न थे। अतः बाद में आने वाले स्पेन के शासकों को अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। ग्रेनाडा के मुस्लिम मूरों के विरुद्ध संघर्ष एवं 'इन्क्वीसीशन' नामक न्यायालयों ने धार्मिक असहिष्णुता को तो जन्म दिया ही, साथ ही कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य को गहरा आघात पहुंचाया।

उक्त तर्कों के सन्दर्भ में यह तो स्वीकार करना ही होगा कि इन्क्वीसीशन की नीति उचित नहीं थी, परन्तु इससे देश के राजनीतिक संगठन को सुदृढ़ बनाने में सफलता प्राप्त हुई। वैवाहिक सम्बन्ध की महत्ता इस बात से ही स्पष्ट हो जाती है कि दोनों राज्यों की विदेश नीति अब एक हो गई। **स्पेन को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया, दोनों की नीति ने स्पेन को इतनी शक्ति प्रदान कर दी कि उनके पश्चात् 16वीं शताब्दी में यूरोप के अन्य राज्य स्पेन को भय, सम्मान एवं आशंका की दृष्टि से देखने लगे।** अतः वार्नर, मार्टिन म्योर के शब्दों में यह तो स्वीकार करना ही पड़ता है कि, **"आधुनिक युग के आगमन के साथ अचानक ही स्पेन एक कमजोर एवं विश्रृंखलित देश के स्थान पर एक शक्तिशाली देश के रूप में उभरा। स्पेन को इतना शक्तिशाली देश बनाने का श्रेय वहां के शासक फर्डीनेण्ड एवं रानी ईसाबेला को है।"**[1]

फ्रांस
(FRANCE)

फ्रांस यूरोप का ऐसा प्रथम देश था, जिसमें सर्वप्रथम राजनीतिक एकता स्थापित हुई। फ्रांस में तेरहवीं शताब्दी में ही सामन्तों का दमन कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की जा चुकी थी। **फ्रांस का दुर्भाग्य था कि उसके कुछ समय पश्चात् ही फ्रांस और इंग्लैण्ड में सौ-वर्षीय युद्ध (Hundred Year War) प्रारम्भ हो गया, जिससे फ्रांस की शक्ति पर गम्भीर प्रभाव हुआ।** किन्तु इस युद्ध के अन्त में फ्रांस को सफलता मिलने से उसकी स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ तथा राजा के अधिकारों में भी वृद्धि हुई। फ्रांस के राजा ने अपने अधिकारों में हुई वृद्धि से लाभान्वित होकर भूमिकर लगाया तथा इस प्रकार अपार धन लगाकर राजा की शक्ति में और वृद्धि की। **राजा की शक्ति को बढ़ाने के लिए लुई-XI** (1461-1483 ई.) **ने बहुत कार्य किया।** उसने अनेक सामन्तों की शक्ति को कुचला तथा सामन्तों को अपने नियन्त्रण में कर राजतन्त्र को सशक्त बनाया। लुई-XI ने फ्रांस में चर्च को भी पोप के नियन्त्रण से मुक्त कराके राजा के धार्मिक अधिकारों व चर्च पर नियन्त्रण में वृद्धि की।

इस प्रकार लुई-XI (Louis-XI) के प्रयत्नों से फ्रांस में राजा का सम्मान बढ़ा व राजशक्ति सुदृढ़ हुई। लुई-XI के उत्तराधिकारी **चार्ल्स अष्टम** ने (1483-1495) साम्राज्यवादी विस्तार की नीति को अपनाया। उसकी इस नीति ने यूरोपीय राजनीति में नवयुग का श्रीगणेश कर दिया। उसने नेपल्स पर अधिकार कर लिया, किन्तु उसकी यह विजय क्षणिक सिद्ध हुई क्योंकि उसे वेनिस मिलान पोप के संयुक्त मोर्चे का सामना करना पड़ा। 1496 ई. में चार्ल्स अष्टम को नेपल्स खाली करना पड़ा, परन्तु इस घटना ने स्पेन एवं फ्रांस के मध्य दीर्घकालीन युद्धों की परिपाटी का श्रीगणेश कर दिया। चार्ल्स अष्टम के उत्तराधिकारी लुई-XII ने भी

1 **"About this time Spain suddenly rose from a group of weak and unorganize states to be a powerful monarchy and the first aspirant for European supremacy."**
—Warner, Marten Muir

इटली पर अधिकार करने का प्रयास किया, किन्तु स्पेन के राजा फर्डीनेण्ड के कारण उसे अपने उद्देश्य में सफलता न मिल सकी।

इंग्लैण्ड : 'हेनरी सप्तम'
(ENGLAND : 'HENERY VII')

1337 ई. से 1453 ई. तक फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के मध्य होने वाले दीर्घ कालीन युद्धों में जिन्हें इतिहास में **'शतवर्षीय युद्ध'** के नाम से जाना जाता है, प्रारम्भ में तो इंग्लैण्ड को सफलता प्राप्त हुई, किन्तु अन्ततः इंग्लैण्ड को पराजय का मुंह देखना पड़ा। उसे कैले को छोड़कर सभी जीते हुए फ्रांसीसी प्रदेश छोड़ने पड़े। शतवर्षीय युद्ध ने इंग्लैण्ड में जहां एक ओर राष्ट्रीयता की भावना को विकसित किया। वहीं दूसरी ओर शतवर्षीय युद्ध के समाप्त होने के दो वर्ष पश्चात् ही वहां भयंकर सामन्ती युद्ध जिसे इतिहास में **'गुलाबों के युद्ध'** (1455-1485) के नाम से जाना जाता है की भयंकर ज्वाला में जलना पड़ा। **यह गृह युद्ध यार्क राजवंश, जिनका प्रतीक श्वेत गुलाब था और लंकास्टर राजवंश जिनका प्रतीक लाल गुलाब था; के सामन्तों व उनके अनुयायियों के मध्य पारस्परिक संघर्ष था।** यह संघर्ष 1485 ई. में वासवर्थ के युद्ध में रिचर्ड तृतीय के विरुद्ध हेनरी ट्यूडर की विजय के साथ खत्म हुआ। यही हेनरी ट्यूडर 1485 ई. में हेनरी सप्तम के नाम से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर बैठा।

हेनरी सप्तम की गणना इंग्लैण्ड के महानतम् शासकों में की जाती है, क्योंकि उसने न केवल एक शक्तिशाली राजवंश की इंग्लैण्ड में स्थापना की वरन् इंग्लैण्ड के समाज को उसमें व्याप्त मध्ययुगीन कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों, सामन्ती अत्याचारों से मुक्त कर आधुनिक युग में प्रविष्ट कराते हुए बौद्धिकता एवं तर्कवादिता के पथ की ओर अग्रसर किया। यही कारण है कि उसके शासनकाल को इंग्लैण्ड के इतिहास में **'बीजारोपण एवं सुधारों का समय'** (A period of seeds and remedies) कहा गया है। हेनरी सप्तम ने एलिजाबेथ से विवाह करके **'गुलाब के फूलों के युद्ध'** (War of Roses) को सदैव के लिए समाप्त कर इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित की तथा निरंकुश एवं अत्याचारों से बचाया, वहां दूसरी ओर इंग्लैण्ड में शक्तिशाली राजतन्त्र की स्थापना करके अपने सिंहासन की रक्षा भी की। हेनरी सप्तम को राजतन्त्र को शक्तिहाली बनाने के लिए दृढ़ आधार प्राप्त नहीं हुआ, किन्तु फिर भी वह अपने प्रयत्नों में सफल हुआ। हेनरी सप्तम ने इंग्लैण्ड में **'राजा'** के पद की महत्ता, जो मध्ययुग के अन्त तक शक्तिशाली सामन्तों के कारण समाप्तप्रायः हो गयी थी, को पुनर्स्थापित किया। इस प्रकार अपने शासनकाल में उसने इंग्लैण्ड को शान्ति, सुरक्षा, सम्मान एवं एक दृढ़ सरकार प्रदान की।[1]

हेनरी सप्तम (1485-1509) द्वारा इंग्लैण्ड में शक्तिशाली राजतन्त्र (जिसे नवीन राजतन्त्र कहा जाता है) की स्थापना करना सरल कार्य न था, क्योंकि उसके पास न तो शक्तिशाली सेना थी और न ही धन। ऐसी स्थिति में उपर्युक्त सफलता प्राप्त करना निःसन्देह हेनरी सप्तम की कार्यकुशलता एवं योग्यता प्रमाणित करता है। हेनरी सप्तम द्वारा **नवीन राजतन्त्र** (New Monarchy) की स्थापना करने अथवा राजतन्त्र को दृढ़ करने से एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि इसने देश के सभी छोटे-बड़े भागों को आपस में मिलाकर लोगों में राष्ट्रवाद की

1 "He laid very solidly the foundations of the Tudor power and restored to the country the priceless boons of peace, order and firm government."
—*Ramsay Muir*

भावना को जन्म दिया। इसके दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखते हुए, निःसन्देह इसे हेनरी सप्तम की एक उपलब्धि कहा जा सकता है।

आधुनिक युग के आरम्भ के साथ ही देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों में महान् परिवर्तन हुआ। यदि मध्यकालीन इतिहास का अवलोकन किया जाए तो ज्ञात होता है कि हेनरी ट्यूडर के सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व देश में अशान्ति, अत्याचार एवं कुव्यवस्था व्याप्त थी। मध्य युग में व्यक्ति का कोई महत्व न था, सामन्तशाही के कारण राजसत्ता निर्बल थी। जनता पर अनेक अत्याचार होते थे, परन्तु राजा किसी भी प्रकार का सुधार करने में स्वयं को असमर्थ पाता था। इंग्लैण्ड में सन्ध्या होते ही लोग घरों में प्रवेश कर जाते थे क्योंकि चोर तथा लुटेरे सामाजिक जीवन को नारकीय बनाए हुए थे। इंग्लैण्ड की तत्कालीन सामाजिक स्थिति के विषय में वेनिस के एक राजदूत का कथन उल्लेखनीय है—**'संसार के किसी भी देश में इतने चोर और लुटेरे नहीं हैं, जितने इस समय इंग्लैण्ड में हैं।'**

सामन्त (Barons) किसानों पर विभिन्न प्रकार से अत्याचार करते थे, उनकी शक्ति को चुनौती देने वाला कोई न था। इसके अतिरिक्त शिक्षा के अभाव के कारण दिशाहीन इंग्लैण्ड की जनता अन्धविश्वास के सघन अन्धकार में भटक रही थी। ऐसे विकट समय में **हेनरी ट्यूडर का हेनरी सप्तम के नाम से इंग्लैण्ड के सिंहासन पर आरूढ़ होना, रात्रि के घोर अन्धकार को मिटाते हुए उषा की लालिमा के समान था।** ट्यूडर-वंश राज्य के प्रारम्भ होते ही मध्यकाल की कुप्रथाओं की समाप्ति होने लगी। हेनरी सप्तम ने सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक बुराइयों को दूर करके समाज को शुद्ध करने का प्रयास किया। हेनरी सप्तम ने सामन्तवाद का अन्त किया तथा राजा और प्रजा के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उसने शिक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान दिया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड का आधुनिकीकरण एवं लोगों की विचारधारा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए।

हेनरी सप्तम के निम्न प्रमुख उद्देश्य थे :

(i) राजा की शक्ति में वृद्धि करने हेतु राजतन्त्र की स्थापना।
(ii) इंग्लैण्ड में व्याप्त व्यापक अशान्ति एवं अव्यवस्था के स्थान पर शान्ति एवं सुचारु व्यवस्था की स्थापना।
(iii) प्रशासन की कार्यकुशलता एवं क्षमता में वृद्धि करना।
(iv) शान्ति बनाए रखने के लिए वैदेशिक युद्ध एवं आन्तरिक विद्रोह को रोकना।

हेनरी सप्तम ने अपने **इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित कार्य किए :**

(अ) विद्रोह तथा षड्यन्त्रों का दमन (Suppression of Revolts)—हेनरी सप्तम को इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन होते ही अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। हेनरी ने इन विद्रोहों का कठोरतापूर्वक दमन किया।

हेनरी के विरुद्ध विद्रोह करने वाला **प्रथम व्यक्ति लैम्बर्ट सिमनल** (Lambert Simnel) नामक एक नवयुवक था। यार्कवंशीय लोगों ने उसको अर्ल ऑफ वारविक (Earl of Warwich) घोषित किया था। लिंकन (Lincoln), लार्ड लावेल (Lovell) तथा एडवर्ड चतुर्थ की बहिन मार्गरेट ऑफ बर्गण्डी (Margaret of Burgandy) ने उसे सहायता दी। लैम्बर्ट सिमनल, को जो कि ऑक्सफोर्ड में बाजा बजाने वाले एक व्यक्ति का पुत्र था, आयरलैण्ड का राजा घोषित कर दिया। इस प्रकार यह विद्रोह प्रारम्भ हुआ, किन्तु इसे दबाना हेनरी के लिए कठिन नहीं था क्योंकि विद्रोहियों ने असत्य का सहारा लिया था। हेनरी सप्तम ने वास्तविक

अर्ल ऑफ वारविक को बन्दीगृह से मिलकर जनता के समक्ष प्रस्तुत किया, अतः इंग्लैण्ड की जनता का समर्थन हेनरी को प्राप्त हो गया। **हेनरी ने 1487 ई. में स्टोक के युद्ध (Battle of Stoke) में विद्रोहियों को परास्त किया।** लिंकन की हत्या कर दी गयी तथा सिमनल को बन्दी बना लिया गया। उसकी कम आयु को देखते हुए हेनरी ने उसे क्षमा कर दिया और राजभवन के रसोई घर में नौकर रख लिया। अन्य विद्रोही व्यक्तियों को कठोर दण्ड दिया गया।

हेनरी के विरुद्ध दूसरा विद्रोह 1492 ई. में प्रारम्भ हुआ तथा सात वर्षों तक हेनरी के लिए संकट उत्पन्न करता रहा। पार्किन वार्बेक (Perkin Warbeck) नामक व्यक्ति ने स्वयं को एडवर्ड चतुर्थ का पुत्र रिचर्ड घोषित किया तथा अनेक स्थानों से सहायता प्राप्त करने में सफल हुआ। उसे फ्रांस के राजा नें आमन्त्रित किया, परन्तु 1492 ई. में ही हेनरी द्वारा फ्रांस से इटेपल्स की सन्धि किए जाने के परिणामस्वरूप फ्रांस ने निष्कासित कर दिया गया। उसे बर्गण्डी की मार्गरिट ने भी सहायता दी। वार्बेक ने 1492 ई. में प्रथम बार उत्तरी आयरलैण्ड पर आक्रमण किया, किन्तु हेनरी ने उसे युद्ध-स्थल छोड़कर भागने पर विवश किया। 1495 ई. में मार्गरिट से सहायता प्राप्त होने पर पुनः इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, परन्तु असफल रहा। 1497 ई. में अन्तिम बार उसने आक्रमण किया, परन्तु टाण्टन के युद्ध में पार्किन वार्बेक को हेनरी ने परास्त किया तथा बन्दी बनाकर अर्ल ऑफ वारबिंक के साथ लन्दन के टावर हाउस में रखा गया। दो वर्ष पश्चात् 1499 ई. में उसने अर्ल ऑफ वारविक के साथ भागने की योजना बनायी, परन्तु भागने में असफल रहा। इस बार हेनरी ने पार्किन वार्बेक तथा अर्ल ऑफ वारविक को मृत्यु-दण्ड दिया।

तृतीय विद्रोही लार्ड लावेल (Lovell) था। वह रिचर्ड तृतीय का अनुयायी था तथा हेनरी सप्तम को राजा नहीं मानता था। उसने अपने साथियों के साथ हेनरी के विरुद्ध विद्रोह किया, किन्तु हेनरी ने सुगमतापूर्वक इस विद्रोह का दमन किया।

चौथा विद्रोह इतिहास में कार्निवालिस के नाम से प्रसिद्ध है। कोर्निश के निवासियों ने करों की अधिकता के विरोध में कर देने से इन्कार कर दिया तथा सशस्त्र विद्रोहियों ने लन्दन को घेर लिया। हेनरी ने 1497 ई. में ब्लेक हीथ के युद्ध में इन विद्रोहियों को परास्त किया।

इस प्रकार हेनरी ने स्वयं के विरुद्ध हुए सभी विद्रोहों का सफलता एवं कठोरतापूर्वक दमन किया, किन्तु इन विद्रोहों के कारण वह सुख एवं शान्ति प्राप्त न कर सका, क्योंकि तत्कालीन परिस्थितियां ही इतनी विपरीत थीं कि कोई व्यक्ति चाहे राजा क्यों न होता वह चैन से नहीं बैठ सकता था, जैसा कि एम. एम. रीज का भी कथन है—**'एक व्यक्ति जिसने तलवार के आधार पर राजगद्दी प्राप्त की है, जिसकी राजा की पदवी शक्तिहीन एवं नाममात्र की है और उसके विरुद्ध शक्तिशाली षड्यन्त्र उसे देश से निष्कासित करने के लिए प्रयत्नशील है, वह न तो राजनीतिक सिद्धान्तों को अपने राज्य का आधार बना सकता है और न नए तरह के वैधानिक परीक्षणों में उलझ सकता है।**[1]

(ब) सामन्त व्यवस्था का अन्त (End of Feudal System)—सामन्तों द्वारा जनता पर किए जा रहे अत्याचारों से हेनरी भली-भांति परिचित था। सामन्त वर्ग अत्यधिक शक्तिशाली,

1 "A man who mounts the throne with the sword in his hand, with only a flimsy title to support him and with powerful influences intriguing to drive him out cannot afford the luxury of basing his rule on political theories and novel constitutional experiments." —*M. M. Reese.*

युद्ध-लोलुप, अराजकता फैलाने वाला था। हेनरी सप्तम एक शान्तिप्रिय व्यक्ति था तथा देश में शान्ति स्थापित करना चाहता था। देश में शान्ति स्थापित करने तथा जनता के कष्टों के निवारण हेतु हेनरी सप्तम् सामन्त वर्ग की शक्ति का दमन करना आवश्यक समझता था, अतएव **अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित कार्य किए :**

(i) **पुलिस का संगठन** (Foundation of Police System)—इंग्लैण्ड की जनता की सुरक्षा हेतु हेनरी ने पुलिस का संगठन किया। हेनरी सप्तम के शासन से पूर्व इंग्लैण्ड में जन-जीवन अत्यन्त असुरक्षित था। यात्रा में लुटेरों का भय रहता था। पुलिस की व्यवस्था कर हेनरी ने जनता में व्याप्त भय को दूर किया तथा जन-जीवन को सामान्य स्थिति में लाने में सफल हुआ।

(ii) **विधि निर्माण** (Rule of Law)—देश में सुचारु शासन व्यवस्था स्थापित करने के लिए कठोर नियमों का होना आवश्यक है जिनके अन्तर्गत अपराधियों एवं असामाजिक तत्वों को दण्ड दिया जा सके, अतः हेनरी ने संसद के द्वारा आवश्यक कानून पारित कराए। संसद के उसके पक्ष में होने के कारण ऐसा करने में उसे किसी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

(iii) **वर्दी और अधीन सेना के विरुद्ध नियम** (Statute of Livery and Maintenance)—इंग्लैण्ड की जनता को चोर एवं लुटेरों से रक्षा के साधन उपलब्ध कराने तथा जनजीवन सामान्य बनाने के पश्चात् उसने सामन्तों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। सामन्तों की शक्ति को कुचलना आसान न था, अतः ऐसा करने के उद्देश्य से हेनरी ने संसद से **वर्दीधारी तथा अधीन सेना रखने के विरुद्ध नियम** (Statute of livery and maintenance) पारित कराए। इसके द्वारा कोई भी सामन्त व्यक्तिगत सेना नहीं रख सकता था। जिन्होंने इस नियम की अवहेलना की उन्हें कठोर दण्ड दिया गया। सामन्तों को न्यायालयों में पैरवी करने का अधिकार भी इस नियम के द्वारा समाप्त हो गया। यह नियम राजा की शक्ति में वृद्धि करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित हुआ। रैम्जे म्योर ने **इस नियम को समयानुकूल एवं महत्वपूर्ण बताया है।**[1]

(iv) **न्यायाधीशों की नियुक्ति** (Appointment of Judges)—हेनरी सप्तम ने शान्ति स्थापित करने के लिए न्यायाधीशों की नियुक्ति की। इन न्यायाधीशों ने अपने-अपने प्रदेशों में सामन्तों को अशान्ति और अराजकता फैलाने पर कठोर दण्ड देने की आज्ञा दी।

(v) **कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर की स्थापना** (Court of Star Chamber)—हेनरी सप्तम ने सामन्तों के विरुद्ध अनेक नियम बनाए तथा उनका कठोरतापूर्वक पालन करवाने के उद्देश्य से एक न्यायालय की स्थापना की। इस न्यायालय की स्थापना एक ऐसे भवन में की गयी थी जिसकी छत में सितारे जड़े थे। इसी कारण इसका नाम **'कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर'** पड़ा। इस न्यायालय के न्यायाधीश राज्य के उच्च मन्त्री हुआ करते थे। इसने अपना कार्य अत्यन्त सुचारु रूप से चलाया, परिणामस्वरूप वर्दीधारी और अधीन सेना रखने के विरुद्ध बना नियम पूर्णतः सफल रहा। इस न्यायालय की अनेक शाखाएं भी स्थापित की गयीं। जिन सामन्तों ने इनका

1 **"At this period they were necessary and welcome, under their protection the ordinary machinery of the court was to work smoothly and without fear."**
—Ramsay Muir

विरोध किया उनका कठोरतापूर्वक दमन किया गया, परिणामस्वरूप सामन्त राजा से भयभीत होने लगे और अनुशासन प्रिय होने लगे।

(vi) **मन्त्रियों की नियुक्ति** (Appointment of Ministers)—हेनरी सप्तम ने सामन्तों की शक्ति को पूर्णतः समाप्त करने के उद्देश्य से सामन्तों को प्रिवी कौंसिल से निकाल दिया तथा उनके स्थान पर **आर्कबिशप मार्टन और फोक्स** जैसे अपने अनुयायियों को नियुक्त किया तथा एडमण्ड-डडले (Dudley) व रिचर्ड एम्पसन (Empson) को अपना मुख्य परामर्शदाता नियुक्त किया।

(vii) **बारूद पर अधिकार** (Gun Powder)—सामन्त वर्ग बारूद का प्रयोग करता था, अतः राजा को उनका दमन करने में अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। सामन्तों के अधिकार में विशाल दुर्ग थे, जिनमें वह बारूद एवं सेना का प्रबन्ध रखते थे। हेनरी सप्तम के समय में बारूद के अनेक कारखाने इंग्लैण्ड में प्रारम्भ किए गए। राजा ने इन कारखानों को अपने अधिकार में ले लिया तथा बारूद के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाकर बड़ी-बड़ी तोपें अपने अधिकार में ले लीं। हेनरी ने बारूद की सहायता से सामन्तों के दुर्गों को ध्वंस कर सामन्तों की शक्ति को पूर्णतः समाप्त किया।

(viii) **मध्य वर्ग को अपने पक्ष में करना** (Support of Middle Class)—इंग्लैण्ड में मध्य वर्ग की स्थिति भी दयनीय थी। हेनरी ने अनुभव किया कि मध्य वर्ग अशान्ति एवं अराजकता का विरोधी तथा सामन्तों के विरुद्ध है तथा राजा के पक्ष में है, अतः हेनरी ने मध्यवर्गीय व्यक्तियों की स्थिति सुधार कर उनकी सहानुभूति प्राप्त की। **उसने मध्यवर्गीय व्यक्तियों को उच्च पद प्रदान किए तथा अनेक व्यापार सम्बन्धी नियम पारित कर उनकी आर्थिक सहायता की।** सामन्तों के स्थान पर उन्हें प्रिवी कौंसिल (Privy Council) में भी रखा। इस प्रकार मध्य वर्ग की सहानुभूति प्राप्त कर हेनरी के लिए सामन्तों के दमन का कार्य सुगम हो गया।

(स) **धनी बनने का प्रयत्न** (Methods employed by Henry to become rich)—हेनरी सप्तम अनुभव करता था कि धन के अभाव में इंग्लैण्ड का सिंहासन उसके हाथ से निकल सकता है। अतः उसने सांविधानिक तथा अन्य तरीकों से धनोपार्जन करने का प्रयत्न किया। यद्यपि हेनरी सप्तम को संसद के द्वारा धन प्राप्त होता था, किन्तु वह उसके लिए पर्याप्त न था। हेनरी सप्तम का विचार सामन्तों के दमन के पश्चात् अब संसद की शक्ति को भी कम करना था। यदि हेनरी को धन प्राप्त करने का कोई अन्य रास्ता मिल जाता तो वह संसद से स्वतन्त्र हो जाता। अतः अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने निम्नलिखित कार्य किए :

(i) **कर में वृद्धि** (Increased Taxes)—हेनरी के पास काफी भूमि थी, उस पर कर बढ़ाने के लिए राजा को किसी की आज्ञा लेने की आवश्यकता न थी। अतः हेनरी ने अपनी भूमि पर कर बढ़ा दिया जिससे उसकी व्यक्तिगत आय बावन हजार पौंड से बढ़कर एक लाख बयालीस हजार पौंड हो गयी।

(ii) **सामन्तों की सम्पत्ति पर अधिकार** (Confiscation of Nobles Property)—लंकास्टर एवं यार्क वंशों के मध्य हुए '**गुलाब के फूलों के युद्ध**' (War of Roses) में अनेक सामन्तों की मृत्यु हो गयी थी। हेनरी सप्तम ने सभी ऐसे सामन्तों की सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले लिया।

(iii) **शान्तिप्रिय नीति द्वारा बचत** (Savings by Peaceful Policy)—हेनरी ने शान्तिप्रिय नीति अपनाकर युद्धों में खर्च होने वाली एक बड़ी धनराशि की बचत की। 1492 ई.

में फ्रांस के साथ इटेपल्स की सन्धि (Treaty of Etaples) करके उसने हरजाने के रूप में फ्रांस से काफी धन प्राप्त किया।

(iv) **आर्थिक दण्ड** (Punishment in form of Fines)—स्वयं को धनी बनाने के उद्देश्य से हेनरी ने मृत्यु-दण्ड तथा कारावास की सजा कम करके उनके स्थान पर भारी आर्थिक दण्ड देने की नीति का पालन किया। **कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर, कौंसिल ऑफ वेल्स तथा कौंसिल ऑफ नार्थ मुख्यतः केवल आर्थिक दण्ड ही अपराधियों को देते थे।** कार्नवाल के विद्रोहियों से भी काफी धन वसूल किया गया। हेनरी ने एम्पसन तथा डडले को अपना वित्तीय प्रतिनिधि नियुक्त किया जिनका कार्य न्यायालयों में आर्थिक दण्ड के रूप में प्राप्त हुई धनराशि को एकत्र करना था।

(v) **क्षमा-पत्रों एवं पदों को बेचना** (Sale of Benevolence and Indulgences)—हेनरी सप्तम ने क्षमा-पत्रों को बेचना प्रारम्भ कर दिया। अपराधी इन क्षमा-पत्रों को खरीदकर अपने दण्ड से बच सकते थे। उच्च पदों को भी उसने बेचकर काफी धन प्राप्त किया।

(vi) **राजा का व्यक्तिगत व्यापार** (Personal Trade)—एडवर्ड चतुर्थ के समान हेनरी ने अपना व्यक्तिगत व्यापार प्रारम्भ किया। उसने मुख्यतः ऊन, शराब तथा टिन का व्यापार किया। इस व्यापार से उसे बहुत लाभ हुआ।

(vii) **बलात् उपहार** (Forced Loans)—हेनरी सप्तम ने अपने मन्त्रियों की सहायता से काफी धन उपहार के रूप में प्राप्त किया। हेनरी ने मार्टन (Morton) नामक व्यक्ति को अपना वित्तीय प्रतिनिधि नियुक्त किया। **उसने धन एकत्र करने के लिए एक नवीन नीति अपनायी, जिसे मोर्टन फोर्क (Morton Fork) के नाम से जाना जाता है।** इस नीति के अन्तर्गत धनिक वर्ग से कहा जाता था कि आप अपने ऊपर काफी धन खर्च करते हैं, अतः कुछ धन देकर राजा की सहायता करें तथा निर्धनों से कहा जाता था कि आपने सादा जीवन व्यतीत करके काफी धन एकत्र कर रखा है, अपने धन में से कुछ धन देकर राजा की सहायता करें। इसके अतिरिक्त हेनरी ने अपने पुत्र तथा पुत्री के विवाह के नाम से जनता से काफी धन प्राप्त किया।

इस प्रकार हेनरी ने विभिन्न साधनों से पर्याप्त धन एकत्र किया। अपनी मृत्यु के समय उसने अपने पुत्र के लिए अठारह लाख पौंड की धनराशि छोड़ी।

हेनरी सप्तम एक कुशल एवं योग्य प्रशासक था। उसका प्रमुख उद्देश्य इंग्लैण्ड में सामन्तों की शक्ति समाप्त कर शान्ति स्थापित करना था। अपने इस उद्देश्य में वह सफल हुआ। इतिहासकार टौट ने उसकी गृह-नीति के विषय में निम्न मत व्यक्त किया है—**उसका सर्वोत्तम कार्य विदेशों में न होकर देश ही में हुआ था। लंकास्टर तथा यार्क में होने वाले युद्ध के कारण शासन में जो शिथिलता आ गयी थी उसे दूर करके उसने राजा की शक्ति को बढ़ाया। यद्यपि वह लंकास्टरवंशीय था तथापि अपने से पूर्व हुए तीन हेनरी शासकों के समान वैधानिक ढंग से राज्य करने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया।**[1]

1 "Henry's best work, however, was not abroad but at home, where he gradually restored the royal power and put an end to the weak rule and confusion which had culminated in the struggle of Lancaster and York." —*T. F. Tout*

स्काटलैण्ड एवं पुर्तगाल
(SCOTLAND AND PORTUGAL)

16वीं शताब्दी के आरम्भ तक **'स्काटलैण्ड'** में भी राष्ट्रीय राजतन्त्र अस्तित्व में आ चुका था, किन्तु यह इंग्लैण्ड की तुलना में अत्यन्त कमजोर राजतन्त्र था। इसका सबसे प्रबल कारण यह था कि स्काटलैण्ड के स्टुअर्ट शासक अपने सामन्तों का दमन करने में सफल नहीं हो पाए थे। अपनी इसी कमजोरी के कारण यहां के स्टुअर्ट शासक सदा ही फ्रांस की सहायता के मोहताज बने रहे। यही कारण है कि इतिहासकार हेज ने लिखा है कि **"स्काटलैण्ड का राष्ट्रीय राजतन्त्र सोलहवीं शताब्दी के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक दांव-पेचों में महत्वपूर्ण भूमिका के स्थान पर मात्र कठपुतली बना रहा।"**[1]

जहां तक **'पुर्तगाल'** का सम्बन्ध था वह 1500 ई. तक योग्य शासकों के प्रयत्नों एवं आविष्कारों व भौगोलिक खोजों के कारण यूरोपीय राजनीति में एक प्रमुख राष्ट्रीय राज्य के रूप में सामने आ चुका था। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"युग की परम्पराओं के अनुरूप पुर्तगाल में भी निरंकुश राजतन्त्र का विकास धीरे-धीरे हो रहा था और कार्टेज (Cartez) नामक संसद जिसने पूर्व समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी की बैठकें 1521 ई. के पश्चात् नियमित रूप से बन्द हो गईं।"**[2] इधर स्पेन के कैस्टाईल राजवंश से पुर्तगाली राजवंश की घनिष्ठता से यह भी प्रतीत होता था कि दोनों राज्यों का एकीकरण कभी भी हो जाएगा। इस सम्भावना को 1580 ई. में स्पेन के शासक फिलिप द्वितीय ने पुर्तगाल का स्पेन में विलीन कर यथार्थ रूप दे दिया।

अव्यवस्थित राज्यों का उत्थान
(RISE OF THE DISORDERED STATES)

आधुनिक युग के आरम्भ में मध्य, पूर्वी एवं दक्षिणी यूरोप के जर्मनी, इटली, तुर्की, रूस, नार्वे, डेनमार्क, नीदरलैण्ड्स, स्वीड़न, बोहेमिया, हंगरी, लिथुआनिया नामक राज्य अपनी अव्यवस्थित स्थिति के कारण अभी भी अप्रगतिशील थे। इन अव्यवस्थित राज्यों की राजनीतिक स्थिति का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

जर्मनी : 'पवित्र रोमन साम्राज्य'
(GERMANY : THE HOLY ROMAN EMPIRE)

यूरोप के इतिहास में **'पवित्र रोमन साम्राज्य'** (The Holy Roman Empire) का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। प्रारम्भ में पवित्र रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत मध्य एवं पश्चिमी यूरोप के लगभग सभी राज्य आते थे। आधुनिक युग के आरम्भ होने तक इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, पोलैण्ड, इटली, बर्गण्डी एवं हंगरी आदि राज्यों ने **'पवित्र रोमन साम्राज्य'** से अपने को स्वतन्त्र कर लिया तथा 'पवित्र रोमन साम्राज्य' की प्रभुसत्ता को मानने से इन्कार कर दिया. किन्तु जर्मनी एकमात्र ऐसा राज्य था जो कि अभी तक पवित्र रोमन साम्राज्य का अंग था। **यदि यह कहा जाए कि पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जर्मनी साम्राज्य ही पवित्र रोमन साम्राज्य**

---

1 "The Scottish national monarchy was a Pawn rather than a chief piece, in the sixteenth century game of International politics."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 29.

2 "In harmony with the spirit of the age the monarchy was tending towards absolutism, and the parliament, called the cortes, which had played an important part in earlier times, ceased to meet regularly after 1521." —*Ibid.*, p. 32.

था तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। अब एक प्रकार से जर्मन साम्राज्य ही पवित्र रोमन साम्राज्य था। दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में प्रयुक्त होने लगा। यह स्थिति जर्मनी के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से अत्यन्त चिन्ताजनक थी और यही कारण है कि जबकि पश्चिमी यूरोप के विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय राजतन्त्रों की स्थापना हो रही थी, जर्मनी इस दौड़ में अत्यन्त पिछड़ गया। यद्यपि पवित्र रोमन साम्राज्य का सम्राट धार्मिक दृष्टि से यूरोप में सर्वोच्च माना जाता था, किन्तु उसकी राजनीतिक स्थिति अच्छी न थी। जर्मनी प्रायः 300 छोटी-बड़ी रियासतों में विभक्त था, जो कि एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या रखते थे। उनको परस्पर बांधने एवं एक सूत्र में पिरोने वाली शक्ति नहीं थी। जर्मनी का सम्राट यद्यपि सर्वोच्च अधिकारी था, किन्तु वास्तव में वह अत्यन्त कमजोर था तथा सामन्तों में नियन्त्रण रखने में स्वतः को असमर्थ पाता था। जर्मनी के सम्राट का चुनाव द्वारा चयन होता था। सम्राट की सहायता के लिए एक **'डाएट'** **(Diet)**[1] थी, जिसके तीन सदन होते थे। सम्राट के अधीन राजकीय कोष तथा सेना न होने के कारण वह नाममात्र का ही शासक था।

15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जर्मनी में भी राष्ट्रवादी भावनाएं प्रबल होने लगीं। इस समय **'हैप्सबर्ग-वंश'** जर्मनी में सर्वाधिक शक्तिशाली था तथा इसी वंश के राजकुमार काफी समय से जर्मनी के सम्राट बनते चले आ रहे थे। 1493 ई. में इसी वंश का **'मैक्सिमिलियन'** **(Maximilian)** नामक व्यक्ति ज़र्मनी का सम्राट बना। उसने 1519 ई. तक जर्मनी में शासन किया। मैक्सिमिलियन ने जर्मनी के प्रशासन में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुधार किए—

1. जर्मनी में समय-समय पर होने वाले विनाशकारी पारस्परिक विवादों एवं संघर्षों की समाप्ति हेतु एक विशेष न्यायालय की स्थापना का मूल उद्देश्य द्वन्द्व युद्धों को रोकना था।
2. सम्राट को नए कर लगाने का अधिकार प्राप्त हो गया।
3. जर्मन साम्राज्य को 10 क्षेत्रों में विभक्त कर दिया गया। प्रत्येक क्षेत्र के प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक मुख्य न्यायाधीश एवं दस सलाहकारों की एक समिति गठित की गई।
4. संसद का अधिवेशन प्रतिवर्ष बुलाया जाना निश्चित कर दिया गया।

मैक्सिमिलियन द्वारा किए गए उक्त सुधार सामन्तों की स्वार्थपरता एवं सम्राट के पास स्थायी एवं शक्तिसम्पन्न सेना के अभाव में कारगर सिद्ध न हो सके। अब मैक्सिमिलियन की गृह-नीति पूर्णतः असफल हो गई, किन्तु मैक्सिमिलियन द्वारा राजवंशीय वैवाहिक सम्बन्धों की जो नीति अपनाई गई उससे हैप्सवर्ग राजवंश की प्रतिष्ठा यूरोपीय राजनीति में महत्वपूर्ण हो गई। उसने नीदरलैण्ड्स की राजकुमारी से स्वयं विवाह किया। उसने अपने पुत्र फिलिप प्रथम का विवाह स्पेन की राजकुमारी जोआना से किया। इस प्रकार आधुनिक युग के आरम्भ में पवित्र रोमन साम्राज्य अथवा जर्मन साम्राज्य की राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में कोई विशेष प्रगति न हो पाई थी।

नीदरलैण्ड्स
(NETHERLANDS)

वर्तमान हालैण्ड एवं बेल्जियम को ही आधुनिक यूरोप के आरम्भ में नीदरलैण्ड्स के नाम से जाना जाता था। इस समय नीदरलैण्ड्स कुल 17 राज्यों में विभक्त था। 1477 ई. में

1 जर्मनी में संसद को डाएट कहा जाता है।

जर्मन सम्राट मैक्सिमिलियन से नीदरलैण्ड्स की उत्तराधिकारिणी राजकुमारी का विवाह हो जाने के पश्चात् नीदरलैण्ड्स पर जर्मन साम्राज्य का प्रभुत्व कायम हो गया।

इटली
(ITALY)

मध्य युग की समाप्ति के समय इटली में एकता का पूर्ण अभाव था। इटली अनेक राज्यों में विभक्त था जो परस्पर वैमनस्य के कारण सदैव झगड़ते थे। इटली के राज्यों की पारस्परिक फूट का लाभ उठाकर यूरोप के अन्य राज्य इटली पर अधिकार करने का प्रयत्न करने लगे थे। इटली पर अधिकार करने के लिए फ्रांस व स्पेन विशेष रूप से उत्सुक थे।

इटली यद्यपि अनेक राज्यों में विभक्त था, किन्तु **प्रमुख पांच राज्य निम्नलिखित थे—**

(i) **मिलान** (Milan)—मिलान में पहले प्रजातान्त्रिक शासन पद्धति थी, किन्तु स्थिति के बिगड़ने पर यहां निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना हुई। 15वीं शताब्दी में मिलान में एक नवीन वंश के शासन की स्थापना फ्रांसिस्को फोर्जा ने की। इस प्रकार एक सुदृढ़ व सक्षम सरकार की स्थापना मिलान में हुई।

(ii) **वेनिस** (Venice)—एक समय वेनिस भूमध्य क्षेत्र की रानी कहलाता था तथा व्यापार के कारण अत्यन्त समृद्ध माना जाता था। मध्य युग में वेनिस इटली के समस्त राज्यों में सबसे शक्तिशाली एवं धनी था, किन्तु आधुनिक युग में उसकी शक्ति का तेजी से पतन हुआ। वेनिस की शक्ति के कमजोर होने के अनेक कारण थे। तुर्कों ने भी वेनिस के व्यापार को अपार क्षति पहुंचाई। भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज ने भी वेनिस के व्यापार के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। भारत से व्यापार अब स्पेन व पुर्तगाल करने लगे, जिसका कुप्रभाव वेनिस पर पड़ा। वेनिस में प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति थी, किन्तु स्थानीय व्यापारी वर्ग ने सत्ता में आने का फैसला किया, अतः शनैः-शनैः वहां **वंशानुगत अभिजात्यवर्ग का शासन स्थापित हो गया। शासन करने के लिए एक संस्था की स्थापना हुई, जिसे 'दस' कहते थे क्योंकि इसमें दस सदस्य होते थे।** वेनिस में वास्तविक सत्ता इसी के हाथों में थी तथा ड्यूक नाममात्र का ही शासक होता था।

(iii) **फ्लोरेन्स** (Florence)—फ्लोरेन्स राज्य भी एक औद्योगिक राज्य था, अतः आर्थिक रूप से सम्पन्न था। फ्लोरेन्स भी प्रारम्भ में एक प्रजातान्त्रिक राज्य था, किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यहां मेडिसी-वंश (Medici Dynasty) ने राजतन्त्रात्मक शासन की स्थापना की। **पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में इस वंश के शासक लोरेन्जो** (Lorenzo the Magnificient) **ने वास्तविक राजसत्ता हस्तगत की।** लोरेन्जो एक योग्य व्यक्ति, सफल शासक व कुशल राजनीतिज्ञ था। उसके समय में फ्लोरेन्स में एक दृढ़ सरकार के साथ-साथ कला एवं काव्य की भी उन्नति हुई। कालान्तर में मेडिची-वंश के शासकों के शासन को पसन्द न करने के कारण फ्रांस के शासक चार्ल्स-VIII के आक्रमण के समय फ्लोरेन्स के लोगों ने विद्रोह कर दिया व मेडिची-वंश का शासन समाप्त हो गया, किन्तु कुछ वर्षों के उपरान्त इस वंश के शासन की फ्लोरेन्स में पुनर्स्थापना हुई।

(iv) **नेपल्स** (Napels)—पन्द्रहवीं शताब्दी से पूर्व नेपल्स फ्रांस के प्रभाव में था। 15वीं शताब्दी में नेपल्स पर स्पेन के अरागान-वंश का अधिकार हो गया। अरागान-वंश के शासन का विरोध फ्रांस ने किया। इस प्रकार नेपल्स स्पेन व फ्रांस के मध्य संघर्ष का कारण बन गया। कालान्तर में इस संघर्ष का सम्पूर्ण यूरोप की राजनीति पर प्रभाव हुआ।

(v) रोम (Rome)—जिस समय इटली पर से पवित्र रोमन साम्राज्य का आधिपत्य समाप्त हुआ, पोप ने रोम तथा निकटवर्ती क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था, इस प्रकार पोप धार्मिक नेता होने के साथ-साथ राजनीतिक प्रधान भी बन गए। अन्य देशों के राजाओं के समान पोप भी अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे। धार्मिक व राजनीतिक शक्ति के अधिकारी बन जाने के कारण पोप ने भी अंन्य राजाओं के समान विलासी जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया। पोप को देखकर अन्य धर्माधिकारी भी विलासी होने लगे। इस प्रकार सम्पूर्ण धार्मिक-व्यवस्था भ्रष्ट होने लगी व धार्मिक स्थल भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए।

इसी भ्रष्टाचार के कारण ही यूरोप में धर्म-सुधार आन्दोलन हुआ।

तुर्की साम्राज्य
(OTTOMAN EMPIRE)

15वीं शताब्दी के प्रारम्भ में तुर्कों ने पवित्र रोमन साम्राज्य के पूर्वी भागों पर अधिकार करना प्रारम्भ कर दिया। शीघ्र ही कुस्तुन्तुनियां को छोड़कर शेष भाग पर उनका अधिकार हो गया। 1453 ई. में मुहम्मद-II (Mohammed-II) ने कुस्तुन्तुनियां (Constantinople) पर भी अधिकार कर लिया। इस प्रकार पूर्वी रोमन साम्राज्य का पतन हो गया। बाद में मुहम्मद-II के पौत्र सिलिम (Selim) ने ईरान, सीरिया तथा मिस्र पर भी विजय प्राप्त की। इस प्रकार एक विशाल तुर्क-साम्राज्य (Ottoman Empire) की स्थापना हुई। सिलिम की मृत्यु 1590 ई. में हुई। उसके पश्चात् उसके पुत्र सौलिमन (Solyman) के समय में तुर्क-साम्राज्य उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गया।

रूस
(RUSSIA)

पूर्वी यूरोप में स्थित रूस 15वीं शताब्दी तक अत्यन्त प्रगतिशील था। इसका सबसे प्रधान कारण वहां के आन्तरिक सामन्तीय संघर्ष एवं विदेशी आक्रमण थे। 16वीं शताब्दी के आरम्भ में **'ईवान महान्'** ने रूस को एक राष्ट्रीय राज्य के रूप में अग्रसर करने का महत्वपूर्ण कार्य किया; उसने रूस से मुगलों की सत्ता को समाप्त किया। महत्वपूर्ण वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए तथा साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई। उसने **'जार'** की उपाधि धारण की। इस प्रकार 16वीं शताब्दी के आरम्भ में **'ईवान'** ने रूस को उत्कर्षरत राष्ट्रीय राज्यों की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया।

बोहेमिया, हंगरी, पोलैण्ड तथा लिथुआनिया
(BOHEMIA, HUNGARY, POLAND AND LITHUANIA)

परम्परागत रूप में बोहेमिया 'पवित्र रोमन साम्राज्य का अंग' माना जाता था। अतः बोहेमिया में राजा का निर्वाचन होता था। राजनीति में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सामन्तवर्ग विदेशी राजकुमारों को ही अपना कर चयनित करते थे। इस प्रथा ने बोहेमिया को विदेशी शक्ति हंगरी के अधीन कर दिया, परन्तु यह भी उल्लेखनीय है कि अनेक विषमताओं के कारण हंगरी में भी राष्ट्रीय राज्य की स्थापना नहीं हो पाई। 1547 ई. में तो तुर्कों की विजय ने हंगरी का विभाजन ही कर दिया। पोलैण्ड एवं लिथुआनिया ने पवित्र रोमन साम्राज्य से अपने को स्वतन्त्र करने की घोषणा तो कर ली थी, किन्तु सामन्तों के पारस्परिक विरोध ने वहां पर राष्ट्रीयता के विकास में महान् बाधा डाली।

नार्वे, डेनमार्क एवं स्वीडन
(NARVEY, DENMARK AND SWEDAN)

नार्वे, डेनमार्क एवं स्वीडन उत्तर-पश्चिमी यूरोप के तीन प्रमुख राज्य थे। 1397 ई. से नार्वे एवं स्वीडन में भी डेनमार्क के राजा का शासन चला आ रहा था। 1523 ई. में स्वीडन ने स्वत: को डेनमार्क से स्वतन्त्र करा लिया, किन्तु नार्वे पर डेनमार्क का ही प्रभुत्व बना रहा। 16वीं शताब्दी के आरम्भ में डेनमार्क, नार्वे एवं स्वीडन निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना की ओर अग्रसर होने लगे थे।

इस प्रकार सम्पूर्ण विवेचन स्पष्ट करता है कि यूरोप के इतिहास में 16वीं शताब्दी के आरम्भ में जहां एक ओर पश्चिमी यूरोप में नवीन एवं शक्तिशाली राजतत्वों का द्रुतगति से विकास हो रहा था, वहीं दूसरी ओर दक्षिणी-पूर्वी एवं मध्य यूरोप में अप्रगतिशील राज्यों का अंस्तित्व दृष्टिगोचर होता है।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोप की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।
2. आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोप के प्रमुख राष्ट्रीय राजतन्त्रों के उत्थान पर प्रकाश डालिए। राष्ट्रीय राजतन्त्र से आपका क्या अभिप्राय है ? आधुनिक युग के आरम्भ में राष्ट्रीय राज्यों के उदय के क्या कारण थे ? संक्षेप में लिखिए।
4. फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।
5. फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की गृह एवं विदेश नीति का मूल्यांकन कीजिए।
6. फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला के शासन ने स्पेन को राष्ट्रीय राजतन्त्र का स्वरूप कहां तक प्रदान किया ? स्पष्ट कीजिए।
7. हेनरी सप्तम की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।
8. इंग्लैण्ड में राष्ट्रीय राजतन्त्र को हेनरी सप्तम के प्रशासन ने कहां तक सुदृढ़ किया ? स्पष्ट कीजिए।
9. आधुनिक युग के आरम्भ में अव्यवस्थित राज्यों के उत्थान पर लेख लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्रीय राजतन्त्र से आपका क्या अभिप्राय है ? सविस्तार समझाइए।
2. फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला के बारे में आप क्या जानते हैं ? संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. फर्डीनेण्ड व ईसाबेला की विदेश नीति का उल्लेख कीजिए।
4. फर्डीनेण्ड व ईसाबेला की गृह नीति का उल्लेख कीजिए।
5. आधुनिक युग के आरम्भ में जर्मनी के उत्थान पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यूरोप में 'गुलाबों का युद्ध' (War of Roses) कितने वर्षों तक चला ?
2. किन तथ्यों ने राष्ट्रीय राजतन्त्रों के विकास के द्वारा खोले ?
3. फर्डीनेण्ड और ईसाबेला कौन थे ?
4. फर्डीनेण्ड और ईसाबेला के मध्य क्या सम्बन्ध था ?
5. फर्डीनेण्ड और ईसाबेला की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य क्या थे ?
6. स्पेन में 'इक्वीसीशन' किसे कहा जाता था ?

7. पोप अलेक्जेण्डर षष्ठम ने 'कैथोलिक सम्राट' की उपाधि से किसे अलंकृत किया ?
8. आधुनिक युग में यूरोप के किस देश में सर्वप्रथम राजनीतिक एकता स्थापित हुई ?
9. 1337 ई. से 1453 ई. तक फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के मध्य होने वाले दीर्घकालीन युद्धों को किस नाम से पुकारा जाता है?
10. 'गुलाब के फूलों का युद्ध' (War of Roses) किस-किस के मध्य हुआ ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. निम्नलिखित में कौन-सा कारण राष्ट्रीय राज्यों के उत्थान का कारण नहीं था :
   (क) सामन्तवाद का पतन (ख) मध्यम वर्ग का उत्थान
   (ग) नवीन आविष्कार (घ) पोप की शक्ति का सुदृढ़ होना
2. निम्नलिखित में कौन-सा राज्य आधुनिक यूरोप के आरम्भ में स्पेनी साम्राज्य से सम्बन्धित नहीं था :
   (क) ग्रेनाडा (ख) कैस्टील (ग) अरागान (घ) मिस्र
3. निम्नलिखित में किसे एलेक्जैण्डर षष्ठ्म ने 'कैथोलिक सम्राट' की उपाधि प्रदान की थी :
   (क) फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला (ख) हेनरी सप्तम
   (ग) मैक्सिमिलियन (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
4. इक्वीसीशन से तात्पर्य था :
   (क) धार्मिक न्यायालय (ख) फौजदारी न्यायालय
   (ग) दीवानी न्यायालय (घ) विवाह सम्बन्धी विशिष्ट न्यायालय
5. शतवर्षीय युद्ध हुआ था :
   (क) इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के मध्य (ख) इंग्लैण्ड एवं स्पेन के मध्य
   (ग) इंग्लैण्ड एवं रूस के मध्य (घ) इंग्लैण्ड एवं पवित्र रोमन साम्राज्य के मध्य
6. हेनरी सप्तम के विरुद्ध विद्रोह करने वाला प्रथम व्यक्ति निम्नलिखित में से कौन सा था :
   (क) लैम्बर्ट सिमनल (ख) मैक्सिमिलियन
   (ग) फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं
7. गुलाब के फूलों का युद्ध निम्नलिखित में किसके मध्य हुआ था :
   (क) यार्क राजवंश एवं लंकास्टर राजवंश के सामन्तों के मध्य
   (ख) स्पेन एवं फ्रांस के मध्य
   (ग) स्पेन एवं जर्मनी के साथ
   (घ) इंग्लैण्ड एवं रूस के मध्य
8. निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही नहीं है :
   (क) गुलाबों का युद्ध भयंकर सामन्ती युद्ध था
   (ख) अलेक्जेण्डर षष्टम ने फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला को कैथोलिक सम्राट की उपाधि प्रदान की थी
   (ग) आधुनिक युग के आरम्भ में पवित्र रोमन साम्राज्य एवं जर्मन साम्राज्य समानार्थी थे
   (घ) आधुनिक युग के आरम्भ में पवित्र रोमन साम्राज्य के अन्तर्गत जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस व रोम सम्मिलित थे
9. निम्नलिखित में किस शासक ने 1580 ई. में स्पेन में पुर्तगाल को सम्मिलित किया था :
   (क) फिलिप द्वितीय (ख) मैक्सिमिलियन
   (ग) हेनरी सप्तम (घ) लुई बारहवां

10. "एक व्यक्ति जिसने तलवार के आधार पर राजगद्दी प्राप्त की है जिसकी राजा की पदवी शक्तिहीन एवं नाममात्र की है और जिसके विरुद्ध शक्तिशाली षड्यन्त्र उसे देश से निष्कासित करने के लिए प्रयत्नशील, वह तो राजनीतिक सिद्धान्तों कों अपने राज्य का आधार बना सकता है और न नए तरह के वैधानिक परीक्षणों में उलझ सकता है।" यह कथन निम्नलिखित में से किसका है :

(क) एम. एम. रीज (ख) कैटलबी

(ग) फिशर (घ) हेंज

[उत्तर—1. (घ) 2. (घ) 3. (क) 4. (क) 5. (क) 6. (क) 7. (क) 8. (घ) 9. (क) 10. (क)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए :

1. इंग्लैण्ड के शासक हेनरी सप्तम के विरुद्ध विद्रोह करने वाला प्रथम व्यक्ति लैम्बर्ट सिमनल नामक नवयुवक था।
2. फ्रांस यूरोप का प्रथम देश था, जिसमें सर्वप्रथम राजनीतिक एकता स्थापित हुई। फ्रांस में तेरहवीं शताब्दी में ही सामन्तों का दमन कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की जा चुकी थी।
3. 1479 ई. में अरागान राज्य के राजकुमार फर्डीनेण्ड के साथ कैस्टील की राजकुमारी ईसाबेला का विवाह हुआ।
4. 'गुलाबों का युद्ध' फ्रांस और इंग्लैण्ड के मध्य हुआ था।
5. 'शतवर्षीय युद्ध' इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्य हुआ था।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. असत्य 5. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. फर्डीनेण्ड और ईसावेला का विवाह.....ई. में हुआ था।
2. स्पेन का एकीकरण........ई. में हुआ था।
3. 'हैप्सबर्ग वंश' का 'मैक्सिमिलियन' नामक व्यक्ति वर्ष......ई. में जर्मनी का सम्राट बना।
4. हेनरी सप्तम वर्ष.......ई. में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठा।

[उत्तर—1. 1479, 2. 1512 3. 1493 4. 1485]

4

स्पेन का उत्थान एवं पतन

[THE RISE AND DECLINE OF SPAIN]

भूमिका
(INTRODUCTION)

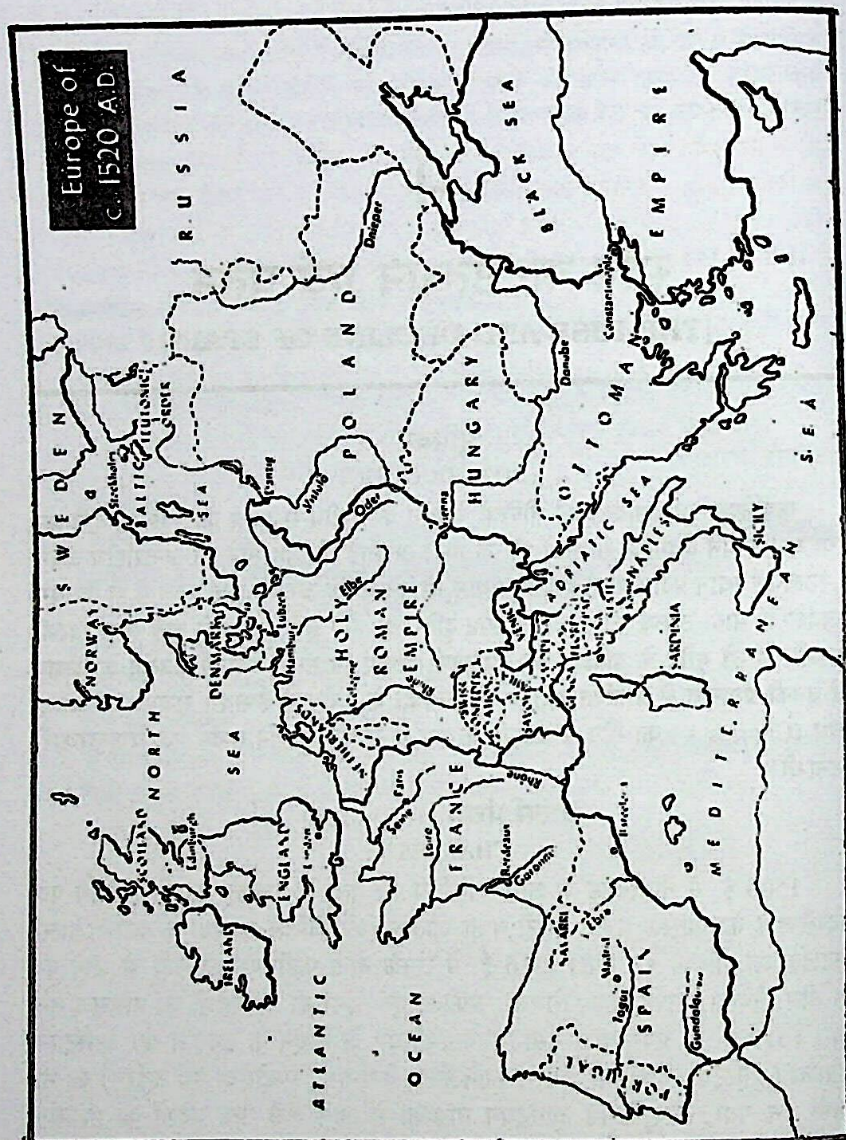
फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की नीतियों ने स्पेन को राष्ट्रीय-राजतन्त्र का स्वरूप प्रदान कर दिया था। उन्होंने वैवाहिक सम्बन्धों की जो नीति अपनाई थी, वह स्पेन को अन्तर्राष्ट्रीय जगत में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने के लिए पर्याप्त थी। निःसन्देह उनके शासन काल में ही हैप्सबर्ग राजवंश के भावी उत्कर्ष की सम्भावना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी थी। **आने वाले समय (16वीं शताब्दी) में तो यूरोप के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं निःसन्देह हैप्संबर्ग राजवंश के उत्थान एवं उनकी प्रधानता से प्रभावित रहीं।** 16वीं शताब्दी के यूरोप में हैप्सबर्ग राजवंश के चार्ल्स पंचम (Charles V) का स्पेन के शासक के रूप में राज्यारोह्ण निःसन्देह एक युगान्तरकारी घटना थी।

चार्ल्स पंचम (1520-1556)
(CHARLES V)

1506 ई. में नीदरलैण्ड के शासक फिलिप की मृत्यु के पश्चात् उसका 6-वर्षीय पुत्र नीदरलैण्ड्स का शासक बना। अपनी माता जोआना की विक्षिप्त अवस्था के कारण चार्ल्स कैस्टाईल का शासक बन गया। 1516 ई. में उसके नाना फर्डीनेण्ड की मृत्यु हो जाने पर वह स्पेन, नेपेल्स, सापर्डीनिया, सिसली, अफ्रीका एवं अमरीकी उपनिवेशों का प्रशासक बन गया। 1519 ई. में अपने दादा सम्राट मैक्सिमिलियन के निधन के उपरान्त वह आस्ट्रियन साम्राज्य (आस्ट्रिया, बोहेमिया, हंगरी, कार्निओला, कैरेन्थिया, एस्टोरिया एवं टाईरन) का भी स्वामी बन गया, किन्तु उसने आस्ट्रियन साम्राज्य में आने वाले उक्त प्रदेशों का प्रशासन अपने भाई फर्डीनेण्ड को सौंप दिया। 1520 ई. में पवित्र रोमन सम्राट के चुनाव में वह विजयी हुआ और एला शैपल के स्थान पर उसका राज्याभिषेक हुआ। **इस प्रकार चार्ल्स, जो कि 'चार्ल्स पंचम' के नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ, यूरोप के इतिहास में ऐसा सर्वाधिक शक्तिशाली एवं भाग्यवान शासक सिद्ध हुआ, जिसे कि उत्तराधिकार के रूप में विशाल साम्राज्य प्राप्त हो गया।** इसी कारण इतिहासकार हेज ने तो यहां तक कहा है कि **'उस पर राज्यों एवं साम्राज्यों की वर्षा होने लगी।''**[1] इस विशाल साम्राज्य के शासक के रूप में उसने 1556 ई. तक शासन किया।

---

1 **"On this boy Crowns seemed to rain." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 193.**



चार्ल्स पंचम की गृह-नीति

(HOME POLICY OF CHARLES V)

चार्ल्स पंचग की गृह-नीति का विवरण निम्नलिखित है :

समस्याएं (Problems)—चार्ल्स पंचम को उत्तराधिकार के रूप में एक विस्तृत साम्राज्य मिल तो गया था, किन्तु यह विशाल साम्राज्य कांटों की सेज से कम भी नहीं था। चार्ल्स पंचम को जितना विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, उतना ही उसका उत्तरदायित्व भी बढ़ गया

था, उसका विशाल साम्राज्य ही उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौती थी। उसके विशाल साम्राज्य की विस्तृत सीमाएं एवं प्रादेशिक भिन्नता उसकी प्रमुख समस्या थी। वास्तव में, चार्ल्स पंचम का साम्राज्य तो एक राजवंशीय साम्राज्य था, जो कि अनेक राज्यों व प्रदेशों का असम्बद्ध समूह था। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"इसमें प्राचीन समय के रोमन साम्राज्य या पश्चात् के रूसी साम्राज्य के सदृश एक केन्द्रीय सरकार नहीं थी, अपितु यह वैवाहिक सम्बन्धों के कारण एक विशेष राजवंश—हैप्सबर्ग राजवंश के अधीन अनेक राज्यों व प्रदेशों का असम्बद्ध समूह था।"**[1] प्रत्येक प्रान्त की अलग एवं स्वतन्त्र शासन-व्यवस्था थी। यह ठीक है कि जर्मनी में नाममात्र की केन्द्रीय व्यवस्था थी, परन्तु स्पेन, नीदरलैण्ड्स एवं इटैलियन राज्यों में तो यह नाममात्र के लिए भी नहीं थी। जहां एक ओर नीदरलैण्ड्स में आने वाले सभी प्रान्त अपना-अपना अलग अस्तित्व एवं स्वतन्त्रता रखते थे वहीं दूसरी ओर स्पेनिश साम्राज्य में भी विभिन्न प्रान्तों की शासन-व्यवस्था अलग-अलग थी। स्पेनी एवं इटैलियन वर्गीयता जहां उसके लिए गम्भीर चुनौती थी तो पवित्र रोमन साम्राज्य होने के नाते उसका उत्तरदायित्व अत्यधिक बढ़ गया था। हेज ने **इस समस्या को बाह्य आडम्बर की संज्ञा दी है।**[2] जर्मनी में तीव्र गति से फैलने वाला धर्म सुधार आन्दोलन चार्ल्स के सम्मुख एक गम्भीर चुनौती था। इस प्रकार आन्तरिक क्षेत्र में चार्ल्स को आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ा जो कि अत्यधिक उलझी हुई थीं।

चार्ल्स पंचम, अपनी इन समस्याओं के निराकरण में कहां तक सफल हुआ यह उसके स्पेन, नीदरलैण्ड एवं जर्मन सम्राट (पवित्र रोमन सम्राट) के रूप में किए गए कार्यों से स्पष्ट होता है। **उसका स्पेन, नीदरलैण्ड्स एवं जर्मन सम्राट के रूप में शासन का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है :**

स्पेन का शासन (Rule of Spain)

1516 ई. में फर्डीनेण्ड की मृत्यु के पश्चात् स्पेनिश साम्राज्य के सम्राट के रूप में चार्ल्स पंचम सिंहासनारूढ़ हुआ था। यहां पर उसने पूर्ण निरंकुशतापूर्वक शासन किया। आरागन एवं कैस्टाईल की संसदों ने चार्ल्स के निरंकुश अधिकारों को प्रतिबन्धित करने का जो प्रयत्न किया वह असफल सिद्ध हुआ। चार्ल्स की निरंकुशता स्पेन के सामन्तों एवं नगर प्रतिनिधियों को भी असह्य थी। अतः 1520 ई. से 1522 तक स्पेन में भयंकर विद्रोह हुए, किन्तु चार्ल्स पंचम ने सामन्तों एवं नगर प्रतिनिधियों के पारस्परिक संघर्ष का लाभ उठाकर इन विद्रोहों को कुचलने में सफलता प्राप्त कर ली। सामन्त वर्ग ने नगर प्रतिनिधियों के विरुद्ध अब निरंकुश प्रशासन का समर्थन आरम्भ कर दिया। मौके का लाभ उठाकर चार्ल्स पंचम ने नगर-प्रतिनिधियों के अधिकारों को छीन लिया, उनके नगर-प्रशासन सम्बन्धी स्थानीय अधिकार भी सीमित कर दिए गए। अब नगर के प्रशासन के संचालन के लिए एक राजकीय पदाधिकारी की नियुक्ति की गयी। **अरागन व कैस्टाईल की संसदों ने जिस प्रकार प्रारम्भ में चार्ल्स के निरंकुश**

---

1 "That is they did not constitute a single centralized state, like the earlier Roman Empire of the latter Russian Empire, but a Conteries of states and sovereignties which had been grouped together fortunes of marriage under the particular family—in this case, the Habusburg family and which were united only in the sense that thay all had a common personal sovereign."

2 "The Holy Roman Empire afforded additional problem; it made serious demands upon the time; money and energies of its ruler; in return it gave little but glamour." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 194.

शासन का विरोध किया था उससे प्रभावित होकर चार्ल्स ने संसद की वास्तविक शक्ति को छीन लिया, किन्तु उसके कर्तव्य यथावत् बने रहे। अब संसद राज्याश्रित संस्था थी। 1523 ई. तक अपने निरंकुश प्रशासन को स्थापित कर उसने स्पेन निवासियों की सन्तुष्टि के लिए अधिकांश सरकारी पदों पर स्पेनवासियों को ही नियुक्त किया। यही नहीं, उसने 1526 ई. में पुर्तगाल की राजकुमारी ईसाबेला से विवाह किया।

चार्ल्स पंचम ने स्पेन के एकीकरण एवं राष्ट्रीयकरण के लिए कदम उठाए। उसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्पेन की महत्ता को स्थापित करने के लिए साम्राज्यवादी नीति का अवलम्बन किया। अमरीका गोलार्ध के मैक्सिको, मध्य अमरीका, पेरू, बोलिविया, चिली, न्यू ग्रानाडा एवं वेनेजुएला में स्पेनी उपनिवेश बसाने में उसने सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार उसके स्पेन में प्रशासन ने वहां पर निरंकुशता की जो नीति अपनाई उससे वह निरंकुश प्रशासन सुप्रतिष्ठित करने में सफल तो रहा, किन्तु संसद की शक्ति सीमित हो जाने से स्पेन का वैधानिक विकास थम गया, **उसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्पेन को प्रभुत्व प्रदान करने के लिए जिस साम्राज्यवादी नीति को अपनाया उससे स्पेन के राजकोष पर गहरा असर पड़ा। स्पेनी राजकोष पर लगभग दो करोड़ पौण्ड का ऋण हो गया। यह सब करने के स्थान पर उसे स्पेन में एक जैसी कर-व्यवस्था व आर्थिक व्यवस्था स्थापित करनी थी। उसकी मूर-विरोधी नीति के कारण व्यापार में चतुर उद्योगशील मूर-जाति ने स्पेन को त्याग दिया।** निःसन्देह यह आर्थिक एवं औद्योगिक दृष्टि से अत्यन्त विनाशकारी सिद्ध हुआ। यह ठीक है कि स्पेन को अपने उपनिवेश प्राप्त हो गए, किन्तु उसका यह औपनिवेशिक विस्तार स्पेन के राष्ट्रीय विकास के लिए घातक साबित हुआ। अमरीका के प्रदेशों से प्राप्त स्वर्ण ने स्पेनी जनता को विलासी बना दिया, इससे स्पेन का नैतिक पतन तो हुआ ही साथ ही स्पेनी जनता में अकर्मण्यता भी आ गई।

नीदरलैण्ड्स का शासन (Rule of Netherlands)

नीदरलैण्ड्स में ही चार्ल्स पंचम का जन्म एवं पालन-पोषण हुआ था। अतः वहां के निवासियों में चार्ल्स पंचम के लिए स्वभावतः श्रद्धा एवं सम्मान था। चार्ल्स ने नीदरलैण्ड्स की जनता की भावनाओं का पूर्ण लाभ उठाते हुए नीदरलैण्ड्स में सफलतापूर्वक शासन किया। उसने नीदरलैण्ड्स के 17 प्रदेशों को मिलाकर एक संघ की स्थापना की। प्रशासनिक कार्यों में संघ की सहायता के लिए एक स्टेट्स जनरल (संसद) एवं तीन कौन्सिलों की स्थापना की। उसने न तो वैधानिक क्षेत्र में और न ही आर्थिक क्षेत्र में कोई हस्तक्षेप किया। **उसकी इस हस्तक्षेप न करने की नीति के कारण ही उस समय भी नीदरलैण्ड्स की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई जबकि उसकी साम्राज्यवादी नीति के कारण वहां अधिक कर लगाए गए।** इस प्रकार उसकी प्रशासकीय नीति निःसन्देह प्रशंसनीय है।

किन्तु चार्ल्स पंचम ने नीदरलैण्ड्स में धार्मिक असहिष्णुता की जो नीति अपनाई, उसकी इतिहासकारों ने कटु आलोचना की है। चार्ल्स ने कट्टर कैथोलिक होने के कारण नीदरलैण्ड्स के काल्विनवादियों का दमन किया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नीदरलैण्ड्स के प्रायः सभी प्रान्तों में **'इन्क्वीजिशन'** नामक अदालतें स्थापित की गईं, किन्तु चार्ल्स की इस नीति के कारण भी प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय का विकास नीदरलैण्ड्स में होता चला गया। उसके अत्यधिक विरोध ने वहां पर फिलिप II के शासनकाल में स्थापित होने वाले एक सफल प्रोटेस्टेण्ट डच गणतन्त्र

की स्थापना के द्वार का मार्ग खोल दिया। इस दृष्टि से चार्ल्स पंचम का नीदरलैण्ड्स में प्रशासन असफल ही माना जा सकता है।

जर्मन साम्राज्य या पवित्र रोमन साम्राज्य का शासन (Rule of Holy Roman Empire)

फ्रांस का शासक फ्रांसिस प्रथम एवं इंग्लैण्ड के शासक हेनरी अष्टम को चुनाव प्रतिद्वन्द्विता में परास्त कर 1520 ई. में **चार्ल्स पंचम 'पवित्र रोमन सम्राट' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था**, किन्तु जर्मन साम्राज्य (पवित्र रोमन साम्राज्य) उसके लिए भयंकर समस्याएं लिए खड़ा था, सम्पूर्ण साम्राज्य विशृंखलित था। छोटे-बड़े अर्धस्वतन्त्र राज्यों में विभक्त था। साम्राज्य में राजकुमार स्वतन्त्र नगर राज्य व सामन्त अपने-अपने अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पारस्परिक युद्धों में संघर्षरत थे। चार्ल्स पंचम पवित्र रोमन साम्राज्य को सुसंगठित केन्द्रीय शासन के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता था। **अतः उसने जर्मनी में अपने व्यक्तिगत अधिकारों में वृद्धि एवं जर्मनी को आर्थिक दृष्टि से एक रूप में बांधने का प्रयत्न किया, परन्तु उसके यह प्रयास निरर्थक रहे।** इसका सबसे प्रधान कारण नगरों के प्रभावशाली व्यापारियों एवं सामन्तों का विरोध था। दूसरी ओर वह फ्रांस के साथ युद्ध में फंसा हुआ था। अतः पवित्र रोमन साम्राज्य की ओर वह विशेष ध्यान भी नहीं दे सका। चार्ल्स की जर्मनी समस्या सामन्तों का विरोध करने में ही समाप्त नहीं हो गई उसे तो उसी समय मार्टिन लूथर के धर्म सुधार आन्दोलन ने आ घेरा। सामन्त वर्ग धर्म सुधार आन्दोलन का लाभ उठाकर अपने अधिकारों में वृद्धि का प्रयत्न कर रहे थे। चार्ल्स पंचम कैथोलिक सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा को यथावत बनाए रखना चाहता था, अतः उसने धर्म सुधार आन्दोलन का विरोध किया। अतः जर्मनी गृह-युद्ध की विभीषिका में जल उठा। चार्ल्स पंचम न तो जर्मनी में राष्ट्रीय एकता स्थापित कर सका और न ही प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के विकास को रोक पाया। उसे 1555 ई. में लूथर सम्प्रदाय को मान्यता देनी ही पड़ी। इतिहास में इसे **'आन्सवर्ग की स्वीकृति'** के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चार्ल्स पंचम ने अपने विशाल साम्राज्य की आन्तरिक समस्याओं का समाधान कर प्रजा में एकता स्थापित करने के जो प्रयत्न किए उसमें उसे सफलता प्राप्त न हो सकी। उसने आन्तरिक समस्याओं से जूझने का आजीवन संघर्ष किया, परन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत नहीं होगा कि वह अयोग्य था। निःसन्देह वह आन्तरिक समस्याओं का सामना अपने धैर्य, दृढ़ता, स्वाभाविक गुणों एवं शैक्षणिक अनुभव के कारण ही करता रहा है। **"उसकी असफलता का कारण उसकी अयोग्यता नहीं, अपितु उसके विशाल साम्राज्य में निहित अनेक प्रान्तों व जातियों के परस्पर विरोधी हितों की प्रधानता थी।"**[1]

चार्ल्स पंचम की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF CHARLES V)

आन्तरिक समस्याओं के सदृश ही चार्ल्स पंचम को विदेश-राजनीति के सन्दर्भ में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसका विशाल साम्राज्य यूरोपीय शासकों के लिए असह्य था। **फ्रांस का शासक फ्रांसिस प्रथम उसका प्रबल प्रतिद्वन्द्वी था। तुर्कों का पूर्वी यूरोप में डेन्यूब नदी की ओर अनवरत रूप से प्रसार एवं भूमध्यसागर में तुर्कों की बढ़ती महत्ता निःसन्देह चार्ल्स पंचम की प्रमुख समस्या थी। रोम के पोप तथा हेनरी अष्टम की विद्वेषपूर्ण नीति भी उसके सामने खड़ी थी।** कुल मिलाकर उसका विशाल साम्राज्य ही अन्य यूरोपीय शक्तियों की आंखों का

1 **"His failures were not due to want of ability but to the multiplicity, of conflicting interests among his subjects."** —**Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 193.**

कांटा बना था। चार्ल्स को यूरोपीय शक्तियों के गिद्ध नेत्रों से अपने साम्राज्य को सुरक्षित रख अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को कायम रखना था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे यूरोप की शक्तियों से संघर्ष भी करना पड़ा। **यूरोप के प्रमुख देशों से उसके सम्बन्धों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है :**

(i) फ्रांस से सम्बन्ध (Relations with France)

अपनी आन्तरिक समस्याओं से आंहत चार्ल्स पंचम फ्रांस से मधुर सम्बन्ध बनाने का पक्षपाती था, किन्तु उसे इस सन्दर्भ में निराशा का सामना करना पड़ा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जो उठापटक चल रही थी, उसके कारण युद्ध करके ही वह हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा एवं अपने साम्राज्य को बचा सकता था। अतः फ्रांस से उसे युद्ध करने पड़े। **वास्तव में फ्रांस के साथ उसकी शत्रुता के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे :**

(1) चार्ल्स पंचम एवं फ्रांसीसी नरेश फ्रांसिस प्रथम दोनों ही पवित्र रोमन साम्राज्य के सम्राट के पद के दावेदार थे। इस प्रतिद्वन्द्विता में चार्ल्स पंचम विजयी हुआ। अतः फ्रांसिस प्रथम की पराजय दोनों के मध्य शत्रुता का कारण बन गई।

(2) हैप्सबर्ग साम्राज्य की विशालता के कारण फ्रांसीसी साम्राज्य की सीमाएं हैप्सबर्ग साम्राज्य से चारों ओर से घिरी थीं। यह फ्रांस की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त घातक था। फ्रांसिस प्रथम हैप्सबर्ग वंश को चुनौती देकर अपने साम्राज्य को सुरक्षित करना चाहता था।

(3) दोनों राजवंशों की शत्रुता परम्परागत रूप से चली आ रही थी।

(4) दोनों शासक नेपल्स एवं सिसली पर अपना-अपना अधिकार बताते थे। चार्ल्स पंचम मिलान पर जिसे कि फ्रांसिस प्रथम ने अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया था अपना अधिकार स्थापित करना चाहता था। इधर फ्रांसिस प्रथम नावारे के दक्षिणी प्रान्तों पर अधिकार करना चाहता था।

स्पष्ट है कि दोनों राजवंशीय साम्राज्यों के मध्य युद्ध उक्त परिस्थितियों में अवश्यम्भावी था। 1522 ई. में दोनों के मध्य युद्ध छिड़ गया जो कि बीच-बीच में रुक तो जाता था, किन्तु पुनः आरम्भ हो जाता था। इस प्रकार 1522 ई. में आरम्भ हुआ फ्रांस व हैप्सबर्ग साम्राज्य के मध्य का युद्ध दोनों नरेशों के शासन काल के अन्त तक जारी रहा।

1522 ई. में जब फ्रांस व हैप्सबर्ग साम्राज्य के मध्य का युद्ध आरम्भ हो गया तो चार्ल्स ने हेनरी अष्टम व रोम के पोप से सहायता प्राप्त कर फ्रांसीसियों को उत्तर इटली से निष्कासित कर मिलान के सिंहासन पर स्फोरजा परिवार को प्रतिष्ठित किया। 1525 ई. में पैविया के घेरे में फ्रांस को स्पेन ने बुरी तरह पराजित किया। फ्रांसिस प्रथम ने जो कि युद्ध से थक चुका था अपनी माता को लिखा, **"मेरे जीवन व सम्मान के अतिरिक्त विश्व में कुछ भी शेष नहीं रह गया है।"**[1] हेज के शब्दों में, **"सब कुछ चार्ल्स के उद्देश्यों के लिए मंगलकारी प्रतीत होता था।"**[2] फ्रांसिस को बाध्य होकर बर्गण्डी, नीदरलैण्ड्स व इटली के प्रदेशों पर से अपने दावों को छोड़ने एवं चार्ल्स पंचम की बहिन से विवाह करने का वचन देना पड़ा, किन्तु कारावास से छूटने के पश्चात् फ्रांस पहुंचते ही फ्रांसिस प्रथम ने अपने दिए गए वचनों को अमान्य घोषित कर युद्ध को पुनः जन्म दे दिया।

---

1 'Nothing in the world is left me save my honour and my life."
2 "Every thing seemed auspicious for the cause of Charles."
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 196.

1527 ई. में जब दोनों के मध्य पुनः युद्ध आरम्भ हुआ तो स्थिति पूर्ववत् नहीं थी। फ्रांस ने रोम के पोप, फ्लोरेन्स, मिलान एवं वेनिस को मिलाकर एक संघ बना लिया था। वस्तुतः इन राज्यों के राजाओं का फ्रांस का साथ देने का प्रमुख कारण पंचम की बढ़ती हुई प्रतिभा थी। चार्ल्स पंचम ने हिम्मत से काम किया और 1527 ई. में युद्ध आरम्भ होते ही चार्ल्स की सेना ने रोम पर भयंकर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स के विरुद्ध हेनरी अष्टम (इंग्लैण्ड के शासक) की सेना भी कारगर सिद्ध न हुई। 1529 ई. में विवश होकर फ्रांसिस प्रथम को **कैम्ब्रे की सन्धि** (Treaty of Cambrai) स्वीकार करनी पड़ी। सन्धि के अनुबन्धों के अनुसार फ्रांस ने नेपल्स, मिलान व नीदरलैण्ड्स के प्रदेशों पर अपने दावे छोड़ने पड़े। फ्रांसिस प्रथम ने चार्ल्स पंचम की बहिन 'एलेनार' के साथ विवाह करना स्वीकार किया। बर्गण्डी के प्रान्त पर फ्रांस का अधिकार मान लिया गया। **कैम्ब्रे की सन्धि (1529 ई.) ने चार्ल्स पंचम की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिए।** फ्रांस पराजित हो चुका था। पोप ने उसकी शक्ति का लोहा मान लिया और इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा को धक्का लग गया। अब इटली व जर्मनी में सर्वेसर्वा कोई था तो वह था—चार्ल्स पंचम। उसकी प्रतिष्ठा का अनुमान इसी बात से लग जाता है कि 1530 ई. में पोप ने स्वयं अपने हाथों से उसे पवित्र रोमन सम्राट का स्वर्ण मुकुट पहनाया था। **यह रोम के पोप के द्वारा पवित्र रोमन सम्राट का अन्तिम राज्याभिषेक था।**[1] किन्तु कैम्ब्रे की सन्धि ने पूर्ण युद्ध विराम नहीं किया। फ्रांसिस प्रथम ने इटली पर अधिकार करने के उद्देश्य से पुनः संघर्ष की तैयारी आरम्भ कर दी। उसने फ्लोरेन्स की राजकुमारी **'मेरी डी मैडिसी'** से अपने पुत्र हेनरी का विवाह कर लिया। यही नहीं, डेनमार्क, स्वीडन, तुर्की, उस्मानिया एवं स्काटलैण्ड ने धर्म सुधार आन्दोलन का कन्धा थपथपाकर संघ बनाए। **मिलान के प्रश्न पर पुनः 1536 ई. में हैप्सबर्ग साम्राज्य व फ्रांस के मध्य युद्ध छिड़ गया, 1538 ई. में 'नीस की सन्धि' ने कुछ समय के लिए युद्ध विराम किया, किन्तु 1542 में पुनः युद्ध आरम्भ हो गया जो कि 1559 की कोटियो कैम्ब्रिसिस की सन्धि के पश्चात् ही थमा।** इस सन्धि ने दीर्घकालीन युद्धों का अन्त कर दिया। अब इटली के राज्यों पर फ्रांस ने अपने दावे छोड़ दिए। मेज, टूल एवं वर्दू नामक प्रदेश फ्रांस को दे दिए गए, फ्रांस को राईन नदी की ओर सीमा विस्तार की छूट दे दी गई।

इस प्रकार चार्ल्स पंचम एवं फ्रांसिस प्रथम के मध्य चलने वाले दीर्घकालीन युद्धों के अत्यन्त गम्भीर परिणाम निकले। कूटनीतिक एवं सामयिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हैप्सबर्ग साम्राज्य की महत्ता स्पष्ट हो गई। राईन नदी की ओर फ्रांसीसी सीमा का विस्तार हुआ। हेज के शब्दों में, **"यूरोपीय साम्राज्य में फ्रांसीसी राजतन्त्र का विलय न हो पाया।"**[2] युद्धों के कारण पूर्वी यूरोप में तुर्कों की प्रगति को बल मिला। फ्रांस से तुर्की के सम्बन्धों में सुधार आया, जिसका प्रभाव फ्रांस के व्यापार पर सकारात्मक पड़ा, किन्तु हैप्सबर्ग साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले स्पेन व जर्मन साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई। रोम भयंकर रूप से रौंद दिया गया। जर्मनी में पनप रहे धर्म सुधार आन्दोलन की ओर चार्ल्स पंचम विशेष ध्यान न दे सका। अतः धर्म सुधार आन्दोलन का द्रुतगति से विकास होता था, जिसने चार्ल्स पंचम की आन्तरिक समस्याओं को जटिल बना दिया।

1 "It was the last papal coronation of a ruler of the Holy Roman Empire."—*Hayes*
2 "They preserved a 'balance of power' and prevented the incorporation of the French monarchy into the dynastic empire of the Hapsburgs."
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 198.

(ii) तुर्की से सम्बन्ध (Relation with Turkey)

चार्ल्स पंचम के फ्रांस के साथ अनवरत रूप से युद्धों में उलझे रहने का पूर्ण लाभ तुर्कों ने उठाया। सुल्तान सुलेमान द्वितीय (1520-1566) के नेतृत्व में तो मिस्र से लेकर अल्जीरिया तक का सम्पूर्ण अफ्रीकी तट उसके स्वामित्व को स्वीकार करता था। 1541 ई. तक सुलेमान ने हंगरी पर अधिकार कर लिया। 1547 ई. में चार्ल्स पंचम एवं उसके भाई को विवश होकर हंगरी पर तुर्कों के अधिकार को स्वीकृति देनी पड़ी। फर्डीनेण्ड ने यह स्वीकार किया कि वह सुल्तान को 30,000 डूकाट (30,000 Ducats) वार्षिक कर के रूप में देगा। सुल्तान सुलेमान की हंगरी विजय निःसन्देह अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। हेज के शब्दों में, **"सुलेमान ने न केवल अपने प्रतिद्वन्द्वियों के हंगरी पर अधिकार करने के सभी प्रयास वि..ल कर दिए, अपितु आजीवन हैप्सबर्ग की परम्परागत राज्य सीमाओं की सुरक्षा को भी खतरे में डाले रखा।"**[1]

ठीक इसी समय ट्यूनिस एवं एलजीयर्स तुर्की सरदार, बारबरोसा के अधिकार में आ गए। उसने फ्रांस से सहायता प्राप्त कर भूमध्यसागर में तुर्की सेना का जमाव इस प्रकार करना आरम्भ कर दिया कि इटली व स्पेन की सुरक्षा एवं व्यापारिक हितों के लिए भय उत्पन्न हो गया। यही नहीं, बारबरोसा ने स्पेन से भगाए गए मूरों का समर्थन प्राप्त कर भूमध्यसागर के यूरोपीय तटीय प्रदेशों में लूटपाट आरम्भ कर दी। ईसाई जगत के सम्राट चार्ल्स के लिए यह एक गम्भीर चुनौती थी। उसने तुरन्त तीन सौ जहाजों का एक बेड़ा एवं तीस हजार सैनिक बारबरोसा के दमनार्थ भेज दिए। 1535 ई. **में चार्ल्स का अधिकार ट्यूनिस पर हो गया और विद्रोहियों व लुटेरों को सदा के लिए समाप्त कर दिया गया।** हीरालाल सिंह के शब्दों में, **"चार्ल्स पंचम अपनी इस विजय से ईसाई धर्म के संरक्षक के रूप में गौरवान्वित हुआ।"**[2]

(iii) इंग्लैण्ड से सम्बन्ध (Relations with England)

इंग्लैण्ड के साथ स्पेन के हैप्सबर्ग राजवंश से सम्बन्ध की महत्ता स्पेन के शासक फर्डीनेण्ड एवं ईसाबेला की पुत्री कैथरीन के इंग्लैण्ड के राजकुमार आर्थर से विवाह से ही स्पष्ट हो जाती है। आर्थर की मृत्यु के पश्चात् कैथरीन का विवाह हेनरी अष्टम से हो गया था। कैथरीन स्पेन के शासक चार्ल्स पंचम की मौसी थी। इतना होने पर भी चार्ल्स पंचम ने प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की यूरोप की राजनीति में भूमिका को नगण्य समझा, किन्तु हेनरी अष्टम के मन्त्री 'कार्डिनल उल्से' ने अपनी नीति से यूरोप में इंग्लैण्ड के गौरव में वृद्धि की। उल्से ने प्रारम्भ में पंचम को सहयोग प्रदान किया, किन्तु रोम पर चार्ल्स के आक्रमण से स्थिति में परिवर्तन आ गया। **अव इंग्लैण्ड ने फ्रांस की सहायता करना आरम्भ कर दिया। स्थिति में परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण कारण वास्तव में हेनरी अष्टम एवं कैथरीन के विवाह सम्बन्ध में कटुता आ जाना था।** हेनरी कैथरीन को तलाक देना चाहता था, किन्तु चार्ल्स पंचम इसका विरोधी था। इधर रोम के पोप ने भी चार्ल्स पंचम से भयभीत होकर हेनरी को तलाक की अनुमति न दी। अतः हेनरी अष्टम ने सभी सम्बन्धों को ताक में रखकर फ्रांस की स्पेन के विरुद्ध पूर्ण सहायता तो की ही, साथ ही रोम के पोप व चार्ल्स पंचम की कोई परवाह न करते हुए कैथरीन को तलाक देकर अपनी प्रेमिका 'ऐन बोलेन' से विवाह कर लिया, किन्तु 1533 ई. में कैथरीन की पुत्री मेरी ट्यूडर

1 **"Suleiman not only thwarted every attempt of his rilvals to recover the Hungarian territories, but remained throughout his life a constant menace to the security of the hereditary Austrian dominions of the Hapsburgs."**

2 **हीरालाल सिंह, आधुनिक यूरोप का इतिहास, पृ. 90.**

के इंग्लैण्ड की शासिका हो जाने के पश्चात् चार्ल्स पंचम व इंग्लैण्ड के सम्बन्ध मधुर हो गए। चार्ल्स पंचम ने अपने पुत्र फिलिप द्वितीय का विवाह मेरी ट्यूडर से कर दिया। **स्पेन व इंग्लैण्ड के सम्बन्ध अब उस समय तक मधुर रहे जब तक कि 'एलिजावेथ ट्यूडर' के राज्यारोहण के साथ ही इंग्लैण्ड की विदेश नीति में परिवर्तन नहीं आया।**

इस प्रकार स्पष्ट है कि चार्ल्स पंचम आजीवन संघर्ष करता रहा। 1547 ई. में फ्रांसिस प्रथम व हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् जब ऐसा प्रतीत होता था कि अब चार्ल्स की समस्याओं का अन्त हो जाएगा, तो ठीक इसी समय 1550 ई. के पश्चात् चार्ल्स पर समस्याओं का तांता पुनः टूट पड़ा। एक ओर इटली में विद्रोह होने लगे तो दूसरी ओर जर्मनी में हो रहे धर्म सुधार आन्दोलन ने अब पूर्ण गति पकड़ ली थी। पूर्वी यूरोप में तुर्कों का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। इधर चार्ल्स का स्वास्थ्य भी दिन-प्रतिदिन गिरता चला जा रहा था। अतः 1555-56 **में उसने अपने साम्राज्य को दो भागों में विभक्त कर स्पेनी साम्राज्य एवं अमरीकी उपनिवेशों का उत्तराधिकार तो अपने पुत्र फिलिप II को सौंप दिया और पवित्र रोमन साम्राज्य एवं हैप्सबर्ग के पैतृक राज्यों का उत्तराधिकारं अपने अनुज फर्डीनेण्ड को सौंपकर राजनीति से संन्यास ले लिया** और अपने जीवन के अन्तिम दो वर्ष स्पेन में शान्ति वातावरण में व्यतीत किए। 21 सितम्बर, 1558 में उसका निधन हो गया।

चार्ल्स पंचम के चरित्र का मूल्यांकन
(EVALUATION OF CHARLES V)

चार्ल्स पंचम हैप्सबर्ग वंश का एक ऐसा सम्राट था जिसके निधन के पश्चात् निःसन्देह एक युग का अन्त हो गया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि आने वाले समय में हैप्सबर्ग वंश का कोई भी शासक इतने बड़े साम्राज्य का स्वामी नहीं हो सका जितने का वह था। यह ठीक है कि वह सौन्दर्य रहित था। उसमें **मौलिकता, कल्पनाशीलता एवं भावुकता का नितान्त अभाव था। उसके चरित्र में हठीलापन एवं अस्थिरता विद्यमान थे। उसमें उच्च कोटि के सैनिक गुणों का भी अभाव था, किन्तु उसमें साहस, धैर्य, अध्यवसाय, विवेकशीलता एवं कठिन से कठिन परिस्थितियों से जूझने की क्षमता विद्यमान थी।** वह मानववादी था, वह कला-प्रेमी एवं ग्रीक एवं लैटिन भाषा का ज्ञाता था। **हेज महोदय ने तो उसे सांस्कृतिक क्षेत्र में अपने युग की उपज बतलाया है।**[1] वह पक्का कैथोलिक था। उसने प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के दमन हेतु स्पेन व नीदरलैण्ड्स में 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक न्यायालयों की स्थापना की। जर्मनी की पूर्वी सीमा एवं भूमध्य सागर में तुर्कों के आतंक को रोकने में उसने कैथोलिक के रूप में अपना पूर्ण योगदान दिया। यही कारण है कि स्टब्स महोदय ने उसके विषय में कहा है कि, **"एकमात्र चार्ल्स पर ही ईसाई जगत की रक्षा का भार था और यद्यपि उसकी सफलताएं आकर्षक नहीं थीं, परन्तु उसके रक्षात्मक कार्यों की योग्यता एवं सत्यता की आलोचना की अपेक्षा उसकी प्रशंसा ही की जा सकती है।"** चार्ल्स पंचम ने जर्मनी व नीदरलैण्ड्स में पूंजीवाद के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह अपनी प्रशासनिक समस्याओं से जूझता रहा और हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को कायम रखने में सफल भी रहा। यूरोप की शक्तियों ने निःसन्देह उसका लोहा माना। इतना सब कुछ होते हुए भी चार्ल्स पंचम अपने साम्राज्य में एकता स्थापित करने में असफल रहा, किन्तु इसका कारण उसकी अयोग्यता नहीं थी। वास्तव में, उसमें समय को

1 "In culture he was a product of his age."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 205.

पहचानने की क्षमता थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब वह शारीरिक रूप से अत्यन्त अस्वस्थ हो गया और उसने प्रशासनिक कठिनाइयों से स्वयं जूझ सकने की शक्ति का अपने में अभाव पाया तो उसके शासक का पद स्वेच्छा से त्याग दिया। अपने साम्राज्य का उसने दो भागों में विभाजन किया। पवित्र रोमन साम्राज्य एवं हैप्सबर्ग के पैतृक साम्राज्य का उत्तराधिकारी अपने अनुज फर्डीनेण्ड को बनाया और स्पेनी साम्राज्य एवं अमरीका के उपनिवेशों के शासन का भार अपने पुत्र फिलिप द्वितीय को सौंप दिया। **इस प्रकार हैप्सबर्ग वंश के इतिहास का एक युग समाप्त हुआ और स्पेनी साम्राज्य का एक नया दौर आरम्भ हुआ, जिसका बागडोर फिलिप द्वितीय के हाथों में केन्द्रित हो गई।**

फिलिप द्वितीय : 1556-1598
(PHILIP SECOND)

फिलिप द्वितीय का जन्म 1527 ई. में हुआ था। अपने पिता चार्ल्स पंचम से उसे उत्तराधिकार में स्पेन, नीदरलैण्ड्स, फ्रैंच, कामटे, मिलान, सिसली, नेपल्स, अमरीका, पश्चिमी द्वीप समूह एवं फिलिपाइन के स्पेनी द्वीप समूह प्राप्त हुए थे, किन्तु फिलिप द्वितीय आस्ट्रियन साम्राज्य के स्वामी फर्डीनेण्ड से पारिवारिक सम्बन्धों में और अधिक दृढ़ता लाकर स्वयं को यूरोपीय जगत का सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न शासक बनाना चाहता था। अतः उसने फर्डीनेण्ड के पुत्र से अपनी बहिन एवं फर्डीनेण्ड की पोती से अपने पुत्र का विवाह किया। 1556 ई. में विशाल साम्राज्य का स्वामी बनने के पश्चात् **फिलिप द्वितीय ने शासन संचालन के लिए प्रमुख रूप से दो आदर्शों का अवलम्बन किया। प्रथम तो राष्ट्र प्रेम और द्वितीय धर्म प्रेम।** उसके राष्ट्र प्रेम का आशय स्पेन के प्रति देशभक्ति एवं धर्म प्रेम से आशय कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रति पूर्ण निष्ठा से था। **वह स्पेन को विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना चाहता था।**[1] किन्तु दूसरी ओर धर्म की वेदी पर राजनीति का परित्याग करने के लिए कटिबद्ध भी था। **हेज के शब्दों में, "यदि कभी स्पेन के विकास एवं चर्च के बीच प्रश्न उठ खड़ा होता तो प्रथम को द्वितीय के लिए बलिदान करना पड़ता था।"**[2] इस प्रकार यदि यह कहा जाए कि उसकी राजनीति का स्वरूप तो राष्ट्रीय था, किन्तु उसकी धार्मिक नीति का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय था तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

फिलिप द्वितीय की गृह-नीति
(HOME POLICY OF PHILIP SECOND)

फिलिप द्वितीय को जो विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ था, वह कांटों की सेज से कम नहीं था। उसकी राष्ट्र-प्रेम एवं धार्मिक नीति ने इसे और भी अधिक जटिल बना दिया था। **अपने शासनकाल में उसे तीन महत्वपूर्ण आन्तरिक समस्याओं से जूझना पड़ा। प्रथम समस्या** स्पेनी साम्राज्य की जर्जरित आर्थिक स्थिति के रूप में थी। **द्वितीय समस्या** मूरों के विद्रोह के रूप में सामने आई। **तृतीय समस्या** नीदरलैण्ड्स निवासियों का अत्यन्त भयंकर विद्रोह था। फिलिप

1 He was patriotically devoted to the task of making Spain the greatest country in the world. —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 206.

2 "If by any chance a question should arise between the advantage of Spain and the interests of the church, the former must be sacrified relentlessly to the latter." —*Ibid.*, p. 206.

द्वितीय अपनी इन आन्तरिक समस्याओं के निराकरण में कहां तक सफल हुआ? यह उसके आन्तरिक प्रशासन के अनुशीलन से स्पष्ट होता है।

आन्तरिक प्रशासन (Internal Rule)

फिलिप द्वितीय ने अपनी राष्ट्र प्रेम एवं धर्म प्रेम सम्बन्धी नीति को आधार बनाकर आने वाली समस्याओं का निराकरण करना चाहा। **सर्वप्रथम उसने स्पेन के राष्ट्रीय एकीकरण हेतु प्रशासकीय एकता पर बल दिया।** ऐसा करने के लिए उसे राजकीय शक्ति में वृद्धि करना आवश्यक था। अतः उसने स्पेनिश सामन्तीय सभा जिसे **कार्टेज (Cartez)** कहा जाता था, की उपेक्षा की। पहले से लगे करों को बिना कार्टेज की सलाह लिए वसूल किया गया। हां नए करों को लागू करने के सम्बन्ध में संसद की सलाह अवश्य ली गई। अब स्पेनी संसद के सदस्यों का मनोनयन स्वयं फिलिप द्वितीय द्वारा किया जाने लगा, सामन्तों को अधिकारविहीन कर दिया गया। **इस प्रकार फिलिप द्वितीय ने निरंकुश शासन स्थापित किया।**

फिलिप द्वितीय ने स्थल सेना के गठन पर विशेष बल दिया, किन्तु उसने **नौ सेना की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।** अतः उसकी नौ सैनिक शक्ति में दिन-प्रतिदिन गिरावट आती चली गई। निःसन्देह यह उसकी एक महान् भूल थी। इसी कारण उसे नीदरलैण्ड्स के विद्रोह का दमन करने में सफलता प्राप्त न हो सकी।

फिलिप द्वितीय के सम्मुख सबसे जटिल समस्या विशृंखलित आर्थिक स्थिति थी। स्पेन की दुर्बल आर्थिक स्थिति का मूल कारण विशेषाधिकारों पर आधारित आर्थिक जीवन था। यह ठीक है कि सम्पूर्ण अमरीकी व्यापार एवं चांदी के आयात पर स्पेन का ही एकाधिकार था, किन्तु जिस प्रकार समुद्र पर डच, फ्रांसीसी एवं अंग्रेज व्यापारियों ने तस्कर के व्यापार को बढ़ा दिया था उससे स्पेन की आर्थिक स्थिति चरमराना स्वाभाविक था। फिलिप द्वितीय ने स्थिति से निपटने के लिए घरेलू उद्योग-धन्धों व व्यापार पर अधिक से अधिक कर लगाने की जो नीति अपनाई उसने स्पेन के उद्योग-धन्धों व व्यापार को चौपट कर दिया। मूर एवं यहूदी जैसी व्यापार कुशल जातियों को दमन का जो रुख उसने अपनाया, उससे व्यापार पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक ओर यह स्थिति थी दूसरी ओर फिलिप द्वितीय के दीर्घकालिक युद्धों ने आग में घी का कार्य किया। **अतः यह माना जा सकता है कि फिलिप द्वितीय अपनी आर्थिक समस्या का समाधान करने में सफल नहीं हो पाया।**

धार्मिक नीति (Religious Policy)

फिलिप द्वितीय कट्टर कैथोलिक था। अपनी कट्टरता के कारण ही उसने प्रोटेस्टेण्टों, मूरों एवं यहूदियों के दमन का रुख अपनाया। उसकी दमनकारी नीति के कारण ही 1569 में मूरों ने विद्रोह कर दिया था। मूरों ने लगभग दो वर्ष तक स्पेन की सेना का पर्वतीय इलाकों में जमकर विरोध किया, किन्तु 1570 ई. में फिलिप द्वितीय को विद्रोह कुचलने में सफलता प्राप्त हो गई। फिलिप द्वितीय ने मूरों के विद्रोह का दमन तो कर दिया, किन्तु मूरों के दमन की उसकी नीति ने स्पेनी व्यापार एवं वाणिज्य को चौपट कर दिया। यही स्थिति यहूदियों के सन्दर्भ में भी थी। **वास्तव में फिलिप की निष्ठा कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रति ही सर्वोपरि थी। उसने गैर-कैथोलिकों के विनाश के लिए 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक न्यायालयों का भरपूर प्रयोग किया।** यहां पर यह उल्लेखनीय है कि रोम के पोप के साथ उसकी तभी तक बनती रही जब तक कि पोप ने फिलिप के कार्यों को अपना समर्थन दिया, परन्तु जैसे ही पोप ने स्पेन के विरोध की नीति अपनाई, फिलिप ने पोप से सम्बन्ध विच्छेद कर स्पेन में अपने

राजनीतिक अधिकारों को कायम रखा। पोप के आदेश भी स्पेन में उसकी आज्ञा के बिना कार्यान्वित नहीं हो सकते थे।

इतना सब कुछ होते हुए फिलिफ द्वितीय कैथोलिक धर्म की सार्वभौमिकता को सम्पूर्ण यूरोप में स्थापित न कर सका। उल्टे नीदरलैण्ड्स में भयंकर विद्रोह हो गया, जिसके कारण उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

नीदरलैण्ड्स का विद्रोह
(REVOLT OF NETHERLANDS : 1556-1598)

वर्तमान हालैण्ड एवं बेल्जियम को ही सोलहवीं शताब्दी में नीदरलैण्ड्स के नाम से जाना जाता था। नीदरलैण्ड्स सोलहवीं शताब्दी में व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था। चार्ल्स पंचम का नीदरलैण्ड्स में शासन लोकप्रिय था, किन्तु उसके पुत्र फिलिप द्वितीय की नीतियों ने नीदरलैण्ड्सवासियों को विद्रोह के लिए उतारू कर दिया। नीदरलैण्ड्सवासियों का विद्रोह कालान्तर में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन बन गया।

विद्रोह के कारण (Causes of the Revolt)

फिलिप द्वितीय के प्रशासन के विरुद्ध नीदरलैण्ड्सवासियों के विद्रोह के प्रमुख कारण निम्नवत् हैं—

(1) **आर्थिक कारण** (Economic Causes)—नीदरलैण्ड्स आर्थिक दृष्टि से पर्याप्त समुन्नत था। फिलिप द्वितीय को जब युद्धों एवं प्रशासकीय व्यय के लिए अधिक धन की आवश्यकता प्रतीत हुई तो **उसने नीदरलैण्ड्स में करों को बढ़ा दिया। यह कार्य उसने नीदरलैण्ड्स की राष्ट्रीय परिषद की अनुमति के बिना ही कर दिया। राष्ट्रीय परिषद फिलिप के इस कार्य की घोर विरोधी थी।** यह ठीक है कि चार्ल्स पंचम ने भी नीदरलैण्ड्स में करों को बढ़ाया था, परन्तु उसने पहले राष्ट्रीय परिषद को विश्वास में ले लिया था और साथ ही वहां के व्यापार व वाणिज्य को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए राजकीय संरक्षण भी दिया था, परन्तु फिलिप द्वितीय ने तो स्पेन के व्यापार व वाणिज्य के विकास हेतु नीदरलैण्ड्स के व्यापार एवं वाणिज्य पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिए, फलतः नीदरलैण्ड्स का आर्थिक विकास रुक गया।

(2) **धार्मिक कारण** (Religious Causes)—फिलिप द्वितीय कट्टर कैथोलिक था। कैथालिक सम्प्रदाय को सार्वजनिक सम्प्रदाय बनाने का पक्षपाती था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने प्रत्येक प्रयास किए। नीदरलैण्ड्स में इस समय काल्विनवादी प्रोटेस्टेण्टों का विकास द्रुतगति से हो रहा था। फिलिप को यह असह्य था। अतः उसने नीदरलैण्ड्स में कैथोलिक बिशपरिकों की संख्या में वृद्धि कर दी। **'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक अदालतें स्थापित कीं जिन्होंने बड़ी सख्ती से कार्य किया। ये अदालतें रक्त रंजित थीं।** अदालतों के भीषण दमन चक्र से दुःखी होकर नीदरलैण्ड्स की जनता सशस्त्र विद्रोह पर उतारू हो उठी।

(3) **राजनीतिक कारण** (Political Causes)—फिलिप द्वितीय के शासन के विरोध में उठने वाली नीदरलैण्ड्स के विद्रोह का प्रमुख कारण फिलिप द्वितीय की निरंकुशतावादी नीति थी। फिलिप ने नीदरलैण्ड्स की केन्द्रीकरण करने की नीति अपनाई। **अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने राष्ट्रीय परिषद् की अवमानना आरम्भ कर दी।** स्पेनवासियों को नीदरलैण्ड्स में उच्च पदों एवं सरकारी पदों पर नियुक्त किया जाने लगा। इन नियुक्त स्पेनियों ने फिलिप की आज्ञा का कठोरता से पालन करते हुए नीदरलैण्ड्सवासियों की घोर उपेक्षा आरम्भ कर दी। इधर फिलिप ने नीदरलैण्ड्स में स्पेनी सेना भी रख छोड़ी। यह सब नीदरलैण्ड्सवासियों के

लिए असह्य था। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि उनकी स्वतन्त्रता एवं परम्परागत अधिकारों को खतरा उत्पन्न हो गया है। अतः उनका विद्रोह करना स्वाभाविक ही था।

(4) **व्यक्तिगत कारण (Personal Causes)**—फिलिप द्वितीय का जन्म एवं पालन-पोषण स्पेन में हुआ था। अतः उसकी सहानुभूति नीदरलैण्ड्सवासियों के प्रति अपने पिता चार्ल्स पंचम के सदृश नहीं थी। फिलिप द्वितीय ने स्पेन के हितों के लिए नीदरलैण्ड्स पर मनमाने कर लगाए तथा वहां के व्यापार व वाणिज्य में राजकीय प्रतिबन्ध लगाए। **उसके अप्रिय शासन से नीदरलैण्ड्सवासियों ने उसे पूर्णतया स्पेनी एवं विदेशी माना और उसके विरुद्ध विद्रोह आरम्भ कर दिया।**

नीदरलैण्ड्स के विद्रोह की प्रमुख घटनाएं (Main Events of the Revolt)

नीदरलैण्ड्स में व्याप्त असन्तोष को दबाने के लिए फिलिप द्वितीय ने अपनी बहिन मार्गरेट को 1559 में नीदरलैण्ड्स का शासन संभालने हेतु नियुक्त किया, किन्तु साथ ही उसने **'कार्डिनल ग्रेनविल' को वहां की राज्य परिषद का अध्यक्ष नियुक्त कर उसे सभी वास्तविक शक्तियां प्रदान कर दीं। कार्डिनल घोर स्पेनी था।** इसी कारण मार्गरेट द्वारा स्पेनी सेना के वापस भेज दिए जाने तथा अयोग्य स्पेनी अधिकारियों को अपदस्थ कर दिए जाने के पश्चात् भी नीदरलैण्ड्सवासियों ने ग्रेनविल की नियुक्ति का घोर विरोध किया। फलतः कार्डिनल ग्रेनविल को वापस बुला लिया गया, किन्तु मार्गरेट ने नीदरलैण्ड्स के सामन्तों व नागरिकों के उस प्रार्थना-पत्र को भिखारियों का प्रार्थना-पत्र कहकर अनदेखा कर दिया जिसमें नीदरलैण्ड्स की समस्याओं को दूर करने के लिए कुछ मांगें रखीं गई थीं। इसी समय से (1566 ई.) विरोधियों के एक वर्ग ने स्वतः भिखारी कहना आरम्भ कर दिया। **फिलिप द्वितीय के इस आश्वासन को कि वह धार्मिक न्यायालयों को समाप्त कर देगा, पूरा न करने पर प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय की समर्थक जनता ने 1566 ई. में कैथोलिक चर्चों पर अपना प्रतिमा विनाशक रोष** (Iconoclam Fury) **प्रकट किया।** अतः फिलिप द्वितीय ने अब आल्वा के ड्यूक को नीदरलैण्ड्स का प्रशासक बनाकर भेजा। 1567 ई. में ड्यूक ने नीदरलैण्ड्स पहुंचते ही अपना दमन चक्र आरम्भ कर दिया। उसने **अशान्ति परिषद** (Council of Troubles) की स्थापना की और बड़ी निर्दयता से विरोधियों का दमन किया। उसकी निर्दयता का अनुमान इस तथ्य से ही लग जाता है कि 1567 ई. से 1572 ई. तक के काल में ही **अशान्ति परिषद ने लगभग 8,000 विरोधियों को मौत की नींद सुला दिया। नीदरलैण्ड्सवासियों ने इस परिषद को रक्त परिषद** (Council of Blood) **की संज्ञा दी।** व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर कर की जो नीति ड्यूक ने अपनाई उसके फलस्वरूप स्पेनी निरंकुश राजतन्त्र को उखाड़ने के लिए सम्पूर्ण नीदरलैण्ड्स में भयंकर विद्रोह हो गया। **अब यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का विद्रोह बन गया।**

नीदरलैण्ड्स के विद्रोह को स्वतन्त्रता आन्दोलन के रूप में गति प्रदान करने का महत्वपूर्ण श्रेय विलियम ऑफ आरेन्ज जिसे इतिहास में विलियम शान्त (William the Silent) **के नाम से भी जाना जाता है, को है।** जिस समय आल्वा के ड्यूक ने नीदरलैण्ड्स में अपना कार्यभार संभाला उस समय वह हालैण्ड तथा न्यूजीलैण्ड के प्रान्तों में प्रान्तपति था। ड्यूक के आगमन पर उसे नीदरलैण्ड्स छोड़कर जर्मनी जाना पड़ा था। इसका प्रमुख कारण यह था कि उस पर काल्विनवाद का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। ड्यूक की दमन नीति की अति से क्षुब्ध होकर वह पुनः नीदरलैण्ड्स आया और वहां के हतोत्साहित देशवासियों के उत्साह को पुनर्जीवित करने में लग गया। उत्साही डच नाविकों ने भिखारियों के दल को संगठित कर स्पेनी जहाजी

बेड़ों के लिए अत्यन्त कठिनाई उत्पन्न कर दी जिससे स्पेनी सेना समुद्र पर अधिकार न कर सकी। विलियम ने तुरन्त स्पेनी सेना के विरुद्ध संघर्ष का नारा दिया। उसे फ्रांस, जर्मनी व इंग्लैण्ड से सैनिक सहायता भी प्राप्त हो गई। उसने उत्तरी नीदरलैण्ड्स से ड्यूक के अधिकार को समाप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली। ड्यूक ने उत्तरी क्षेत्र पर पुनः अधिकार करने के लिए 8 माह का भीषण संघर्ष किया और उसे सफलता भी मिली। **1573 ई. में उसके स्थान पर फिलिप द्वितीय ने रेक्वेसेन्स को नीदरलैण्ड्स का प्रशासक बनाकर भेजा।**

विलियम ने अपने साहस को नहीं छोड़ा। उसने रेक्वेसेन्स के लीडेन नगर पर अधिकार करने के सभी इरादों को विफल कर दिया। लीडेन नगर की सुरक्षा के लिए उसने समुद्र का बांध कटवा दिया। स्पेनी सेना ने त्रस्त होकर नीदरलैण्ड्स के उत्तरी व दक्षिणी भाग के नगरों में लूटमार एवं रक्तपात का ताण्डव नृत्य आरम्भ कर दिया। **'स्पेनियों के इस रोष' के विरोध में नीदरलैण्ड्स के 17 प्रान्तों के प्रतिनिधियों ने घेण्ट नामक नगर में आपस में एक सन्धि की।** इस सन्धि को 'घेण्ट की सन्धि' (Pacification of Ghent—1576) के नाम से जाना जाता है। इस सन्धि में यह निर्णय लिया गया कि, "**फिलिप द्वितीय को धार्मिक अदालतों को समाप्त करना होगा, स्पेनी सेनाएं नीदरलैण्ड्स को खाली करेंगी। नीदरलैण्ड्सवासियों को पुनः प्राचीन सुविधाएं प्रदान की जाएं। यदि ऐसा नहीं होता तो अब वे भी संगठित होकर विद्रोहियों का साथ देंगे।**" फिलिप द्वितीय के लिए यह एक चुनौती थी। इधर 1776 में रेक्वेसेन्स की मृत्यु हो गई। अतः उसने डॉन जान को उसके स्थान पर भेजा, परन्तु जॉन डान को विलियम द्वारा छेड़े गए इस संघर्ष के विरोध में कोई विशेष सफलता नहीं मिली। 1578 में डॉन की भी मृत्यु हो गई। अतः अव पारमा के ड्यूक अलेक्जेण्डर फार्नेस को नीदरलैण्ड्स भेजा गया।

फार्नेस के आगमन के समय उसके सौभाग्य से उत्तरी नीदरलैण्ड्स के प्रोटेस्टेण्टों एवं दक्षिणी नीदरलैण्ड्स के कैथोलियों के मध्य पारस्परिक संघर्ष हो गया था। फार्नेस ने इसका लाभ उठाकर दक्षिणी नीदरलैण्ड्स के दसों प्रान्तों को स्पेन के हित में तोड़ दिया। उसने उन्हें कैथोलिक सम्प्रदाय की रक्षा की दुहाई दी। इस प्रकार उसने **'आरास की लीग'** की स्थापना की। इसके विरोध में विलियम ने उत्तरी नीदरलैण्ड्स के सातों प्रान्तों को एकबद्ध कर **'यूट्रेक्ट का संघ'** गठित किया। इस प्रकार **'घेण्ट की सन्धि' का अस्तित्व समाप्त हो गया** और नीदरलैण्ड्स की एकता भंग हो गई। उत्तर के प्रान्तों ने विलियम के नेतृत्व में 1581 ई. में स्पेन की प्रभुसत्ता से स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। इतिहास में इसे डचों द्वारा मानव अधिकारों की घोषणा के नाम से जाना जाता है। 1584 ई. में फिलिप द्वितीय ने विलियम की हत्या करवा दी। विलियम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र मरिश ने आन्दोलन का नेतृत्व संभाला। इंग्लैण्ड व फ्रांस की सहायता प्राप्त कर मरिश ने फिलिप द्वितीय से संघर्ष जारी रखा। 1598 ई. में फिलिप द्वितीय की मृत्यु के उपरान्त फिलिप तृतीय के काल में भी संघर्ष जारी रहा। **अन्ततः तीसवर्षीय युद्ध** (1618-1648) **के पश्चात् ही यह संघर्ष समाप्त हुआ।** 1648 में सभी यूरोप के राज्यों व स्पेन ने डच गणतन्त्रों का मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार नीदरलैण्ड्स का उत्तरी भाग डच गणतन्त्र के राज्य के नाम से विख्यात हुआ और दक्षिणी नीदरलैण्ड्स स्पेनी नीदरलैण्ड्स कहलाया।

नीदरलैण्ड्स/डच आन्दोलन की सफलता के कारण (Causes of the success of the Dutch/Netherlands Movement)

नीदरलैण्ड्स पर स्पेन का प्रभुत्व, जबरदस्त शिंकजा एवं स्पेनी साम्राज्य के सदृश युद्ध सामग्री न होने पर भी नीदरलैण्ड्स का उत्तरी भाग में होने वाला डच स्वातन्त्र्य आन्दोलन

सफल रहा और फिलिप द्वितीय को पराजय का सामना करना पड़ा। **संक्षेप में, डच आन्दोलन की सफलता के कारणों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है ;**

(1) नीदरलैण्ड्स के प्रति **फिलिप द्वितीय की शोषण की नीति तथा विशेषतः प्रोटेस्टेण्टों के दमन की नीति** ने वहां के निवासियों में यह भावना उत्पन्न कर दी थी कि फिलिप द्वितीय विदेशी है। अतः उत्तरी नीदरलैण्ड्स में विद्रोह का स्वरूप राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हो गया। राष्ट्रीयता की भावना से किए गए संघर्ष का दमन नीति के सम्मुख विजय प्राप्त करना स्वाभाविक था।

(2) फिलिप द्वितीय के **साम्राज्य की विशालता, उसकी प्रशासनिक कठिनाइयां**, फ्रांस व इंग्लैण्ड से अनवरत रूप से युद्धों में उलझे रहना आदि के कारण वह नीदरलैण्ड्स के विद्रोह के दमन में पूर्णतः संलग्न भी नहीं हो पाया था। अतः इस बात का लाभ राष्ट्रवादियों को मिल गया।

(3) **डचों की नौ सैनिक शक्ति अत्यन्त प्रबल थी**, इसके विपरीत स्पेनी नौ सेना दुर्बल थी। डचों की गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का लाभ भी डचों को प्राप्त हो गया।

(4) स्पेन के विरुद्ध डचों को फ्रांस, इंग्लैण्ड व जर्मनी से सैन्य व **आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही थी।**

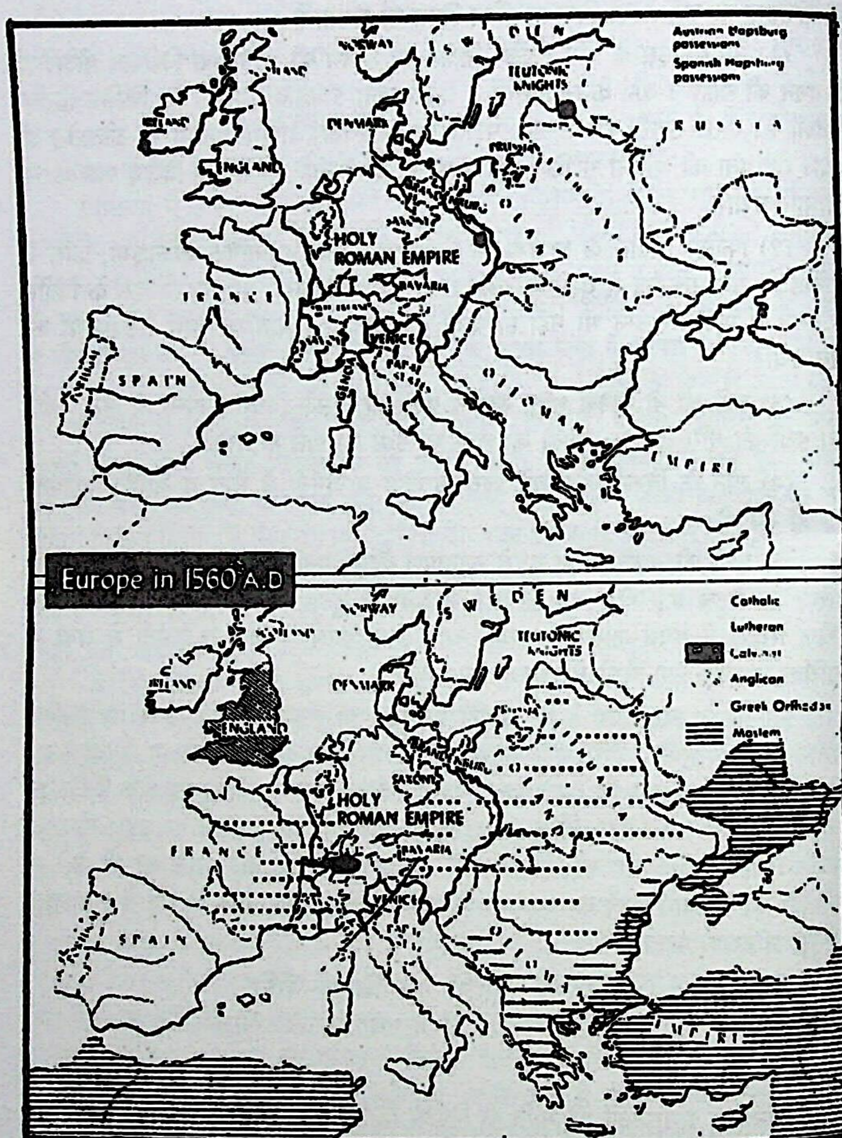
(5) डचों की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारण **उनके आन्दोलन को विलियम ऑफ आरेन्ज का नेतृत्व प्राप्त होना था।** विलियम ने डचों के टूटते हुए मनोबल को बढ़ाया और प्रत्येक स्थिति में संघर्ष जारी रखा। यही नहीं, उसने फ्रांस, इंग्लैण्ड व जर्मनी से सैन्य व आर्थिक सहायता प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अपनी निरंकुश एवं हठवादी नीति के कारण फिलिप द्वितीय न तो स्पेन की जर्जरित आर्थिक समस्या का समाधान कर सका और न ही अपने इस उद्देश्य को पूर्ण कर सका कि कैथोलिक सम्प्रदाय सर्वमान धर्म बन जाए। यह ठीक है कि वह मूरों के दमन में सफल रहा, किन्तु इसका प्रभाव स्पेन की अर्थव्यवस्था पर पड़ा। स्पेन की अर्थव्यवस्था पूर्णतः चरमरा गई। **अन्ततः यदि यह माना जाए कि यदि उसने धर्म की वेदी पर राजनीति को बलिदान करने का प्रयत्न न किया होता तो उसे गृह-नीति के क्षेत्र में असफलता का मुंह न देखना पड़ता।**

फिलिप द्वितीय की विदेश-नीति
(FOREIGN POLICY OF PHILIP SECOND)

समस्याएं (Problems)

आन्तरिक समस्याओं की भांति ही फिलिप द्वितीय को विदेश-नीति के क्षेत्र में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा। उसकी **प्रमुख समस्या** स्पेन को यूरोप का प्रमुख राष्ट्र बनाने की थी जिसके लिए उसे यूरोप की अन्य शक्तियों से संघर्ष करना पड़ा। उसकी **दूसरी समस्या** पुर्तगाल को स्पेनी साम्राज्य का अंग बनाने की थी। वह स्पेनी उपनिवेशों में वृद्धि करना चाहता था। अतः औपनिवेशिक विस्तार की समस्या उसके सामने थी। भूमध्यसागर में तुर्कों की प्रधानता ने स्पेनी साम्राज्य को खतरा पैदा कर दिया था। अतः तुर्की आक्रमणों से स्पेन की रक्षा उसको करनी थी। फिलिप द्वितीय ने अपनी उक्त विदेश नीति से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण में कहां तक सफलता प्राप्त की? यह उसके यूरोप के प्रमुख राज्यों से सम्बन्धों



के अनुशीलन से स्पष्ट हो जाता है। संक्षेप में, यूरोप के प्रमुख देशों से उसके सम्बन्धों का विवरण निम्नवत् है :

(1) फ्रांस से सम्बन्ध (Relations with France)

फिलिप द्वितीय को सिंहासनारूढ़ होने के तुरन्त पश्चात् ही 1557 ई. में फ्रांसीसी युद्ध का सामना करना पड़ा। फ्रांस व स्पेन के विरुद्ध संघर्ष तो चार्ल्स पंचम के समय से ही

खिंचता चला आ रहा था। फ्रांस तथा स्पेन की प्रतिद्वन्द्विता को फ्रांस के शासक हेनरी द्वितीय व स्पेन के शासक फिलिप द्वितीय की महत्वाकांक्षाओं ने और अधिक बढ़ा दिया। पोप की सहायता प्राप्त कर फ्रांस ने 1751 में स्पेन के विरुद्ध जो युद्ध छेड़ा था उसकी परिणति **'कांतो कांब्रेजी की सन्धि, 1559'** के रूप में हुई। इस सन्धि के अनुसार फ्रांस को इटली पर स्पेन के आधिपत्य को स्वीकार करना पड़ा और कैले पर फ्रांसीसी अधिकार मान लिया गया।

हेनरी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् जब फ्रांस में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो फिलिप द्वितीय ने गृह-युद्ध में कैथोलिकों की प्रत्येक प्रकार से सहायता की। इस पर फ्रांस के प्रोटेस्टेण्टों ने जो कि ह्यूगनौट्स कहलाते थे, नीदरलैण्ड्स के विद्रोहियों को सहायता दी। धर्म की इस राजनीति ने यह रुख पकड़ लिया कि जब नवार के प्रोटेस्टेण्ट राजकुमार हेनरी के उत्तराधिकार का मामला उठा तो फिलिप द्वितीय ने हेनरी का विरोध किया, किन्तु हेनरी की कुशलता ने उसके विरोधियों एवं फिलिप के प्रयत्नों को विफल कर दिया। **सिंहासन पर अपनी स्थिति दृढ़ होते ही उसने अब स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अन्ततः विवश होकर फिलिप द्वितीय को हेनरी के साथ 'बरबै की सन्धि' (1598) करनी पड़ी।** इस सन्धि के अनुसार हेनरी चतुर्थ को फ्रांस का शासक मान लिया गया तथा कांतो कांब्रेजी की सन्धि की पुनः पुष्टि की गई। इस प्रकार माना जा सकता है कि फिलिप द्वितीय की फ्रांस के विरुद्ध नीति पूर्णतः असफल रही और इसका पूर्ण लाभ फ्रांस को मिला। **हेज ने ठीक ही लिखा है, "स्पेन के शासक की असफल हस्तक्षेप की नीति ने फ्रांसीसी स्वातन्त्र्य राष्ट्रभक्ति और एकता की पुष्टि कर दी। आने वाली शताब्दी में फ्रांस न कि स्पेन यूरोपीय राजनीति का केन्द्र बन गया।"**[1]

(2) इंग्लैण्ड के साथ सम्बन्ध (Relations with England)

फिलिप द्वितीय के इंग्लैण्ड की शासिका मेरी ट्यूडर से विवाह के कारण मेरी ट्यूडर के काल (1553-1558 ई.) तक तो स्पेन व इंग्लैण्ड के मधुर सम्बन्ध बने रहे, किन्तु मेरी ट्यूडर की मृत्यु के पश्चात् एलिजाबेथ ट्यूडर के राज्यारोहण से ही इंग्लैण्ड व स्पेन सम्बन्धों में कटुता आने लगी। फिलिप द्वितीय इंग्लैण्ड की गृह व विदेश नीति का संचालन अपने तरीके से करवाना चाहता था। वह इंग्लैण्ड के प्रोटेस्टेण्टों का दमन करना चाहता था, किन्तु एलिजाबेथ यूरोप की राजनीति में इंग्लैण्ड के अलग अस्तित्व को साकार करना चाहती थी। उसने प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को स्वीकार कर इंग्लैण्ड की राजनीति में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया। फिलिप द्वितीय ने अपने प्रयत्नों में असफल होने के पश्चात् इंग्लैण्ड को अपने नियन्त्रण में लाने के लिए 1598 ई. में शक्ति का प्रयोग किया। **उसने एक विशाल स्पेनी नौ सेना का गठन किया। इतिहास में इसे आर्मेडा (Armeda) कहा जाता है।** इस आर्मेडा में 8,000 नाविक, 130 जहाज तथा 19,000 सैनिक थे। फिलिप का विश्वास था कि आर्मेडा के माध्यम से जब इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया जाएगा तो वहां के कैथोलिक उसको सहयोग देंगे, किन्तु इंग्लैण्डवासियों ने इसे राष्ट्रीय संकट माना और आपसी मतभेदों को भुलाकर फिलिप के आर्मेडा का विरोध किया। इंगलिश चैनल में आर्मेडा को ब्रिटिश नौ सेना ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। ब्रिटिश नौ सेना ने उत्साहित होकर स्पेनी बन्दरगाह कैडिज को लूटा। आर्मेडा की पराजय ने फिलिप द्वितीय की नौ सेना की दुर्बलता को स्पष्ट कर दिया। इतिहासकार हेज के

1 **"The unsuccessful intereference of the Spanish king contributed to the assurance of French independence, partriotism and solidarity. France, not Spain was to be the center of European politics during the succeeding century."**
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 224.

शब्दों में, **"फिलिप के आर्मेडा की पराजय ने नौ सेना एवं व्यापारिक क्षेत्र में इंग्लैण्ड की सर्वशक्तिशाली प्रभुसत्ता को प्रतिष्ठित कर दिया।"**[1]

(3) पुर्तगाल से सम्बन्ध (Relations with Portugal)

1543 ई. में चार्ल्स पंचम ने अपने पुत्र फिलिप द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी 'मेरी' से कर दिया था। 1580 ई. में पुर्तगाल के राजा की मृत्यु हो जाने पर फिलिप द्वितीय ने अपने वैवाहिक सम्बन्ध के आधार पर स्पेनी सेना को पुर्तगाल भेज कर वहां स्पेनी आधिपत्य स्थापित कर लिया, किन्तु फिलिप द्वितीय का शासन वहां के लोगों को सन्तुष्ट न कर सका और वहां फिलिप द्वितीय के काल से ही स्वातन्त्र्य आन्दोलन के बीज पड़ गए। 1640 ई. में पुर्तगाल ने स्पेन के चंगुल से स्वतः को अलग कर ही लिया।

(4) तुर्कों के साथ सम्बन्ध (Relations with Turkey)

1566 ई. में तुर्की के सुल्तान सुलेमान महान् की मृत्यु के पश्चात् भी तुर्कों का आतंक हंगरी एवं भूमध्यसागर में बना रहा। उन्होंने इटली तथा सिसली पर आक्रमणों का सिलसिला जारी रखा। यही नहीं, यूरोप के देशों में उस समय खलबली मच गई जबकि तुर्कों ने साइप्रस पर अपना अधिकार कर लिया। अब इटली की रक्षा का प्रश्न था। यह पोप के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था। अतः वेनिस, जेनोआ और स्पेन का संघ पोप के नेतृत्व में बना जिसका उद्देश्य तुर्कों के मंसूबों को नाकाम करना था। संघ की जल सेना का नेतृत्व करते हुए फिलिप द्वितीय के सौतेले भाई डान जॉन ने 1571 ई. में लेपान्टो की खाड़ी में तुर्क सेना के छक्के छुड़ा दिए। डॉ. हीरालाल सिंह के अनुसार, **"वस्तुतः अजेय तुर्क सेना के विरुद्ध ईसाइयों की यह सबसे बड़ी विजय थी।"**[2] राजनीतिक दृष्टि से अब तुर्क संभल न सके। हेज के शब्दों में, **"लेपान्टो की विजय ने पश्चिमी यूरोप को तुर्कों की किसी भी विजय की सम्भावना के डर से राहत पहुंचाई।"**[3]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि फिलिप द्वितीय ने फ्रांस, इंग्लैण्ड के आन्तरिक मामलों में धार्मिक भावना से अभिभूत होकर ही अपने को लिप्त किया। फलतः उसे दोनों देशों के साथ युद्धों में उलझना पड़ा। इसका सीधा प्रभाव उसकी आन्तरिक स्थिति पर पड़ा। **जहां एक ओर उत्तरी नीदरलैण्ड्स में भयंकर विद्रोह का उसे सामना करना पड़ा, वहीं दूसरी ओर स्पेन की अर्थव्यवस्था भी चरमरा गई।** यह ठीक है कि उसे तुर्कों के विरुद्ध विजय मिली; किन्तु इसके पीछे भी उसकी धार्मिक नीति ने ही कार्य किया। पुर्तगाल का विलय निःसन्देह उचित कदम नहीं था क्योंकि इससे उसे कुछ प्राप्त तो हुआ नहीं उल्टे उसके उत्तरदायित्वों में वृद्धि हो गई। **इस प्रकार माना जा सकता है कि उसकी विदेशी नीति भी उसकी धर्म नीति के कारण विफल ही रही।**

फिलिप द्वितीय के चरित्र का मूल्यांकन
(EVALUATION OF PHILIP II)

फिलिप द्वितीय के चरित्र के विश्लेषण में इतिहासकारों के मतों में पर्याप्त भिन्नता प्राप्त होती है, **जहां एक ओर अंग्रेज इतिहासकारों ने उसे असहिष्णु, कैथोलिक, निरंकुश एवं कट्टर**

1 The defeat of Philip's armada was England's first title to naval commercial and supremacy. —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 219.

2 हीरालाल सिंह, आधुनिक यूरोप का इतिहास, पृ. 101।

3 "The victory at Lepanto relieved Western Europe of any threat of Turkish conquest." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 224.

शासक माना है वहीं दूसरी ओर स्पेन के देशभक्त उसे 'महान् शासक' एवं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत बतलाते हैं। वास्तव में, फिलिप द्वितीय कट्टर कैथोलिक था और उसके जीवन का प्रमुख उद्देश्य कैथोलिक सम्प्रदाय को यूरोप का सार्वभौम धर्म बनाने का था। यही कारण है कि उसकी राजनीति सदा ही धर्म से प्रभावित रही जो कि निःसन्देह उसकी विफलता का कारण भी बनी। **नीदरलैण्ड्स में 'इन्क्वीजिशन' नामक अदालतों का रक्तरंजित होना मानवता के लिए एक अभिशाप था। वह स्वभाव से जिद्दी, अविश्वासी एवं संदेह करने की प्रवृत्ति वाला व्यक्ति था।** यही कारण था कि उसने अपने साम्राज्य की सभी समस्याओं का निवारण स्वयं करने का प्रयत्न किया। राजनीति व कूटनीति के प्रश्नों को सुलझाने में वह असमर्थ ही था।

इतना सब कुछ होते हुए भी यह तो स्वीकार करना ही होगा कि वह सिद्धान्तवादी तथा आदर्शवादी, अदम्य इच्छा शक्ति एवं अमूर्व क्षमता वाला शासक था। प्रातःकाल से आधी रात्रि तक वह राजकीय कार्यों में व्यस्त रहता था।[1] उसका स्वभाव मृदुभाषी एवं अल्पभाषी था। स्पेन के लिए उसके हृदय में अगाध श्रद्धा एवं भक्ति थी। यही कारण था कि वह स्पेन को विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना चाहता था।[2] इसके लिए उसने प्रयत्न भी किए। यह अलग बात है कि वह अपने इस उद्देश्य में कहां तक सफल हुआ, किन्तु स्पेन की जनता ने सदा ही उसकी देशभक्ति की भावना की सराहना की। यही कारण है कि हीरा लाल सिंह ने उसके विषय में यहां तक लिखा है कि, **"उसकी स्पेनी प्रजा उसके जीवनकाल में उसकी प्रशंसक तथा मृत्यु के पश्चात् उसकी पूजक बन गई थी।"**[3]

फिलिप द्वितीय के उत्तराधिकारी
(SUCCESSORS OF PHILIP SECOND)

फिलिप द्वितीय के पश्चात् स्पेनी साम्राज्य का राजनीतिक पतन तेजी से आरम्भ हो गया। अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण शासन की वास्तविक शक्ति सामन्तों एवं अयोग्य मन्त्रियों के हाथ का खिलौना बन गई। फिलिप द्वितीय का पुत्र फिलिप तृतीय (1598—1621) अत्यन्त दुर्बल शासक सिद्ध हुआ। उसके शासन काल में देश की आर्थिक स्थिति अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण हो गई। उसके उत्तराधिकारी फिलिप चतुर्थ (1621—1665) के शासन काल में तो स्पेन के तीसवर्षीय युद्ध में फंस जाने के कारण आर्थिक स्थिति और खराब हो गई। वित्तीय स्फीति में तेजी से वृद्धि होने लगी। **कुल मिलाकर फिलिप तृतीय व फिलिप चतुर्थ का शासन काल स्पेनी साम्राज्य के गौरव व प्रतिष्ठा का सूर्यास्त काल सिद्ध हुआ।** फिलिप चतुर्थ के पश्चात् चार्ल्स द्वितीय (1665—1700) हैप्सबर्ग वंश का अन्तिम शासक था। उसका काल तो राजवंशीय अराजकता का काल था। उसकी गृह एवं विदेश नीति पूर्णतः असफल रही। इस प्रकार चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल का अन्त होते ही स्पेनी साम्राज्य पर हैप्सबर्ग की प्रभुसत्ता का अन्त हो गया। इस प्रकार फिलिप द्वितीय के पश्चात् हैप्सबर्ग शासकों का काल इस वंश के पतन का काल था, जिसमें स्पेन का आर्थिक पतन तो हुआ ही, भयंकर तीसवर्षीय युद्ध की लपटों में भी जलना पड़ा।

---

1 **From early morning until far into the night he bent over reports and other memoranda of kingcraft. —*Hayes***

2 **"He was patriotically devoted to the task of making Spain the greatest country the world." —*Hayes***

3 **हीरालाल सिंह, आधुनिक यूरोप का इतिहास, पृ. 103।**

तीसवर्षीय युद्ध (1618—1648)
(THIRTY YEARS' WAR)

तीसवर्षीय युद्ध का यूरोप के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इस युद्ध की पृष्ठभूमि में धर्म सुधार आन्दोलन तो था ही, किन्तु कालान्तर में इसका स्वरूप राजनीतिक हो गया। वास्तव में धर्म सुधार आन्दोलन का परोक्ष परिणाम जर्मनी के लिए नकारात्मक ही पड़ा। जर्मनी परस्पर दो विरोधी गुटों (कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट) में विभक्त हो गया। 16वीं शताब्दी तक जर्मनी में इन दोनों विरोधियों के पारस्परिक विरोध में अनेक आन्तरिक विरोध भी उत्पन्न हो गए। अतः 16वीं शताब्दी के मध्य से 17वीं शताब्दी के आरम्भ तक जर्मनी इन दोनों सम्प्रदायों के गृह-युद्धों का शिकार बना रहा, **किन्तु 17वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में छुट-पुट गृह-युद्धों के स्थान पर जर्मनी में एक भयंकर गृह-युद्ध आरम्भ हो गया, जिसे तीसवर्षीय युद्ध के नाम से जाना जाता है।** धार्मिक युद्ध ने कालान्तर में यूरोपीय शक्तियों के अपने निजी स्वार्थों के कारण राजनीतिक स्वरूप प्राप्त कर लिया। अतः इस प्रकार जर्मनी में कैथोलिक-प्रोटेस्टेण्टों के मध्य 1618 ई. में धार्मिक युद्ध के रूप में आरम्भ होकर कालान्तर में यूरोपीय राज्यों की राजनीति का अखाड़ा बन कर 1648 ई. में समाप्त होने वाला युद्ध तीसवर्षीय युद्ध कहलाता है।[1]

तीसवर्षीय युद्ध के कारण
(CAUSES OF THE THIRTY YEARS' WAR)

तीसवर्षीय युद्ध के कारणों को निम्नवत् वर्णित किया जा सकता है—

(i) धार्मिक कारण (Religious Causes)

तीसवर्षीय युद्ध का मूल कारण धार्मिक था। वास्तव में, यह युद्ध कैथोलिकों द्वारा प्रोटेस्टेण्टों का दमन करने का एक प्रयास था। अतः इस युद्ध का सीधा सम्बन्ध 1555 ई. की 'आग्सबर्ग की सन्धि' से जुड़ जाता है। **आग्सबर्ग की सन्धि के अनुसार, "जर्मनी के प्रत्येक शासक को अपने राज्य धर्म को निश्चित करने का अधिकार मिल गया।** इसका तात्पर्य यह था कि जनता शासक की इच्छानुसार अपने धर्म का निर्धारण कर सकती थी। इसमें भी शासक पर यह प्रतिबन्ध था कि वह तो कैथोलिक धर्म को अपनाए या लूथरवाद को। इस सन्धि के अनुसार यह भी निर्णय लिया गया कि यदि कोई कैथोलिक बिशप कैथोलिक धर्म को छोड़कर प्रोटेस्टेण्ट धर्म अपनाता है तो उसे पद सम्बन्धी अपने समस्त अधिकारों को त्यागना होगा।

---

1 **"The thirty year's war lasted from 1618 to 1648; and was a series of wars. It began with a quarrel between the Protestant and Roman Catholic. Princes of Germany over who should become the next Holy Roman Emperor. The Roman Catholic Ferdinand, king of Bohemia, was elected in 1617, but was deposed as king by supporters of the Protestant Frederick, Elector Palatine, two years later. Ferdinand soon Crushed Frederick, but Christian IV, the Protestant king of Denmark, intervened in 1625. By 1629 he too was defeated and withdrew from the war. Gustavas Adolphus of Sweden, with Financial backing from the Roman Catholic leader of France, Cardinal Richelieu, intervened in 1630, but was killed two years later after winning several victories. The Swedes carried on the fight with military aid from Richelieu, who feared the growing power of Ferdinand more than he supported his religion. The political scene grew ever more confused, with Denmark and Sweden, both Protestant, locked in combat, and France fighting on the same side as the Protestant Netherlands. War in Germany was ended by the peace of Westphalia."** —***Factbook of History*, p. 403.**

कैथोलिक चर्च की सम्पत्ति को यथावत् बनाए रखने के लिए इस सन्धि में यह कहा गया कि 1 जनवरी, 1552 के पश्चात् भी रोमन कैथोलिक चर्च की सम्पत्ति पूर्ववत् रहेगी, परन्तु 1 जनवरी, 1552 से पहले कैथोलिक चर्च की जो सम्पत्ति या जागीरें प्रोटेस्टेण्टों के हाथों में चली गई थीं वह परिवर्तित नहीं होंगी।

इस प्रकार आग्सबर्ग की सन्धि ने राजाओं को धर्म निश्चय करने का अधिकार प्रदान कर दिया। प्रजा को मजबूर होकर राज्य धर्म स्वीकार करना होता था। लूथरवाद को मान्यता तो प्राप्त हो गई थी, किन्तु काल्विनवादियों एवं ज्विंग्ली धर्म को मान्यता न मिली। धार्मिक रक्षण की व्यवस्था सम्बन्धी धारा के अनुसार सम्पत्ति के हस्तान्तरण पर कोई रोक न लगाई जा सकी। जहां एक ओर कैथोलिक यह मांग कर रहे थे कि 1 जनवरी, 1552 के बाद जिन कैथोलिक पदाधिकारियों ने धर्म परिवर्तन द्वारा कैथोलिक सम्पत्ति को ले लिया है उनसे उनकी सम्पत्ति कैथोलिक चर्च को दी जाए तो दूसरी ओर प्रोटेस्टेण्टों ने धर्म परिवर्तन के साथ-साथ सम्पत्ति परिवर्तन की बात पर बल दिया। जब तक प्रोटेस्टेण्टों का वर्चस्व रहा तब तक तो सम्पत्ति परिवर्तन होता रहा, किन्तु जैसे ही कैथोलिकों ने शक्ति प्राप्त की तो उन्होंने सम्पत्ति को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए लौकिकीकरण का प्रबल विरोध किया। इस प्रकार वैमनस्य की खाई दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी, काल्विनवादियों ने अपनी सुरक्षा हेतु एक लीग का गठन भी कर दिया।

(iii) राजनीतिक कारण (Political Causes)

आरम्भ से ही राजनीतिक घटना चक्र ने तीसवर्षीय युद्ध की पृष्ठभूमि को प्रभावित किया था। हैप्सबर्गवंशीय आस्ट्रिया का शासक जो कि पवित्र रोमन सम्राट भी था जर्मनी (पवित्र रोमन साम्राज्य) पर अपना पूर्ण निरंकुश शासन स्थापित करना चाहता था, जबकि वहां के सामन्त व राजागण अपनी स्वतन्त्रता कायम रखना चाहते थे। पवित्र रोमन सम्राट ने सामन्तों व राजागणों की फूट का पूर्ण लाभ उठाते हुए पवित्र रोमन साम्राज्य (जर्मनी) में अपनी निरंकुशता स्थापित करने के प्रयत्न भी किए। इस कार्य हेतु स्पेन के हैप्सवर्गीय शासन से उसे सहायता भी प्राप्त हो रही थी। इधर फ्रांस जो कि राइन नदी की ओर अपना साम्राज्य विस्तार कर रहा था, स्पेन व आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग के शासकों को नतमस्तक करना चाहता था। इसका प्रधान कारण फ्रांस यूरोपीय राजनीति में अपना सिक्का स्थापित करना चाहता था। **स्पेन व आस्ट्रिया के हैप्सबर्गीय शासन फ्रांस के लिए रोड़े के समान थे। यही नहीं, डेनमार्क उत्तरी सागर पर एवं स्वीडन बाल्टिक सागर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे। यही कारण था कि कालान्तर में तीसवर्षीय युद्ध का स्वरूप पूर्णतः राजनीतिक हो गया था।** निःसन्देह यह युद्ध कालान्तर में हैप्सबर्गों तथा वोर्बो राजवंशों के मध्य यूरोपीय राजनीति में अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए एक निर्णायक युद्ध के रूप में परिणित हो गया।

(iii) तात्कालिक कारण (Immediate Causes)

तीसवर्षीय युद्ध का तात्कालिक कारण आस्ट्रियन साम्राज्य के विरुद्ध बोहेमिया द्वारा विद्रोह करना था। बोहेमिया आस्ट्रियन साम्राज्य का एक अंग था। बोहेमिया में चैक जाति निवास करती थी। इसकी जनसंख्या का अधिकांश भाग काल्विनवादी था, आस्ट्रियन साम्राज्य पर हैप्सबर्ग वंश का शासन चला आ रहा था, हैप्सबर्गों ने सदा ही कैथोलिक सम्प्रदाय को प्रश्रय दिया और प्रोटेस्टेण्टों का दमन करने की नीति अपनाई। **फर्डीनेण्ड द्वितीय जब आस्ट्रियन साम्राज्य का शासक बना तो उसने तो प्रोटेस्टेण्टों को बलात् कैथोलिक बनाने का प्रयत्न किया।**

बोहेमिया में प्रोटेस्टेण्टों की शक्ति को बढ़ता हुआ देख उसने तुरन्त प्रोटेस्टेण्टों के विरुद्ध अनेक अधिनियम लागू कर दिए। फर्डीनेण्ड की अति दमन की नीति से बोहेमिया में भयंकर असन्तोष की लहर दौड़ गई। जब फर्डीनेण्ड ने प्रोटेस्टेण्टों की असन्तोष प्रदर्शन के लिए बुलाई गई सभा को तितर-बितर करने की आज्ञा दी तो असन्तुष्ट प्रोटेस्टेण्टों ने 1618 ई. में प्राग के किले में प्रवेश कर कतिपय शाही अधिकारियों को खिड़की से बाहर फेंक दिया। फर्डीनेण्ड के लिए यह असह्य था। उसने **सैनिक दमन का चक्र आरम्भ कर दिया।** प्रत्युत्तर में प्रोटेस्टेण्टों ने अपने संगठनों को संगठित कर लोहा लिया। इस गृह-युद्ध की विभीषिका ने शीघ्र ही जर्मन साम्राज्य को अपनी लपेट में ले लिया। कालान्तर में स्पेनी साम्राज्य की कट्टर कैथोलिकवादी नीति एवं फ्रांस, ब्रिटेन आदि की स्पेन विरोधी एवं साम्राज्यवादी नीति ने इस गृह-युद्ध को एक महान् यूरोपीय युद्ध के रूप में परिवर्तित कर दिया।

घटनाएं
(EVENTS)

तीसवर्षीय युद्ध के घटना चक्र को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित चार कालों में विभक्त किया जा सकता है :

(1) **बोहेमियन अथवा पैलटिनेटकाल** (1618-1624)—1618 ई. से 1624 ई. तक तीसवर्षीय युद्ध के प्रमुख केन्द्र स्थल बोहेमिया तथा पैलाटाइन राज्य थे, अतः इस काल को इतिहास में बोहेमियन अथवा पेलाटिनेट काल के नाम से जाना जाता है। बोहेमिया में प्रोटेस्टेण्टों का दमन करने के लिए असन्तोष प्रदर्शन की घटना के पश्चात् सम्राट फर्डीनेण्ड द्वितीय ने स्पेनी शासक फिलिप तृतीय से सैनिक सहायता मांगी। अतः स्पेन ने बवेरिया के सेनापति काउण्ट टिली के नेतृत्व में एक सेना बोहेमिया भेज दी। पेलाटिनेट के राजा फ्रेडरिक ने सैन्य सहायता के लिए इंग्लैण्ड से सहायता मांगी, किन्तु आन्तरिक परेशानियों के कारण उसे इंग्लैण्ड से सहायता न मिल सकी। यही नहीं, उसे लूथरवादी जर्मन राजकुमारों ने भी सहायता नहीं दी। इस स्थिति में 1620 ई. में **बोहेमिया के 'व्हाइट हिल' नामक युद्ध में फ्रेडरिक को लिली की सेना ने शिकस्त दी। फ्रेडरिक को पेलाटिनेट छोड़कर भागना पड़ा। शाही सेना ने बोहेमिया पर अधिकार कर लिया।** पेलाटाइन पर वबेरिया के शासक मैक्सिमिलियन का अधिपत्य स्थापित हो गया। कैथोलिकों की इस अभूतपूर्व सफलता से प्रभावित होकर स्पेनी नरेश फिलिप चतुर्थ ने 1621 ई. में उत्तरी नीदरलैण्ड्स के डचों के विरुद्ध संघर्ष पुनः आरम्भ कर दिया। 1625 ई. में स्पेनी सेना ने ब्रेडा नामक डच नगर पर भी अधिकार कर लिया। अभूतपूर्व सफलता ने अब उत्तरी जर्मनी के लूथरवादी राजकुमारों के कान खड़े कर दिए। फर्डीनेण्ड द्वितीय ने जर्मनी के प्रोटेस्टेण्ट राज्यों की राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। बोहेमिया में कैथोलिक धर्म को जबरदस्ती लागू करवाया गया।

(2) **डेनिश काल** (1625-1629)—प्रोटेस्टेण्टों की दुर्दशा पर डेनमार्क व नार्वे के नरेश क्रिश्चियन चतुर्थ ने जर्मनी के प्रोटेस्टेण्टों की सहायता की। अतः 1625 से 1629 का काल डेनिस काल के नाम से प्रख्यात है। 1625 में क्रिश्चियन चतुर्थ ने इंग्लैण्ड व जर्मनी के लूथरवादी एवं काल्विनवादी राजकुमारों से सहायता प्राप्त कर उत्तरी जर्मनी पर आक्रमण किया। सेनापति टिली एवं वालेन्स्टाइन की सेना ने लूथर (Luther) नामक स्थान पर 1626 ई. में क्रिश्चियन चतुर्थ को बुरी तरह पराजित किया। अन्ततः क्रिश्चियन चतुर्थ को विवश

होकर फर्डीनेण्ड के साथ ल्यूबेक की सन्धि करनी पड़ी। **इस सन्धि के अनुसार जटलैण्ड, श्लैशविग एवं हाल्सटीन पर क्रिश्चियन चतुर्थ का अधिकार तो बना रहा, किन्तु अब कैथोलिकों की प्रभुता स्थापित हो गई। जर्मनी में सम्राट की प्रभुसत्ता एवं हैप्सबर्ग वंश की प्रधानता स्थापित हो गई।**

(3) **स्वीडिश काल** (1630-1635)—1630 ई. में स्वीडन नरेश गस्टवस एडल्फस ने वाल्टिक क्षेत्र को स्वीडिश प्रभाव क्षेत्र में लाने एवं स्वीडन के व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के उद्देश्य से तीसवर्षीय युद्ध में प्रवेश करते हुए जर्मनी के प्रोटेस्टेण्टों को सहायता प्रदान की। स्वीडन के द्वारा अपने सहधर्मियों की सहायता के कारण 1630-1635 का काल स्वीडिश काल के नाम से जाना जाता है। एडल्फ्स ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु यूरोपीय राजनीति में बोर्बो राजवंश की प्रधानता स्थापित करने के लिए लालायित फ्रांस से गठजोड़ किया। यह ठीक है कि फ्रांस का प्रधानमन्त्री रिशलू स्वयं कैथोलिक था, किन्तु उसने हैप्सबर्ग वंश को चुनौती देकर बोर्बो राजवंश के प्रभुत्व को स्थापित करने के उद्देश्य से प्रोटेस्टेण्टों का साथ दिया। 1634 **ई. तक दोनों पक्ष युद्ध करते-करते थक चुके थे। अतः मई 1635 ई. में प्राग की सन्धि हुई।** इस सन्धि के अनुसार यह निर्णय लिया गया कि जर्मन साम्राज्य की सैन्य शक्तियों पर जर्मन सम्राट का प्रभुत्व रहेगा। केवल सैक्सनी का राज्य अपनी सैन्य शक्ति रख सकेगा, शेष राज्यों को अपनी सैन्य शक्ति समाप्त करनी होगी। युद्ध के दौरान एक-दूसरे के जीते हुए क्षेत्र दोनों एक-दूसरे को वापस करेंगे तथा 1627 ई. तक जो भी कैथोलिक सम्पत्ति प्रोटेस्टेण्टों के अधिकार में आ गई तो वह आगामी 40 वर्षों तक या सन्तोषप्रद समाधान न होने तक परिवर्तित नहीं होगी। **इस सन्धि का सबसे बड़ा दोष यह था कि इसके अनुसार जर्मनी में काल्विनवादियों को मान्यता प्रदान नहीं की गई थी।**

(4) **फ्रांसीसी काल** (1635-1648)—हेज के अनुसार, '**प्राग की सन्धि निःसन्देह स्थायी सिद्ध होती यदि रिशलू ने फ्रांस के हित को दृष्टि में रखकर इस युद्ध को जारी न किया होता।**'[1]

वास्तव में रिशलू तीसवर्षीय युद्ध को जारी रख हैप्सबर्ग राजतन्त्र को पराजित कर बोर्बो राजवंश की प्रतिष्ठा को यूरोपीय राजनीति में कायम करना चाहता था। यही नहीं, वह युद्ध में भाग लेकर फ्रांस का प्रादेशिक विस्तार भी करना चाहता था। अतः **अब फ्रांस ने अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए युद्ध में सक्रिय रूप से भाग लिया। अतः इस काल** (1635-1648) **को फ्रांसीसी काल के नाम से जाना जाता है।** अब सप्तवर्षीय युद्ध दो प्रश्नों के उत्तर के लिए अपेक्षित सिद्ध हुआ, प्रथम, यूरोप की राजनीति में फ्रांस और आस्ट्रिया में से किसका वर्चस्व स्थापित होगा और द्वितीय यूरोप में कैथोलिक या प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदायों में से किसकी सर्वमान्यता स्थापित होगी? 1635 ई. में हैप्सबर्ग साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने से पूर्व फ्रांसीसी प्रधानमन्त्री कार्डिनल रिशलू ने स्वीडन, सेवाय एवं हालैण्ड से सन्धि कर ली। कार्डिनल रिशलू की मृत्यु तक स्थिति यह थी कि स्पेनी साम्राज्य में विद्रोहों का सिलसिला जारी था तथा युद्ध में स्पेनी सेना को बराबर पराजय का मुंह देखना पड़ रहा था। रिशलू की मृत्यु के पश्चात् फ्रांस को उसके सौभाग्य से मैजरिन का नेतृत्व प्राप्त हुआ, जिसने रिशलू की ही विदेश नीति का अनुगमन किया। मई, 1648 ई. में फ्रांस व स्वीडन की संयुक्त सेना ने स्पेनी सेना को भयंकर शिकस्त दी। अब स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि आस्ट्रिया की राजधानी वियना के लिए खतरा उत्पन्न हो गया। क्योंकि फ्रांस व स्वीडन की संयुक्त सेना

1 हेज, **माडर्न यूरोप टू** 1870, पृ. 235.

ने बवेरिया की सेना को भी आतंकित कर दिया था, विवश होकर सम्राट को स्वीडन व फ्रांस के साथ **'वेस्टफेलिया की सन्धि'** करनी पड़ी। फलत: तीसवर्षीय युद्ध का अन्त हुआ।

वेस्टफेलिया की सन्धि : 1648
(PEACE OF WESTPHALIA : 1648)

वेस्टफेलिया की सन्धि की प्रमुख धाराएं निम्नवत् थीं :

(1) काल्विनवादियों को वैधानिक मान्यता प्रदान की गयी।

(2) 1624 ई. के आरम्भ में प्रोटेस्टेण्टों व कैथोलिकों के पास जो चर्च की सम्पत्ति थी वह यथावत् रहेगी तथा साम्राज्य की अदालतों में प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक दोनों न्यायाधीशों की संख्या समान रहेगी।

(3) जर्मनी के प्रत्येक राज्य को युद्ध व सन्धि सम्बन्धी पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिए गए, किन्तु यह पाबन्दी लगायी गयी कि इन अधिकारों का प्रयोग उस सीमा तक ही मान्य होगा जहां तक कि ये सम्राट के विरुद्ध न जाते हों।

(4) ओडर, एल्ब एवं बेसर नदियों के मुहाने पर स्वीडन के अधिकार को मान्यता दे दी गयी।

(5) पैलाटाइन राज्य को दो भागों में विभक्त कर उत्तरी पैलाटाइन पर बवेरिया के शासक मैक्सिमिलियन का एवं दक्षिणी पैलाटाइन पर फ्रेडरिक के पुत्र चार्ल्स लुई का अधिकार माना गया।

(6) स्ट्रासबर्ग नामक नगर को छोड़कर सम्पूर्ण आल्सेज, मेज, वर्दू एवं टूल के विशपरिकों को फ्रांस का अधिकार मान्य हुआ।

(7) फ्रांस व स्वीडन जर्मन संसद में अपने प्रतिनिधि भेजने के अधिकारी होंगे।

(8) स्विट्जरलैण्ड एवं उत्तरी नीदरलैण्ड्स को हैप्सबर्ग राजसत्ता से स्वतन्त्र मान लिया गया।

इस प्रकार इस सन्धि ने आस्ट्रियन हैप्सबर्ग के वंशानुगत आस्ट्रिया, हंगरी एवं बोहेमिया नामक राज्यों पर सम्राट के अधिकार को तो पूर्ववत् रहने दिया, किन्तु पवित्र रोमन साम्राज्य पर सम्राट के वास्तविक नियन्त्रण को सीमित तो कर ही दिया साथ ही जर्मनी में भयंकर परिवर्तन भी कर दिए। इस सन्धि ने यूरोपीय राजनीति में बोर्बो राजवंश के उत्थान एवं हैप्सबर्ग साम्राज्य के पतन को स्पष्ट कर दिया। यही नहीं, धर्म-सुधार के युग का अन्त हुआ और इसके स्थान पर राजनीतिक एवं आर्थिक नीति की प्रधानता वाले नव युग का सूत्रपात भी इस सन्धि ने किया। इस सन्धि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए थेचर और फर्डीनेण्ड ने लिखा है, **"वेस्टफेलिया की सन्धि अनेक कारणों से इतिहास के महत्वपूर्ण दस्तावेजों में से एक है। प्रथम, इसने फ्रांस व स्वीडन का जर्मनी के विभिन्न भागों पर अधिकार किया जाना सुनिश्चित किया, द्वितीय, इसने प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक धर्मावलम्बियों के मध्य समझौते का नया आधार तैयार किया, तथा तीसरा, इसने जर्मनी में एक नवीन राजनीतिक व्यवस्था को सुनिश्चित किया।"**[1]

1 "The peace of Westphalia is, from a variety of matter which is treats, one of the most important documents in history. First, it determined what territorial compensation France and Sweden were to have in Germany for their victories over the emperor; secondry, it laid a new basis for the peace between Protestantism and Roman Catholicism, and thirdly, it authorized an important political re-adjustment of Germany."

—J. Thatcher & Ferdinand Schwill : *A Gerneral History of Europe.*

तीसवर्षीय युद्ध के परिणाम अथवा प्रभाव
(RESULTS OF IMPACT OR THIRTY YEARS' WAR)

इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"तीसवर्षीय युद्ध का युग एवं वेस्टफेलिया की सन्धि का आधुनिक यूरोप के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।"**[1] इस युद्ध ने यूरोप की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। इसके प्रभाव या परिणामों को संक्षेप में निम्नवत् इंगित किया जा सकता है :

(1) आधुनिक राज्य-व्यवस्था का उत्थान (Growth of Modern State System)—हेज के शब्दों में, **"तीसवर्षीय युद्ध के अन्तिम परिणामस्वरूप यूरोप की आधुनिक राज्य व्यवस्था का उदय अन्तर्राष्ट्रीय कानून एवं अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति के अपने निरूपित सिद्धान्तों के साथ हुआ।**[2] निःसन्देह इस युद्ध ने हैप्सबर्ग सम्राट एवं पवित्र रोमन सम्राट के महत्व को कम ही नहीं कर दिया अपितु अब जर्मन साम्राज्य को भी अन्य यूरोपीय राज्यों के सदृश ही समझा जाने लगा। यूरोप के सभी राज्य कानून की दृष्टि से समान हो गए। अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति या यूरोपीय प्रश्न पर अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेसों के आह्वान का युग आरम्भ हो गया। युद्ध की विभीषिका ने मानववादियों को युद्ध के विध्वंसकारी उन परिणामों पर सोचने के लिए प्रेरित किया जिससे मानवता का हनन होता है। अब मानववादी, बीमार एवं घायल सैनिकों की चिकित्सा व्यवस्था, लूटमार एवं अनावश्यक रक्तपात को रोकने, युद्धकाल में असैनिक लोगों की रक्षार्थ नियमावली जैसे प्रश्नों पर तर्क करने लगे। फलतः ह्यूगो ग्रेसियस (Hugo Grotius) द्वारा "युद्ध व शान्ति का विधान" (On the Law of War and Peace) की रचना सामने आयी जो कि अन्तर्राष्ट्रीय विधान की एक महत्वपूर्ण कृति सिद्ध हुई। **निःसन्देह इस कृति को अन्तर्राष्ट्रीय विधान की आधारशिला माना जाता है।**[3]

(2) जर्मनी पर व्यापक प्रभाव (Effects upon Germany)—तीसवर्षीय युद्ध का व्यापक प्रभाव जर्मनी पर पड़ा। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"आधुनिक राज्य व्यवस्था एवं आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय विधान के उदय की अपेक्षा तीसवर्षीय युद्ध का विनाशकारी प्रभाव जर्मनी की राजनीतिक एवं विशेषतः आर्थिक स्थिति पर पड़ा।"**[4] राजनीतिक दृष्टिकोण से पवित्र रोमन साम्राज्य (जर्मन साम्राज्य) की गरिमा को गहरा आघात लगा। जर्मनी के राज्यों को युद्ध एवं सन्धि सम्बन्धी अधिकार प्रदान कर दिए जाने से सम्राट की महत्ता में कमी आ गयी। जर्मन राज्यों की पारस्परिक अनैक्यता को बल मिला, जिस कारण जर्मनी में राष्ट्रीयता का विकास अवरुद्ध हो गया। राष्ट्रीयता के विकास की धारा में कमी आ जाने से अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में जर्मनी काफी पिछड़ गया। यही नहीं, जर्मनी अब फ्रांस व स्वीडन से घिर गया। **जहां एक सामाजिक दृष्टि का प्रश्न है जर्मनी की सामाजिक संस्थाओं एवं व्यवस्थाओं को गम्भीर**

1 "The era of the Thirty Years' War and the peace of Westphalia is highly important in the history of Modern Europe." —*Hayes*

2 "From the thirty years' war finally emerged the modern state system of Europe, with its formulated principles of international law and usages of international diplomacy." —*Hayes*

3 "It was one of the first of the systematic treatises on international law." —*Hayes*

4 "Of more immediate significance than the rise of the modern state system and of modern international law was the terrible havoc—political and especially economic—which the Thirty Years' War wrought in Germany." —*Hayes*

झटका लगा। जर्मनी की जनसंख्या 1/3 रह गयी। आर्थिक क्षेत्र में भी जर्मनी काफी पिछड़ गया। व्यापार एवं वाणिज्य चौपट हो गया। अब फ्रांस व हालैण्ड ने व्यापार व वाणिज्य पर अपना सिक्का जमा लिया। जर्मनी की कृषि-व्यवस्था तहस-नहस हो गयी। कुल मिलाकर जर्मनी का सांस्कृतिक विकास अवरुद्ध हो गया। डेविड ऑग ने इस सन्दर्भ में लिखा है, **"तीसवर्षीय युद्ध ने जर्मन- सभ्यता को एक शताब्दी से अधिक पीछे धकेल दिया"**, इसी कारण इतिहासकार जान नेप्टन ने लिखा है, **"तीसवर्षीय युद्ध का इतिहास कूटनीति, कुचक्रों, सैनिक अभियानों तथा क्रूर विनाश का लेखा-जोखा है।"**[1]

(3) अन्य महत्वपूर्ण परिणाम (Other important results)—भावी यूरोपीय राजनीति की पृष्ठभूमि को निर्धारित करने में निःसन्देह तीसवर्षीय युद्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। फ्रांस, स्वीडन एवं डेनमार्क के महत्व में जहां एक ओर वृद्धि हुई वहीं स्पेन का गौरव घट गया। यूरोप की राजनीति में फ्रांस के बोर्बो वंश का गौरव स्थापित हो गया। ब्रोण्डेनबर्ग की राज्य सीमा विस्तृत हो गयी। जर्मनी सें हैप्सबर्ग सम्राट का प्रभुत्व समाप्त हो गया। इन दोनों बातों ने कालान्तर में प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण को सम्भव बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वाल्टिक सागर पर स्वीडन की प्रभुता ने भी आगामी यूरोप को निःसन्देह गम्भीर रूप से प्रमाणित किया। इस युद्ध ने यूरोप में शक्ति सन्तुलन कायम किया। इस सन्दर्भ में एच. ए. एल. फिशर ने लिखा है, **"वेस्टफेलिया की सन्धि ने प्रथम बार यूरोप में शक्ति सन्तुलन को मान्यता प्रदान की एवं पर्याप्त समय के लिए स्थिर किया।"**

(4) नवयुग का आरम्भ (Rise of a New Era)—तीसवर्षीय युद्ध ने यूरोपीय धर्म-सुधार आन्दोलन के युग को समाप्त कर दिया। अब एक नए युग का सूत्रपात हुआ जिसमें राजनीतिक एवं आर्थिक नीतियों की ही प्रधानता थी। **लार्ड एक्टन ने तो इसे प्रतिधर्म सुधार आन्दोलन की अन्तिम एवं महत्वपूर्ण उपज माना है।**[2]

इस प्रकार स्पष्ट है कि तीसवर्षीय युद्ध का आरम्भ तो धार्मिक विवाद से आरम्भ हुआ, किन्तु कालान्तर में इसका स्वरूप राजनीतिक हो गया जिसमें अन्ततः हैप्सबर्ग वंश की पराजय हुई एवं फ्रांस के बोर्बो वंश का गौरव यूरोप में प्रतिस्थापित हुआ। इस प्रकार तीसवर्षीय युद्ध ने एक नवयुग का सूत्रपात कर दिया जिसका आधार धर्म न होकर राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्न थे, **किन्तु यह स्मरणीय है कि तीसवर्षीय युद्ध ने स्पेन व फ्रांस के मध्य चलने वाले युद्ध का अन्त नहीं किया। इस युद्ध की समाप्ति तो पिरैनीज की सन्धि (1659) से हुई।**

पिरैनीज की सन्धि : 1659 (Treaty of Pyrenees)

तीसवर्षीय युद्ध के पश्चात् भी लगभग 11 वर्षों तक (1648 से 1659) फ्रांस व स्पेन का युद्ध चलता रहा, **किन्तु अन्ततः विवश होकर स्पेनी शासक फिलिप चतुर्थ को फ्रांस के साथ पिरैनीज की सन्धि (1659) करनी पड़ी। इस सन्धि की धाराएं निम्नवत् थीं :**

(1) रूसोलिन, आर्तआं एवं नीदरलैण्ड के कतिपय प्रदेश स्पेन ने फ्रांस को दे दिए।

(2) यह निश्चित हुआ कि फिलिप चतुर्थ की पुत्री मेरिया थिरिजा का विवाह फ्रांस के शासक लुई 14वें से होगा।

---

1 "The chronicle of the thirty year's war is a record of diplomatic intrigue, military campaigns and savage destruction."

—John Knapton : *Europe* (1450-1815), p. 317.

2 "The last and most important product of the Counter-Reformation was the Thirty Years' War."

—*Lord Acton*

(3) विवाह में दी जाने वाली दहेज की राशि के स्थान पर मेरिया ने स्पेन के सिंहासन पर अपना अधिकार त्याग दिया।

इस प्रकार पिरैनीज की सन्धि फिलिप चतुर्थ के लिए अत्यन्त अपमानजनक थी। अतः उसने पुनः पुर्तगाल पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे पराजित होना पड़ा। 1665 में फिलिप चतुर्थ का देहावसान हो जाने से स्पेन का गौरव यूरोपीय राजनीति से लुप्त हो गया। अब नव नेतृत्व फ्रांस के हाथ में आ गया।

स्पेन के पतन के कारण
(CAUSES OF THE DOWNFALL OF SPAIN)

स्पेनी साम्राज्य के चरमोत्कर्ष का काल निःसन्देह फिलिप द्वितीय के शासन काल का पूर्वार्द्ध काल था। चार्ल्स पंचम से विरासत में प्राप्त स्पेनी साम्राज्य फिलिप द्वितीय की शक्ति का प्रतीक था। इस समय स्पेनी साम्राज्य में कई यूरोपीय प्रदेश एवं अमरीकी उपनिवेश थे। यही नहीं, सम्पूर्ण यूरोप में हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा के रूप में स्पेनी साम्राज्य स्वयंसिद्ध था। इतना सब कुछ होते हुए भी फिलिप द्वितीय के शासनकाल के उत्तरार्द्ध से ही स्पेनी साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया और 1665 ई. **में फिलिप चतुर्थ की मृत्यु के साथ ही स्पेन का गौरव यूरोपीय राजनीति में लुप्त हो गया।**

संक्षेप में, स्पेनी साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारणों को निम्नवत् इंगित किया जा सकता है :

(1) **स्पेनी साम्राज्य का ढांचा** (Structure of Spanish Europe)—स्पेनी साम्राज्य के पतन के लिए उसमें निहित आन्तरिक दुर्बलताएं मूलतः उत्तरदायी थीं। स्पेनी साम्राज्य की विशालता उसके पतन के लिए निःसन्देह घातक सिद्ध हुई। उसके प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत कई यूरोपीय देश, अमरीकी उपनिवेश एवं भूमध्य सागर व एटलाण्टिक महसागर थे। अतः संस्कृति, भाषा, धर्म, शासन पद्धति, जातीयता, रीति-रिवाज, परम्पराओं एवं ऐतिहासिक आदि में **स्पेनी साम्राज्य के अन्तर्गत आने वाले राज्यों में पर्याप्त असमानता थी। एक तो यह स्थिति थी दूसरी ओर साम्राज्य का स्वरूप भी राष्ट्रीय न होकर राजवंशीय था।** अतः समय-समय पर साम्राज्य में विभिन्न समस्याएं उत्पन्न होती रहती थीं। धर्म-सुधार आन्दोलन, फ्रांस-स्पेनी युद्ध, तुर्कों की आक्रामक नीति, इंग्लैण्ड की स्पेन विरोधी नीति तथा नीदरलैण्ड्स का विद्रोह इसी प्रकार की समस्याएं थीं। इस प्रकार की भयंकर समस्याओं ने स्पेनी साम्राज्य की जड़ों को झकझोर कर रख दिया।

(2) **फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारी** (Incapable successors of Philip II)—स्पेनी साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारियों का होना भी था। फिलिप द्वितीय का पुत्र फिलिय तृतीय (1598-1621) का शासनकाल आर्थिक विपन्नता का काल सिद्ध हुआ। इसका सबसे बड़ा कारण उसका अपने प्रिय लोगों के हाथों का खिलौना बन जाना था। वह स्वयं भी अयोग्य एवं निर्बल शासक था। फिलिप चतुर्थ (1621-1665) का काल तो तीसवर्षीय युद्ध की लपेटों में झुलस गया था। वह स्वयं तो अयोग्य था ही साथ ही डचों व पुर्तगालियों के स्वतन्त्रता संघर्ष ने स्पेनी साम्राज्य को चुनौती दी। निःसन्देह उसका काल स्पेनी साम्राज्य रूपी सूर्य के अवसान का काल ही था। उसके उत्तराधिकारी चार्ल्स द्वितीय का काल (1665-1700) स्पेनी साम्राज्य में **'राजवंशीय अराजकता'** के काल के नाम से जाना जाता है। चार्ल्स पंचम अयोग्य एवं दुर्बल तथा अल्प-बुद्धि वाला शासक था। इस प्रकार फिलिप द्वितीय के पश्चात् स्पेनी साम्राज्य को किसी भी योग्य

शासक का नेतृत्व प्राप्त न हुआ जो कि स्पेनी साम्राज्य को आने वाली भयंकर विपदाओं से राहत दिलाता। अतः यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है कि, **"चार्ल्स पंचम एक महान् योद्धा एवं शासक था। फिलिप द्वितीय केवल एक शासक था। फिलिप तृतीय एवं फिलिप चतुर्थ शासक भी नहीं थे और चार्ल्स द्वितीय (फिलिप द्वितीय की दूसरी पत्नी से उत्पन्न) एक मनुष्य भी नहीं था।"**

(3) **स्पेन की आर्थिक विपन्नता** (Economic distress of Spain)—स्पेन के पतन के लिए वहां की आर्थिक स्थिति भी कम उत्तरदायी नहीं थी। प्रो. एल. मुकर्जी के शब्दों में, **"यूरोप में स्पेन की आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त जर्जरित थी।"**[1] स्पेन की आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण राजशाही के भयानक खर्चे तथा युद्धों का होना थे। ठीक है कि स्पेन के लिए उसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए इस समय उपनिवेशों की आवश्यकता थी और अमरीका जैसा धन-कुबेर उपनिवेश स्पेन के अधिकार में था, किन्तु यूरोपीय राजनीति में स्पेन के प्रभुत्व को स्थापित करने के उद्देश्य से चार्ल्स पंचम एक फिलिप द्वितीय ने जो प्रयत्न किए उनका बोझ अधिक भारी था। रांजदरबारी एवं राजवंश के लोग भोग-विलास एवं शानो-शौकत में धन का अपव्यय करते थे। व्यापार कुशल यहूदी एवं मूर जाति को स्पेन से निष्कासित करना आर्थिक दृष्टि से कदापि उचित नहीं था। **स्पेन में प्रचलित उत्तराधिकार का नियम अत्यन्त विचित्र था।** इस नियम के अनुसार पिता की सम्पत्ति का अधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र होता था एवं अन्य पुत्रों के लिए सेना व चर्च में स्थान नियत होते थे। अन्य पेशा वे नहीं कर सकते थे। यह नियम निःसन्देह स्पेनी व्यापार एवं वाणिज्य की दृष्टि से अत्यन्त घातक था। यही नहीं, **सभी वस्तुओं पर दस प्रतिशत विक्रय कर लगता था।** राज्य के उद्योगों को राजकीय संरक्षण प्राप्त न होने से राष्ट्रीय व्यापार व उद्योगों को गहरा आघात लगना स्वाभाविक था।

कृषि की भी अत्यन्त दयनीय स्थिति थी। भूमि के अधिकांश भाग पर चर्च या सामन्तों का आधिपत्य था। इन्होंने कभी भी कृषि के उन्नति के विषय में विचार ही नहीं किया। भेड़ पालन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कृषकों को खेती की घेराबन्दी भी निषिद्ध कर दी गयी। इस स्थिति में फसल का चौपट हो जाना स्वाभाविक ही था। अतः कृषकों की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो गयी।

(4) **स्पेनी शासकों की धार्मिक असहिष्णुता की नीति** (Religious policy of Spanish Kings)—स्पेनी शासक कैथोलिक थे। उन्होंने सदा ही कैथोलिक सम्प्रदाय की यूरोपीय सार्वभौम धर्म बनाने की चेष्टा की। इस प्रयोजन के लिए **कैथोलिक विरोधियों का दमन निर्दयतापूर्वक किया। 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक अदालतें इसका स्पष्ट प्रमाण हैं।** अतः स्वतन्त्र चिन्तन एवं वैज्ञानिक विचारधारा की प्रवृत्ति का मार्ग अवरुद्ध हो गया। यही कारण था कि स्पेन यूरोप के अन्य राष्ट्रों की तुलना में सांस्कृतिक एवं वैधानिक दृष्टि से काफी पीछे हो गया, जो कि स्पेनी साम्राज्य के पतन का महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुआ।

(5) **सुदृढ़ नौ-सेना का अभाव** (Absence of Strong Navy)—स्पेन की थल सेना अत्यन्त सुदृढ़ थी, किन्तु भूमध्यसागर एवं एटलाण्टिक सागर में अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए स्पेन के लिए यह अति आवश्यक था कि वह अपनी नौ-सेना को भी सुदृढ़ करता। **स्पेनी शासकों ने कभी भी गम्भीरता से सुदृढ़ नौ सेना के विकास के विषय में विचार नहीं किया।** फिलिप चतुर्थ ने एक बार इंग्लैण्ड से लोहा लेने के लिए शक्तिशाली आर्मेडा का गठन किया

1 **"The financial system of Spain was one of the worst in Europe."**
—L. Mukherjee, *Modern Europe*, p. 11.

था, किन्तु आर्मेडा की पराजय ने स्पेनी नौ-सेना की शक्ति पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। इसके विपरीत स्पेन के प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी फ्रांस व इंग्लैण्ड की नौ-सेना दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ होती चली गयी। नीदरलैण्ड्स के विद्रोह को दबाने में स्पेन अवश्य ही सफल हो गया होता यदि उसकी नौ-सेना सुदृढ़ होती।

(6) **जनसंख्या में गिरावट** (Decrease in Population)—सोलहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में स्पेन की जनसंख्या में भारी कमी हुई। दीर्घकालीन युद्धों में स्पेन की जनहानि, यहूदियों व मूरों का देश से निष्कासन तथा स्पेनियों का उपनिवेशों में प्रवास इसके महत्वपूर्ण कारण थे। जनसंख्या में द्रुतगति से गिरावट तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से स्पेन के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुई।

(7) **अन्य महत्वपूर्ण कारण** (Other Important Causes)—उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त तीसवर्षीय युद्ध में स्पेन की पराजय फ्रांसीसी शासक लुई 14वें की **साम्राज्य विस्तारक नीति, इंग्लैण्ड की उपनिवेशवादी नीति एवं इंग्लैण्ड तथा हालैण्ड का नौसेना के क्षेत्र में एकाधिकार** की ओर बढ़ना स्पेनी साम्राज्य के पतन के लिए महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए।

इस प्रकार माना जा सकता है कि स्पेनी साम्राज्य की विशालता एवं स्पेनी शासकों की अकुशल नीतियों ने स्पेनी साम्राज्य में अनेक अन्तर्विरोध पैदा कर दिए। इन अन्तर्विरोधों का सीधा प्रभाव वहां की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर पड़ा। यह प्रभाव नकारात्मक सिद्ध हुआ जिसका पूर्ण लाभ **स्पेनी प्रतिद्वन्द्वियों फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा हालैण्ड ने उठाया और भरसक प्रहार स्पेनी साम्राज्य पर किया। फिलिप द्वितीय के अयोग्य उत्तराधिकारी इस प्रहार को सहन न कर पाने में अक्षम सिद्ध हुए।** अतः ऐसी स्थिति में स्पेन का पतन अवश्यम्भावी था और एक ऐसे युग का आरम्भ हुआ जिसका नेतृत्व फ्रांस के हाथों में चला गया।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. चार्ल्स पंचम के शासन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।
2. चार्ल्स पंचम के समक्ष कौन-कौन सी समस्याएं थीं ? क्या वह उनका निदान कर सका ?
3. चार्ल्स पंचम की गृह एवं विदेश नीति की विवेचना कीजिए।
4. चार्ल्स पंचम के समय स्पेन के फ्रांस के साथ सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए।
5. चार्ल्स पंचम एवं फ्रांसिस प्रथम के बीच हुए युद्धों पर प्रकाश डालिए।
6. फिलिप द्वितीय के समक्ष कौन-कौन सी समस्याएं थीं ? क्या वह उनका निदान कर सका ?
7. फिलिप द्वितीय की गृह-नीति पर प्रकाश डालिए।
8. फिलिप द्वितीय की विदश नीति की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।
9. फिलिप द्वितीय की नीतियों व कार्यों का परीक्षण कीजिए।
10. फिलिप द्वितीय के शासन काल की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।
11. नीदरलैण्ड्स के विद्रोह के क्या कारण थे ? विप्लव की प्रमुख घटनाओं को भी लिखिए।
12. नीदरलैण्ड्स की घटनाओं की विवेचना करते हुए डचों की सफलता के कारण इंगित कीजिए।
13. डच स्वतन्त्रता आन्दोलन में विलियम ऑफ ऑरेन्ज की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।
14. तीस वर्षीय युद्ध के कारणों व परिणामों का उल्लेख कीजिए।

15. तीस वर्षीय युद्ध से क्या अभिप्राय है ? इस युद्ध की प्रमुख घटनाओं का वर्णम कीजिए।
16. वेस्टफेलिया की सन्धि की धाराओं का स्पष्टीकरण उसके महत्व के सन्दर्भ में कीजिए।
17. वेस्टफेलिया की सन्धि के महत्व का आंकलन तीसवर्षीय युद्ध के परिणामों के सन्दर्भ में कीजिए।
18. स्पेन के पतन के कारणों पर प्रकाश डालिए।
19. स्पेनी साम्राज्य के उत्थान व पतन पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्पेन के शासक चार्ल्स पंचम के चरित्र का मूल्यांकन संक्षेप में कीजिए।
2. स्पेन के शासक चार्ल्स पंचम पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. स्पेन के शासक फिलिप द्वितीय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. स्पेन के सम्राट फिलिप द्वितीय की आन्तरिक और बाह्य समस्याओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
5. स्पेन के सम्राट फिलिप द्वितीय के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए।
6. तीस वर्षीय युद्ध के कारणों की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
7. वेस्टफेलिया की सन्धि पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
8. नीदरलैण्ड्स के विद्रोह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
9. स्पेन के पतन के लिए उत्तरदायी कोई एक कारण लिखिए।
10. स्पेन के सम्राट फिलिप द्वितीय की धार्मिक नीति का वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फर्डीनेण्ड की मृत्यु के पश्चात् स्पेन का सम्राट कौन बना ?
2. कैम्ब्रे की सन्धि कब हुई ?
3. नीरू की सन्धि कब हुई ?
4. कैटियो कैम्ब्रिसिस की सन्धि कब हुई?
5. स्पेन का सम्राट चार्ल्स पंचम किस वंश से सम्बन्धित था ?
6. फिलिप द्वितीय का जन्म कब हुआ था ?
7. फिलिप द्वितीय को अपने पिता चार्ल्स पंचम से कौन-कौन से राज्य उत्तराधिकार में मिले थे ?
8. नीदरलैण्ड्स को वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है?
9. तीस वर्षीय युद्ध का काल कौन-सा था ?
10. तीस वर्षीय युद्ध कहां हुआ था ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. निम्नलिखित में कौन-सा कथन चार्ल्स पंचम के सन्दर्भ में सही नहीं है :
   (क) चार्ल्स पंचम का विशाल साम्राज्य उसके लिए स्वयं एक चुनौती था
   (ख) चार्ल्स पंचम एक ऐसा शासक था जिस पर राज्यों एवं साम्राज्यों की वर्षा उत्तराधिकार के रूप में ही हो गयी (हेज)
   (ग) चार्ल्स पंचम का साम्राज्य राजवंशीय साम्राज्य था
   (घ) चार्ल्स पंचम धर्म-सहिष्णु था
2. आग्सबर्ग की स्वीकृति के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही है :
   (क) लूथर सम्प्रदाय को मान्यता प्राप्त हो गयी
   (ख) काल्विनवादियों को मान्यता प्राप्त हो गयी

(ग) कैथोलिकों पर भयंकर प्रतिबन्ध लगा दिए गए
(घ) लूथर सम्प्रदाय की मान्यता समाप्त कर दी गयी

3. चार्ल्स पंचम के फ्रांस के साथ शत्रुता के कारणों के सन्दर्भ में निम्नलिखित में कौन सा कथन सही नहीं है :
(क) फ्रांसीसी नरेश व चार्ल्स पंचम दोनों पवित्र रोमन साम्राज्य के दावेदार थे
(ख) फ्रांसीसी साम्राज्य का हैप्सबर्ग साम्राज्य से घिरा होना
(ग) फ्रांस व स्पेन दोनों नेपल्स एवं सिसली पर अपना-अपना दावा प्रस्तुत करते थे
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. "मेरे जीवन एवं सम्मान के अतिरिक्त विश्व में कुछ भी शेष नहीं रह गया है ? यह कथन किसका है :
(क) फ्रांसिस प्रथम का (ख) चार्ल्स पंचम का
(ग) फिलिप चतुर्थ का (घ) मैक्सिमिलियन का

5. कैम्ब्रे की सन्धि हुई थी :
(क) 1529 ई. में (ख) 1530 ई. में (ग) 1561 ई. में (घ) 1562 ई. में

6. कैटियो की सन्धि हुई थी :
(क) 1559 ई. में (ख) 1560 ई. में (ग) 1561 ई. में (घ) 1562 ई. में

7. फिलिप-द्वितीय का शासनकाल था :
(क) 1556 से 1598 ई. तक (ख) 1557 से 1598 ई. तक
(ग) 1558 से 1598 ई. तक (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. घेण्ट की सन्धि हुई थी :
(क) 1556 ई. में (ख) 1576 ई. में (ग) 1580 ई. में (घ) 1618 ई. में

9. तीस वर्षीय युद्ध का काल था :
(क) 1618 ई. 1648 ई. (ख) 1620 ई. 1650 ई.
(ग) 1617 ई. 1647 ई. (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10. वेस्टफेलिया की सन्धि हुई थी :
(क) 1648 ई. में (ख) 1649 ई. में
(ग) 1650 ई. में (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

11. पिरैनीज की सन्धि हुई थी :
(क) 1659 ई. में (ख) 1660 ई. में (ग) 1650 ई. में (घ) 1649 ई. में

12. निम्नलिखित में किस शासक का काल राजवंशीय अराजकता का काल कहा जाता है :
(क) फिलिप द्वितीय (1556-1598) (ख) फिलिप तृतीय (1498-1621)
(ग) फिलिप चतुर्थ (1621-1665) (घ) चार्ल्स द्वितीय (1665-1700)

13. निम्नलिखित में कौन स्पेनी साम्राज्य के पतन का कारण नहीं है :
(क) स्पेनी साम्राज्य की विशालता
(ख) तीसवर्षीय युद्ध में स्पेन की पराजय
(ग) तीस वर्षीय युद्ध में स्पेन की पराजय
(घ) स्पेनी शासकों की धार्मिक सहिष्णुता की नीति

[उत्तर—1. (घ) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (क) 6. (क) 7. (क) 8. (ख) 9. (क) 10. (क) 11. (क) 12. (घ) 13. (घ)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए :

1. तीस वर्षीय युद्ध का मूल कारण धार्मिक था। वास्तव में, यह युद्ध कैथोलिकों द्वारा प्रोटेस्टण्टों का दमन करने का प्रयास था।
2. तीस वर्षीय युद्ध का तात्कालिक कारण आस्ट्रियन साम्राज्य के विरुद्ध बोहेमिया द्वारा विद्रोह करना था।
3. तीस वर्षीय युद्ध 1518 ई. से 1548 ई. के मध्य हुआ।
4. वेस्टफेलिया की सन्धि 1548 ई. में हुई थी।
5. 1516 ई. में फर्डीनेण्ड की मृत्यु के पश्चात् स्पेनिश साम्राज्य के सम्राट के रूप में चार्ल्स पंचम सिंहासनारूढ़ हुआ था।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. असत्य 5. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. कैम्ब्रे की सन्धि........ई. में हुई थी।
2. नीरू की सन्धि........ई. में हुई थी।
3. तीस वर्षीय युद्ध........ई. में प्रारम्भ हुआ।
4. पिरैनीज की सन्धि........ई. में हुई थी।
5. प्राग की सन्धि......ई. में हुई थी।

[उत्तर—1. 1529, 2. 1538 ई., 3. 1618 ई., 4. 1659, 5. 1635]

5

फ्रांस उत्थान के पथ पर
[THE ASCENDANCY OF FRANCE]

भूमिका
(INTRODUCTION)

सोलहवीं शताब्दी फ्रांस के इतिहास में धार्मिक एवं गृहयुद्धों के काल के नाम से जानी जाती है। निःसन्देह 1559 ई. से 1589 ई. तक फ्रांस में जो धार्मिक संघर्ष एवं गृहयुद्धों का भयानक दौर चला वह फ्रांसीसी इतिहास का महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। **नवीन विद्या के सम्पर्क ने राज्य व चर्च दोनों में आवश्यक सुधार की भावना को उत्पन्न कर दिया।** धार्मिक एवं गृहयुद्धों के काल में फ्रांस की जो अस्त-व्यस्त स्थिति हो गई थी, उसे अन्ततः हेनरी चतुर्थ ने अपने प्रयत्नों से सुदृढ़ करने का प्रयास किया, परन्तु इतना तो स्वीकार करना ही होगा कि धार्मिक युद्धों ने धर्म के ठेकेदारों को धर्म में सुधार के लिए प्रेरित कर ही दिया।

धार्मिक एवं गृहयुद्धों की पृष्ठभूमि
(BACKGROUND OF THE RELIGIOUS AND CIVIL WARS)

1559 ई. से 1589 ई. तक फ्रांस में होने वाले धार्मिक एवं गृहयुद्धों के बीज के अंकुर तो उस समय ही अंकुरित हो गए थे, जिस समय फ्रांस में इटली में होने वाले धर्म सुधार आन्दोलन का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होने लगा था। निःसन्देह इटली में होने वाले पुनर्जागरण आन्दोलन के फलस्वरूप ही फ्रांस में भी धर्म सुधार आन्दोलन आरम्भ हुआ। **फ्रांसीसी सम्राट फ्रांसिस प्रथम ने अपने शासन काल (1515 ई. से 1589 ई.) के आरम्भ में 'नवीन विद्या' (New Learning) के प्रति अगाध श्रद्धा प्रकट करते हुए इटली के प्रसिद्ध मानववादी विद्वानों एवं कलाकारों से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित किया। लियानार्डो द विन्सी तथा टीशियन से वह अत्यधिक प्रभावित था।** उसके शासनकाल में ही फ्रांस में **'कालेज डि फ्रांस'** (College de France) की स्थापना हुई। इटली एवं फ्रांस के मध्य प्रत्यक्ष रूप से सांस्कृतिक सम्पर्क स्थापित हुआ। कुल मिलाकर फ्रांसिस प्रथम के शासन के पूर्वार्द्ध में फ्रांस में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का जो वेग आरम्भ हुआ उसके कारण रोमन कैथोलिक चर्च के द्वारा अनुमोदित विश्वास एवं परम्पराओं को भी आघात पहुंचा। फ्रांस में धर्म सुधार आन्दोलन के जन्मदाता **'जाक लफब्र'** (Jacques Lefevere) के नेतृत्व में चलने वाले आन्दोलन ने निःसन्देह कैथोलिकों की जड़ों को हिला दिया।

किन्तु फ्रांसिस प्रथम (Francis I) के शासनकाल के उत्तरार्द्ध में उसकी नीति में अद्भुत परिवर्तन दृष्टिगत होता है। फ्रांसिस प्रथम **'एक राजा, एक धर्म एवं एक विधान'** का प्रबल पक्षपाती

था। अतः उसके लिए फ्रांस में किसी भी धर्म का अद्भुत तीव्रगामी विकास खतरा बन सकता था। अपने शासनकाल के पूर्वार्द्ध में भी उसने जर्मनी के लूथरवादियों को जो प्रश्रय दिया, उसका मूल कारण स्पेनिश प्रतिनिधित्व को यूरोप से समाप्त करने का स्वप्न ही था। अतः फ्रांसिस प्रथम ने अपने शासनकाल के अन्तिम चरणों में धर्म सुधार आन्दोलन का कठोर दमन किया। 1547 ई. में धर्म सुधारकों को विशेष न्यायालयों द्वारा दण्डित किया गया। उसके दमन की कठोरता का आंकलन इस बात से ही लग जाता है कि उसके शासनकाल के अन्तिम चरण में 20 हजार से अधिक नगर एवं ग्राम ध्वस्त हो गए। 3,000 व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया गया। हजारों व्यक्ति फ्रांस से निष्कासित कर दिए गए।

फ्रांसिस प्रथम के उत्तराधिकारी हेनरी द्वितीय ने अपने पिता फ्रांसिस प्रथम की ही धार्मिक असहिष्णुता की नीति को अपनाया। हेनरी द्वितीय का शासनकाल (1547 ई. से 1559 ई.) फ्रांस के काल्विनवादियों के दमन के लिए किए गए लगभग सभी प्रयासों का काल था। हेनरी द्वितीय ने फ्रांस में 'इन्क्वीजिशन' नामक धार्मिक अदालतें कायम कर काल्विनवादियों का दमन करने का प्रयास किया, किन्तु पेरिस की पार्लमां के विरोध के कारण उसकी योजनाएं सफल न हो सकीं। हेनरी द्वितीय काल्विनवादियों जो कि फ्रांस में **ह्यूगनोट** (Huguenots) **के नाम से जाने जाते थे के दमन का रुख अपनाने के प्रमुख कारण थे। प्रथम,** तो फ्रांस में ह्यूगनोट्स का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया था और **द्वितीय** फ्रांस के नगरवासी एवं सामन्त काल्विनवाद से इतने प्रभावित हो गए थे कि उनकी दृष्टि में राजकीय अधिकारों को सीमित करने का एकमात्र साधन काल्विनवाद ही हो सकता था। कुल मिलाकर वे काल्विनवाद को स्वीकार कर कैथोलिक चर्च की सम्पत्ति पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहते थे। यही नहीं, हेनरी द्वितीय के लिए यह भी असह्य था कि फ्रांस की जनता का वह वर्ग जो कि काल्विनवाद से प्रभावित था, काल्विनवादियों के प्रमुख केन्द्र जेनेवा से काल्विन के आदेशों व नियन्त्रण को स्वीकार करता, क्योंकि इससे सीधे फ्रांस के शासक की सर्वोच्चता को खतरा उत्पन्न हो सकता था वह भी उस स्थिति में जबकि फ्रांस में काल्विनवादियों का द्रुत गति से विकास हो रहा था। इन कारणों के कारण ही हेनरी द्वितीय ने अपने प्रबल प्रतिद्वन्द्वी स्पेनी शासक फिलिप द्वितीय के साथ 1559 ई. में **'कैटियो-कैम्ब्रेसिस'** की सन्धि भी की थी। निःसन्देह यह सन्धि फ्रांस में ह्यूगनोट्स के दमन की नीति का ही एक अंग थी, **किन्तु इसी समय हेनरी द्वितीय की मृत्यु ने उस स्थिति में धार्मिक संघर्ष की समस्या को और अधिक जटिल बना दिया जबकि हेनरी द्वितीय के उत्तराधिकारी नितान्त अयोग्य सिद्ध हुए और प्रशासन की बागडोर 'कैथरीन डी मैडिसी'** (Catharine de Medici) **के हाथ में संरक्षिता के रूप में आ गई।**

'कैथरीन डी मैडिसी' हेनरी द्वितीय की विधवा स्त्री थी। वह इटली के सुप्रसिद्ध मैडिसी राजवंश की राजकुमारी थी। उसने अपने पुत्रों **फ्रांसिस द्वितीय** (1559-1560) **चार्ल्स नवम** (1560-1574) एवं **हेनरी तृतीय** (1574-1589) के शासनकाल में इन शासकों को नाबालिग होने के कारण उनकी संरक्षिता के रूप में शासन किया। निःसन्देह हेनरी द्वितीय की मृत्यु फ्रांसीसी प्रोटेस्टेण्टों एवं सामन्तों के लिए अपनी शक्ति की वृद्धि करने की दृष्टि से सुनहरा अवसर था। अतः ह्यूगनोटों ने अपना सशक्त संगठन कर कैथोलिकों से संघर्ष करने का दृढ़ निश्चय किया। इधर सामन्त वर्ग ने भी अपनी शक्ति में वृद्धि के लिए कैथरीन डी मैडिसी की संरक्षकता वाले फ्रांसिस द्वितीय के उत्तराधिकार को चुनौती दी।

उल्लेखनीय है कि विरोधी सामन्त वर्ग भी प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभक्त था। **प्रथम वर्ग ने 'बोर्बो राजवंश'** का समर्थन किया और **द्वितीय ने 'गीज परिवार'** का। बूर्बां राजवंश के प्रमुख नेता एन्टनी जो कि नावारे का शासक था और उसके भाई **'लुई ड्यूक ऑफ कान्दे'** ने फ्रांसीसी शासक सन्त लुई के वंशधर होने का दावा करते हुए फ्रांसीसी नर उत्तराधिकार के नियम के तहत फ्रांस के सिंहासन का स्वयं को हकदार माना। **ये दोनों प्रोटेस्टेण्ट थे।** अतः अपनी आकांक्षा की पूर्ति हेतु इन्होंने फ्रांस में पनप रहे धार्मिक संघर्ष का लाभ उठाने का पूर्ण प्रयत्न कर प्रोटेस्टेण्टों का समर्थन किया। दूसरी ओर गीज परिवार यद्यपि फ्रांसीसी नहीं था, किन्तु शासनारूढ़ वैलय राजवंश से दूर के सम्बन्ध का दावा कर फ्रांस के सिंहासन पर अपने प्रभुत्व का दावा करता था। यह वर्ग कैथोलिक था। इस प्रकार हेनरी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् कैथरीन डी मैडिसी को भयंकर षड्यन्त्रों एवं ईर्ष्या का सामना करना पड़ा।

कैथरीन डी मैडिसी के लिए दोनों में से किसी की भी शक्ति में वृद्धि उसके लिए हानिकारक थी। अतः उसने दोनों में शक्ति सन्तुलन बनाने का प्रयत्न किया। उसने 1562 ई. से ह्यूगनोटों को पूजा सम्बन्धी सीमित अधिकार प्रदान किए, किन्तु इससे कोई विशेष लाभ न हुआ। एक ओर तो ह्यूगनोट सीमित अधिकारों से सन्तुष्ट नहीं हुए और दूसरी ओर कैथोलिकों ने ह्यूगनोटों को सीमित अधिकार भी प्रदान करना अपना अपमान समझा। अतः दोनों में असन्तोष और तीव्र हो गया। यह असन्तोष अन्दर ही अन्दर इतना प्रबल हो चुका था कि अब इसे केवल चिंगारी दिखाने की देर थी। समय में **'वासी हत्याकाण्ड'** को चिंगारी के रूप में प्रकट कर ही दिया। मार्च, 1562 ई. में ड्यूक ऑफ गीज जब अपने सैनिकों के साथ वासी नामक स्थान से जा रहा था तो उस समय वहां पर हो रही प्रोटेस्टेण्टों की प्रार्थना सभा को उसने तितर-बितर करने का प्रयत्न किया। प्रोटेस्टेण्टों के विरोध करने पर ड्यूक ने सैनिकों को निःशस्त्र प्रोटेस्टेस्टों पर आक्रमण की आज्ञा दे दी। लगभग 50 प्रोटेस्टेण्ट मारे गए और 100 घायल हुए। ड्यूक ऑफ गीज. के पेरिस आगमन पर कैथोलिकों ने उसका भरपूर स्वागत किया। **'कैथरीन डी मैडिसी'** इस घटना के लिए ड्यूक को दण्डित न कर सकी। अतः ह्यूगनोटों ने अपना संगठन मजबूत कर 'ड्यूक ऑफ कान्दे' एवं जल सेना के सेनापति कलगनी के नेतृत्व में खुले विद्रोह को आरम्भ कर दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वासी हत्याकाण्ड के रूप में स्पष्ट रूप से उफनने वाले धार्मिक एवं गृह-युद्धों की पृष्ठभूमि में फ्रांस में इटली के पुनर्जागरण का जबरदस्त प्रभाव एवं उस प्रभाव से धर्म सुधार आन्दोलन का विकास और उस विकास से फ्रांसिस प्रथम व हेनरी के सिद्धान्तों को उत्पन्न होने वाले खतरों के कारण उनके द्वारा अपनायी गई दमन की नीति को चुनौती दी।

धार्मिक संघर्ष का लाभ पुनः शासन में अपनी शक्ति को स्थापित करने के लिए फ्रांसीसी सामन्तों ने अपने-अपने हितों की पूर्ति में किया और इसके लिए किए गए प्रयत्नों को कुचलने में हेनरी द्वितीय के उत्तराधिकारियों की संरक्षिका 'कैथरीन डी मैडिसी' की असफलता ने इस धार्मिक संघर्ष को भयंकर गृह-युद्धों का रूप प्रदान कर दिया। **इस प्रकार कुल मिलाकर फ्रांस में होने वाले धार्मिक एवं गृह-युद्धों के लिए फ्रांसीसी सामन्तों की षड्यन्त्रकारी नीति एवं इन षड्यन्त्रों व परिस्थितियों का सामना कर सकने में कैथरीन डी मैडिसी की अक्षमता ही उत्तरदायी कारक सिद्ध हुए।**

घटनाएँ
(EVENTS)

'वासी हत्याकाण्ड' के रूप में प्रारम्भ होने वाले धार्मिक एवं गृह-युद्ध ने फ्रांस को 1589 ई. तंक अपनी ज्वाला से त्रस्त रखा। इन वर्षों में फ्रांस में युद्ध एवं युद्ध का क्रम जारी रहा। इस क्रम में फ्रांस के इस काल को प्रमुख रूप से 8 युद्धों में विभाजित किया जाता है। लम्बे समय तक चलने वाले इस गृह-युद्ध में प्रारम्भ में कैथोलिकों की विजय हुई, किन्तु ह्यूगनोटों ने अपनी शक्ति एवं साहस को बनाए रखा। यह ठीक है कि युद्ध आरम्भ होने के एक वर्ष पश्चात् ही ड्यूक ऑफ गीज एवं नावारे के राजा की हत्या हो गयी थी, किन्तु प्रोटेस्टेण्ट सेना साहस का परिचय देते.हुए पेरिस तक पहुंच गयी। कैथरीन डी मैडिसी ने समझौते की नीति का पालन करते हुए 1570 ई. में प्रोटेस्टेण्टों के साथ **'सेण्ट जर्मेन की सन्धि'** (Treaty of St. Germain) कर ली। सेण्ट जर्मेन की सन्धि के अनुसार, **'कैथरीन ने ह्यूगनोटों को पूजा सम्बन्धी सीमित अधिकार प्रदान किए। ह्यूगनोटों के लिए सार्वजनिक नौकरियों में चयन के प्रतिबन्ध को हटा दिया गया। ह्यूगनोट सम्प्रदाय को राजकीय मान्यता मिल गयी। ह्यूगनोटों को 1 वर्ष के लिए सुरक्षा की दृष्टि से 4 प्रसिद्ध दुर्ग दिए गए। चार्ल्स नवम ने अपनी बहिन मार्गरेट का विवाह नावारे के युवराज हेनरी से कर दिया।''** इस प्रकार सेण्ट जर्मेन की सन्धि ने विरोधी सम्प्रदायों में मैत्री स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

किन्तु स्थिति अधिक समय तक यथावत् नहीं रही। चार्ल्स नवम ने चतुर कूटनीतिज्ञ **'कलीगनी'** के प्रभाव से प्रभावित होकर कैथरीन के प्रभाव से स्वतः को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया। कैथरीन के लिए यह असह्य था। उसने कलीगनी को अपने मार्ग से हटाने के लिए कैथोलिक नेता ड्यूक ऑफ गीज को समर्थन देना आरम्भ कर दिया। कैथोलिकों ने कलीगनी की हत्या के प्रयास आरम्भ कर दिए। हत्या के इस प्रयास में एक मौके पर कलीगनी एक कैथोलिक की गोली से घायल हो गया। चार्ल्स नवम् द्वारा ह्यूगनोटों की जांच की मांग को स्वीकार करना कैथरीन के लिए जहर पीने के बराबर था। कैथरीन ने दुर्बल शासक पर दबाव डलवाकर ह्यूगनोट नेताओं की सार्वजनिक हत्या की अनुमति प्राप्त कर ली। कैथरीन ने षड्यन्त्र रचकर 24 अगस्त, 1572 ई. को **'सेण्ट बार्थोलोम्यू दिवस'** के अवसर पर एकत्रित हुए ह्यूगनोट नेताओं पर आक्रमण कर उनका कत्ल करवाया। इस प्रकार के हत्याकाण्ड पेरिस के अलावा फ्रांस के अन्य नगरों में भी क्रियान्वित किए गए। प्रमुख ह्यूगनोट नेता कलीगनी मारा गया। ह्यूगनोटों के केवल दो प्रमुख नेता इस हत्या के षड्यन्त्र से बच गए, इन दोनों के नाम राजकुमार कान्दे एवं हेनरी नावारे.थे। इस भीषण रक्तपात ने फ्रांस में भयंकर अस्त-व्यस्तता को जन्म दे दिया। डॉ. हीरालाल सिंह के अनुसार, **''इस सांघातिक प्रहार ने ह्यूगनोट सम्प्रदाय को निर्बल तो अवश्य कर दिया, परन्तु अब अपने अधिकारों और अस्तित्व की रक्षा के लिए उसने दृढ़तर तैयारी की।''**[1] इस हत्याकाण्ड ने कैथोलिकों को दो वर्गों में विभक्त कर दिया। **प्रथम** वर्ग उन कट्टर एवं असहिष्णु कैथोलिकों का था जो गीज परिवार के समर्थक थे और **द्वितीय** वर्ग में वे मध्यवर्गी कैथोलिक थे जो कि कैथोलिक सम्प्रदाय की प्रतिस्थापना तो चाहते थे, किन्तु रक्तपात के विरोधी थे। मध्यमार्गी कैथोलिकों ने अब राष्ट्रीय हित को प्रधानता देते हुए, हेनरी नावारे का समर्थन किया।

1 डॉ. हीरालाल सिंह, **आधुनिक यूरोप का इतिहास**, पृ. 125.

इधर फ्रांस की सत्ता पर चार्ल्स नवम् की मृत्यु के पश्चात् उसका भाई हेनरी तृतीय (1574-1589) आसीन हुआ। वह भ्रष्ट एवं दुश्चरित्र शासक सिद्ध हुआ। अतः उसके शासनकाल में फ्रांस में पुनः गृह-युद्ध आरम्भ हो गया जिसे इतिहास में **'तीन हेनरियों के युद्ध'** (War of the three Henries) के नाम से जाना जाता है। हेनरी द्वितीय के तीनों उत्तराधिकारी पुत्रों के निःसन्तान होने के कारण फ्रांस के उत्तराधिकारी के प्रश्न को लेकर कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय पुनः चिन्तित हो उठे। मध्यममार्गी कैथोलिक **'नावारे हेनरी'** जो बूर्बांवंशीय था को वैलय राजवंश का निकट सम्बन्धी बतलाकर समर्थन कर रहे थे, किन्तु कट्टर कैथोलिकों, गीज परिवार के लिए हेनरी नावारे उपयुक्त नहीं था। अतः कट्टर कैथोलिकों ने गीज परिवार के **'ड्यूक हेनरी'** का समर्थन कर **'कैथोलिक लीग'** (Catholic League) की स्थापना की। **'कैथोलिक हेनरी ड्यूक ऑफ गीज'** को रोम के पोप तथा स्पेनी शासक फिलिप द्वितीय का भी समर्थन प्राप्त था। इस स्थिति में सत्ता पर आसीन वैलय वंश **हेनरी तृतीय** ने शान्ति एवं सुलह की नीति को अपनाते हुए परिस्थितियों पर नियन्त्रण पाने का प्रयत्न किया, किन्तु वह असफल रहा। **अतः शीघ्र ही फ्रांस में 'तीन हेनरियों का युद्ध'** (1588-1589) आरम्भ हो गया।

सत्ता पर अधिकार स्थापित करने के तीनों इच्छुक दलों ने नेताओं के नाम हेनरी होने से इतिहास में इस युद्ध को **'तीन हेनरियों के युद्ध'** के नाम से जाना जाता है। 1588-1589 ई. में यद्यपि शासन सूत्र हेनरी तृतीय के हाथ में था, किन्तु वास्तविक सत्ता 'हेनरी ड्यूक ऑफ गीज' के पास थी। उसने पेरिस पर अपना विशेष प्रभाव स्थापित कर लिया था। हेनरी तृतीय ने ड्यूक ऑफ गीज के विरुद्ध 'स्टेट्स जनरल' की बैठक बुलाई, किन्तु स्टेट्स जनरल ने ड्यूक ऑफ गीज का समर्थन किया। अतः हेनरी तृतीय ने 1588 ई. में ड्यूक ऑफ गीज एवं उसके छोटे भाई लॉरेन के कार्डिनल की हत्या करवा दी। हत्या के तुरन्त पश्चात् हेनरी तृतीय ने अपनी मरणासन्न माता कैथरीन डी मैडिसी से कहा, **"मैंने पेरिस के राजा की हत्या करवा दी है। अब मैं फ्रांस का वास्तविक शासक हूं।"** इस पर कैथरीन ने उत्तर दिया **"ईश्वर करे ऐसा ही हो, किन्तु क्या तुम दूसरे नगरों से निश्चिन्त हो?"** राजमाता के इस उत्तर ने निःसन्देह हेनरी तृतीय को 'कैथोलिक लीग' के समर्थकों का पूर्ण दमन करने के लिए प्रेरित किया। अतः हेनरी तृतीय के 'हेनरी नावारे' से मिलकर अपनी स्थिति को नियन्त्रित करने का प्रयत्न किया क्योंकि कैथोलिक लीग ने हेनरी तृतीय के सभी आदेशों को अमान्य घोषित कर दिया। कट्टर कैथोलिकों का दमन करने के लिए अब हेनरी नावारे तथा हेनरी तृतीय की संयुक्त सेनाओं ने अभियान आरम्भ कर पेरिस का घेरा डाल दिया और शत्रुओं को बुरी तरह परास्त किया। **इस संघर्ष में 1589 में हेनरी तृतीय की एक कट्टर कैथोलिक ने हत्या कर दी।** मृत्यु से पूर्व हेनरी तृतीय ने हेनरी ऑफ नावारे को अपना वैध उत्तराधिकारी घोषित किया। फ्रांस की जनता जो कि धार्मिक गृह-युद्धों से थक चुकी थी, अब शान्ति चाहती थी। अतः स्थिति की अनुकूलता देख 'हेनरी नावारे' **हेनरी चतुर्थ (HENRY IV) के नाम से फ्रांस का शासक बना।** इस प्रकार अब फ्रांस का नेतृत्व वैलय राजवंश के स्थान पर बोर्बो राजवंश के हाथ में आ गया।

हेनरी चतुर्थ (1589-1610)
(HENRY IV)

फ्रांस को धार्मिक एवं गृह-युद्धों की विभीषिका से बचाकर सुसंगठित एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फ्रांस के गौरव को प्रतिष्ठित करने का कार्य हेनरी चतुर्थ ने उस समय किया जबकि

फ्रांस की जनता धार्मिक एवं गृह-युद्धों से तंग आ चुकी थी और शान्तिपूर्ण शासन की पक्षपाती थी। फ्रांसीसी जनता की इस आकांक्षा को अपनी योग्यता एवं कर्मठता से पूर्ण कर हेनरी ने निःसन्देह स्वतः को योग्य शासक सिद्ध किया।

हेनरी चतुर्थ की गृह एवं धार्मिक नीति
(HOME AND RELIGIOUS POLICY OF HENRY IV)

1589 ई. में हेनरी नावारे 'हेनरी' की उपाधि धारण कर फ्रांस का शासक तो बन गया था, किन्तु उसके लिए यह उपाधि अत्यन्त समस्याओं से युक्त थी, राज्यारोहण के समय उसके सम्मुख निम्नलिखित समस्याएं थीं :

(1) **धार्मिक समस्या** (Religious Problem)—हेनरी चतुर्थ ह्यूगनोट सम्प्रदाय का था। अतः फ्रांस के बहुसंख्यक कैथोलिक उसे फ्रांस का शासक मानने के लिए कदापि तैयार नहीं थे। उसे व्यक्तिगत रूप से तो कैथोलिक होने में कोई परेशानी नहीं थी, किन्तु धर्म-परिवर्तन से ह्यूगनोटों की अप्रसन्नता का खतरा उसे अवश्य था। पेरिस का घेरा उसे दो बार डालकर उठाना पड़ा था। विनाशकारी गृह-युद्ध की विभीषिका उसके सम्मुख मुंह फाड़े खड़ी थी।

(2) **सामन्तों की समस्या** (Feudal-Problem)—हेनरी चतुर्थ फ्रांस का शासक उन भयंकर गृह-युद्धों के पश्चात् बना था जिसके पीछे सामन्तों की स्वतन्त्रता एवं शासन में शक्ति प्राप्त करने की अभिलाषा भी प्रमुख रूप से उत्तरदायी थी। ह्यूगनोट सामन्तों की बढ़ती हुई शक्ति एवं स्वतन्त्रता निःसन्देह फ्रांस के सुदृढ़ राजतन्त्र के विकास के लिए खतरा ही थे। सामन्त राजतन्त्र के विरोधी एवं अवज्ञाकारी हो गए थे।

(3) **आर्थिक समस्या** (Economic Problem)—हेनरी चतुर्थ को भयंकर आर्थिक समस्या का भी सामना करना पड़ा। पिछले बीस वर्षों में फ्रांस में धार्मिक संघर्ष एवं गृह-युद्धों का जो भयंकर दौर चला था उससे फ्रांस का आर्थिक विकास अवरुद्ध हो गया था। व्यापार एवं उद्योग चौपट था। कृषि का पतन हो गया था। उद्योग-धन्धों की प्रगति रुक गई थी। लुटेरों का आतंक सर्वत्र व्याप्त था। जन व धन की सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न लगा हुआ था। राज्य कोष रिक्त पड़ा हुआ था। राजस्व की वसूली का आधार ठेकेदारी प्रथा था। असमानता एवं विशेषाधिकारों के सिद्धान्त ही राजस्व व्यवस्था का आधार थे।

(4) **प्रशासनिक समस्याएं** (Administrative Problems)—गृह-युद्ध के पश्चात् हेनरी चतुर्थ को जिस फ्रांस पर शासन करना था वह विद्वेष, प्रतिहिंसा, षड्यन्त्र, लूट-खसोट एवं प्रशासनिक विश्रृंखलता का रूप धारण किए था। लुटेरों के आतंक से जन सामान्य आतंकित था। सर्वत्र भय व पीड़ा व्याप्त थी। सुरक्षा का अभाव था। देश में किसी ऐसी सार्वभौम अथवा सर्वमान्य सरकार का अभाव था जो कि देश में कानून एवं सुव्यवस्था स्थापित कर सकती। सामन्त वर्ग अराजकता, अनैक्यता एवं स्थानीय स्वतन्त्रता का पक्षपाती था। दक्षिणी फ्रांस सामन्तों की अराजकता का अड्डा बन चुका था। कुल मिलाकर सुदृढ़ राजतन्त्र की पुनर्स्थापना उसे करनी थी।

इस प्रकार हेनरी चतुर्थ को फ्रांस के शासक की उपाधि धारण करते ही उत्तराधिकार की मान्यता के प्रश्न से लेकर अव्यवस्थित एवं विश्रृंखलित फ्रांस को सुदृढ़ राजतन्त्र के रूप में प्रतिष्ठित करने के सम्बन्ध में आने वाली आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं तक का सामना करना पड़ा।

समस्याओं का निदान (Solution of the Problems)

हेनरी चतुर्थ के सम्मुख जो समस्याएं मौजूद थीं उनके निराकरण के लिए अत्यधिक लगन, धैर्य, शक्ति, प्रतिभा, साहस एवं कार्यकुशलता की नितान्त आवश्यकता थी। निःसन्देह उसमें प्रतिभा मौजूद थी। **यही कारण है कि वह फ्रांस में उक्त कठिनाइयों में भी सुदृढ़ राजतन्त्र निम्नांकित तरीके से स्थापित कर सका :**

(1) **धर्म परिवर्तन** (Change of Religion)—हेनरी चतुर्थ को सर्वप्रथम तो फ्रांस के जनमत को अपने पक्ष में करना था। अतः उसने अपने व्यक्तिगत धार्मिक विचारों का परित्याग कर जुलाई 1593 ई. में कठिन संघर्ष के पश्चात् कैथोलिक धर्म की दीक्षा प्राप्त की। **हेनरी के धर्म परिवर्तन का सीधा प्रभाव पड़ा। अब फ्रांस के कतिपय नगरों व प्रान्तों ने उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया।** फ्रांस का जनमत उसके साथ था। पेरिस की रक्षा यद्यपि स्पेनी सेना कर रही थी, किन्तु वहां की जनता अब हेनरी के पक्ष में थी। स्पेनी सेना को अब विवश होकर वापस होना पड़ा। रोम के पोप ने भी हेनरी के धर्म-परिवर्तन को मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार हेनरी ने उत्तराधिकार सम्बन्धी जनमत की बाधा को धर्म-परिवर्तन कर दूर किया, और 1598 ई. में स्पेन के साथ **वरविन्स की सन्धि** (Treaty of Vervins) कर फ्रांस से स्पेनी हस्तक्षेप का अन्त भी कर दिया।

(2) **नान्टेस की राजाज्ञा** (The Edict of Nantes : 1598)—हेनरी चतुर्थ के धर्म-परिवर्तन से कैथोलिक धर्मानुयायियों की ओर से तो वह सन्तुष्ट हो गया था, किन्तु उसके संकट के समय के प्रोटेस्टेण्ट मित्र उसके इस कार्य से अत्यन्त रुष्ट हो गए। ह्यूगनोटों का विचार था कि **''जो व्यक्ति धर्म-परिवर्तन कर सकता है वह दूसरे के धर्म की रक्षा नहीं कर सकता।''** स्थिति इतनी गम्भीर हो गई थी कि उसके दुर्दिन के मित्र तक ने उसका साथ छोड़ना आरम्भ कर दिया। अतः हेनरी ने 15 अप्रैल, 1598 ई. को **'नान्टेस का अध्यादेश'** (Edict of Nantes) जारी कर ह्यूगनोटों को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। इस अध्यादेश से ह्यूगनोटों की धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। फ्रांस के लगभग 200 निर्धारित नगरों तथा 3,500 दुर्गों में उन्हें पूजा सम्बन्धी अधिकार प्राप्त हुआ। वे इन नगरों में सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल एवं कॉलेज खोलने एवं पुस्तकों के प्रकाशन के अधिकारी हो गए। ह्यूगन धर्माधिकारियों पर लगी सैनिक सेवा सम्बन्धी बाध्यता से उन्हें मुक्त कर दिया गया। उन्हें खर्च के लिए राजकोष से निश्चित धन देने की व्यवस्था की गई। ह्यूगनों को नागरिकता के व्यापक अधिकार मिल जाने से प्रत्येक सरकारी नौकरी में उनकी नियुक्ति सम्भव हो गई। ह्यूगनोट न्यायाधीशों की नियुक्ति फ्रांस के सर्वोच्च न्यायालय (पार्लियामेण्टों) में होने लगी। अब ह्यूगनोट अपनी सभाएं कर सकते थे। यही नहीं, कतिपय निर्धारित अभियोगों में उन्हें स्वयं निर्णय करने का अधिकार भी प्राप्त हो गया। उनके धार्मिक एवं नागरिक अधिकार सुरक्षित रहे, इस बात को दृष्टि में रखते हुए उन्हें 75 दुर्ग एवं सैन्य नगर प्रदान किए गए। इन दुर्गों व सैन्य नगरों में नियुक्त सैनिकों को वेतन राजकोष से मिलता था। इनमें सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति ह्यूगनोटों के अधिकार में थी। इस अधिकार की अवधि पूर्व में 1607 तक थी, किन्तु बाद में इसे 1612 तक बढ़ा दिया गया।

इस प्रकार 'नान्टेस की राजाज्ञा' ने ह्यूगनोटों को पर्याप्त धार्मिक स्वतन्त्रता एवं अधिकार प्रदान कर दिया। हेज के शब्दों में, **''नान्टेस की राजाज्ञा का धार्मिक उदारता की आधुनिक**

कहानी में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था।''[1] **निःसन्देह तत्कालीन धार्मिक असहिष्णुता के युग में धार्मिक उदारता का यह प्रथम प्रशंसनीय प्रयोग था।** इस राजाज्ञा ने भयंकर गृह-युद्ध को समाप्त कर दिया। यह स्पष्ट हो गया कि यूरोप में कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेण्ट धर्मों को जड़ से उखाड़ने के प्रयास बेकार हैं। देश में शान्ति स्थापित हो जाने से अब देश के बहुमुखी विकास की ओर अधिक समय मिलने की सम्भावना स्पष्ट हो गई। इस प्रकार नान्टेस की राजाज्ञा ने फ्रांस के बहुमुखी विकास के द्वार को खोल दिया। नान्टेस की राजाज्ञा के विषय में फिशर ने लिखा है, **''नान्टेस की राजाज्ञा सभ्यता के इतिहास में उल्लेखनीय है क्योंकि इसने पहली बार यह सिद्ध किया कि एक ही राजतन्त्र की छत्र-छाया में एक से अधिक मतावलम्बी धार्मिक संघ बना सकते हैं।''**[2]

किन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत नहीं होगा कि 'नान्टेस की राजाज्ञा' दोषरहित थी। कैथोलिकों ने इसे उदारवादी योजना की संज्ञा दी तो प्रोटेस्टेण्टों ने इसे अपर्याप्त माना। इस राजाज्ञा ने देश के दशमांश से कम ह्यूगनोटों को अधिकार व सुविधाएं तो प्रदान कर दीं, किन्तु अन्य सम्प्रदायों को इन अधिकारों व सुविधाओं से वंचित रखा। **कब कैथोलिकों ने उसे बुरा कैथोलिक कहा तो प्रोटेस्टेण्टों ने उसे बुरा प्रोटेस्टेण्ट कहा।** ह्यूगनोटों को मिली धार्मिक स्वतन्त्रता ने ह्यूगनोट सामन्तों की शक्ति व स्वतन्त्रता में असीमित वृद्धि कर दी। इससे विकेन्द्रीकरण की शक्ति को बल मिला, क्योंकि अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ह्यूगनोट सामन्तों ने नगरों व दुर्गों का प्रबल संघ बनाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार **''नान्टेस की राजाज्ञा ने फ्रांसीसी राष्ट्र के अनन्तर एक स्वतन्त्र राज्य के निर्माण में योगदान दिया।''** इस समस्या से कालान्तर में फ्रांसीसी प्रधानमन्त्री रिशलू को जूझना पड़ा।

(3) **सुदृढ़ राजतन्त्र की स्थापना (Establishment of Monarchy)**—फ्रांसीसी गृह-युद्धों ने दलबन्दी की जिस प्रवृत्ति को जन्म दे दिया था वह राजतन्त्र की शक्ति के विकास के लिए अत्यन्त घातक थी। फ्रांस में सामन्तों ने अपनी शक्ति का अत्यधिक विकास कर लिया था। अतः हेनरी चतुर्थ ने प्रारम्भ में तो सुलह की नीति अपनायी, किन्तु जब स्थिति नियन्त्रित न हुई तो उसे दमन की नीति अपनानी पड़ी। **प्रारम्भ में उसने बिरो (Brion) नामक शक्तिशाली सरदार को मार्शल, ड्यूक एवं बर्गण्डी का गवर्नर बनाकर अपना विश्वासपात्र बनाने का प्रयत्न किया, किन्तु बिरो के कारनामों से उसका यह प्रयत्न असफल रहा।** बिरो की षड्यन्त्रकारी गतिविधियां बढ़ती गयीं। अतः पार्लियामेण्ट द्वारा उसे देशद्रोही घोषित कर मृत्यु-दण्ड प्रदान करना पड़ा। दक्षिणी फ्रांस के सामन्तों के दुर्गों को नष्ठ कर उनका दमन किया गया। ह्यूगन सरदार बेयो को पराजित कर उसकी राजधानी सेदां पर उसने अपना अधिकार स्थापित कर लिया। ह्यूगनों की अप्रसन्नता को दुर्गों में अधिकारियों की नियुक्ति सम्बन्धी उनकी अधिकार अवधि को 1607 से 1612 कर प्रसन्नता में बदल दिया गया। इस प्रकार अपने विरोधों का अन्त कर हेनरी चतुर्थ ने फ्रांस में अपनी सत्ता को स्थापित कर लिया।

---

1 "This grant, the edict of Nantes (1598), was highly significant in the modern story of the slow painful growth of religious liberty."
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 178.

2 "The Edict of Nantes is notable in the history of civilization as the first public recognition of the fact that more than one religious communion can be maintained in the same polity."
—H. A. L. Fisher : *A History of Europe*, p. 584.

(4) **सुधार कार्य (Reforms)**—शासन में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के पश्चात् हेनरी चतुर्थ ने आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण फ्रांस के पुनरुद्धार के लिए संकल्प लिया। इस कार्य के लिए उसने अपने ह्यूगनोट मित्र बेरन रोनी को जिसे 1606 में सली के ड्यूक की उपाधि दी गई अपने अर्थ विभाग का अंध्यक्ष चुना। हेज के शब्दों में, **"यह फ्रांस का सौभाग्य था कि उसे हेनरी चतुर्थ एवं सली जैसे दो व्यक्तियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ।"**[1] वास्तव में सली की राजभक्ति, अदम्य उत्साह एवं कार्यक्षमता तथा प्रतिभा ने हेनरी चतुर्थ को अत्यंन्त प्रभावित किया था। यही कारण है कि दोनों में चारित्रिक विषमता होने पर भी दोनों ने मिलकर सफलतापूर्वक फ्रांस के उत्थान का कार्य किया।

(i) **ड्यूक ऑफ सली ने सर्वप्रथम जर्जरित आर्थिक एवं प्रशासनिक स्थिति को ठीक किया।**[2] उसने राजस्व विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं व्यभिचार को दूर करने के लिए कठोरता से काम किया। अर्थ-विंभाग के हिसाब का परीक्षण किया गया। सामन्तों से प्रजा से सीधे धन-संग्रह के अधिकार को समाप्त कर दिया गया। अब राजस्व संग्रह के लिए राज्य की ओर से कर्मचारी नियुक्त किए गए। अनावश्यक राज्य कर्मचारियों को अपदस्थ कर लिया गया। प्रान्तीय गवर्नरों के कार्यों पर नियन्त्रण स्थापित किया गया। अब प्रत्येक प्रान्त में नए राज्य कर्मचारियों की नियुक्ति प्रान्तीय गवर्नरों के कार्यों पर नियन्त्रण स्थापित करने के उद्देश्य से की गई। ये नए राज्य कर्मजारी राजा के प्रति उत्तरदायी थे क्योंकि इनकी नियुक्ति, पदोन्नति एवं पदच्युति का अधिकार राजा के पास थे। यहीं नहीं, सिली के राजकीय व्यय तथा सेना पर होने वाले व्यय को भी निश्चित कर दिया।

(ii) **कृषि के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया गया।** कृषि के उत्थान के लिए नई कृषि प्रणाली को प्रोत्साहित किया गया। कृषि के उत्पादन के पीछे लक्ष्य यह रखा गया कि फ्रांस कृषि उत्पादन के क्षेत्र में यूरोप का प्रथम देश बने। अतः दलदल एवं बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाया गया। नहरों की उचित व्यवस्था की गई। कृषकों की रक्षा के समुचित उपाय किए गए। आन्तरिक चुंगियों को हटा दिया गया। पशुओं की नस्लों में सुधार किया गया। फसलों पर से सभी निर्यात कर हटा दिए गए। फलतः फ्रांस से अनाज का निर्यात एकदम बढ़ गया और शीघ्र ही फ्रांस एक महत्वपूर्ण कृषि उत्पादक देश बन गया। यहां उल्लेखनीय है कि हेनरी चतुर्थ का नारा था, **"रविवारीय भोजन में प्रत्येक किसान की थाली में मुर्गा।"**[3]

(iii) **यह ठीक है कि सली की उद्योग-धन्धों एवं व्यापार के क्षेत्र में कोई विशेष रुचि नहीं थी, किन्तु हेनरी चतुर्थ ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए उद्योग-धन्धों व व्यापार के क्षेत्र में विकास का हर सम्भव प्रयत्न किया।** लियन्स एवं नीमेस नामक नगरों के रेशम उद्योग को विकसित किया। पेरिस एवं नेवर के शीशे, मिट्टी के बर्तन, ऊन एवं लौह उद्योगों को राज्याश्रय दिया गया। सड़कों, पुलों एवं नहरों का जीर्णोद्धार व्यापारिक दृष्टि से किया गया जिससे कि आवागमन में सुविधा हो। तुर्की, इंग्लैण्ड एवं हालैण्ड से व्यापारिक सन्धियां की गयीं। राजकीय सहायता से एक जहाजी बेड़ा एवं नौसेना के गठन के पीछे एकमात्र उद्देश्य सेनी व्यापार

1 "It was fortunate for France to have two men like Henry IV and Sully, each supplementing the work of other." —Hayes : *Ibid.*, p. 254.

2 "The combined efforts of Henry IV and Sully did much to replenish the exausted treasury, to reduce the national debt and to revive the prosperity of France." —A. J. Grant : *A History of Europe From* 1494 to 1610, p. 342.

3 "A Chicken in the pot of every peasant for Sunday dinner".

के एकाधिकार को समाप्त करना ही था। उसकी इस नीति ने शीघ्र ही फ्रांस के व्यापार को बढ़ा दिया। हेज के शब्दों में, **''पेरिस एवं लियो (लियन) की उल्लेखनीय प्रगति वास्तव में हेनरी चतुर्थ के शासनकाल से ही प्रारम्भ हुई।''**[1] हेनरी के प्रयत्नों के कारण ही फ्रांस ने भारत एवं उत्तरी अमरीका में व्यापारिक कोठियां खोल पाने में सफलता प्राप्त की। **इस प्रकार शनैः-शनैः व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में स्पेनी एकाधिकार को समाप्त करने में फ्रांस ने सफलता प्राप्त की।**[2]

इस प्रकार माना जा सकता है कि हेनरी चतुर्थ ने राज्यारोहण के समय जिस स्थिति में फ्रांस को पाया था, वह धार्मिक विद्वेष की विभीषिका में जल रहा था और उसकी ज्वालाओं ने फ्रांस को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में झुलस कर रख दिया था। **हेनरी चतुर्थ ने स्वयं उसके उत्तराधिकार को मिलने वाली चुनौती का सामना कर अपनी समस्याओं का निदान ही नहीं किया, अपितु फ्रांस को विभीषिका की भयंकर ज्वाला से बचा भी लिया। इस दृष्टि से उसकी गृह-नीति सफल मानी जा सकती है।**

हेनरी चतुर्थ की विदेश-नीति
(FOREIGN-POLICY OF HENRY IV)

हेनरी चतुर्थ ने सुस्पष्ट विदेशी नीति का अवलम्बन किया। तत्कालीन राजनीतिक परिवेश में उसकी विदेश नीति पूर्णतः राजनीतिक एवं धार्मिक थी। उसकी विदेश नीति के **दो प्रमुख उद्देश्य थे। प्रथम**, वह स्पेन एवं आस्ट्रिया के हैप्सबर्गीय राजवंश की यूरोपीय प्रतिष्ठा में कमी लाना चाहता था और **द्वितीय**, यूरोप की राजनीति में फ्रांस की प्रतिष्ठा को स्थापित करना चाहता था। **ये दोनों उद्देश्य ही उसकी विदेश नीति का प्रमुख आधार-स्तम्भ थे।**

हेनरी चतुर्थ के राज्यारोहण के समय फ्रांस को स्पेन एवं आस्ट्रिया की हैप्सबर्गीय सीमाओं ने चारों ओर से घेर रखा था। साथ ही स्पेन की सेनाएं तो फ्रांस के गृह-युद्धों का लाभ उठाकर पेरिस में अड्डा जमाए हुए थीं। स्वाभाविक रूप से स्पेन से उसकी शत्रुता जायज थी क्योंकि कोई भी प्रबल शासक अपने राज्य के भीतर विदेशी सेनाओं का जमाव सहन नहीं कर सकता। हेज ने ठीक ही लिखा है, **''हेनरी चतुर्थ ने स्पेन का सम्मान फ्रांस के मुख्य प्रतिद्वन्द्वी एवं स्वाभाविक शत्रु के रूप में किया।''**[3] फ्रांस की राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिए उसने अपना धर्म-परिवर्तन भी किया। धर्म-परिवर्तन करने से पेरिस की कैथोलिक जनता उसकी पक्षपाती हो गई। अतः अब स्पेन को अपनी सेनाएं पेरिस से हटानी पड़ी। फ्रांस के गृह-युद्ध की समाप्ति होते ही उसने अब 1595 ई. में स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 1598 तक चलने वाले इस फ्रेंको-स्पेनिश युद्ध का अन्त **बरविन्स की सन्धि** (Treaty of Vervins) के रूप में हुआ। इस सन्धि के अनुसार स्पेन ने हेनरी चतुर्थ के राज्यारोहण को मान्यता प्रदान कर दी तथा **'कैटियो कैम्ब्रेसिस'** की सन्धि की पुनरावृत्ति हुई। इस प्रकार फ्रांस के घरेलू मामलों में स्पेनिश हस्तक्षेप का अन्त करने में हेनरी चतुर्थ को सफलता मिली।

अब हेनरी को फ्रांस की सीमाओं की रक्षा करनी थी। **फ्रांस की सीमाओं का हैप्सबर्गीय राजवंश की सीमा से घिरा होना फ्रांस के लिए सदा ही खतरे की घण्टी के सदृश था।** अतः उसने पहले तो स्पेन एवं आस्ट्रिया के विरोधी राष्ट्रों (जर्मनी, हालैण्ड, इटली एवं उत्तरी यूरोपीय

1 "A marked stimulus to the economic development of Paris and Lynos dates from the reign of Henry IV."
2 हेज, पूर्वोक्त, पृ. 244.
3 "Henry IV had regarded Spain as the chief rival and natural enemy of France."
—Hayes : *Modern Europe to 1870*, p. 245.

राज्य) को संगठित करने का प्रयत्न किया। वह शान्तिपूर्ण तरीके से विश्व की समस्याओं के निदान के लिए एक **'विश्व संघ'** बनाना चाहता था। निःसन्देह उसकी यह योजना एक 'महान योजना' थी, किन्तु तत्कालीन राजनीतिक परिवेश में उसका यह प्रयत्न असफल रहा। अतः अब हेनरी चतुर्थ ने स्पेन के सबसे दुर्बल साथी उत्तरी इटली पर फ्रांसीसी प्रभाव डालने का प्रयत्न किया। उसने तुरन्त 1600 ई. **में टस्कनी की प्रसिद्ध राजकुमारी (मैडिसी राजवंश) 'मेरी डी मैडिसी' से विवाह कर लिया।** 1601 ई. **में उसने 'सेवाय' के साथ मैत्रीपूर्ण** सम्बन्ध स्थापित किए। 1607 ई. **में उसने 'वेनिस' के साथ** सन्धि कर ली। इस प्रकार मिलान को छोड़कर उसने सम्पूर्ण उत्तरी इटली में हैप्सबर्गीय प्रभाव का अन्त कर दिया और फ्रांस को एक दिशा से सुरक्षित कर दिया।

अब हेनरी चतुर्थ ने उन प्रोटेस्टेण्ट राज्यों को सहायता प्रदान करना आरम्भ कर दिया जो कि आस्ट्रिया के सम्राट या जर्मन सम्राट के प्रभाव से भयभीत थे। तुर्की को आस्ट्रिया पर आक्रमण के लिए प्रेरित करने की उसकी नीति इसका प्रबल प्रमाण है। 1609 ई. में जब जर्मनी में जूलिक एवं क्लीब राज्यों में उत्तराधिकार के लिए गृहयुद्ध आरम्भ हुआ तो हेनरी चतुर्थ ने वहां की राजनीति में हस्तक्षेप कर प्रोटेस्टेण्टों को समर्थन दिया। स्थिति यह हो गई थी कि कभी भी आस्ट्रिया एवं स्पेन के हैप्सबर्गीय राष्ट्रों से फ्रांस का युद्ध हो जाएगा, **किन्तु इसी बीच 14 मई, 1610 ई. को एक कट्टर कैथोलिक रावेलॉक नामक व्यक्ति ने हेनरी चतुर्थ की हत्या कर दी।**

इस प्रकार रावेलॉक द्वारा हेनरी चतुर्थ की हत्या किए जाने से स्पेन एवं आस्ट्रिया के हैप्सबर्गीय राजवंश से फ्रांस के युद्ध की सम्भावना को टाल दिया, किन्तु यह तो स्वीकार करना ही होगा कि **अब फ्रांस के गौरव की वृद्धि के लिए फ्रांस की आस्ट्रो-स्पेनी अपमान की नीति आरम्भ हो गई।** हेनरी चतुर्थ अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों की पूर्ति करने में असफल रहा।

हेनरी चतुर्थ के चरित्र का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE CHARACTER OF HENRY IV)

हेनरी चतुर्थ व्यक्तिगत रूप से उच्च चरित्र वाला नहीं था और उसके अनैतिक कार्यों से उसका चरित्र वांछित भी था, किन्तु निःसन्देह उसका महत्व उसकी देश के प्रति सत्यनिष्ठा एवं अगाध प्रेम के कारण स्मरणीय है। **उसमें साहस, वीरता एवं असीम धैर्य तो था ही, उसकी हत्या के लिए किए गए सत्रह प्रयत्नों ने उसे जनप्रिय बना ही दिया।** इस जनप्रियता को यथावत् बनाए रखने के लिए उसने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने धर्म को राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र मानते हुए देश की सुरक्षा हेतु स्वयं धर्म परिवर्तन किया। यही नहीं, कैथोलिक बनने के उपरान्त भी उसने प्रोटेस्टेण्टों के हितों का पूर्ण ध्यान रखा। निःसन्देह उसने धार्मिक समस्या का उस समय की परिस्थिति में सन्तोषप्रद हल निकाला था। राज्यारोहण के समय उसने क्षतविक्षप्त अवस्था में फ्रांस को पाया था, किन्तु उसके अथक प्रयत्नों ने फ्रांस के राष्ट्रीय गौरव को तो स्थापित कर ही दिया साथ ही फ्रांस को सुसंगठित भी कर लिया। **एक कुशल कूटनीतिज्ञ होने के कारण ही उसने फ्रांस की साहसपूर्ण विदेश नीति को स्पष्ट कर दिया,** किन्तु उसकी असामयिक मृत्यु ने फ्रांस के लिए संकट उत्पन्न कर दिया। इस संकट से फ्रांस को 15 वर्षों के पश्चात् उस समय मुक्ति की सम्भावनाएं दृष्टिगत हुईं जबकि हेनरी

चतुर्थ के उत्तराधिकारी लुई त्रयोदश ने रिशलू को अपना प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। निःसन्देह उसकी नीतियां आगामी फ्रांस के लिए प्रतीक बन गईं।

लुई त्रयोदश का शासनकाल (1610-1643)
(REGIME OF LOUIS XIII)

हेनरी चतुर्थ की असामयिक मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र लियो त्रयोदश 5 वर्ष की आयु में फ्रांस का शासक बना और उसने 1610 ई. से 1643 ई. तक शासन किया। **लुई तेरहवें के शासनकाल को दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम भाग** वह था जबकि फ्रांस पर हेनरी चतुर्थ की पत्नी मेरी डी मैडिसी ने संरक्षिका के रूप में शासन किया और **द्वितीय भाग** वह था जब लुई त्रयोदश ने बालिग हो जाने पर शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली और कार्डिनल रिशलू को अपना प्रधानमन्त्री एवं सलाहकार नियुक्त किया। **संक्षेप में, उसके शासनकाल के दोनों भागों के वर्णन निम्नवत् हैं—**

संरक्षिका मेरी डी मैडिसी का संरक्षण काल (1610-1617)
(REGIME OF THE REGENT MARIE DE' MEDICI)

लुई त्रयोदश के नाबालिग होने के कारण हेनरी चतुर्थ की पत्नी मेरी डी मैडिसी ने लियो त्रयोदश की संरक्षिका के रूप में 1610 ई. से 1617 ई. तक फ्रांस पर शासन किया। मेरी डी मैडिसी फ्लोरेन्स के प्रसिद्ध मैडिसी राजवंश की राजकुमारी थी। इतिहासकार हेज ने उसे **'महत्वाकांक्षी किन्तु अयोग्य कहा है।'[1] उसके संरक्षण में फ्रांस की गृह एवं विदेश नीति का संक्षिप्त उल्लेख निम्नवत् है :**

गृह-नीति (Home Policy)

मेरी डी मैडिसी ने हेनरी चतुर्थ की गृह-नीति के सिद्धान्तों का परित्याग कर हेनरी चतुर्थ के द्वारा किए गए सुधारों पर पानी फेर दिया। संरक्षिका बनते ही उसने योग्य एवं परामर्शदाता सली (Sully) को पदच्युत कर दिया। उसने अपने परामर्शदाता इटैलियनों को बनाया। सली को पदच्युत करना निःसन्देह फ्रांस के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ, क्योंकि हेनरी चतुर्थ की असामयिक मृत्यु से फ्रांस को जो आघात पहुंचा था उससे फ्रांस को उबार सकने की उस समय यदि किसी में क्षमता थी तो वह केवल सली में ही थी। सली को पदच्युत कर संरक्षिका ने कट्टर कैथोलिक नीति का अवलम्बन किया। उसकी इस नीति ने ह्यूगनोटों को रुष्ट कर दिया। कैथालिक भी उसकी इटैलियन परामर्शदाताओं की नियुक्ति से रुष्ट हो गए। इस प्रकार ह्यूगनोट एवं कैथोलिक दोनों अपनी सुरक्षा के प्रश्न को लेकर आतंकित हो गए। यही नहीं, **उसके शासनकाल में फ्रांस में अव्यवस्था फैल गई।** सामन्त वर्ग अपने अधिकारों के लिए यत्र-तत्र विद्रोह करने पर उतारू हो गए। विद्रोही सामन्तों को प्रसन्न करने के लिए संरक्षिका ने धन का भरपूर अपव्यय किया। फलस्वरूप सली द्वारा परिश्रम से संचित फ्रांस का कोष रिक्त हो गया। देश में भयंकर आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। संरक्षिका ने आर्थिक संकट से उबरने के लिए 1614 ई. में स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया, किन्तु पुरोहित एवं सामन्त वर्ग द्वारा तृतीय वर्ग के साथ मिलकर न चलने के दुराग्रह ने फ्रांस के पारस्परिक संघर्ष को जन्म दे दिया। संरक्षिका ने अधिवेशन स्थगित कर दिया। **हेज के अनुसार,**

1 "An ambitious but incompetent." —Hayes : *Ibid.*, p. 245.

"सभाभवन पर राजमाता ने नृत्य के लिए कमरों की आवश्यकता दिखलाकर ताले लगवा दिए।"[1] अधिवेशन की विफलता ने देश में गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी।

विदेश नीति (Foreign Policy)

संरक्षिका मेरी डी मैडिसी ने हेनरी चतुर्थ की विदेश नीति का परित्याग कर स्पेन से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयत्न किए। वह स्पेन की शक्ति से अत्यन्त प्रभावित थी। अतः देश में व्याप्त घोर विरोध की भी चिन्ता न करते हुए उसने अपने पुत्र लुई त्रयोदश का विवाह 1615 ई. में स्पेन के शासक फिलिप तृतीय की पुत्री **'एन ऑफ आस्ट्रिया'** के साथ कर दिया। यही नहीं, उसने फ्रांसीसी राजकुमारी एलिजाबेथ का विवाह स्पेन के युवराज से कर दिया। उसके इन कार्यों ने फ्रांस की जनता में भयंकर रोष उत्पन्न कर दिया।

इस प्रकार संरक्षिका मेरी डी मैडिसी ने हेनरी चतुर्थ की नीतियों का परित्याग कर जिस प्रकार शासन किया उसके परिणामस्वरूप फ्रांस की आन्तरिक स्थिति तो खराब हो ही गई, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फ्रांस को स्पेन का पिछलग्गू समझा जाने लगा। 1617 ई. तक ऐसा प्रतीत होता था कि फ्रांस गृह-युद्ध के भयंकर कगार पर खड़ा है। हेनरी चतुर्थ व सली के प्रयत्नों पर पानी फिर गया था। ऐसी स्थिति में 1617 ई. में बालिग हो जाने पर लुई त्रयोदश ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली और राजमाता व उसके प्रिय पदाधिकारियों को पदच्युत कर दिया। इस प्रकार अब उसके शासन काल का द्वितीय चरण आरम्भ हुआ। व्यावहारिक रूप से जिसका नेतृत्व उसके प्रधानमन्त्री कार्डिनल रिशलू ने किया।

लुई त्रयोदश के शासन का द्वितीय चरण (1617-1643)
(SECOND PHASE OF THE REGIME OF LOUIS XIII)

लुई त्रयोदश ने राजमाता को अपदस्थ कर शासन सूत्र पूर्णतः अपने हाथों में ले तो लिया, किन्तु स्वयं उसमें नेतृत्व का अभाव था। प्रशासकीय क्षमता एवं योग्यता उसमें नहीं थी। वह संगीत एवं शिकार का प्रेमी था। ऐसी स्थिति में ऐसा प्रतीत होता था कि फ्रांस के उत्थान का जो स्वप्न हेनरी चतुर्थ व सली ने देखा था वह साकार न हो सकेगा, **किन्तु यह फ्रांस का सौभाग्य था कि 1624 ई. में लुई तेरहवें न कार्डिनल रिशलू को अपना प्रधानमन्त्री बनाकर शासन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उस पर छोड़ दिया।** रिशलू ने इस उत्तरदायित्व को अत्यन्त गम्भीरता से संभाला और आने वाले 18 वर्षों तक (1642 ई. तक) फ्रांस के शासन की बागडोर को अपने हाथों केन्द्रित कर फ्रांस को भयंकर गृह-युद्ध से बचा लिया।

कार्डिनल रिशलू (1621-1642)
(CARDINAL RICHELIU)

जीवन-परिचय

रिशलू का जन्म पेरिस के एक सामन्त परिवार में सन् 1585 ई. में हुआ था। वह प्वायतू के अमीर परिवार से सम्बन्धित था। उसने धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् 21 वर्ष की आयु में ल्यूसों के बिशप के पद को संभाला। 1614 ई. में उसने स्टेट्स जनरल की सभा में पुरोहित वर्ग का प्रतिनिधित्व किया। यहां पर उसके ओजस्वी एवं प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व का प्रभाव लुई त्रयोदश की संरक्षिका मेरी डी मैडिसी पर पड़ा। संरक्षिका ने उसे

1 "......the queen—Regent locked up the halls and sent the representatives home—she needed the room for a dance she said."
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 245.

अपनी परामर्शदात्री समिति का सदस्य बना लिया। यही पर वह रोमन चर्च का कार्डिनल भी बन गया। यह रिशलू जैसे प्रतिभावान व्यक्तित्व के लिए उन्नति करने का एक महत्वपूर्ण अवसर था। रिशलू ने इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाया। उसने फ्रांस की भीषण स्थिति का मूल्यांकन करते हुए लुई त्रयोदश का विश्वासपात्र बनने का पूर्ण प्रयत्न किया। उसकी अद्भुत प्रतिभा पर मुग्ध होकर लुई त्रयोदश ने 1624 ई. में उसे अपना प्रधानमन्त्री एवं सलाहकार नियुक्त किया। प्रधानमन्त्री पद संभालते समय 1624 ई. में उसने लुई त्रयोदश को सम्बोधित करते हुए कहा, **"ह्यूगनोट वर्ग के विनाश एवं शक्ति सम्पन्न सामन्तों का दमन करने और देश की सम्पूर्ण प्रजा को कर्तव्यपालन के लिए विवश करने एवं बाह्य देशों में आपके गौरवपूर्ण पद की प्रतिष्ठा करने में ही अपनी समस्त शक्ति एवं आपसे प्राप्त अधिकारों का प्रयोग करूंगा।"**[1] रिशलू ने अपनी इस प्रतिज्ञा का पालन अत्यन्त निष्ठा एवं कर्मठता के साथ अपनी मृत्यु-पर्यन्त (1624 ई.) तक किया। निःसन्देह 1624 ई. से 1642 ई. तक फ्रांस का वास्तविक शासक रिशलू बना रहा।

रिशलू की गृह एवं धार्मिक नीति
(HOME AND RELEGIOUS POLICY OF RISHELIEU)

जिस समय रिशलू ने फ्रांस के प्रधानमंत्री का पद संभाला उस समय फ्रांस गृह-युद्ध के कगार पर खड़ा था। फ्रांस के राजतन्त्र का अस्तित्व खतरे में था। सुदृढ़ प्रशासन का सर्वथा अभाव था। ह्यूगनोटों के राजनीति एवं सैन्य अधिकारों में असीम वृद्धि एवं विद्रोही सामन्त वर्ग के प्रभुत्व ने बूर्बा राजवंश के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा दिया था। देश की आर्थिक स्थिति चरमरा गयी थी और न्याय व्यवस्था पर भी प्रश्न चिह्न लग गया था।

उद्देश्य (Aims)

फ्रांस की ऐसी संकटपूर्ण स्थिति में रिशलू ने अपनी गृह-नीति को दो प्रमुख उद्देश्यों तक सीमित किया। **प्रथम** तो बूर्बा राजवंश की प्रतिष्ठा को सार्वभौम बनाना जिसके लिए उसे ह्यूगनोटों एवं सामन्त वर्गों का दमन करना आवश्यक था और **दूसरा** फ्रांस को एक सुसंगठित, सुव्यवस्थित एवं सुदृढ़ प्रशासन प्रदान कर शासन का केन्द्रीकरण करना। हेज ने ठीक ही लिखा है, **"रिशलू फ्रांस में केवल एक ही राजकोष जो कि केवल राजा का हो, देखना चाहता था, वह फ्रांस के लिए केवल एक सशस्त्र सेना राजा की सेना देखना चाहता था और इन दोनों के लिए राजा का उत्तरदायित्व किसी संस्था या व्यक्ति के प्रति नहीं रखना चाहता था।"**[2] ये उद्देश्य तत्कालीन फ्रांस की भयावह आन्तरिक स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त थे। अब प्रश्न था उक्त उद्देश्यों की पूर्ति का। **रिशलू ने अपने उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कदम उठाए :**

(1) ह्यूगनोटों के राजनीतिक एवं सैन्य अधिकारों की समाप्ति (End of Political and Military rights of Huguenots)—हेनरी चतुर्थ की **'नान्टेस की राजाज्ञा'** निःसन्देह ह्यूगोनोटों

---

1 ...."To dovet all my energy and all the authority that it may please you to place in my hands to destroying the Huguenots, abasing the pride of the great nobles, restoring all your subjects to their duty, and raising the name to your majesty among foreign nations to its rightful place." —*Rishelieu*

2 "He would have but one public treasury in France—The king's. He would have but one armed force in France—The king's. And there would be no accounting by the king for either." —Hayes : *Modern Europe to* 1870, pp. 249-250.

की शक्ति में असीम वृद्धि के लिए पर्याप्त थी। हेनरी चतुर्थ के काल से ही इस राजाज्ञा के लागू होते ही ह्यूगनोटों ने स्वतः को एक शक्तिशाली राजनीतिक दल के रूप में संगठित कर लिया था। अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग कर अब उन्होंने अपनी स्थिति **'राज्य के भीतर राज्य'** के रूप में कर ली थी। यह स्थिति बूर्बां राजवंश के अस्तित्व के लिए एक खतरे का संकेत थी। हेज के शब्दों में, **''रिशलू उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता का विरोधी नहीं था वह तो उन्हें राजनीतिक दृष्टि से राजा की आज्ञा के अधीन करना चाहता था।''**[1] अतः उसने ह्यूगनोटों के राजनीतिक एवं सैन्य अधिकारों को जो उन्हें **''नान्टेस की राजाज्ञा से मिल गए थे''**[2] समाप्त करने के लिए अभियान आरम्भ कर दिया।

1625 ई. में ह्यूगनोटों द्वारा राजतन्त्र के प्रति विद्रोह करते ही रिशलू ने ह्यूगनोटों के प्रमुख गढ़ रशेल का घेरा डाल दिया। इंग्लैण्ड से पर्याप्त सहायता प्राप्त होने पर भी ह्यूगनोटों को अक्टूबर, 1628 ई. में रिशलू के समक्ष आत्म-समर्पण करना पड़ा। रिशलू ने धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हुए ह्यूगनोटों के साथ **'आले की सन्धि'** (Treaty of Alais) कर ली। इस सन्धि के अनुसार ह्यूगनोटों के धार्मिक एवं नागरिक अधिकार तो यथावत् बने रहे, किन्तु उनके सेना, दुर्ग एवं राजनीतिक सभाएं करने सम्बन्धी अधिकार समाप्त कर दिए गए। इस प्रकार रिशलू ने ह्यूगनोटों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा करते हुए बड़ी चतुराई से उनके राज्य के भीतर राज्य के अस्तित्व को समाप्त कर बूर्बां राजवंश के स्थायित्व में आने वाली महत्वपूर्ण बाधा को दूर करने में सफलता प्राप्त की।

(2) उद्दण्ड सामन्तों का दमन (Repression of Notorious Nobles)—बूर्बां राजवंश के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए दूसरी महत्वपूर्ण बाधा उद्दण्ड सामन्तों की स्वतन्त्रता एवं विशेषाधिकार थे। **'इन सामन्तों का दमन एक अत्यन्त कठिन कार्य था और इस कार्य में रिशलू को निःसन्देह अत्यधिक विरोध का सामना करना पड़ा।'**[3] फ्रांस में सामन्त ही प्रान्तीय गवर्नर नियुक्त किए जाते थे। शनैः-शनैः प्रान्तीय गवर्नरों ने अपनी-अपनी सेना बना ली थी। यह सेना प्रान्तीय गवर्नर के प्रति ही उत्तरदायी थी। इस सेना के बल पर प्रान्तीय गवर्नरों ने अपने-अपने प्रान्त में अपनी स्थिति शासक के समान बना ली थी। वे प्रायः राजाज्ञा का भी विरोध करने में नहीं हिचकाते थे। रिशलू से असन्तुष्ट राजामाता मेरी डी मैडिसी एवं ड्यूक ऑफ आर्लेआं से प्रोत्साहित होकर इन्होंने राजदरबार में भी षड्यन्त्र आरम्भ कर दिए थे। यह स्थिति निःसन्देह बूर्बां राजवंश एवं रिशलू के लिए खतरनाक थी। अतः रिशलू 1626 ई. ने **एक विशिष्ट अध्यादेश घोषित कर उन सभी दुर्गों को नष्ट करने की आज्ञा दी जो कि एक ओर तो सामन्तों की शक्ति के गढ़ थे और दूसरी ओर विदेशी आक्रमण से देश की रक्षा के लिए निरर्थक सिद्ध हो रहे थे।** इस अध्यादेश से कृषक वर्ग एवं नगरवासियों में प्रसन्नता फैल गयी क्योंकि वे सामन्तों के अत्याचारों से संत्रस्त थे। आज्ञा के अनुसार अनेक दुर्गों को नष्ट कर दिया गया। सामन्तों के द्वन्द्व युद्धों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। उनके शिकार सम्बन्धी अधिकार अवैध घोषित किए गए। इनका उल्लंघन करने पर मृत्यु-दण्ड प्रदान किया गया। उसने अपनी

1 **"Rechelieu had no desire to deprive the Huguenots to religious freedom, but he was, resolved that in political matters, they should obey the king."**
—Hayes : *Modern Europe to* 1870, p. 247.

2 'नान्टेस की राजाज्ञा' का विस्तृत विवरण के पीछे देखिए हेनरी चतुर्थ का शासन काल।

3 **"The repression of the nobles was a more difficult task and one which Richelieu undertook in the face of redoubtable opposition."** **—*Hayes***

इस आज्ञा का इतनी कठोरता से पालन किया कि काउण्ट मुटबिल को जो मॉण्टगोमरी के शक्तिशाली परिवार का नेता था, मृत्यु-दण्ड दे दिया। उसकी कठोरता ने सामन्तों की उद्दण्डता एवं स्थानीय स्वतन्त्रता का दमन कर सामन्तों के हृदय में उसकी गुप्तचर व्यवस्था ने आतंक पैदा कर दिया। इस प्रकार रिशलू ने उद्दण्ड सामन्तों के प्रति कठोर रूप अपना कर उन्हें राज्याधीन कर ही दिया। निःसन्देह यह उसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

(3) **शासन का केन्द्रीकरण** (Centralization of the rule)—रिशलू प्रशासन का केन्द्रीयकरण कर सुव्यवस्थित एवं सुदृढ़ प्रशासन स्थापित करना चाहता था। इस कार्य के लिए उसने सर्वप्रथम प्रान्तीय सरदारों या सामन्तों के अधिकारों को सीमित किया। प्रान्तीय शासकों के सैन्य संगठन, न्याय एवं राजस्व संग्रह जैसे अधिकार समाप्त कर दिए गए। **इन कार्यों के सम्पादन के लिए प्रत्येक जिले में एक नवीन राज्य कर्मचारी नियुक्त किया गया। इसे इण्टेण्डेंट (Intendant) कहते थे।** ये अधिकारी मध्यम वर्ग से चयनित होते थे। इन अधिकारियों को अपने क्षेत्र का सम्पूर्ण विवरण रिशलू के पास भेजना होता था, ये केन्द्र के प्रति ही उत्तरदायी थे। कालान्तर में इन अधिकारियों की संख्या 30 के आधार पर इन्हें **'तीस निरंकुश शासक'** (Thirty Tyrants) कहा जाने लगा। इस प्रकार इण्टेण्डेंटों की नियुक्ति कर रिशलू ने प्रान्तीय सामन्तों के अधिकारों को सीमित कर दिया।

रिशलू ने आदेशानुसार ही इन्टेंडेण्टों द्वारा प्रान्त, नगर सभाओं, ग्रामों, पार्लियामेण्ट एवं विशप्रिक आदि पर नियन्त्रण व संचालन होता था। स्टेट्स जनरल एवं पार्लियामेण्ट जो कि लम्बे समय से राजपद की शक्ति को सीमित करने का साधन थी रिशलू ने शक्तिहीन कर राजपद में ही सभी अधिकार निहित कर दिए। उसने अपने शासन काल में स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया ही नहीं और साथ ही पार्लियामेण्ट को बाध्य कर दिया कि वह समस्त अध्यादेशों को पारित करे।

इस प्रकार रिशलू ने बूर्बा राजपद की गरिमा में बाधक तत्वों का दमन कर राजपद की मर्यादा को ही प्रतिष्ठित नहीं किया, अपितु देश का घोर केन्द्रीयकरण भी कर दिया। सेना एवं कोष पर केंन्द्र का एकमात्र प्रभुत्व स्थापित हो गया। राजा स्वयं अपने प्रति उत्तरदायी हो गया। अब यह किसी संस्था या व्यक्ति के प्रति उत्तरदायी नहीं था। अतः अपने उद्देश्यों की पूर्ति एवं देश में राष्ट्रीयता के विकास की दृष्टि से उसकी गृह-नीति सफल कही जा सकती है।

रिशलू की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF RICHELIEU)

कार्डिनल रिशलू के प्रधानमन्त्री पद पर आसीन होने के समय फ्रांस को स्पेन का पिछलग्गू कहा जाने लगा था। इसका सबसे प्रधान कारण मेरिया डी मैडिसी द्वारा हेनरी चतुर्थ की विदेश नीति का त्याग करना था। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हेनरी चतुर्थ ने फ्रांस को जो स्थान प्रदान कर दिया था वह धूमिल हो चुका था। अतः कार्डिनल रिशलू की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फ्रांस के गौरव की प्रतिस्थापना करना बना। ऐसा वह अपने प्रबल प्रतिद्वन्द्वी स्पेन व आस्ट्रिया के हैप्सबर्गीय राजवंश की गरिमा को समाप्त करके ही कर सकता था। इसके लिए उसने फ्रांस की सीमाओं की रक्षा एवं सीमा विस्तार की नीति अपनाई। हेज ने उसकी विदेश नीति के उद्देश्यों का आंकलन करते हुए ठीक ही लिखा है **"रिशलू बूर्बा राजवंश का वफादार सेवक एवं फ्रांसीसी देशभक्त दोनों ही था। फ्रांस का देशभक्त होने के कारण वह स्पेनिश प्रधानता एवं प्रतिष्ठा को धूमिल कर यूरोप की राजनीति में फ्रांस को प्रतिष्ठित**

स्थान प्रदान करना चाहता था। लुई त्रयोदश के वफादार सेवक के रूप में वह हैप्सबर्ग परिवार की प्रतिष्ठा को समाप्त कर यूरोप में बूर्बां राजवंश की प्रतिष्ठा एवं गौरव को स्थापित करना चाहता था।"[1]

नीति का क्रियान्वयन (Implementation of the policy)

रिशलू की विदेश नीति के उद्देश्यों की पूर्ति में सर्वाधिक बाधा स्पेन एवं आस्ट्रिया के हैप्सबर्गीय साम्राज्य की विस्तृत सीमाओं से थी। पिरेनीज के उत्तर में रूसियों (Roussillon) और सर्डान्य (Cardange) के फ्रांसीसी प्रदेशों पर स्पेन का अधिकार था। हेनरी चतुर्थ ने इटली की ओर फ्रांसीसी सीमा को निरापद करने को किया था, किन्तु अब इस स्थिति में 'सवाय' की डची पर विश्वास नहीं किया जा सकता था। पूर्व एवं उत्तर की ओर से फ्रांस व उसकी राजधानी पेरिस को सीधे स्पेन व आस्ट्रिया से संकट था। यह ठीक है कि मेज्ज, तूल एवं वर्दून पर फ्रांस का अधिकार था, परन्तु अभी तक ये प्रदेश फ्रांसीसी राज्य में नहीं थे। **अतः अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रिशलू ने पिरेनीज, राइन नदी एवं नीदरलैण्ड्स की ओर फ्रांसीसी सीमा का गठन व सीमा का विस्तार करना आरम्भ कर दिया।** उसने इंग्लैण्ड व फ्रांस के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर इंग्लैण्ड से स्पेन के विरुद्ध डचों तथा सामुद्रिक युद्धों में सहायता प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया। उसने शीघ्र ही 'वैलेन्टाइन' पर अधिकार कर लिया। हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए उसने 1635 ई. में **तीसवर्षीय युद्ध में भाग लेकर** युद्ध के स्वरूप को पूर्णतया राजनीतिक बना दिया। निःसन्देह वह आल्सेस तथा लारेन पर अधिकार करना चाहता था। **यह ठीक है कि रिशलू तीसवर्षीय युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही चिर-निद्रा में सो गया था,** (1642 ई. में) **किन्तु उसके प्रयत्नों के कारण ही उसके शासनकाल में ही तीसवर्षीय युद्ध का निर्णय फ्रांस के अनुकूल हो गया था।** 1648 ई. की वेस्टफेलिया की सन्धि ने तीसवर्षीय युद्ध एवं 1649 की पिरेनीज की सन्धि ने स्पेन-फ्रैंकों युद्ध का अन्त किया। निःसन्देह यह फ्रांस के लिए एक नए युग का आरम्भ सिद्ध हुआ। इस प्रकार माना जा सकता है कि रिशलू ने स्पेन की पिछलग्गू फ्रांस की विदेश नीति का अन्त कर साहसपूर्ण विदेश नीति का परिचय देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बूर्बां वंश की प्रतिष्ठा को स्थापित कर ही दिया।

रिशलू की उपलब्धियों का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE ACHIEVEMENTS OF RICHELIEU)

फ्रांस के इतिहास में प्रधानमन्त्री रिशलू का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जर्जरित, विशृंखलित एवं गृहयुद्ध के कगार में पहुंचे फ्रांस को उसने जनजीवन प्रदान किया। **सम्पूर्ण फ्रांस में एक केन्द्रीयकृत, शक्तिशाली एवं सुसंगठित व्यवस्था स्थापित करने के लिए ही उसने ह्यूगनोटों के राजनीतिक एवं सैनिक अधिकारों का दमन किया।** उद्दण्ड एवं शक्तिशाली सामन्तों की शक्ति का दमन निःसन्देह प्रशंसनीय एवं दुष्कर कार्य था। उसने इन्टेंडेन्ट्स नामक अधिकारियों की नियुक्ति कर प्रान्तीय स्वतन्त्रता का हनन किया। सामान्यतः यह कहा जाता है कि उसने लोकतान्त्रिक पद्धति का गला घोंट दिया, परन्तु इसके लिए रिशलू किसी भी

1 "Rechelieu was both a French patriot and a Loyal servant of the Bourbon dynasty. As French Patriot, he wanted to assure to his country an independent and honored place in Europe and especially to weaken Spain...... As a loyal servant to Louis XIII, he desired to extent the away to Bourbon family at the expense of its principal European rival, the Hapsburg family." —*Hayes*, p. 250.

स्थिति में दोषी नहीं कहा जा सकता। तत्कालीन परिवेश में सुदृढ़ राजतन्त्र की स्थापना एक अनिवार्यता बन चुकी थी। दूसरी ओर स्टेट्स जनरल के 1614 ई. के अधिवेशन में वह स्वयं स्टेट्स जनरल की मखौलबाजी को देख चुका था और साथ ही इंग्लैण्ड में पार्लियामेण्ट व राजा के बीच चल रहा संघर्ष वह बड़ी गम्भीरता से देख रहा था। अतः उन परिस्थितियों में जबकि फ्रांस गृहयुद्ध के कगार पर था पार्लियामेण्ट के अधिकारों को सीमित करना उसकी दूरदर्शिता ही कही जाएगी। **निःसन्देह उसने अपने पूर्ववर्ती सली एवं हेनरी चतुर्थ की नीति का ही अनुगमन किया।**

यह कहना भी निराधार होगा कि उसने प्रजा हित की उपेक्षा की। यह ठीक है कि विदेशी परिस्थितियों एवं आन्तरिक उपद्रवों के कारण वह देश में जनता के सुधारों को कार्यान्वित न कर सका, किन्तु उसने जनता को शासन में स्थान देने का प्रयत्न अवश्य किया। इन्टेंडेन्ट्स नामक अधिकारी मध्यम वर्ग से चयनित होकर ही आते थे। वस्तुतः फ्रांस को गृहयुद्ध की विभीषिका से उबारना फ्रांस की जनता के प्रति उसकी सच्ची सेवा थी। यही नहीं, उसने फ्रांस के व्यापार में वृद्धि के लिए डेनमार्क, स्वीडन एवं रूस से व्यापारिक सन्धियां भी कीं। **सबसे उल्लेखनीय बात तो यह थी कि उसने राजनीति को प्रमुखता दी न कि धर्म को।**

एक कैथोलिक होते हुए भी फ्रांस के गौरव को यूरोप में प्रतिष्ठित करने के लिए उसने उत्तरी यूरोप एवं जर्मनी के प्रोटेस्टेण्ट राज्यों को सहायता प्रदान कर स्पेनिश गौरव को समाप्त करने का भरपूर प्रयत्न किया। तीसवर्षीय युद्ध में भाग लेकर उसने युद्ध को पूर्ण राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया। निःसन्देह रिशलू के कार्यों ने फ्रांस को यूरोप की राजनीति में प्रतिष्ठित स्थान तो प्रदान कर ही दिया साथ ही उसकी मृत्यु तक (1542 ई. तक) फ्रांस में राजा की एकाकी शक्ति स्थापित हो गई। उसकी महत्ता का आंकलन इसी बात से हो जाता है कि **उसकी नीति का अनुसरण उसके अनुगामी प्रधानमन्त्री कार्डिनल मेजारिन ने भी किया।**

कार्डिनल मेजारिन (1642—1661)
(CARDINAL MAZARIN)

जीवन-परिचय

कार्डिनल मेजारिन का जन्म सन् 1602 ई. में इटली के साधारण परिवार में हुआ था। उसने रोम एवं मेड्रिड में शिक्षा अर्जित की थी। कार्डिनल मेजारिन की हार्दिक इच्छा चर्च का उच्च पदाधिकारी बनने की थी। अपनी इच्छा के अनुरूप वह पेरिस के पोप का प्रतिनिधि नियुक्त हुआ। यहीं पर उसका सम्पर्क कार्डिनल रिशलू से हुआ। रिशलू उससे अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसने उसे फ्रांस में सरकारी पद पर नियुक्त कर दिया। 1639 ई. में उसने फ्रांस की नागरिकता ग्रहण कर ली। वह रिशलू का शिष्य बन गया था और शासन संचालन की शिक्षा भी उसने रिशलू से ही सीखी।

कार्डिनल रिशलू की मृत्यु के पश्चात् लुई तेरहवें ने कार्डिनल रिशलू को अपना प्रधानमन्त्री एवं सलाहकार नियुक्त किया, किन्तु 14 मई, 1643 ई. को लुई त्रयोदश की भी मृत्यु हो गई। लुई तेरहवें की मृत्यु के पश्चात् उसका 5 वर्षीय पुत्र लुई चतुर्दश फ्रांस का शासक हुआ और उसकी माता उसकी संरक्षिका नियुक्त हुई। कार्डिनल मेजारिन अपने पद पर यथावत् बन रहा।

मेजारिन के चरित्र में कतिपय दोष भी थे। वह धनलोलुप था। उसने छिपकर राजमाता ऐन ऑफ आस्ट्रिया से विवाह भी कर लिया था। उसकी नीति एवं कार्यों में कोई नूतनता नहीं

थी। वह अस्थिर प्रकृति का तो था ही साथ ही उसमें विवेकशीलता की भारी कमी थी। इतना होने पर यह तो स्वीकार करना ही होगा कि उसने अपनी मृत्यु तक फ्रांस में बूर्बां राजवंश की सार्वभौमता को स्थापित कर यूरोप में फ्रांस की प्रतिष्ठा में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1661 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार कार्डिनल मेजारिन ने 1642 ई. से अपनी मृत्युपर्यन्त सन् 1661 ई. तक प्रधानमन्त्री के रूप में फ्रांस के शासन की बागडोर अपने हाथों में रखी।

कार्डिनल मेजारिन की गृह-नीति
(HOME POLICY OF CARDINAL MAZARIN)

कार्डिनल मेजारिन के लिए रिशलू ने जिस फ्रांस को छोड़ा था, वह घोर केन्द्रीयकृत था और इस पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए रिशलू की भांति ही कठोर नीति का पालन आवश्यक था, किन्तु कार्डिनल मेजारिन में रिशलू के सदृश क्षमता एवं योग्यता का अभाव था। अतः मेजारिन देश में नियन्त्रण स्थापित करने में सफल न हो सका। शीघ्र ही देश की आन्तरिक स्थिति इतनी खराब हो गई कि 1648 ई. में फ्रांस में भयंकर विद्रोह हो गया जिसे इतिहास में **'फ्रोण्डे गृह-युद्ध'**(Fronde Civil War) के नाम से जाना जाता है। यह युद्ध 1652 ई. तक चला।

फ्रोण्डे गृह युद्ध के कारण
(CAUSES OF THE FRONDE CIVIL WAR)

फ्रोण्डे शब्द से अभिप्राय पेरिस के पुष्ट लड़कों के एक खेल से है, जिसे स्थानीय पुलिस नियन्त्रित करती थी, किन्तु रूपक अर्थ में इस समय इसका तात्पर्य सरकार को विरोध करने वाले लोगों से लिया जाता था। फ्रोण्डे के विद्रोह के अग्रलिखित कारण थे :

(1) आर्थिक स्थिति (Economic condition)—कार्डिनल रिशलू घरेलू समस्याओं एवं बाह्य समस्याओं में इतना उलझा रहा कि वह देश की आर्थिक समस्या के निदान हेतु पूरा समय नहीं दे पाया था। कार्डिनल मेजारिन को यह चाहिए था कि वह अब देश की आर्थिक समस्या के निराकरण के लिए कदम उठाया, किन्तु मेजारिन ने इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। इधर तीसवर्षीय युद्ध में फ्रांस का व्यय अत्यधिक बढ़ जाने से आर्थिक स्थिति पर गम्भीर प्रभाव पड़ा। इस पर **मेजारिन ने अपने विरोधियों को सन्तुष्ट करने के लिए विरोधियों में धन वितरण की जो नीति अपनाई इससे राजकोष प्रायः रिक्त हो गया। सरकार ने अत्यधिक कर वसूल करके इस कमी को पूरा करने का यत्न किया।** करों की वसूली के लिए साहूकारों को ठेके दे दिए जाते थे। सरकार साहूकारों से निश्चित धन प्राप्त करके कर वसूल करने का अधिकार उन्हें दे देती थी। ये साहूकार निर्दयतापूर्वक निरीह जनता से अधिकाधिक कर वसूल करते थे। इस प्रथा से एक ओर तो साहूकार धनाढ्य हो गए दूसरी ओर सामान्य जनता में व्यापक असन्तोष व्याप्त हो गया। वित्तीय अधिकार **'डी ऐमेरी'** नामक उसके एक इटैलियन सहयोगी में निहित थे। देश की आर्थिक विपन्नता ने शासन के प्रति असन्तोष उत्पन्न कर दिया।

(2) सामन्तों द्वारा पुनः शक्ति प्राप्त करने के प्रयास (Nobles attempt to regain power)—देश की विपन्न आर्थिक स्थिति का लाभ उठाकर सामन्तों ने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया। फ्रांस के प्रमुख सामन्तगण—ड्यूक, काउण्ड, आदि राज्य में

पुनः ऊंचे-ऊंचे पदों, पेंशनों एवं पुरस्कार प्राप्त करना चाहते थे। अतः वे मेजारिन को सत्ता से अपदस्थ करना चाहते थे।

(3) मेजारिन का मूलतः विदेशी होना (Foreign origin of Mazarin)—मेजारिन मूलतः इटली का निवासी था। फ्रांस की नागरिकता प्राप्त करने के पश्चात् भी सामान्य जनता की दृष्टि से वह विदेशी ही था। मेजारिन ने स्वयं भी कतिपय गलत कदम उठाए। उसने विदेशियों या अपने सम्बन्धियों को ऊंचे पदों पर प्रतिष्ठित किया। इसके पुनः शक्ति प्राप्त करने के लिए लालायित सामन्तों व पार्लमां ने उसे विदेशी कहकर जनता का समर्थन अपने पक्ष में प्राप्त करने का प्रयत्न किया। जनता आर्थिक विपन्नता से त्रस्त तो थी ही। उसने निःसंकोच रूप से मेजारिन का विरोध आरम्भ कर दिया।

(4) पेरिस की पार्लमां द्वारा पुनः शक्ति प्राप्त करने का प्रयास (Attempts of the Paris Parlema to regain power)—पेरिस की पार्लमां को यह अधिकार था कि वह राजा द्वारा पारित अध्यादेशों को स्वीकार करे या न करे। बिना पार्लमां की स्वीकृति के कोई भी अध्यादेश कानून नहीं बन सकता था। रिशलू ने अत्यन्त निरंकुशता के साथ पार्लमां को बाध्य किया था कि वह सभी अध्यादेशों को पारित करे। रिशलू की निरंकुशता के आगे पार्लमां को झुकना पड़ा था, किन्तु रिशलू की मृत्यु होते ही पार्लमां ने अपने अधिकारों की प्राप्ति का प्रयत्न आरम्भ कर दिया और सन् 1644 ई. में तो पार्लमां ने राजकीय अध्यादेशों को अस्वीकृत कर शासन का सीधा विरोध आरम्भ कर दिया। यही नहीं, पार्लमां के न्यायाधीशों की समिति ने लुई चौदहवें के सम्मुख एक मांग-पत्र प्रस्तुत किया। इसमें मांग की गई कि, **"पेरिस की पार्लमां की स्वीकृति के बिना कोई नए कर नहीं लगाए जाने चाहिए। नए पदों का सृजन न हो। किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए 24 घण्टे से अधिक कारावास में नहीं रखा जाना चाहिए। ठेकेदारों की कर वसूली की उचित जांच की जाए। करों में कमी की जाए और इन्टेन्डेण्टों के पद समाप्त कर दिए जाएं।"**

शाही सेना के इस समय जर्मनी में होने के कारण मेजारिन को मांग-पत्र की कतिपय बातें स्वीकार करनी पड़ीं। तुरन्त इन्टेण्डेण्टों के पद निरस्त कर दिए गए। करों में भारी कमी कर दी गई तथा उसने वित्तीय अनियमितताओं की न्यायिक जांच का आश्वासन दिया, किन्तु जैसे ही 6 माह पश्चात् शाही सेना जर्मनी से वापस आई मेजारिन ने सैन्य बल का प्रयोग कर दिए गए अधिकारों को समाप्त करने का प्रयास किया। इस पर देश में भयंकर विद्रोह आरम्भ हो गया।

फ्रोण्डे गृह-युद्ध की घटनाएं
(EVENTS OF THE FRONDE CIVIL WAR)

प्रथम फ्रोण्डे गृह-युद्ध (First Fronde Civil War)

कार्डिनल मेजारिन द्वारा सैन्य बल का प्रयोग विद्रोहियों के लिए असह्य था। स्थानीय षड्यन्त्रों एवं विद्रोहों का सिलसिला जनवरी, 1648 से आरम्भ हो गया। मेजारिन ने विद्रोह को दबाने में सफलता प्राप्त की। अप्रैल, 1640 की **'र्‍यूईल की सन्धि'** ने प्रथम फ्रोण्डे गृह-युद्ध का अन्त कर दिया। इस सन्धि के अनुसार मेजारिन ने स्वीकृत किए गए अधिकारों की पुष्टि की।

फ्रोण्डे का द्वितीय गृह-युद्ध (Second Fronde Civil War)

रयूईल की सन्धि (1649) के पूर्व-स्वीकृत किए गए अधिकारों की पुष्टि तो कर दी, किन्तु विद्रोहियों के प्रमुख उद्देश्य मेजारिन को अपदस्थ कराने का कार्य न कर सकी। अभी तक उच्च वर्ग अपने अधिकारों को पुनः प्राप्त न कर सका था। अतः 'रयूईल की सन्धि' अस्थायी सिद्ध हुई। अतः 1650 ई. में पुनः गृह-युद्ध आरम्भ हो गया जो कि 1652 ई. तक चला। इस विद्रोह में विशेष रूप में उच्च वर्ग एवं राजपरिवार के सामन्तों ने ही भाग लिया। अतः इसे **'राजकुमारों का फ्रोण्डे'** (Fronde of the Princes) भी कहा जाता है। इस युद्ध का आरम्भ मेजारिन द्वारा **कोंदे एवं राजपरिवार** के अनेक सामन्तों को बन्दी बनाने से हुआ। मेजारिन **कोंदे** को एक खतरनाक विद्रोही मानता था। कोंदे व अन्य सामन्तों को बन्दी बनाए जाने का समाचार पेरिस व अन्य प्रान्तों में आग की भांति फैल गया। विद्रोहियों की प्रबलता को देख मेजारिन को भी फरवरी, 1651 ई. में पेरिस को छोड़कर ब्रूल जाना पड़ा। कोंदे व उसके साथियों को छोड़ देना पड़ा। **अहंकारी कोंदे ने पेरिस पर अधिकार कर कार्डिनल की पदवी धारण की,** किन्तु शीघ्र ही उसके अहंकार के कारण उसके सहयोगियों ने उसका साथ छोड़ दिया। कोंदे की अहंकारी सरकार व जनता के मध्य कोई सामंजस्य न बैठ सका। अतः कोंदे को विवश होकर अक्टूबर, 1652 ई. में स्पेन में शरण लेनी पड़ी। उसके पेरिस से भागते हुए पुनः राजतन्त्र की शक्ति स्थापित हो गयी। लुई चौदहवें ने पेरिस में शान के साथ प्रवेश किया। इस प्रकार **'द्वितीय फ्रोण्डे के गृह-युद्ध'** का भी अन्त हो गया।

फ्रोण्डे गृह-युद्ध की असफलता के कारण
(CAUSES OF THE FAILURE OF THE FRONDE CIVIL WAR)

प्रथम एवं द्वितीय फ्रोण्डे विद्रोह की असफलता के कारणों को निम्नवत् वर्णित किया जा सकता है :

(1) पार्लमां का जनता की प्रतिनिधि संस्था न होना—फ्रोण्डे के विद्रोह की असफलता का प्रमुख कारण उसका जनता की प्रतिनिध संस्था न होना था। वास्तव में, फ्रांस में पार्लमां देश की सर्वोच्च अदालत थी। वह तो जनइच्छा से भिन्न एक विशिष्ट संस्था थी। उसका स्वरूप ब्रिटेन की संसद के सदृश नहीं था। अतः पार्लमां को सामान्य जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न हो सका।

(2) मुख्यतया सामन्ती विद्रोह (Mainly feudae revolt)—फ्रोण्डे के प्रथम विद्रोह में तो जनता ने विद्रोहियों का साथ दिया था, किन्तु एक बार विद्रोहियों की सरकार पेरिस में बन जाने पर वह जनता का मन न मोह पाई। सामन्त अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे रहे। विद्रोही गोन्दी स्वयं कार्डिनल बनना चाहता था। इधर दूसरी ओर कोंदे अपनी शक्ति में वृद्धि का इच्छुक था। स्वार्थ पूर्ति के लिए लड़ते हुए सामन्तों के प्रति जनता में निराशा उत्पन्न हो गई और उसने उच्च वर्ग व सामन्त वर्ग का समर्थन नहीं किया। फलतः पुनः राजतन्त्र स्थापित हो गया।

(3) विद्रोहियों का निर्धारित कार्यक्रम न होना (Absence of any fixed programme)—विद्रोही केवल इस आधार पर एक थे कि सभी कार्डिनल मेजारिन को अपदस्थ करना चाहते थे, किन्तु एक मात्र यह आधार उनकी पारस्परिक विद्वेष की भावना एवं अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति के संघर्ष के आगे टिक न सकी। उनका न तो कोई निश्चित कार्यक्रम था और न ही कोई वास्तविक आदर्श ही था।

(4) **बौद्धिक जागृति का अभाव** (Absence of Intellectual Consciousness)—फ्रांस में इस समय बौद्धिक जागरण का नितान्त अभाव था। निःसन्देह फ्रांस की जनता स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश राजतन्त्र की ही समर्थक थी। वहां तब तक वैधानिक राजतन्त्र की स्थापना के लिए कोई आंन्दोलन या विद्रोह नहीं हुआ था।

इस प्रकार माना जा सकता है कि फ्रोण्डे के विद्रोह की असफलता फ्रांस की पार्लमां एवं सामन्तों को जनता के बौद्धिक जागरण के अभाव में पूर्ण समर्थन न मिलना रहा, किन्तु इस असमर्थन के लिए निःसन्देह उच्च वर्ग एवं सामन्तों में पारस्परिक विद्वेष एवं अपने ही स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयत्न उत्तरदायी थे, फलतः उनका मेजारिन को हटाने का एकमात्र सर्वप्रथम आधार निश्चित कार्यक्रम एवं आदर्श के अभाव में धराशायी हो गया।

फ्रोण्डे गृह-युद्ध के परिणाम
(RESULTS OF THE FRONDE CIVIL WAR)

फ्रोण्डे गृह-युद्ध की असफलता के अन्तिम परिणाम इस प्रकार निकले :

(1) फ्रोण्डे गृह-युद्ध की असफलता ने सामन्त एवं उच्च वर्ग की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुंचाया।

(2) पार्लमां के राजनीतिक एवं आर्थिक अधिकारों को अब राजतन्त्र का अंकुश दिन-प्रतिदिन बढ़ना अत्यन्त सरल हो गया। पेरिस में नगरपालिका के चुनाव सम्बन्धी अधिकार समाप्त कर दिए गए तथा पेरिस को निःशस्त्र कर दिया गया।

(3) द्वितीय फ्रोण्डे गृह-युद्ध की असफलता ने निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना हेतु मेजारिन के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को दूर कर दिया। इस प्रकार अब फ्रांस में सुदृढ़ राजतन्त्र की नींव पड़ ही गयी।

इस प्रकार मेजारिन ने फ्रांसीसी गृह-युद्ध का दमन करने में सफलता तो प्राप्त कर ली, किन्तु वह फ्रांस की वित्तीय स्थिति की ओर कोई ध्यान न दे सका। अब कालान्तर में फ्रांस को गम्भीर आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा।

मेजारिन की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF MAZARIN)

मेजारिन की गृह-नीति की अपेक्षा उसकी विदेश नीति अधिक सफल मानी जाती है। उसने रिशलू द्वारा अपनाई गई विदेश नीति को ही अपनी विदेश नीति का आधार बनाया। इस प्रकार रिशलू के सदृश ही उसकी विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य स्पेन व आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग राजवंश के स्थान पर फ्रांस के बूर्बां राजवंश के गौरव को यूरोप में प्रतिष्ठित करना था।

नीति का क्रियान्वयन (Implementation of the Policy)

अपनी उक्त विदेश नीति को आधार बनाकर ही उसने रिशलू की मृत्यु के पश्चात् भी उसके द्वारा सक्रिय हस्तक्षेप वाले तीसवर्षीय युद्ध में फ्रांस की सक्रियता को कम न होने दिया। उसके प्रधानमन्त्रित्व काल के आरम्भ में ही फ्रांस ने इप्रेस ग्रावेलिन, डन्कर्क एवं रूसिलों के स्पेनी प्रान्तों पर अधिकार कर लिया था। 1648 ई. में उसने हैप्सबर्ग सम्राट के साथ **'वेस्टफेलिया की संन्धि'** (Treaty of Westphalia) कर फ्रांस के गौरव को यूरोप में प्रतिष्ठित किया। स्ट्रबर्ग को छोड़ कर सम्पूर्ण आल्सेस का प्रान्त, राइन क्षेत्र पर फ्रांस का आधिपत्य स्थापित हो गया। यही नहीं, जर्मनी में फ्रांसीसी अधिकारों की भी पुष्टि की गयी। फ्रांस को

जर्मन पार्लियामेण्ट में अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया। एल्ब, वैसर एवं ओडर नदियों के मुहानों पर फ्रांस का अधिकार स्थापित हो गया।

तीसवर्षीय युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भी उसने स्पेन से युद्ध जारी रखा जो कि 1659 **की पिरेनीज की सन्धि के साथ** समाप्त हुआ। इस सन्धि से रूसिलों, आर्त्वआं एवं दक्षिणी नीदरलैण्ड्स के कुछ प्रदेशों पर फ्रांस का अधिकार हो गया। फिलिप चतुर्थ ने अपनी पुत्री मेरिया थिरिजा का विवाह लुई चतुर्दश से करना स्वीकार कर लिया।

किन्तु यह निश्चित किया गया कि विवाह में प्राप्त होने वाले दहेज के बदले में मेरिया थिरिजा स्पेनी सिंहासन पर अपना अधिकार नहीं रखेगी, किन्तु स्पेन कभी भी दहेज की राशि चुका न सका और यहीं पर आगे होने वाले स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध में फ्रांस के हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मेजारिन को अपनी विदेश नीति के क्षेत्र में अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई।

मेजारिन की उपलब्धियों का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE ACHIEVEMENTS OF MAZARIN)

मेजारिन में अनेक चारित्रिक दोष विद्यमान थे। यही कारण है कि उसे गृह-नीति के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई। उसने फ्रांस की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया जो कि भावी फ्रांस के लिए एक नासूर सिद्ध हुआ, किन्तु इतना होते हुए भी **यह तो स्वीकार करना ही होगा कि मेजारिन ने अपने समय में हुए फ्रोण्डे के गृह-युद्ध का सफलतापूर्वक दमन कर बूर्बां राजवंश की निरंकुशता को प्रतिस्थापित करने में सफलता प्राप्त की।** यही नहीं, विदेश नीति में उसे अभूतपूर्व सफलता मिली। वेस्टफेलिया की सन्धि एवं पिरेनीज की सन्धि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में फ्रांस की प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। अपनी मृत्यु 1661 ई. तक उसने बूर्बां राजवंश की सार्वभौमता को फ्रांस में प्रतिस्थापित तो कर ही दिया साथ ही फ्रांस अब यूरोप का अग्रगामी देश बन गया। निस्सन्देह इस दृष्टि से फ्रांस मेजारिन का सदैव ऋणी रहेगा।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सोलहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी धर्म-संघर्ष एवं गृह-युद्धों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
2. फ्रांसीसी धार्मिक एवं गृह-युद्धों की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
3. फ्रांसीसी धार्मिक एवं गृह-युद्धों की पृष्ठभूमि में निहित कारणों का संक्षेप में उल्लेख करते हुए घटनाओं को भी लिखिए।
4. हेनरी चतुर्थ के राज्यारोहण से पूर्व फ्रांस की स्थिति का परीक्षण कीजिए।
5. ह्यूगनोट्स कौन थे? फ्रांस में उनके संघर्ष के इतिहास का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
6. हेनरी चतुर्थ को राज्यारोहण के समय किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? क्या वह अपनी समस्याओं का निदान कर सका?
7. मेरी डी मैडिसी की गृह एवं विदेश नीति का मूल्यांकन कीजिए।
8. कार्डिल रिशलू की गृह-नीति का परीक्षण कीजिए।
9. रिशलू की विदेश नीतिं पर प्रकाश डालिए।

10. रिशलू के प्रधानमन्त्री का पद संभालते समय फ्रांस की स्थिति का परीक्षण करते हुए यह बताइए कि क्या रिशलू ने फ्रांस को गृह-युद्ध की सम्भावना से बचा लिया?
11. गृह-नीति के क्षेत्र में रिशलू को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा और उसने उन समस्याओं का निदान कैसे किया?
12. फ्रांस के उत्कर्ष में रिशलू का योगदान बताइए।
13. रिशलू के जीवन चरित्र एवं नीतियों पर प्रकाश डालते हुए उसके कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।
14. कार्डिनल मेजारिन की गृह व विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
15. फ्रांस के उत्कर्ष में मेजारिन का योगदान बताइए।
16. फ्रोण्डे के गृह-युद्ध के कारणों व परिणामों पर प्रकाश डालिए।
17. फ्रोण्डे के गृह-युद्ध की घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए इसकी असफलता के कारण भी लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हेनरी चतुर्थ की विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
2. हेनरी चतुर्थ के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए।
3. कार्डिनल रिशलू पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. कार्डिनल मेजारिन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. मेजारिन की विदेश नीति का वर्णन कीजिए।
6. मेजारिन की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सेण्ट बार्थोलेम्यू दिवस' कब मनाया जाता है?
2. हेनरी चतुर्थ फ्रांस का शासक कब बना?
3. तीन हेनरियों का युद्ध कब हुआ था?
4. नान्टेस का अध्यादेश कब जारी किया गया था?
5. नान्टेस के अध्यादेश किससे सम्बन्धित था?
6. नान्टेस का अध्यादेश किस शासक ने जारी किया था?
7. हेनरी चतुर्थ की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य क्या थे?
8. हेनरी चतुर्थ की हत्या किसने और कब की?
9. लुंई त्रयोदश का शासनकाल क्या था?
10. कार्डिनल रिशलू कौन था?
11. कार्डिनल मेजारिन कौन था?
12. फ्रोण्डे गृह-युद्ध कब प्रारम्भ हुआ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. 'मेरी डी मैडिस' का संरक्षण काल था :
   (क) 1610-17 ई. (ख) 1610-27 ई.
   (ग) 1610-43 ई. (घ) 1610-20 ई.
2. निम्नलिखित में कौन-सा दिन सेण्ट बार्थोलेम्यू दिवस के रूप में प्रसिद्ध है?
   (क) 24 अगस्त, 1572 (ख) 25 अगस्त, 1573
   (ग) 26 अगस्त, 1574 (घ) 27 अगस्त, 1574

3. तीन हेनरियों के युद्ध का काल था :
(क) 1588 ई. से 1589 ई. तक (ख) 1589 ई. से 1590 ई. तक
(ग) 1590 ई. से 1591 ई. तक (घ) 1591 ई. से 1592 ई. तक
4. हेनरी चतुर्थ का शासन काल था :
(क) 1589 ई. से 1610 ई. तक (ख) 1590 ई. से 1610 ई. तक
(ग) 1610 ई. से 1650 ई. तक (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
5. नान्टेस की राजाज्ञा घोषित की गई :
(क) 15 अप्रैल, 1598 ई. को (ख) 16 अप्रैल, 1598 ई. को
(ग) 30 अक्टूबर, 1610 ई. को (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
6. नान्टेस की राजाज्ञा के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सत्य है?
(क) यह राजाज्ञा इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की आज्ञा थी
(ख) यह राजाज्ञा फ्रांस की अर्थव्यवस्था में सुधार से सम्बन्धित थी
(ग) यह राजाज्ञा फ्रांस में ह्यूगनोटों को अधिकार प्रदान करने के सन्दर्भ में थी
(घ) यह राजाज्ञा स्पेन के विरुद्ध फ्रांस की जनता को युद्ध करने के लिए एक आज्ञा थी
7. रिशलू ने फ्रांस का नेतृत्व संभाला :
(क) 1624 ई. से 1642 ई. तक (ख) 1625 ई. से 1642 ई. तक
(ग) 1600 ई. से 1645 ई. तक (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
8. मेजारिन ने फ्रांस का नेतृत्व संभाला :
(क) 1642 ई. से 1661 ई. तक (ख) 1661 ई. से 1680 ई. तक
(ग) 1680 ई. से 1690 ई. तक (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
9. वेस्टफेलिया की सन्धि हुई थी :
(क) 1648 ई. में (ख) 1650 ई. में (ग) 1651 ई. में (घ) 1652 ई. में

[उत्तर—1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 5. (क) 6. (ग) 7. (क) 8. (क) 9. (क)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए :

1. फ्रांसिस प्रथम के उत्तराधिकारी हेनरी द्वितीय ने अपने पिता फ्रांसिस प्रथम की ही धार्मिक असहिष्णुता की नीति को अपनाया।
2. हेनरी द्वितीय ने अपने प्रबल प्रतिद्वन्द्वी स्पेनी शासक फिलिप द्वितीय के साथ 1559 ई. में 'कैटियो-कैम्ब्रेसिस' की सन्धि की थी।
3. लुई त्रयोदश के नाबालिग होने के कारण हेनरी चतुर्थ की पत्नी मेरी डी मैडिसी ने लुई त्रयोदश की संरक्षिका के रूप में 1610 ई. से 1617 ई. तक फ्रांस पर शासन किया।
4. लुई त्रयोदश ने कार्डिनल मेजारिन को अपना प्रधानमन्त्री नियुक्त किया।
5. कार्डिनल मेजारिन फ्रांस के प्रधानमन्त्री पद पर 1624 ई. से 1642 ई. तक रहा।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. सत्य 5. असत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. हेनरी चतुर्थ.......ई. में फ्रांस का शासक बना।
2. लुई त्रयोदश.......ई. में फ्रांस का शासक बना।
3. लुई त्रयोदश के नाबालिग होने के कारण हेनरी चतुर्थ की पत्नी........ने लुई त्रयोदश की संरक्षिका के रूप में 1610 ई. से 1617 ई. तक फ्रांस पर शासन किया।
4. कार्डिनल मेजारिन......ई. में फ्रांस का प्रधानमन्त्री बना।

[उत्तर—1. 1589, 2. 1610, 3. मेरी डी. मैडिसी, 4. 1642]

6

फ्रांस का चरमोत्कर्ष एवं लुई चतुर्दश
[FRANCE AT HER ZENITH AND LOUIS XIV]

लुई चतुर्दश का शासनकाल (1661-1715)
(REGIME OF LOUIS XIV)

विश्व के इतिहास में लुई चौदहवें का नाम उन व्यक्तियों की श्रेणी में आता है जो कि अपने युग को इतना अधिक प्रभावित करते हैं कि उस युग का नामकरण उन्हीं के नाम से लिया जाता है। लुई त्रयोदश के पुत्र लुई चतुर्दश ने फ्रांस के शासक के रूप में यूरोप की राजनीति को इतना अधिक प्रभावित किया कि यह काल इतिहास में **'लुई चौदहवें के युग'** (The Era of Louis XIV) के नाम से विख्यात है। निःसन्देह उसका शासन काल (1661-1715) यूरोप के देशों के लिए अनुकरणीय बन गया।

लुई चतुर्दश का संक्षिप्त जीवन परिचय
(LIFE SKETCH OF LOUIS XIV)

लुई चौदहवें का जन्म 1638 ई. में हुआ था। उसके पिता फ्रांस के शासक लुई त्रयोदश की मृत्यु के समय उसकी आयु केवल 5 वर्ष की थी। उसकी साहित्यिक शिक्षा के सामान्यता के आधार पर सैंसीमों ने लिखा है कि **'वह अत्यन्त कठिनता से पढ़-लिख सकता था।'** सीमों का यह कथन अतिरंजित प्रतीत होता है, क्योंकि लुई चौदहवें को गणित, इटैलियन एवं लैटिन की शिक्षा मिली थी। उसने सीजर द्वारा रचित कामेन्ट्रीज (Commentaries) नामक ग्रन्थ का अध्ययन किया था। मेजारिन एवं त्यूरेन से उसे शिक्षा प्राप्त हुई थी, परन्तु यह तो स्वीकार करना ही पड़ता है कि वह अत्यधिक शिक्षित नहीं था। कुछ भी हो उसकी राजनीतिक मेधा प्रशंसनीय थी।

लुई चौदहवां अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् 1648 ई. में फ्रांस का शासक बना, किन्तु 5 वर्ष की ही अवस्था होने के कारण उसकी माता **'मेरी डी मैडिसी'** उसकी संरक्षिका बनी एवं प्रधानमन्त्री के पद पर कार्डिनल मेजारिन यथावत् बना रहा। 1648 ई. से 1661 तक वह नाममात्र का शासक था क्योंकि फ्रांस का शासन वास्तविक रूप में मेजारिन के हाथों में था, किन्तु 1661 ई. में मेजारिन की मृत्यु के समय तक वह बालिग हो चुका था, अतः उसने मेजारिन की मृत्यु के पश्चात् फ्रांस के शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। **तब से वह अनवरत रूप से (अपनी मृत्यु तक) शासन का वास्तविक शासक बना रहा।**[1] 1715 ई. में लुई चतुर्दश का 77 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

1 "From that day, throughout a long reign, Louis was actual ruler."
—Hayes, *Modern Europe to 1870*, p. 254.

लुई द्वारा शासन की बागडोर हाथ में लेते समय यूरोप की स्थिति
(POLITICAL CONDITION OF EUROPE ON THE EVE OF LOUIS'S RULE)

1661 ई. में शासन की बागडोर हाथ में लेते समय लुई चतुर्दश अत्यन्त अनुकूल स्थिति में था। तीसवर्षीय युद्ध के कारण आस्ट्रिया की शक्ति का ह्रास हो चुका था। स्पेनिश साम्राज्य का अध:पतन हो रहा था। जर्मनी अपनी राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त था तो इंग्लैण्ड के शासक चार्ल्स द्वितीय की अपनी कोई स्वतन्त्र नीति थी ही नहीं, उसका उत्तराधिकारी जेम्स द्वितीय तो लुई चतुर्दश का समर्थक था ही। इसके विपरीत **लुई चतुर्दश को जो फ्रांस इस समय प्राप्त हुआ था, वह आर्थिक दृष्टि से सुगठित तो नहीं था, किन्तु राजनीतिक दृष्टि से वह सुदृढ़ निरंकुश था।** पेरिस की पार्लमां एवं स्टेट्स जनरल का प्रभाव अब समाप्त प्राय: हो चुका था। हेनरी चतुर्थ, कार्डिनल रिशलू एवं मेजारिन के अथक प्रयत्नों से अब तक यूरोपीय रंगमंच में फ्रांस के बूर्बां राजवंश की प्रतिष्ठा स्थापित हो चुकी थी। स्पष्ट दिखायी देने लगा था कि अब यूरोप की राजनीति पर हैप्सबर्ग वंश के स्थान पर बूर्बां वंश का प्रभुत्व छा जाएगा। यही नहीं, लुई को योग्य व्यक्तियों की सेवाएं भी प्राप्त हुईं। हेज ने ठीक ही लिखा है, **"एक महान् शासक के लिए प्रत्येक स्थिति यूरोपीय इतिहास में एक नवयुग का शुभारम्भ करने के लिए तैयार थी।"**[1] लुई चौदहवें ने उक्त परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए नि:सन्देह एक महान् युग को जन्म दे दिया जिसे लुई चौदहवें के युग के नाम से जाना जाता है। नि:सन्देह यह युग (1661 ई. से 1715 ई. तक) यूरोप में फ्रांस की प्रधानता का युग था।

लुई चतुर्दश की गृह-नीति
(HOME POLICY OF LOUIS XIV)

लुई चतुर्दश की गृह-नीति के अन्तर्गत निम्न तथ्यों की विवेचना करना आवश्यक है—

(1) निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना
(2) प्रमुख विभाग
(3) साहित्य एवं संस्कृति का विकास
(4) धार्मिक नीति

(1) निरंकुश राजतन्त्र की स्थापना (Foundation of Autocratic Monarchy)

यूरोप के इतिहास में लुई चतुर्दश को यूरोप का प्रथम भद्र पुरुष, महान् सम्राट, एवं आदित्य राजा जैसे सम्बोधनों से प्रतिष्ठित किया जाता है। इसका सबसे प्रथम कारण उसके द्वारा शासन की सम्पूर्ण शक्ति स्वयं अपने हाथों में रखकर सफलतापूर्वक शासन संचालन करना था। लुई चतुर्दश ने मेजारिन की मृत्यु के पश्चात् स्पष्ट घोषणा कर दी कि शासन की सर्वोच्च शक्ति किसी सलाहकार या मन्त्री के हाथों में निहित न होकर स्वयं उसमें होगी। उसने अपने पुत्र के **शिक्षक बोस्युवे** (Bossuet) द्वारा प्रतिपादित **'राज्य के दैवी-अधिकार के सिद्धान्त'** को स्वीकार किया। इस सिद्धान्त के अनुसार, "राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है। उसमें सभी ईश्वरीय गुण विद्यमान होते हैं। राजा ईश्वरीय अनुभूति एवं प्रेरणा के अनुसार शासन चलाता है। वह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है। प्रजा को उसकी आज्ञा का पालन करना अनिवार्य है।" लुई चतुर्दश ने इसी नीति का पालन करते हुए एक सुसंगठित, सुदृढ़ एवं केन्द्रीय निरंकुश शासन को स्थापित किया। वह स्वयं प्रधानमन्त्री

1 "Every thing was in readiness for a great king to inaugurate a new era in European History."

था। कार्य के सफल संचालन के लिए विभिन्न मन्त्री उसने नियुक्त किए थे, किन्तु वे केवल उसके आदर्शों का पालन करने तक ही अधिकार रखते थे। मन्त्रियों के नियुक्ति के सन्दर्भ में उसने स्पष्ट घोषित किया था कि **"मैं जिस वर्ग से मन्त्रियों का चयन करता हूं उससे जनसाधारण को यह समझ लेना चाहिए कि मैं उनके साथ शक्ति में सहभागी नहीं बन सकता।"** निःसन्देह उसकी शासन व्यवस्था में रिशलू व मेजारिन जैसे अधिकार प्राप्त मन्त्रियों का अस्तित्व नहीं था। लुई चौदहवें ने फ्रांस की पार्लमां, स्टेट्स जनरल एवं नगरपालिकाओं के अधिकार अत्यन्त सीमित कर दिए। सामन्त एवं उच्च वर्ग के लोगों को आर्थिक अधिकार तो दिए गए, किन्तु अन्य अधिकार अत्यन्त सीमित कर दिए। दूसरे शब्दों में, अब वे राजदरबार की शोभा मात्र रह गए। राज्य के प्रत्येक विषय को वह स्वयं देखता। प्रत्येक निर्णय वह स्वयं लेता एवं नियुक्तियां करता था। सम्पूर्ण शक्तियां उसी में निहित थीं। उसने स्वयं कहा था, **'मैं ही राज्य हूं।'**[1] निःसन्देह उसके शब्द ही कानून थे। इसके लिए उसे अत्यधिक परिश्रम भी करना पड़ता था। उसने कहा भी था, **"केन्द्रीयभूत राज्य परिश्रम द्वारा एवं परिश्रम के लिए है।"**[2]

दैवी अधिकार के सिद्धान्त के अनुरूप अपने गौरव को बढ़ाने के लिए लुई चौदहवें ने पेरिस से 12 मील की दूरी पर वार्साय में एक भव्य राज प्रासाद बनवाया। **हेज ने इस महल को भव्य निरंकुश राजतन्त्र का पूर्ण नमूना बतलाया है।**[3] लुई चतुर्दश ने 'फ्रांस के युद्ध' का जो दृश्य अपने बाल्यकाल में देखा था, वह उसके हृदय में पेरिस के प्रति घृणा उत्पन्न करने का साधन बन गया था। उसने अपनी मर्यादा के अनुरूप अपना निवास स्थल वार्साय के जिस शीश महल को बनाया था वह उसके दरबारियों, उच्च वर्ग के स्त्री पुरुषों द्वारा उसकी शोभा बढ़ाने का माध्यम बन गया। उसने अपना राज चिह्न 'सूर्य' रखा। उसकी दृष्टि में वह सूर्य के सदृश था और उसके इर्द-गिर्द रहने वाले दरबारी, सामन्त और उच्च वर्ग के लोग एवं जनता प्रकाश पिण्ड के सदृश थे जो कि सूर्य के प्रकाश से ही प्रकाशमान थे।

वार्साय का राजमहल विलासिता एवं वैभव का प्रतीक था। इसके निर्माण में 40 से 50 करोड़ रुपए की लागत का अनुभव लगाया जाता था। इस महल में शीशों का महल, चित्र, पार्क, उद्यान, फब्बारे, छायादार वृक्ष एवं क्रीड़ा के लिए अनेक सुख-सुविधापूर्ण सभी सुविधाएं मौजूद थीं। वार्साय की चकाचौंध यूरोप के राज्यों के लिए अद्‌भुत थी, किन्तु यह स्मरणीय है कि वार्साय के राजप्रासाद की यह चमक-दमक फ्रांस की आर्थिक स्थिति की दृष्टि से अत्यन्त घातक सिद्ध हुई। यही नहीं, शनैः-शनैः यह एक आडम्बर सिद्ध हुआ जबकि राजदरबारियों का नैतिक स्तर अत्यन्त गिर गया, किन्तु यह लुई चतुर्दश के अहं की पूर्ति के लिए पर्याप्त सिद्ध हुआ।

(2) प्रमुख विभाग (Main Departments)

लुई चतुर्दश ने प्रशासन की सुविधा के लिए निम्न महत्वपूर्ण विभाग को अस्तित्व प्रदान किया—

(अ) सैन्य विभाग—लुई चतुर्दश एक केन्द्रीयकृत सशक्त सेना की स्थापना करना चाहता था। अतः उसने योग्य एवं कुशल व्यक्ति 'लुवय' को अपना युद्ध मन्त्री नियुक्त किया। उसके

1 L' e' tet c' estomoi—(I am the state).
2 One reigns by work and for work.
3 Its magnificent "Hall of Mirrors" was a perfact symbol of the "grand Monarch."
—Hayes, *Modern Europe to 1870*, p. 256.

निर्देशानुसार लुवय ने फ्रांसीसी सेना में कठोर अनुशासन, अभ्यास एवं कुशल रणशिक्षा की समुचित व्यवस्था की। सेना में पदोन्नति का अधिकार योग्यता रखा गया। उसकी सेना में कोंदे एवं ट्यूरैन जैसे योग्य सेनापति थे। युद्ध मन्त्री प्रत्येक स्थिति में लुई चौदहवें के प्रति उत्तरदायी था।

(ब) विदेश विभाग—लुई चौदहवें ने कुशल परराष्ट्र नीति की सार्थकता के लिए दक्ष, **कुशल एवं कूटनीतिज्ञ 'लियोन' को विदेश विभाग का मन्त्री नियुक्त किया।** फ्रांस की पूर्वी एवं उत्तरी सेनाओं पर दुर्ग बनवाकर किलेबन्दी की गई। विदेश मन्त्री प्रत्येक स्थिति में शासक के प्रति उत्तरदायी था। युद्ध एवं सन्धि के निर्णय शासक स्वयं लेता था।

(स) अर्थ विभाग—लुई चतुर्दश का यह सौभाग्य था कि उसे वित्त विभाग के संचालन के लिए **'जीन बैपटिस्ट कोल्बर्ट'** जैसा वित्त मन्त्री प्राप्त हुआ। **हेज ने कोल्बर्ट को अद्वितीय प्रतिभा वाला मन्त्री बतलाया है।**[1] निःसन्देह फ्रांस की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ता को प्राप्त हो गई होती, यदि लुई चतुर्दश ने कोल्बर्ट के द्वारा बारम्बार किए गए इस अनुरोध को मान लिया होता कि वह मितव्ययी बने। लुई चतुर्दश ने अपने शासन काल में युद्ध नीति के लिए धन की कमी को कभी महसूस ही नहीं किया, निःसन्देह यह कोल्बर्ट की ही देन थी। कोल्बर्ट का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है—

(i) कोल्बर्ट का संक्षिप्त जीवन परिचय (1619-1683) (Life Sketch of Colbert)

'जीन बैपटिस्ट कोल्बर्ट' का जन्म सन् 1619 ई. में एक मध्यम वर्ग के व्यापारी के घर में हुआ था। उसकी योग्यता एवं कर्मठता से प्रभावित होकर ही कार्डिनल मेजारिन ने उसे अपने घर के प्रबन्ध के लिए नियुक्त किया था। सरकारी नौकरी प्राप्त कर कोल्बर्ट ने अपनी अपूर्व योग्यता का परिचय देकर कार्डिनल मेजारिन को मन्त्र-मुग्ध करा दिया। अतः अपनी मृत्यु से पूर्व मेजारिन ने लुई चतुर्दश से कोल्बर्ट की नियुक्ति के लिए कहा था और उसे सार्वजनिक कार्यों का अध्यक्ष बनवाया था। मेजारिन की मृत्यु के पश्चात् उसने सार्वजनिक सेनां विभाग के अध्यक्ष, वित्त विभाग के महानिरीक्षक, नौसेना विभाग, उपनिवेश, व्यापार एवं कृषि विभागों के मन्त्रित्व को विदूषित किया था। 1661 ई. से 1683 ई. तक उसने अपने महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए महत्वपूर्ण सुधार किए। उसके सुधार फ्रांस की आर्थिक स्थिति को समुन्नत करने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। अतः उसके सुधारों का आंकलन आर्थिक परिप्रेक्ष्य में ही किया जाता है। **उसके महत्वपूर्ण आर्थिक सुधारों का वर्णन निम्नवत् है :**

(ii) कोल्बर्ट के आर्थिक सुधार (Economic reforms of Colbert)

कोल्बर्ट ने फ्रांस को अत्यधिक जर्जरित एवं विशृंखलित आर्थिक स्थिति में प्राप्त किया था। सली द्वारा किए गए **वित्तीय सुधार** रिशलू एवं मेजारिन द्वारा अर्थव्यवस्था की ओर कोई विशेष ध्यान न देने से निरर्थक हो गए थे। सरकारी व्यय की अधिकता सिर पर चढ़ी थी। सामान्य जनता करों के भार से दबी हुई थी। सामन्तवर्ग करों से प्रायः मुक्त था। यही नहीं, ठेकेदारी प्रथा की जो नीति कर वसूलने के लिए अपनाई जाती थी उससे सामान्य वर्ग अत्यन्त कष्ट में था। स्पेन एवं आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्धों की अनवरतता ने फ्रांसीसी राजकोष पर गम्भीर प्रभाव डाला। भयंकर गृहयुद्धों एवं तीसवर्षीय युद्ध से राजकोष प्रायः खाली हो गया

1 **"In his domestic policy, Louis XIV had a assistance of an extraordinarily talented minister, Colbert."** —**Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 258.**

था। ऐसी स्थिति में कोल्बर्ट के लिए अर्थव्यवस्था को पुनः सन्तुलित रूप प्रदान करने का अत्यन्त महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व था।

कोल्बर्ट ने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के अथक प्रयत्न किए। उसने सर्वप्रथम ईमानदार एवं कर्मठ व्यक्तियों की एक विशेष अदालत भ्रष्ट एवं धनलोलुप कर्मचारियों की जांच के लिए बनाई। उसके इस प्रयत्न से राज्य को लगभग 40 करोड़ रुपए की अपहृत धनराशि प्राप्त हुई। कोल्बर्ट कुलीन वर्ग पर भी प्रत्यक्ष भूमि कर लगाना चाहता था, किन्तु शासकीय हस्तक्षेप के कारण वह ऐसा न कर सका लेकिन कोल्बर्ट ने कुलीनों के उन प्रमाणपत्रों की जांच की जिसके आधार पर उन्हें प्रत्यक्ष भूमि कर से छूट मिली हुई ती। जिन कुलीनों के अधिकार प्रमाणित न हो सके उसने उन्हें भूमि कर देने के लिए बाध्य किया। एक ओर उसने किसानों के प्रत्यक्ष कर कम कर दिए तो दूसरी ओर कुलीन वर्ग के कर मुक्ति कें अधिकार सीमित कर दिए। नए एवं परोक्ष कर लगाए गए। कृषकों की स्थिति सुधारने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पशुओं की नस्लों को सुधारने का प्रयत्न किया। **सिंचाई की व्यवस्था के लिए रौन एवं गैरोन नदियों को भूमध्यसागर एवं अटलाण्टिक सागर से मिलाने वाली 160 मील लम्बी 'लांगडक नहर' का निर्माण हुआ।** राज्य की आय में वृद्धि एवं व्यय में कटौती करने के साथ-साथ ऋणों पर ब्याज दर कम कर दीं। कोल्बर्ट की प्रशंसा करते हुए डेविड ऑग ने लिखा है, **"लुई के राज्य के महान् आर्थिक पुनर्निर्माण का श्रेय किसी अन्य की अपेक्षा कोल्बर्ट का सबसे अधिक है।"**

कोल्बर्ट ने व्यापार एवं वाणिज्य की उन्नति के लिए रक्षण नीति (Mercantilism) **अपनाई।** इस नीति के अन्तर्गत उसने फ्रांस में नए उद्योगों को प्रोत्साहन दिया। लिनन, रेशम एवं चमड़े के उद्योगों को अभूतपूर्व उन्नति हुई। इसका प्रधान कारण था कि उसने औद्योगिक आविष्कार पर विशेष बल दिया। हालैण्ड, इंग्लैण्ड एवं इटली से कारीगर एवं कुशल प्रशिक्षकों को फ्रांस में आमन्त्रित किया गया। फ्रांस के कारीगरों का विदेश जाना अवैध घोषित कर दिया गया। आयात पर चुंगी लगाई गई। सामन्तों एवं पूंजीपतियों को औद्योगिक विकास के लिए पूंजी लगाने की ओर प्रेरित किया गया। विदेशी जहाज जो कि फ्रांसीसी बन्दरगाहों का प्रयोग करते थे उन पर **टनेज कर** (Tannage) लगाया गया। **गिल्ड** (Guilds) नामक व्यापारिक संस्थाओं व संघों का पुनर्गठन किया गया। **कैले, हाव्रे, रेशफर्ट व ब्रेस्ट** में नए फ्रांसीसी बन्दरगाह खोले गए। इन बन्दरगाहों की किलेबन्दी कर दी गई। जहाज बनाने के कारखाने भी खोले गए। यही नहीं, उपनिवेश स्थापना की ओर विशेष बल दिया गया। **सेनेगाल, कनाडा, भारत** एवं **मैडागास्कर** में फ्रांसीसी कम्पनियों की स्थापना की गई। पश्चिमी इण्डीज में गवाडेलूप एवं मेटेर्नीक द्वीप को फ्रांस ने खरीद लिया। औपनिवेशिक क्षेत्र में फ्रांस के हितों की रक्षा के लिए उसने एक शक्तिशाली बेड़े का भी निर्माण किया।

कोल्बर्ट के द्वारा किए गए उक्त आर्थिक सुधारों ने फ्रांस को आर्थिक लाभ तो पहुंचाया, परन्तु लुई चतुर्दश की युद्ध नीति एवं अपव्यय ने उसके सुधारों पर पानी फेर दिया। जहां तक कोल्बर्ट की संरक्षण नीति का प्रश्न है, कोल्बर्ट निःसन्देह यह समझने में असमर्थ रहा। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर नियन्त्रण राज्य के आदेशों से होगा अथवा उसकी क्रियाओं को इच्छा के अनुरूप अवरोधित, प्रोत्साहित कर तथा आयात पर नियन्त्रण व निर्यात के प्रोत्साहन से हो सकता है। उसकी संरक्षण नीति ने निःसन्देह फ्रांस के स्वतन्त्र व्यापार विकास में बाधा डाली। राजकीय नियन्त्रण कदापि उचित नहीं था। यही नहीं, उसकी संरक्षण नीति का प्रतिकूल

प्रभाव कृषि व्यवस्था पर भी पड़ा। इतना सब कुछ होते हुए भी यह तो मानना ही होगा कि उसके आर्थिक सुधारों से प्राप्त धन के कारण ही लुई चतुर्दश अनेक युद्ध लड़ सका। निःसन्देह 1683 ई. में उसकी मृत्यु से फ्रांस को भयंकर आघात लगा था।

कोल्बर्ट को इतिहासकार हेज ने **"एक महान् वित्तमन्त्री व अर्थशास्त्री ही नहीं माना है बल्कि शान्तियुगीन कलाओं के क्षेत्र में भी सहयोगकर्ता भी माना है।"**[1] हेज की यह स्वीकारोक्ति निःसन्देह सत्य है। कोल्बर्ट ने रिशलू द्वारा स्थापित **'फ्रैंच अकादमी'** को और अधिक सुदृढ़ बनाया। 1664 ई. में उसने **'विज्ञान अकादमी'** की स्थापना की जो कि कालान्तर में इन्स्टटीयूट ऑफ फ्रांस (Institute of France) के नाम से विख्यात हुई। यही नहीं, पेरिस में **'खगोल विद्या—वेध गृह'** (Astronomical observatory) की स्थापना उसकी महत्वपूर्ण देन है।

3. साहित्य एवं संस्कृति का विकास (Growth of Literature and Culture)

साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में लुई चतुर्दश का शासनकाल फ्रांसीसी प्रतिष्ठा एवं वैभव का काल था। कोरनील (1606-1684), लाफन्टेन (1621-1695), मोल्येर (1622-1673), रासिन (1639-1699) एवं मैडम डी सेवीनये (1626-1656) इस काल के सर्वोत्कृष्ट साहित्य निधि थे। रासिन एवं कोरनील तो दुःखान्त नाटक के सृजन में अत्यन्त दक्ष थे। **कोरनील को तो 'फ्रांसीसी चित्रपट के पिता' के नाम से भी पुकारा जाता था। मोल्येर ने सुखान्त नाटकों का सृजन किया।** 'मैडम डी सेवीनये' अतीत चित्रण के हास्यपूर्ण पत्र लेखन में दक्ष थीं। धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य के सृजन के क्षेत्र में फेनलों एवं बोस्युये के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी समय फ्रांस में एक महान् दार्शनिक एवं गणितज्ञ रेने देकार्त (Rene Descartes) भी हुआ। **उसे आधुनिक दर्शन का पिता** माना जाता है।

जहां तक कला का सम्बन्ध है मनसर्ट, लेब्रुन, वटेल, लली एवं जिरार्दो इस युग के प्रसिद्ध कलाविद थे। वार्साय का राजमहल फ्रांसीसी स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था। इसके अतिरिक्त वित्तमन्त्री कोल्बर्ट शान्तियुगीन कलाओं का सहयोगकर्ता था। उसके द्वारा इस सन्दर्भ में किए गए सुधार कार्य निःसन्देह अमूल्य निधि थे। कुल मिलाकर लुईं चतुर्दशकालीन फ्रांसीसी साहित्य एवं संस्कृति यूरोपीय देशों के लिए अनुकरणीय थे। हेज ने ठीक ही लिखा है, **"न केवल फ्रांसीसी राजनीति के सिद्धान्त एवं अभ्यास समस्त सभ्य यूरोप के लिए अनुकरणीय थे वरन् फ्रांसीसी भाषा, साहित्य और फ्रांसीसी आचार-विचार, वेश-भूषा एवं कला भी अनुकरणीय आदर्श थे।"**[2]

(4) धार्मिक नीति (Religious Policy)

(अ) रिगेल का संघर्ष (Struggle of Regale)—लुई चौदहवां एक कट्टर कैथोलिक था, किन्तु साथ ही वह राज्य के दैवी अधिकार के सिद्धान्त पर विश्वास करता था। स्पष्ट है कि लुई स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानकर शासन करता था और स्वतः को **'चर्च का ज्येष्ठ पुत्र'** मानता था। इधर यूरोप में कैथोलिकों के लिए पोप की आज्ञा सर्वोपरि थी और यही बात फ्रांस के कैथोलिकों में भी लागू होती थी। इस दृष्टि से पोप का स्थान राजा से ऊपर समझा

1 "Colbert was essentially a financier and economist, but to the arts of peace, which adorded the reign of Louis XIV, he was a noteworthy contributor."
—Hayes, *Ibid.*, p. 252.

2 "Not only French Political Principles and Practices, but French speech and literature and French manners, dress and art were adopted as the models and property of civilized Europe." —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 252.

जाता था। यह ठीक है कि पोप धार्मिक क्षेत्र में सर्वप्रधान था, किन्तु उसने राजनीति में हस्तक्षेप आरम्भ कर दिया। यह स्थिति लुई चतुर्दश के सिद्धान्त के विपरीत थी। **लुई चतुर्दश ने 1682 ई. में फ्रांस में घोषणा करवा दी कि वह फ्रांस में पोप से ऊपर है चाहे वह धर्म का ही मामला क्यों न हो।** स्पष्ट था कि अब फ्रांस के कैथोलिकों को पोप एवं लुई चतुर्दश की आज्ञा में से लुई की आज्ञा को मानना था। लुई चतुर्दश ने स्पष्ट घोषणा करवा दी कि राजा की लौकिक सत्ता पर पोप का नियन्त्रण मान्य नहीं है। पोप फ्रांसीसी चर्च की कौन्सिल पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फ्रांसीसी गैलिकन चर्च के पुराने अधिकार नितान्त पवित्र हैं। फ्रांस के चर्च सम्बन्धी अधिकार फ्रांसीसी बिशप भी रखते हैं। पोप को फ्रांस के चर्च की परम्पराओं के अनुरूप फ्रांस से सम्बन्ध स्थापित करना होगा। पोप के सैद्धान्तिक अधिकार फ्रांस में बिना फ्रांसीसी चर्च की सहमति से लागू न होंगे तथा लुई चतुर्दश स्वयं फ्रांस के कैथोलिक चर्च का ज्येष्ठ पुत्र है। यह घोषणा पोप के लिए असह्य थी। उसने इसे अमान्य घोषित कर दिया। **अतः लुई चौदहवें व पोप इन्नोसेण्ट** (Pope Innocent) **में संघर्ष प्रारम्भ हो गया।** यह संघर्ष इतिहास में **'रिगेल के संघर्ष'**[1] के नाम से जाना जाता है। अन्ततः 1693 ई. में लुई चतुर्दश को अपनी घोषणा को वापस लेना पड़ा, किन्तु पोप को भी फ्रांस में लुई द्वारा रिक्त बिशपों की नियुक्ति के अधिकार को मान्यता देनी पड़ी। **इस संघर्ष में लुई चतुर्दश पराजित अवश्य हो गया था, किन्तु अब फ्रांस के चर्च पर उसकी तूती बोलने लगी।**

(ब) गैर-कैथोलियों का दमन (Repression of Non-Catholics)—लुई चतुर्दश धार्मिक दृष्टि से असहिष्णु था। उसने फ्रांस में गैर-कैंथोलिकों के दमन की नीति अपनाई। **'नान्टेस की राजाज्ञा'** को खण्डित कर दिया गया। जैनसैनाइट एवं ह्यूगनोटों पर अत्याचार किए गए। जैनसैनाइट जैसे कुशल, शान्तिप्रिय एवं व्यापारिक दृष्टि से दक्ष व्यापारी एवं कारीगरों को फ्रांस से पलायन करना पड़ा। उसने गैर-कैथोलियों को तुरन्त धर्म परिवर्तन के आदेश दिए। ह्यूगनोटों के धार्मिक अधिकारों का भी हनन कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि गैर-कैथोलिकों ने फ्रांस से भागना ही स्वीकार किया। अब यूरोप में प्रोटेस्ट राज्यों में फ्रांस के विरुद्ध एकता में वृद्धि हो गई। यही कारण है कि हालैण्ड व इंग्लैण्ड के शासक विलियम तृतीय ने लुई चौदहवें के विरुद्ध आग्सबर्ग की लीग का गठन करने में सफलता प्राप्त कर ही ली। **इस प्रकार उसकी धार्मिक नीति ने उसकी विदेश नीति को गम्भीर रूप से प्रभावित किया।**

लुई चतुर्दश की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF LOUIS XIV)

लुई चौदहवें ने अपने पूर्ववर्ती शासकों की ही भांति फ्रांस को यूरोप का सर्वोत्कृष्ट देश बनाने का स्वप्न देखा। अतः वह यूरोप में फ्रांस की सीमाओं में परिवर्तन का पक्षपाती था।

---

1 रिगेल (Regale) एक परम्परा थी जिसके अनुसार उत्तरी फ्रांस के किसी भी क्षेत्र में बिशप का स्थान रिक्त होने पर उस क्षेत्र की आय राजकोष में जमा कर दी जाती थी। लुई XIV ने इस प्रथा को दक्षिणी फ्रांस में भी लागू कर दिया जिसका दक्षिणी फ्रांस के बिशपों ने विरोध किया। स्वाभाविक रूप से पोप ने बिशपों का पक्ष लिया, जिससे यह संघर्ष तीव्र हो गया। फ्रांस की जनता ने लुई का पक्ष लिया। अतः पोप इन्नोसेण्ट ग्यारहवां व लुई के बीच संघर्ष चला। 1689 ई. में पोप इन्नोसेन्ट XI की मृत्यु हो गयी व उसके स्थान पर पोप इन्नोसेन्ट XII पोप बना। अन्ततः लुई XIV व पोप इन्नोसेन्ट XII के बीच 1693 ई. में समझौता हो गया। इस समझौते के द्वारा लुई ने 1682 ई. की अपनी घोषणा को वापिस ले लिया तथा पोप ने बिशपों के रिक्त पदों पर लुई के द्वारा प्रस्तावित व्यक्तियों को स्वीकार कर लिया।

वह ऐसा करके हैप्सबर्गीय राजवंश की प्रतिष्ठा को एकदम धूमिल कर देना चाहता था। वह यूरोपीय देशों की **'प्राकृतिक सीमाओं के सिद्धान्त'** (Doctrine of natural boundaries) का हिमायती था। इसका तात्पर्य था कि प्रत्येक की सीमाएं नैसर्गिक हों। संक्षेप में, वह फ्रांस की सीमा को दक्षिण में आल्पस एवं पिरैनीज, पश्चिम में समुद्र एवं उत्तर-पूर्व में राइन नदी तक विस्तृत करना चाहता था। इसका सीधा अर्थ था कि उसे विदेशी शक्तियों से युद्ध करना पड़ता। **इस समय यूरोप के अन्य देशों की तुलना में फ्रांस की स्थिति सुदृढ़ थी**[1]. अतः उसने अपनी साम्राज्यवादी विदेशी नीति के प्राकृतिक सीमाओं के सिद्धान्त की गरिमा के लिए **स्पेन ने डेवोल्यूशन का युद्ध, डचों से युद्ध, आग्सबर्ग की लीग का युद्ध एवं स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध किया।**

स्पेन से डेवोल्यूशन का युद्ध (1667-1668)
(WAR OF DEVOLUTION WITH SPAIN)

(1) **कारण** (Causes)—स्पेन से डेवोल्यूशन के युद्ध का सर्वप्रधान कारण लुई चतुर्दश की महत्वाकांक्षा एवं साम्राज्यवादी नीति थी। लुई अपनी इस नीति के सफल सम्पादन हेतु स्पेनी नीदरलैण्ड्स (बेल्जियम) एवं फ्रैंच काम्टे को अपने साम्राज्य का अंग बनाना चाहता था। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लुई चतुर्दश ने स्पेनी नीदरलैण्ड्स में प्रचलित **सामन्ती अथवा स्थानीय डेवोल्यूशन नामक उत्तराधिकार के नियम'** का आधार लिया। इस नियम के अनुसार पैतृक सम्पत्ति पर पहली स्त्री की सन्तान का ही सर्वाधिक अधिकार मान्य था।

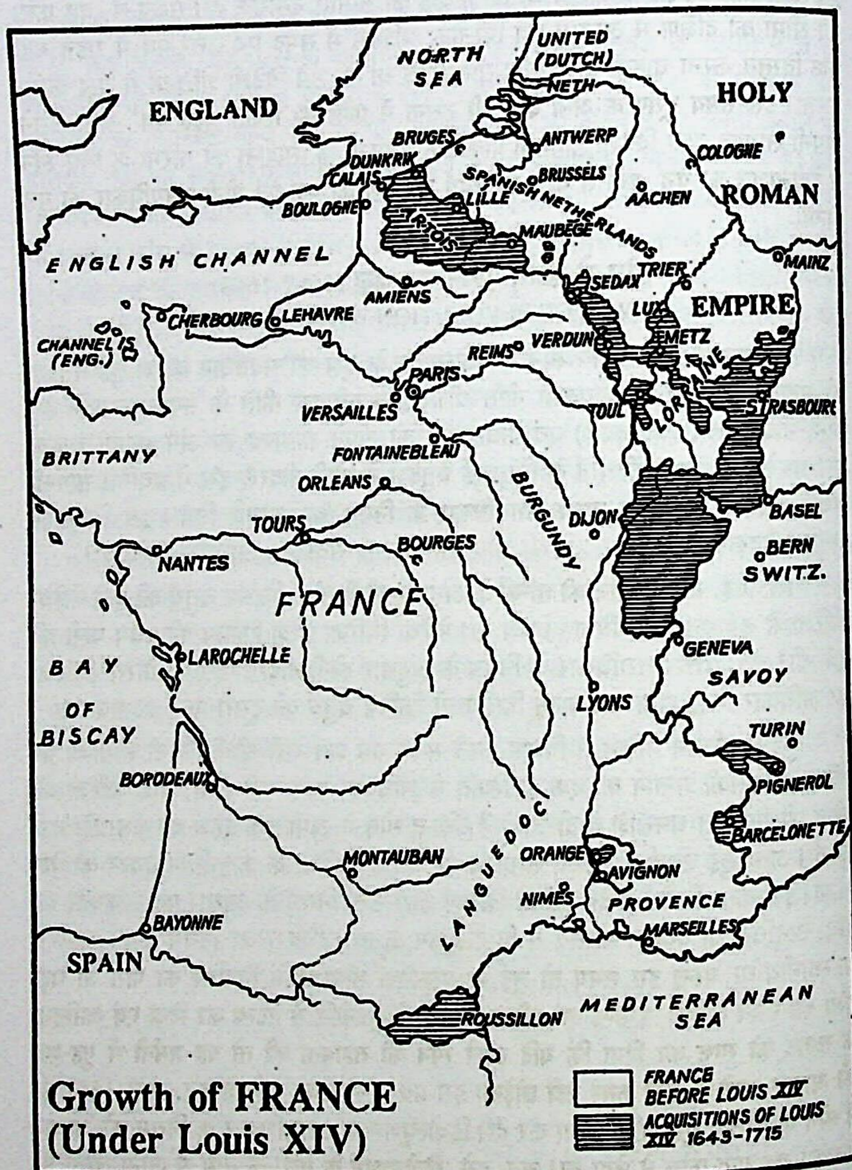
1659 ई. की **'पिरैनीज की सन्धि'** के अनुसार स्पेनी नरेश फिलिप चतुर्थ की पुत्री मेरिया थिरिजा से लुई चतुर्दश ने विवाह किया था। मेरिया थिरिजा नरेश फिलिप की प्रथम पत्नी की पुत्री थी। अतः उक्त उत्तराधिकार के नियम के अनुसार स्पेनी नीदरलैण्ड्स पर मेरिया थिरिजा का अधिकार सिद्ध होता था। चार्ल्स द्वितीय तो फिलिप चतुर्थ की दूसरी पत्नी का पुत्र था।

लुई चतुर्दश ने मेरिया से विवाह करते समय यह शर्त रखी थी कि स्पेनी साम्राज्य पर मेरिया या उसकी सन्तान का एक ही स्थिति में अधिकार मान्य नहीं होगा, यदि थिरिजा की दहेज की निश्चित धनराशि दे दी जाती है, किन्तु स्पेन ने अभी तक दहेज की धनराशि नहीं दी थी। अतः लुई चतुर्दश ने स्पेनी साम्राज्य पर मेरिया थिरिजा के कानूनी अधिकार को पेश किया। इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि लुई द्वारा उक्त नियम के आधार पर अधिकार का दावा अनुचित था क्योंकि वास्तव में डिवोल्यूशन के उत्तराधिकार का नियम केवल सामन्ती या स्थानीय था, **परन्तु इस समय तो लुई पर प्राकृतिक सीमाओं के निर्धारण का पारा जो चढ़ा हुआ था। उसने हालैण्ड, इंग्लैण्ड एवं स्वीडन को अपनी कूटनीति से तटस्थ कर दिया एवं आस्ट्रिया के सम्राट को स्पष्ट कर दिया कि यदि उसने स्पेन की सहायता की तो वह जर्मनी में गृह-युद्ध को आरम्भ करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा।** इस प्रकार स्पेन को अकेला कर उसने 1667 ई. में स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। डिवोल्यूशन के उत्तराधिकार के नियम को आधार बनाकर यह युद्ध फ्रांस ने छेड़ा था। अतः इसे **'डिवोल्यूशन के युद्ध'** के नाम से जाना जाता है।

(2) **युद्ध की घटनाएं** (Events of the War)—1667 ई. में स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते ही लुई चतुर्दश की सेना ने स्पेन की दुर्बलता एवं पतनावस्था का लाभ

1 "विस्तृत विवरण के लिए इसी अध्याय में लुई द्वारा शासन की बागडोर हाथ में लेते समय यूरोप की स्थिति देखिए।"

उठाते हुए फ्रैंच काम्टे पर अधिकार कर लिया। इसके पश्चात् फ्रांसीसी सेना स्पेनी नीदरलैण्ड्स में घुस गई। इस समय इतनी आसानी से फ्रांस की सफलता ने इंग्लैण्ड, हालैण्ड एवं स्वीडन



Growth of FRANCE (Under Louis XIV)

के कान खड़े कर दिए। इंग्लैण्ड व हालैण्ड ने अपनी पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता का अन्त कर स्वीडन के साथ मिलकर 1668 ई. में त्रिगुट का निर्माण कर लिया। हेज ने ठीक ही लिखा है, "शक्ति सन्तुलन की दृष्टि से किया गया यह कदम प्राकृतिक सीमाओं के लिए फ्रांसीसी शासक

की आक्रामक इच्छा का उत्तर था।"[1] इस कदम ने निःसन्देह लुई चतुर्दश को 'एला शैपल की सन्धि' (Aix La Chapelle) के लिए विवश कर दिया।

(3) **एला शैपल की सन्धि** (Treaty of Aix-La-Chapelle)—इस सन्धि के अनुसार फ्रांस की सीमा पर लगे टुर्नय (Tournai), चालेशय (Charlesai) एवं लीले (Lille) जैसे नगर स्पेन को फ्रांस को सौंपने पड़े। फ्रांस ने युद्ध में जीता स्पेनी नीदरलैण्ड्स का अधिकांश भाग लौटा दिया। हेज के अनुसार, '**इस सन्धि ने लुई चतुर्दश की पिपासा को अतृप्त ही रखा।**'[2]

डचों से युद्ध (1672-1678)
(WAR WITH DUTCH)

(1) **युद्ध के कारण** (Causes of the War)—डेवोल्यूशन के युद्ध में विवश होकर लुई चतुर्दश को एला-शैपल की सन्धि करनी पड़ी। लुई चतुर्दश ने इसका कारण हालैण्ड को माना। अतः वह हालैण्ड से अपने अपमान का बदला लेना चाहता था। लुई इस बात को भी भली-भांति समझता था कि फ्रांस के साम्राज्य विस्तार एवं व्यापारिक उन्नति के लिए हालैण्ड सबसे बड़ी बाधा है। वास्तव में, फ्रांस उत्तर-पूर्व की ओर फ्रांस के साम्राज्य विस्तार से हालैण्ड की सुरक्षा को खतरा पहुंचता था। अतः हालैण्ड भी फ्रांस से संशकित था। इधर लुई के लिए हालैण्ड के काल्विनवादी उसके कट्टर कैथोलिक होने के कारण असह्य थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि हालैण्ड ने ही फ्रांस से भागे ह्यूगनोटों को शरण दी थी।

अतः लुई ने हालैण्ड के युद्ध में परास्त करने के लिए सर्वप्रथम इंग्लैण्ड के शासक चार्ल्स द्वितीय को धन देकर 1670 में डोवर की सन्धि कर ली। इस सन्धि से उसने इंग्लैण्ड की तटस्थता प्राप्त कर ली। स्वीडन को भी धन देकर अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार त्रिगुट को भंग कर लुई ने अपने लिए अनुकूल स्थिति उत्पन्न कर दी। इसके विपरीत हालैण्ड में इस समय राजतन्त्रवादियों एवं गणतन्त्रवादियों में गृह-युद्ध चल रहा था। हालैण्ड की इस आन्तरिक समस्या से लाभ उठाकर उसने 1672 ई. में हालैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

(2) **युद्ध की घटनाएं** (Events of the War)—फ्रांस का हालैण्ड के साथ यह युद्ध 1672 ई. से 1678 ई. तक जारी रहा। **फ्रांसीसी सेना का प्रतिनिधित्व कोंदे एवं ट्यूरे नामक सेनापतियों ने किया।** फ्रांसीसी सेना ने शीघ्र ही लारेन पर अधिकार कर लिया, फ्रांसीसी सेना के एम्सटरडम में प्रवेश करते ही डचों का नेतृत्व करने वाले डी विट ने लुई चौदहवें से सन्धि वार्ता आरम्भ कर दी। डचों ने इस पर डी विट की हत्या कर दी और अब डचों का नेतृत्व लारेन के राजकुमार विलियम ने किया। विलियम ने तुरन्त समुद्री बांध के द्वार खुलवा दिए। इसका परिणाम यह हुआ कि फ्रांसीसी सेना एम्सटरडम पर अधिकार न कर सकी। विलियम ने तुरन्त लुई के विरुद्ध एक गुट के निर्माण में पहल आरम्भ कर दी। इधर यूरोपीय देश फ्रांस की सफलता से आशंकित हो चुके थे। अतः विलियम को अपने इस प्रयोजन में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। आस्ट्रिया, डेनमार्क, ब्रेन्डेनबर्ग, इंग्लैण्ड एवं स्पेन को अपने पक्ष में कर विलियम ने लुई के विरुद्ध गुट बना ही लिया। स्वीडन ने लुई का साथ न छोड़ा। 1678 ई. में दोनों पक्षों में '**निमवेजिन की सन्धि**' हो गई।

1 "This stand for the balance of power was the reply to the French King's aggressive desire for 'natural boundaries'." —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 262.

2 "The taste of Grand Monarch was thereby whetted, but his appetite was hardly appeased." —*Ibid.*

(3) **निमवेजिन की सन्धि (Treaty of Nimvasin)**—निमवेजिन की सन्धि से फ्रांस को स्पेन के फ्रेंच काम्टे तथा बेल्जियम के कई नगर प्राप्त हो गए। लारेन पर फ्रांसीसी प्रभुत्व स्थापित हो गया। लुई का यह राइन नदी की ओर सीमा विस्तार का महत्वपूर्ण प्रयास था। इस सन्धि ने यूरोप में फ्रांस की प्रतिष्ठा को बढ़ा दिया, किन्तु इसका प्रतिकूल प्रभाव फ्रांस की अर्थव्यवस्था पर पड़ा। फ्रांस दिन-प्रतिदिन आर्थिक दृष्टि से दिवालिया होता चला गया।

आग्सबर्ग की लीग का युद्ध (1688-1697)
(WAR WITH LEAGUE OF AUGSBURG)

(1) **युद्ध के कारण** (Causes of the War)—एलाशैपल एवं निमवेजिन की सन्धियों से यद्यपि फ्रांस की सीमाएं अत्यधिक विस्तृत हो गयी थीं, किन्तु लुई चतुर्दश की राज्य विस्तार का महत्वाकांक्षा घटने के स्थान पर और अधिक तीव्र हो गयी। लुई को एलाशैपल एवं निमवेजिन की सन्धियों से जो प्रदेश प्राप्त हो गए थे, उनको अपने नियन्त्रण में बनाए रखने के लिए लुई चतुर्दश ने वहां पर विशेष अदालतें निर्मित कीं। इन अदालतों को **'चैम्बर्स ऑफ रियूनियन'** कहा जाता था। इन अदालतों पर लुई चतुर्दश के आज्ञाकारी एवं प्रिय व्यक्ति ही आसीन होते थे। अदालतों के निर्देशानुसार लुई ने स्ट्रासबर्ग, आल्सेस एवं जर्मनी के अन्य 20 नगरों में फ्रांसीसी अधिकार को स्पष्ट किया। स्ट्रासबर्ग की तो उसने किलेबन्दी भी आरम्भ कर दी 1684 ई. में कैले एवं लक्जमबर्ग फ्रांस के अधिकार में आ गए। इस समय जर्मन सम्राट तुर्की के साथ युद्धरत था। अतः वह लुई चतुर्दश के इन भयंकर कार्यों की ओर कोई ध्यान न दे सका, किन्तु यूरोप के राज्य लुई की इन नीतियों से अत्यन्त आतंकित हो गए। **अतः 1786 ई. में स्पेन, आस्ट्रिया, कुछ जर्मन राज्य, हालैण्ड एवं स्वीडन आदि ने संयुक्त रूप से 'आग्सबर्ग की लीग'** (League of Augsburg) **की स्थापना की।** 1688 ई. की रक्तहीन क्रान्ति के पश्चात् इंग्लैण्ड के शासक विलियम तृतीय ने आग्सबर्ग की लीग में इंग्लैण्ड को भी शामिल कर दिया। इधर लीग के बन जाने से उत्साहित होकर 1688 ई. में जर्मन सम्राट ने राइन प्रदेश के गैलाटिनेट पर अपना अधिकार करने के लिए अपनी सेना भेजी, निःसन्देह आग्सबर्ग की लोग का गठन ही पवित्र रोमन साम्राज्य (जर्मन साम्राज्य) की रक्षा एवं लुई की पिपासा शान्त करने के लिए ही की गयी थी। लुई के लिए यह सब असह्य था। लुई चतुर्दश अब मौके की तलाश में था। उसे यह मौका पैलाटाइन एवं कोलोन के पारस्परिक विरोध के रूप में मिल गया।

1685 ई. में पैलाटिनेट के इलैक्टर चार्ल्स की मृत्यु हो गयी। चार्ल्स की बहिन का विवाह लुई चतुर्दश के भाई फिलिप के साथ हुआ था। लुई ने इस सम्बन्ध को अपनी पिपासा की आड़ बनाते हुए पैलाटिनेट पर बूर्बां वंश के अधिकार की बात कहनी आरम्भ कर दी। इधर पोप के पंच फैसले के अनुसार जोसेफ क्लीमेण्ट को इलेक्टर मान लिया गया। लुई के लिए यह असह्य था। **अतः 1788 ई. में इंग्लैण्ड, सेवाय, स्वीडन, आस्ट्रिया, जर्मनी, कतिपय राज्य एवं हालैण्ड के सम्मिलित 'गुट आग्सबर्ग की लीग' के विरुद्ध लुई चतुर्दश का युद्ध आरम्भ हो गया था।** अब इस युद्ध में लुई एकदम अकेला एवं मित्रहीन था।

(2) **युद्ध की घटनाएं** (Events of War)—यह युद्ध इतिहास में **पैलाटिनेट के युद्ध** के नाम से भी जाना जाता है। यह युद्ध 1688 ई. से 1697 ई. तक चला। इस युद्ध के प्रमुख क्षेत्र पैलाटाइन, भारत, अमरीका एवं कोलोन थे। अमरीका एवं भारत में बसे अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के मध्य भयंकर संघर्ष आरम्भ हो गया। लुई चतुर्दश ने सत्ता से हटे इंग्लैण्ड के

शासक जेम्स द्वितीय की सहायता के लिए आयरलैण्ड में फ्रांसीसी सेन भेजी, किन्तु **'ब्वाइन के युद्ध'** (1690 ई.) में विलियम तृतीय से जो कि इंग्लैण्ड का शासक बन गया था पराजित होकर चार्ल्स को फ्रांस में शरण लेनी पड़ी। 1690 ई. के लिमेरिक के पतन के पश्चात् ही आयरिश युद्ध समाप्त हुआ। उधर 1691 ई. में फ्रांस के नामूर पर अपना अधिकार कायम कर लेने का विलियम तृतीय ने घोर विरोध करते हुए 'स्टाइनकर्क' पर आक्रमण कर दिया। युद्ध में फ्रांस की विजय हुई। **इस विजय से प्रोत्साहित होकर लुई ने इंग्लैण्ड व हालैण्ड की संयुक्त सेना को पराजित किया, किन्तु फ्रांस को 'हग के युद्ध' में इंग्लैण्ड की नौसेना से भयंकर पराजय का सामना करना पड़ा।** इधर लुई की थलसेना ने नीस एवं सेवाय पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। 1697 ई. तक दोनों पक्ष युद्ध करते-करते थक चुके थे। यही नहीं, इसी समय स्पेनिश उत्तराधिकार का प्रश्न यूरोपीय राज्यों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण बन गया। अतः दोनों पक्षों के मध्य 1697 में **'रिसविक की सन्धि'** हो गई।

(3) **रिसविक की सन्धि** (Treaty of Ryswick)—20 सितम्बर, 1697 ई. को हुई। रिस्विक की सन्धि की धाराएं इस प्रकार थीं :

(1) डचों को स्पेनी नीदरलैण्ड्स की सीमा की किलेबन्दी का अधिकार प्राप्त हो गया।

(2) लुई ने स्ट्रासबर्ग को छोड़कर उन सभी प्रदेशों पर अपना दावा छोड़ दिया जो कि **'चैम्बर्स ऑफ रियूनियन'** के द्वारा उसे प्राप्त हो गए थे।

(3) लुई चतुर्दश ने डचों के साथ एक व्यापारिक सन्धि की।

(4) लुई ने पैराटिनेट के राज्य में अपने दावे त्याग दिए।

(5) फ्रांस ने विलियम तृतीय को इंग्लैण्ड के शासक के रूप में मान्यता दे दी।

(6) फ्रांस ने लारेन के प्रान्त पर अपना दावा त्याग दिया। अब लारेन का प्रान्त वहां के ड्यूक को वापस कर दिया गया।

इस प्रकार सन्धि की धाराओं से स्पष्ट होता है कि इस सन्धि से फ्रांस को कोई विशेष हानि नहीं हुई। उसकी सैन्य शक्ति अब भी सुसंगठित एवं विशाल थी। आल्सेस पर फ्रांस का अधिकार यथावत् बना रहा, किन्तु यह तो मानना ही होगा कि **''लीग के युद्ध एवं रिसविक की सन्धि से यूरोप के राज्य प्रथम बार लुई की महत्वाकांक्षा एवं साम्राज्यवादी नीति को नियन्त्रित करने में सफल हुए।''**[1]

स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध (1702-1713)
(WAR OF THE SPANISH SUCCESSION)

चार्ल्स द्वितीय (1606-1700) जो कि अपने पिता फिलिप चतुर्थ की मृत्यु के पश्चात् स्पेन के सिंहासन पर बैठा था, निःसन्तान था। अतः उसके पश्चात् स्पेनी साम्राज्य के उत्तराधिकारी का प्रश्न था। स्पेन साम्राज्य के उत्तराधिकार की समस्या वैसे तो स्पेन से ही सम्बन्धित थी, किन्तु यूरोप में स्पेनी साम्राज्य की विशालता के कारण यूरोपीय प्रमुख राज्यों ने स्पेन के उत्तराधिकार के प्रश्न को अपने-अपने हितों की दृष्टि से देखना आरम्भ कर दिया। चार्ल्स द्वितीय के दो बहिनें थीं जिसमें बड़ी बहिन मेरिया थिरिजा का विवाह लुई चतुर्दश से हुआ था और दूसरी बहिन मार्गरेट थिरिजा का विवाह आस्ट्रिया के सम्राट लियोपोल्ड से हुआ

1 "And it had required a forceful union of most of the great powers of Europe to check Louis XIV and to halt the expansion of France."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 266.

था। **अतः समस्या यह थी कि स्पेन के विशाल साम्राज्य पर बूर्बां वंश का अधिकार होगा या आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग वंश का?** इसी समस्या के कारण स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध (1702-1713) हुआ।

स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध के कारण
(CAUSES OF THE SPANISH SUCCESSION WAR)

स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :

(1) **उत्तराधिकार के प्रत्याशी** (Candidates of Succession)—स्पेन के उत्तराधिकार के प्रमुख रूप से तीन प्रत्याशी थे, प्रथम फ्रांस (बूर्बां राजवंश), द्वितीय, आस्ट्रिया (हैप्सबर्ग राजवंश) एवं तृतीय बबेरिया का राजवंश। **इन तीनों ही राजवंशों ने अपने-अपने वंश में हुए वैवाहिक सम्बन्धों के आधार पर स्पेन के सिंहासन पर अपना दावा पेश किया।** 1659 ई. की पिरैनीज की सन्धि के अनुसार फ्रांस के शासक लुई चतुर्दश ने फिलिप चतुर्थ की पुत्री/चार्ल्स द्वितीय की बहिन मेरिया थिरिजा से विवाह किया था और इस विवाह के अवसर पर मिलने वाली दहेज की राशि के स्थान पर स्पेनी साम्राज्य पर अपने दावे को छोड़ना स्वीकार किया था, किन्तु स्पेन दहेज की राशि न दे सका था, अतः अब लुई चतुर्दश ने मेरिया थिरिजा के पुत्र डौफिन को स्पेन का उत्तराधिकारी बतलाया।

आस्ट्रिया के सम्राट लियोपोल्ड प्रथम का विवाह चार्ल्स द्वितीय की बहिन मार्गरेट थिरिजा से हुआ था। अतः लियोपोल्ड प्रथम ने अपनी पत्नी थिरिजा एवं पुत्री मेरिया अन्तानिया को स्पेनी साम्राज्य का अधिकारी बतलाया। यही नहीं, उसने अपनी मां मेरिया की ओर से जो कि फिलिप चतुर्थ की बहिन एवं उसके पिता आस्ट्रिया के सम्राट फर्डीनेण्ड तृतीय की पत्नी थी स्पेनी साम्राज्य पर अपना दावा पेश किया। अतः उसने अपने पुत्र 'आर्च ड्यूक चार्ल्स' को स्पेनी साम्राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी बतलाया।

तृतीय दावा वबेरिया के शासक जोसेफ फर्डीनेण्ड ने प्रस्तुत किया। जोसेफ फर्डीनेण्ड, लियोपोल्ड प्रथम का पौत्र था। दूसरे शब्दों में, मेरिया अन्तानिया ने अपने पुत्र जोसेफ के अधिकार का दावा किया।

(2) **स्पेनी उत्तराधिकार का यूरोपीय महत्व** (European Significance of the Spainish succession)—स्पेन के उत्तराधिकार का प्रश्न केवल दावा करने वाले राजवंशों के कानूनी अधिकार तक ही सीमित नहीं था, निस्सन्देह इसका यूरोपीय महत्व भी अत्यन्त गम्भीर था। **शक्ति सन्तुलन एवं औपनिवेशिक व्यापार दो ऐसे प्रश्न थे जो कि स्पेन के उत्तराधिकार के प्रश्न के यूरोपीय महत्व से सम्बन्धित थे।** यदि स्पेन पर आस्ट्रिया के सम्राट लियोपोल्ड प्रथम का दावा स्वीकार कर लिया जाता तो चार्ल्स पंचम के साम्राज्य की ही भांति लियोपोल्ड प्रथम का साम्राज्य हो जाता। इससे हैप्सबर्ग वंश की शक्ति असीमित हो जाती। इधर यदि फ्रांस का प्रभुत्व स्पेनी साम्राज्य में मान लिया जाता तो यूरोप में फ्रांस की शक्ति प्रचण्ड रूप धारण कर लेती। अतः यूरोप के शक्ति सन्तुलन की दृष्टि से यह प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया।

जहां तक औपनिवेशिक विस्तार का प्रश्न था, इंग्लैण्ड एवं हालैण्ड इस मामले में अत्यन्त सजग थे। स्पेन के अमरीकी उपनिवेशों में दोनों देशों का व्यापार अत्यधिक था। इंग्लैण्ड व हालैण्ड दोनों ही फ्रांस व आस्ट्रिया जैसे शक्तिशाली राज्यों के स्पेन पर अधिकार को अत्यन्त अवांछनीय मानते थे। अतः दोनों देशों ने फ्रांस व आस्ट्रिया का विरोध किया। इस प्रकार

फ्रांस का दावा वंशगत आधार पर, आस्ट्रिया का दावा कानूनी आधार पर एवं वबेरिया के शासक जोसेफ फर्डीनेण्ड का राजनीतिक दृष्टि से स्पेनिश साम्राज्य में दावा स्पष्ट था। अतः इस प्रश्न पर फ्रांस, आस्ट्रिया एवं वबेरिया के अतिरिक्त इंग्लैण्ड व हालैण्ड ने भी रुचि दिखलाना आरम्भ कर दिया था।

(3) **स्पेनी साम्राज्य के विभाजन की सन्धियां** (Treaties of Spain's Division)— स्पेनिश उत्तराधिकार के युद्ध का महत्वपूर्ण कारण स्पेनी साम्राज्य के विभाजन की सन्धियों के रूप में आंका जाता है। लुई चतुर्दश ने बिना युद्ध किए कूटनीति से उत्तराधिकार के प्रश्न को हल करने का प्रयास किया। **उसने तथा विलियम तृतीय ने 1698 ई. में बंटवारे की एक सन्धि की।** इस सन्धि के अंनुसार स्पेन के अमरीकी उपनिवेश एवं स्पेनी नीदरलैण्ड्स वबेरिया के शासक जोसेफ को मिलने निश्चित हुए। शेष साम्राज्य लुई के पुत्र डौफिन एवं लियोपोल्ड के पुत्र आर्च ड्यूक चार्ल्स के बीच विभक्त होना था। चार्ल्स द्वितीय को इस सन्धि से अलग रखा गया, अतः उसने सन्धि की खबर पाते ही वबेरिया के शासक जोसेफ फर्डीनेण्ड को सम्पूर्ण स्पेनी साम्राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया, किन्तु 1700 ई. में जोसेफ फर्डीनेण्ड की मृत्यु से चार्ल्स द्वितीय की घोषणा का कोई महत्व न रहा। **अब 1700 ई. में लुई चौदहवें, विलियम तृतीय व लियोपोल्ड प्रथम ने एक सन्धि की।** इस सन्धि में यह व्यवस्था की गई कि स्पेनी बेल्जियम एवं अमरीकी उपनिवेश आर्च ड्यूक चार्ल्स के होंगे। नेपल्स, मिलान एवं सिसली पर डौफिन का अधिकार होगा। चार्ल्स को जब यह ज्ञात हुआ तो उसने क्रुद्ध होकर लुई के पौत्र अर्थात् डौफिन के द्वितीय पुत्र फिलिप ऑफ आञ्जो को सम्पूर्ण स्पेनी साम्राज्य का अधिकारी घोषित किया। यह घोषणा लुई चौदहवें के लिए तो वरदान थी, अतः उसने पूर्व सन्धि को ताक में रखकर अपने पुत्र को स्पेनिश साम्राज्य का उत्तराधिकारी कहना आरम्भ कर दिया।

(4) **महान् संघ का गठन** (1701 ई.) (Formation of Great Union)—लुई चतुर्दश ने अपने पौत्र फिलिप ऑफ ताञ्जो को चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् सम्पूर्ण स्पेनी साम्राज्य का शासक स्वीकार करते हुए उसे फिलिप पंचम की उपाधि प्रदान की। उसने इंग्लैण्ड का शासक जेम्स प्रीटेन्डर को स्वीकार किया। स्पेन के अमरीकी उपनिवेशों में होने वाले व्यापार के सन्दर्भ में उसने फ्रांस के अनुकूल एवं इंग्लैण्ड व हालैण्ड के प्रतिकूल घोषणाएं जारी कीं। स्पेनी नीदरलैण्ड्स की सीमा पर स्थित दुर्गों से डच सेना को हटाकर उसके स्थान पर फ्रांसीसी सेना लगा दी। लुई के इन कार्यों ने इंग्लैण्ड, आस्ट्रिया, हालैण्ड, ब्रेण्डेनबर्ग, पैलाटाइन, हैनोवर, सेवाय आदि राज्यों को विलियम तृतीय के नेतृत्व में एक झण्डे के नीचे लाकर खड़ा कर दिया। स्पेन व कोलोन फ्रांस के पक्ष में थे। इस प्रकार यूरोप के दो खेमों में बंटते ही स्पेनी उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर दोनों पक्षों में 1702 ई. में भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया।

घटनाएं
(EVENTS)

स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध में प्रमुख क्षेत्र इटली, स्पैन, नीदरलैण्ड्स एवं मध्य यूरोप थे। उत्तराधिकार के इस युद्ध का श्रीगणेश इटली से हुआ। इटली में फ्रांस को इटली के महान् सेनापति **'प्रिंस यूजेन'** के हाथों पराजित होना पड़ा। फ्रैंच सेना ने शीघ्र ही बेल्जियम पर अधिकार कर लिया। इंग्लैण्ड व इटली की संयुक्त सेना ने 1704 में ब्लेनहेम के युद्ध में फ्रांस

को पराजित कर लुई के वबेरिया को आधार बनाकर वियना पर विजय के स्वप्न को तोड़ दिया। 1704 ई. के पश्चात् युद्ध ने भयानक रूप ले लिया। अब यह इटली, आस्ट्रिया, नीदरलैण्ड्स, स्पेन, भारत एवं अमरीकी उपनिवेशों तक फैल गया। 1704 में जिब्राल्टर पर ब्रिटेन के आधिपत्य ने स्पेन व भूमध्यसागर में अंग्रेजों के प्रभुत्व को कायम कर दिया। फ्रांसीसी सेना इटली से 1706 ई. में निष्कासित कर दी गई। रामीलिस (1706), उडेनार्ड (1708) एवं मालप्ला (1709) के युद्धों में फ्रांस को पराजित होकर नीदरलैण्ड्स से हटना पड़ा। अब गुट की सेनाओं ने फ्रांस की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया। फ्रांस ने इस विपत्ति का जमकर मुकाबला किया और स्पेन पर फिलिप पंचम का पुनः अधिकार हो गया। इधर इसी बीच इंग्लैण्ड में 1710 ई. में टोरी दल की सरकार बनी जो कि युद्ध को समाप्त करना चाहती थी। 1711 ई. में लिओपोल्ड प्रथम की भी मृत्यु हो गयी। अतः 1711 ई. में उसका पुत्र आर्च ड्यूक चार्ल्स आस्ट्रिया व जर्मन साम्राज्य का सम्राट बना। चार्ल्स का समर्थन कर शक्ति सन्तुलन खतरे में पड़ने की सम्भावना हो गई। अंतः 1713 ई. में **यूट्रेक्ट की सन्धि** द्वारा युद्ध का अन्त हुआ, किन्तु आस्ट्रिया व फ्रांस का युद्ध जारी रहा। जब दोनों के मध्य 1714 ई. में रास्टाड की सन्धि हुई और आस्ट्रिया ने यूट्रेक्ट की सन्धि को स्वीकार किया तब कहीं स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हुआ।

यूट्रेक्ट की सन्धि (1713)
(TREATY OF UTRECHT)

यूट्रेक्ट की सन्धि की धाराएं निम्नवत् थीं :

(1) लुई चतुर्दश के पौत्र फिलिप पंचम (फिलिप ऑफ आञ्जो) को स्पेन एवं पश्चिमी द्वीपसमूहों का शासक मान लिया गया।

(2) यह शर्त स्वीकार की गई कि फ्रांस व स्पेन का संयोजन किसी भी दृष्टि में न हो।

(3) नेपल्स, सार्डीनिया, मिलान एवं बेल्जियम को क्षतिपूर्ति के रूप में आस्ट्रिया को दे दिया गया।

(4) इंग्लैण्ड को न्यूफाउण्डलैण्ड, नोवास्कोशिया, हडसन की खाड़ी के प्रदेश, भूमध्यसागर में स्थित जिब्राल्टर एवं मिनरका प्राप्त हुए। उसे स्पेनी उपनिवेशों के साथ दास व्यापार का एकाधिकार मिला।

(5) फ्रांस ने आल्सेस एवं स्ट्रासबर्ग को छोड़कर राइन नदी के किनारे के सभी किले छोड़ दिए। उसे स्टुअर्ट वंश का समर्थन न करने का वादा करना पड़ा।

(6) हालैण्ड को बेल्जियम की सीमा पर किलेबन्दी का अधिकार मिला। डचों को शेल्ट नदी पर व्यापारिक अधिकार मिले।

(7) प्रशा का राजा ब्रेन्डेनवर्ग के सामन्त को मान लिया।

(8) सेवाय को स्वतन्त्र राज्य घोषित कर सिसली का द्वीप प्रदान किया गया।

यूट्रेक्ट की सन्धि का मूल्यांकन
(EVALUATION OF TREATY OF UTRECHT)

यूट्रेक्ट की सन्धि का यूरोप के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह ठीक है कि इस असुविधा के अनुसार बेल्जियम को आस्ट्रिया, नीस को सेवाय और स्पेन व फ्रांस के कई अमरीकी उपनिवेश इंग्लैण्ड को प्रदान कर राष्ट्रीयता एवं जन-आकांक्षाओं का गला घोंट दिया गया, किन्तु **यह तो मानना ही होगा कि इस सन्धि में शक्ति सन्तुलन बनाने का पूर्ण प्रयास**

किया गया। सेवाय का राज्य विस्तार कालान्तर में इटली के एकीकरण एवं प्रशा के स्वतन्त्र राज्य के स्थापन से जर्मनी का एकीकरण होने में आसानी रही। आस्ट्रिया का साम्राज्य विस्तार सम्भव हो सका। फ्रांस का प्रभुत्व यूरोप में समाप्त होना आरम्भ हो गया। फ्रांस उत्तर की ओर बढ़ नहीं सकता था क्योंकि बेल्जियम व नीदरलैण्ड्स पर आस्ट्रिया का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। प्रशा की स्वतन्त्रता एवं सेवाय के राज्य विस्तार ने फ्रांस को पूर्व की ओर साम्राज्य विस्तार करने से रोका। इसके विपरीत इंग्लैण्ड को अत्यधिक लाभ हुआ। जिब्राल्टर एवं मिनरका प्राप्त हो जाने से इंग्लैण्ड का प्रभुत्व भूमध्यसागर में छा गया। न्यूफाउण्डलैण्ड, नोवास्कोशिया एवं हडसन की खाड़ी के प्रदेश इंग्लैण्ड के औपनिवेशिक विस्तार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। **इस प्रकार यदि यह माना जाए कि जिस प्रकार वेस्टफेलिया की सन्धि ने हैप्सबर्ग राजवंश के पतन एवं बूर्बों राजवंश की प्रधानता का संकेत किया था उसी प्रकार यूट्रेक्ट की सन्धि ने फ्रांस के पतन व इंग्लैण्ड के उत्थान की ओर संकेत किया।** निःसन्देह यह सन्धि राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता के स्थान पर व्यापारिक एवं औपनिवेशिक प्रतिद्वन्द्विता के युग का संकेत थी।

यूट्रेक्ट की सन्धि से स्पेन को भी अप्रत्यक्ष रूप से लाभ हुआ। इससे उसके अधिकार से वे यूरोपीय क्षेत्र निकल गए। जिनके लिए वह उत्तरदायी था तथा जिन उत्तरदायित्वों को पूरा करना उसके आर्थिक व सैनिक साधनों को देखते हुए सम्भव न था। पिरैनीज पहाड़ अब उसकी वास्तविक सीमा बन गया जिससे अब स्पेन अपनी यूरोपीय महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की अपेक्षा अपने धन को अपनी राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करनै हेतु उन पर खर्च करने लायक हो गया।

इस सन्धि की समीक्षा करते हुए इतिहासकार डेविड ऑग ने लिखा है, **''यह सन्धि भूत की अपेक्षा भविष्य की ओर अधिक देखती है। सेवाय को इससे अत्यधिक लाभ हुआ और वह इटली में सबसे शक्तिशाली स्वतन्त्र देश बन गया, जबकि जर्मनी का भाग्य प्रशा के उत्सुक हाथों में सौंप दिया। यूरोप और औपनिवेशिक शक्ति के रूप में हालैण्ड की अवनति पूर्व सूचित हो गयी और ग्रेट ब्रिटेन भविष्य की महान् सामुद्रिक एवं व्यापारिक शक्ति बन गया। न्यूफाउण्डलैण्ड और अकेडिया की प्राप्ति ने उत्तर अमरीका में प्रमुखता पाने के लिए महान् संघर्ष का सूत्रपात किया। जिब्राल्टर पर अधिकार भावी ब्रिटिश साम्राज्य को इंग्लैण्ड से जोड़ने की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी बन गया, यूरोप के सचिवालयों में राजवंशीय आकांक्षाओं का स्थान औपनिवेशिक स्पर्धा ने ले लिया और प्रशा ने उस पुराने एकाधिकार को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार नेतृत्व कुछ ही राजपरिवारों तक सीमित था।''**

निष्कर्ष
(CONCLUSION)

इस प्रकार लुई चतुर्दश के शासन काल का सम्पूर्ण विवरण स्पष्ट करता है कि लुई चतुर्दश के शासन काल का पूर्वार्द्ध सफलताओं का काल था। उससे फ्रांस में जिस सुदृढ़ राजतन्त्र की स्थापना की, वह पूरे यूरोप के लिए अनुकरणीय बन गया। उसकी गरिमा एवं फ्रांस के वैभव के कारण ही उसका युग '**लुई चतुर्दश के युग**' नाम से जाना जाता है, किन्तु उसके शासनकाल का उत्तरार्द्ध उसकी विफलताओं का काल था। उसकी महत्वाकांक्षी राजनीतिक पिपासा ने फ्रांस को आर्थिक दृष्टि से पंगु बना दिया। उसने अपने जीवन के अन्तिम भाग में इस तथ्य को समझ भी लिया था। यही कारण था कि उसने अपनी मृत्यु के

समय फ्रांस के उत्तराधिकारी अपने प्रपौत्र ड्यूक ऑफ बेरी (लुई पन्द्रहवें) से कहा था, **"अपने पड़ौसियों से युद्ध करने की मेरी नीति का अनुसरण न करना, तुम अपने कर्तव्यों से विस्मृत मत होना, प्रजा के बोझ को हल्का करना और सदा ही प्रबुद्ध, अनुभवी एवं शुभचिन्तक परामर्शदाताओं व सेवकों के परामर्श का सम्मान करना।"** निःसन्देह उसका 72 वर्षीय शासनकाल अन्ततः जो विरासत छोड़ कर गया वह फ्रांस के बूर्बां वंश के पतन व शक्ति के चिह्न छोड़कर गया था। फलस्वरूप अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इंग्लैण्ड की प्रधानता स्थापित हुई।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लुई चौदहवें की गृह-नीति का उल्लेख कीजिए।
2. लुई चौदहवें के शासनकाल की प्रमुख विशेषताएं बताइए।
3. लुई चतुर्दश की धार्मिक नीति पर एक नोट लिखिए।
4. कोल्बर्ट के जीवन का संक्षिप्त विवरण देते हुए उसके सुधारों का परीक्षण कीजिए।
5. लुई चतुर्दश की विदेश नीति के उद्देश्य क्या थे? वह अपने उद्देश्यों में कहां तक सफल हुआ?
6. लुई चतुर्दश की विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
7. डचों से लुई के युद्ध के क्या कारण थे? युद्ध की घटनाएं एवं परिणाम लिखिए।
8. डेवोल्यूशन के युद्ध के कारण, घटनाएं व परिणाम बताइए।
9. आग्सबर्ग की लीग के युद्ध के कारण, घटनाएं एवं परिणामों पर प्रकाश डालिए।
10. स्पेनी उत्तराधिकार के प्रश्न से क्या अभिप्राय है? स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध के कारण, घटनाएं एवं परिणाम लिखिए।
11. यूट्रेक्ट की सन्धि का मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लुई चतुर्दश का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।
2. लुई चतुर्दश द्वारा शासन की बागडोर हाथ में लेते समय यूरोप की स्थिति का वर्णन कीजिए।
3. फ्रांस का स्पेन से डेवोल्यूशन युद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
4. डचों से लुई चतुर्दश के युद्ध पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. आग्सवर्ग की लीग के युद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लुई चौदहवें का जन्म कब हुआ था?
2. जिस समय लुई चतुर्दश फ्रांस के राजसिंहासन पर आसीन हुआ उस समय उसकी आयु कितनी थी?
3. 'मेरी डी मैडिसी' कौन थीं?
4. लुई चतुर्दश कब से कब तक फ्र ांस का नाममात्र का शासक रहा?
5. लुई चतुर्दश का देहावसान कब हुआ?
6. लुई चतुर्दश ने अपने शासनकाल में भव्य राजप्रसाद का निर्माण कहां करवाया था?
7. लुई चतुर्दश ने किस व्यक्ति को युद्ध मंत्री पद पर नियुक्त किया?
8. लुई चतुर्दश ने किस व्यक्ति को विदेश मंत्री पद पर नियुक्त किया?
9. लुई चतुर्दश ने किस व्यक्ति को वित्त मंत्री पद पर नियुक्त किया?
10. 'रिगेल का संघर्ष' किस-किस के मध्य हुआ?

11. डेवोल्यूशन का युद्ध कब हुआ था?
12. डेवोल्यूशन का युद्ध किस-किस के मध्य हुआ?
13. आग्सबर्ग की लीग का युद्ध कब से कब तक चला?.
14. आग्सबर्ग की लीग में कौन-कौन से राष्ट्र सम्मिलित थे?
15. यूट्रेक्ट की सन्धि कब हुई थी?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. लुई चतुर्दश का युग था—
   (क) 1661 ई. से 1715 ई. तक (ख) 1662 ई. से 1716 ई. तक
   (ग) 1663 ई. से 1717 ई. तक (घ) 1664 ई. से 1718 ई. तक।
2. 'मैं ही राज्य हूं'—यह कथन है—
   (क) लुई चतुर्दश का (ख) हेनरी चतुर्थ का
   (ग) फिलिप चतुर्थ का (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
3. फ्रांसीसी चित्रपट का पिता कहा गया है—
   (क) कोरनील (ख) लाफण्टेन (ग) मोल्येर (घ) रासिन
4. निम्नलिखित में से किसने अपने को चर्च का ज्येष्ठ पुत्र कहा था?
   (क) लुई चतुर्दश (ख) फिलिप चतुर्थ (ग) हेनरी सप्तम (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
5. यूट्रेक्ट की सन्धि हुई थी—
   (क) 1713 ई. में (ख) 1714 ई. में (ग) 1715 ई. में (घ) 1716 ई. में।
6. स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध का काल था—
   (क) 1702 ई. से 1713 ई. तक (ख) 1704 ई. से 1715 ई. तक
   (ग) 1705 ई. से 1715 ई. तक (घ) 1707 ई. से 1708 ई. तक।
7. रिसविक की सन्धि हुई थी—
   (क) 20 सितम्बर, 1697 को (ख) 21 सितम्बर, 1698 को
   (ग) 22 सितम्बर, 1699 को (घ) 23 सितम्बर, 1699 को।

[उत्तर—1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 5. (क) 6. (क) 7. (क)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए—

1. लुई चतुर्दश का जन्म 1638 ई. में हुआ था। उसके पिता फ्रांस के शासक लुई त्रयोदश की मृत्यु के समय उसकी आयु केवल 5 वर्ष की थी।
2. दैवीय अधिकार के सिद्धान्त के अनुरूप अपने गौरव को बढ़ाने के लिए लुई चतुर्दश ने पेरिस से 12 मील दूर वर्साय में एक भव्य राजप्रासाद बनवाया था।
3. लुई चतुर्दश का यह सौभाग्य था कि वित्त विभाग के संचालन के लिए 'जीन बैपटिस्ट कोल्बर्ट' जैसा वित्तमंत्री प्राप्त हुआ।
4. डेवोल्यूशन का युद्ध 1567-68 ई. में लड़ा गया था।
5. फ्रांसीसी वित्त मंत्री कोल्बर्ट ने 1664 ई. में 'विज्ञान अकादमी' की स्थापना की जो कालांतर में 'इन्स्टीट्यूट आफ फ्रांस' के नाम से विख्यात हुई।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. डेवोल्यूशन युद्ध के परिणामस्वरूप फ्रांस व स्पेन के मध्य........की सन्धि हुई।
2. आग्सबर्ग लीग की स्थापना........ई. में हुई थी।

[उत्तर—1. एक्स-ला-शैपल, 2. 1689।]

7

इंग्लैण्ड एवं इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति

[ENGLAND AND THE INDUSTRIAL REVOLUTION IN ENGLAND]

भूमिका
(INTRODUCTION)

1455 ई. में, जिस समय इंग्लैण्ड में हेनरी षष्टम राज्य कर रहा था, लंकास्टर एवं यार्क वंशों के मध्य इंग्लैण्ड के सिंहासन पर अधिकार करने हेतु युद्ध प्रारम्भ हुआ जिसे **'गुलाब के फूलों का युद्ध'**[1] (War of Roses) कहा जाता है। यार्क वंश ने 1471 ई. में लंकास्टरवंशीय शासक हेनरी षष्टम तथा उसके पुत्र प्रिंस ऑफ वेल्स को ड्यूक्सबरी के युद्ध में परास्त कर उनकी हत्या कर दी एवं इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर अधिकार किया। लंकास्टरवंशीय व्यक्ति या तो इस युद्ध में मारे गए या इंग्लैण्ड छोड़कर भागने पर विवश हुए। यार्क वंश का संस्थापक एडवर्ड चतुर्थ था, जिसने 1471 ई. से 1483 ई. तक इंग्लैण्ड पर राज्य किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र एडवर्ड पंचम इंग्लैण्ड के सिंहासन पर बैठा। शीघ्र ही एडवर्ड पंचम के चाचा रिचर्ड ने उसकी हत्या कर दी तथा स्वयं इंग्लैण्ड का राजा बन गया। रिचर्ड ने अत्यन्त क्रूरतापूर्वक इंग्लैण्ड में शासन किया, जिसके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड की जनता यार्क वंश के विरुद्ध हो गयी। इस अवसर का लाभ उठाते हुए लंकास्टर वंशीय हेनरी ट्यूडर ने 1485 ई. में इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया तथा 21 अगस्त, 1485 को **बोसबर्थ के युद्ध** (Battle of Bosworth) में रिचर्ड को परास्त कर उसकी हत्या करने में सफल हुआ। **इस प्रकार तीसवर्षीय गुलाब के फूलों के युद्ध** (War of Roses) **की समाप्ति हुई तथा इंग्लैण्ड में ट्यूडर वंश की स्थापना हुई।**

ट्यूडर वंश
(TUDER DYNASTY)

1485 ई. में ट्यूडर वंश की स्थापना के साथ ही इंग्लैण्ड में मध्ययुग की समाप्ति एवं अर्वाचीन युग का प्रादुर्भाव हुआ। ट्यूडर वंश का प्रथम शासक हेनरी VII था।

1 "लंकास्टर तथा यार्क वंशों का राजचिह्न क्रमशः लाल गुलाब एवं सफेद गुलाब था। इसी कारण इन दोनों वंशों में हुए युद्ध को 'गुलाब के फूलों का युद्ध' कहा जाता है।"

हेनरी सप्तम (1485-1509)
(HENRY VII)

नोट—हेनरी VII के शासन काल के विस्तृत विवरण के लिए अध्याय 3 देखिए।

हेनरी अष्टम (1509-1547)
(HENRY VIII)

जीवन परिचय (Life Sketch)

1509 ई. में हेनरी सप्तम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। हेनरी अष्टम के राजगद्दी पर आरूढ़ होने का इंग्लैण्ड की जनता द्वारा स्वागत किया गया क्योंकि अठारह-वर्षीय हेनरी अष्टम एक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाला[1], संगीत, नृत्य तथा खेल-कूद में रुचि रखने वाला नवयुवक था। हेनरी विद्यानुरागी तथा विद्वानों को आश्रय देना वाला व्यक्ति था। उसके दरबार में कौलेट, इरैस्मस तथा टॉमस मूर जैसे विद्वान रहते थे। हेनरी स्वयं भी एक विद्वान व्यक्ति था, क्योंकि अपने भाई आर्थर की मृत्यु से पूर्व हेनरी सप्तम ने उसको शिक्षा की ओर केन्द्रित रखा। उसने धर्मशास्त्र, फ्रांसीसी, लैटिन तथा अनेक अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था।

हेनरी अष्टम को वैभव तथा निरंकुशता उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुए थे। हेनरी ने राजसिंहासन पर आसीन होते ही अपने पिता के शासनकाल में मन्त्री एवं सलाहकार के पद को सुशोभित कर रहे एम्पसन तथा डडले को उनकी क्रूर नीति के कारण बन्दी बना लिया तथा कुछ समय पश्चात् जनता के समक्ष उनका वध कर दिया। हेनरी के इस कार्य से जनता अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसे हेनरी से आशा की किरणें प्रस्फुटित होती दृष्टिगोचर होने लगीं, किन्तु शीघ्र ही प्रशासन के शुष्क एवं कठिन कार्य से वह ऊब गया तथा इस कार्य को उसने अपने **विश्वासपात्र मन्त्री कार्डिनल वूल्जे** (Cardinal Wolsey) को सौंप दिया और स्वयं जीवन के आनन्द उठाने में व्यस्त हो गया। हेनरी सप्तम से उसे अपार धनराशि प्राप्त हुई थी जिससे वह निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी बन गया। उसने अपने शासन के प्रथम बीस वर्ष विलासिता एवं ऐश्वर्य में बिताए तथा संचित कोष को रिक्त कर दिया। **वूल्जे के पतन के पश्चात् उसने प्रशासन को अपने हाथों में लिया और कुशलतापूर्वक कार्य किया** तथा अपने शासनकाल में ही इंग्लैण्ड को महान् वैभवशाली तथा शक्तिशाली बनाने में सफल हुआ। उसने अपने सुधारों तथा लोकप्रियता तथा वैदेशिक नीति के कारण विदेशों में सम्मान प्राप्त किया। हेनरी अष्टम को व्यक्ति की पहचान थी तथा अपने सलाहकार योग्य व्यक्तियों को नियुक्त किया था। शासकीय कार्यों में गोपनीयता को वह पसन्द करता था। पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त कर उसने अपनी सामर्थ्य एवं बुद्धिमता का परिचय दिया।[2]

हेनरी अष्टम के विवाह
(MARRIAGES OF HENRY VIII)

हेनरी अष्टम का **पहला विवाह अपने अग्रज आर्थर की पत्नी कैथराइन** (Catharine) **से हुआ था**, क्योंकि आर्थर की युवावस्था में ही मृत्यु हो गयी थी। यद्यपि तत्कालीन समाज में यह

1 'Henry in his maturity was a tall red-headed man, who preserved the vigour and energy of ancestors accustomed for centuries to the Welsh marches." —*W. Churchill*

2 'I will not allow any one to have it in his power to govern me.' —*Henry* VIII

विवाह अवैध था, किन्तु पोप ने स्पेन के राजा फर्डीनेण्ड के प्रभाव से इस विवाह की अनुमति प्रदान कर दी। कैथराइन यद्यपि हेनरी से उम्र में अधिक थी तथापि सत्रह वर्षों तक उनके सम्बन्ध मधुर रहे, किन्तु 1527 ई. में हेनरी ने उससे सम्बन्ध-विच्छेद करना चाहा। **कैथराइन से सम्बन्ध-विच्छेद का प्रयत्न करने के अनेक कारण थे।** कैथराइन के अनेक बच्चे हुए, किन्तु एक पुत्री के अतिरिक्त कोई जीवित न रहा। हेनरी अष्टम पुत्र-प्राप्ति का इच्छुक था तथा कैथराइन के अस्वस्थ रहने के कारण हेनरी को उससे अब पुत्र प्राप्त होने की आशा न रही। इसके अतिरिक्त हेनरी इस भ्रम का शिकार हो गया था कि उसने अपने बड़े भाई की पत्नी से विवाह कर जो पाप किया उसी के कारण उसकी सन्तानें मृत्यु को प्राप्त हुईं।[1] तीसरा और प्रमुख कारण यह था कि उसके दरबार में **ऐन बोलेन** (Anne Boleyn) नामक एक युवती आती थी जिससे वह विवाह करना चाहता था, किन्तु ईसाई धर्म में एक ही पत्नी रखने की अनुमति थी। अतः पोप ने कैथराइन से सम्बन्ध-विच्छेद की हेनरी अष्टम को अनुमति देने से इन्कार कर दिया। हेनरी ने वूल्जे को इस कार्य के लिए नियुक्त किया, किन्तु उसे सफलता प्राप्त न हो सकी। परिणामस्वरूप, उसका पतन हो गया। हेनरी ने अब पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने का प्रयत्न किया और संसद की सहायता से ऐसा करने में सफल हुआ। हेनरी ने आर्कबिशप के पद पर क्रैनमर को नियुक्त किया जिसने हेनरी का कैथराइन से सम्बन्ध-विच्छेद कराया।

हेनरी ने दूसरा विवाह 1533 ई. में ऐन बोलेन (Anne Boleyn) **से किया।** विवाह के कुछ समय पश्चात् ही हेनरी को उसके चरित्र पर सन्देह हो गया। अतः उसे देशद्रोही घोषित कर 1536 ई. में मृत्यु-दण्ड दिया। ऐन बोलेन से हेनरी को एक पुत्री एलिजाबेथ प्राप्त हुई, किन्तु अपना कोई नर उत्तराधिकारी न होने के कारण वह तीसरा विवाह करना चाहता था।

हेनरी का तीसरा विवाह जेन सेमूर (Jane Seymour) **से हुआ।** जेन सेमूर के एक पुत्र हुआ जो भविष्य में एडवर्ड षष्टम के नाम से इंग्लैण्ड की गद्दी पर बैठा। जेन सेमूर की 1537 ई. में स्वयं ही मृत्यु हो गयी।

हेनरी का **चौथा विवाह क्रामवैल के प्रयत्नों से जर्मन राजकुमारी क्लीव्ज** (Cleves) **से** हुआ, किन्तु क्लीव्ज सुन्दर न थी अतः हेनरी अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसने क्रामवैल को मृत्यु-दण्ड दिया तथा क्रैनमर के द्वारा क्लीव्ज से स्वयं ही सम्बन्ध-विच्छेद किया।

हेनरी अष्टम ने 1540 ई. में पांचवा विवाह कैथराइन हावर्ड (Catharine Howard) **से किया।** हेनरी को ज्ञात हुआ कि विवाह से पूर्व वह दुश्चरित्र थी, अतः हेनरी ने उस पर भी राजद्रोह का आरोप लगाते हुए 1542 ई. में उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया।

हेनरी का छठा और अन्तिम विवाह कैथराइन पार (Catharine Parr) **से हुआ।** हेनरी कैथराइन का तीसरा पति था। हेनरी की 1547 ई. में मृत्यु हो गयी। कैथराइन ने हेनरी की मृत्यु के पश्चात् एक अन्य व्यक्ति से चौथा विवाह कर लिया।

हेनरी अष्टम यद्यपि एक योग्य शासक था, किन्तु अनेक विवाह करने के कारण वह बदनाम हो गया। उसके विषय में कहा जाने लगा, **'मन्त्रियों के प्रति एक निर्दयी, स्त्रियों के प्रति दानव तथा अपने मित्रों के प्रति एक धोखेबाज व्यक्ति था।'**[2]

---

1 'Thou shall not marry they brother's wife because it is a sin.' —*Bible*

2 'A tyrant to his ministers, a monster to his wives, a treacherous to his friends.'

गृह एवं धार्मिक नीति
(HOME & RELIGIOUS POLICY)

हेनरी अष्टम जिस समय गद्दी पर बैठा, उस समय पोप का अनन्य भक्त था। 1512-13 ई. में पोप को प्रसन्न करने के लिए उसने फ्रांस से युद्ध किया, जिसमें जन-धन और समय की बर्बादी हुई। उसने 1521 ई. में लूथर के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी जिससे प्रसन्न होकर पोप से उसने **'धर्म-रक्षक'** (Defender of the Faith) की उपाधि प्राप्त की।

बीस वर्षों तक पोप को प्रसन्न करने के प्रयत्न करते रहने के पश्चात् उसके 1529 ई. में पोप से सम्बन्ध कटु हो गए। इस कटुता का कारण हेनरी का व्यक्तिगत स्वार्थ था। हेनरी अष्टम अपनी पत्नी कैथराइन से जो कि उससे आठ वर्ष आयु में अधिक थी, सम्बन्ध-विच्छेद करना चाहता था। पोप के स्पेन के राजा से भी मधुर सम्बन्ध थे जिसकी पुत्री कैथराइन थी। पोप हेनरी अष्टम को भी अप्रसन्न करना नहीं चाहता था अतः उसने इस विवादास्पद विषय को टालना चाहा। हेनरी अष्टम शीघ्रताशीघ्र कैथराइन से संम्बन्ध-विच्छेद चाहता था अतः हेनरी, पोप के विरुद्ध हो गया। वूल्जे, जिसके पोप से मधुर सम्बन्ध थे, भी हेनरी को कैथराइन से मुक्ति दिलाने में सफल न हो सका, परिणामस्वरूप उसका पतन हो गया। वूल्जे के स्थान पर हेनरी ने क्रामवैल को नियुक्त किया तथा क्रामवैल के परामर्श पर संसद का अधिवेशन बुलाया।

संसद का अधिवेशन 1529 ई. में प्रारम्भ हुआ और यह संसद 1536 ई. तक कार्य करती रही। इस संसद के सदस्य मुख्यतः व्यापारी तथा जमींदार थे जिनकी दृष्टि चर्च की अपार सम्पत्ति पर थी। अतः वे हेनरी अष्टम की इच्छानुसार पोप के विरुद्ध कार्य करने लगे। इस संसद ने ऐसे कार्य किए जिससे पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से समाप्त करने में हेनरी सफल हुआ। हेनरी ने क्रैनमर नामक एक पादरी को अपना मित्र बनाया। 1533 ई. में उसे आर्कबिशप नियुक्त किया। क्रैनमर ने हेनरी के प्रथम विवाह को अवैध घोषित किया तथा कैथराइन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कराके ऐन बोलेन से उसका विवाह कराया।

हेनरी ने अपनी संसद की सहायता से अनेक नियम पारित किए, जिनको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) पोप से सम्बन्ध समाप्त करने सम्बन्धी नियम,

(2) पादरियों की शक्ति पर अंकुश सम्बन्धी नियम,

(3) मठों को समाप्त करने सम्बन्धी नियम।

(1) **पोप से सम्बन्ध समाप्त करने सम्बन्धी नियम** (Statutes against Pope)—पोप के प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से हेनरी ने अनेक नियम पारित कराए जिनकी सहायता से वह पोप की सत्ता को इंग्लैण्ड से समाप्त करने में सफल हुआ। वे अधिनियम इस प्रकार से हैं :

(क) ऐनेट्स अधिनियम (Act of Annates)—यह अधिनियम 1532 ई. में पारित किया गया। पोप यूरोप के ईसाई राज्यों में खुलने वाले चर्चों की पहले वर्ष की आय को लिया करता था, जिसको **'फर्स्ट फ्रूट्स'** (First Fruits) कहते थे। इस नियम के द्वारा यह आय रोम जाने से रोक दी गयी तथा उस पर राजा का अधिकार घोषित कर दिया गया।

(ख) पीटर्स पेन्स अधिनियम (Act of Peter's Pence)—यूरोप के राज्यों द्वारा पोप को समय-समय पर धन सम्बन्धी अथवा अन्य उपहार भेजे जाते थे। हेनरी अष्टम अपने राज्यकाल के प्रारम्भ में पोप का अनन्य भक्त था। अतः वह भी पोप को उपहार भेजता था। इस नियम के द्वारा इंग्लैण्ड से पोप के लिए उपहार भेजने की प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

(ग) अपील अधिनियम (Act of Appeals)—यह अधिनियम 1533 ई. में पारित किया गया। इस नियम के पारित होने से पूर्व पोप के धर्म सम्बन्धी न्यायालय सभी ईसाई राज्यों में स्थापित थे, जिनकी अपील वह स्वयं सुना करता था। इस अधिनियम ने अपीलों के रोम जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। **इस नियम का अत्यधिक महत्व है क्योंकि इसने पोप के प्रभाव को पूर्णतः समाप्त कर दिया।** इस नियम के पारित होने पर तत्कालीन चर्च के अधिकारी टॉमस मूर ने त्याग-पत्र दे दिया उसके स्थान पर हेंनरी ने टॉमस क्रामवैल को नियुक्त किया। इसी समय क्रैनमर को भी कैण्टबरी का आर्कबिशप बनाया गया। इसी नियम के परिणामस्वरूप क्रैनमर, हेनरी अष्टम के उसकी पत्नी कैथराइन से सम्बन्ध विच्छेद करने में सफल हुआ तथा ऐन बोलेन से उसको विवाह की अनुमति प्रदान कर सका।

(घ) उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम (Act of Successions)—यह नियम 1534 ई. में पारित किया गया। इसके द्वारा ऐन बोलेन के बच्चों को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर वैध उत्तराधिकारी घोषित किया। यह पोप की आज्ञा की सर्वथा अवहेलना थी।

(ङ) सुप्रीमेसी अधिनियम (Act of Supremacy)—पोप ईसाई जगत का सम्राट समझा जाता था। हेनरी अष्टम ने यह निर्णय पारित करके **इंग्लैण्ड के राजा को चर्च का प्रधान** (Supreme Head of the Church in England) घोषित किया। जिन व्यक्तियों ने इस नियम को स्वीकार करने से इन्कार किया, उसको मौत के घाट उतार दिया।

इन नियमों के परिणामस्वरूप हेनरी अष्टम पोप के प्रभाव को इंग्लैण्ड से लगभग समाप्त करने में सफल हुआ।

(2) **पादरियों की शक्ति पर अंकुश सम्बन्धी नियम** (Statutes against the Clergy)—पादरियों की शक्ति को सीमा में रखने हेतु हेनरी ने संसद से अनेक नियम पारित कराए। इससे जहां एक ओर हेनरी का पादरियों पर प्रभुत्व स्थापित हुआ वहीं दूसरी ओर उसे आर्थिक लाभ हुआ। ये नियम इस प्रकार से हैं :

(क) प्रोबेट्स एवं मार्टनेरीज अधिनियम (Act of Probates and Martanries)—इस अधिनियम द्वारा शादी एवं मृत्यु के समय पादरियों का शुल्क निर्धारित कर दिया गया।

(ख) प्लूरेलिटिज अधिनियम (Act of Pluralities)—इस अधिनियम द्वारा एक बिशप एक ही गिरजाघर का अध्यक्ष हो सकता था। इससे पूर्व पोप की अनुमति से एक ही बिशप अनेक गिरजाघरों का अध्यक्ष बन जाता था। अब राजा की अनुमति पर ही किसी विशेष कारणवश ऐसा होना सम्भव था।

(ग) प्रेमुनायर अधिनियम (Act of Praemunire)—हेनरी अष्टम की संसद ने 1531 ई. में, एडवर्ड चतुर्थ के समय में पारित प्रेमुनायर अधिनियम को पुनः लागू किया तथा इसके द्वारा पादरी वर्ग पर यह आरोप लगाया कि वे देशद्रोही थे, क्योंकि उन्होंने एक विदेशी सत्ता (पोप) के अधिकार को स्वीकार करते हुए प्रेमुनायर अधिनियम को भंग किया था। दण्ड से मुक्ति प्राप्त करने के लिए कैण्टबरी के संघ ने एक लाख पौंड तथा यार्क संघ ने अठारह हजार पौंड हेनरी को भेंट किए। कानून के अनुसार साधारण जनता भी दण्ड की भागी थी, किन्तु हेनरी ने उदारता का परिचय देते हुए उसे क्षमा कर दिया।

(घ) छह नियमों का अधिनियम (Statutes of Six Articles)—1539 ई. में हेनरी ने छह नियम पारित किए, जिनको मानना प्रत्येक पादरी के लिए आवश्यक था। ये नियम अग्र प्रकार थे :

(i) **पादरियों के विवाह पर प्रतिबन्ध** (The illegality of the marriage of the clergy)।

(ii) **ब्रह्मचर्य व्रत की शपथ** (The necessity of keeping vows of chastity)।

(iii) **व्यक्तिगत प्रार्थना को स्वीकारना** (The continuance of private masses)।

(iv) **गलती तथा पाप को स्वीकारने की प्रथा** (The use of confession)।

(v) **कम्यूनियन की प्रथा** (The Practice of communion in one kind)।

(vi) **ट्रान्सब्सटेन्शियेसन की प्रथा को स्वीकारना** (A belief in the doctrine of transubstantiation)।

इन नियमों को न मानने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था तथा इन्हीं के द्वारा पादरियों की शक्ति पर अंकुश लगाया गया।

(3) **मठों को समाप्त करने सम्बन्धित नियम** (Statutes for dissolving the Monasteries)—ईसाई आश्रमों को, जहां ईसाई धर्म के प्रचारक रहते थे, मठ कहा जाता था। इन धर्म प्रचारकों में पोप के प्रति अपार श्रद्धा थी। ईसाई धर्म के इन प्रचारकों को **भिक्षु** (Monks) कहा जाता था। स्त्रियां भी विहारों में पुरुषों के समान शुद्ध एवं पवित्र जीवन व्यतीत करती थीं, इनको **भिक्षुणियां** (Nuns) कहा जाता था। स्त्रियों के विहारों को **'ननरीज'** (Nunneries) कहते थे। मध्य युग तक इन मठों का अत्यधिक महत्व था क्योंकि ये मठ जनता को अनेक प्रकार से सहायता करते थे। इन भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों का जीवन प्रारम्भ में अत्यन्त पवित्र एवं स्वच्छ था, वे ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपना समय अध्ययन तथा धर्म-प्रचार में व्यतीत करते थे। मठों में ये भिक्षु जनता को पवित्र जीवन का उपदेश देते थे। रात्रि में यह मठ यात्रियों के लिए सराय का काम देते जहां यात्रियों को सम्पूर्ण सुविधाएं प्रदान की जाती थीं। मठ अस्पताल का कार्य भी करते थे। गरीबों के लिए भोजन की व्यवस्था भी मठ करते थे। इन उपयोगिताओं को देखते हुए राज्य भी इन्हें सहायता करते थे। इन विहारों को खर्चे के लिए सरकार द्वारा भूमि प्रदान की जाती थी। सरकार के अतिरिक्त धार्मिक व्यक्ति भी इन विहारों की आर्थिक सहायता करते रहते थे, परन्तु बाद में निम्नलिखित कारणों के कारण इनको समाप्त करने के लिए नियम बनाए गए :

(क) **मठों में भ्रष्टाचार** (Corruption in the Monasteries)—मध्य युग की समाप्ति तक मठ भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए। भिक्षुओं का पवित्र जीवन समाप्त हो गया तथा उसके स्थान पर विलासिता एवं सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की आकांक्षा व्याप्त हो गयी। धन सम्पत्ति की अधिकता के कारण मठ आमोद-प्रमोद एवं भ्रष्टचार के स्थान बन गए। परिणामस्वरूप इसका कुप्रभाव समाज पर भी दृष्टिगोचर होने लगा।

(ख) **विदेशी प्रभाव** (Stronghold of Pope)—मठों पर पोप का प्रभाव छाया हुआ था, अतः मठ देश के नियमों की अवहेलना करते थे। भिक्षु पोप के अनन्य भक्त थे। पोप की आज्ञा को ही वे सर्वाधिक महत्व प्रदान कर उसी के अनुसार कार्यवाही करते थे। वे देश की एकता एवं राष्ट्रीयता में विश्वास नहीं रखते थे। जनता में राष्ट्रीयता की भावना आधुनिक युग के आगमन के साथ-साथ विकसित हो रही थी, अतः वह इन मठों का विरोध करने लगी।

(ग) **उपयोगिता में कमी** (Decrease in Importance)—इसके अतिरिक्त आधुनिक युग में जनता के लिए अनेक विद्यालय खुल गए थे, धर्मशालाओं तथा अस्पतालों की भी कमी न रहने के कारण मठों की उपयोगिता समाप्त हो गयी थी, अतः जनता का मठों से कोई विशेष सम्बन्ध न रहा था।

(घ) मठों की समाप्ति (Fabulous Wealth)—मठों के लिए उनकी अपार धनराशि अहितकर प्रमाणित हुई क्योंकि राजा एवं जनता दोनों ही उनकी विपुल सम्पत्ति पर अधिकार करना चाहते थे। राजा एक तो पोप के अधीन थे तथा साथ ही साथ एक बड़ी धनराशि से भी वंचित थे, अतः हेनरी ने इन मठों को समाप्त करने का प्रयास किया।[1]

(ङ) मठों की समाप्ति (The work of Dissolution)—पोप की शक्ति को इंग्लैण्ड से निष्कासित करने के लिए हेनरी ने संसद से अनेक नियम पारित कराके अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु पोप की रही-सही शक्ति को नष्ट करने के लिए हेनरी ने अपना ध्यान अब मठों की ओर केन्द्रित किया। मठों को समाप्त करने से हेनरी, पोप के प्रभाव को पूर्णतया इंग्लैण्ड से समाप्त करने में सफल हो जाता, साथ-साथ उसके मठों की विपुल धन-सम्पत्ति पर भी अधिकार हो जाता। अतः हेनरी ने सतर्कतापूर्वक मठों को नष्ट करने की योजना बनायी।

इंग्लैण्ड में उस समय अनेक छोटे-छोटे मठ थे, जो अपना निर्वाह भी कठिनता से पूरा करते थे। **हेनरी ने 1535 ई. में इन मठों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की जिसका अध्यक्ष क्रामवैल था।** इस आयोग ने अत्यन्त तेजी से कार्य किया और शीघ्र ही मठों में व्याप्त भ्रष्टाचार की घोषणा की। 1536 ई. में इस आयोग की संस्तुति के आधार पर एक नियम पारित किया जिसके द्वारा ऐसे सभी मठ, जिनकी वार्षिक आय दो सौ पौंड से कम थी, को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार तीन सौ छियत्तर मठ समाप्त हो गए। इन समस्त मठों की सम्पत्ति को हेनरी ने अपने अधिकार में ले लिया। इस कार्य के विरुद्ध एक **धर्म आन्दोलन** (Pilgrimage of Grace) हुआ, जिसका कठोरतापूर्वक दमन किया। **इस आन्दोलन का नेता रॉबर्ट आस्क** ((Robert Aske) **था।** रॉबर्ट को हेनरी ने क्षमा कर दिया, किन्तु कुछ मठाधीशों के बहकावे में आकर रॉबर्ट आस्क ने पुनः विद्रोह कर दिया, इस बार हेनरी ने रॉबर्ट आस्क को मृत्यु-दण्ड दे दिया।

छोटे मठों को समाप्त करने के पश्चात् हेनरी ने बड़े मठों को समाप्त करने का निश्चय किया। जिस आयोग ने छोटे मठों के विरुद्ध रिपोर्ट दी थी उसने बड़े मठों के विरुद्ध भी अभियोग लगाए। प्रारम्भ में तो रिश्वत तथा अन्य प्रलोभन देकर हेनरी ने मठों पर अधिकार करना चाहा, परन्तु जब मठाधीश इसके लिए तैयार न हुए तो डरा-धमका कर ऐसा करने को विवश किया। 1539 ई. तक एक-एक करके सभी मठों को समाप्त कर दिया गया। इन मठों की सम्पत्ति पर हेनरी ने अधिकार कर लिया। वार्नर-मार्टिन ने लिखा है—**इन मठों में से कुछ को राजद्रोह अथवा षड्यन्त्र के अभियोग में राज्य में लिया गया तो दूसरों ने राजा की अधीनता स्वीकार करने में ही बुद्धिमत्ता देखी। भिक्षुओं को जीवन-वृत्ति दे दी गयी। छह बड़े मठों को लौकिकता (secularism) के आधार पर पुनः संगठित किया गया। उसकी सम्पत्ति का कुछ भाग शिक्षा-प्रसार पर व्यय किया गया तथा कुछ समुद्र तट पर दुर्ग बनवाने में, परन्तु उसका अधिकांश भाग राजा के हाथों में गया। उसने उनमें से बहुत कुछ अपने मन्त्रियों तथा दरबारियों को उपहार के रूप में अथवा मूल्य लेकर दे दिया। अब यह परिवर्तन स्थायी प्रतीत होने लगा।**

1 "He dissolved the monasteries and expelled the monks and nuns because they looked upon the pope and not the kings as their real superior." —*Southgate*

मठों के पतन के प्रभाव
(EFFECTS OF THE DISSOLUTION OF MONASTERIES)

हेनरी अष्टम द्वारा मठों को समाप्त करना निश्चित रूप से उसका एक साहसिक कदम था। हेनरी ने न केवल मठों को समाप्त किया वरन् इस कार्य को पूर्ण करने में संसद का सहयोग भी प्राप्त किया। मठों के समाप्त होने का इंग्लैण्ड में निम्नांकित रूप से प्रभाव पड़ा :

(i) राजनीतिक प्रभाव (Political Effects)—पोप जिसका निवास स्थान रोम था, ईसाई जगत का सम्राट था। इंग्लैण्ड में ये मठ ही उसकी सत्ता के प्रतीक थे। इन मठों के नष्ट होने मे पोप का इंग्लैण्ड पर प्रभाव भी समाप्त हो गया। गिरजाघरों में भी पोप के धार्मिक अधिकारियों के स्थान पर राजा के अधिकारी नियुक्त हुए।

पोप के प्रभाव के समाप्त होने से इंग्लैण्ड में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। राजा भी स्वयं को स्वतन्त्र समझने लगा। उसकी शक्ति राजनीतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि हो गयी।

मठों को समाप्त कर हेनरी ने केवल छह बड़े गिरजाघरों की व्यवस्था की। ये गिरजाघर वेस्टमिनिस्टर, आक्सफोर्ड, पीटर बरो, ब्रिस्टल, चेस्टर तथा ग्लोस्टर में थे। इस पर उसने पूर्ण नियन्त्रण रखा।

हेनरी ने इन मठों की सम्पत्ति में से कुछ भाग अपने दरबारियों तथा मन्त्रियों में वितरित किया, परिणामस्वरूप राजा के पक्षपातियों का एक वर्ग बन गया जिससे हेनरी की स्थिति सुदृढ़ हुई।

(ii) धार्मिक प्रभाव (Religious Effects)—मठों के समाप्त करने का पहला प्रभाव इंग्लैण्ड में धर्म-आन्दोलन (Pilgrimage of Grace) का होना था, जिसका नेता रॉबर्ट आस्क (Robert Aske) था।

वे व्यक्ति जिनमें मठों की भूमि वितरित की गयी थी अथवा खरीदी थी, प्रोटेस्टेण्ट हो गए क्योंकि यदि वह कैथोलिक धर्म का समर्थन करते तो उन्हें वह भूमि वापिस करनी पड़ती।

बड़े मठों के पतन के कारण, मूर्तियों, अंग्रेज सन्तों के मन्दिरों को तोड़ दिया गया तथा प्राचीन गिरजाघरों के अनुसार मिलने वाली छुट्टियों को भी समाप्त कर दिया गया।

क्रामवैल के प्रोत्साहन पर माइल्स कवरडेल (Miles Coverdale) **ने बाईबिल का अंग्रेजी में अनुवाद किया।** क्रैनमर ने इसकी भूमिका लिखी। इसे प्रत्येक गिरजाघरों में रखा गया तथा इसका प्रयोग किया जाने लगा। निश्चित रूप से यह एक क्रान्तिकारी कदम था।

(iii) सामाजिक प्रभाव (Social Effects)—इंग्लैण्ड में इन मठों पर हजारों व्यक्तियों की जीविका आधारित थी। मठों के समाप्त होने से ये लोग बेकार हो गए जिनकी जीविका का कोई साधन न रहा।

जनता से उसका पूजागृह छीन लिया गया। राजा ने जिस प्रकार से मठों की सम्पत्ति पर अधिकार किया, जनता ने पसन्द नहीं किया। मठों की भूमि पर कार्य कर रहे व्यक्तियों से नए स्वामी पहले से अधिक धन कर के रूप में वसूलने लगे। मठों के धन से जनता की भलाई के कार्य नहीं किए गए।

मठों से जनसाधारण को चारित्रिक पवित्रता का उपदेश मिलता था। मठों के समाप्त होने से जनता में संयम तथा सदाचार की भावना समाप्त होने लगी।

(iv) आर्थिक प्रभाव (Economic Effects)—मठों के समाप्त होने से पोप का प्रभाव इंग्लैण्ड पर से पूर्णतः समाप्त हो गया। परिणामस्वरूप पोप को भेजी जाने वाली धनराशि का इंग्लैण्ड में ही प्रयोग होने लगा। इससे देश की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। अनेक उद्योगों के देश में विकसित होने से बेकारी की समस्या को दूर करने में सहायता मिली। मठों से प्राप्त भूमि अधिक होने के कारण उसका मूल्य कम हो गया, अतः मध्यवर्गीय लोगों के लिए भी भूमि खरीदना सम्भव हो गया।

(v) भविष्यकालीन प्रभाव (Effects on the Future)—मठों को समाप्त करने का भविष्य पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा। जिस समय मेरी ट्यूडर (Mary Tudor) ने इंग्लैण्ड में कैथोलिक धर्म की पुनर्स्थापना का प्रयत्न किया, उसे सफलता प्राप्त न हो सकी, क्योंकि उसके पास इतना धन नहीं था कि वह भूमि को खरीद कर पुनः मठों को देकर उनकी स्थापना कर सकती।

इस प्रकार इन समस्त नियमों एवं कार्यों के द्वारा हेनरी ने अपना उद्देश्य पूर्ण किया तथा जनता में जागृति उत्पन्न कर धार्मिक आन्दोलन को प्रोत्साहन दिया। गृहनीति के अन्तर्गत अन्य क्षेत्रों में उसने अपने पिता का अनुकरण किया तथा इंग्लैण्ड को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिणति करने का प्रयास किया।

वैदेशिक नीति
(FOREIGN POLICY)

हेनरी सप्तम ने आर्थिक विवशता तथा आन्तरिक संकट के कारण शान्तिप्रिय नीति का पालन किया था। उस समय उसके लिए आवश्यक था कि पहले वह विदेश नीति की अपेक्षा गृह-नीति की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करे, किन्तु हेनरी अष्टम के राजा बनने पर उसके समक्ष इस प्रकार की कोई समस्या नहीं थी। उसके पिता **हेनरी सप्तम ने उसके लिए एक बड़ी धनराशि छोड़ी थी तथा उसके राज्याभिषेक के समय इंग्लैण्ड में शान्ति थी, अतः उसने युद्ध-प्रिय नीति को अपनाया।**

(अ) पवित्र संघ (Holy Alliance)—हेनरी सप्तम के शासनकाल से ही फ्रांस तथा स्पेन, इंग्लैण्ड के दो प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी थे। इस समय पोप के इटली में रहने के कारण इटली के राजनीतिक महत्व में वृद्धि हुई। उत्तरी इटली पर फ्रांस का प्रभुत्व था क्योंकि फ्रांस का सम्राट लुई बारहवां मिलान का भी ड्यूक था। नेपल्स तथा सिसली पर स्पेन के शासक का प्रभुत्व था। इन दोनों देशों के शासकों को भय था कि वेनिस के लोग उन पर आक्रमण न कर दें, अतः उन्होंने आस्ट्रिया के सम्राट मैक्सिमिलियन (Maximilian) के साथ एक समझौता किया, जिस **'लीग ऑग कैम्बराई'** (League of Cambrai) कहते हैं। इस समझौते के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड का यूरोप में महत्व समाप्त हो गया। इसके पश्चात् भी हेनरी सप्तम ने शान्तिपूर्ण नीति का पालन करते हुए स्पेन के साथ सम्बन्ध मधुर बनाए रखे, किन्तु वेनिस की जनता इस समझौते के विरुद्ध थी, क्योंकि यह उनके स्वार्थ-सिद्धि के मार्ग में बाधक के रूप में था। 1511 ई. में उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता मिली। पोप जूलियस द्वितीय को यह सन्देह होने लगा कि कहीं फ्रांस इटली पर अधिकार न कर ले। उसने मैक्सिमिलियन तथा फर्डीनेण्ड को फ्रांस से सम्बन्ध-विच्छेद करने को बाध्य किया तथा वेनिस से समझौता करने को प्रेरित किया जिसका उद्देश्य फ्रांस के प्रभाव को इटली से समाप्त करना था। अतः **'पवित्र संघ'** (Holy League) की स्थापना की गयी जिसका प्रधान पोप था। हेनरी को इससे बहुत

प्रसन्नता हुई। वह भी 'पवित्र संघ' का सदस्य बन गया तथा उसे इस समय यह आशा हो गयी कि वह अब फ्रांस को परास्त कर सकेगा। हेनरी का मन्त्री वूल्जे, जो स्वयं पोप बनने का स्वप्न देख रहा था तथा पोप का अनन्य भक्त था, ने एक विशाल सेना तथा धनराशि एकत्रित की।

(ब) फ्रांस से युद्ध (War with France)—पोप के आदेश पर हेनरी ने एक सेना फ्रांस के दक्षिणी भाग पर आक्रमण करने के लिए भेजी, किन्तु वह असफल रही। अगले वर्ष हेनरी ने स्वयं सेना का संचालन किया। 1513 ई. **में थरौन पर अधिकार कर लिया तथा स्पर्स (Spurs) के युद्ध में फ्रांस को परास्त किया।** फ्रांस के मित्र स्कॉटलैण्ड के राजा ने इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, किन्तु अर्ल ऑफ सरे ने फ्लोडन मैदान में स्कॉटलैण्ड की सेना को परास्त किया। इस युद्ध से यद्यपि इंग्लैण्ड को सम्मान तो प्राप्त हुआ, किन्तु कोई विशेष लाभ नहीं हो सका क्योंकि पोप ने फ्रांस से सन्धि कर ली।

1515 ई. **में फ्रांस का सम्राट फ्रांसिस प्रथम बना।** उसने इटली पर आक्रमण किया तथा **मैरिगनैनो** (Marignaino) के युद्ध में इटली को परास्त कर पोप को अपने अधिकार में ले लिया। 1516 ई. में स्पेन के शासक फर्डीनेण्ड की मृत्यु हो गयी तथा उसके स्थान पर चार्ल्स पंचम शासक बना। चार्ल्स पंचम तथा हेनरी अष्टम ने पोप को फ्रांस के अधिकार से मुक्त कराने का प्रयास किया, किन्तु फ्रांस की विजय हुई इससे इंग्लैण्ड के सम्मान को चोट पहुंची।

1519 ई. **में पवित्र रोम साम्राज्य का सम्राट स्पेन के शासक चार्ल्स पंचम को चुना गया।** फ्रांस ने चार्ल्स पंचम की शक्ति नष्ट करने के लिए हेनरी की ओर मित्रता का प्रस्ताव रखा। हेनरी आस्ट्रिया के सम्राट मैक्सिमिलियन की मृत्यु के पश्चात् आस्ट्रिया पर अधिकार करना चाहता था, किन्तु यह अधिकार स्पेन को प्राप्त हो गया था। अतः हेनरी अष्टम ने भी फ्रांस से मित्रता करनी चाही, परन्तु इंग्लैण्ड के व्यापार की रक्षा करने के कारण ऐसा करने में सफल न हो सका क्योंकि इंग्लैण्ड का ऊन का व्यापार फ्लैंडर्स से चलता था और फ्लैंडर्स इस समय स्पेन के अधिकार में था। अतः हेनरी ने स्पेन का साथ ही देना चाहा। इसके साथ ही हेनरी अष्टम का मन्त्री वूल्जे भी स्पेन को सहायता देने के पक्ष में ही था क्योंकि वूल्जे पोप बनना चाहता था और स्पेन के राजा ने उसे इस उद्देश्य में सहायता करने का वचन दिया था। अतः 1521 ई. में इंग्लैण्ड ने सैफोट के नेतृत्व में एक सेना फ्रांस पर आक्रमण करने के लिए भेजी। 1523 ई. में युद्ध हुआ, परन्तु इससे कोई लाभ न हुआ। **इसी समय पोप लिओ के स्थान पर क्लीमेंट पोप बन गया। वूल्जे को इससे निराशा हुई।** नए पोप क्लीमेंट ने तुर्कों के अभियान के संकट के कारण फ्रांस के राजा फ्रांसिस से सन्धि कर ली। इस प्रकार के युद्धों से इंग्लैण्ड को कोई लाभ न हुआ, वरन् उसका सम्मान आहत हुआ।

(स) स्पेन से युद्ध (War with Spain)—1525 ई. में स्पेन के राजा चार्ल्स पंचम ने फ्रांस पर आक्रमण किया और फ्रांसिस को परास्त कर उसे बन्दी बनाया। तत्पश्चात् 1526 ई. में स्पेन की सेना ने इटली पर आक्रमण किया तथा रोम पर अधिकार कर पोप को भी कैद कर लिया तथा रोम को लूटा। हेनरी अष्टम, जो पोप का भक्त था, ने फ्रांस से सन्धि की तथा स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। स्पेन के प्रभाव को इटली से समाप्त करने के लिए वूल्जे के प्रयत्नों से पुनः एक पवित्र संघ की स्थापना की गई। **प्रारम्भ में पवित्र संघ (जिसमें फ्रांस, इंग्लैण्ड तथा पोप थे), की सेनाओं को सफलता मिली, किन्तु शीघ्र ही उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा।**

(द) स्कॉटलैण्ड (Scotland)—यद्यपि स्कॉटलैण्ड का राजा जेम्स चतुर्थ, हेनरी अष्टम का सम्बन्धी था, तथापि वह फ्रांस का समर्थक तथा इंग्लैण्ड का विरोधी था। 1513 ई. में फ्लाडन के मैदान में इंग्लैण्ड के साथ युद्ध में जेम्स चतुर्थ की मृत्यु हो गयी। जेम्स पंचम ने 1542 ई. में इंग्लैण्ड को परास्त करना चाहा, परन्तु उसकी पराजय हुई। इस आघात को जेम्स पंचम सहन न कर सका और उसकी मृत्यु हो गयी। हेनरी अष्टम ने अपने पुत्र एडवर्ड का विवाह स्कॉटलैण्ड की राजकुमारी मेरी से करना चाहा, इससे स्कॉटलैण्ड इंग्लैण्ड के अधीन हो जाता। अतः स्कॉटलैण्ड के सरदार इस विवाह के लिए तैयार न हुए। हेनरी ने क्रुद्ध होकर स्कॉटलैण्ड पर आक्रमण किया और एडिनबरा को अग्नि की भेंट कर दिया।

(य) आयरलैण्ड (Ireland)—हेनरी अष्टम ने इंग्लैण्ड से पोप के प्रभाव को पूर्णतः समाप्त किया था तथा एक नए धर्म का वहां जन्म हुआ था जिसे प्रोटेस्टेण्ट (Protestant) कहते थे। **हेनरी चाहता था कि आयरलैण्ड निवासी भी पोप की प्रभुता को अस्वीकार करके प्रोटेस्टेण्ट बन जाएं, किन्तु आयरलैण्ड के निवासियों ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया।** हेनरी अष्टम इससे अत्यन्त क्रोधित हुआ। आयरलैण्ड की संसद, जो कि इंग्लैण्ड की संसद के अधीन थी, ने घोषणा की कि इंग्लैण्ड का राजा आयरलैण्ड के चर्च का मुख्य अधिकारी है। ईसाई मठों को नष्ट करने के कानून को भी आयरलैण्ड की संसद ने स्वीकार किया। आयरलैण्ड में अनेक मठों को समाप्त किया गया तथा मूर्तियां तोड़ी गयीं। हेनरी ने आयरलैण्ड के सरदारों को धन, भूमि देकर अपने पक्ष में कर लिया तथा वहां शान्ति और सुख का साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। **उसने आयरलैण्ड में इतनी शान्ति स्थापित करवा दी कि आयरलैण्ड के किसी निवासी ने चाहे वह कबीले के युग का ही क्यों न हो, अपने देश में इससे पहले इतनी शान्त अवस्था नहीं देखी थी।**

(र) शक्तिशाली नौ सेना (Powerful Navy)—हेनरी सप्तम को इंग्लैण्ड के व्यापारी बेड़े का निर्माता कहा जाता है क्योंकि उसने अनेक जहाज बनवा कर इंग्लैण्ड के व्यापार को बढ़ाया था। हेनरी अष्टम ने मठों से प्राप्त सम्पत्ति से अनेक जहाजों का निर्माण करवाया तथा उन पर तोपें लगवाकर लड़ाकू जहाजों का बेड़ा तैयार किया।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि हेनरी अष्टम की वैदेशिक नीति सफल नीति नहीं थी। फ्रांस और स्पेन के साथ हुए युद्धों में इंग्लैण्ड को अत्यधिक हानि सहन करनी पड़ी। इससे जन-धन की हानि हुई तथा व्यापार को क्षति पहुंची। वूल्जे से जनता को घृणा हो गयी तथा उसका पतन हो गया। हेनरी ने वूल्जे की नीति का परित्याग कर दिया।

हेनरी अष्टम का मूल्यांकन
(EVALUATION OF HENRY VIII)

हेनरी अष्टम 1509 ई. में इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुआ तथा 1547 ई. तक राज्य करता रहा। अपने शासन काल में हेनरी ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। यद्यपि वैदेशिक नीति में वह विशेष सफल न रहा, किन्तु फिर भी उसने आयरलैण्ड के राजा की उपाधि धारण की तथा नौ-सेना को शक्तिशाली बनाया। **उसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य पोप की सत्ता को इंग्लैण्ड से उखाड़ फेंकना था, जिसमें वह पूर्णतः सफल भी हुआ।** हेनरी की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता यह थी कि वह अपनी भावनाओं के साथ-साथ जनता की भावनाओं को भी समझता था और उसमें यह विश्वास उत्पन्न कर सकता था कि वह जनता के साथ है। यद्यपि वह अत्यन्त हठी स्वभाव का था तथापि प्रशासनिक क्षेत्र में सफल रहा तथा इंग्लैण्ड में शान्ति

स्थापित करने में सफल हुआ। ट्रेवेलियन ने हेनरी अष्टम के विषय में लिखा है—**'हेनरी बुरा था, कठोर था, डाकू था.....परन्तु इन सबके पीछे उसकी अपने पद की महानता की भावना तथा इंग्लैण्ड को महान् बनाने की अभिलाषा थी। इसके साथ ही उसके दृढ़ विश्वास और कठोर परिश्रम करने का एक ऐसा गुण था जिसके अभाव में उसके अच्छे चरित्र और बुद्धि वाले राजनीतिज्ञ भी असफल हुए हैं।'**[1]

हेनरी अष्टम के शासनकाल में यद्यपि साहित्यिक क्षेत्र में उन्नति नहीं हुई, किन्तु उसका बीजारोपण उसने अपने राज्यकाल में ही कर लिया था। यद्यपि स्वयं वह चरित्रहीन तथा अत्याचारी था तथापि उसका काल महान् सफलताओं और परिवर्तन का युग था। मोवाट ने लिखा है—**'हेनरी अष्टम अपने समकालीन राजाओं में, अपने समस्त अत्याचारों के होने के पश्चात् भी एक शानदार राजा था। यूरोप के शासक ही नहीं, वरन् उसकी साधारण प्रजा भी उसके प्रति सम्मान प्रकट करती थी।'**[2]

एडवर्ड षष्टम एवं मेरी ट्यूडर
(EDWARD VI AND MARY TUDOR)

हेनरी VIII की मृत्यु के पश्चात् एडवर्ड षष्टम इंग्लैण्ड का शासक बना, उसने 1547 ई. से 1553 ई. तक शासन किया। उसके पश्चात् इंग्लैण्ड की शासिका मेरी ट्यूडर हुई, जिसने 1553 ई. से 1558 ई. तक शासन किया। **इतिहास में मेरी का शासन काल रक्तरंजित शासन काल के नाम से विख्यात है। इसी कारण उसे 'खूनी मेरी'** (Bloody Mary) **के नाम से भी जाता जाता है।**

महारानी एलिजाबेथ प्रथम (1558-1603)
(QUEEN ELIZABETH I)

जीवन परिचय (Life Sketch)

17 नवम्बर, 1558 ई. को इंग्लैण्ड की क्रूर शासिका मेरी ट्यूडर (Mary Tudor) की मृत्यु हुई तथा उसकी मृत्यु के कुछ घण्टे पश्चात् ही इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर एलिजाबेथ को आसीन किया गया। एलिजाबेथ का रक्त के आधार पर इंग्लैण्ड के सिंहासन पर सर्वाधिक अधिकार था तथा उसके पश्चात् स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी का सर्वाधिक अधिकार तथा हेनरी अष्टम की वसीयत, जिसे तत्कालीन संसद ने स्वीकार किया था, के आधार पर बिना किसी वाद-विवाद के वह इंग्लैण्ड की महारानी बनी। सिंहासन पर बैठते समय उसकी आयु पच्चीस वर्ष थी। उसके महारानी बनने पर जनता में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी थी। एलिजाबेथ एक योग्य, दूरदर्शी, साहसी तथा दृढ़ निश्चय वाली रानी थी। अपने मधुर स्वभाव, देशभक्ति एवं प्रजावत्सलता से जनता का हृदय जीतने में वह सफल हुई। उसने एक बार संसद में कहा था—**'कुछ नहीं, संसार को कोई वस्तु इस सूर्य के नीचे मुझे इतनी प्रिय नहीं है जितनी प्रिय मुझे अपनी प्रजा की भलाई एवं प्रीति है।'**[3] अपने देश के हित के लिए उसने विवाह नहीं किया। जब उसकी संसद ने उससे विवाह करने का अनुमोदन किया तो उसके मुख से प्रस्फुटित

1 "He was gross, he was cruel, he was a robber...but behind all this there was a sense of greatness of his office, a desire to make England great." —*Trevelyan*

2 'With all these crimes he was still one of the most glorious princes of his times." —*Mowat*

3 'Nothing, no wordly thing under the sun is so dear to me as the love and good will of my subjects.' —*Elizabeth*

हुए शब्द उसकी देशभक्ति प्रदर्शित करते हैं। उसने कहा—**'हां, तुम्हारे सन्तोष के लिए मैं पहले ही विवाह कर चुकी हूं, वह पति इंग्लैण्ड का साम्राज्य है और तुम सब तथा जितने भी अंग्रेज हैं, वे सब मेरे बच्चे तथा रिश्तेदार हैं।'**[1] **उसके चरित्र की व्यवस्था करते हुए इतिहासकार टौट ने लिखा है, 'हेनरी VIII के अन्य बच्चों के समान उसकी शिक्षा का प्रबन्ध भी सावधानीपूर्वक किया गया था।** वह स्पष्ट विचार वाली, दूरदर्शी, योग्य, शक्तिशाली एवं साहसी थी।.......जहां एक ओर उसमें अपने पिता का साहस तथा कूटनीतिज्ञता थी वहीं दूसरी ओर उसमें उसकी माता का चंचल स्वभाव भी विद्यमान था।'[2]

एलिजाबेथ का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में व्यतीत हुआ था। जब वह एक वर्ष की थी तो उसकी मां ऐन बोलेन को मृत्युदण्ड दिया गया था तथा उसको अवैध सन्तान घोषित कर उसके उत्तराधिकार को गलत बताया गया। अपना अब तक का जीवन उसने अकेलेपन में व्यतीत किया था तथा उसे प्रत्येक कदम संभाल कर रखना पड़ा था। अनेक बार मृत्यु उसे अपने समीप दिखाई दी थी, विशेषकर मेरी ट्यूडर के शासन काल में तो उसे बन्दी भी बनाया गया था। **'इस कारण उसने अपनी बुद्धि पर ही विश्वास करना सीख लिया था, वाणी में संयम रखने तथा ओठों में हंसी बनाए रखने का अभ्यास कर लिया था। साहस के साथ घटनाओं की प्रतीक्षा करना तथा आत्मरक्षा के लिए छल का प्रयोग करना भी वह जान गयी थी। उसके ये गुण भविष्य में उसके अत्यन्त काम आए।'[3] वह एक स्त्री थी, किन्तु प्रशासन के सम्बन्ध में कमजोर न थी।**[4]

यद्यपि उसमें उपर्युक्त सभी गुण थे, किन्तु वह एक चरित्रवान स्त्री न थी। वह कटु बोल सकती थी तथा स्वार्थ की पूर्ति के लिए छोटे से छोटा तथा निम्न कार्य भी कर सकती था। वह बिना झिझके असत्य बोल सकती थी। उसके विषय में अनेक प्रेम कथाएं प्रचलित हुईं। डडले (Dudley), वाल्टर रेले (Walter Raleigh), आदि उसके प्रेमी माने गए हैं। उसकी नीति व्यक्तिगत स्वार्थ तथा उपयोगिता पर आधारित थी। इसके पश्चात् भी वह जनता का विश्वास प्राप्त करने तथा कुशल प्रशासन स्थापित करने में सफल हो सकी, क्योंकि व्यक्तिगत अवगुण होते हुए भी वह इंग्लैण्ड की शक्ति एवं एकता का मुख्य स्रोत थी।

एलिजाबेथ की गृह-नीति
(HOME POLICY OF ELIZABETH)

मेरी ट्यूडर के पश्चात् एलिजाबेथ इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुई। शीघ्र ही उसे अनुभव हुआ कि उसके सम्मुख अनेक समस्याएं हैं, जिनका समाधान करना नितान्त आवश्यक है। मेरी ट्यूडर तथा उसके द्वारा अत्याचारपूर्ण नीति अपनाने के लिए इंग्लैण्ड की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति अव्यवस्थित हो गई थी। एलिजाबेथ ने स्थिति को समझा

---

1 'Yes, to satisfy you I have already joined myself in marriage to a husband, namely the Kingdom of England and everyone of you and as many are Englishmen, are childern and kinsmen to me.' —*Queen Elizabeth*

2 'To her father's strength and state-craft Elizabeth also added a large share of her mother's light and frivolous character.' —*T. F. Tout*

3 'She had learnt to keep her own counsel, to be reticent and smiling, to wait upon events with courage, and to use deceit as a weapon of defence. These qualities stood her in good stead in the difficult times which lay before her.' —*Ramsay Muir*

4 'I know I have the body of a weak and feeble woman, but I have the heart and stomach of a King, and of a king of England too.' —*Elizabeth I*

और उसमें परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न किया। धीरे-धीरे स्थिति में सुधार लाते हुए उसने इंग्लैण्ड में शान्ति और व्यवस्था स्थापित कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया तथा देश में सुख, शान्ति और वैभव स्थापित किया। **इसी कारणवश एलिजाबेथ के शासनकाल को इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है।**

(अ) एलिजाबेथ और प्यूरिटन (Elizabeth and Puritans)—धार्मिक समस्या को सुलझाने के लिए एलिजाबेथ ने धार्मिक समझौता बनाया था, किन्तु इंग्लैण्ड के प्यूरिटन इससे सन्तुष्ट न थे। प्यूरिटन एलिजाबेथ की उदार धार्मिक नीति को पसन्द नहीं करते थे तथा कैथोलिकों का कठोरतापूर्वक दमन करना चाहते थे। **इंग्लैण्ड में प्यूरिटन (उग्रवादी प्रोटेस्टेण्ट) धार्मिक मामलों के अतिरिक्त राजनीति में भी हस्तक्षेप करने लगे थे।** इनका विचार था कि धर्म मनुष्य का व्यक्तिगत विषय है इसमें राज्य को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। **प्यूरिटन राजनीति स्वतन्त्रता की भी मांग करने लगे थे।**

प्यूरिटन वर्ग का विचार था कि एलिजाबेथ ने जो धार्मिक सुधार किए हैं, वे ईसाई धर्म के विरोधी हैं। इसके अतिरिक्त पादरियों की नियुक्ति के विषय में भी प्यूरिटन असन्तुष्ट थे, वे चाहते थे कि गिरजाघरों के अधिकारी सरकारी व्यक्ति न हों और न ही सरकार उन्हें आर्थिक सहायता करे। गिरजाघर के पदाधिकारी जनता द्वारा नियुक्त किए जाएं तथा दान आदि से अपनी जीविका चलाएं। प्यूरिटन वर्ग का विचार था कि गिरजाघरों में मूर्ति अथवा चित्रपूजा न की जाए। उनके विचार में यह कैथोलिक पद्धति थी। प्यूरिटन पादरियों के विवाह करने के भी विरोधी थे। उनका विचार था कि पादरियों को सांसारिक जीवन से दूर रहना चाहिए।

प्यूरिटनों को इंग्लैण्ड के शक्तिशाली सरदारों का समर्थन प्राप्त था। मध्य वर्ग में भी इनकी संख्या बहुत बढ़ गयी थी जिसके कारण संसद तथा प्रिवी कौंसिल में भी इनका प्रभाव था। **थामस कार्टराइट (Thomas Cartwright) नामक कैम्ब्रिज का प्रोफेसर अपने लेखों द्वारा प्यूरिटन वर्ग के विचारों का प्रसार तथा एंग्लिकन चर्च की बुराई करता था।**

एलिजाबेथ का विचार था कि एंग्लिकन चर्च के लिए ये लोग कैथोलिक वर्ग के समान ही खतरनाक हो सकते हैं। उसने देखा कि प्यूरिटन पादरी प्रार्थना में नियमों का पालन नहीं करते हैं, अतः उसने कैण्टबरी के आर्क बिशप के द्वारा नियमों का पालन करने का आदेश निकलवाया, जिन पादरियों ने इस आदेश का पालन नहीं किया उन्हें उनके पद से च्युत कर दिया गया। प्रोफेसर कार्टराइट को भी उसके पद से हटा दिया गया। वह बन्दी बनाए जाने के भय से इंग्लैण्ड से भाग गया। एलिजाबेथ ने इस प्यूरिटन वर्ग के विरुद्ध कठोर नीति अपनायी। अनेक प्यूरिटन को बन्दी बनाया गया। इस प्रकार वह इन्हें शान्त करने में सफल हुई। **एलिजाबेथ का उद्देश्य यद्यपि रक्तपात करना नहीं था, किन्तु देश व एंग्लिकन चर्च (Anglican Church) की सुरक्षा के लिए विवश होकर उसने कठोर नीति का पालन किया।** उसने दोनों ही सम्प्रदायों को संरक्षण प्रदान किया।

(ब) सामाजिक सुधार (Social Reforms)—एलिजाबेथ की इच्छा थी कि उसकी प्रजा सुखी एवं प्रसन्न रहे। उसको अपने देशवासियों की स्थिति देखकर दुःख होता था। क्योंकि जनता का एक बड़ा भाग निर्धन था। देश में व्याप्त अव्यवस्था के अतिरिक्त निर्धनता का प्रमुख कारण बेरोजगारी थी। जो लोग मजदूरी करके कार्य करना चाहते थे उन्हें काम नहीं मिलता था, अतः वे भिक्षा मांगने के लिए विवश होते थे। यद्यपि सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में भिक्षा मांगने पर प्रतिबन्ध लगाने कें अनेक नियम पारित किए थे, परन्तु वे अपने उद्देश्य में

सफल न हो सके क्योंकि उन्होंने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया कि भिक्षा मांगने का कारण क्या है। **सर्वप्रथम एलिजाबेथ ने इस ओर ध्यान दिया और मठों के नष्ट होने का इसका एक प्रमुख कारण स्वीकार किया। एलिज़ाबेथ ने नियम पारित कर सड़कों पर भिक्षा मांगने पर प्रतिबन्ध लगाया तथा जिन लोगों के पास जीविकोपार्जन का साधन न था उनके लिए देश में दरिद्रालय** (Poor Houses) **खोले गए।** जो लोग अपंग अथवा अपाहिज थे उन्हें मुफ्त भोजन दिया जाता था तथा कार्य कर सकने योग्य व्यक्तियों को काम दिया जाता था तथा तब उनके भोजन आदि की व्यवस्था की जाती थी। 1601 ई. में **दरिद्र संरक्षण नियम** (Poor Law) पारित करके न्यायाधिपतियों (Justice of Peaces) को दरिद्रालय के प्रबन्ध का कार्य सौंपा गया। जनता से थोड़ा-सा कर लेकर इन दरिद्रालयों का व्यय वहन किया जाता था। उसके प्रयत्नों से शीघ्र ही भिक्षुओं की समस्या समाप्त हुई।

एलिजाबेथ के शासन काल से पूर्व तथा उसके प्रशासन के प्रारम्भिक समय की स्थिति अत्यन्त खराब थी। सड़कों की दशा दयनीय थी तथा यात्रा में लुटेरों का भी भय रहता था। सरायों की दशा भी शोचनीय थी। यात्रा करना अत्यन्त कष्टप्रद था। उस समय की स्थिति के विषय में इतिहासकार वेस्ट ने लिखा है—**'यात्रा का अर्थ एक दिन का कार्य है, यात्रा हमें वास्तव में स्त्री की प्रसव वेदना का ध्यान दिलाती है, जो बहुत पीड़ादायक कार्य है।'**[1] अधिकांश जनता गन्दे मकानों में रहती थी, जिनमें हवा तथा प्रकाश की उचित व्यवस्था न थी। नगरों में भी गन्दगी व्याप्त थी। इस कारण समय-समय पर प्लेग तथा अन्य भयंकर रोग फैलकर जनता में आतंक फैलाते थे। विज्ञान की उन्नति न होने के कारण यद्यपि एलिजाबेथ इस समस्या का पूर्णतः समाधान करने में असफल रही तथापि उसने स्थिति में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। इंग्लैण्ड में विशाल एवं भव्य-भवनों का निर्माण किया, नगरों में सफाई का भी उचित प्रबन्ध किया गया। मकानों में रोशनदान व खिड़कियों की व्यवस्था की गई। इससे जनता की रुचि में भी परिवर्तन हुआ अब वे स्वच्छ एवं मुलायम बिस्तरों का भी उपयोग करने लगे। नगरों में बाग लगाए गए तथा विभिन्न खेलों में भी जनता की रुचि उत्पन्न हुई। इस प्रकार समाज उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ।

(स) आर्थिक स्थिति एवं व्यापार (Financial Condition and Trade)—एलिजाबेथ के शासन-काल से पूर्व इंग्लैण्ड की स्थिति अच्छी न थी। हेनरी अष्टम के युद्धों एवं दरबार के व्यय के कारण उसने विभिन्न प्रकार से धन अर्जित किया था इसी उद्देश्य से उसने मुद्रा में मिलावट करके उसका मूल्य गिरा दिया था, जिसका कुप्रभाव देश के व्यापार पर पड़ा। मेरी के शासनकाल में भी स्थिति में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। **एलिज़ाबेथ ने शान्तिप्रिय नीति का पालन करते हुए काफी धन संचित किया, जिससे उसे संसद पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रही।** उसके शासनकाल में व्यापार में असाधारण प्रगति तथा समुद्री लुटेरों द्वारा स्पेन के जहाजों की लूट के कारण इंग्लैण्ड की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। एलिज़ाबेथ ने व्यापार में उन्नति लाने का कार्य अपने **कुशल मन्त्री विलियम सीसिल (लॉथ बर्ली) को सौंपा। विलियम सीसिल कुशल अर्थशास्त्री तथा अत्यन्त परिश्रमी व्यक्ति था।**

सीसिल ने 1563 ई. में **शिल्पकार अधिनियम पारित** करवाया जिसके द्वारा श्रमिक श्रेणियों के समस्त अलग-अलग विनियमों को समाप्त कर सभी उद्योगों की रोजगार सम्बन्धी

1 'Journey means a day's work and travel reminds us that travel meant indeed, travail, a very painful business.' —*F. R. West*

शर्तों और स्थितियों को नियमित किया गया। कस्बे अथवा गांव सबमें एक ही नियम लागू किया गया। यह आदेश दिया गया कि सभी स्वस्थ व्यक्तियों को खेत-मजदूर के रूप में कार्य करना पड़ेगा। इससे उन्हीं व्यक्तियों को छूट दी जाती थी, जो किसी अन्य शिल्प में कार्य करने के अधिकारी हों। इस अधिनियम के द्वारा देश की सम्पूर्ण श्रम शक्ति को संगठित करने का प्रयत्न किया गया। यह व्यवस्था एक लम्बे समय तक चलती रही। इस व्यवस्था से कस्बों का धीरे-धीरे समाप्त होना रुक गया क्योंकि श्रमिक श्रेणियों से बचने के लिए उन्हें अब गांवों में जाने की आवश्यकता न रही। पहले व्याप्त यह शिकायत भी समाप्त हो गयी कि मालिक वर्ग ऐसे व्यक्तियों को काम पर रख लेता है जो प्रशिक्षित नहीं होते थे, क्योंकि अब **शिल्पियों के लिए सात वर्ष का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया था** इसके अतिरिक्त मजदूरों के प्रति न्याय करने के उद्देश्य से मजदूरी की दरें निर्धारित करने का कार्य न्यायाधिपतियों को दे दिया गया।

इस व्यवस्था से सीसिल को सन्तुष्टि न हुई, उसने इंग्लैण्ड के उद्योग, नौ-परिवहन तथा व्यापार की वृद्धि के लिए अथक् प्रयत्न किया। सीसिल के निर्देशन में इन तीनों ने असाधारण वृद्धि की। इस समय इंग्लैण्ड में शान्ति स्थापित रहने से भी सीसिल को सहायता मिली। विदेशों से भागकर आए हुए शिल्पकारों को भी सीसिल ने संरक्षण प्रदान किया तथा कपड़ा, कांच, कागज, बर्तन तथा चीनी साफ करने के लिए जर्मनी से खनिज लाए गए। सीसिल द्वारा इंग्लैण्ड की इमारती लकड़ी के साधनों के उपयोग तथा युद्ध-सामग्री विशेषकर बारूद एवं तोप की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया। **रैम्जे म्योर** के अनुसार एलिजाबेथ के शासन काल में स्पेन का यह अनुमान था कि इंग्लैण्ड के पास पर्याप्त युद्ध-सामग्री न होने के कारण उससे खतरा नहीं है, परन्तु सीसिल ही वह व्यक्ति था जिसने यह अभाव पूर्ण किया और सम्भवतः इसीं के परिणामस्वरूप स्पेन के जहाजी बेड़े को परास्त किया जा सका।

व्यापार तथा व्यवसाय की उन्नति से इंग्लैण्ड में कारखानों की संख्या में वृद्धि हुई। इसी समय नवीन प्रदेशों की खोज हुई, अतः अपने देश में निर्मित सामान को नवीन देशों तक पहुंचाने के लिए जहाजों तथा व्यापारिक कम्पनियों का अभाव प्रतीत हुआ। सीसिल ने इस दिशा में हर सम्भव प्रयत्न किया तथा जहाज निर्माण के कारखानों को आर्थिक सहायता प्रदान की। 1578 ई. में बाल्टिक प्रदेशों से व्यापार करने के उद्देश्य से सर्वप्रथम **ईस्टलैण्ड कम्पनी** (The Eastland Company) की स्थापना की गयी। इससे होने वाले लाभ को देखकर 1581 ई. में पूर्वी मेडिट्रेरियन प्रदेशों में व्यापार करने के विचार से लीवान्ट कम्पनी (Levant Company) की स्थापना की गई। इन कम्पनियों से इंग्लैण्ड को अत्यधिक लाभ हुआ। 1600 ई. में एक अन्य कम्पनी की स्थापना की गई जिसे **'ईस्ट इण्डिया कम्पनी'** (East India Company) कहते हैं। ये कम्पनी इंग्लैण्ड के लिए अत्यन्त लाभप्रद प्रमाणित हुई क्योंकि न केवल उसने भारत से व्यापार किया वरन् कुछ समय पश्चात् उस पर अधिकार करने में भी सफल हो गयी।

इस प्रकार, शनैः-शनैः इंग्लैण्ड ने व्यापारिक क्षेत्र में असीमित उन्नति की। एलिजाबेथ द्वारा इस दिशा में किया गया कार्य सराहनीय है। रैम्जे म्योर के शब्दों में, **'एलिजाबेथ की सरकार की यह सबसे भारी कुशलता थी कि उसने इन समस्याओं को हल करने के साधन निकाले जिनके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में नवीन समृद्धि एवं सन्तुष्टि आयी।'**

साहित्य एवं संगीत
(LITERATURE AND MUSIC)

एलिजाबेथ को साहित्य एवं संगीत में रुचि थी, अतः एलिजाबेथ-काल की महानतम् देन अंग्रेजी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट उन्नति है। इस उन्नति का क्षेत्र वैसे तो साहित्य के सभी क्षेत्रों में था, तथापि कविता एवं नाटकों के क्षेत्र में यह सर्वाधिक था। **परिणामतः इंग्लैण्ड एलिजाबेथ के शासनकाल में 'गाने वाले पक्षियों का घोंसला'[1] कहलाने लगा था।** चॉसर के पश्चात् अब तक इंग्लैण्ड में एक भी उल्लेखनीय कवि नहीं हुआ था। अकस्मात् 1579 ई. तथा उसके बाद के वर्षों में अनेक कवियों का पदार्पण हुआ। 1588 ई. के पश्चात् इसे और अधिक प्रोत्साहन मिला तथा यह साहित्यिक प्रगति 1603 ई. तक बनी रही। अधिकांश कवि उच्च कोटि के थे जिन्होंने इंग्लैण्ड को संगीतमय बना दिया।

कविता के क्षेत्र में **सर्वप्रथम रचना एडमण्ड स्पेन्सर** (Edmund Spencer) की शेफर्ड्स केलेन्डर (Shepherd's Calender) थी। नार्थ ने प्लूटार्क की जीवनी का अनुवाद किया। लिली ने 'यूफ्यूसेज' लिखकर गद्य में एक नवीन शैली को जन्म दिया। गीत-काव्य लेखकों ने, जिनमें सर फिलिप सिडनी प्रमुख था और जिनकी रचनाएं 'आर्केडिया' तथा 'डिफेन्स आफ पाएजी' हैं अंग्रेजी साहित्य के एक सुन्दर, सुसंस्कृत तथा सच्चे स्वरूप को जन्म दिया। सुप्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर एलिजाबेथ-युग की ही देन है। उनसे पूर्व अंग्रेजी नाटककार बरविज तथा विश्वविद्यालय की हास्यपूर्ण कृतियों के लेखक ग्रीन पील लॉज आदि लन्दन में अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ कर चुके थे। शेक्सपीयर ने अपना साहित्यक जीवन सुखान्त नाटक 'लव्स लेबर लौस्ट' की रचना करके प्रारम्भ किया था, एलिजाबेथ की मृत्यु से पूर्व ही 'हेमलेट' नाटक का अभिनय हो चुका था। 1590 ई. से 1600 ई. के मध्य 'डेटन' तथा 'डेनियल' के गीतकाव्यों की रचना हो चुकी थी। 1598 ई. में बेन जॉन्सन की रचना 'एवरी मैन इन हिज ह्यूमर' प्रकाशित हुई। गद्य लेखकों में 1594 ई. में हुकर की अमर कृति 'एक्लेशियास्टिकल पोलिटी' लिखी गयी। बेकन की सुस्पष्ट प्रज्ञा का परिचय 1597 ई. में प्रकाशित उसके निबन्धों में मिला। असाधारण रूप से उर्वर-समृद्ध युग की निधियों में से ये कुछ चुने गए नाम हैं। 1579 ई. में अंग्रेजी भाषा फ्रांस और स्पेन के महान् साहित्य की तुलना में निर्धन थी, विशेष रूप से इटली के साहित्य से तो अत्यन्त हीन थी, किन्तु एलिजाबेथ-युग से 1600 ई. तक अंग्रेजी भाषा का साहित्य किसी भी देश के साहित्य के सामने वैभवपूर्ण बन गया था। **एलिजाबेथकालीन साहित्य का वह ओज, मस्तिष्क की उर्वरता, आनन्दमय दृष्टिकोण, प्राचीन शृंखलाओं को नष्ट कर विचारों के नवीन जगत् में प्रवेश, आदि विशेषताएं साहित्यिक कृतियों के आधार हैं, जिन्हें तत्कालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।**

एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति
(FOREIGN POLICY OF ELIZABETH)

एलिजाबेथ को सिंहासन पर आसीन होते ही अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। उस समय इंग्लैण्ड पर विपत्ति के बादल मंडरा रहे थे। देश की आन्तरिक एवं बाह्य स्थिति शोचनीय थी। इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट एवं कैथोलिकों में संघर्ष हो रहा था तथा दूसरी ओर स्कॉटलैण्ड, स्पेन तथा फ्रांस, इंग्लैण्ड पर आधिपत्य स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे, किन्तु

1 'The poets were as prolific as they were innumerable; England had become a nest of singing birds.'

इन विपरीत **परिस्थितियों में भी एलिजाबेथ संयम एवं धैर्य से कार्य कर कठिनाई रूपी चट्टानों से प्रशासन रूपी जहाज को सफलतापूर्वक निकाल कर ले जाने में सफल हुई।** अपनी योग्यता, बुद्धिमत्ता, प्रशासनिक क्षमता द्वारा अपने समस्त संकटों पर विजय प्राप्त कर इंग्लैण्ड के सम्मान को उन्नति की चरम सीमा तक पहुंचाया।

देश में शान्ति स्थापित करने के साथ-साथ उसने अपनी दूरदर्शिता से इंग्लैण्ड के तीन शक्तिशाली वैदेशिक शत्रुओं का भिन्न-भिन्न तरीकों से सामना करने का निश्चय किया। **ये तीन शत्रु थे : स्कॉटलैण्ड, स्पेन तथा फ्रांस।** स्कॉटलैण्ड की रानी मेरी स्कॉट, हेनरी सप्तम की पुत्री मागरिट की पौत्री होने के कारण, स्वयं को इंग्लैण्ड के सिंहासन की अधिकारिणी मानती थी। मेरी स्कॉट का विवाह फ्रांस के राजकुमार से होने के कारण, वह भी स्वयं को इंग्लैण्ड का भावी शासक मानता था। इसके अतिरिक्त स्पेन जिसके राजा से मेरी ट्यूडर का विवाह हुआ था, इंग्लैण्ड पर अपना अधिकार समझता था। स्पेन प्रोटेस्टेण्ट धर्म विरोधी आन्दोलन का नेता होने के कारण भी एलिजाबेथ को पदच्युत करना चाहता था। उधर पोप ने भी एलिजाबेथ को वैध शासिका नहीं स्वीकार किया था, **एलिजाबेथ ने स्पेन व फ्रांस के राजाओं को यह आशा दिलायी कि वह उनसे विवाह कर लेगी।** स्पेन तथा फ्रांस के परस्पर शत्रु होने से एलिजाबेथ को अत्यधिक सहायता मिली। वे इंग्लैण्ड का समर्थन अपने प्रति चाहते थे। अतः प्रत्यक्ष रूप से एलिजाबेथ को अप्रसन्न करना नहीं चाहते थे। एलिजाबेथ ने कूटनीति से काम लेते हुए स्पेन तथा फ्रांस के आन्तरिक विद्रोह की अग्नि को गुप्त रूप से विद्रोहियों को सहायता कर प्रबल बनाया और उन्हें अपनी आन्तरिक समस्याएं सुलझाने में व्यस्त कर दिया। स्कॉटलैण्ड में भी विद्रोहियों की सहायता देकर वहां प्रोटेस्टेण्ट धर्म को विजय प्रदान कर, स्कॉटलैण्ड से किसी भी प्रकार के संकट को समाप्त करने में सफल हुई।

एलिजाबेथ, हेनरी सप्तम के समान शान्तिप्रिय वैदेशिक नीति को पसन्द करती थी। शान्तिप्रिय नीति अपनाने का कारण सिंहासनारोहण के समय रिक्त राजकोष तथा निर्बल सेना का होना भी था। वह जानती थी कि एडवर्ड षष्टम तथा मेरी ट्यूडर के शासनकाल में राजकोष रिक्त हो गया था। अतः ऐसी परिस्थितियों में किसी भी देश से युद्ध लड़ने में इंग्लैण्ड के सम्मान को चोट लगने की आशंका थी। रीज के अनुसार—**'उसका उद्देश्य था कि वह देखे कि धार्मिक समझौता देश में जड़ जमाने में कितना समय लेता है, क्योंकि वह अपने देशवासियों को सिखाना चाहती थी कि वे पहले अंग्रेज हैं और बाद में कैथोलिक, जिससे यदि युद्ध करना ही पड़े तो वे उसका सामना संगठित होकर करें।'**[1]

(अ) स्कॉटलैण्ड से सम्बन्ध (Relation with Scotland)—एलिजाबेथ की समकालीन स्कॉटलैण्ड की शासिका जेम्स पंचम की पुत्री मेरी (1542-1587 ई.) थी। मेरी स्वयं को इंग्लैण्ड की उत्तराधिकारिणी समझती थी, अतः एलिजाबेथ के स्कॉटलैण्ड से सम्बन्ध खराब होना स्वाभाविक ही था। मेरी स्कॉट कैथोलिक धर्म की अनुयायी थी, अतः उसे समस्त कैथोलिक देशों का समर्थन प्राप्त था। इंग्लैण्ड की कैथोलिक जनता की सद्भावना भी मेरी के साथ ही थी। मेरी का विवाह फ्रांस के राजा फ्रांसिस से हुआ था, अतः एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड के प्रति नीति निर्धारित करने में अत्यन्त सावधानी से कार्य करना पड़ा।

---

1 'Her object was to gain time while her religious settlement took root and her people learned to be Englishmen before they were Catholics; so that when war came, if come it must, they would stand united to meet it.' —*Reese*

एलिजाबेथ ने इस समय फ्रांस एवं स्पेन की पारस्परिक शत्रुता से लाभ उठाया। वह जानती थी कि स्पेन कभी भी यह पसन्द नहीं करेगा कि इंग्लैण्ड, फ्रांस व स्कॉटलैण्ड मिलकर एक हो जाएं, जो कि मेरी के इंग्लैण्ड की शासिका बनने पर सम्भव हो जाता है। एलिजाबेथ ने स्पेन के शासक फिलिप को यह भी लालच दिया कि वह उससे विवाह कर लेगी। अतः फिलिप उपर्युक्त दो कारणों से इंग्लैण्ड का समर्थक हो गया। एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड के प्रोटेस्टेण्ट वर्ग का भी समर्थन प्राप्त था।

जिस समय एलिजाबेथ इंग्लैण्ड की शासिका बनी थी, स्कॉटलैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक वर्ग में संघर्ष चल रहा था। कैथोलिक वर्ग की सहायता फ्रांस का शासक फ्रांसिस भी कर रहा था अतः एलिजाबेथ ने प्रोटेस्टेण्ट वर्ग की सहायता की व उसे विजय दिलायी। 1560 ई. में फ्रांसिस की मृत्यु होने से कैथोलिकों व मेरी की स्थिति स्कॉटलैण्ड में और भी खराब हो गयी। मेरी के अनेक विवाहों के कारण हुई बदनामी व प्रोटेस्टेण्टों द्वारा उसके विरुद्ध विद्रोह के कारण उसे स्कॉटलैण्ड से भागना पड़ा। मेरी भागकर इंग्लैण्ड पहुंची व एलिजाबेथ से सहायता मांगी, किन्तु एलिजाबेथ ने उसे बन्दी बना लिया। मेरी के स्कॉटलैण्ड से भाग जाने पर वहां प्रोटेस्टेण्ट धर्म की स्थापना हो गयी, अतः एलिजाबेथ को स्कॉटलैण्ड से किसी प्रकार का भय न रहा।

(ब) स्पेन से सम्बन्ध[1] (Relation with Spain)—जिस समय एलिजाबेथ इंग्लैण्ड की शासिका बनी तब इंग्लैण्ड व स्पेन दोनों के ही फ्रांस के शासक फ्रांसिस से तनावपूर्ण सम्बन्ध होने के कारण स्पेन व इंग्लैण्ड का परस्पर झुकाव था। **इसके अतिरिक्त एलिजाबेथ भी स्पेन के शासक को उससे विवाह कर लेने का प्रलोभन देकर स्पेन से मधुर सम्बन्ध बनाए हुई थी।** 1560 ई. में फ्रांसिस (मेरी स्कॉट का पति) की मृत्यु हो जाने पर स्पेन को इस बात का भय न रहा कि यदि मेरी स्कॉट इंग्लैण्ड की शासिका बन गयी तो फ्रांस, इंग्लैण्ड व स्कॉटलैण्ड मिल जाएंगे। अतः उसने एलिजाबेथ के विरोधियों को सहायता देनी प्रारम्भ कर दी, किन्तु फिर भी जब तक मेरी स्कॉट को मृत्यु-दण्ड (1587 ई.) नहीं दिया गया, स्पेन, इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने का साहस न कर सका, परन्तु 1587 ई. में एलिजाबेथ द्वारा मेरी स्कॉट को मृत्यु-दण्ड दिए जाने के कुछ समय पश्चात् ही स्पेन ने 1588 ई. में इंग्लैण्ड पर आक्रमण किया, किन्तु इंग्लैण्ड ने स्पेन के जहाजी बेड़े (Armada) को परास्त कर दिया।

(स) फ्रांस से सम्बन्ध (Relation with France)—फ्रांस से इंग्लैण्ड के एलिजाबेथ के शासन-काल में मधुर सम्बन्ध न थे। खराब सम्बन्धों का कारण इंग्लैण्ड का प्रोटेस्टेण्ट धर्म व फ्रांस का कैथोलिक धर्म का समर्थक होना था। इसके अतिरिक्त कैले को लेकर भी दोनों देशों में सम्बन्ध तनावपूर्ण थे। कैले फ्रांस में स्थित था। प्रारम्भ में इस पर इंग्लैण्ड का अधिकार था, किन्तु बाद में फ्रांस ने इस पर अधिकार कर लिया था। एलिजाबेथ कैले पर पुनः अधिकार करना चाहती थी।

इंग्लैण्ड को प्रारम्भ में स्पेन की भी सहानुभूति प्राप्त थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् स्पेन व फ्रांस में मित्रता हो गयी। इस मित्रता का कारण स्पेन के शासक फिलिप का फ्रांस की राजकुमारी से विवाह करना था। फ्रांस एवं स्पेन की मित्रता से एलिजाबेथ अत्यधिक चिन्तित

1 विस्तृत विवरण के लिए **'एलिजाबेथ और धर्म सुधार विरोधी आन्दोलन'** देखिए।

हुई व उसने फ्रांस से चाटूकैम्ब्रेसी (Chateoucambresis) की सन्धि कर ली, जिसके द्वारा दोनों देशों ने परस्पर आक्रमण न करने का वचन दिया।

फ्रांस में भी प्रोटेस्टेण्ट व कैथोलिक वर्ग में संघर्ष चल रहा था। प्रोटेस्टेण्ट इंग्लैण्ड से सहायता चाहते थे। इंग्लैण्ड ने उन्हें सहायता देने का वचन दिया, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही यह संघर्ष समाप्त हो गया। इसी समय रिफोल्डी नामक व्यक्ति ने इंग्लैण्ड में एलिजाबेथ के विरुद्ध स्पेन की सहायता से विद्रोह करने का प्रयत्न किया। इस पर इंग्लैण्ड व स्पेन के सम्बन्ध और भी तनावपूर्ण हो गए। फ्रांस भी स्पेन की निरन्तर बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत था। अतः इंग्लैण्ड और फ्रांस ने 1572 ई. में परस्पर समझौता किया जिसे **'ब्लोइस की सन्धि'** कहते हैं। इस सन्धि के द्वारा फ्रांस ने इंग्लैण्ड की स्कॉटलैण्ड के प्रति नीति का समर्थन किया, जबकि एलिजाबेथ ने कैले पर फ्रांस का अधिकार स्वीकार किया। **1574 ई. में हेनरी तृतीय फ्रांस का सम्राट बना। एलिजाबेथ ने उसे भी विवाह का प्रलोभन देकर फ्रांस से सम्बन्ध मधुर रखने का प्रयत्न किया।**

(द) आयरलैण्ड से सम्बन्ध (Relation with Ireland)—आयरलैण्ड प्रारम्भ से ही इंग्लैण्ड के लिए एक समस्या रहा है। एलिजाबेथ से पूर्व भी ट्यूडर शासकों ने आयरलैण्ड की समस्या सुलझाने का प्रयत्न किया, किन्तु यह समस्या और भी जटिल होती गई। मेरी ट्यूडर ने अपने जमींदारों को आयरलैंण्ड में बसाया तथा उसका राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया, किन्तु इस समस्या का समाधान करने में वह असफल रही। मेरी ट्यूडर के शासनकाल (1553-1588 ई.) में, पोप के अधिकारों के इंग्लैण्ड में पुनर्स्थापित हो जाने से आयरलैण्ड भी पूर्णतः कैथोलिक हो गया था। एलिजाबेथ के शासनकाल में इंग्लैण्ड में तो पुनः प्रोटेस्टेण्ट धर्म प्रबल हो गया, किन्तु आयरलैण्ड के निवासी कैथोलिक धर्म छोड़ने के लिए तैयार न थे। आयरलैण्ड की जनता पर एलिजाबेथ के धार्मिक समझौते का भी प्रभाव नहीं पड़ा तथा स्पेन का समर्थन कर, आयरलैण्ड ने एलिजाबेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र करने प्रारम्भ कर दिए।

1575 ई. में आयरलैण्ड के मारिस नामक एक सरदार ने पोप से सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, किन्तु एलिजाबेथ ने इन विद्रोहों का दमन कर दिया। मारिस ने 1579 ई. में मन्सटर प्रदेश में पुनः विद्रोह किया। इस बार एलिजाबेथ ने अत्यन्त कठोरतापूर्वक इस विद्रोह को कुचला। अनेक जमींदारों की भूमि पर अधिकार कर लिया गया। इसी समय आयरिश जनता के दुर्भाग्य से आयरलैण्ड में अकाल पड़ा जिससे आयरिश जनता को भयानक कष्ट सहने पड़े। इस विद्रोह तथा अकाल के कारण हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी।

इतने संकटों का सामना करने के पश्चात् भी आयरलैण्ड के निवासी कैथोलिक धर्म को त्यागने के लिए तैयार न थे। एलिजाबेथ जानती थी कि जब तक कैथोलिक धर्म आयरलैण्ड में जीवित है, विद्रोह की अग्नि शान्त नहीं हो सकेगी क्योंकि इंग्लैण्ड के दो प्रबल शत्रु स्पेन तथा फ्रांस आयरलैण्ड को भड़काते रहेंगे। स्पेन के जहाजी बेड़े को भी आयरिशों ने गुप्त रूप से सहायता दी थी। **इसी समय आयरलैण्ड में दो नेता ओ नील (O'Neill) तथा ओ डोनल (O'Donnell) उभरे।** इन दोनों नेताओं ने स्पेन की सहायता से आयरलैण्ड में इंग्लैण्ड के विरुद्ध वीभत्स विद्रोह किया। स्पेन ने आयरलैण्ड की सहायता के लिए 1597 ई. में दूसरा जहाजी बेड़ा भेजा, किन्तु वह भी समुद्री तूफान से नष्ट हो गया। 1598 ई. में स्पेन के शासक फिलिप की मृत्यु होने से आयरिशों को अत्यन्त निराशा हुई। एलिजाबेथ ने इस विद्रोह के

दमन के लिए 1599 ई. में लॉर्ड एसेक्स (Lord Essex) को आयरलैण्ड भेजा। कुछ स्थानों पर सफलता प्राप्त करने के पश्चात् वह असफल होकर इंग्लैण्ड लौटा। एलिजाबेथ ने लॉर्ड एसेक्स के स्थान पर माउण्ट ज्वाय को नियुक्त किया। माउण्ट ज्वाय (Mount Joy) ने अत्यन्त क्रूरता एवं अत्याचारपूर्ण ढंग से विद्रोह का दमन किया। यद्यपि माउण्ट ज्वाय ने विद्रोह को समाप्त कर दिया, किन्तु एलिजाबेथ द्वारा कराए गए अत्याचार को आयरलैण्ड के निवासी न भुला सके। वेस्ट ने लिखा है, **'देखने लायक बात यह है कि जब स्पेन निवासी, नई दुनिया के रहने वालों के साथ निर्मम व्यवहार करते थे तो अंग्रेज उसे नापसन्द करते थे, लेकिन आयरिश लोगों के साथ अंग्रेजों का व्यवहार उससे कम निर्दयतापूर्वक न था।'**[1]

औपनिवेशिक विस्तार
(COLONIAL EXPANSION)

एलिजाबेथ के शासनकाल में कुछ नाविकों ने अपनी साहसिक यात्राओं द्वारा इंग्लैण्ड को लाभान्वित किया। **इस साहसी नाविकों में से वाल्टर रैले ने अमरीका में अनेक उपनिवेश स्थापित किए तथा एलिजाबेथ के नाम पर वर्जीनिया (Verginia) नामक नगर की स्थापना की।** वाल्टर रैले (Ralegh) अमरीका से आलू तथा तम्बाकू के बीज लाया तथा आयरलैण्ड में इनकी खेती की गई। एक अन्य नाविक हाकिन्स (Hawkins) ने दासों का व्यापार प्रारम्भ किया। उसने अफ्रीका के हब्शियों को अमरीका में बेचा। इसके अतिरिक्त उसने न्यूफाउण्डलैण्ड की खोज कर उसे इंग्लैण्ड के उपनिवेश के रूप में बसाने में सफल हुआ। ड्रेक ने तीन वर्षों में सम्पूर्ण विश्व को घूमकर कीर्ति अर्जित की। इन उपनिवेशों से इंग्लैण्ड को अत्यन्त लाभ हुआ। **एलिजाबेथ ने इन नाविकों को पर्याप्त सहायता दी तथा 1600 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी (East India Company) की स्थापना कर साम्राज्यवादिता को प्रोत्साहन दिया।**

इस प्रकार ऐलिजाबेथ अपनी कुशल वैदेशिक नीति के परिणामस्वरूप अपने समस्त उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल रही। इंग्लैण्ड को अब स्पेन, फ्रांस तथा स्कॉटलैण्ड किसी से भी भयभीत होने की आवश्यकता न रही। उसने न केवल देश के सम्मान को यूरोप में उठाया वरन् स्पेनी जहाजी बेड़े को परास्त कर इंग्लैण्ड को **'समुद्र की रानी'** की पदवी दिलवायी। इंग्लैण्ड की भी यूरोप के शक्तिशाली राष्ट्रों में गिनती होने लगी। इतिहासकार ग्रीन के अनुसार, **'एलिजाबेथ की वैदेशिक नीति की सफलता, विस्तृत, आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि तथा राज्य की धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने इंग्लैण्ड को जहां एक नए समाज का ढांचा दिया वहां उसे राजनीतिक स्थिरता भी प्रदान की।'**[2]

मूल्यांकन
(EVALUATION)

इंग्लैण्ड के इतिहास में एलिजाबेथ का शासनकाल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। **एलिजाबेथ एक चतुर राजनीतिज्ञ, देशभक्त, प्रजावत्सल शासिका थी।** उसने अपनी बुद्धिमता से देश में व्याप्त

1 'It was remarkable, however, that Englishmen who were rightly most indignant about the Spanish treatment of the natives of the new world should themselves have been guilty to equal cruelty in the treatment of the natives of Ireland at their own door.' —*West*

2 'The success of her foreign policy, the wide-spread commercial and economic prosperity and the religious toleration of her majesty's reign brought about altogether new pattern of social and political stability in England.' —*Green*

अशान्ति एवं धार्मिक विद्वेष की समाप्त किया तथा वह भय, आतंक, निर्धनता को नष्ट करने में सफल हुई। उसने अपने योग्य मन्त्रियों के परामर्श से देश को शक्तिशाली एवं वैभवपूर्ण बनाया। उसने देश में अनेक सुधार कर देश में समृद्धि, कला-कौशल, साहित्य और उद्योग-धन्धों का विकास किया। उसने धैर्य से सव परिस्थितियों का निरीक्षण किया और अपनी शान्तिप्रिय नीति से अपने उद्देश्यों को पूर्ण किया। प्रत्येक क्षेत्र में उसके प्रशासनकाल में आश्चर्यजनक रूप से उन्नति हुई। **इसी कारण उसके प्रशासन काल को इंग्लैण्ड के इतिहास में स्वर्णकाल[1] कहा जाता है।**

एलिजाबेथ को वैदेशिक नीति के अन्तर्गत भी पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई, किन्तु इसके लिए उसने अपूर्व त्याग किया। अपने देश में शान्ति वनाए रखने हेतु उसने आजीवन विवाह नहीं किया। उसने अपने दीर्घकालीन शासन (1558-1603 ई.) में इंग्लैण्ड के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को उन्नति की चरम सीमा तक पहुंचाया। स्पेन के शक्तिशाली जहांजी बेड़े को परास्त करके उसने विश्व के समक्ष यह प्रमाणित किया कि इंग्लैण्ड की नौ-सेना विश्व में सबसे अधिक शक्तिशाली थी।

1603 ई. में एलिजाबेथ की मृत्यु हो गयी, जबकि वह प्रतिष्ठा के उच्चतम शिखर पर थी, सिंहासनारूढ़ होते समय आपत्तिग्रस्त और विभक्त राष्ट्र उसे मिला था, मरते समय एकता सम्पन्न विजयी राष्ट्र उसने छोड़ा। 1601 ई. में एलिजाबेथ ने संसद के समक्ष कहा था, **'मैं इसे गर्व की बात समझती हूं कि मैंने आपके स्नेह से (आप पर) शासन किया है।'**[2]

एलिजावेथ एक सच्ची ट्यूडर शासिका थी जो अपनी प्रजा के स्वभाव से, अपने मन्त्रियों से भी अधिक भली-भांति परिचित थी। वह सिद्धान्तहीन थी, किन्तु अत्यन्त सफल रही। वह रूखे स्वभाव की थी, किन्तु लोकप्रिय थी। अपने शासनकाल के अन्त में स्वदेश में शान्ति, विदेशों में सम्मान अर्जित करने तथा इंग्लैण्ड को भविष्य में विश्वासी तथा गर्वित अनुभव कराने में सफल रही।[3]

स्टुअर्ट काल (1603-1714)
(THE AGE OF STUARTS)

एलिज़ाबेथ की मृत्यु के पश्चात् स्कॉटलैण्ड का राजा जेम्स प्रथम (James I) के नाम से इंग्लैण्ड का राजा बना। जेम्स प्रथम का इंग्लैण्ड के सिंहासन पर आसीन होना एक उल्लेखनीय घटना थी, क्योंकि उससे इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट वंश का राज्य स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त जो देश दो शताब्दियों से एक-दूसरे के शत्रु थे, समस्त शत्रुता एवं पारस्परिक द्वेष को समाप्त कर एकता के अटूट बन्धन में बंध गए। सिंहासनारूढ़ होते ही उसने **'ग्रेट ब्रिटेन के शासक'** (King of Great Britain) की उपाधि धारण की, क्योंकि वह वेल्स, इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड का शासक बन गया था। जेम्स प्रथम अपनी परदादी की ओर से ट्यूडर वंश का था। ट्यूडरवंशीय हेनरी सप्तम ने अपनी पुत्री का विवाह स्कॉटलैण्ड के राजा जेम्स चतुर्थ के

1 'Elizabeth's days are spacious days when the country felt prouder, safer and more self-confident.' —*Renner*

2 'This I count the glory of my own crown that I have reigned with your loves.' —*Elizabeth*

3 'At the end came peace at home, a high reputation abroad, and —Elizabeth's greatest gift—a nation proud of itself and confident in its future.' —*Warner-Martern-Muir*

साथ किया था। उनका पुत्र जेम्स पंचम था। जेम्स प्रथम जेम्स पंचम की पुत्री मेरी स्कॉट का पुत्र था। **जेम्स प्रथम के पिता का नाम डार्नले (Darnley) था जो मेरी स्कॉट का द्वितीय पति था। अपने पिता की ओर से वह स्टुअर्ट वंश का था। इस प्रकार इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट वंश का राज्य प्रारम्भ हुआ, जो एक सौ ग्यारह वर्षों तक चलता रहा।**

जेम्स प्रथम (1603-1625)
(JAMES I)

जीवन परिचय (Life Sketch)

जेम्स प्रथम स्टुअर्ट वंश का प्रथम शासक था। 1566 ई. में उसका जन्म हुआ था। बाल्यकाल से ही वह अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि का था।[1] इंग्लैण्ड के राजाओं में जेम्स को सबसे विद्वान माना जाता है। उसने उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त की थी। गद्य-लेखन तथा कुशलतापूर्वक भाषण देने की उसमें क्षमता थी। वह अच्छी कविताएं भी लिख लेता था। **'ए काउण्टरब्लास्ट टू टोबेटो'** (A Counterblast to Tobacco) उसकी प्रमुख रचना थी। बौद्धिक कार्यों के अतिरिक्त उसे शारीरिक व्यायाम तथा शिकार का भी शौक था। वह व्यंग्य भी अत्यन्त तीखे करता था। 1621 ई. में जब लोक सभा का एक शिष्ट मण्डल राजा से मिलने आया तो उसने कहा **'इन राजदूतों के लिए स्टूल लाओ'**[2] क्योंकि वह जानता था कि वे उसके प्रतिस्पर्धी होने जा रहे थे। जब उसके पुत्र चार्ल्स ने एक मन्त्री पर महाभियोग चलाने की अनुमति मांगी तो जेम्स ने कहा, **"तुम अपने शासनकाल में जी भर कर अभियोग देखोगे।"**[3] जेम्स प्रथम एक भद्र पुरुष था तथा अपनी प्रजा से उसे स्नेह था। वह सदैव जनता के हित के लिए सोचता था। वह राजा के दैवीय सिद्धान्त का अनुयायी तथा धर्मशास्त्र का प्रकाण्ड पण्डित था। धार्मिक अत्याचार के युग में भी वह धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास करता था। युद्ध प्रधान काल में भी उसका सिद्धान्त तथा उद्देश्य शान्ति की स्थापना करना था।[4]

यद्यपि जेम्स प्रथम में उपर्युक्त गुण थे तथापि उसमें अनेक अवगुण भी थे, जिनके कारण वह अपनी जनता को प्रसन्न करने में सर्वथा असफल रहा। जेम्स प्रथम यद्यपि कुशाग्र बुद्धि का, किन्तु शारीरिक रूप से अत्यन्त कुरूप था। वह चेहरे से बदसूरत तथा बेडौल शरीर का था। वह अभिमानी, सुस्त तथा परिश्रम से बचने वाला व्यक्ति था। वह किसी भी प्रकार का कष्ट उठाना पसन्द नहीं करता था तथा किसी भी विषय में पूर्णरूप से सोचना उसके लिए सम्भव न था। वार्नर-मार्टिन के अनुसार, वह एक कायर व्यक्ति था तथा किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाता था। यद्यपि उसके विचार उच्च थे तथापि अनिश्चित थे। वह अत्यन्त दम्भी व्यक्ति था। **दरबारियों द्वारा प्रशंसा किए जाने पर प्रसन्न होता था।**[5] वह मनुष्यों को पहचानने में असफल रहा।[6] दैवीय सिद्धान्तों का अनुयायी होने के कारण जनता एवं संसद उसे पसन्द

---

1 'At the age of ten he was able, extempore', wrote a contemporary, to read a chapter out of the Bible out of Latin into French and out of French in English.'

2 'Bring Stools of the Ambassadors.' —*James I*

3 'You will live to have your bellyful of impeachments.' —*James I*

4 'In an age of war his motto was Beatipacifici (Blessed are the peacemakers) In an age of persecution he was in favour of toleration.' —*Warner-Marten-Muir*

5 'He might have large ideas, but they were vague and formless. He was prodigiously conceited, and to flattery of this 'Solomon of England', as he was called by his courtiers, was too fulsome for him.' —*Warner- Marten-Muir*

6 He could criticise a theory, but he could not judge a man.' —*Holdsworth*

नहीं करती थी। वह प्यूरिटन सम्प्रदाय तथा लोक सभा की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने में असफल रहा। जेम्स प्रथम ने अंग्रेजी जनता की रीतियों एवं मर्यादा का ध्यान न रखा। जेम्स प्रथम यद्यपि ज्ञानी था, किन्तु उसमें व्यावहारिकता का अभाव था, उसमें गुणों एवं अवगुणों का एक अभूतपूर्व सम्मिश्रण था। यही कारण है कि उसे फ्रांस के राजा ने 'शिक्षित मूर्ख' (The wisest fool in Christendom) कहा, जो सम्भवतः उसके चरित्र का सर्वोत्तम एवं उचित वर्णन प्रतीत होता है।

जेम्स प्रथम तथा संसद[1]
(JAMES I AND THE PARLIAMENT)

जेम्स प्रथम के राजसिंहासन पर आसीन होने पर इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट शासन की स्थापना हुई थी। स्टुअर्ट वंश के लगभग 111 वर्षों के शासनकाल की एक प्रमुख विशेषता राजा एवं संसद में निरन्तर संघर्ष का होना थी। **यद्यपि राजा तथा संसद में संघर्ष के लक्षण ट्यूडर-वंशीय शासिका एलिजाबेथ के समय में ही दृष्टिगोचर होने लगे थे, किन्तु परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण जेम्स प्रथम के शासनकाल से ही यह संघर्ष शक्तिशाली होता गया जिससे स्टुअर्ट शासकों को गम्भीर परिणामों का सामना करना पड़ा तथा चार्ल्स प्रथम को तो अपने प्राणों से ही हाथ धोना पड़ा।** राजा तथा संसद के मध्य हुए इस संघर्ष के अनेक कारण थे—

(अ) **परिवर्तित परिस्थिति** (Changed Conditions)—ट्यूडर शासकों ने इंग्लैण्ड में गृहयुद्ध को समाप्त करके शान्ति की स्थापना की थी अतः उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त था। **संसद ने भी ट्यूडरवंशीय राजाओं को किसी प्रकार से बाधा पहुंचाने का प्रयत्न नहीं किया, अपितु सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर अनेक नियम पारित किए जिससे संसद की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई, यद्यपि उसकी स्वतन्त्रता में कमी आयी थी।** ट्यूडर शासकों ने सभी महत्वपूर्ण कार्य संसद की सहमति से ही किए थे, यहां तक कि धर्म-सुधार जैसा महत्वपूर्ण परिवर्तन भी संसद की अनुमति से ही किया गया था, किन्तु ट्यूडर काल के अन्त से ही **राजा तथा संसद के मध्य पारस्परिक संघर्ष प्रारम्भ हो गया था, जिसका महारानी एलिजाबेथ ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक समाधान किया था, किन्तु जेम्स प्रथम ऐसा करने में असफल रहा।** 1630 ई. तक इंग्लैण्ड बाह्य संकटों से पूर्णतया मुक्त हो चुका था। रानी एलिज़ाबेथ के समय तक इंग्लैण्ड की जनता बाह्य आक्रमणों से बचने के लिए राजा का समर्थन करती थी, अतः वैदेशिक संकट के समक्ष संसद का प्रश्न तुच्छ था। 1588 ई. में स्पेन के ज़हाजी बेड़े को परास्त करने के पश्चात् इंग्लैण्ड को अन्य देशों से भय समाप्त हो गया था। **अतः जनता व संसद देश के आन्तरिक मामलों में अधिक रुचि लेने लगी थी।**

स्टुअर्ट वंश के शासन के समय तक राष्ट्रीय चरित्र का विकास तथा मध्य वर्ग का उत्थान भी इस समस्या का एक कारण था। एलिज़ाबेथ के शासनकाल में जनता ने अनुभव किया था कि साहित्य तथा कला का विकास, व्यापार तथा उद्योग में वृद्धि तथा वैदेशिक संकटों का किस प्रकार समाधान कर सकते थे। धर्म सुधार आन्दोलन (Reformation) एवं पुनर्जागरण (Renaissance) के कारण जनता में नवीन विचारधारा का प्रवाह तथा तर्क की भावना उत्पन्न हो गई थी। अतः किसी भी बात को प्रमाणों के अभाव में स्वीकार करने को जनता तैयार

1 माना जाता है कि राजा एडवर्ड प्रथम ने 1295 ई. में पहली बार संसद बुलाई थी। इसी कारण संसद की इस बैठक को 'मॉडल संसद' (Model Parliament) कहा जाता है।

न थी। जनता इस समय तक स्वावलम्बी, आत्मविश्वासी एवं स्वाभिमानी बन गयी थी, अतः वह शासन के कार्यों में रुचि लेने लगी थी। इस समय तक मध्य वर्ग का भी उदय हो चुका था। ट्यूडर शासकों ने मध्यवर्ग को उच्च पद प्रदान किए थे। मध्य वर्ग ने राजा को शासन कार्य में सहायता दी थी। इस प्रकार पारस्परिक सहयोग से देश को उन्नत किया गया। मध्य वर्गी अनेक व्यक्ति संसद के सदस्य भी थे। बुद्धि, धन तथा प्रशासन का ज्ञान मध्य वर्ग प्राप्त कर चुका था तथा पर्याप्त शक्तिशाली हो गया था। एलिजाबेथ के शासनकाल में ही मध्य वर्ग ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था, किन्तु एलिजाबेथ अत्यन्त कुशल होने के कारण स्थिति का सामना कर सकी, किन्तु जेम्स प्रथम द्वारा उनकी भावनाओं का आदर न किए जाने पर संसद ने उसे इस बात पर विवश करने का प्रयत्न किया था वह उन समस्त कार्यों पर यथोचित ध्यान दे जिन पर एलिजाबेथ के समय में ऐसा नहीं किया गया था। जेम्स प्रथम द्वारा विरोध करने पर संघर्ष होना स्वाभाविक था।

(ब) दैवीय अधिकार (Divine Rights)—जेम्स प्रथम अत्यन्त स्वाभिमानी शासक था तथा राजा के दैवीय सिद्धान्त का समर्थक था। जेम्स का विचार था कि राजा जनता द्वारा नहीं अपितु ईश्वर की इच्छा से चुना जाता है। ईश्वर उसे जनता पर शासन करने के लिए ही जन्म देता है। जनता द्वारा राजा की प्रत्येक आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए, क्योंकि यही उसका कर्तव्य है। राजा के विरुद्ध आवाज उठाना अथवा उसके किसी भी कार्य में बाधा डालना, ईश्वर के कार्य में विघ्न करने के समान है। राजा अपने किसी भी कार्य के लिए जनता के प्रति नहीं वरन् ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है। रॉबर्ट ने अपनी पुस्तक पेट्रिआर्का (Petriarcha) में लिखा है—**'स्वयं ईश्वर के समान राजाओं ने अपनी मौलिक तथा पैतृक शक्ति मानव समाज को सौंप रखी है। जैसा कि यह कहना कि ईश्वर क्या कर सकता है, नास्तिकता एवं ईश्वर निन्दा है वैसे ही प्रजा का इस बात पर झगड़ना कि राजा क्या कर सकता है, राजद्रोह है।'**[1]

जेम्स स्वयं को मानव कानून की सीमा से बाहर समझता था तथा कानून का पालन करना आवश्यक नहीं समझता था। **जेम्स ने 'ट्रू लॉ ऑफ द फ्री मोनार्क्रीज' (*True Law of the Free Monarchies*) नामक पुस्तक की रचना की,** जिसमें उसने लिखा कि एक अच्छा शासक समय की आवश्यकतानुसार शासन करता है, उसे किसी भी कार्य के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। यदि वह उचित शासन नहीं कर रहा है तथापि जनता को यह अधिकार नहीं है कि उसके विरुद्ध विद्रोह करे। जनता को राजा के प्रत्येक अत्याचार को यह सोचकर सहन करना चाहिए कि यह उनके पूर्वजों के द्वारा किए गए पाप का परिणाम है। जेम्स के अनुसार—

(i) राजा ही पृथ्वी पर ईश्वर की प्रतिमूर्ति है।[2]

(ii) राजा न केवल ईश्वर का प्रतिनिधि है, न केवल ईश्वर की गद्दी पर आसीन है, वरन् स्वयं ईश्वर के द्वारा ईश्वर कहलाते हैं।[3]

1 'Like God himself, kings have ceded part of their original and parental power to human and law, but as it is atheism and biasphemy of dispute what God can do, so it is seditious in a subject to dispute what a king may do in the light of his power.' —Robert

2 'Kings are the breathing images of God upon Earth.'

3 'Kings are not only God's lieutenants upon earth and not upon God's throne but even by himself are called Gods.'

(iii) **कोई भी मानवीय शक्ति किसी वैधानिक राजा को उसके अधिकारों से वंचित नहीं कर सकती।**[1]

(iv) **राजा, ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है, किसी सांसारिक शक्ति अथवा संस्था के प्रति नहीं।**[2]

इंग्लैण्ड की संसद के विचार इसके विपरीत थे। संसद के अनुसार राजा के अधिकार सीमित तथा नियमबद्ध थे। राजा वास्तविक निरंकुशता का पक्षपाती था। जबकि संसद उसके अधिकारों को सीमित करना चाहती थी। **एडम्स के अनुसार**, परम्परागत शक्तिशाली राजतन्त्र तथा संचित अधिकारों की समर्थक संसद के मध्य संघर्ष, जेम्स प्रथम के सिंहासनारूढ़ होते ही इंग्लैण्ड के इतिहास में तीव्रतम बन गया था।

(स) जेम्स का चरित्र (Character of James)—संसद और जेम्स प्रथम के मध्य हुए संघर्ष का एक प्रमुख कारण जेम्स प्रथम का चरित्र था। यद्यपि जेम्स एक योग्य, शिक्षित एवं विद्वान तथा मृदु स्वभाव वाला, दयालु, शान्ति में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था, किन्तु यह उसका दुर्भाग्य था कि जिन परिस्थितियों में वह शासक बना वह उसके योग्य न था। उसे अपने ज्ञान पर घमण्ड था तथा राजा एवं प्रजा के मध्य बहुत अधिक अन्तर मानता था। संसद से विचार-विमर्श करना उसे रुचिकर न लगता था। **इस प्रकार संकीर्ण विचारधारा होने के कारण वह सदैव संसद के विरोध का सामना करता रहा।** जेम्स यद्यपि एक उच्च कोटि का वक्ता था, किन्तु उसकी अधिक बोलने की आदत उसे संकट में डाल देती थी क्योंकि जिस समय किसी राजा को चुप रहना चाहिए वह अपनी आदत से विवश होकर ऐसा नहीं कर पाता था। उसे प्रत्येक बात की खाल निकालना पसन्द था। उसे किसी के द्वारा उसके सम्मुख तर्क अथवा आलोचना करना सहन न था। इसके अतिरिक्त उसे व्यक्ति की पहचान न थी।

(द) जेम्स के मन्त्री (Ministers of James)—जेम्स एक स्वाभिमानी व्यक्ति था, किन्तु उसे चापलूसी पसन्द थी। वह ऐसे व्यक्तियों को उच्च पद प्रदान करता जो उसकी खुशामद करते थे। **'इंग्लैण्ड का सोलोमन' कहने पर जेम्स उन्हें मन्त्री तथा सलाहकार तक का पद प्रदान करता था।** इंग्लैण्ड की जनता इस कार्य को पसन्द नहीं करती थी। ऐसे व्यक्ति अपनी इच्छानुसार कार्य करते थे तथा संसद की उन्हें चिन्ता न थी। संसद इस प्रकार के कार्यों एवं इन मन्त्रियों तथा राजा का विरोध करती थी।

(य) जेम्स की वैदेशिक नीति (Foreign Policy of James)—जेम्स प्रथम अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से करके दोनों देशों के मध्य व्याप्त वैमनस्यता को समाप्त करना चाहता है। स्पेन से मित्रता करने के उद्देश्य से ही जेम्स ने महान् नाविक रैले को मृत्यु-दण्ड दिया था। इंग्लैण्ड की संसद इस प्रकार की नीति की विरोधी थी। **जेम्स प्रथम द्वारा स्पेन को प्रसन्न करने के असीमित प्रयत्नों के पश्चात् भी वह स्पेन को प्रसन्न करने में असफल रहा और उसने अपनी राजकुमारी का विवाह चार्ल्स से करने के लिए इन्कार कर दिया।** जेम्स ने अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह फ्रांस की राजकुमारी से किया तथा स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, किन्तु जेम्स को इस युद्ध में सफलता प्राप्त न हो सकी। संसद, जेम्स के इन कार्यों की विरोधी थी।

1 'That no human power could deprive a legitimate prince of his right.'
2 'King is not responsible to any worldly power or institutions, he is responsible to God only.'

(र) संसद के विशेष अधिकार (Privileges of Parliament)—इंग्लैण्ड के संसद सदस्यों को कुछ विशेषाधिकार ट्यूडर काल से पूर्व ही प्राप्त थे। इन अधिकारों में चुनाव सम्बन्धी झगड़ों को दूर करना तथा भाषण देना था। इसके अतिरिक्त संसद सदस्यों को बन्दी भी नहीं बनाया जा सकता था। **जेम्स प्रथम इंग्लैण्ड में निरंकुश शासन की स्थापना करना चाहता था तथा संसद के इन विशेषाधिकारों के रहते ऐसा करना सम्भव न था अतः उसने संसद के इन विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया।** जेम्स का मत था कि संसद को ये विशिष्ट अधिकार राजा द्वारा ही प्रदान किए गए थे तथा राजा ही वापस ले रहा है तो इसमें अनुचित बात क्या है। संसद द्वारा राजा के इस कार्य का घोर विरोध किया गया।

(ल) धार्मिक नीति (Religious Policy)—इंग्लैण्ड में जेम्स प्रथम के शासनकाल में ईसाई धर्म के तीन प्रमुख सम्प्रदाय एंग्लिकन, प्यूरिटन एवं कैथोलिक थे। संसद में प्यूरिटन सदस्य बड़ी संख्या में थे। **जेम्स प्यूरिटन सम्प्रदाय का विरोधी था, अतः प्यूरिटन सदस्य उसके विरोधी हो गए।** इसके साथ ही कैथोलिक जो कि जेम्स प्रथम के शासन बनने पर सुविधाओं की अपेक्षा कर रहे थे, किन्तु जेम्स के ऐसा न करने पर कैथोलिक भी उसके विरोधी हो गए। इस प्रकार प्यूरिटन एवं कैथालिक संसद सदस्यों ने राजा का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया।

(व) आर्थिक स्थिति (Economic Condition)—जेम्स प्रथम अत्यन्त अपव्ययी व्यक्ति था। अपव्ययी होने के कारण राजकोष रिक्त हो गया। संसद उसे धन देते समय शासन में सुधार की मांग करती थी। अतः जेम्स संसद के अधिवेशन को भंग कर स्वयं कर लगाने लगा। इसके अतिरिक्त जेम्स ने धन लेकर अनेक व्यक्तियों को अनुचित प्रकार से ठेके तथा पदवियां प्रदान कीं। संसद ने राजा से ऐसा न करने का अनुरोध किया, किन्तु जेम्स ने संसद की परवाह न की। **जेम्स ट्यूडर काल में प्राप्त राजा के विशेषाधिकारों (Prerogatives) से लाभ उठाते हुए अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर रहा था।** इन विशेषाधिकारों के द्वारा राजा कर लगा सकता था, धर्म के क्षेत्र में हस्तक्षेप कर सकता था, किसी भी सम्पत्ति पर अधिकार कर सकता था। संसद द्वारा राजा की इस प्रकार की नीति का विरोध करना अस्वाभाविक न था।

उपर्युक्त समस्त कारणों से जेम्स एवं संसद में विवाद प्रारम्भ हुआ जिसका गम्भीर परिणाम उसके पुत्र चार्ल्स प्रथम को सहना पड़ा। **संसद ने प्रारम्भ में यह स्पष्ट कर दिया था कि अब इन कार्यों के सुधार का समय आ गया था जिन पर एलिजाबेथ के समय में यथोचित ध्यान नहीं दिया गया था।**[1] प्रथम अधिवेशन के समय ही संसद ने घोषणा कर दी थी कि अब उन कार्यों को सुधारने, ठीक करने तथा उचित अधिकारों को प्राप्त करने का समय आ गया था जिनकी अब तक उपेक्षा की गयी थी। जेम्स का कथन था, **"गद्दी पर बैठते समय मुझे संसद मिली और मुझे उसके सदस्यों की बात सहन करनी पड़ी।"**[2] यद्यपि यह सत्य है कि जेम्स को गद्दी पर आसीन होते समय संसद सम्बन्धी संकटों का सामना करना पड़ा, किन्तु जेम्स ने इस स्थिति को सुधारने के स्थान पर और भी गम्भीर बना दिया। यदि जेम्स सूझबूझ एवं कुशलता का परिचय देता तो सम्भवतः राजा एवं संसद का संघर्ष इतना गम्भीर न होता और न ही इसके इतने व्यापक प्रभाव हुए होते।

1 'The time had come, as the House of Commons declared in the very first year of James' reign, to 'redress, restore, and rectify' those actions which in the reign of Elizabeth they had 'passed over."' —*Warner- Marten-Muir*

2 'I found Parliament when I came here, so I had to put up with them.' —*James I*

जेम्सकालीन चार संसद
(FOUR PARLIAMENTS OF JAMES TENURE)

अपने बाईस वर्षों के शासन काल में जेम्स ने चार बार संसद बुलायी, परन्तु प्रत्येक संसद से उसका झगड़ा हुआ और अन्तिम संसद के अतिरिक्त **प्रथम तीन को उसने भंग कर दिया :**

(अ) **प्रथम संसद** (First Parliament)—जेम्स ने 1604 ई. में प्रथम संसद बुलायी। इस संसद ने लगभग सात वर्षों तक कार्य किया तथा इसके अनेक अधिवेशन हुए। जेम्स प्रथम का इस संसद से 1607 ई. में झगड़ा प्रारम्भ हुआ। 1607 ई. से पूर्व संसद के दो अधिवेशन शान्तिपूर्वक हो चुके थे। **संसद ने जेम्स प्रथम को प्रथम अधिवेशन में टनेज तथा पॉउण्डेज का अधिकार दिया।** 1606 ई. में संसद ने कैथोलिकों के प्रति कठोर अधिनियम पारित किए।

इसी समय एक झगड़ा उत्पन्न हो गया। राजा के न्यायालय ने गाडविन (Godwin) नामक संसद के एक सदस्य के चुनाव को इस आधार पर रद्द कर दिया कि जेम्स ने अपनी एक घोषणा में यह कहा था कि कानून की अवज्ञा करने वाले चुनाव में भाग नहीं ले सकेंगे। इस पर लोक सभा ने आपत्ति की कि विवादग्रस्त चुनावों का निर्णय करना उनका कर्तव्य है। जेम्स ने इसका विरोध किया और कहा कि लोकसभा के अधिकारों का स्रोत राजकीय घोषणाएं हैं और उन्हें स्वयं राजा के प्रचलित नियमों के विरुद्ध नहीं समझना चाहिए। इस समस्या से एक गम्भीर प्रश्न उत्पन्न हो गया कि संसद के अधिकारों का स्रोत कहां है? तथा राजा संसद द्वारा पारित नियमों को भंग कर सकता है अथवा नहीं। **अन्त में राजा को संसद की बात स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा।** यह घटना संसद के प्रथम अधिवेशन के समय की है।

इससे भी महत्वपूर्ण समस्या 1606 ई. में उत्पन्न हुई। यह समस्या अर्थसम्बन्धी थी। राजकीय आय का एक साधन तो राजकीय भूमि तथा सामन्तवादी करों से तथा दूसरा स्रोत आयात कर था, जिसे **टनेज तथा पाउण्डेज** (Tonnage and Poundage) कहा जाता था। टनेज का अर्थ प्रत्येक टन मदिरा से आय तथा पाउण्डेज का अभिप्राय बिक्री के लिए लायी गयी वस्तु पर पौंड के हिसाब से कर था। सिंहासनारूढ़ होने के कुछ समय पश्चात् कुछ ही समय में जेम्स ने टनेज तथा पाउण्डेज कर के अतिरिक्त भी कुछ कर लगा दिए। जान बेट (John Bate) नामक एक व्यापारी ने किशमिश पर लगे अतिरिक्त कर को देने में आपत्ति की। न्यायाधीशों का निर्णय भी यही था कि बेट को यह कर देना होगा क्योंकि बन्दरगाह राजा के हैं तथा राजा का अधिकार है कि वह देश के व्यापार की स्वेच्छानुसार व्यवस्था करे। इसके परिणामस्वरूप **राजा की आज्ञा से अनेक अन्य वस्तुओं पर भी कर लगाया गया जिनका संसद निरन्तर विरोध करती रही।** 1610 ई. के पश्चात् लोकसभा की यह धारणा निश्चित हो गयी कि व्यापार की अभिवृद्धि का परिणाम यह होगा कि आर्थिक व्यवस्था पर से लोक सभा का अधिकार क्षीण होता जाएगा। 1610 ई. में इस आर्थिक झगड़े का निर्णय करने के उद्देश्य से राजा ने **'महान् समझौता'** (Great Contract) का प्रस्ताव किया जिसके अनुसार निश्चित धनराशि के बदले में राजा के सामन्तवादी अधिकारों को लोकसभा खरीद ले और सामन्तवादी कर पचास वर्षों के लिए समाप्त कर दिए जाएं, किन्तु यह आर्थिक समझौता कभी भी कार्यान्वित न हो सका। अतः यह विवाद पूर्ववत् बना रहा। जेम्स इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड को संयुक्त करना चाहता था, किन्तु संसद इसके लिए तैयार न हुई।

उपर्युक्त समस्त कारणों से जेम्स और संसद के मध्य सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न होती गयी और अन्त में 1611 ई. में जेम्स ने इस संसद को भंग कर दिया।

(ब) द्वितीय संसद (Second Parliament)—1611 ई. में प्रथम संसद को भंग करने के पश्चात् तीन वर्षों तक संसद के बिना ही जेम्स प्रथम ने कार्य किया, किन्तु आर्थिक आवश्यकताओं के कारण उसने 1614 ई. में दूसरी संसद बुलायी। जेम्स का विचार था कि द्वितीय संसद उदार होगी, किन्तु यह प्रथम संसद से भी उग्र थी। इस संसद ने राजा की नीतियों की कटु आलोचना तथा जेम्स द्वारा स्कॉटलैण्ड के निवासियों को दी गई सुविधाओं की घोर निन्दा की। राजा ने दो माह पश्चात् ही संसद को भंग कर दिया। इंग्लैण्ड के इतिहास में इस संसद को **'बांझ संसद'** (Addled Parliament) कहा जाता है क्योंकि इसके द्वारा एक भी नियम पारित नहीं किया गया।

(स) तृतीय संसद (Third Parliament)—जेम्स ने सात वर्षों के उपरान्त 1621 ई. में तृतीय संसद बुलायी। इस संसद को आमन्त्रित करने का मुख्य उद्देश्य आर्थिक ही था। 1618 ई. में तीस वर्षीय युद्ध प्रारम्भ हो चुका था तथा इंग्लैण्ड जेम्स के दामाद फ्रेडरिक की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहा था। इस संसद का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। **इस संसद ने दो अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किए। प्रथम** कार्य राजा के मन्त्रियों तथा अधिकारों पर लॉर्ड सभा के समक्ष अभियोग लगाने की प्रथा को पुनर्जीवित किया। अनेक पदाधिकारियों पर दोषारोपण किया गया। **लॉर्ड चान्सलर बेकन** (Francis Bacon), जो राजा का मन्त्री लार्ड चान्सलर तथा एक न्यायाधीश था, पर भी रिश्वत लेने का दोषारोपण किया गया। बेकन ने स्वीकार किया कि वह उपहार स्वीकार करता था, किन्तु इन उपहारों से उसके निर्णय अथवा फैसलों में कोई अन्तर नहीं आता था! यद्यपि बेकन के विरुद्ध रिश्वत का आरोप प्रमाणित न हो सका तथापि उसे चान्सलर पद से हटा दिया गया। इस आघात से कुछ समय पश्चात् ही बेकन की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार दोषारोपण से संसद राजा के अत्यन्त विश्वासपात्र मन्त्री को अपने रास्ते से हटाने में सफल हो गयी। संसद ने इतनी कुशलतापूर्वक यह कार्य किया कि जेम्स प्रथम भी हस्तक्षेप कर उसे बचा न सका।

तृतीय संसद का द्वितीय प्रमुख कार्य भाषण की स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। लोक सभा स्पेन तथा कैथोलिकों का विरोध करती थी। इसी समय जेम्स अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी से करने का प्रयत्न कर रहा था। संसद ने इसका विरोध किया तथा जेम्स से निवेदन किया कि वह कैथोलिक सम्प्रदाय की राजकुमारी से चार्ल्स का विवाह न करे। इस प्रार्थना-पत्र को जेम्स ने अस्वीकृत कर दिया। संसद ने इस आदेश की परवाह न की तथा दिसम्बर की एक रात्रि को मोमबत्ती के प्रकाश में अपना भाषण स्वतन्त्रता सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किया। जेम्स द्वारा इस संसद की पुस्तिका से उन पृष्ठों को फाड़ दिया गया जिन पर यह प्रस्ताव लिखे गए थे। इस घटना का अत्यधिक महत्व है क्योंकि इसने यह प्रमाणित किया कि इंग्लैण्ड में कम से कम संसद एक स्थान ऐसा था जहां एक अंग्रेज अपनी बात कह सके।[1]

(द) चतुर्थ संसद (Fourth Parliament)—1624 ई. में जेम्स प्रथम ने चतुर्थ और अन्तिम संसद बुलायी। इस संसद के साथ जेम्स के सम्बन्ध अपेक्षाकृत मधुर रहे, क्योंकि चार्ल्स

1. 'But, nevertheless, the House of Commons had shown there was one place in the kingdom where an Englishman might say what he liked.'

—*Warner Marten-Muir*

का विवाह स्पेन की राजकुमारी के साथ नहीं हो सका तथा स्पेन के साथ युद्ध भी प्रारम्भ हो गया था, किन्तु **संसद ने जेम्स को उसकी इच्छानुसार धन प्रदान नहीं किया तथा उसके कोषाध्यक्ष मिडिलसेक्स पर अभियोग चलाया। इस मामले में चार्ल्स तथा ड्यूक ऑफ बकिंघम ने भी संसद को सहयोग दिया।** चार्ल्स तथा बकिंघम द्वारा मिडिलसेक्स का विरोध करने का कारण यह था कि मिडिलसेक्स स्पेन से युद्ध करने का विरोधी था जबकि राजकुमार चार्ल्स ऐसा चाहता था। मिडिलसेक्स पर गबन करने का आरोप प्रमाणित हुआ तथा जेम्स उसे बचाने के लिए हस्तक्षेप करने में असफल रहा।

1525 ई. में जेम्स प्रथम की मृत्यु हो गयी उसके साथ ही चतुर्थ संसद समाप्त हो गयी।

इस प्रकार 1603 से 1625 ई. के जेम्स प्रथम के शासनकाल के दौरान निरन्तर संसद एवं राजा में संघर्ष चलता रहा, किन्तु फिर भी लोकसभा अनेक अधिकार प्राप्त करने में सफल हो गयी। राजा के मन्त्रियों पर अभियोग चलाना, संसद की अनुमति के अभाव में कर लगाने पर विरोध करना तथा अपने अधिकारों की रक्षा करना, उसकी इस समय की प्रमुख उपलब्धियां थीं। जेम्स संसद को पसन्द नहीं करता था तथा धन की आवश्यकता होने पर ही बुलाता था। जेम्स का कहना था कि मुझे आश्चर्य होता है कि मेरे पूर्वजों ने ऐसी संस्था को क्यों बनने दिया होगा।[1] जेम्स की संसद के प्रति इसी धारणा ने इस संघर्ष को अत्यधिक गम्भीर बना दिया था।

चार्ल्स प्रथम (1625-1649)
(CHARLES I)

जीवन परिचय (Life Sketch)

जेम्स प्रथम की 1625 ई. में मृत्यु होने के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र चार्ल्स इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुआ। चार्ल्स प्रथम की शासन करने में रुचि न थी। उसे अध्ययन, एकान्तवास में आनन्द प्राप्त होता था तथा उसकी प्रवृत्ति धर्म की ओर थी। **यदि उसके बड़े भाई हेनरी की मृत्यु न हुई होती तो वह राजा के स्थान पर आर्कबिशप बना होता।** अपने पिता जेम्स प्रथम के समान चार्ल्स भी दैवीय अधिकारों का समर्थक एवं अनुयायी था। चार्ल्स प्रथम का विवाह, फ्रांस की राजकुमारी हेनरीटा मेरिया से हुआ था। मेरिया अत्यन्त अस्थिर तथा षड्यन्त्रकारी स्वभाव की थी, किन्तु चार्ल्स पर उसका काफी प्रभाव था जिसे उसने कभी किसी अच्छे कार्य के लिए प्रयोग नहीं किया।[2]

चार्ल्स प्रथम एवं संसद
(CHARLES I AND THE PARLIAMENT)

चार्ल्स प्रथम जिस समय इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ, तब इंग्लैण्ड की स्थिति अत्यन्त गम्भीर थी। जेम्स प्रथम का मन्त्री बकिंघम (Buckingham) चार्ल्स प्रथम के समय में भी मन्त्री था तथा उसके प्रभाव में महत्वपूर्ण वृद्धि हो चुकी थी। **यूरोप में तीस वर्षीय युद्ध (Thirty Year's War) चल रहा था। इंग्लैण्ड का राजकोष रिक्त था तथा संसद अपने अधिकारों की ओर जागरूक थी।** चार्ल्स प्रथम की पत्नी का भी प्रभाव प्रशासनिक कार्यों मे

1 "I am surprised that my ancestors should ever have premitted such an institution to have come into existence.' —Jame

2 'His wife, Henrietta Maria of France, was frivoious and intriguing and her great influence over him was by no means exercised for good.' —T. F. Ttuo

बढ़ने लगा था। चार्ल्स प्रथम की पत्नी मेरिया (Maria) कैथोलिक थी। अतः इंग्लैण्ड की जनता उसे सन्देहात्मक दृष्टि से देखती थी। मेरिया का प्रयास कैथोलिकों को अधिक सुविधाएं प्रदान करना था, किन्तु जनता तथा संसद इसका विरोध करती थी। **धीरे-धीरे चार्ल्स प्रथम तथा संसद के सम्बन्ध खराब होते गए।**

(अ) प्रथम संसद (First Parliament)—चार्ल्स प्रथम ने जून, 1625 ई. में अपनी प्रथम संसद बुलाई, किन्तु इससे पूर्व ही वह स्पेन के साथ युद्ध, जो कि जेम्स प्रथम के समय से चल रहा था, को जारी रखने के आदेश दे चुका था। इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने डेनमार्क के राजा को तीस हजार पौंड की सहायता दी ताकि वह स्पेन के विरुद्ध युद्ध जारी रख सके। स्पेन से युद्ध जारी रखने के लिए उसे धन की आवश्यकता थी, इसी कारण संसद को आमन्त्रित किया था।

संसद ने सर्वप्रथम चार्ल्स को राजा बनने पर बधाई दी। स्पेन से युद्ध चल रहा था अतः राजा को धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, किन्तु चार्ल्स ने स्पष्ट रूप से यह बात संसद से नहीं कही तथा संसद भी इस सम्बन्ध में उदासीन ही रही। स्थिति का उचित ज्ञान न होने के कारण संसद ने कुल मांगी गयी धनराशि का सातवां भाग ही चार्ल्स को स्वीकृत किया तथा पाउण्डेज एवं टनेज़ कर वसूली का अधिकार भी राजा को केवल एक वर्ष के लिए ही प्रदान किया गया। संसद ने कैथोलिकों के साथ सहानुभूति प्रकट न करने की भी राजा से अपेक्षा की।

प्रथम संसद द्वारा चार्ल्स को अंत्यन्त अल्प राशि प्रदान किया जाना संसद की भूल थी। चार्ल्स को स्पेन के युद्ध के कारण धन की आवश्यकता थी। कैडिज (Cadiz) के बन्दरगाह पर इंग्लैण्ड के जहाजी बेड़े की पराजय का वास्तविक कारण अव्यवस्था के साथ-साथ धनाभाव भी था, यद्यपि इसका समस्त उत्तरदायित्व चार्ल्स के मन्त्री बकिंघम पर थोपा गया था। इसके अतिरिक्त **'टनेज एवं पाउण्डेज'** कर की वसूली का अधिकार चार्ल्स प्रथम से पूर्व राजाओं को सम्पूर्ण जीवन के लिए प्राप्त होता था, क्योंकि धनाभाव में किसी भी राज्य में प्रशासन करना सम्भव नहीं होता। शासन का साधारण व्यय चार्ल्स प्रथम के समय तक काफी बढ़ चुका था तथा नयी दुनिया से भारी मात्रा में चांदी आने के कारण पौण्ड का मूल्य घट गया था जिससे राजा की आय में कमी आयी थी।

संसद द्वारा राजा को अत्यन्त अल्पराशि प्रदान किए जाने के कारण चार्ल्स का संसद अधिवेशन बुलाने का उद्देश्य विफल हो गया। इसी समय बकिंघम का संसद द्वारा घोर विरोध किए जाने पर चार्ल्स को अवसर प्राप्त हुआ और उसने संसद को भंग कर दिया।

(ब) द्वितीय संसद (Second Parliament)—1626 ई. में चार्ल्स ने द्वितीय संसद आमन्त्रित की। चार्ल्स ने लोकसभा में प्यूरिटनों को प्रसन्न करने के उद्देश्य से कैथोलिकों के विरुद्ध नियमों का कठोरतापूर्वक पालन करना प्रारम्भ किया, यद्यपि चार्ल्स का यह कार्य उसके द्वारा अपने विवाह के समय फ्रांस को दिए गए वचन के विरुद्ध था, किन्तु धन प्राप्त करने के लिए चार्ल्स प्रथम सब कुछ करने की कैडिज की घटना की जांच होनी चाहिए, किन्तु चार्ल्स इसके लिए तैयार न था, उसका कहना था कि अपने मन्त्रियों की योग्यता अथवा अयोग्यता का निर्णायक वह स्वयं है न कि संसद।[1] चार्ल्स के इस प्रकार के विचारों से संसद की अपने प्रस्ताव की पूर्ति की भावना में तीव्रता आ गयी। सर जॉन इलियट ने बकिंघम की कटु आलोचना की। जॉन इलियट के कैडिज की असफलता के सम्बन्ध में कहा—**'हम अपमानित**

1 'I would not have the House to question my servant.' —Charles I

हो गए, हमारे जहाज जलमग्न हो गए, आदमी मारे गए और यह सब तलवार से अथवा दुश्मन के द्वारा या परिस्थितियों के कारण नहीं अपितु उनके कारण हुआ जिन पर हम विश्वास करते थे।'[1] चार्ल्स प्रथम संसद के उपर्युक्त व्यवहार से अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा अपने मन्त्री बकिंघम को बचाने के लिए उसने संसद को भंग कर दिया। इस प्रकार द्वितीय संसद ने फरवरी, 1626 से जून, 1626 ई. तक कार्य किया।

(स) तृतीय संसद (Third Parliament)—चार्ल्स प्रथम ने अपनी द्वितीय संसद 1626 ई. में भंग की थी तथा आगामी दो वर्षों तक उसने संसद को आमन्त्रित नहीं किया। उसने धन प्राप्त करने के लिए अन्य तरीकों को अपनाया। **चार्ल्स को धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, अतः उसने संसद की अनुमति के बिना भी टनेज एवं पाउण्डेज कर लगाया तथा कठोरतापूर्वक वसूल किया।** उसने ऋण लेना भी प्रारम्भ किया तथा जब कुछ पादरियों ने ऋण देने से इन्कार किया तो चार्ल्स ने उन्हें बन्दी बना लिया। न्यायाधीशों ने भी चार्ल्स का साथ दिया। चार्ल्स प्रथम ने शिपमनी (Shipmoney) नामक कर भी लगाया जो तट पर रहने वालों के साथ-साथ अन्य स्थानों में रहने वालों से भी वसूल किया गया। इसके अतिरिक्त चार्ल्स प्रथम ने काउण्टीज में सेना बलपूर्वक बनायी तथा सैनिकों को साधारण जनता के घरों में रखा जिससे जनता को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ा। सैनिकों की सुविधा के लिए उसने सैनिक कानून (Martial Law) भी लागू किया।

उपर्युक्त समस्त साधनों का प्रयोग करने के पश्चात् भी चार्ल्स की आर्थिक समस्या समाप्त न हुई, अतः उसने विवश होकर 1628 ई. में पुनः संसद को आमन्त्रित किया। चार्ल्स ने इस संसद के समक्ष अपने प्रथम भाषण में कठोरता का परिचय दिया। चार्ल्स ने कहा, **'यदि संसद ने उसकी आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं किया तो वह उन समस्त तरीकों का प्रयोग करेगा जो ईश्वर ने उसे प्रदान किए हैं। यह धमकी नहीं है क्योंकि मैं बराबर वालों के अतिरिक्त किसी को धमकी देना अपना अपमान समझता हूं।'**[2] संसद ने चार्ल्स के इस कठोर व्यवहार को पसन्द नहीं किया। इसके अतिरिक्त इस संसद ने चार्ल्स प्रथम के दरबार में अनेक उच्च पदों पर आर्मीनियम व्यक्तियों को देखा। **आर्मीनियन कैथोलिक थे, अतः प्यूरिटन इनसे घृणा करते थे।** इसके अतिरिक्त जनता भी आर्मीनियन व्यक्तियों की विरोधी थी, अतः संसद ने **पिम** (Pym) के नेतृत्व में राजा का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने एक अधिकार-पत्र (Petition of Right) राजा को प्रस्तुत किया तथा निर्णय लिया कि जब तक राजा इस अधिकार-पत्र को स्वीकार न कर ले वे राजा को एक पेनी धन भी स्वीकृत नहीं करेंगे। इस अधिकार-पत्र में निम्नलिखित मांगें थीं :

(क) शान्ति काल में सैनिक कानून न लगाया जाए।
(ख) वे समस्त कर अथवा ऋण जो संसद की अनुमति के बिना लिए गए हैं अवैध हैं।
(ग) राजा किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाए बन्दी न बनाए।
(घ) सेना के सिपाहियों के रखने की व्यवस्था राजा साधारण जनता के घरों में नहीं, अपितु कहीं अन्यत्र करे।

1 'Our honour ruined, our ships sunk, our men perished, not by the sword, not by the enemy, not by the Chance, by those we trust.' —*Sir John Elliott*

2 'If the Parliament will not supply his wants, he will use all means which God had put into his hands—Take not this as a threat, for I scorn to threaten any but my equals.' —*Charles I*

चार्ल्स ने प्रारम्भ में इस अधिकार-पत्र को स्वीकार न किया, किन्तु जब उसने यह अनुभव किया कि संसद उसे तब धन न देगी जब तक वह इसे स्वीकार नहीं करेगा, तो विवश होकर उसने इस अधिकार-पत्र को स्वीकार किया। यद्यपि भविष्य में चार्ल्स ने इस अधिकार-पत्र की धाराओं का उल्लंघन किया तथापि इंग्लैण्ड के इतिहास में इसका अत्यधिक महत्व है क्योंकि राजा जॉन द्वितीय के महास्वतन्त्रता पत्र के पश्चात् संसद तथा जनता के अधिकारों की रक्षा इसी अधिकार-पत्र से हो सकी। इसके अतिरिक्त इसने जनता तथा संसद को अपने अधिकारों में वृद्धि करने का प्रोत्साहन तथा राजा की स्वेच्छाचारिता पर अंकुश लगाया।

अधिकार-पत्र को स्वीकार करने के पश्चात् भी संसद चार्ल्स से प्रसन्न न हुई। संसद ने अब चार्ल्स के मन्त्री बकिंघम की निन्दा करना प्रारम्भ किया, इसके अतिरिक्त चार्ल्स के दरबार में आर्मीनियनों को लेकर भी संसद ने चार्ल्स का विरोध किया। चार्ल्स को संसद के इस व्यवहार से क्षुब्धता हुई, कि वह संसद को जितने अधिकार देता जाता था संसद की मांगें भी उतनी ही बढ़ती जाती थीं। इसी समय जॉन फाल्टन नामक व्यक्ति के द्वारा बकिंघम की हत्या कर दी गयी। चार्ल्स को इस घटना से अत्यधिक दुःख हुआ। चार्ल्स का विचार था कि बकिंघम के कारण ही संसद उसका विरोध करती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् सम्बन्धों में सुधार होगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि संसद ने अब वेण्टवर्थ का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। वेण्टवर्थ (Wentworth) प्रारम्भ में संसद का नेता था तथा चार्ल्स का विरोधी था, परन्तु राजा द्वारा अधिकार-पत्र स्वीकार किए जाने के पश्चात् वह राजा का समर्थक हो गया। वह निरन्तर राजा का विरोध करने के पक्ष में न था। राजा का समर्थक बन जाने के कारण संसद उसका विरोध करती थी।

चार्ल्स प्रथम संसद का निरन्तर विरोध करने की नीति से परेशान हो चुका था, अतः उसने मार्च, 1629 ई. में तृतीय संसद को भी भंग कर दिया, किन्तु भंग होने से पूर्व संसद के अध्यक्ष को बलपूर्वक रोककर तीन प्रस्ताव पारित किए गए—धार्मिक नियमों में परिवर्तन करने वाला, संसद द्वारा अस्वीकृत करों को देने वाला तथा राजा को टनेज एवं पाउण्डेज कर लगाने में सहायता देने वाला, देशद्रोही समझा जाएगा। तृतीय संसद का यह अन्तिम कार्य था क्योंकि इसके बाद संसद भंग हो गयी तथा संसद के नेता सर जॉन इलियट को बन्दी बना लिया गया जहां उसकी मृत्यु हो गयी।

चार्ल्स प्रथम एवं संसद के मध्य संघर्ष के गम्भीर परिणाम हुए। **इंग्लैण्ड की आन्तरिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी तथा विदेशों में इंग्लैण्ड के सम्मान को आघात पहुंचा।** विदेशी व्यापार में भी कमी आयी।

चार्ल्स ने 1640 ई. में लघु संसद आमन्त्रित की, जिसने 13 अप्रैल, 1640 से 5 मई, 1640 ई. तक कार्य किया। शक्तिशाली सेना तैयार करने के उद्देश्य से चार्ल्स प्रथम ने यह संसद बुलायी थी। इस संसद ने उसे अपेक्षित धन न दिया अतः शीघ्र ही चार्ल्स ने इसे भंग कर दिया।

दीर्घ संसद
(LONG PARLIAMENT)

चार्ल्स प्रथम की अदूरदर्शिता के कारण इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड में युद्ध हुआ तथा चार्ल्स प्रथम को अत्यधिक अपमान सहना पड़ा। **रिपन के स्थान पर हुई सन्धि के द्वारा चार्ल्स को 850 पौंड प्रतिदिन स्कॉट सेना को देना था, अतः उसकी आर्थिक आवश्यकताओं में और भी वृद्धि हो गयी।** इसी मध्य उसने राजकीय टकसाल से एक लाख तीस हजार पौंड का सोना

जब्त कर लिया जिससे स्थिति और भी गम्भीर हो गयी क्योंकि राजा के ऐसा करने से व्यापार को अत्यधिक हानि हुई तथा व्यापारी अपनी हुण्डियां सकार करने में असफल रहे। राजा के इस कार्य से व्यापारी वर्ग भी उसका विरोधी हो गया। स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए तथा आर्थिक संकटों के कारण **चार्ल्स प्रथम को 3 नवम्बर, 1640 ई. को विवश होकर पुनः संसद आमन्त्रित करनी पड़ी। इस संसद ने लगभग 20 वर्षों तक कार्य किया, अतः इसे दीर्घ संसद के नाम से जाना जाता है।** इस संसद के आमन्त्रित किए जाने का इंग्लैण्ड के इतिहास में विशिष्ट महत्व है। इस संसद का प्रमुख उद्देश्य सांविधानिक समस्या को स्थायी रूप से दूर करना तथा राजा एवं संसद के सम्बन्धों की स्पष्ट रूपरेखा तैयार करना था। इस दीर्घ संसद में अधिकांश ग्रामीण सदस्य, उग्र प्रोटेस्टेण्ट तथा एंग्लिकन थे, किन्तु प्रारम्भ में सबने मिलकर कार्य किया। **इस संसद का नेतृत्व पिम (Pym) द्वारा किया गया।** हैम्पडन भी एक प्रसिद्ध नेता था जिसने शिपमनी का घोर विरोध किया था। इसके अतिरिक्त एक अन्य प्रसिद्ध नेता ओलीवर क्रामवैल था जो प्रारम्भ में गम्भीर एवं शान्त-चित्त व्यक्ति था, किन्तु कुछ समय पश्चात् वह अत्यन्त उग्र हो गया था तथा उसकी प्रसिद्धि में भी पर्याप्त वृद्धि हुई थी।

(अ) दीर्घ संसद के कार्य (Works of Long Parliament)—दीर्घकालीन संसद ने सर्वप्रथम स्कॉटलैण्ड की सेना को आवश्यक धन देकर सन्तुष्ट किया। इसके पश्चात् इस संसद ने अपनी स्थिति को दृढ़ करने के प्रयत्न किए तथा अनेक नियम पारित किए जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण **त्रिवर्षीय नियम (Triennial Act) था।** इस नियम के द्वारा राजा को बाध्य किया गया कि वह प्रत्येक तीन वर्ष बाद संसद का अधिवेशन अवश्य आमन्त्रित करेगा। यदि राजा ऐसा नहीं करेगा तो स्वतः ही संसद के चुनाव हो जाया करेंगे। **इस संसद ने यह भी निर्णय लिया कि संसद को राजा स्वेच्छा से भंग नहीं कर सकेगा।** संसद भंग करने के लिए संसद से परामर्श करना आवश्यक है। राजा इस नियम को पारित नहीं करना चाहता था क्योंकि ऐसा करने से उसकी शक्तियों पर आघात होता था, किन्तु उसे विवश होकर इसे स्वीकार करना पड़ा, क्योंकि व्यापारी उसी अवस्था में ऋण देने को तैयार थे। जब उन्हें विश्वास हो कि संसद भंग न होगी। राजा पर उन्हें विश्वास न था। चार्ल्स प्रथम को धन की आवश्यकता थी। अतः वह विवश हो गया। **संसद ने राजा द्वारा टनेज पर पाउण्डेज पर लगाया जाना भी अनुचित घोषित किया तथा बलपूर्वक ऋण अथवा उपहार लेने पर भी प्रतिबन्ध लगाया।** इसके अतिरिक्त इस संसद ने विशेष न्यायालयों कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर, कौंसिल ऑफ नॉर्थ तथा कोर्ट ऑफ हाई कमीशन को समाप्त किया एवं हैम्पडन तथा डारनेल के मुकदमों में न्यायाधीशों के निर्णय को रद्द कर दिया। इस प्रकार शिपमनी कर भी समाप्त हो गया।

इस प्रकार उपर्युक्त नियमों द्वारा राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाकर संसद की इच्छानुसार शासन को बनाया गया। दीर्घकालीन संसद की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि यही थी क्योंकि भविष्य में यह बातें इंग्लैण्ड के संविधान के स्वरूप की आधारशिला बनीं।

(ब) वेण्टवर्थ तथा संसद (Wentworth and Parliament)—अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के पश्चात् संसद ने राजा के परामर्शदाताओं को दण्डित करने का प्रयत्न किया। वेण्टवर्थ को चार्ल्स ने आयरलैण्ड का डिप्टी लॉर्ड बनाया था तथा **'अर्ल ऑफ स्टैफोर्ड'** की उपाधि से विभूषित किया था। संसद इस तथ्य से परिचित थी कि उसी के परामर्श से शिपमनी कर तथा अनेक अन्य कर लगे थे, किन्तु कोई प्रमाण उसके विरुद्ध न था। वेण्टवर्थ पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया, किन्तु यह प्रमाणित न हो सका। आयरलैण्ड के शासन के विषय

में भी वेण्टवर्थ का घोर विरोध हुआ। **उस पर आरोप लगाया गया कि उसने राजा को यह परामर्श दिया था कि वह आयरलैण्ड की सेना का प्रयोग इंग्लैण्ड की जनता को भयाक्रान्त रखने के लिए करे। इस आरोप को भी संसद कानून की दृष्टि से उसके विरुद्ध प्रमाणित न कर सकी।**

जब संसद इस प्रकार से वेण्टवर्थ को दण्डित न कर सकी तो उसने महाभियोग का विचार त्यागकर सीधे मृत्यु-दण्ड अर्थात् बिना सुनवाई के सजा दिए जाने का मार्ग अपनाया जो हेनरी अष्टम को अत्यन्त प्रिय था। संसद ने **'बिल ऑफ अटैण्डर'** (Bill of Attaander) पारित किया जिसका आशय था कि वेण्टवर्थ अपराधी है, अतः उसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिए। राजा इस पर हस्ताक्षर करने को तैयार न था, किन्तु उसके राजप्रासाद को क्रुद्ध जनसमूह ने घेर लिया तथा उसकी रानी पर अभियोग चलाने की मांग की। चार्ल्स ने विवश होकर बिशपों, न्यायाधीशों तथा स्वयं वेण्टवर्थ के परामर्श पर हस्ताक्षर कर दिए यद्यपि इस कार्य के लिए वह जीवन भर पछताता रहा। वेण्टवर्थ ने अत्यन्त वीरता का परिचय दिया।[1] इस प्रकार 12 मई, 1641 ई. को उसे मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। इस दण्ड में निश्चित रूप से प्रतिशोध की भावना विद्यमान थी तथा जनता में इसकी प्रतिक्रिया भी हुई, अतः लौड को बन्दीगृह में ही डाल दिया गया तथा बाद में 1645 ई. में उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया।

(स) धार्मिक मतभेद (Religious Difference)—यद्यपि संसद ने चार्ल्स प्रथम की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता पर रोक लगाकर उसके शासन के दोषों को समाप्त करने में सफलता प्राप्त की थी, किन्तु धार्मिक विषय पर स्वयं संसद में ही मतभेद था क्योंकि संसद में एंग्लिकन, प्रैस्बीटैरियन, प्यूरिटन आदि विभिन्न मतों के व्यक्ति थे। अतः चर्च में सुधार करना अत्यधिक दुरूह कार्य था। संसद में 1641 ई. में ही **'रूट और ब्रांच बिल'** (Root and Branch Bill) रखा गया, जिसका उद्देश्य तत्कालीन चर्च में आमूल परिवर्तन करना तथा गिरजाघरों में से बिशपों का निष्कासित करना था। इस बिल का, एडवर्ड हाइड (जो बाद में लार्ड क्लेरेण्डन के नाम से प्रसिद्ध हुआ) तथा लार्ड फॉकलैण्ड ने घोर विरोध किया तथा वह अत्यन्त अल्प बहुमत से पारित किया जा सका। संसद में इस बिल के समर्थक एवं विरोधी लगभग समान थे। इस गम्भीर वातावरण में संसद की सभा कुछ समय के लिए विसर्जित हो गयी।

(द) आयरलैण्ड में विद्रोह (Revolt in Ireland)—आयरलैण्ड में अक्टूबर, 1641 ई. में अकस्मात् विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित हो उठी। आयरिश कैथोलिकों ने लगभग पांच हजार प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों की हत्या कर दी। इंग्लैण्ड में इस घटना का अतिरंजित वर्णन जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया। विद्रोहियों का कथन था कि वे राजा के संकेत पर ऐसा कर रहे हैं। राजा के विद्रोहियों ने इस बात को सत्य माना। अतः संसद के समक्ष यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि इस विद्रोह का दमन करने के लिए राजा पर विश्वास किया जाए अथवा नहीं। इस प्रश्न पर संसद में गम्भीर मतभेद उत्पन्न हो गया।

(य) महान् विरोध-पत्र (Grand Remonstrance)—1641 ई. में संसद ने एक महान् विरोध-पत्र तैयार किया। इसमें चार्ल्स प्रथम द्वारा किए गए अत्याचारों एवं अनियमितताओं का वर्णन था। **संसद के अधिवेशन में पिम (Pym) ने इसे प्रस्तुत किया।** यह राजा के प्रति स्पष्टतः अविश्वास था। इसके अतिरिक्त इसमें एक सुधार योजना भी थी। इसमें प्रस्ताव किया

1 **'I thank God', Wentworth said, when he took off his doublet at the scaffold, 'I am not afraid of death, nor daunted with any discouragement rising from my fears, but do as cheerfully put off my doublet at this time as ever I did when I went to bed.'**

गया कि लोकसभा द्वारा अनुमोदित मन्त्रियों को ही रखा जाए तथा धार्मिक परिवर्तन के लिए प्रेस्बीटेरियन पादरियों की एक सभा की व्यवस्था की जाए। इस प्रकार की व्यवस्था कार्यान्वित होने पर राजा पद की प्रतिष्ठा धूलधूसरित हो जाती तथा पादरियों का पद भी निन्दनीय हो जाता। **इस महान् विरोध-पत्र को लेकर संसद में दो दल हो गए, एक पिम तथा हैम्पडन के नेतृत्व में था जो कि राजा का विरोधी था दूसरा राजा के समर्थन में, हाइड तथा फॉकलैण्ड के नेतृत्व में।** दोनों दलों में दीर्घकालीन वाद-विवाद हुआ तथा अन्त में पिम तथा हैम्पडन की ग्यारह मतों से विजय हो गयी। इस कानून की प्रतिलिपियां जनता में वितरित की गयीं। चार्ल्स प्रथम इससे अत्यधिक क्रोधित हुआ, जनता में भी इसे पढ़कर दो दल बनने लगे, अतः गृह-युद्ध का आभास होने लगा था।

इसी समय राजा के विरोधी दल ने एक '**सेना विधेयक**' (Milita Bill) प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य राजा के हाथों से जल एवं थल सेना का आधिपत्य छीनकर संसद द्वारा नियुक्त अधिकारियों को सौंपना था, किन्तु राजा ने इस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। रैम्जे म्योर के शब्दों में इस प्रकार का प्रयास एक सांविधानिक क्रान्ति थी।

4 जनवरी, 1642 ई. को चार्ल्स को सूचना प्राप्त हुई कि संसद उसकी रानी पर अभियोग लगाने वाली है, अतः चार्ल्स चार सौ सैनिकों के साथ संसद के पांच सदस्यों पिम, हैम्पडन, हैजलेरिंग, हौल्डा तथा स्ट्रोड को बन्दी बनाने संसद भवन पहुंच गया। चार्ल्स का उद्देश्य इन सदस्यों को बन्दी बनाकर इन पर महाभियोग लगाने का था, किन्तु पांचों सदस्य पहले ही वहां से भाग गए थे। राजा के इस कार्य से संसद सदस्यों में यह भय व्याप्त हो गया कि उन्हें किसी भी समय बन्दी बनाया जा सकता है। जनता की भावनाओं ने उग्र रूप लेना प्रारम्भ कर दिया था। अतः चार्ल्स जनवरी, 1642 ई. में लन्दन छोड़कर नौटिंघम चला गया तथा उसकी रानी फ्रांस चली गयी। इस समय संसद ने '**उन्नीस प्रस्ताव**' पारित किए। इन उन्नीस प्रस्तावों (nineteen propositions) में राजा से प्रार्थना की गयी थी कि वह वैधानिक रूप से शासन करे। इस वैधानिक रूप को उन्नीस प्रस्तावों के द्वारा दर्शाया गया था। इन प्रस्तावों से वह नाममात्र का राजा रह जाता, अतः चार्ल्स ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, और इस प्रकार गृह-युद्ध होना निश्चित हो गया।

दीर्घ संसद का महत्व (Significance of Long Parliament)—दीर्घकालीन संसद द्वारा किए गए कार्यों का इंग्लैण्ड के इतिहास में विशेष महत्व है क्योंकि इसके द्वारा इंग्लैण्ड के संविधान को आधुनिक रूप के निकट लाया गया। यह स्पष्ट कर दिया गया था कि मन्त्री संसद के प्रति उत्तरदायी होंगे। लोकसभा देश की आर्थिक व्यवस्था का प्रबन्ध करेगी तथा कानून एवं न्यायालय ही देश की सर्वोच्च संस्था होगी। रैम्जे म्योर के शब्दों में, '**यह परम्पराओं को पुनः स्थापित किए जाने से कहीं अधिक था। यह एक सम्पूर्ण संविधान था। इतिहास में संसदात्मक सीमित राजतन्त्र की शायद पहली बार परिभाषा की गई।**'[1] यद्यपि राजा के हाथों में अभी भी पर्याप्त शक्ति व्याप्त थी, किन्तु अब स्वेच्छा से अत्याचार या मनमानी नहीं कर सकता था क्योंकि संसद का उस पर नियन्त्रण होता था।

1 'But it was far more than a mere re-establishment of precedents. It was a whole constitution, the first clear definition of a limited parliamentary monarchy in history.' —*Ramsay Muir*

गृह-युद्ध
(THE CIVIL WAR : 1642-49)

इंग्लैण्ड में 1642 ई. से 1649 ई. तक सप्तवर्षीय गृह-युद्ध हुआ। इस गृह-युद्ध का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इसने राजा की स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता और विशेष रूप से उसके दैवीय अधिकारों (Divine rights) को समाप्त किया। **इंग्लैण्ड की जनता ने इस गृह-युद्ध के द्वारा यह प्रमाणित किया कि राज्य में जनता एवं संसद का भी महत्व होता है। यदि जनता को उसके आवश्यक अधिकार प्रदान नहीं किए जाएंगे तो जनता राजा के विरुद्ध आवाज उठा सकती है।** वर्तमान समय में यह बात कोई असाधारण नहीं लगती, किन्तु 17वीं शताब्दी में निश्चित रूप से इसका महत्व था। इस विद्रोह का बीजारोपण **जेम्स प्रथम** के समय (1603-25 ई.) में हो गया था तथा चार्ल्स प्रथम ने अपनी गलतियों से इस पौधे को सींचा, परिणामस्वरूप शीघ्र ही उसे इसका फल भी भुगतना पड़ा। इंग्लैण्ड में हुए इस गृह युद्ध का कोई एक कारण नहीं था, अपितु विभिन्न कारणों ने संयुक्त होकर इसको जन्म दिया, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि गृह-युद्ध का सर्वाधिक उत्तरदायित्व स्टुअर्ट राजाओं और विशेष रूप से चार्ल्स प्रथम पर है। **गृह-युद्ध के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे :**

गृह-युद्ध के कारण
(CAUSES OF THE CIVIL WAR)

इस गृह-युद्ध के शुरू होने के कारण निम्नलिखित थे :

(क) जेम्स प्रथम की नीति (Policy of James I)—जेम्स प्रथम एक निरंकुश एवं राजा के दैवीय अधिकारों में विश्वास करने वाला व्यक्ति था। उसने अपनी नीति से राजा और संसद के मध्य संघर्ष को जन्म दिया। संसद अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी थी अतः संघर्ष निरन्तर बढ़ता गया। जेम्स प्रथम के शासनकाल में प्रारम्भ हुए इस संघर्ष ने गृह-युद्ध की आधारशिला रख दी थी। चार्ल्स के समय में संसद की यह भावना और भी प्रबल हो गयी।

(ख) चार्ल्स प्रथम की निरंकुशता (Despotism of Charles I)—चार्ल्स प्रथम को राजा और संसद के मध्य अधिकारों के लिए संघर्ष अपने पिता से आनुवंशिक रूप से मिला था। चार्ल्स प्रथम ने कुशलतापूर्वक इस स्थिति को सुलझाने के स्थान पर निरंकुशता का सहारा लिया। **चार्ल्स स्वेच्छाचारी, अपव्ययी एवं लोभी था, धन प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार था।** इसके अतिरिक्त अपने पिता के समान दैवीय अधिकारों का अनुयायी होने के कारण उसे जनता तथा संसद द्वारा हस्तक्षेप पसन्द न था। उसने अपने ग्यारह-वर्षीय व्यक्तिगत शासन में अत्यधिक निरंकुशतापूर्वक शासन किया। अतः जनता उसकी विरोधी हो गयी।

(ग) चार्ल्स द्वारा धन-प्राप्ति के असांविधानिक तरीके अपनाना (Illegal Methods of Collecting Money adopted by Charles)—गृह-युद्ध का एक प्रमुख कारण चार्ल्स प्रथम की आर्थिक नीति था। चार्ल्स प्रथम को स्पेन एवं फ्रांस से युद्ध होने के कारण धन की अत्यधिक आवश्यकता थी। जब संसद ने चार्ल्स को उसकी आवश्यकतानुसार धन प्रदान न किया तो चार्ल्स ने धन प्राप्त करने के लिए असांविधानिक तरीके अपनाए। राजा ने अनेक कर लगाए, धन लेकर ठेके दिए तथा आर्थिक दण्ड दिए। संसद ने चार्ल्स के इन कार्यों का विरोध किया क्योंकि कर लगाने का अधिकार संसद को प्राप्त था। चार्ल्स ने बलपूर्वक संसद को दबाना चाहा परिणाम गृह-युद्ध के रूप में सामने आया।

(घ) राजा के सलाहकार (Advisers of Charles I)—संसद एवं जनता राजा के कुछ परामर्शदाताओं से अत्यधिक घृणा करती थी। **संसद किसी प्रकार से बकिंघम से तो मुक्त हो गयी, किन्तु तत्पश्चात् राजा के दो सलाहकार वेण्टवर्थ (Wentworth) तथा लौड (Laud) के कारण जनता को अत्यधिक कष्ट सहने पड़े।** चार्ल्स ने अपना ग्यारह-वर्षीय शासन इन दो परामर्शदाताओं की सहायता से किया था, जिसमें जनता विभिन्न प्रकार से प्रताड़ित हुई थी। अतः जनता एवं संसद इन परामर्शदाताओं से मुक्ति पाना चाहती थी तथा अपने उद्देश्य में सफल भी हुई। वेण्टवर्थ को मृत्यु-दण्ड तथा लौड को बन्दीगृह में डाल दिया गया। राजा ने यद्यपि विवश होकर अपने सलाहकारों को दण्डित किया, किन्तु वह इसका प्रतिशोध संसद से लेना चाहता था।

(ङ) चार्ल्स प्रथम की धार्मिक नीति (Religious Policy of Charles I)—चार्ल्स प्रथम की धार्मिक नीति भी असफल रही। चार्ल्स प्रथम अपनी रानी के कैथोलिक होने के कारण कैथोलिकों को विशेष सुविधाएं प्रदान करता था। जनता इस कार्य का विरोध करती थी। इसके अतिरिक्त राजा एंग्लिकन चर्च को प्रजा पर थोपना चाहता था, अतः संसद इसका विरोध करती थी क्योंकि संसद में प्यूरिटन तथा प्रेस्बीटेरियन तथा अन्य मतावलम्बी व्यक्ति भी थे। धार्मिक नीति के कारण ही स्कॉटलैण्ड से युद्ध भी हुआ तथा इंग्लैण्ड को अपमान सहना पड़ा था।

(च) गृह-युद्ध के सामाजिक कारण (Social Causes of civil War)—1642 ई. में इंग्लैण्ड में हुए गृह-युद्ध का एक सामाजिक पहलू भी था। इस युद्ध में राजा के समर्थक अधिकांशतः उच्च कोटि के व्यापारी थे अथवा बड़े-बड़े जमींदार, जो आमोद-प्रमोद में रुचि रखने वाले व आराम पसन्द थे। इसके विपरीत संसद का नेतृत्व करने वाले कर्मठ किसान अथवा व्यापारी थे। 1590 ई. **तक राजा व कुलीन वर्ग के स्वार्थ एक समान थे, अतः कुलीन वर्ग ने राजा का समर्थन किया,** किन्तु स्टुअर्ट वंश के प्रथम दो शासकों के समय में कुलीन वर्ग को राजा के समर्थन की पहले के समान आवश्यकता न रही। कुलीन वर्ग अब यह अनुभव करने लगा था कि राजा व उसकी नीति, उनके प्रगति के मार्ग में बाधक है। राजा प्रमुख सामन्त के समान था तथा अपनी व्यवस्था को बनाए रखना चाहता था, परन्तु स्टुअर्टकालीन संसद में अधिकांश नए युग के व्यक्ति थे, जो बीते हुए सामन्ती युग के सिद्धान्तों में विश्वास नहीं करते थे। अतः इन स्टुअर्टकालीन संसद द्वारा राजा तथा उसके 'दैवीय अधिकारों' के सिद्धान्तों का विरोध किया गया जो गृह-युद्ध के रूप में प्रस्फुटित हुआ।

(छ) दीर्घ संसद एवं चार्ल्स के मध्य संघर्ष (Struggle between Charles I and Long Parliament)—धन की आवश्यकता से विवश होकर चार्ल्स ने 1640 ई. में दीर्घ संसद को आमन्त्रित किया था। इस संसद ने कार्य भार ग्रहण करते ही राजा की शक्ति पर रोक लगाने के लिए अनेक नियम पारित किए तथा चार्ल्स प्रथम को विवश होकर इन पर हस्ताक्षर करने पड़े। यद्यपि राजा ने इन पर हस्ताक्षर करने में अपमान अनुभव किया था, किन्तु संसद को प्रसन्न करने के उद्देश्य से उसने हस्ताक्षर किए तथा अपने अनेक शुभचिन्तकों एवं परामर्शदाताओं को भी इसी कारण बलि चढ़ा दिया, किन्तु वह तब भी संसद को प्रसन्न करने में असफल रहा। संसद राजा की शक्ति को पूर्णतः समाप्त करने तथा उसको अपमानित करना चाहती थी। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण **'महान् विरोध पत्र'** है जिसको लेकर संसद में भी दो

दल बन गए, किन्तु राजा के विरोधी दल ने ग्यारह वोटों के बहुमत से उसे पारित किया तथा उसकी प्रतिलिपियां जनता में वितरित करके अपमानित किया।

चार्ल्स ने अनुभव किया कि संसद के विरोध की कोई सीमा न थी, अतः उसने संसद के पांच प्रमुख नेताओं को बन्दी बनाने का प्रयत्न किया ताकि उन पर देशद्रोह का अभियोग लगाकर मुकदमा चला सके, किन्तु पांचों सदस्य भाग निकलने में सफल हो गए। इससे चार्ल्स की अत्यधिक बदनामी हुई तथा संसद सदस्यों को यह भय व्याप्त हो गया कि उन्हें किसी भी समय बन्दी बनाया जा सकता है। अतः वे राजा से युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। संसद सदस्यों ने अनुभव किया कि सेना का राजा के अधीन रहना उसके लिए संकट उत्पन्न कर सकता है। अतः उन्होंने एक सैन्य नियम (Militia Bill) पारित किया जिसके द्वारा सेना संसद के अधीन हो जाती। चार्ल्स प्रथम ने इस पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया तथा इस समय मतभेद इतना गम्भीर हो गया कि राजा लन्दन छोड़कर नौटिंघम चला गया।

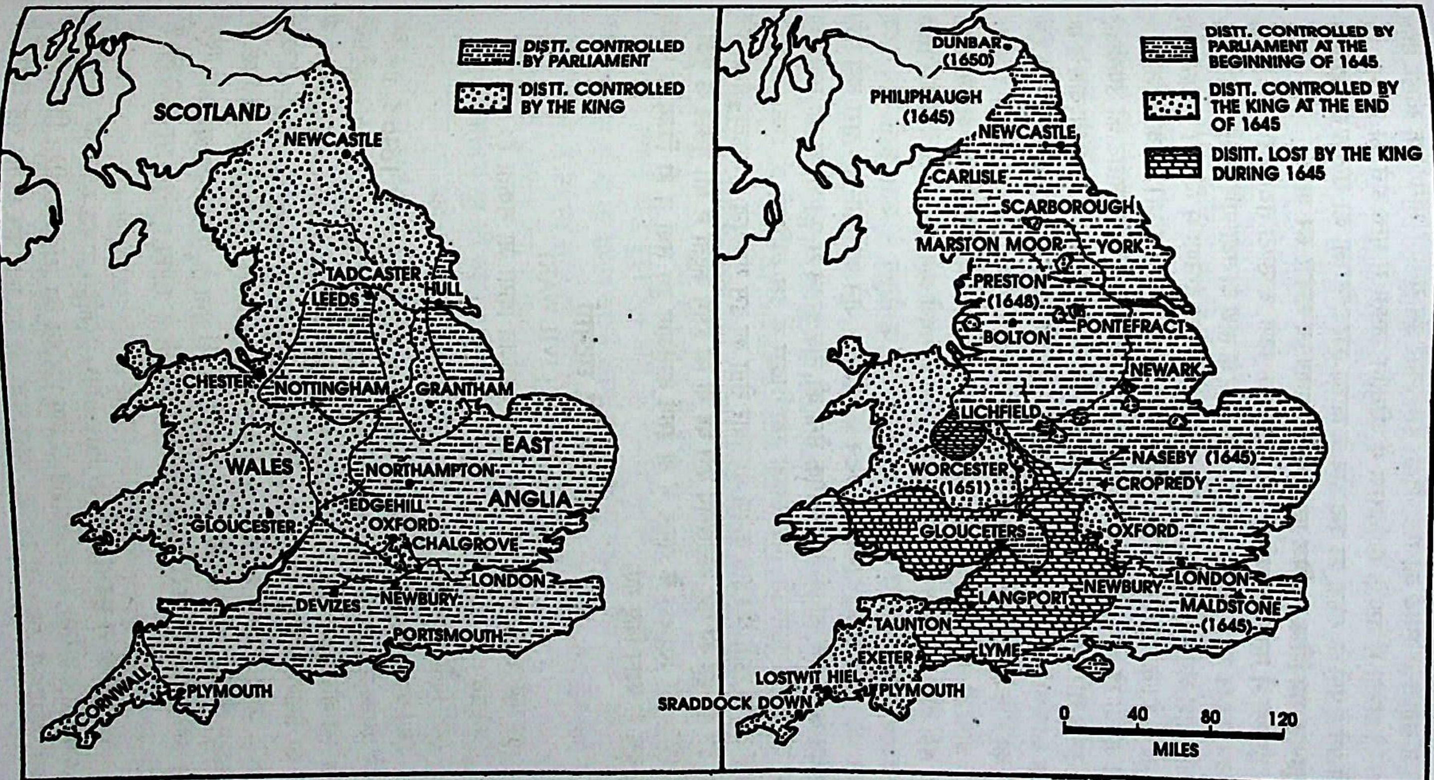
संसद ने पुनः शान्तिपूर्वक राजा को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया तथा उन्नीस प्रस्तावों को पारित करके राजा को भेजा तथा उससे अनुरोध किया कि वह इनके अनुसार वैधानिक शासन करे, परन्तु राजा ने इसको अस्वीकृत कर दिया, परिणामस्वरूप दोनों पक्षों की ओर से युद्ध की तैयारियां प्रारम्भ हो गयीं।

गृह-युद्ध की प्रकृति
(NATURE OF THE CIVIL WAR)

इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ यह गृह-युद्ध कोई वर्ग संघर्ष (Class War) न था।[1] दोनों ही ओर से सभ्य व्यक्ति अपनी सेनाओं का नेतृत्व कर रहे थे। संसद में 80 लार्ड राजा चार्ल्स के समर्थक थे तथा 30 उसके विरोधी तथा लोकसभा में 175 सदस्य चार्ल्स के समर्थन में थे तथा 315 उसके विरोध में। **भौगोलिक विभाजन की दृष्टि से हम्बर से साउथेम्पटन तक खींची जाने वाली रेखा दोनों दलों के क्षेत्रों को विभाजित करती थी। इस रेखा के पूर्व का क्षेत्र संसद के पक्ष में तथा पश्चिमी क्षेत्र राजा के समर्थकों का था।** इस गृह-युद्ध के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक पहलू थे। राजनीतिक दृष्टि से इस गृह-युद्ध से इस बात का निर्णय होना था कि राजा अथवा संसद में से किसके अधिकार अधिक हैं। धार्मिक रूप से यह तय होना था कि एंग्लिकन तथा प्यूरिटन सम्प्रदाय में से किसकी विजय होगी। इस युद्ध में इंग्लैण्ड के अतिरिक्त स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड के भी उद्देश्य निहित थे। इंग्लैण्ड के धार्मिक एवं सांविधानिक कारणों के स्थान पर स्कॉटलैण्ड के निवासी प्रेस्बीटेरियन सम्प्रदाय की स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे तथा आयरलैण्ड में यह प्रोटेस्टेण्ट प्रभुसत्ता के विरुद्ध संघर्ष था। **यद्यपि इस युद्ध की प्रमुख घटनाएं इंग्लैण्ड में हुईं तथापि इसका व्यापक प्रभाव स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड पर पड़ा।**

गृह-युद्ध के धार्मिक एवं राजनीतिक पहलू के अतिरिक्त सामाजिक पहलू भी था। इस युद्ध में संसद का पक्ष नवीन विचारों वाले यौमैनों (Yeomen) ने भी लिया। बड़े-बड़े व्यापारियों को छोड़कर, शेष उपेक्षित व्यापारी वर्ग भी संसद के साथ था। इस वर्ग को ज्ञात था कि यदि राजा की विजय हो गयी तो सामन्ती प्रथा पुनः शक्तिशाली हो जाएगी जिससे कि व्यापार में बाधा उत्पन्न होगी। अतः नए सामाजिक वर्गों ने अपनी उन्नति का मार्ग खुला

1 'The English Civil War was not a 'Classwar'. Both armies were led by the gentry and in most villages the peasants seem to have sided with the squires.'
—*Corrington and Jackson*



THE CIVIL WAR

रखने के उद्देश्य से संसद का साथ दिया। इस प्रकार इस युद्ध ने सामाजिक स्वरूप धारण किया, जो जनता में सम्पत्ति के वितरण में परिवर्तन, जड़ता से मुक्त होने की भावना, उच्च वर्ग में प्रवेश पाने के रास्तों का बन्द होने के कारण उत्पन्न निराशा का द्योतक था। **इस प्रकार यह गृह-युद्ध राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक तनाव का साकार रूप था।**

इंग्लैण्ड में मतभेद अत्यधिक तीव्र था। प्रत्येक श्रेणी, काउण्टी तथा परिवार में गृह-युद्ध को लेकर मतभेद थे। गिरजाघरों का उच्च वर्ग चार्ल्स के साथ था तथा प्यूरिटन संसद के समर्थक थे। अधिकांश जमींदार चार्ल्स का समर्थन कर रहे थे। पूर्वी इंग्लैण्ड में किसान मुख्यतः संसद के समर्थक थे। व्यापार एवं कारखाने वाले शहरों में संसद का प्रभाव था। अनेक व्यक्ति तटस्थ भी थे जो या तो इनमें सन्निहित प्रश्नों पर विचार ही नहीं करते थे या सम्राट की उपलब्धियों तथा उसके चरित्र पर यदि उन्हें सन्देह था तो संसद के नेताओं पर भी उन्हें विश्वास न था। अनेक काउण्टियों ने युद्ध से अलग रहने के लिए संघ बना लिए थे। यही कारण था कि दोनों पक्षों को सैनिक भर्ती करने में परेशानी होती थी।

दोनों ही पक्षों में से किसी की भी सेना प्रशिक्षित न थी, क्योंकि इंग्लैण्ड के पास स्थायी सेना नहीं थी तथा सैनिक दृष्टिकोण से वह यूरोप का सबसे कम शक्तिशाली देश था। 1645 ई. तक की लड़ाई मुख्यतः जमींदारों या उनके पुत्रों के नेतृत्व में काम करने वाले अथवा शायर की अर्द्ध-प्रशिक्षित सेना और लन्दन के प्रशिक्षण पाने वाले सैनिकों द्वारा लड़ी गयी। क्रामवैल के द्वारा वास्तविक व्यावसायिक सेना की नींव डालने से पूर्व चार्ल्स को सबसे बड़ा लाभ यह था कि घुड़सवारी, निशानेबाजी तथा शिकार में दक्ष व्यक्तियों की एक बड़ी संख्या उसके अधीन रहती थी। इसी कारण घुड़सवार सेना का इस गृह-युद्ध में महत्वपूर्ण योगदान रहा। **इस गृह-युद्ध की एक उल्लेखनीय बात यह थी कि इसमें कटुता न थी। गुलाब के फूलों के युद्ध (War of Roses) के समान न तो इसमें कत्लेआम हुए तथा न ही विजय के पश्चात् मृत्यु-दण्ड ही प्रदान किए गए।**

गृह-युद्ध की घटनाएं
(EVENTS OF THE CIVIL WAR)

गृह-युद्ध की घटनाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) प्रथम गृह-युद्ध

(ख) द्वितीय गृह-युद्ध।

(क) प्रथम गृह-युद्ध (The First Civil War)—यह 1642 ई. से 1646 ई. तक चला जिसमें प्रारम्भ में राजा की विजय हुई तथा बाद में चार्ल्स की पराजय हुई। राजा चार्ल्स प्रथम का उद्देश्य शीघ्रताशीघ्र लन्दन पर अधिकार करके युद्ध को समाप्त करना था, **किन्तु संसद की सेना का सेनापति एसेक्स (Essex) राजा को लन्दन से दूर रखना चाहता था।** एसेक्स ने चार्ल्स का मार्ग अवरुद्ध करने के उद्देश्य से वोर्सेस्टर पर अधिकार कर लिया तथा सैनिकों को नार्थम्पटन बोर्सेस्टर तक लगा दिया था। चार्ल्स ने अपनी सेना के साथ लन्दन की ओर प्रस्थान किया तथा एसेक्स की सेनाओं को भेदता हुआ वेनवरी के समीप एजहिल पर अधिकार कर लिया।

(i) एजहिल का युद्ध (Battle of Edgehill)—एजहिल नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। चार्ल्स ने एसेक्स का मार्ग रोकने के लिए एजहिल का स्थान निर्धारित किया, क्योंकि एसेक्स वर्सेस्टर से लन्दन जा रहा था, किन्तु राजा की यह एक भूल थी कि वह रास्ते में ही

रुक गया। उसे सीधे लन्दन जाना चाहिए था तथा लन्दन पर अधिकार करना चाहिए था। उसकी दूसरी भूल खुले मैदान में एसेक्स से युद्ध लड़ना थी। यह लड़ाई 23 अक्टूबर, 1642 ई. को लड़ी गयी। इसमें चार्ल्स के भतीजे राजकुमार रूपर्ट ने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित की तथा राजा को विजय दिलायी, किन्तु एसेक्स भाग निकलने में सफल हो गया।

(ii) **चार्लग्रोव का युद्ध** (Battle of Charlgrove)—यह युद्ध 1643 ई. में लड़ा गया। इससे पूर्व दोनों ही पक्षों ने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाया। 1643 ई. में चार्ल्स प्रथम ने लन्दन पर आक्रमण की एक योजना बनायी, जिसमें चार्ल्स ऑक्सफोर्ड से, न्यूकैसल के अर्ल (Earl of New Castle) को उत्तर से तथा सर होप्टन (Hopton) को दक्षिण-पश्चिम से पहुंचकर आक्रमण करना था, किन्तु न तो होप्टन और न ही अर्ल ऑफ न्यूकैसल लन्दन पहुंच सके क्योंकि उनके रास्ते में संसद की सेना थी जिसको वे परास्त न कर सके। अतः चार्ल्स को अपनी योजना स्थगित करनी पड़ी। इस समय दोनों पक्षों का चालग्रोव के मैदान में सामना हुआ। इसमें राजकुमार रूपर्ट (Rupert) ने जॉन हैम्पडन की हत्या कर दी। संसद की सेना की इसमें पराजय हुई तथा उसे अत्यन्त हानि का सामना करना पड़ा।

(iii) **न्यूबरी का युद्ध** (Battle of Newbury)—राजा तथा एसेक्स दोनों की सेनाएं लन्दन की ओर अग्रसर हो रही थीं। दोनों का सामना न्यूबरी में हुआ। यहां भी भयंकर लड़ाई हुई तथा चार्ल्स का सेनापति फाकलैण्ड (Falkland) मारा गया। एसेक्स लन्दन पहुंचने में सफल हो गया तथा चार्ल्स को ऑक्सफोर्ड लौटना पड़ा।

इसी समय संसद के नेता पिम (Pym) ने स्कॉटलैण्ड से सन्धि कर ली। अतः संसद की सेना की सहायता के लिए स्कॉटलैण्ड के इक्कीस हजार सैनिक आ गए। अतः संसद की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि हुई। पिम द्वारा की गई इस सन्धि का निश्चित रूप से अत्यधिक महत्व था। इस सन्धि के कारण चार्ल्स प्रथम अत्यन्त चिन्तित हुआ और अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि करने के उद्देश्य से उसने आयरलैण्ड के विद्रोहियों के साथ सन्धि की। इस प्रकार आयरलैण्ड में स्थापित सेना राजा की सहायता के लिए आ गयी।

(iv) **मार्सटन मूर की लड़ाई** (Battle of Marston Moor)—चार्ल्स ने रूपर्ट को यार्क का घेरा हटाने का आदेश दिया तथा अपने पास बुलाया, किन्तु उसका रास्ता संसद की सेना ने रोक लिया। **रूपर्ट इस समय लड़ना नहीं चाहता था, किन्तु उस पर आक्रमण कर दिया गया। यह लड़ाई 1544 ई. में हुई।** रूपर्ट की पराजय हुई, किन्तु वह भाग निकलने में सफल हो गया। इस युद्ध के पश्चात् चार्ल्स के अधीन केवल दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिमी क्षेत्र रह गए। इस युद्ध में क्रामवैल ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की तथा वह गृह-युद्ध का आगामी वर्षों में रुख बदलने में सफल हुआ।

(v) **क्रामवैल द्वारा सुधार** (Reforms by Cromwell)—क्रामवैल ने सेना में सुधार करना आवश्यक समझा क्योंकि संसद के पास शिक्षित सेना का अभाव था। उसने घुड़सवार सेना बनायी तथा उनको प्रत्येक दृष्टि से शिक्षित किया। इसके अतिरिक्त संसद की सेना के वे सेनापति जो अयोग्य थे अथवा युद्ध कुशल न थे उन्हें क्रामवैल ने सेना से हटाया तथा उनके स्थान पर युद्ध कुशल एवं अनुभवी व्यक्तियों को रखा गया इस प्रकार सेना का पुनर्संगठन कर उसने सेना को पर्याप्त शक्तिशाली बना दिया।

इसके पश्चात् एक बार पुनः राजा चार्ल्स प्रथम से समझौता करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु राजा ने इसे अस्वीकार कर दिया। अतः 1645 ई. में राजा के परामर्शदाता लैड को मृत्युदण्ड दे दिया गया।

(vi) **नेजबी की लड़ाई** (Battle of Naseby)—जून, 1645 ई. में क्रामवैल तथा सेनापति फेयरफाक्स (Fairfax) ने नेजबी के स्थान पर चार्ल्स प्रथम को घेर लिया तथा परास्त किया। **राजा ने भागकर स्वयं को स्कॉटलैण्ड की सेना को सौंप दिया क्योंकि वह किसी भी समय प्यूरिटन लोगों के हाथ पड़ सकता था।** लगभग सभी स्थानों पर संसद की सेना का अधिकार हो गया था। इस प्रकार नेजबी की लड़ाई अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित हुई। नेजबी के युद्ध के साथ ही प्रथम गृह-युद्ध का भी अन्त हो गया। इस प्रकार नेजबी का युद्ध एक निर्णायक युद्ध साबित हुआ।

(ख) द्वितीय गृह-युद्ध (The Second Civil War)—यह 1646 ई. से 1649 ई. तक चला जिसमें चार्ल्स की पराजय हुई तथा उसे बन्दी बनाया गया, किन्तु सेना एवं संसद में मतभेद हो गया। नेजबी के युद्ध में पराजय के पश्चात् भी चार्ल्स ने वाक्-पटुता तथा विरोधियों के विभिन्न वर्गों को आपस में लड़ाकर अपना मतलब सिद्ध करने का प्रयास किया। स्कॉटलैण्ड की सेना चार्ल्स प्रथम पर अधिकार करके अत्यन्त प्रसन्न हुई। **स्कॉटलैण्ड की सेना अपने ही देश के व्यक्ति को राजा के पद से हटाना नहीं चाहती थी।** अतः उन्होंने चार्ल्स से प्रेस्बीटेरियन धर्म को राजधर्म घोषित करने के लिए कहा, किन्तु चार्ल्स ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। स्कॉटलैण्ड की सेना ने तब अपना मुआवजा लेकर चार्ल्स को संसद के हाथों सौंप दिया। संसद ने पुनः राजा से बातचीत करनी चाहिए, किन्तु स्वयं संसद तथा नवनिर्मित क्रामवैल की सेना में चर्च के प्रश्न पर झगड़ा उत्पन्न हो गया। राजा को स्वतन्त्र कर दिया गया तथा अपने अधिकार के प्रश्न पर संसद एवं सेना में संघर्ष हुआ। संसद ने सेना की शक्ति को क्षीण करना चाहा तथा चार्ल्स प्रथम को बन्दी बना लिया, किन्तु सेना ने विद्रोह कर दिया एवं चार्ल्स प्रथम को बलपूर्वक अपने अधिकार में ले लिया तथा उसके समक्ष दो प्रस्ताव रखे कि वह बिशप की अध्यक्षता में गिरजाघर को रखे तथा सभी मतों को समान अधिकार दे, किन्तु राजा ने इन प्रस्तावों को मानना अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वह उस अवसर से लाभ उठाना चाहता था जबकि संसद एवं सेना में झगड़ा हो रहा हो। वह सेना की कैद से भागने में सफल हो गया और स्कॉटलैण्ड से सहायता मांगी तथा प्रेस्बीटेरियन धर्म को सहायता करने का उन्हें आश्वासन दिया। स्कॉटलैण्ड ने चार्ल्स का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा उसे सहायता दी। इस प्रकार द्वितीय गृह-युद्ध प्रारम्भ हो गया।

(i) **प्रेस्टन की लड़ाई** (Battle of Preston)—1648 ई. में अप्रैल माह में सम्राट चार्ल्स प्रथम के समर्थकों एवं स्कॉट सेना ने विद्रोह एवं आक्रमण की अग्नि प्रज्जवलित की। जून माह तक इंग्लैण्ड के समस्त भागों में चार्ल्स के समर्थकों ने विद्रोह कर दिया, किन्तु चार्ल्स ने नवीन युद्ध करके भूल की थी क्योंकि वह क्रामवैल की सेना की शक्ति को पहचान न सका था। तीन माह के अन्दर क्रामवैल ने विद्रोह को कुचल दिया। प्रेस्टन के मैदान में क्रामवैल का सामना स्कॉटलैण्ड की सेना तथा उत्तरी इंग्लैण्ड के चार्ल्स समर्थकों से हुआ। क्रामवैल ने तीन दिनों में सेना को परास्त करके स्कॉटलैण्ड की सम्पूर्ण सेना को बन्दी बना लिया। इस प्रकार द्वितीय गृह-युद्ध समाप्त हो गया।

क्रामवैल तथा उसके प्रमुख साथी इस निष्कर्ष पर पहुंचे की चार्ल्स से समझौता करना बेकार है, अब उसे मृत्युदण्ड देना ही उचित है। क्रामवैल ने एक अन्य अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। 6 दिसम्बर, 1648 ई. को कर्नल प्राइड (Col. Pride) के नेतृत्व में सैनिकों ने 41 प्रेस्बीटेरियन संसद सदस्यों को बन्दी बना लिया तथा 26 सदस्यों को सदन के निकट फिर कभी न आने का आदेश दिया। यह क्रामवैल के आदेश पर किया गया था। जिस समय 1640 ई. में दीर्घ संसद आमन्त्रित की गयी थी उसमें 420 सदस्य थे जिसमें से केवल 60 सदस्यों को लोकसभा के सदस्य के रूप में अब मान्यता दी गई। **यह ही 'रम्प' के नाम से प्रसिद्ध हुई तथा इस घटना को 'प्राइड का नश्तर'** (Pride's Purge) **कहा गया।**

(ii) **चार्ल्स प्रथम की मृत्यु** (Execution of Charles I)—इस संसद ने चार्ल्स प्रथम को **'संसद तथा इंग्लैण्ड के राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध छेड़ने'** के आरोप में अदालत के समक्ष प्रस्तुत होने का आदेश दिया। न्यायालय में अधिकांश सैनिक थे जिन्हें आदेश प्राप्त हो चुके थे। चार्ल्स ने उस न्यायालय को वैध न्यायालय तथा 'रम्प संसद' को संसद मानने से इन्कार कर दिया तथा शान्तिपूर्वक गर्व से पूर्वनिश्चित मृत्यु-दण्ड को सुना।

30 जनवरी, 1649 ई. को प्रातः व्हाइट हाल के सामने उसको मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। राजा के धैर्य को देखकर जनता पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा तथा जनता उसे 'शहीद' मानने लगी। यद्यपि चार्ल्स प्रथम में अनेक खराबियां थीं, किन्तु जिस प्रकार से उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया वह कानून के विरुद्ध था। उसे मृत्यु-दण्ड देने वालों का विचार था कि वह एकतन्त्र को नष्ट कर रहे हैं, किन्तु वास्तव में उन्होंने उसे पवित्र बना दिया। **रैम्जे म्योर के अनुसार, '1641 ई. से उठती हुई प्रतिक्रिया सम्राट की मृत्यु के क्षण से ही काबू से बाहर हो गयी, क्रामवैल की महानता तथा इंग्लैण्ड के इतिहास की सर्वश्रेष्ठ सेना ग्यारह वर्षों तक मात्र इसके प्रवाह को रोके रख सकी।'**[1]

गृह-युद्ध के परिणाम
(RESULTS OF THE CIVIL WAR)

गृह-युद्ध का प्रमुख परिणाम चार्ल्स प्रथम को मृत्युदण्ड दिया जाना था। इंग्लैण्ड के इतिहास की यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। राजा चार्ल्स को मृत्यु-दण्ड देने के पश्चात् क्रामवैल ने राजतन्त्र की समाप्ति की घोषणा की तथा प्रजातन्त्र की स्थापना की। प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली की स्थापना भी इंग्लैण्ड के लिए महत्वपूर्ण थी। गृह-युद्ध के परिणामस्वरूप प्यूरिटन सम्प्रदाय का महत्व बढ़ गया क्योंकि इस सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने चार्ल्स प्रथम को परास्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके अतिरिक्त क्रामवैल ने शीघ्र ही शक्ति का केन्द्रीकरण करने का प्रयास किया तथा संसद की लॉर्ड सभा को समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड की प्रशासनिक व्यवस्था के लिए एक सभा बनायी गई जिसमें 41 सदस्य थे तथा इसे **'कौंसिल ऑफ स्टेट'** (Council of State) कहा गया।

1 'From the king's death, the tide of reaction, which had been rising since 1641, became irresistible, even the greatness of Cromwell and the strength of the finest army. England had ever known could only dam it for eleven years.' —*Ramsay Muir*

चार्ल्स प्रथम की पराजय के कारण
(CAUSES OF KING CHARLES I'S DEFEAT)

चार्ल्स प्रथम की पराजय के निम्नलिखित कारण थे—

(क) संसद के कुशल सेनापति—उसकीं पराजय का सर्वाधिक प्रमुख कारण संसद के सेनापतियों का कुशल एवं अनुभवी होना था। क्रामवैल एक कुशल सेनापति था तथा उसने अपने सैनिकों में अनुशासन, धार्मिक प्रवृत्ति तथा राजनीतिक स्वतन्त्रता की भावना को जाग्रत किया। नौ-सेना भी संसद की सहायता कर रही थी तथा ब्लेक ने नौ-सेना को शक्तिशाली बना दिया था। इसके विपरीत राजा के सैनिक पर्याप्त प्रशिक्षित न थे तथा सेनापति राजकुमार रूपर्ट साहसी एवं वीर होते हुए भी एक कुशल सेनापति न था।

(ख) चार्ल्स का निरंकुश शासन—राजा की पराजय का द्वितीय कारण राजा का निरंकुश एवं व्यक्तिगत शासन था। जनता चार्ल्स के अत्याचारों तथा निरंकुशता से परेशान हो चुकी थी तथा उसे अपना शत्रु समझती थी एवं संसद का समर्थन करती थी।

(ग) स्कॉटलैण्ड से संसद को मदद—गृह-युद्ध के समय पिम द्वारा स्कॉटलैण्ड से सहायता प्राप्त. करने में सफलता प्राप्त करने से भी संसद की सैनिक शक्ति बढ़ी जिसने संसद को विजय दिलायी।

(घ) चार्ल्स के पास धनाभाव—राजा चार्ल्स के पास धन का अभाव था। राजा के अधिकांश साथी गरीब थे। धन के अभाव में राजा को सेना तथा अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध करने में अत्यन्त कठिनाई होती थी। इसके विपरीत, संसद के पास धन की कमी न थी क्योंकि संसद के समर्थक अधिकांश धनी व्यक्ति थे तथा कर लगाने का अधिकार भी संसद के पास था।

(ङ) संसद की कुशल सेना—संसद की पैदल सेना कुशल थी तथा उसे कम सैनिकों की आवश्यकता होती थी क्योंकि संसद के पास थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दुर्ग थे। चार्ल्स प्रथम के अधिकार में कोई दुर्ग न था।

(च) कुशल परामर्शदाताओं का अभाव—चार्ल्स प्रथम की पराजय में उसके पास किसी कुशल सलाहकार का न होना भी सहायक हुआ। बकिंघम, वेण्टवर्थ एवं लैड की हत्या की जा चुकी थी जबकि संसद में अनेक योग्य व्यक्ति थे, विशेष रूप से पिम एवं क्रामवैल।

उपर्युक्त समस्त कारणों से चार्ल्स प्रथम की पराजय एवं संसद की गृह-युद्ध में विजय हुई तथा इंग्लैण्ड के इतिहास में एक नवीन मोड़ आया।

राजतन्त्र की पुनर्स्थापना एवं चार्ल्स द्वितीय
[RESTORATION AND CHARLES II (1660-1685)]

राजतन्त्र की पुनर्स्थापना (Restoration)

1642 ई. में राजा चार्ल्स प्रथम के अत्याचारों से परेशान होकर एवं अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए इंग्लैण्ड की जनता ने राजा के विरुद्ध गृह-युद्ध (Civil War) की घोषणा की थी। इस गृह-युद्ध में जनता को सफलता प्राप्त हुई तथा चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड प्रदान किया गया, **किन्तु जनता एवं संसद अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रही क्योंकि चार्ल्स प्रथम के स्थान पर अब उन्हें क्रामवैल की निरंकुशता का सामना करना पड़ा।** क्रामवैल के समय में किसी में आवाज उठाने का साहस न था। इंग्लैण्ड में शान्ति व्याप्त थी।[1] किन्तु यह शान्ति

1 'There is not a dog that wages his tongue so great a calm are we in.' —Thurloe

वास्तविक न थी क्योंकि यद्यपि क्रामवैल ने इंग्लैण्ड को एक निश्चित संविधान प्रदान किया तथापि उसका शासन निरंकुशता एवं शक्ति पर आधारित था। उसके शासन में स्थायित्व का अभाव था। यही कारण था कि क्रामवैल की मृत्यु होते ही शान्ति भंग हो गयी एवं अराजकता के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

क्रामवैल ने अपना उत्तराधिकारी अपने पुत्र रिचर्ड (Richard) को घोषित किया था, किन्तु जनता उसे स्वीकार करने को तैयार न थी। क्रामवैल को जनता इंग्लैण्ड का वास्तविक शासक नहीं मानती थी क्योंकि क्रामवैल ने सेना की शक्ति के आधार पर इंग्लैण्ड की सत्ता को अपने हाथों में ले रखा था। अतः एक अधिकारी को अपना उत्तराधिकारी चुनने के अधिकार को जनता मान्यता प्रदान करने की विरोधी थी। रिचर्ड को जनता द्वारा पसन्द न किए जाने का एक अन्य कारण यह था कि जनता को चार्ल्स द्वितीय से सहानुभूति थी। जनता का विचार था कि अपराध चार्ल्स प्रथम ने किया था तथा उसे दण्ड मिल चुका था। चार्ल्स प्रथम के अपराध का दण्ड उसके पुत्र चार्ल्स द्वितीय को देना उचित नहीं समझती थी।

यद्यपि रिचर्ड को इंग्लैण्ड का प्रोटेक्टर (Protector) नियुक्त कर दिया गया, किन्तु उसके समक्ष अनेक समस्याएं थीं। प्रथम तो उसे जनता की सहानुभूति ही प्राप्त न थी। इसके अतिरिक्त रिचर्ड को राजतन्त्र के समर्थकों, प्यूरिटनों, गणतन्त्रवादियों का ही सामना नहीं करना था अपितु उसकी सेना में भी स्वामिभक्ति का अभाव था। युद्धकाल में जो सेना के अधिकारी तत्कालीन संकट का सामना करने के लिए परस्पर मिल गए थे अब राजनीति में भाग लेकर परस्पर ही झगड़ने लगे थे। जब तक क्रामवैल शक्ति में था उसने अपने प्रभाव एवं व्यक्तित्व के द्वारा इन झगड़ों को उभरने न दिया, किन्तु उसकी मृत्यु होते ही यह प्रारम्भ हो गए। सेना रिचर्ड को पसन्द नहीं करती क्योंकि वह सदैव युद्धों से दूर रहा था तथा उसे युद्ध अथवा सैनिक नेतृत्व का ज्ञान न था। अतः सेना उसे सेनापति स्वीकार करने को तैयार न थी। क्रामवैल तो सेनापति था, अतः संरक्षक बनने के योग्य था, किन्तु रिचर्ड केवल इसलिए संरक्षक बने कि वह क्रामवैल का ज्येष्ठ पुत्र था, इसका सेना विरोध करती थी। यदि क्रामवैल ने थोड़ी सूझ-बूझ से काम लिया होता एवं अपने छोटे पुत्र हेनरी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया होता तो सम्भवतः इंग्लैण्ड में इतना शीघ्र प्रोटेक्टोरेट का पतन न होता क्योंकि हेनरी एक योग्य सेनापति एवं राजनीतिज्ञ था।

रिचर्ड ने संरक्षक बनते ही असन्तुष्ट सैनिकों की सेवाएं समाप्त कर सेना को कम करने का प्रयत्न किया तो सेना ने मांग की कि सेनापति एवं संरक्षक के पद अलग-अलग कर दिए जाएं तथा एक योग्य सेनाधिकारी फ्लीटवुड को सेनापति बनाया जाए। सेना मांग कर रही थी कि सेना सम्बन्धी समस्त अधिकार सेनापति को ही दे दिए जाएं जिसमें सैनिकों की नियुक्ति एवं उन्हें पदच्युत करने का अधिकार भी था। यदि रिचर्ड इन समस्त मांगों को स्वीकार कर लेता तो सेना पूर्ण स्वतन्त्र हो जाती तथा सेनापति उसके समान अथवा सम्भवतः उससे भी शक्तिशाली व्यक्ति बन जाता। अतः रिचर्ड ने सेना की उपर्युक्त समस्त मांगों को अस्वीकृत कर दिया।

रिचर्ड ने शीघ्र ही संसद के चुनाव कराने का निर्णय लिया तथा 1659 ई. के प्रारम्भ में संसद का प्रथम अधिवेशन हुआ। इस संसद में मुख्यतया गणतन्त्र के विरोधी सदस्य थे। प्रथम अधिवेशन में ही संसद एवं सेना में मतभेद उत्पन्न हो गया। सेना के वेतन का भुगतान करने के लिए इस संसद ने धन स्वीकृत न किया तथा कुछ सैनिक अधिकारियों पर अत्याचार करने

का आरोप लगाकर जांच प्रारम्भ की। संसद ने यह भी प्रतिबन्ध लगाने का प्रयत्न किया कि सैनिक परिषद की बैठक संरक्षक तथा संसद के दोनों सदनों की अनुमति के अभाव में न हो सके तथा सेना संसद की स्वतन्त्रता के लिए शपथ ले, किन्तु सेना इसको स्वीकार करने के लिए तैयार न थी। सेना ने लन्दन में एकत्रित होना प्रारम्भ कर दिया। रिचर्ड ने सेना को लन्दन में एकत्र न होने के आदेश दिए जिसके विरोध में फ्लीटवुड ने संसद को भंग होने के आदेश दिए। संसद भंग हो गयी जिससे रिचर्ड की स्थिति शोचनीय हो गयी। रिचर्ड अपने भाई को आयरलैण्ड से अथवा सेनापति मौंक को स्कॉटलैण्ड से अपनी सहायतार्थ बुला सकता था, किन्तु ऐसा करने से पुनः गृह-युद्ध प्रारम्भ हो जाता। रिचर्ड इंग्लैण्ड में गृह-युद्ध को पुनः प्रारम्भ कराना नहीं चाहता था। उसका कहना था, **"मैं अपनी महानता की सुरक्षा के लिए, जो मेरे ऊपर एक बोझ है, रक्त की एक बूंद भी नहीं गिरने दूंगा।"**[1] अतः उसने मई, 1659 ई. में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया ताकि शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सके।

रिचर्ड के संरक्षक पद से त्यागपत्र देते ही पुनः सैनिक शासन इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ। अपने शासन को सांविधानिक रूप प्रदान करने के उद्देश्य से रम्प संसद को आमन्त्रित किया गया। रम्प एवं सैनिकों में समझौता न हो सका, अतः सेनापति लैम्बर्ट ने रम्प को भंग कर दिया तथा नवीन संविधान की रचना हेतु एक सुरक्षा समिति का निर्माण किया गया। इंग्लैण्ड की स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गयी, सर्वत्र अराजकता व्याप्त थी।

इंग्लैण्ड की स्थिति को देखते हुए 1660 ई. में स्कॉटलैण्ड के सेनापति मौंक (General Monck) ने इंग्लैण्ड के मामले में हस्तक्षेप किया। सेनापति मौंक इसके पूर्व भी अनेक अवसरों पर इंग्लैण्ड की सेवा कर चुका था। 1651 ई. में स्कॉटलैण्ड भेजी गई इंग्लैण्ड की सेना का नेतृत्व मौंक ने ही किया था। मौंक की सेना अत्यन्त शक्तिशाली एवं स्वामिभक्त थी। मौंक का विचार था कि गृह-युद्ध प्रोटेस्टेण्ट धर्म की रक्षा, जनता की स्वतन्त्रता एवं संसद के अधिकारों के लिए लड़ा गया था, यदि अब सेना स्वेच्छा से संसद को आमन्त्रित अथवा भंग करती है तो यह जनता के हित में नहीं है अपितु कुछ व्यक्तिगत स्वार्थों का परिणाम है। अतः सेनापति मौंक ने घोषणा की कि जब लैम्बर्ट एवं उसकी सेना हथियार डाल देगी तो वह संसद आमन्त्रित करेगा तथा जनता के निर्णय की प्रतीक्षा करेगा। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु मौंक ने अपनी सेना के साथ इंग्लैण्ड की ओर प्रस्थान किया। **इस समय इंग्लैण्ड की सेना ने मौंक से युद्ध न करने का निर्णय किया तथा मौंक के लन्दन पहुंचने पर लैम्बर्ट ने स्वयं को उसके अधिकार में दिया।**

सेनापति मौंक ने रम्प को पुनः आमन्त्रित किया। रम्प के सदस्य सेना से प्रतिशोध लेना चाहते थे, किन्तु मौंक ने ऐसा न होने दिया तथा सेना को वेतन देने के लिए भी विवश किया। इसके पश्चात् दीर्घ संसद के अन्तिम अवशेष रम्प को भंग कर दिया गया तथा एक नवीन एवं स्वतन्त्र संसद के चुनाव के लिए सेनापति मौंक ने आदेश दिए। नवीन एवं स्वतन्त्र संसद का प्रथम अधिवेशन अप्रैल, 1660 ई. में हुआ। **इस संसद को क्योंकि राजा ने आमन्त्रित नहीं किया था अतः इसको कन्वेन्शन** (convention) **कहा गया।** इस कन्वेन्शन को इंग्लैण्ड के शासन के विषय में निर्णय करना था। इस कन्वेन्शन में मुख्यतया राजतन्त्र समर्थक एवं

1 **'I will not have a drop of blood split for the preservation of my greatness, which is a burden to me.'** —*Richard*

प्रेस्बीटेरियन सदस्य थे, अतः उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र चार्ल्स द्वितीय को आमन्त्रित करना निश्चित किया।

मौंक ने कन्वेशन के प्रस्ताव को चार्ल्स द्वितीय तक कुछ शर्तों के साथ पहुंचाया जो उस समय हालैण्ड के ब्रेडा (Breda) नामक स्थान पर रुका हुआ था। चार्ल्स ने कन्वेन्शन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा घोषणा की कि उसमें प्रतिशोध की भावना नहीं है, वह अपने पिता के शत्रुओं को क्षमा कर देगा तथा संसद की अनुमति के बिना किसी को दण्ड न देगा। उसने सेना को उसका वेतन देने का वचन दिया। वह सब कुछ संसद की इच्छानुसार करेगा। **चार्ल्स ने यह घोषणा ब्रेडा नामक स्थान पर की थी, अतः इसे ब्रेडा की घोषणा (Declaration of Breda) कहा जाता है।**

चार्ल्स द्वितीय ब्रेडा से इंग्लैण्ड के डोवर बन्दरगाह पहुंचा तथा उसने लन्दन की ओर प्रस्थान किया। ब्लेकहीथ में सेना ने चार्ल्स द्वितीय का स्वागत किया। चार्ल्स ने 29 मई, 1660 ई. को अपने जन्म-दिवस के अवसर पर लन्दन में प्रवेश किया। जनता ने चार्ल्स का सहर्ष स्वागत किया। वार्नर-मार्टिन-म्योर ने उस समय की लन्दन की स्थिति के विषय में लिखा है, **'लन्दन के रास्तों में पुष्प बिछे थे, घण्टियां बज रही थीं, सड़कों के दोनों ओर की दीवारों पर झालरें पड़ी थीं तथा फव्वारों से मदिरा की वर्षा हो रही थी।'**[1]

राजतन्त्र की स्थापना के प्रभाव (Effects of the Restoration).—इस प्रकार इंग्लैण्ड में ग्यारह वर्षों के उपरान्त पुनः राजतन्त्र की स्थापना हुई। **इंग्लैण्ड में राजतन्त्र की पुनर्स्थापना के व्यापक प्रभाव हुए।** राजतन्त्र की स्थापना के साथ ही क्रामवैल द्वारा प्रारम्भ किए गए सैनिक शासन का अन्त हुआ। सैनिक शासन की कठोरता से इंग्लैण्ड की जनता तंग हो चुकी थी, उसकी समाप्ति पर जनता ने राहत की सांस ली। जनता को पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त हुई तथा आतंक एवं भय का राज्य समाप्त हुआ। इस प्रकार जनता के सामाजिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ा। क्रामवैल के शासनकाल में मनोरंजन के सभी साधनों पर लगे हुए प्रतिबन्ध भी समाप्त हो गए। जनता में पुनः उत्साह, आनन्द, खेल-कूद की भावनाएं जागृत हुईं, किन्तु राजतन्त्र के आगमन से जनता का नैतिक स्तर गिरा, क्योंकि वहां मदिरापान, जुआ आदि पुनः प्रारम्भ हो गया, जिस पर क्रामवैल के शासनकाल में प्रतिबन्ध था।

राजतन्त्र की पुनः स्थापना के साथ ही इंग्लैण्ड में पुनः स्टुअर्ट वंश का राज्य प्रारम्भ हुआ। चार्ल्स प्रथम का अन्त देखकर चार्ल्स द्वितीय को यह सोचने पर विवश होना पड़ा कि यदि उसे शासन करना है तो संसद से सम्बन्ध मधुर रहने चाहिए। अतः स्वतः ही राजा के अधिकारों में कमी तथा संसद के अधिकारों में वृद्धि हुई। इस प्रकार राजाओं द्वारा स्वेच्छाचारिता से शासन करने की नीति पर प्रतिबन्ध लगा तथा राजा ने वैधानिक ढंग से शासन करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार इंग्लैण्ड में वैधानिक राजतन्त्र का विकास हुआ।[2] इसके साथ ही राजा एवं संसद द्वारा परस्पर सहयोग से शासन करने के कारण लोकप्रिय शासन की स्थापना हुई। **रैम्जे**

1 'Charles re-entered London, the ways strewed with flowers, the bells ringing, the streets hung with tapestry, and the fountains running with wine.' —*Warner-Marten-Muir*

2 'The new ruler Charles II promised to reign in accordance with the traditional laws of England and this gave rise to the constitutional monarchy in England.' —*Mowat*

म्योर के अनुसार, 'राजतन्त्र की पुनर्स्थापना ने इंग्लैण्ड के भावी लोकप्रिय शासन के विकास का बीज बो दिया।'[1]

राजतन्त्र की स्थापना का एक अत्यन्त दुष्परिणाम संसद सदस्यों में भ्रष्टाचार एवं रिश्वत लेने की प्रथा का जन्म होना था। चार्ल्स द्वितीय जानता था कि शासन करने के लिए संसद से मधुर सम्बन्ध बनाए रखना आवश्यक है अतः उसने संसद सदस्यों को उपहार, पदवियां आदि प्रदान कीं तथा विभिन्न प्रकार से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उन्हें प्रभावित कर समर्थन प्राप्त करना चाहा, परिणामस्वरूप संसद सदस्यों को रिश्वत देने की प्रथा प्रारम्भ हुई जो उन्नीसवीं शताब्दी तक तो चलती ही रही।[2]

राजतन्त्र की स्थापना का प्रभाव धार्मिक क्षेत्र पर भी पड़ा। क्रामवैल प्यूरिटन था, अतः उसके शासनकाल में धर्म पर अनेक प्रतिबन्ध थे। राजतन्त्र की स्थापना होने के पश्चात् संसद ने चर्च को अपने अधिकार में ले लिया तथा अनेक सुधार किए। एंग्लिकन धर्म इंग्लैण्ड का प्रमुख धर्म बना।

क्रामवैल ने आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड एवं इंग्लैण्ड को एक ही संसद के अधीन रखा था। राजतन्त्र की स्थापना होने पर तीनों देशों के लिए पृथक्-पृथक् संसद चुनी गयी।

इस प्रकार राजतन्त्र की इंग्लैण्ड में पुनर्स्थापना के अनेक प्रभाव हुए, जिसके परिणाम इंग्लैण्ड की राजनीति, शासन एवं समाज पर स्पष्टतः दृष्टिगोचर हुए।

चार्ल्स द्वितीय
(CHARLES II)

चार्ल्स द्वितीय का प्रारम्भिक जीवन एवं चरित्र (Early life and Character of Charles II)—चार्ल्स द्वितीय, चार्ल्स प्रथम का पुत्र था। उसकी मां फ्रांस की राजकुमारी हेनरीटा मेरिया थी। चार्ल्स द्वितीय का जन्म 1630 ई. में हुआ था। अपने बाल्यकाल में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्नीस वर्ष की आयु में उसके पिता को मृत्यु-दण्ड दे दिया गया तथा उसे विवश होकर इंग्लैण्ड से भागना पड़ा था और फ्रांस एवं हॉलैण्ड में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। तीस वर्ष की आयु में वह इंग्लैण्ड का राजा बना। चार्ल्स द्वितीय अपने पितामह, पिता एवं भाई के समान अन्ध-दुराग्रही न था। वह एक हंसमुख, चिन्तारहित युवक था। चार्ल्स द्वितीय अत्यन्त आलसी तथा विलासी व्यक्ति था। उसके दरबार में अत्यन्त भ्रष्टाचार व्याप्त था तथा पोर्टमाउथ की ढचेज एवं लेडी कैसलमैन का प्रभाव उसके दरबार पर छाया हुआ था। उपर्युक्त अवगुणों के होने पर भी उसमें अनेक गुण थे। वह व्यायाम, खेलों एवं शिकार में रुचि रखता था तथा राज-काज में अत्यन्त कुशल था। चार्ल्स को व्यक्ति को परखने की क्षमता तथा राजनीतिक कुशलता थी।

---

1 'The restoration, in fact, sowed the seed of the future growth of popular rule in England.' —*Ramsay Muir*

2 'For the first time in English History, members of Parliament were regularly bribed to support the Crown. The bribers were not always in form of money. Titles, appointments, honours of various kinds, would appeal to some more than money......., and from time onward the bribery of Parliament became of English politics which did not disappear till the nineteenth century.' —*Southgate*

चार्ल्स द्वितीय निरंकुश शासक बनना चाहता था,[1] परन्तु अपने निर्वासन काल की कठिनाइयों के अनुभव के पश्चात् वह सुख का जीवन व्यतीत करना चाहता था तथा पुनः यात्रा पर जाना नहीं चाहता था,[2] अतः वह संसद से झगड़ना नहीं चाहता था। परिस्थितियों को अपने विरुद्ध होते देखकर वह संसद के समक्ष झुकने में अपना अपमान नहीं समझता था। यही कारण है कि उसके लिए कहा जाता है कि उसका न तो कोई सिद्धान्त था, न विश्वास और न ही सम्मान। चार्ल्स में अपने भावों को छिपाने की अद्भुत क्षमता थी। वह कैथोलिक धर्म का समर्थक था, किन्तु उसकी मृत्यु के समय से पूर्व इस राज को कोई न जान सका। जनता उसे उसके जीवनपर्यन्त एंग्लिकन धर्म का अनुयायी ही समझती रही। **रैम्जे म्योर के अनुसार, सच तो यह है कि चार्ल्स को किसी प्रकार के धर्म पर विश्वास न था।** यह सत्य है कि राजा के लिए वह रोमन चर्च को सर्वाधिक सुविधाजनक समझता था तथा मृत्युशय्या पर उसने स्वयं को कैथोलिक घोषित कर दिया था, किन्तु वास्तव में वह अधार्मिक था। उसे किसी धर्म की इतनी चिन्ता न थी कि उसके लिए वह जनता पर अत्याचार करता। वह क्रोध में कभी बेकाबू नहीं हुआ, वह लोगों की ओछी प्रवृत्तियों को भी समझता था। वह सहज, चतुर एवं चालाक था और राजनीति की कपट-क्रीड़ाओं में उतरने पर उसके इन गुणों ने उसे पिता एवं भाई से कहीं खतरनाक खिलाड़ी बना दिया। उसने यह काम पुराने लोगों पर ही छोड़ रखा था, जिन्हें इस खेल में आनन्द आता था।

चार्ल्स द्वितीय की गृह-नीति
(HOME POLICY OF CHARLES II)

चार्ल्स द्वितीय 1660 ई. में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व उसने ब्रेडा की घोषणा की थी जिसमें उसने इंग्लैण्ड की जनता को आश्वासन दिलाया था कि वह सेना के वेतन का भुगतान करेगा; अपने पिता चार्ल्स प्रथम की मृत्यु के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों को क्षमा करेगा; धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करेगा तथा कामनवैल्थ के समय में जिन व्यक्तियों ने भूमि प्राप्त की थी, उसे वापस नहीं लेगा।

चार्ल्स द्वितीय के राजा बनने से पूर्व ही मौंक (Monck) ने 'कन्वेन्शन' आमन्त्रित किया था, अतः पुनर्स्थापना के प्रारम्भ में महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने का उत्तरदायित्व 'कन्वेन्शन' का था जिसके द्वारा चार्ल्स द्वितीय को इंग्लैण्ड के राजा के रूप में आमन्त्रित किया था। चार्ल्स द्वितीय ने यद्यपि ब्रेडा की घोषणा की थी, किन्तु उसमें किए गए वायदों को पूर्ण करना अब कन्वेन्शन की स्वीकृति पर निर्भर करता था।

कन्वेन्शन ने सर्वप्रथम चार्ल्स द्वितीय की ब्रेडा की घोषणा में दिए गए वचनों को पूर्ण करना चाहा। अतः सैनिकों को बकाया वेतन दिया गया तथा न्यू मॉडल सेना (New Model Army) को समाप्त कर दिया गया, किन्तु केवल पांच हजार सैनिकों की सेवाएं समाप्त नहीं की गयीं। इसके पश्चात् एक अधिनियम पारित किया गया जिसे क्षतिपूर्ति तथा विस्मरण अधिनियम (Indemnity and Oblivation Act) कहते हैं। इस अधिनियम के द्वारा समस्त अपराधियों तथा राजतन्त्र विरोधियों को क्षमा किया गया, किन्तु तेरह न्यायाधीशों, जिन्होंने चार्ल्स प्रथम

1 'He was as fully determined as his father and grandfather had been to be an absolute monarch, but he cared nothing about the appearance of power so long as be had its substance.' —*Southgate*

2 'Not to go upon his travels again.'

की मृत्यु-दण्ड की आज्ञा पर हस्ताक्षर किए थे, को मृत्यु-दण्ड दिया गया, तथा पच्चीस व्यक्तियों को आजीवन कारावास दिया गया। **क्रामवैल के शव को कब्र से निकाल कर फांसी दी गयी।** धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान किए जाने की समस्या अत्यन्त गम्भीर थी। इस समस्या का समाधान कन्वेन्शन न कर सका, अतः इसे आगामी संसद के लिए स्थगित कर दिया गया। कॉमनवैल्थ के समय में प्राप्त भूमि की समस्या का निराकरण करना भी अत्यन्त कठिन था। अन्त में इस सम्बन्ध में यह निर्णय लिया गया कि राजा की अथवा अन्य व्यक्तियों की वह भूमि जिस पर गणतन्त्र-शासन ने अधिकार कर लिया था, उन्हें लौटा दी जाएगी, परन्तु जिन व्यक्तियों ने अपनी भूमि को स्वयं बेचा था, चाहे उसका कुछ भी कारण रहा हो, उनको भूमि वापस नहीं दिलायी जाएगी, किन्तु इस प्रकार की व्यवस्था से जनता सन्तुष्ट न हो सकी।

कन्वेन्शन ने ब्रेडा की घोषणा से सम्बन्धित कार्यों के अतिरिक्त राजा की आय को निश्चित करने का कार्य भी किया। चार्ल्स द्वितीय को बारह लाख पौंड वार्षिक आय स्वीकृत की गयी तथा उसका सामन्तशाही लगान पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

(1) **कैवेलियर संसद** (Cavalier Parliament)—उपर्युक्त समस्त कार्यों के पश्चात् 'कन्वेन्शन' भंग हो गयी तथा एक नवीन संसद बनी। इस नवीन संसद ने 1661 ई. से 1679 ई. तक कार्य किया। लगभग अट्ठारह वर्षों तक कार्य करने के कारण इसे **'पुनर्स्थापन की दीर्घ संसद'** (Long Parliament of Restorations) कहा जाता है। इस संसद को कैवेलियर संसद (Cavalier Parliament) भी कहा जाता है, क्योंकि इसके अधिकांश सदस्य रायलिस्ट थे, जो घुड़सवारी की भावना से प्रेरित थे। इस संसद के शासनकाल में अनेक मन्त्रियों ने कार्य किया। यह संसद राजा से भी अधिक राजतन्त्र की समर्थक थी।

(2) **क्लैरैण्डन कोड** (Clarendon Code)—चार्ल्स द्वितीय का **प्रथम मन्त्री एडवर्ड हाइड** (Edward Hyde) **था, जिसे 'अर्ल ऑफ क्लैरैण्डन' की उपाधि प्रदान की गयी थी। अतः वह क्लैरैण्डन के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध था।** उसने लगभग सात वर्षों तक कार्य किया। चार्ल्स द्वितीय क्लैरैण्डन पर अत्यधिक विश्वास करता था एवं समस्त कार्यों को उसे ही सौंप रखा था, अतः क्लैरैण्डन को 'आधा राजा' (Half King) भी कहा जाता था। क्लैरैण्डन एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति था। उसके कार्यकाल में सर्वप्रमुख समस्या धर्म की थी क्योंकि इस विषय को कन्वेन्शन में आगामी संसद के लिए स्थगित कर दिया था। क्लैरैण्डन के कार्यकाल में संसद ने धर्म-सम्बन्धी चार अधिनियम पारित किए, जिन्हें 'क्लैरैण्डन कोड' (Clarendon Code) कहा जाता है। ये नियम प्यूरिटंन सम्प्रदाय के विरुद्ध थे। **ये चार धर्म सम्बन्धी नियम निम्न थे :**

(i) **निगम नियम** (Corporation Act)—संसद ने सर्वप्रथम 1661 ई. में निगम नियम पारित किया। नगर सभाओं (corporation) में प्यूरिटनों की अधिकता थी। इस सभा द्वारा ही नगर का प्रशासन होता था तथा इसे संसद-सदस्य चुनने का भी अधिकार था। **इस नियम के द्वारा कोई भी व्यक्ति बिना प्रतिज्ञा किए कि वह राजा के विरुद्ध हथियार उठाने को गैर-कानूनी मानेगा तथा इंग्लैण्ड के चर्च का अनुयायी होगा, नगर सभाओं का सदस्य नहीं हो सकता था।** इस प्रकार प्यूरिटनों को नगर सभाओं तथा लोकसभा पर प्रभुत्व स्थापित करने से रोका गया।

(ii) **एकरूपता का नियम** (Act of Uniformity)—1662 ई. में एकरूपता का अधिनियम पारित किया गया। इस नियम के अनुसार प्रत्येक अध्यापक एवं पादरी को राजा के प्रति हथियार न उठाने तथा इंग्लैण्ड के चर्च की प्रार्थना पुस्तक के अनुरूप चलना आवश्यक था। यद्यपि प्रार्थना-पुस्तक में अनेक सुधार किए गए थे, किन्तु फिर भी वह मूलतः प्यूरिटन

विरोधी थे। **इस अधिनियम का उद्देश्य गिरजाघरों से प्यूरिटनों को निष्कासित करना था।** इस अधिनियम के परिणामस्वरूप लगभग दो हजार पादरियों, जिन्होंने इस अधिनियम का पालन करने से इन्कार किया था, को पदच्युत कर दिया गया।

(iii) **सभा-नियम** (Conventicle Act)—1664 ई. में संसद ने सभा-नियम पारित किया। इस नियम के द्वारा कोई भी व्यक्ति जो इंग्लैण्ड के चर्च को नहीं मानता था, पांच व्यक्तियों से अधिक की सभा नहीं कर सकता था। इस नियम का उल्लंघन करने वाले को बन्दी बनाया जाता था। यदि कोई व्यक्ति तीन बार इस अधिनियम का उल्लंघन करता तो उसे काला पानी की सजा दी जाती थी।

(iv) **पांच मील का नियम** (The Five Miles Act)—**यह अधिनियम 1665 ई. में पारित किया गया।** इस नियम के द्वारा दो हजार पदच्युत पादरियों को अपने पुराने शहर अथवा किसी भी नगर निगम की पांच मील की परिधि के अन्दर जाने पर प्रतिबन्ध लगाया गया जब तक कि निगम नियम को स्वीकार न करें तथा सरकार व चर्च के प्रचलित कानूनों में हस्तक्षेप न करने की शपथ न ले लें।

उपर्युक्त नियमों को यद्यपि 'क्लैरेण्डन कोड' के नाम से जाना जाता है, किन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि ये नियम न तो उनकी प्रेरणा अथवा प्रयत्नों और न ही राजा की प्रेरणा से पारित हुए थे। चार्ल्स द्वितीय धार्मिक अत्याचारों पर विश्वास नहीं करता था। इन नियमों का अत्यन्त कठोरतापूर्वक पालन किया गया, परिणामस्वरूप हजारों प्यूरिटनों को बन्दी बनाया गया तथा देश से निकाला गया। **'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' के प्रसिद्ध लेखक जॉन बैनयन (John Banyan) को बारह वर्षों तक कारावास में रहना पड़ा।** इस प्रकार ब्रेडा की घोषणा, जिसमें धार्मिक स्वतन्त्रता का आश्वासन दिया गया था, को पूर्णरूपेण भुला दिया गया।[1] इस प्रकार लॉड और चार्ल्स प्रथम के धार्मिक प्रबन्ध को पुनः प्रचलित किया गया। प्यूरिटनों के विरुद्ध होने वाली प्रतिक्रिया का सबसे अच्छा परिणाम यह था कि पुनर्स्थापना कार्य स्वयं संसद का था। लॉड ने संसद की अवहेलना करते हुए अपने विरोधियों को दण्डित किया था, परन्तु पुनर्स्थापना काल के विरोधियों को लोकसभा द्वारा बनाए गए नियमों द्वारा ही सजा दी गई। प्यूरिटनों के विरुद्ध उसी शक्तिशाली प्रतिक्रिया ने राजतन्त्र को सम्मानित किया तथा राजभक्ति को ही धर्म का रूप प्रदान किया।[2]

इन नियमों को इंग्लैण्ड की जनता ने पसन्द न किया। इसी समय एक अन्य प्रमुख घटना इंग्लैण्ड में हुई। 1665 ई. में इंग्लैण्ड में अचानक प्लेग फैला जिसमें एक लाख से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। जनता में भय व्याप्त हो गया। जनता अभी प्लेग को भली-भांति भूल भी न सकी थी कि एक अन्य घटना ने लन्दन के निवासियों को आतंकित कर दिया। 1666 ई. में लन्दन में भयंकर अग्निकांड हुआ। वह अग्नि पांच दिन व पांच रात तक जलती रही। इसके परिणामस्वरूप आधे से अधिक लन्दन अग्नि को भेंट हो गया, किन्तु इस अग्निकांड से लन्दन में पुराने एवं गन्दे मकानों के स्थान पर नए साफ-सुथरे तथा हवादार मकानों का निर्माण किया गया जिससे प्लेग का प्रकोप फिर कभी लन्दन में न हुआ।

1 'The promise of liberty to tender consciences', made in the Declaration of Breda, was forgotten.' —*Southgate*
2 'Thus the ecclesiastical system of Land and Charles I was fully restored. It is the best proof of the toughness of the reaction against Puritanism that Restoration was the work of Parliament itself.' —*T. F. Tout*

क्लैरेण्डन ने सात वर्षों तक मन्त्री के रूप में कार्य किया। वह एक उदार व्यक्ति था तथा अपनी उदारता के कारण ही असफल प्रमाणित हुआ। चार्ल्स द्वितीय उसके आदर्शवाद एवं उपदेश से तंग आ चुका था। संसद-सदस्य भी उसका उपहास करते थे। **राजतन्त्र समर्थक उसकी उदारता के कारण उससे रुष्ट थे, प्यूरिटन क्लैरेण्डन कोड के कारण उसे नापसन्द करते थे।** जनता भी उसकी विरोधी हो गयी तथा उसे स्वार्थी कहने लगी क्योंकि उसने अपनी पुत्री का विवाह चार्ल्स द्वितीय के अनुज जेम्स से कर दिया था। प्लेग एवं अग्निकांड के कारण भी उसकी अत्यधिक बदनामी हुई यद्यपि इसमें उसका कोई दोष न था। 1667 ई. में हॉलैण्ड के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ हुआ तो हॉलैण्ड की नौ सेना टेम्स नदी के मुहाने तक आ गयी। इसका उत्तरदायित्व भी क्लैरेण्डन पर ही थोपा गया। इसके अतिरिक्त क्लैरेण्डन ने डन्कर्क नामक दुर्ग फ्रांस के राजा लुई चौदहवें को बेचा था। **क्लैरेण्डन पर आरोप लगाया गया है कि उसने इसमें रिश्वत ली है, अतः उसने पिकैडली में जब अपना मकान बनवाया तो जनता ने उसका नाम 'डन्कर्क हाउस' रख दिया।**

उपर्युक्त समस्त कारणों से चार्ल्स द्वितीय ने उसे पदच्युत कर दिया तथा संसद ने उस पर महाभियोग चलाया। क्लैरेण्डन इंग्लैण्ड छोड़कर चला गया। क्लैरेण्डन की सम्पत्ति पर सरकार ने अधिकार कर लिया तथा उसके मकान के कुछ भाग में से हाइड पार्क बनाया गया।

(3) केबाल मन्त्रिमण्डल (Cabal Ministry)—क्लैरेण्डन के पश्चात् चार्ल्स द्वितीय ने पांच मन्त्रियों को नियुक्त किया। इन्होंने 1667 ई. से 1673 ई. तक कार्य किया। **ये पांच मन्त्री—क्लिफर्ड (Clifford), आर्लिंगटन (Arlington), बकिंघम, ऐशले कूपर (Ashley Cooper) एवं लॉडरडेल (Lauderdale) थे। इन मन्त्रियों के नाम के प्रथम अक्षरों को मिलाने से 'केबाल' (CABAL) शब्द बनता था। इसी के आधार पर इस मन्त्रिमण्डल का नाम 'केबाल मन्त्रिमण्डल' पड़ा।**[1] यह मन्त्रिमण्डल सामूहिक रूप से कार्य नहीं करता था क्योंकि इसमें प्रथम दो कैथोलिक थे, बकिंघम राजा का मित्र था, ऐशले एक ऐसा राजनीतिज्ञ था जो ठीक समय पर पक्ष-परिवर्तन कर लेता था। वह अत्यन्त योग्य था तथा धार्मिक सहिष्णुता का अनुयायी था। ऐशले व्यापार तथा औपनिवेशिक विस्तार में अत्यन्त रुचि रखता था। लॉडरडेल स्कॉटलैण्ड का प्रशासक था तथा अत्यन्त कठोर नीति का समर्थक था। इस प्रकार केबाल मन्त्रिमण्डल आधुनिक मन्त्रिमण्डल के समान न था। केबाल मन्त्रिमण्डल के समय की प्रमुख घटनाएं निम्नलिखित थीं :

(i) डोवर की गुप्त सन्धि (Secrat Treaty of Dover)—चार्ल्स द्वितीय यद्यपि स्वयं को इंग्लैण्ड के चर्च का अनुयायी बताता था, किन्तु वास्तव में वह कैथोलिक धर्म का अनुयायी था। 1670 ई. में चार्ल्स द्वितीय ने एक गुप्त सन्धि फ्रांस के साथ की जिसमें उसने फ्रांस को वचन दिया कि इंग्लैण्ड हॉलैण्ड से युद्ध करेगा तथा फ्रांस उसे आर्थिक सहायता प्रदान करेगा। फ्रांस इंग्लैण्ड में कैथोलिकों को अधिक सुविधाएं दिए जाने के लिए चार्ल्स द्वितीय पर दबाव डाल रहा था।

(ii) धार्मिक अनुग्रह की घोषणा एवं टेस्ट अधिनियम (Declaration of Indulgence and Test Act)—डोवर की गुप्त सन्धि के परिणामस्वरूप चार्ल्स द्वितीय ने धार्मिक अनुग्रह की घोषणा 1672 ई. में की। इसके अनुसार कैथोलिकों तथा एंग्लिकन चर्च में विश्वास न

1 'केबाल' शब्द फ्रांसीसी शब्द 'केवेल' से मिलता है जिसका अर्थ 'एक विशिष्ट मण्डली' होता है।

रखने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध प्रचलित समस्त कठोर नियमों को समाप्त कर दिया गया। यह घोषणा संसद की अनुपस्थिति में की गयी थी, किन्तु जब संसद का अधिवेशन हुआ तो संसद ने इसका विरोध किया। संसद का विचार था कि राजा संसद की स्वीकृति के बिना इस प्रकार की घोषणा नहीं कर सकता। संसद का अनुमान था कि चार्ल्स द्वितीय कैथोलिकों के साथ मिलकर षड्यन्त्र कर रहा है, यहां तक कि कुछ ऐसे व्यक्ति जो एंग्लिकन चर्च के अनुयायी न थे तथा जिन्हें इस घोषणा से लाभ ही था, ने इस घोषणा का विरोध किया, क्योंकि उन्होंने इसे रोम का प्रभुत्व पुनः इंग्लैण्ड में स्थापित करने का एक प्रयत्न समझा। अतः इसका विरोध हुआ, परिणामस्वरूप चार्ल्स ने इस घोषणा को वापिस ले लिया। **इसके अतिरिक्त 1673 ई. में संसद द्वारा पारित 'टेस्ट अधिनियम' पर भी हस्ताक्षर कर दिए।** इस अधिनियम के द्वारा प्रत्येक राज्य कर्मचारी को एंग्लिकन प्रार्थना-विधि को स्वीकार करना पड़ता था और कैथोलिक सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का विरोधी होना परमावश्यक था। इस प्रकार अधिनियम का उद्देश्य कैथोलिकों को राजकीय पदों से हटाना था। इसके परिणामस्वरूप क्लिफर्ड तथा आर्लिंगटन ने त्याग-पत्र दे दिया।

इसी समय चार्ल्स द्वितीय के भाई जेम्स ने एक कैथोलिक राजकुमारी से विवाह किया। जनता एवं संसद ने जेम्स के इस कार्य को पसन्द न किया। प्रथम पत्नी से जेम्स की दो पुत्रियां थीं, यदि इस नवीन पत्नी से उसे पुत्र प्राप्त हो जाता तो इंग्लैण्ड पर कैथोलिक शासन बना रहता, अतः जनता में आक्रोश उत्पन्न होना स्वाभाविक था। चार्ल्स ने अत्यन्त कुशलता का परिचय देते हुए जनता को प्रसन्न करने हेतु केबाल मन्त्रिमण्डल को भंग कर दिया तथा डेन्बी नामक व्यक्ति से मन्त्रिमण्डल बनाने को कहा। डेन्बी एंग्लिकन चर्च का कट्टर अनुयायी था।

(4) **डेन्बी का मन्त्रिमण्डल** (Danbi's Cabinet)—डेन्बी ने 1673 ई. से 1678 ई. तक मन्त्री के रूप में कार्य किया। डेन्बी धार्मिक सहिष्णुता की नीति का विरोधी था। वैदेशिक नीति में डेन्बी चार्ल्स का विरोधी नीति का था। डेन्बी फ्रांस के स्थान पर हॉलैण्ड से मित्रता करना चाहता था तथा उसने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए हॉलैण्ड के राजा से 1674 ई. में सन्धि की तथा जेम्स की पुत्री मेरी का विवाह हॉलैण्ड के राजा विलियम ऑफ आरेन्ज (Willian of Orange) से कराया।

पोप का षड्यन्त्र (The Popish Plot)—1678 ई. में इंग्लैण्ड में टाइटस ओट्स (Titus Oates) नामक एक व्यक्ति ने लन्दन के एक मजिस्ट्रेट को पोप के षड्यन्त्र की सूचना दी, जिसके द्वारा चार्ल्स द्वितीय की हत्या करके फ्रांस की सेना की सहायता से जेम्स का राजा बनाया जाना था। इस मजिस्ट्रेट की कुछ समय पश्चात् ही हत्या कर दी गयी। इस सूचना एवं मजिस्ट्रेट की हत्या से इंग्लैण्ड में अत्यन्त उत्तेजना फैल गई तथा सम्पूर्ण इंग्लैण्ड को विश्वास हो गया कि निश्चित रूप से षड्यन्त्र हो रहा है। संसद ने भी इसे स्वीकार किया यद्यपि यह पूर्णतया निराधार एवं काल्पनिक धारणा थी। **संसद के विरोधी सदस्यों तथा विशेष रूप से ऐशले कूपर (अर्ल ऑफ शेफ्ट्सबरी) ने इस षड्यन्त्र की अफवाह से लाभ उठाने का प्रयत्न किया।** उनका उद्देश्य चार्ल्स के पश्चात् जेम्स को राजा बनने से रोकना तथा चार्ल्स के अवैध पुत्र ड्यूक ऑफ मन्मथ (Duke of Monmouth) को राजगद्दी पर बैठना था जो कि प्रोटेस्टेण्ट था। इस षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेण्ट सचेत हो गए। चार्ल्स द्वितीय को इस

षड्यन्त्र पर विश्वास न था, किन्तु वह इंग्लैण्ड की जनता को यह समझाने में असफल रहा क्योंकि इंग्लैण्ड की जनता का विचार था कि रोमन कैथोलिक कोई भी कुकृत्य कर सकते हैं।[1]

(5) **तीन लघु संसद (Three Short Parliament)**—जिस समय पोप के षड्यन्त्र की अफवाह के कारण वातावरण में उत्तेजना व्याप्त थी, उसी समय यह ज्ञात हुआ कि चार्ल्स ने डेन्बी से कुछ पत्र लिखवाकर फ्रांस के राजा लुई को भेजे थे, जिनमें धन की मांग की गई थी। डेन्बी पर महाभियोग चलाया गया क्योंकि संसद का विचार था कि डेन्बी के यह कहने से कि ये पत्र उसने राजा की आज्ञा से लिखे थे, वह अपराध से मुक्त नहीं हो सकता, क्योंकि यह कार्य कानून के विपरीत था। राजा चार्ल्स ने डेन्बी को बचाने के उद्देश्य से 1679 ई. में केवैलियर संसद को भंग कर दिया।

(i) **प्रथम लघु संसद**—1679 से 1681 ई. के मध्य चार्ल्स द्वितीय ने तीन संसद आमन्त्रित कीं। प्रथम संसद ने भी डेन्बी पर महाभियोग चलाया तथा उसे कैद कर लिया, यद्यपि चार्ल्स द्वितीय उसे क्षमा कर चुका था। इसके अतिरिक्त अर्ल ऑफ शेफ्ट्सबरी के प्रयत्नों से बन्दी बनाए गए व्यक्ति को शीघ्र ही न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक था। इसके पश्चात् इस प्रथम लघु संसद ने बहिष्कार बिल (Exclusion Bill) को चार्ल्स के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य जेम्स के अधिकार को इंग्लैण्ड से समाप्त करना था क्योंकि वह कैथोलिक विचारधारा का था, तथा चार्ल्स के अवैध पुत्र मन्मथ को चार्ल्स का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। चार्ल्स इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। चार्ल्स ने कहा, **'मैं कभी नहीं झुकूंगा, मैं धमकियों से नहीं डरूंगा...कानून और तर्क मेरे साथ हैं तथा बुद्धिमान व्यक्ति भी मेरे साथ हैं।'**[2] चार्ल्स ने इस संसद को भंग कर दिया।

शीघ्र ही राजा के पास अनेक प्रार्थना-पत्र आए जिसमें उसने शीघ्र ही संसद आमन्त्रित करने का अनुरोध किया गया था, किन्तु राजपक्ष के समर्थकों का विचार था कि यह राजा के विशेषाधिकार में हस्तक्षेप करना था। **वह पक्ष जो संसद आमन्त्रित करने के पक्ष में था, पेटीशनर्स** (Petitioners) **कहलाया तथा राजपक्ष समर्थकों को अबोरर्स** (Abhorers) **कहा गया।** शीघ्र ही पेटीशनर्स (प्रार्थना करने वाले) अपने विरोधियों को आयरलैण्ड के विद्रोहियों के नाम पर टोरी (Tory) कहने लगे तथा ओबरर्स, पेटीशनर्स को स्कॉटलैण्ड के विद्रोहियों के नाम पर ह्विग (Whig) कहने लगे। इस प्रकार इंग्लैण्ड में दो राजनीतिक दलों का जन्म हुआ। बाद में ये ह्विग तथा टोरी क्रमशः लिबरल (Liberal) तथा कन्जरवेटिव (Conservative) कहलाए।

(ii) **द्वितीय लघु संसद**—अक्टूबर, 1680 ई. में चार्ल्स ने द्वितीय लघु संसद आमन्त्रित की। लोकसभा में बहिष्कार बिल पारित हो गया, किन्तु लॉर्ड सभा ने अस्वीकृत कर दिया क्योंकि यदि इंग्लैण्ड में इसी प्रकार की उत्तेजना रहती तो इंग्लैण्ड में पुनः गृह-युद्ध प्रारम्भ हो जाता। इसी समय एक वृद्ध कैथोलिक लॉर्ड स्टेफोर्ड को मृत्यु-दण्ड दिए जाने से जनता

---

1 'The king himself utterly disbelieved in the plot, and to his brother he made the uncomplimentary remark, 'They will never kill me to make you King's. But the London mob was intensely excited. To the people there seemad nothing unreasonable in the revelations of Titus Oates. Roman Catholics were regarded as capable of any evil.' —*Southgate*

2 'I will never yield and I will not be intimidated......I have reason and now in my favour, well-minded people are on my side.' —*Charles II*

को कैथोलिकों से घृणा के स्थान पर सहानुभूति उत्पन्न हो गयी। चार्ल्स ने जो कि इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, इस संसद को भी भंग कर दिया।

(iii) **तृतीय लघु संसद**—1681 ई. में चार्ल्स द्वितीय ने ऑक्सफोर्ड में तृतीय लघु संसद आमन्त्रित की। इस संसद को भी बहिष्कार बिल के कारण चार्ल्स ने शीघ्र ही भंग कर दिया तथा **त्रिवर्षीय नियम** (Triennial Act) की अवहेलना करते हुए उसने अपने शासन काल में फिर संसद आमन्त्रित न की। ह्विग दल के नेता शेफ्ट्सबरी तथा मन्मथ हॉलैण्ड भाग गए।

(6) **राई हाउस षड्यन्त्र** (Rye House Plot)—1683 ई. में चार्ल्स द्वितीय की हत्या करने के उद्देश्य से एक षड्यन्त्र किया गया जिसके द्वारा घुड़दौड़ से लौटते समय राई हाउस के निकट चार्ल्स तथा उसके भाई जेम्स की हत्या की जानी थी, किन्तु चार्ल्स को इसकी सूचना मिल गयी तथा षड्यन्त्रकारियों को बन्दी बनाया गया। दो ह्विग नेताओं रसल तथा सिडनी को मृत्यु-दण्ड दिया गया। इस षड्यन्त्र के परिणामस्वरूप ह्विग दल की अत्यन्त बदनामी हुई।

ह्विग दल की बदनामी से चार्ल्स द्वितीय ने लाभ उठाया तथा अपनी शक्ति में वृद्धि की। चार्ल्स ने नगर सभाओं को भंग कर दिया तथा उसके स्थान पर अपने कर्मचारी नियुक्त किए। चार्ल्स ने टेस्ट अधिनियम को भी समाप्त कर दिया तथा जेम्स को पुनः उसके पुराने पद पर बहाल कर दिया। इस प्रकार चार्ल्स ने 1681 ई. से 1685 ई. तक स्वेच्छाचारिता से राज्य किया।

चार्ल्स द्वितीय निश्चित रूप से स्टुअर्ट शासकों में सर्वाधिक योग्य था।[1] यद्यपि वह कैथोलिक था, किन्तु उसने इस तथ्य को मृत्यु-शय्या पर ही बताया। वह निरंकुशपूर्वक शासन करना चाहता था, किन्तु उसने समय को समझा तथा अत्यन्त कुशलतापूर्वक संसद की सहायता से ही प्रारम्भ में शासन किया तथा शनैः-शनैः अपने राज्य के अन्तिम काल में सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त करने में सफल हुआ और निरंकुशतापूर्वक राज्य किया।

जेम्स द्वितीय एवं वैभवपूर्ण क्रान्ति
[JAMES II AND THE GLORIOUS REVOLUTION (1685-1688)]

जीवन परिचय (Life Sketch)

1685 ई. में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हुई। चार्ल्स द्वितीय के कोई वैध सन्तान न होने के कारण उसने अपने भाई जेम्स को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। फरवरी, 1685 ई. में जेम्स सरलता से इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुआ। **यद्यपि 1680 ई. में जेम्स द्वितीय को राज्याधिकार से च्युत करने का प्रयत्न किया गया, किन्तु 1685 ई. में जब वह राजा बना, उसका स्वागत किया गया तथा इंग्लैण्ड की जनता ने राजभक्ति का परिचय दिया।** जेम्स द्वितीय ने सिंहासनारूढ़ होते ही संसद का अधिवेशन आमन्त्रित किया। इस संसद में अधिकांश सदस्य टोरी थे जो राजा के दैवी अधिकारों और राजा के अन्य अधिकारों के समर्थक थे तथा राजा से अपेक्षा करते थे कि वह कानून-निर्माण और अर्थव्यवस्था में संसद को महत्व देगा एवं अपनी गृह एवं वैदेशिक नीति में एंग्लिकन चर्च का ध्यान रखेगा। इस संसद ने जेम्स के व्यक्तिगत व्यय के लिए पर्याप्त धनराशि स्वीकृत की जो चार्ल्स द्वितीय तथा अन्य स्टुअर्ट शासकों की आबंटित धनराशि से कहीं अधिक थी। जेम्स को संसद ने भारी कर लगाने का अधिकार दे दिया। इस प्रकार, जेम्स टोरी दल के साथ सद्व्यवहार तथा एंग्लिकन चर्च का ध्यान रखकर

1 'He was at least and in some ways the greatest of the Stuart Kings.'—*Southgate*

अत्यन्त सरलतापूर्वक शासन कर सकता था, किन्तु जेम्स ऐसा कर पाने में सफल न हो सका।

जेम्स द्वितीय अपने भाई चार्ल्स द्वितीय के समान योग्य एवं दूरदर्शी न था। चार्ल्स द्वितीय ने अपने भावों को प्रकट न करने की अद्भुत क्षमता थी। यद्यपि चार्ल्स द्वितीय भी निरंकुशतापूर्वक राज्य करना चाहता था। जब उसे अपना रहस्य प्रकट होते प्रतीत होता वह तुरन्त उसका उत्तरदायित्व अपने मन्त्रियों पर डाल देता था। जेम्स में यह गुण न था।[1] अतः जहां चार्ल्स ने 25 वर्षों तक सरलतापूर्वक शासन किया, जेम्स को तीन वर्ष पश्चात् ही इंग्लैण्ड छोड़कर भागने पर विवश होना पड़ा। यद्यपि जेम्स द्वितीय, चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में ड्यूक तथा सेनापति रह चुका था, किन्तु वीर एवं साहसी होते हुए भी उसमें राजनीतिक दूरदर्शिता एवं समय के अनुरूप कार्य करने की क्षमता न थी। चार्ल्स द्वितीय ने ही जेम्स के विषय में कहा था, **'जब मेरी मृत्यु हो जाएगी और मैं नहीं रहूंगा तब मैं नहीं जानता मेरा भाई क्या करेगा? जब वह राजा बनेगा तो मुझे भय है कि कहीं उसे सुदूर यात्रा पर जाने के लिए विवश न कर दिया जाए।'**[2]

मन्मथ का विद्रोह
(MONMOUTH'S REBELLION)

मन्मथ चार्ल्स द्वितीय का अवैध पुत्र था। ह्विग नेताओं ने चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में मन्मथ को उसका उत्तराधिकारी घोषित किए जाने का प्रयत्न किया था, किन्तु चार्ल्स इसके लिए तैयार न था तथा इसी कारण से उसने बहिष्कार बिल पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। इसी प्रश्न पर उसने तीनों लघु संसद भंग की थीं। ह्विग नेताओं ने तब चार्ल्स की हत्या करने का प्रयत्न राई हाउस षड्यन्त्र द्वारा किया, किन्तु यह षड्यन्त्र असफल हो गया था जिसके कारण अनेक नेताओं को दण्डित किया गया तथा कुछ इंग्लैण्ड से भाग गए।

जेम्स के राजगद्दी पर आसीन होने पर ह्विग नेताओं ने मन्मथ को उत्तेजित किया कि वह जेम्स द्वितीय के विरुद्ध विद्रोह करे। मन्मथ ने इंग्लैण्ड आकर स्वयं को चार्ल्स द्वितीय का पुत्र घोषित करते हुए स्वयं को इंग्लैण्ड का वास्तविक शासक बताया। मन्मथ ने सेना भी एकत्र की जिसमें अधिकांश कृषक तथा मजदूर थे। जेम्स द्वितीय ने मन्मथ के विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी। **दोनों सेनाओं में सेजमूर (Sedgemoor) नामक स्थान पर युद्ध हुआ।** यद्यपि मन्मथ की सेना ने अत्यन्त वीरता प्रदर्शित की, किन्तु अशिक्षित होने एवं अस्त्र-शस्त्र कम होने के कारण वे परास्त हुए तथा मन्मथ को बन्दी बनाया गया। बाद में उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया। पश्चिमी प्रदेश में विद्रोहियों की जांच करने के लिए न्यांयाधीश जेफ्रीज (Jeffrys) को भेजा गया जिसने कठोर नीति अपनायी। तीन सौ व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया तथा उनके शवों को सड़क के किनारे वृक्षों पर लटका दिया गया। आठ सौ से अधिक व्यक्तियों को वेस्टइण्डीज, दास बनाकर बेचा गया। इस कठोर नीति के कारण यह न्यायालय 'खूनी

1 **"James, a man with some regard for truth, honour and religion, where his brother had none, resembled his father and grandfather in being unable or unwilling to conceal his wish for arbitrary and openly referring to Divine Right."—*Southgate***

2 **'When I am dead and gone. I know not what my brother will do; I am much afraid that when he comes to wear the crown he will be obliged to travel abroad.'**
—Charles II

न्यायालय' (The Bloody Assizes) कहलाया। इस अत्याचार से इंग्लैण्ड की जनता आतंकित हो गयी तथा उसमें जेम्स द्वितीय के प्रति असन्तोष एवं घृणा उत्पन्न हो गयी।

वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारण
(CAUSES OF THE GRORIOUS REVOLUTION)

जेम्स द्वितीय ने तीन वर्षों तक शासन किया, तत्पश्चात् उसे इंग्लैण्ड छोड़कर भागने पर विवश होना पड़ा। अपने तीन-वर्षीय अल्प शासनकाल में गृह-नीति के अन्तर्गत उसने जितने भी कार्य किए उनके परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में वैभवपूर्ण क्रान्ति का जन्म हुआ। इस **क्रान्ति में एक बूंद भी रक्त धरती पर नहीं गिरा, इसी कारण इसे वैभवपूर्ण क्रान्ति अथवा रक्तहीन क्रान्ति (Bloodles Revolution) कहा जाता है।**

वैभवपूर्ण क्रान्ति के निम्नलिखित कारण थे :

(1) **राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष** (Struggle between Kings and their Parliament)—वैभंवपूर्ण क्रान्ति के कारणों को जानने के लिए ट्यूडरकाल का अध्ययन करना आवश्यक है। हेनरी सप्तम द्वारा सामन्तों की शक्ति नष्ट किए जाने के पश्चात् से ट्यूडर शासक निरंकुश हो गए थे। ट्यूडर शासकों द्वारा मध्यवर्ग को प्रोत्साहन दिया गया था तथा इस वर्ग ने उच्च्व शिक्षा प्राप्त की थी। इसी काल में हुए पुनर्जागरण तथा धर्म-सुधार आन्दोलनों के कारण मध्यवर्ग अपने अधिकारों के प्रति अत्यन्त जाग्रत हो चुका था। **एलिजाबेथ के शासनकाल के अन्तिम वर्षों में मध्यवर्ग द्वारा रानी एलिजाबेथ का विरोध होने लगा था, किन्तु एलिजाबेथ के अंत्यन्त कुशल होने एवं वैदेशिक नीति में असाधारण सफलता के कारण जनता उसका अत्यधिक सम्मान करती थी; अतः एलिजाबेथ को विशेष संकट का सामना नहीं करना पड़ा।** 1603 ई. में स्टुअर्ट वंश की इंग्लैण्ड में स्थापना हुई। जेम्स प्रथम ने जनता पर अपने दैविक अधिकारों को थोपने का प्रयत्न किया, किन्तु जनता ने इसका विरोध किया, परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। जेम्स प्रथम तो किसी प्रकार शासन करने में सफल हो गया, किन्तु चार्ल्स प्रथम को इस संघर्ष का परिणाम भुगतना पड़ा और उसे 1649 ई. में मृत्यु-दण्ड दे दिया गया। क्रामवैल तथा चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल से यह संघर्ष चलता रहा। जेम्स द्वितीय के समय में राजा और संसद का संघर्ष तीव्र हो गया तथा वैभवपूर्ण क्रान्ति के रूप में इसका अन्त हुआ। इस प्रकार संसद ने राजा पर विजय प्राप्त की।

(2) **जेम्स द्वितीय की निरंकुशता** (Autocracy of James II)—जेम्स द्वितीय ने प्रारम्भ से ही निरंकुशतापूर्वक शासन करने का प्रयत्न किया। वह अपनी अत्याचारी एवं निरंकुश नीति से जनता में भय एवं आतंक उत्पन्न करना चाहता था, ताकि वह स्वेच्छाचारिता से शासन कर सके। जेम्स द्वितीय कैथोलिक था तथा इंग्लैण्ड की अधिकांश जनता प्रोटेस्टेण्ट थी। जेम्स कैथोलिक धर्म का इंग्लैण्ड में प्रचार करना चाहता था, इसी उद्देश्य से जेम्स ने लन्दन में एक नवीन गिरजाघर बनवाया जिसका जनता ने घोर विरोध किया। जेम्स ने अवसर पाकर अपनी सेना में वृद्धि की, ताकि जनता को आतंकित कर सके। जेम्स की सेना में अधिकांश कैथोलिक थे। इंग्लैण्ड की जनता को स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि इंग्लैण्ड में पुनः सैनिक शासन स्थापित होगा। जनता इंग्लैण्ड में पुनः सैनिक शासन की स्थापना नहीं चाहती थी क्योंकि क्रामवैल के सैनिक शासन से ही जनता तंग आ चुकी थी। अतः जेम्स की निरंकुश नीति का जनता द्वारा विरोध होना स्वाभाविक था।

(3) **खूनी न्यायालय** (Bloody Assizes)—ह्विग दल इंग्लैण्ड में जेम्स द्वितीय के राजगद्दी पर आसीन होने का विरोधी था। ह्विग नेताओं ने चार्ल्स के अवैध पुत्र मन्मथ (Monmouth) को विद्रोह करने के लिए प्रेरित किया। मन्मथ ने सेना एकत्र करके स्वयं को इंग्लैण्ड का उत्तराधिकारी घोषित किया। जेम्स द्वितीय ने सेजमूर नामक स्थान पर मन्मथ को परास्त करके बन्दी बनाया। विद्रोहियों के साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया तथा मन्मथ को मृत्यु-दण्ड दिया गया। इस न्यायालय को खूनी न्यायालय (Bloody Assizes) कहा गया तथा जनता का जेम्स द्वितीय की अत्याचारी एवं कठोर नीति से घृणा हो गयी।

जेम्स ने अपनी निरंकुश नीति को इंग्लैण्ड तक ही सीमित नहीं रखा अपितु आयरलैण्ड एवं स्कॉटलैण्ड में भी कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया। स्कॉटलैण्ड एवं आयरलैण्ड में कैथोलिक अधिकारियों को नियुक्त किया गया जिन्होंने वहां के प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों पर अत्याचार किए। अत: स्कॉटलैण्ड में अर्ल ऑफ अरगिल ने विद्रोह किया, किन्तु कठोरतापूर्वक इस विद्रोह का दमन किया गया, विद्रोहियों को अत्यन्त कठोर दण्ड दिए गए। तीन सौ व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड दिया गया तथा लगभग आठ सौ व्यक्तियों को दास बनाकर वेस्टइण्डीज में बेच दिया गया। जेफ्रीज नामक न्यायाधीश ने स्त्रियों एवं बच्चों को भी क्षमा नहीं किया तथा उनके साथ अभद्र व्यवहार किया। इंग्लैण्ड की जनता के साथ-साथ स्कॉटलैण्ड तथा आयरलैण्ड की जनता भी जेम्स की विरोधी हो गयी।

इस प्रकार पुराने कैथोलिक न्यायालयों की पुनर्स्थापना तथा इन न्यायालयों द्वारा अत्यन्त कठोर नीति के परिणामस्वरूप जेम्स की अत्यन्त बदनामी हुई। कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की भी स्थापना की गयी थी जिसमें कैथोलिक धर्म की आलोचना करने वाले व्यक्तियों को लाया जाता था तथा कठोर दण्ड दिया जाता था। गिरजाघरों में जो पादरी राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते थे उन्हें पदच्युत कर दिया जाता था। इन न्यायालयों की भी अत्यन्त भर्त्सना की गयी।

(4) **टेस्ट नियम की अवहेलना** (Rejection of Test Act)—इंग्लैण्ड में चार्ल्स द्वितीय के समय संसद ने टेस्ट अधिनियम पारित किया था। इस अधिनियम के द्वारा केवल एंग्लिकन चर्च के अनुयायी ही सरकारी कर्मचारी हो सकते थे। अत: कैथोलिकों को सरकारी सेवा से वंचित कर दिया गया था। जेम्स द्वितीय स्वयं कैथोलिक था। अत: कैथोलिकों को सुविधा प्रदान करना चाहता था किन्तु टेस्ट अधिनियम के कारण वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता था।

जेम्स ने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए राजा के विशेष अधिकारों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। इसी समय गोडेन के विरुद्ध हेल्स (Godden *Vs.* Hales) **के मुकदमे में एक न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि क्योंकि कानून राजा के द्वारा बनाए जाते हैं।** अतएव राजा अपने विशेषाधिकारों के द्वारा उन कानूनों के विरुद्ध कार्य कर सकता था। इस आधार पर जेम्स ने **'राजा के निलम्बन'** (suspending) **तथा विमोचन** (dispensing) अधिकारों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। इस अधिकार के द्वारा राजा किसी भी अधिनियम को स्थगित कर सकता था तथा किसी भी व्यक्ति को दण्ड से क्षमा कर सकता था। राजा ने इन अधिकारों का प्रयोग करके टेस्ट अधिनियम (Test Act) को स्थगित कर दिया तथा कैथोलिकों को राजकीय पदों पर आसीन करना प्रारम्भ कर दिया। मन्त्री, न्यायाधीश, नगर-निगम के सदस्य तथा सेना में उच्च पदों पर कैथोलिकों की नियुक्ति की। कैथोलिकों ने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया। इंग्लैण्ड की संसद ने जेम्स के इन कार्यों का विरोध किया क्योंकि संसद

द्वारा पारित नियमों की अवहेलना करना देश के संविधान का अपमान करना था। जेम्स ने संसद के विरोध की परवाह न की, अतः जनता में विद्रोह की भावना जाग्रत होने लगी।

(5) **विश्वविद्यालयों में हस्तक्षेप** (Intreference in the University Affairs)—टेस्ट अधिनियम की अवहेलना करते हुए जेम्स द्वितीय ने विभिन्न उच्च पदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। विश्वविद्यालय भी जेम्स की इस नीति से बच नहीं सके। जेम्स ने विश्वविद्यालयों में भी कैथोलिकों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया। **क्राइस्ट चर्च कॉलेज में अधिष्ठाता** (Dean) **के पद पर एक कैथोलिक व्यक्ति की नियुक्ति की गयी तथा मेक्डालेन विद्यालय के सभी शिक्षाधिकारियों को हटा दिया गया** क्योंकि उन्होंने जेम्स की इच्छा होते हुए भी एक कैथोलिक व्यक्ति को अपना सभापति बनाने से इन्कार कर दिया था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के कुलपति को जेम्स ने पदच्युत कर दिया क्योंकि उसने एक कैथोलिक को डिग्री देने से इन्कार कर दिया था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का नवीन कुलपति एक कैथोलिक व्यक्ति को बनाया गया।

इस प्रकार शिक्षा पर कैथोलिकों का आधिपत्य स्थापित करने का जेम्स द्वितीय ने प्रयत्न किया जिससे प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को खतरा उत्पन्न हो गया क्योंकि विश्वविद्यालय से पढ़कर निकलने वाले छात्र कैथोलिक धर्म का ही प्रचार करते जिससे प्रोटेस्टेण्ट धर्म बहिष्कृत हो जाता, प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के लिए आवश्यक हो गया कि वे जेम्स का विरोध करें।

(6) **फ्रांस से मित्रता** (Alliance with France)—फ्रांस के शासक लुई का प्रभाव इस समय यूरोप में छाया हुआ था। चार्ल्स द्वितीय के समान जेम्स द्वितीय पर भी लुई चौदहवें का अत्यधिक प्रभाव था। वह फ्रांस से आर्थिक एवं सैनिक सहायता प्राप्त कर अपने निरंकुश शासन को इंग्लैण्ड में स्थापित करना चाहता था। लुई चौदहवां कट्टर कैथोलिक था तथा फ्रांस में प्रोटेस्टेण्ट वर्ग पर अत्यधिक अत्याचार करता था, अतः इंग्लैण्ड की जनता लुई चौदहवें को पसन्द नहीं करती थी तथा जेम्स से अपेक्षा करती थी कि वह फ्रांस से मित्रता न रखे। जेम्स अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए फ्रांस से मित्रता रखना आवश्यक समझता था। अतः उसने अपनी जनता के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। **यद्यपि जेम्स की गृह-नीति अत्यन्त खराब थी, किन्तु उसके पतन का वास्तविक कारण उसकी गृह-नीति नहीं अपितु वैदेशिक नीति थी।**[1] यदि वह फ्रांस के स्थान पर हॉलैण्ड से मित्रता करने का प्रयत्न करता तो उसे अपना पद छोड़ने पर विवश न होना पड़ता क्योंकि हॉलैण्ड एक प्रोटेस्टेण्ट देश था, अतः उससे मित्रता करने पर उसे इंग्लैण्ड की जनता का समर्थन प्राप्त हो जाता। ऐसा न करना उसकी भूल थी और इस गलती का परिणाम उसे शीघ्र ही भुगतना भी पड़ा।

(7) **धार्मिक अनुग्रह की घोषणाएं** (Declarations of Indulgence)—जेम्स द्वितीय पूर्णतः कैथोलिक तथा इंग्लैण्ड को एक कैथोलिक देश बनाना चाहता था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उसने टेस्ट अधिनियम की अवहेलना करके समस्त उच्च राजकीय पदों पर कैथोलिकों को नियुक्त किया। जेम्स ने रोम के पोप को भी इंग्लैण्ड आमन्त्रित किया तथा उसका अत्यधिक आदर सत्कार किया। **जेम्स ने तदोपरान्त** 1687 ई. **में धर्म अनुग्रह की प्रथम घोषणा की जिसके द्वारा कैथोलिकों तथा अन्य सम्प्रदायों पर लगे प्रतिबन्ध समाप्त कर दिए।**

1 'Tyrannical as was James II, arbitary and unconstitution as was his rule, the ultimate causes of his fall is not to be found in matters at home but in his attitude to European affairs. Had he adopted a different foreign policy he might have retained his crown till his death.' —*Southgate*

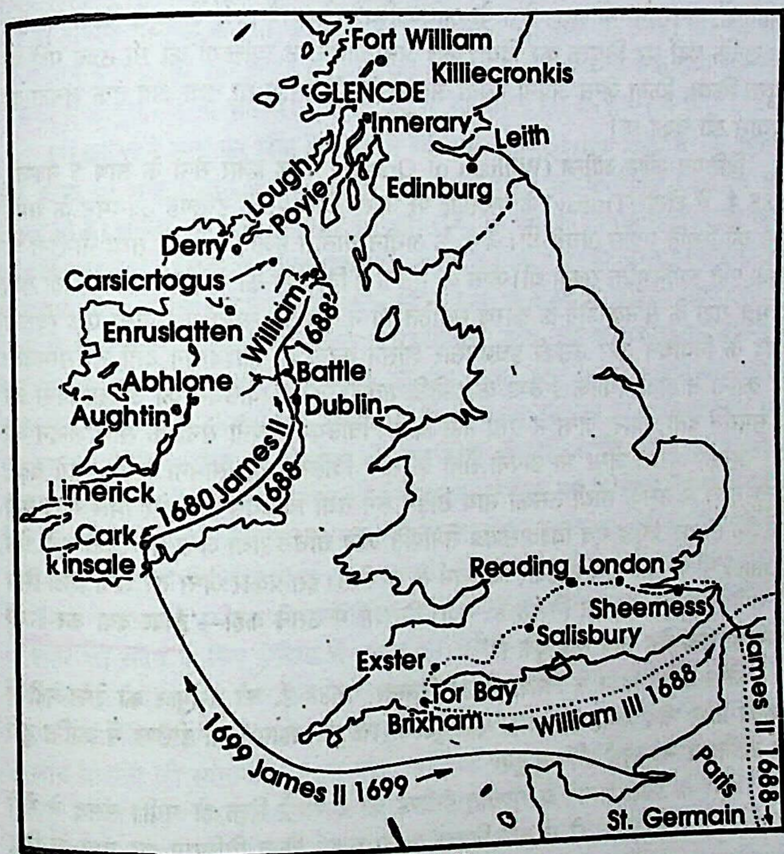
धार्मिक अनुग्रह की प्रथम घोषणा को अधिक समय नहीं हुआ था कि 1688 ई. में अपने धार्मिक अनुग्रह की द्वितीय घोषणा की। इस घोषणा के द्वारा समस्त धर्मों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की गई तथा जेम्स द्वितीय ने वर्ग तथा धर्म का पक्षपात किए बिना प्रत्येक को राजकीय पद को प्रदान करने की सुविधा दी। प्यूरिटनों को जेम्स अपने पक्ष में करना चाहता था, किन्तु प्यूरिटनों ने जेम्स के सरकारी नौकरियां देने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। जेम्स के इस कार्य से प्रोटेस्टेण्ट अत्यधिक क्रोधित हुए तथा क्रान्ति की भावना उनमें प्रबल होने लगी।

(8) **सात पादरियों को बन्दी बनाना** (Imprisonment of Seven Bishops)—जेम्स द्वितीय ने आदेश दिया था कि धार्मिक अनुग्रह की द्वितीय घोषणा को प्रत्येक रविवार को गिरजाघरों में पढ़ा जाए। **इसका तात्पर्य था कि या तो पादरी अपने धर्म और इच्छा के विरुद्ध इस घोषणा को पढ़ते अथवा राजा की आज्ञा की अवहेलना करते। अन्त में केण्टरबरी के आर्क के विरुद्ध सेनक्रोफ्ट** (Sancroft), **जो एक उग्रवादी टोरी तथा राजा के दैवी अधिकारों का समर्थक था, इस सम्बन्ध में अपने छह साथियों से परामर्श किया तथा एक प्रार्थना-पत्र राजा को प्रस्तुत किया, जिसमें उससे निवेदन किया गया था कि राजा अपनी घोषणा को पढ़ने के आदेश को वापिस ले व पुराने नियमों को तोड़ने की नीति को त्याग दे।** इस पत्र के अन्त में यह भी लिखा गया था कि हम राजा की आज्ञा की अवहेलना नहीं कर रहे हैं वरन् राजा ही देश के नियमों का उल्लंघन कर रहा है। जेम्स ने पादरियों के इस कार्य को अपमान तथा विद्रोह समझा, अतः उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर लन्दन के टॉवर में कैद कर लिया। इंग्लैण्ड की जनता ने जब पादरियों को टॉवर में जाते देखा तो क्रान्ति के लिए वह तैयार हो गयी, किन्तु न्यायाधीशों ने इन पादरियों को अपराधमुक्त घोषित किया। जनता ने पादरियों की मुक्ति पर सभी स्थानों पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा जनता के इस उल्लास में सेना ने भी भाग लिया।

(9) **जेम्स द्वारा जनता की शक्ति को न समझ पाना** (James Failed to Estimate People's Power)—जेम्स का यह भ्रम था कि वह जनता को शक्ति के द्वारा भयभीत करके स्वेच्छाचारिता से शासन कर सकता है। जेम्स द्वितीय को इतिहास से सबक लेना चाहिए था और उसे नहीं भूलना था कि जनता ने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध किस प्रकार अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था और चार्ल्स प्रथम को मृत्यु-दण्ड प्राप्त हुआ था। जेम्स के लिए यह आवश्यक था कि वह जनता की भावना को परखता और चार्ल्स द्वितीय के समान शासन करना, किन्तु उसने जनता की इच्छा के विरुद्ध कार्य किया तथा जनता की शक्ति को समझने में वह असफल रहा।

(10) **जेम्स द्वितीय के पुत्र का जन्म** (Birth of James II's Son)—जेम्स की प्रथम पत्नी से दो पुत्रियां थीं—मेरी तथा ऐन। ये दोनों ही प्रोटेस्टेण्ट थीं। अतः जनता का विचार था कि जेम्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् मेरी ही रानी बनेगी, अतः प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय को पुनः सुविधाएं प्राप्त हो सकेंगी, किन्तु 10 जून, 1588 को जेम्स द्वितीय की द्वितीय पत्नी मोडेना ने पुत्र को जन्म दिया। जेम्स की पुत्र की प्राप्ति उसके लिए अत्यन्त भयंकर प्रमाणित हुई क्योंकि जनता को विश्वास हो गया कि जेम्स अपने पुत्र को कैथोलिक शिक्षा प्रदान करेगा, अतः उन्हें कैथोलिक राजाओं के अत्याचार से कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। जनता ने अब जेम्स द्वितीय के विरुद्ध क्रान्ति करना आवश्यक समझा। **साउथगेट** ने लिखा है कि **यद्यपि जेम्स के पतन के कारणों के लिए उसके शासनकाल में किए गए अनेक कार्य उत्तरदायी हैं—उसने सदैव जनता की इच्छा के विरुद्ध शासन किया, असांविधानिक तरीके से निलम्बन तथा विमोचन के**

अधिकारों का प्रयोग किया, धार्मिक न्यायालयों की स्थापना करके कानून को भंग किया, गिरजाघरों तथा विश्वविद्यालयों पर आक्रमण करके पादरियों तथा टोरियों को रुष्ट किया। उसका सात पादरियों को बन्दी बनाना अत्याचारपूर्ण था। उसने शक्ति के द्वारा स्वेच्छाचारी बनना चाहा, किन्तु यदि उसके पुत्र न हुआ होता तो इसमें सन्देह है कि यह क्रान्ति होती अथवा नहीं।



The Revolution

वैभवपूर्ण क्रान्ति की घटनाएं
(EVENTS OF GLORIOUS REVOLUTION)

जिस दिन सात पादरियों को मुक्त किया गया था उसी रात को एक सभा का आयोजन किया गया था जिसमें पादरियों, टोरियों तथा ह्विगों ने भाग लिया। इस सभा में निर्णय लिया था कि जेम्स द्वितीय के दामाद विलियम ऑफ ऑरेन्ज, जो हॉलैण्ड का राजा था, को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन के लिए आमन्त्रित किया जाए। इस निर्णय के अनुसार विलियम को निमन्त्रित किया गया। विलियम उन दिनों फ्रांस से युद्ध में व्यस्त था। फ्रांस, हॉलैण्ड से कहीं अधिक शक्तिशाली था अतः विलियम ने इस अवसर से लाभ उठाने का निश्चय किया क्योंकि फ्रांस,

इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड की सम्मिलित शक्ति का सामना नहीं कर सकता था। **अतः विलियम इंग्लैण्ड आने के लिए राजी हो गया।**[1]

लुई चौदहवें ने जेम्स को इस खतरे से अवगत कराया, अतः जेम्स ने अपनी नीति में परिवर्तन किया तथा धार्मिक न्यायालय को भंग कर दिया। जिन गिरजाघरों, विश्वविद्यालयों, न्यायालयों, नगर-निगमों तथा सेना के अधिकारियों को उनके पदों से च्युत किया था उन्हें पुनः उनके पदों पर नियुक्त कर दिया। कुछ अन्य प्रोटेस्टेण्ट व्यक्तियों को भी उच्च पदों पर नियुक्त किया, किन्तु जेम्स अपनी गलती अत्यन्त देर से समझा था तथा अब तक जनता का विश्वास खो चुका था।

विलियम ऑफ ऑरेन्ज (William of Orange) **पन्द्रह हजार सेना के साथ 5 नवम्बर, 1688 ई. में टोरबे** (Trobay) **के बन्दरगाह पर उतरा।** विलियम के इंग्लैण्ड आगमन के समय जेम्स की स्थिति पर्याप्त अच्छी थी। जेम्स के अधीन चालीस हजार सेना थी तथा नौ-सेना भी उसके प्रति स्वामिभक्ति रखती थीं। जेम्स की तुलना में विलियम की सेना अत्यन्त कम थी तथा विभिन्न राष्ट्रों के सैनिक होने के कारण संगठित भी न थी। इस समय यदि जेम्स एक स्वतन्त्र संसद के निर्वाचन और उसकी इच्छानुसार शासन करने का आश्वासन देता तो सम्भवतः यह क्रान्ति न होती क्योंकि इंग्लैण्ड की प्रतिक्रियावादी जनता विलियम की अपेक्षा जेम्स को ही समर्थन देती, किन्तु जेम्स ने ऐसा नहीं किया। विलियम अपनी सेना के साथ लन्दन की ओर अग्रसर हुआ। जेम्स भी अपनी सेना के साथ विलियम का सामना करने आगे बढ़ा, किन्तु रास्ते में उसके साथी उसका साथ छोड़ने लगे तथा विलियम की ओर मिल गए। यहां तक कि उसका प्रमुख एवं विश्वासपात्र सेनापति जॉन चर्चिल तथा जेम्स की छोटी पुत्री ऐन (Anne) भी उसका साथ छोड़कर विलियम से जा मिले। इस प्रकार जेम्स की सेना छिन्न-भिन्न हो गयी तथा वह अत्यन्त निराश हो गया। निराशा में उसने कहा—**'ईश्वर दया कर ! मेरे अपने ही बच्चे मेरा साथ छोड़ चुके हैं।'**[2]

जेम्स प्रत्येक दिशा से निराश हो 23 दिसम्बर, 1688 ई. को राजमुहर को टेम्स नदी में फेंककर फ्रांस भाग लिया। इस प्रकार एक बूंद भी रक्त की बहाए बिना इंग्लैण्ड में क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति के महत्वपूर्ण परिणाम हुए।

जेम्स के फ्रांस भागने के पश्चात् इंग्लैण्ड की राजगद्दी रिक्त हो गयी। संसद ने मेरी को रानी तथा विलियम को संरक्षक नियुक्त करना चाहा, किन्तु विलियम इस बात के लिए तैयार न हुआ क्योंकि उसे हॉलैण्ड की रक्षा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता थी। 22 जनवरी, 1689 ई. को संसद की पुनः बैठक हुई जिसमें संसद ने विलियम के समक्ष कुछ शर्तें (Declaration of Right) रखीं जिनको मेरी तथा विलियम ने स्वीकार किया। इस प्रकार जेम्स द्वितीय के पश्चात् इंग्लैण्ड के सिंहासन पर विलियम तथा मेरी संयुक्त रूप से आसीन हुए।

क्रान्ति का महत्व एवं प्रभाव
(EFFECTS AND SIGNIFICANCE OF THE REVOLUTION)

1688 ई. की वैभवपूर्ण क्रान्ति का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यन्त महत्व है। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप 1603 ई. अथवा उससे भी पूर्व से चले आ रहे संसद एवं राजा के मध्य

1 'William was not eager to obtain the crown of England for its own sake. His heart was in the defence of Holland by becoming king of England he could secure the permanent alliance of England against France.' —Southgate

2 'God be merciful ! My own children have forsaken me.' —James II

संघर्ष समाप्त हो गया। इस क्रान्ति ने उन समस्त सिद्धान्तों को स्पष्ट कर दिया जिनके कारण यह संघर्ष चल रहा था, जिसके कारण गृह-युद्ध हुआ व इंग्लैण्ड को अपार संकटों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। **संसद एवं राजा के मध्य संघर्ष के प्रमुख सिद्धान्त अथवा कारण निम्न थे—राजा तथा संसद में किसके अधिकार सर्वोपरि हैं; इंग्लैण्ड के चर्च का स्वरूप क्या है; राज्यमन्त्री राजा के प्रति उत्तरदायी हैं** अथवा संसद के; नागरिक स्वाधीनता की रक्षा, अधिनियम बनाना तथा कर लगाने का अधिकार किसको है; देश की वैदेशिक तथा गृह-नीति किसकी इच्छानुसार होनी चाहिए। उपर्युक्त कारणों का उत्तर इस क्रान्ति ने दे दिया।

इस क्रान्ति ने स्पष्ट कर दिया कि राजा के दैवी अधिकारों (Divine Rights) को स्वीकार नहीं किया जा सकता। वह ईश्वर के प्रति नहीं वरन् जनता की प्रतिनिधि संसद के प्रति उत्तरदायी है। जनता की शक्ति सर्वोपरि है, अतः राजा को प्रचलित नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है। राजा की वास्तविक शक्ति संसद के सहयोग पर ही निर्भर है। राजमन्त्रियों के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में भी यह स्पष्ट हो गया कि वे संसद के प्रति ही उत्तरदायी हैं। राजा के क्षमा करने से वे संसद के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। इस क्रान्ति ने यह भी स्पष्ट किया कि नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना, कानून बनाना तथा कर लगाना संसद के अधिकारों के अन्तर्गत हैं, राजा इसमें किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। **राज्य की गृह एवं वैदेशिक नीति का निर्धारण भी राजा स्वेच्छा से नहीं अपितु संसद के परामर्श से करेगा। धार्मिक क्षेत्र में भी स्पष्ट हो गया कि इंग्लैण्ड का वास्तविक धर्म एंग्लिकन अथवा प्रोटेस्टेण्ट है।** चर्च पर से राजा के अधिकार को समाप्त किया गया तथा संसद को चर्च का उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह भी निश्चित किया गया कि कोई कैथोलिक व्यक्ति अथवा जिसका विवाह कैथोलिक से हुआ हो, इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन नहीं हो सकता था। इस प्रकार कैथोलिक के खतरे को सदैव के लिए इंग्लैण्ड से समाप्त कर दिया गया तथा प्रोटेस्टेण्ट धर्म इंग्लैण्ड में सदैव के लिए स्थापित हो गया। इस प्रकार इंग्लैण्ड के इतिहास में वैभवपूर्ण क्रान्ति का अत्यंत महत्व है क्योंकि इनमें राजाओं की निरंकुशता व स्वेच्छाचारिता के स्थान पर वास्तविक संसदीय प्रणाली की स्थापना की। इस प्रकार सांविधानिक दृष्टिकोण से न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण विश्व पर इसका प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति के कारण ही इंग्लैण्ड में सहिष्णुता की भावना अधिक दृढ़ हुई तथा प्रेस पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया। न्याय विभाग तथा कार्यकारिणी पृथक्-पृथक् किए तथा एक लोकप्रिय सरकार की स्थापना हुई जैसा कि रैम्जे म्योर ने लिखा है, **"इस स्मरणीय तथा नवीन युग-निर्मातृ घटना से इंग्लैण्ड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारम्भ हुआ तथा सत्ता निरंकुश राजाओं के हाथ से निकलकर संसद के हाथ में आ गयी।"**[1]

वैभवपूर्ण क्रान्ति का प्रभाव न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण यूरोप पर हुआ।[2] इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड में पिछले अनेक दशकों से व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के कारण शत्रुता चल रही थी। डेन्बी ने यद्यपि मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न किया, किन्तु यह मित्रता अधिक समय तक स्थिर न रह सकी थी। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड एवं हॉलैण्ड का राजा

1 'From this monumentous and epoch-making event began the era of popular Government in Britain and sovereignty from the hands of absolute monarchs to those of the Parliament.' —*Ramsay Muir*

2 'This revolution is not only a monumental event in the history of Britain but it has got an unique place in the political history of whole of Europe.' —*Mowat*

एक ही व्यक्ति होने के कारण दोनों देशों में स्थायी मित्रता स्थापित हुई। फ्रांस का हॉलैण्ड पर अधिकार करने का प्रयत्न अब उसके लिए एक स्वप्न मात्र रह गया।

इंग्लैण्ड की यद्यपि हॉलैण्ड से मित्रता स्थापित हुई, किन्तु उसके फ्रांस के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गए। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के समय में इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के सम्बंध अत्यन्त मधुर थे क्योंकि दोनों ही शासक कैथोलिक थे तथा लुई चौदहवें से अत्यधिक प्रभावित थे। वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारण इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट शासन की स्थापना तथा हॉलैण्ड एवं फ्रांस के सम्बन्ध कटु होने से इंग्लैण्ड एवं फ्रांस में शत्रुता हो गयी। इंग्लैण्ड एवं हॉलैण्ड की संयुक्त शक्ति अत्यन्त प्रबल होने के कारण इंग्लैण्ड का खोया हुआ वैदेशिक सम्मान उसे पुनः प्राप्त हो गया।

इस प्रकार वैभवपूर्ण क्रान्ति के इंग्लैण्ड एवं यूरोप की राजनीति पर व्यापक प्रभाव हुए तथा इस क्रान्ति ने इंग्लैण्ड एवं यूरोप के इतिहास को एक नवीन दिशा प्रदान की।

वैभवपूर्ण क्रान्ति के पश्चात् की स्थिति
(ENGLAND AFTER THE GLORIOUS REVOLUTION)

जेम्स द्वितीय का निरंकुश शासन लगभग तीन वर्षों (1685-88) तक रहा क्योंकि 1688 ई. में इंग्लैण्ड की जनता ने वैभवपूर्ण क्रान्ति के द्वारा जेम्स द्वितीय को इंग्लैण्ड छोड़कर भागने को विवश किया। **इंग्लैण्ड के कुछ संसद-सदस्यों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने हॉलैण्ड के राजा विलियम ऑफ ऑरेन्ज को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठने के लिए आमन्त्रित किया था,** किन्तु बाद में 22 जनवरी, 1689 ई. को संसद की बैठक में विलियम तथा उसकी पत्नी मेरी को संयुक्त रूप से सिंहासनारूढ़ करना निश्चित हुआ तथा कुछ शर्तों को उनसे स्वीकार करने के पश्चात् विलियम तथा मेरी को 13 फरवरी, 1689 ई. को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन किया गया।

बिल ऑफ राइट्स
(BILL OF RIGHTS)

1688 ई. में हुई वैभवपूर्ण क्रान्ति का महत्वपूर्ण परिणाम संसद का प्रशासकीय मामलों में सर्वोपरि शक्ति के रूप में उभर कर सामने आना था। संसद की शक्ति में वृद्धि करने वाला प्रमुख स्रोत बिल ऑफ राइट्स था। विलियम ने राजगद्दी पर आसीन होने से पूर्व बिल ऑफ राइट्स को स्वीकार किया था। **इस बिल ऑफ राइट्स की प्रमुख धाराएं निम्नलिखित थीं :**

(अ) शान्तिकाल में राजा स्थायी सेना नहीं रखेगा।

(ब) कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना अथवा प्रचलित नियमों को भंग करने का राजा को अधिकार नहीं होगा।

(स) संसद का निर्वाचन स्वतन्त्र रूप से होगा तथा संसद-सदस्यों को भाषण की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी; संसद का प्रत्येक वर्ष में अधिवेशन अवश्य बुलाया जाएगा।

(द) राजा संसद की अनुमति के बिना कर नहीं लगाएगा।

(य) भविष्य में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर कैथोलिक व्यक्ति नहीं बैठ सकेगा।

इस प्रकार बिल ऑफ राइट्स के परिणामस्वरूप संसद की शक्ति में असीम वृद्धि हुई तथा राजा के दैवी अधिकारों, स्वेच्छाचारिता तथा निरंकुशता को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया। इस विधान के कारण ही स्टुअर्ट काल के प्रारम्भ से चल रहे राजा एवं संसद के मध्य संघर्ष का अन्त हुआ तथा संसद की शक्ति ही सर्वोपरि प्रमाणित हुई। इस प्रकार यह

विधान इंग्लैण्ड की जनता की स्वतन्त्रता का एक महानतम् आज्ञा-पत्र था।[1] सेना सम्बन्धी कानून के कारण संसद का वार्षिक अधिवेशन आवश्यक हो गया, क्योंकि यदि संसद का अधिवेशन न होता तो सेना के लिए व्यय नहीं प्राप्त हो सकता था। इसका कारण अर्थ-नीति पर संसद का अधिकार होना था।

1689 ई. का यह बिल ऑफ राइट्स 1215 ई. के **मैग्नाकार्टा**[2] (Magnacarta), 1628 ई. के **पैटीशन ऑफ राइट्स** (Petition of Rights) तथा 1641 ई. के महान् **विरोध-पत्र** (Grand Remonstrance) की एक अगली कड़ी था। **इस प्रकार इस बिल ऑफ राइट्स** (Bill of Rights) **ने राजा को संसद पर पूर्णतः निर्भर कर दिया।**

कैबिनेट प्रणाली का प्रारम्भ
(BEGINNING OF THE CABINET SYSTEM)

विलियम के शासनकाल से राजा मन्त्रियों की नियुक्ति करता था तथा ये राजा के प्रति उत्तरदायी होते थे, किन्तु विलियम के समय तक बिल ऑफ राइट्स तथा उत्तराधिकार सम्बन्धी नियम के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ था। **चार्ल्स के समय में संसद में दो दल हो गए थे—ह्विग एवं टोरी।**[3] **ये दोनों परस्पर विरोधी विचारधारा के थे।** विलियम विवश होकर दोनों ही दलों में से अपने मन्त्रियों को नियुक्त करता था, किन्तु अत्यन्त योग्य व्यक्तियों की नियुक्ति करने तथा किसी भी दल का पक्ष न लेने पर भी विलियम को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। मन्त्रियों के परस्पर विरोधी दलों के होने के कारण उनमें मतभेद रहता था, अतः राज-कार्य करने में परेशानी होती थी। इसी समय फ्रांस से भी युद्ध चल रहा था, अतः मन्त्रियों के परस्पर विरोधी विचारधारा के कारण युद्ध का संचालन कुशलतापूर्वक नहीं हो पाता था। **अर्ल ऑफ सेण्डरलैण्ड ने यह प्रस्ताव रखा कि विलियम केवल एक ही दल के व्यक्तियों को मन्त्री नियुक्त करे क्योंकि वे सरलता से एकमत होकर कार्य करेंगे तथा उन्हें संसद का भी विश्वास एवं समर्थन प्राप्त हो सकेगा।** विलियम ने इस परामर्श को स्वीकार किया तथा संसद में बहुमत वाले दल से मन्त्रियों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया। विलियम का यह प्रशिक्षण सफल रहा तथा भविष्य में यह प्रथा स्थायी हो गयी। विलियम ने ह्विग दल के बहुमत में होने के कारण इसी दल से अपने मन्त्रियों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया था। **मन्त्रियों की बैठक जिस छोटे से कमरे में होती थी उसका नाम कैबिनेट था उसी के नाम पर मन्त्रिमण्डल का नाम 'कैबिनेट' पड़ा तथा दलबन्दी शासन** (party government) **की स्थापना भी इसी समय से प्रारम्भ हुई।**

---

1 'The Bill of Rights is one of the greatest character of British Freedom.' —*Mowat*

2 इंग्लैण्ड के राजा जॉन (1199-1216 ई.) के शासनकाल की उल्लेखनीय घटना मैग्नाकार्टा (महाधिकार पत्र) लागू किया जाना था। राजा जॉन के अत्याचारों से तंग आकर जनता ने स्टीफल लेग्टन के नेतृत्व में एक महाधिकार पत्र तैयार किया। जनता के भय से 1215 ई. में राजा को इसे स्वीकार करना पड़ा। 12 जून, 1215 ई. को स्वीकृत इस मैग्नाकार्टा में कुल 63 धाराएं थीं जिनसे राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाया गया था।

3 प्रारम्भ में विग व टोरी दोनों शब्द व्यंग्य के रूप में प्रयोग होते थे। स्कॉटलैण्ड में घोड़ों को दौड़ाते समय विग-विग कहते थे। आयरिश भाषा में टोरी डाकुओं को कहते थे। धीरे-धीरे ये नाम उदारवादी (विग) अनुदार दल (टोरी) के लिए प्रयोग किये जाने लगे।

इंग्लैण्ड में कैबिनेट प्रणाली का विकास
(EVOLUTION OF CABINET SYSTEM IN ENGLAND)

कैबिनेट प्रणाली का अर्थ (Meaning of the Cabinet System)

प्रत्येक राजनीतिज्ञ की दृष्टि में यद्यपि 'कैबिनेट प्रणाली' की परिभाषा में अन्तर हो सकता है, परन्तु प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ सिडनी लो (Sydney Low) का कथन इस प्रकार है—**'मन्त्रिमण्डल राष्ट्रीय कार्यों के प्रबन्ध को साधारण दिशा प्रदान करने पर पूर्ण नियन्त्रण रखने वाली एक उत्तरदायी कार्यकारिणी है, परन्तु अपने इस अधिकार का प्रयोग वह जनता के प्रतिनिधियों के समूह 'हाउस ऑफ कॉमन्स'(House of Commons) के कठोर नियन्त्रण में करती है और अपने सभी कार्यों के लिए इसके प्रति ही उत्तरदायी है।'** एक अन्य प्रसिद्ध राजनीनिज्ञ प्रो. मुनरो ने कैबिनेट की परिभाषा इन शब्दों में की है, **'मन्त्रिमण्डल को सम्राट के परामर्शदाताओं का एक समूह कहा जा सकता है और जिसका निर्माण सम्राट के नाम पर हाउस ऑफ कॉमन्स के बहुमत वाले दल की अनुमति से किया जाता है।'**

स्टुअर्ट काल में स्थिति
(CONDITION DURING THE STUART PERIOD)

चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में 'मन्त्रिमण्डल' (Cabinet) शब्द का प्रयोग होता था। उस काल में प्रिवी कौंसिल के कुछ प्रमुख सदस्य सम्राट के परामर्शदाता होते थे और सम्राट उनके ही परामर्श पर प्रिवी कौंसिल में कोई प्रस्ताव रखता था। वास्तव में, चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में मन्त्रिमण्डल के उदय के लिए परिस्थितियां अवश्य ही अनुकूल होती जा रही थीं। चार्ल्स द्वितीय के समय में संसद की शक्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही थी और वह अपने चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर हो रही थी। अपने प्रवासकाल के अनुभवों के आधार पर चार्ल्स द्वितीय संसद में संघर्ष करने को तैयार नहीं था और संसद की शक्ति के विकास के कारण ही मन्त्रिमण्डल का निर्माण सम्भव हो सका। **वास्तव में चार्ल्स द्वितीय के समय का 'केबाल मन्त्रिमण्डल' (Cabal Ministry) ही मन्त्रिमण्डल का प्रारम्भिक रूप था, परन्तु वह हाउस ऑफ कॉमन्स की अपेक्षा प्रिवी कौंसिल का प्रतिनिधित्व अधिक करता था।** नारमन शासकों की ग्रेट कौंसिल से 'प्रिंवी कौंसिल' का जन्म हुआ था तथा प्रिवी कौंसिल से **'केबाल मन्त्रिमण्डल'**[1] का जन्म सम्भव हुआ। इस दिशा में चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में और अधिक प्रगति न हो सकी, परन्तु इससे मन्त्रिमण्डल के कार्य की रूपरेखा जनता के समक्ष आई। चार्ल्स द्वितीय के मन्त्री संसद के प्रभावशाली व्यक्ति होते थे अतः वे स्वेच्छा से संसद के नियम पारित कराते थे। ये मन्त्री हाउस ऑफ कॉमन्स के स्थान पर राजा के प्रति उत्तरदायी होते थे क्योंकि कॉमन सभा की शक्ति का पूर्ण विकास इस समय तक नहीं हुआ था।

चार्ल्स द्वितीय के समय के मन्त्री मुख्यतः राजा का प्रभाव संसद में रखने के उद्देश्य के कारण राजा के एजेण्ट होते थे। **इसी समय से 'कैबिनेट' (Cabinet) शब्द का प्रयोग भी प्रारम्भ हुआ क्योंकि मन्त्रियों की सभा का अधिवेशन राजभवन के एक छोटे से कमरे (कैबिनेट) में होता था अतः उस कमरे के कारण मन्त्रिमण्डल को कैबिनेट कहा गया।**

---

1 चार्ल्स द्वितीय ने प्रिवी कौंसिल के सदस्यों में से पांच को चुनकर एक परामर्श देने वाली समिति बनाई, जिसे 'केबाल' कहा गया। वास्तव में केबाल शब्द फ्रांसीसी भाषा के शब्द 'केबेल' से मिलता है जिसका अर्थ 'एक विशिष्ट प्रणाली' होता है।

विलियम तृतीय के शासनकाल में स्थिति
(CONDITION DURING WILLIAM III'S RULE)

1688 ई. में राजा की पराजय तथा संसद की पूर्ण विजय ने मन्त्रिमण्डल के विकास में बहुत सहयोग दिया। विलियम तृतीय के काल में ही वास्तविक रूप में मन्त्रिमण्डल जन्म ले सका। विलियम तृतीय को राजा मानने के लिए ह्विग तथा टोरी दोनों दल तैयार हो जाने के कारण राजा ने अपने मन्त्री दोनों दलों में से चुने, परन्तु दोनों दलों के अन्दर मतभेद होते के कारण मन्त्री शासन कार्य को सुचारु रूप से चलाने में सर्वथा असमर्थ रहे। टोरी लोग युद्ध के विरोधी थे तथा ह्विग पक्षपाती, अतएव विदेशी युद्धों में फंसे रहने के कारण विलियम ने ह्विग दल के मन्त्री बनाए। **यद्यपि विलियम ने अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए यह पद्धति अपनाई, परन्तु परोक्ष रूप से उसने दलीय मन्त्रिमण्डल को जन्म दे दिया। इस पद्धति के द्वारा विलियम को सफलता मिली।** 1869 ई. में टोरी दल के बहुमत में होने के कारण ह्विग के स्थान पर टोरी दल का मन्त्रिमण्डल चुना गया और इस प्रकार बिना किसी इरादे के अज्ञानता में यह परम्परा पड़ गई कि संसद में बहुमत दल के सदस्यों में से ही मन्त्रिमण्डल चुना जाया करे, जैसा कि आधुनिक मन्त्रिमण्डल के लिए भी आवश्यक है।

विलियम तृतीय का किसी दल विशेष की ओर आकर्षण नहीं था, वरन् उसने शासन व्यवस्था का सुचारु रूप से संचालन करने के लिए संसद में बहुमत वाले दल के सदस्यों में से ही अपने मन्त्रियों की नियुक्तियां प्रारम्भ कीं, परन्तु उस समय संसद इस नयी व्यवस्था की विरोधी थी। अतः **1701 ई. में संसद ने सैटिलमैन्ट एक्ट (Settlement Act) पारित किया जिसके अन्तर्गत इस प्रकार से गठित मन्त्रिमण्डल को उसके प्रारम्भिक काल में ही समाप्त करने का प्रयास किया गया।** उपर्युक्त अधिनियम की एक धारा के अन्तर्गत सम्राट पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया कि वह संसद के सदस्यों में से ही अपने मन्त्रियों की नियुक्ति न करे क्योंकि इस धारा के अन्तर्गत सम्राट का कोई भी वेतनभोगी कर्मचारी हाउस ऑफ कॉमन्स का सदस्य नहीं हो सकता था। राजा की शक्तियों को प्रतिबन्धित करने के उद्देश्य से तो यह ठीक था, परन्तु दूसरी ओर कैबिनेट प्रणाली के लिए यह अत्यन्त घातक प्रमाणित हुआ क्योंकि जब संसद के सदस्य ही मन्त्री नहीं बनेंगे तो वे (मन्त्री) जनता के प्रतिनिधि कैसे होंगे और न ही वे जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हो सकते थे।

ऐन के शासनकाल में स्थिति
(CONDITION DURING ANNE'S RULE)

1702 ई. में विलियम तृतीय की मृत्यु हो जाने पर महारानी ऐन इंग्लैण्ड के राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी बनी। रानी ऐन के समय में स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (War of Spanish Succession) प्रारम्भ हो गया और इसके साथ ही टोरी दल की शक्ति भी क्षीण होने लगी। ह्विग दल पुनः शासन में आया। **ह्विग दल के सदस्यों ने 1707 ई. में पैलेस एक्ट (Palace Act) पारित किया, जिसके द्वारा 1701 ई. के सैटिलमेन्ट एक्ट की उस धारा को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार, कुछ विशेष राजकीय पदाधिकारियों के अतिरिक्त अन्य सभी राजकीय कर्मचारी हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्यों को अपने द्वारा पारित प्रस्तावों पर हस्ताक्षर करना आवश्यक था।** इसी प्रकार प्रिवी कौंसिल को सभी कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराकर मन्त्रिमण्डल की आवश्यकता को समाप्त कर दिया गया। कुछ समय पश्चात् इस धारा को भी समाप्त कर कैबिनेट व्यवस्था का पुनः विकास प्रारम्भ किया गया।

वार्नर-मार्टिन-म्यार ने सैटिलमेन्ट एक्ट के महत्व के विषय में प्रकाश डालते हुए लिखा है, **'ऐसा कहा जाता है कि सैटिलमेन्ट अधिनियम ने हमें एक विदेशी शासक दिया, विदेशी शासक की उपस्थिति ने हमें एक प्रधानमन्त्री दिया।'**[1] इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर हैनोवरवंशीय शासकों का अधिकार होते ही कैबिनेट प्रणाली का तेजी से विकास होने लगा। इसका कारण हैनोवर वंश की इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर ह्विग दल की सहायता से स्थापना होना हैनोवर वंश के प्रथमं दो शासकों जार्ज प्रथम एवं जार्ज द्वितीय को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न होना था।

हैनोवर काल में स्थिति
(CONDITION DURING HANOVER PERIOD)

रानी ऐन की मृत्यु के कारण रिक्त हुए इंग्लैण्ड के सिंहासन के लिए दो प्रतिद्वन्द्वी थे। टोरी दल के सदस्य स्टुअर्ट वंश के समर्थक होने के नाते जेम्स द्वितीय के पुत्र जेम्स एडवर्ड को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठाना चाहते थे, किन्तु जनता ऐसा नहीं चाहती थी, क्योंकि स्टुअर्ट वंश की स्थापना पुनः हो जाती तो इंग्लैण्ड में प्रजातन्त्रीय भावना को अत्यधिक आघात पहुंचता। ह्विग दल हैनोवर के इलैक्टर जार्ज को इंग्लैण्ड का राजा बनाना चाहता था और अन्त में ह्विग दल को सफलता मिली। **जार्ज, जार्ज प्रथम के नाम से इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर बैठा।** ह्विग दल ने जार्ज प्रथम के देश हैनोवर की रक्षा करके शासक के प्रति अपने सम्मान को प्रदर्शित किया। जार्ज प्रथम ने अपने मन्त्रिमण्डल का गठन ह्विग दल के सदस्यों में से किया। तत्कालीन परम्परा के अनुसार राजा ही मन्त्रिमण्डलों के अधिवेशनों का सभापतित्व करता था। **अतः जार्ज प्रथम को भी अपने मन्त्रिमण्डल को उसके कार्यों में प्रोत्साहित करने के लिए उसकी सभाओं में उपस्थित रहना पड़ता था।**

1714 ई. में इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर बैठते समय जार्ज प्रथम की आयु 54 वर्ष थी तथा उसे अंग्रेजी का ज्ञान भी न था और न ही वह अंग्रेजी सीखने का इच्छुक था क्योंकि उसे राजकीय कार्यों में विशेष रुचि न थी। परिणामस्वरूप, शीघ्र ही मन्त्रिमण्डल की सभाओं से वह ऊब गया और उसने इन सभाओं में भाग लेना कम कर दिया और अन्त में उसने मन्त्रिमण्डल की सभाओं में आना पूर्णतया बन्द कर दिया। **जार्ज प्रथम के समान ही जार्ज द्वितीय को भी अंग्रेजी का ज्ञान नहीं था और वह भी मन्त्रिमण्डल की सभाओं में सम्मिलित होना पसन्द नहीं करता था।** इस प्रकार निरन्तर चालीस वर्षों तक मन्त्रिमण्डल की सभाओं से सम्राट के अनुपस्थित रहने के कारण राजा का अनुपस्थित रहना एक नियम-सा बन गया। राजा के अनुपस्थित रहने के कारण मन्त्री स्वतन्त्र होकर वाद-विवाद करने में सफल होते और अन्त में वे पूर्णतः स्वतन्त्र निर्णय करने लगे। बाह्य दबाव समाप्त हो जाने के कारण मन्त्रिमण्डल के सदस्यों में पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास हुआ।

ह्विग मन्त्रिमण्डल राजा के हितों का अत्यन्त ख्याल रखता था और देश-विदेश में राजा के विरोधियों का दमन करता था, अतः जार्ज प्रथम ह्विग दल पर पूर्ण विश्वास करता था और उसने राजकीय समस्त कार्यों को पूर्ण रूप से ह्विग दल पर ही छोड़ दिया। **जार्ज प्रथम को सौभाग्य से 1721 ई. में एक योग्य तथा विश्वासपात्र व्यक्ति वालपोल मिल गया। उसकी बनाई रिपोर्ट पर जार्ज प्रथम बिना पढ़े ही हस्ताक्षर कर देता था।** अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से वालपोल मन्त्रियों का नेता बन गया। राजा की अनुपस्थिति में वह मन्त्रियों की सभा की अध्यक्षता भी

---

1 'The Act of Settlement had given us', it has been said, 'a foreign sovereign; the presence of a so foreign sovereign gave us a Prime Minister.'

—*Warner-Marten-Muir*

करता था और मन्त्रिमण्डल के कार्य की रिपोर्ट भी राजा को दे देता था। राजा ने राजकीय पदों पर नियुक्ति का अधिकार भी उसे दे रखा था। अब वह राजा के समान ही पदों पर नियुक्ति एवं उन्हें पदच्युत कर सकता था। मन्त्रियों को चुनने का अधिकार भी उसे मिल गया और वह अयोग्य मन्त्रियों को उनके पद से हटा भी सकता था। वर्तमान शासन प्रणाली में ये समस्त कार्य प्रधानमन्त्री करता है। यद्यपि वालपोल स्वयं को प्रधानमन्त्री नहीं कहता था, परन्तु फिर भी उसने इस प्रकार से कार्य करके कैबिनेट प्रणाली की एक अनिवार्य शर्त पूर्ण कर दी। उसके पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने भी इसी प्रकार कार्य किया। इंग्लैण्ड के **इतिहास में प्रधानमन्त्री शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम डिजरैली ने 1878 ई. में बर्लिन की सन्धि पर हस्ताक्षर करते समय किया था।** उसने लिखा था, 'डिजरैली, अर्ल ऑफ बैकन्सफील्ड, प्रधानमन्त्री।'[1]

हैनोवर वंश के प्रथम दो शासक जार्ज प्रथम और जार्ज द्वितीय, इंग्लैण्ड के लिए पूर्ण विदेशी थे और इन्होंने इंग्लैण्ड के राजकीय कार्यों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप भी नहीं किया। मन्त्रिमण्डल ही कार्यों की योजना बनाता और उसको कार्यान्वित करता। सम्राट उस पर केवल हस्ताक्षर ही करता था। हैनोवर वंश के राज्य से पूर्व राजा की सम्मति प्रधान होती थी तथा मन्त्रिमण्डल का इतना महत्व नहीं था, किन्तु जार्ज प्रथम के समय से ही राजा का महत्व कम होने लगा और किसी भी विषय में मन्त्रिमण्डल की सम्मति सर्वोपरि होती थी। इस समय से संसद में कोई भी नियम पारित कराने के लिए मन्त्रिमण्डल उत्तरदायी होता था। इस प्रकार राजा द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्यों को अब मन्त्रिमण्डल करने लगा। प्रधानमन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल का चयन हाउस ऑफ कॉमन्स अथवा हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्यों में से करता था तथा ये मन्त्री अपने पदों पर हाउस ऑफ कॉमन्स का विश्वास होने तक ही रह सकते थे।[2] वालपोल को 1741 ई. में विदेश-नीति के सम्बन्ध में संसद में पराजय हो जाने के कारण त्यागपत्र देना पड़ा। इस प्रकार मन्त्रिमण्डल की सफलता की एक अन्य आवश्यक प्रथा का उदय हुआ जिसके द्वारा मन्त्रिमण्डल सम्राट के प्रति उत्तरदायी न होकर संसद के प्रति उत्तरदायी होने लगा।

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय ने कभी भी अपने निषेधाधिकार (veto) **का प्रयोग नहीं किया।** प्रारम्भ में राजा को अधिकार था कि संसद द्वारा पारित किसी भी नियम को वह हस्ताक्षर न करके स्वीकृत कर सकता था। 1715 ई. **के पूर्व इस अधिकार का अनेकों बार अनेक शासकों ने प्रयोग किया था, परन्तु अब स्थिति में परिवर्तन आ गया था।** मन्त्रिमण्डल अपने बहुमत के आधार पर किसी भी नियम को संसद से पारित करवा लेता था और राजा उस पर बिना किसी आपत्ति के कर देता था। वर्तमान समय में यह वीटो का अधिकार इंग्लैण्ड में एक कल्पनामात्र है और गत दो सौ वर्षों से किसी भी सम्राट ने इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया है।

कैबिनेट व्यवस्था की अनेक विशेषताओं में एक मुख्य विशेषता यह है कि इससे हाउस ऑफ कॉमन्स (House of Commons) **की प्रधानता स्थापित हुई।** शानदार क्रान्ति (Glorious Revolution) के उपरान्त हाउस ऑफ कॉमन्स की शक्ति हैनोवर वंश के शासकों के काल में पर्याप्त रूप से हो चुकी थी। सम्राट की निरंकुशता समाप्त हो चुकी थी और हाउस ऑफ

1 'Disraeli, Earl of Beaconsfield, Prime Minister.'

2 "Hence it was natural that one minister should preside over the cabinet and direct its proceeding; and gradully it came about that he and not the king appointed his colleagues to the ministry, and that he obtained the title of Prime Minister."
—*Warner-Marten-Muir*

कॉमन्स की शक्ति में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। अब राजा केवल एक वैधानिक शासक मात्र ही था तथा वास्तविक शासन में अब धीरे-धीरे वृद्धि हो रही थी और वालपोल जैसे महान् राजनीतिज्ञ ने भी 1741 ई. में हाउस ऑफ कॉमन्स की प्रधानता को स्वीकार किया। कोई भी मन्त्रिमण्डल अथवा मन्त्री हाउस ऑफ कॉमन्स की इच्छा के विरुद्ध अपने पद पर नहीं रह सकता था। 1741 ई. **में वालपोल के त्याग-पत्र ने यह प्रमाणित कर दिया कि हाउस ऑफ कॉमन्स ही देश की नीति निर्धारित करने वाली सर्वोच्च शक्ति है।**

इस प्रकार स्पष्ट है कि कैबिनेट प्रणाली के प्रधान अंगों का विकास प्रथम दो मन्त्रिमण्डल द्वारा ही होने लगा। चैम्सफोर्ड ने हैनोवर वंश के शासकों के महत्व के विषय में अपना मत निम्न शब्दों में व्यक्त किया है :

'आधुनिक ब्रिटिश कैबिनेट के उत्थान तथा विकास का श्रेय हैनोवर वंश के प्रथम दो सम्राटों को ही है।'[1]

जार्ज प्रथम तो वास्तविक अर्थों में नाम-मात्र का ही शासक था। जार्ज द्वितीय ने अवश्य कुछ अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु वह असफल रहा। अतः उसने एक बार कहा था, **'इस देश में मन्त्री ही सम्राट है।'**[2] 1760 ई. तक कैबिनेट प्रणाली के विकास की गति तीव्र रही, किन्तु जार्ज तृतीय को उसकी माता ने वास्तविक अर्थों में राजा बनने की शिक्षा और प्रेरणा दी थी न कि मन्त्रिमण्डल के हाथों में कठपुतली बनने की। अतः जार्ज तृतीय ने अपनी माता की अपेक्षा के अनुसार व्यवहार एवं सिद्धान्त दोनों ही अर्थों में वास्तविक शासक बनने का प्रयास किया जैसा कि रैम्जे म्योर ने लिखा है :

'जार्ज तृतीय की माता ने जार्ज का पालन-पोषण वास्तविक राजा बनने के लिए किया था और जब उसका राज्याभिषेक हुआ तो उसने राज्य और शासन दोनों ही करने का निश्चय किया।'[3]

जार्ज तृतीय ने शासन का भार अपने हाथों में लेते ही पिट को त्याग-पत्र देने के लिए बाध्य करके शासन की शक्ति अपने हाथों में केन्द्रित की। इस प्रकार जार्ज तृतीय के शासन काल में कैबिनेट प्रणाली के विकास में अवरोध उत्पन्न हो गया। इसी समय अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम और अपनी अस्वस्थता के कारण वह अपने प्रयत्नों में सफल न हो सका।

औद्योगिक क्रान्ति
(INDUSTRIAL REVOLUTION)

क्रान्ति का साधारणतया जैसा अर्थ लिया जाता है, उससे औद्योगिक क्रान्ति[4] सर्वथा भिन्न थी। इस क्रान्ति में लड़ाई-झगड़ा या किसी प्रकार का रक्तपात नहीं हुआ। यह औद्योगिक क्षेत्र में

---

1 'The growth and evolution of Modern British cabinet owes much the reign of the first two Hanoverions.' —*Chelmsford*

2 'Minister is the king in this country.' —*George II*

3 'Brought up by mother to be a real king, George III came to throne determined to govern as well as to reign.' —*Ramsay Muir*

4 राबर्ट इरगैंग ने अपनी पुस्तक 'यूरोप सिंस वाटर लू' में लिखा है, "औद्योगिक क्रान्ति शब्द भ्रम पैदा करने वाला है। क्रान्ति शब्द का प्रयोग सामान्यतया राजनीतिक क्षेत्र में एकाएक हुए परिवर्तनों के लिए किया जाता है।"
उल्लेखनीय है कि 'औद्योगिक क्रान्ति' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी नेता ब्लाकी (Balanqui) ने 1833 ई. में किया था। बाद में टॉयनबी द्वारा इसका प्रयोग किए जाने पर यह शब्द अत्यधिक लोकप्रिय हो गया व इसी शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। टॉयनबी ने इस समय हुए औद्योगिक परिवर्तन के लिए औद्योगिक क्रान्ति शब्द को उचित माना है।

हुई क्रान्ति थी। अठारहवीं शताब्दी में विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों के साथ-साथ यन्त्रों का भी आविष्कार हुआ। शीघ्र ही अच्छे तथा शीघ्र कार्य करने वाले यन्त्र तैयार हो गए। प्रत्येक व्यवसाय के लिए कारखानों तथा मशीनों का निर्माण हुआ तथा विज्ञान और उद्योग-धन्धों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ। कृषि के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की मशीनें तथा सिंचाई आदि की व्यवस्था में सुधार हुआ, जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई। यातायात सम्बन्धी आविष्कारों के होने से समय की भी बचत होने लगी। उपर्युक्त आविष्कारों के परिणामस्वरूप छोटे-छोटे गांव भव्य शहरों में, गृह उद्योग कारखानों में, तथा पगडण्डियां चौड़ी-चौड़ी सड़कों के रूप में बदल गए। सामाजिक व्यवस्था में भी तेजी से परिवर्तन हुआ व जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। **इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी में जो परिवर्तन हुए उसे 'औद्योगिक क्रान्ति' (Industrial Revolution) कहा गया।** एडवर्ड ने औद्योगिक क्रान्ति की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है—**'औद्योगिक प्रणाली तथा श्रमिकों के स्तर में होने वाले परिवर्तनों को ही औद्योगिक क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है।''**[1]

इंग्लैण्ड में क्रान्ति के कारण
(CAUSES OF THE REVOLUTION IN ENGLAND)

विश्व में सर्वप्रथम औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैण्ड में हुई। यद्यपि बाद में जापान व रूस आदि देशों में औद्योगीकरण इंग्लैण्ड से अधिक तेजी से हुआ, किन्तु इंग्लैण्ड में हुई औद्योगिक क्रान्ति का विशेष महत्व है, क्योंकि इंग्लैण्ड में उपर्युक्त परिवर्तन सरकार के प्रयत्नों के कारण नहीं वरन् स्वतः हुए थे। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड ने आधुनिक युग में आर्थिक विकास की दिशा में समस्त देशों से अग्रणी रहते हुए अन्य देशों का पथ-प्रदर्शन किया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक इंग्लैण्ड विश्व की अर्थव्यवस्था पर पूर्ण रूप से छा चुका था। **इस समय इंग्लैण्ड को 'विश्व की उद्योगशाला' कहा जाता था।**

औद्योगिक क्रान्ति के सम्बन्ध में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि यह क्रान्ति इंग्लैण्ड में कब व सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में ही क्यों हुई? कुछ समय पूर्व यह स्वीकार किया जाता था कि औद्योगिक क्रान्ति जार्ज तृतीय के सिंहासनारोहण (1760 ई.) के साथ-साथ हुई, किन्तु अब अधिकांश इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि **यह क्रान्ति दो चरणों में हुई। प्रथम** चरण 1740 ई. के लगभग प्रारम्भ हुआ तथा **दूसरा** चरण जिसमें इस क्रान्ति में तीव्रता आयी, 1770 ई. में प्रारम्भ हुआ। इंग्लैण्ड व अन्य यूरोपीय देशों की स्थिति में यद्यपि विशेष अन्तर नहीं था, किन्तु फिर भी इंग्लैण्ड में ही यह क्रान्ति सर्वप्रथम क्यों हुई, यह अत्यन्त विवादास्पद विषय है। एक ही इतिहासकार, जिसने इंग्लैण्ड व फ्रांस की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया, इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि जनसंख्या वृद्धि, ऊर्जा के साधन, पूंजी तथा बाजार में सामान की मांग की दृष्टि से फ्रांस व इंग्लैण्ड की स्थिति में विशेष अन्तर न था, परन्तु अठारहवीं शताब्दी के अन्त में फ्रांस के क्रान्तिकारी युद्धों में व्यस्त रहने के कारण इंग्लैण्ड फ्रांस से बहुत आगे निकल गया। इसके अतिरिक्त प्रति व्यक्ति आय, उत्पादन तथा कुल व्यापार की दृष्टि से इंग्लैण्ड फ्रांस से निश्चित रूप से आगे था। **इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम क्रान्ति होने के निम्नलिखित कारण थे :**

(1) जनसंख्या में वृद्धि (Increase of Population)—इंग्लैण्ड में अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 40% तथा उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम तीन दशकों में 50% जनसंख्या में वृद्धि

1 'The great change in the technique of the industry and in the status of workmen, is really called the Industrial revolution.' —*Edward*

हुई। जनसंख्या में वृद्धि होने से वस्तुओं की मांग बढ़ी जिससे उत्पादन क्षमता को बढ़ा के प्रयास हुए। यह उत्पादन क्षमता उन स्थानों में बढ़ी जहां ज्यादा श्रमिकों को लगाने से प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ रहा था। अतः मजदूरी में भी वृद्धि हुई। **मजदूरी में वृद्धि होने से जनता ने अधिक सामान खरीदा, जिससे पुनः वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई। इस प्रकार जनसंख्या में वृद्धि व आर्थिक विकास एक चक्र के समान एक-दूसरे पर आधारित थे।** इस प्रकार उत्पादन बढ़ना औद्योगिक क्रान्ति का ही अंग बन गया।

(2) **यातायात में सुविधा** (Transport facilities)—अठारहवीं शताब्दी में यातायात के साधनों में महत्वपूर्ण उन्नति हुई। अतः भारी वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना सुविधाजनक हो गया। अतः औद्योगीकरण के लिए साधन एकत्र करना सरल हो गया जिससे औद्योगीकरण का तेजी से विकास हुआ। 1830 ई. **के पश्चात् सामान ढोने के लिए रेल (Trains) का प्रयोग भी होने लगा, इससे उद्योगों में एकाएक तेजी आ गयी व आर्थिक विकास की उन्नति हुई।** 'रेल अवस्था' अपने आप में एक उद्योग था जिससे अनेकों को रोजगार प्राप्त हुआ व आर्थिक स्थिति दृढ़ हुई।

(3) **व्यापार में वृद्धि** (Increase in the Trade)—अठारहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड के व्यापार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इसका कारण इंग्लैण्ड के सामान की मांग में अत्यधिक वृद्धि होना था। **इंग्लैण्ड के सामान की मांग में वृद्धि होने के तीन कारण थे। प्रथम,** स्वदेशी बाजार में सामान की मांग में वृद्धि होना। इसका कारण जनसंख्या में वृद्धि होना था। जनसंख्या बढ़ जाने के कारण अधिक उत्पादन की मांग हुई। **दूसरा स्रोत** विदेशों में इंग्लैण्ड के सामान की मांग में वृद्धि होना था। यद्यपि स्पेन व पुर्तगाल ने अमरीका तथा भारत के मार्ग की खोज की थी तथा सर्वप्रथम व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए, किन्तु वे तो अपनी समस्याओं में उलझ गए तथा इंग्लैण्ड ने परिश्रम व साहस से अपने व्यापार को सबसे आगे बढ़ाया। समस्त यूरोप तथा अपने उपनिवेशों को इंग्लैण्ड सामान पहुंचाता था। इस प्रकार व्यापार के विस्तार होने से उत्पादकों पर उत्पादन बढ़ाने के लिए दबाव पड़ा। अतः उत्पादकों ने उत्पादन बढ़ाने के नवीन तरीके अपनाए। **तीसरा स्रोत** इंग्लैण्ड की सरकार की आवश्यकताओं से उत्पन्न होने वाली मांगें था। अन्य देशों की तुलना में इंग्लैण्ड की सरकार अपनी वैदेशिक नीति को देश के आर्थिक हितों के अनुरूप निर्धारित करती थी, जिससे उद्योग को प्रोत्साहन मिलता था। इसके अतिरिक्त 1700 ई. तक इंग्लैण्ड ने पांच युद्धों में भाग लिया, जिसका इंग्लैण्ड के उद्योग द्वारा लाभ उठाया गया।

इस प्रकार निरन्तर बढ़ती हुई मांग के कारण इंग्लैण्ड के उद्योगपतियों में उद्योग के प्रति विकास-मनोवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ। उत्पादन के वृद्धि करने के लिए नए प्रयोग व आविष्कार किए गए, अतः औद्योगिक क्रान्ति का जन्म हुआ।

(4) **इंग्लैण्ड की भौगोलिक स्थिति** (Geographical location of England)—इंग्लैण्ड के चारों ओर सागर है। उसके सामुद्रिक तट कटे-फटे होने के कारण उनमें बन्दरगाह बनाने की सुविधा है। जो माल वे तैयार करते, शीघ्र ही बन्दरगाह पहुंच जाता और खुला समुद्र होने के कारण किसी बाधा के दूसरे देशों को पहुंच जाता था। यह इंग्लैण्ड क सौभाग्य था कि वहां कपड़े के उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु, कोयला व लोहे की खानें, आवागमन के योग्य नदियां आदि साधन उपलब्ध थे। इस सुविधा ने भी इंग्लैण्ड में शीघ्र औद्योगिक क्रान्ति को जन्म दिया।

(5) जल सेना (Navy)—इंग्लैण्ड की जल सेना महारानी एलिज़ाबेथ के काल से यूरोप में शक्तिशाली हो गयी थी। **इंग्लैण्ड को 'समुद्र की रानी'** की उपाधि मिली थी। इस जल-शक्ति के द्वारा ही युद्ध काल में उसके व्यापार को कोई देश न रोक सका। अन्य देशों के पास यह सुविधा न थी।

(6) उपनिवेश (Colonies)—अंग्रेजों के पास अनेक उपनिवेश थे, जहां से वे कच्चा माल ला सकते थे तथा अपने वहां निर्मित माल को ले जाकर बेच सकते थे।

(7) इंग्लैण्ड में स्वतन्त्रता का वातावरण (Atmosphere of freedom in England)—इंग्लैण्ड में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता समस्त यूरोपीय राष्ट्रों से सबसे पहले आई। लोग अपने विचारों को जनता तक पहुंचा सकते थे, अतः इस स्वतन्त्र वातावरण में कोई भी कार्य करना अधिक कठिन न था।

(8) कृषि-क्रान्ति द्वारा उत्पन्न बेरोजगारी (Unemployment due to the Agrarian revolution)—क्रषि-क्रान्ति ने इंग्लैण्ड में भूमिहीन किसानों की संख्या में महान् वृद्धि की थी। इन बेरोजगार व्यक्तियों को कारखानों में लगाना सुगम था। निर्बलता तथा बेकारी के कारण थोड़ी मजदूरी पर अनेक स्त्री-पुरुष तथा बालक मिल जाते थे। **इसके अतिरिक्त जनसंख्या का वह भाग जिसका अन्न उपजाने से कोई सम्बन्ध न था, तेजी से बढ़ रहा था।** कृषि की उपज बढ़ने से इस भाग को भोजन उपलब्ध कराना सरल हो गया। अच्छा भोजन मिलने से जनता का स्वास्थ्य अच्छा हुआ जिससे कार्य करने की क्षमता में वृद्धि हुई। इस प्रकार कृषि उत्पादन का औद्योगिक क्रान्ति से गहरा सम्बन्ध हैं।

(9) खनिज पदार्थ (Minirals)—इंग्लैण्ड में कोयला तथा लोहा पास-पास पाया जाता था। इस सुविधा ने भी अनेक मशीनों के निर्माण करने में काफी सहायता प्रदान की। कोयले से भाप बनी जो कल-कारखानों में शक्ति का अच्छा साधन सिद्ध हुई।

(10) प्रतिस्पर्धा तथा राष्ट्रीयता (Rivalry and Nationality)—यूरोप में अन्य देशों की अपेक्षा इंग्लैण्ड में प्रतिस्पर्धा की भावना अत्यधिक थी। इस स्पर्धा को राष्ट्रीय भावना से काफी बल मिला। अंग्रेज अपने को संसार में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करना चाहते थे। इस स्पर्धा तथा राष्ट्रीयता की भावना ने भी औद्योगिक क्रान्ति में बड़ी सहायता की।

(11) धन की प्रचुरता (Abundance of Money)—कल-कारखानों में बड़े पैमाने पर पूंजी का उपयोग होता है। इंग्लैण्ड में व्यापार तथा कृषि-क्रान्ति के कारण धन काफी मात्रा में एकत्र हो गया था, इंग्लैण्ड को मुख्य रूप से दास व्यापार तथा भारत में विस्तृत हो रहे साम्राज्य से धन प्राप्त हुआ। **अतएव इन बड़े-बड़े कारखानों को खोलने में पूंजी के लिए किसी देश का आश्रय लेने की आवश्यकता नहीं थी। धन की प्रचुरता ने भी क्रान्ति को लाने में सुगमता उत्पन्न की।**

औद्योगिक क्रान्ति के मुख्य आविष्कार

कुछ देशभक्तों ने अनेक आविष्कार कर क्रान्ति की लहर को विश्वव्यापी बना दिया और इंग्लैण्ड को सबका नेता बना दिया। **वे आविष्कारक निम्नलिखित थे :**

(1) जोहन के (John Kay)—1723 ई. में एक अंग्रेज 'जोहन के' ने अपनी मशीन **'फ्लाइंग शटल'** का आविष्कार किया। इसके द्वारा एक व्यक्ति थोड़े से समय में बहुत-सा कपड़ा बुनने लगा। जुलाहों को इससे अत्यधिक लाभ हुआ।

(2) **जेम्स हारग्रीव्ज** (James Hargreaves)—जेम्स हारग्रीव्ज ने एक लकड़ी का ढांचा तैयार किया और उसमें आठ तकुए लगाए। इस यन्त्र से एक व्यक्ति आठ व्यक्तियों का कार्य करने में सफल हुआ। इस यन्त्र को '**स्पिनिंग जैनी** (Spinning Genny) का नाम दिया गया। इसका आविष्कार 1765 ई. में हुआ। आगे चलकर '**स्पिनिंग जैनी**' में और सुधार हुए। उसमें 100 तकुए तक कर दिए गए।

(3) **रिचर्ड आर्क राइट** (Richard Ark Wright)—'स्पिनिंग जैनी' में एक कमी थी, उसका कता सूत कच्चा होता था और बुनते समय बार-बार टूटता था। इस कमी को दूर करने के लिए रिचर्ड आर्क राइट ने 1768 ई. में एक नई मशीन का आविष्कार किया। इसमें बेलन (Roller) लगे रहते थे और उससे पक्का सूत काता जाता था। इस मशीन को पानी की शक्ति से चलाया जा सकता था। इसलिए इस यन्त्र को '**वाटर फ्रेम**' (Water Frame) का नाम दिया गया।

(4) **क्राम्पटन** (Crompton)—क्राम्पटन ने 1799 ई. में 'स्पिनिंग जैनी' तथा 'वाटर फ्रेम' को मिलाकर एक नए यन्त्र का आविष्कार किया। इसे **म्यूल या मसलिन व्हील** (Mule or Muslin Wheel) **कहा गया।** यह मशीन बारीक और पक्का धागा कातती थी। अब बढ़िया तथा महीन कपड़ा बनाने में आसानी हो गयी।

(5) **एडमण्ड कार्टराइट** (Edmond Cartwright)—1785 ई. में कार्टराइट ने '**पावर लूम**' (Power Loom) का आविष्कार किया, जिससे कपड़ा वड़ी तेजी से बुनने लगा।

(6) **व्हिटने** (Whitney)—1793 ई. में एक अमरीकी व्हिटने ने अनाज को भूसे से अलग करने वाली मशीन का आविष्कार किया।

(7) **रसायन उद्योग के आविष्कारक** (Inventor of Chemical Industry)—सूत को रंगने के लिए कच्चे तथा खट्टे दूध में भिगोकर 8 मास तक सुखाया जाता था। 1785 ई. में एक रसायनशास्त्री ने **क्लोरीन का प्रयोग रंग उड़ाने के लिए किया।** इस प्रकार 8 मास का काम 2 दिनों में होने लगा। 1785 ई. में सिलैण्डर का भी आविष्कार हुआ जिससे छपाई में बड़ी आसानी हो गयी।

(8) **भाप की शक्ति के आविष्कारक** (Inventors of Steam Power)—**न्यूकॉमन** ने सर्वप्रथम भाप का आविष्कार किया। **जेम्सवाट** ने भाप से चलने वाली मशीन बनाई। जल-शक्ति से भाप की शक्ति कम खर्चीली तथा उपयोगी थी।

(9) **लौह उद्योग में सहायक** (Helpful in Iron Industries)—**अब्राहम डर्बी** ने लोहे को पिघलाने के लिए पत्थर का बुझा कोयला (coke) प्रयोग कर आश्चर्यजनक कार्य किया। 1790 ई. में खानों को उड़ाने के लिए भाप-शक्ति का प्रयोग हुआ। **ओपन हर्थ** (Open Hearth) ने लोहा साफ करने में बड़ी सहायता की। अब लोहा बनाने में सुगमता हो गई। 1815 ई. में हम्फरी डेवी ने सेफ्टी लेम्प बनाकर खान खोदने वालों की जान की रक्षा की।

(10) **सड़कों व रेलों के निर्माणकर्ता** (Constructors of Roads and Rails)—यातायात की सुविधा के लिए **जॉन मैकडम ने पत्थर के छोटे टुकड़ों से** सड़कें बनाने का काम किया। पक्की सड़कें बनने से सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना सुगम हो गया। **ब्रिण्डले ने जहाजी** नहरें बनाकर यातायात में आश्चर्यजनक विकास किया। 1830 में **जॉर्ज स्टीफेन्सन ने रेलगाड़ी बनाकर** संसार को आश्चर्य में डाल दिया। अब सामान ढोना बहुत सुगम हो गया। **वीट-स्टोन ने विद्युत तार** (Electric Telegraph) आविष्कृत कर शीघ्र सन्देश पहुंचाने में सहायता की।

औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव
(EFFECTS OF THE INDUSTRIAL REVOLUTION)

रैम्जे म्योर के अनुसार, **'यह क्रान्ति एक बड़ी भारी, परन्तु शान्तिपूर्वक बिना किसी शोर के साथ हुई क्रान्ति थी।'** औद्योगिक क्रान्ति का प्रभाव इंग्लैण्ड के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों पर विशेष रूप से इस प्रकार पड़ा :

(क) आर्थिक प्रभाव (Economic effects)—इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति ने इंग्लैण्ड की आर्थिक अवस्था में प्रभावशाली परिवर्तन किए। अब तक इंग्लैण्ड एक कृषि-प्रधान देश था, इस क्रान्ति ने उसे औद्योगिक देश बना दिया। नए-नए आविष्कारों के कारण कारखानों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। कुटीर उद्योग-धन्धे समाप्त हो गए और उद्योगों को केवल धनी व्यक्ति ही चलाने में सफल हुए। धनिक अधिक धनी बनते चले गए। अतः पूंजीवाद का जन्म हुआ। पूंजी की मांग बढ़ने लगी जिससे अनेक बैंकों का जन्म हुआ। 1750 ई. में **इंग्लैण्ड में केवल 10-12 बैंक थे, किन्तु 1793 ई. में इनकी संख्या बढ़कर 400 तक पहुंच गई।**

व्यापार में भी बेहद उन्नति हुई। संसार से धन खिंच-खिंच कर इंग्लैण्ड आने लगा। इस क्रान्ति ने अमरीकी उपनिवेशों के खो जाने की क्षतिपूर्ति कर दी। देश में कल-कारखाने ही नहीं बढ़े बल्कि शहरों में पक्के और सुन्दर मकानों का निर्माण हुआ। औद्योगिक क्रान्ति की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन वर्गों के जीवन में हुई क्रान्ति का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था उन्हें ही सर्वाधिक आर्थिक लाभ हुआ। इंग्लैण्ड में भूमि का मूल्य बढ़ जाने से कुलीन वर्ग को अत्यधिक लाभ हुआ। **मध्यम वर्ग भी सन्तुष्ट था, किन्तु श्रमिक वर्ग, जिसका जीवन इस क्रान्ति ने बदल दिया था, सन्तुष्ट न था।**

(ख) सामाजिक प्रभाव (Social effects)—औद्योगिक क्रान्ति ने समाज को मुख्यतः दो भागों में बांट दिया—**एक पूंजीवादी और दूसरे मजदूर।** दोनों में असमानता चरम सीमा पर पहुंच गई। एक वर्ग के पास ऊंचे-ऊंचे शानदार महल थे, जो आनन्द तथा विलासिता से भरपूर थे। दूसरी ओर निर्धनता का नंगा नाच हो रहा था। मकानों के नाम पर सीलदार गन्दी कोठरियां उन्हें रहने को मिलती थीं। खाने को रूखा-सूखा भोजन मिलता था। छोटे-छोटे बच्चों को 16-16 घण्टे काम करना पड़ता था।

कारखानों में सीलन, गन्दगी तथा दुर्गन्ध स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक थी। उससे अनेक मजदूर रोगग्रस्त हो जाते थे। अनेक मजदूर पहियों की पकड़ में आकर घायल हो जाते थे। ऐसे रोगी या घायल व्यक्तियों को कार्य से मुक्त कर दिया जाता था, उन्हें किसी प्रकार की क्षतिपूर्ति न दी जाती थी।

नगरों की संख्या बढ़ रही थी। वहां की आबादी भी बढ़ती जाती थी। मकान जल्दी-जल्दी बन रहे थे, जिसमें स्वास्थ्य का ध्यान न रखा जाता था। नगर गन्दगी से परिपूर्ण थे। नगर में अधिकांश व्यापारी तथा मजदूर रहते थे। व्यापारियों की दशा तो फिर भी ठीक थी, किन्तु मजदूरों का जीवन नारकीय था। सिडनी वेब के शब्दों में—**'औद्योगिक क्रान्ति ने मजदूर को अपने ही देश में एक भूमिहीन परदेशी बना दिया था।'**[1]

(ग) राजनीतिक प्रभाव (Political effects)—प्रजातन्त्र यद्यपि इंग्लैण्ड के शासन की नीति थी, परन्तु इस क्रान्ति ने राज्य में पूंजीपतियों का प्रभाव काफी बढ़ा दिया। उन्होंने धन

1 'The Industrial Revolution has left the labourer a landless stranger in his own country.' —*Sydney Webb*

का लालच देकर वोट लेने प्रारम्भ कर दिए। संसद में पूंजीपतियों की संख्या काफी बढ़ गई। वे अपनी सुविधाओं का ध्यान रखते थे, गरीब जनता का नहीं। **कारखानों की अवस्था, मजदूरों की निर्धनता तथा देश के कुछ विचारकों ने इसमें कुछ सुधार करना चाहा, अतः समाजवाद और साम्यवाद का उदय हुआ, जिन्होंने पूंजीपतियों के अत्याचारों तथा शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द की।** सरकार को विवश होकर 'फैक्टरी एक्ट' बनाने पड़े। बेकारी की समस्या ने सरकार व जनता को परेशान कर दिया। कुछ लोगों ने मशीनों का विरोध किया। अनेक स्थानों पर दंगे हुए, कारखानों में आग लगा दी। सरकार को विद्रोहियों को पकड़ कर फांसी देनी पड़ी। पूंजीपतियों व मजदूरों में भी संघर्ष हुआ। अन्त में मजदूरों की सुविधाओं को मानना पड़ा। **कॉमन सभा का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ा तथा पूंजीपति राजनीति से दूर रहने लगे।**

उद्योग-धन्धों के विकास से बहुत-सा सामान तैयार होने लगा। उसे खपाने के लिए नए-नए बाजारों की खोज हुई। जनसंख्या बढ़ने के कारण उसको बसाने की समस्या भी सामने आयी। अतः साम्राज्यवाद का विकास हुआ।

यातायात की सुविधा से जनता को भी लाभ हुआ और शासन चलाने में सुविधा हुई। रेल तथा तार के प्रयोग से सरकार का शासन सुदृढ़ तथा स्थायी हुआ। राज्य में अनेक नियम पारित हुए जैसा कि एन्सर का भी कथन है—'**19वीं शताब्दी में होने वाले संसदीय सुधार औद्योगिक क्रान्ति के ही कारण हुए थे।**'[1]

औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार
(EXPANSION OF INDUSTRIAL REVOLUTION)

इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुई औद्योगिक क्रान्ति इंग्लैण्ड तक ही सीमित न रही। शीघ्र ही उसका प्रसार यूरोप के अन्य देशों में हुआ। **नेपोलियन बोनापार्ट की पराजय के पश्चात् यूरोपीय महाद्वीप में इस क्रान्ति की प्रगति प्रारम्भ हो गयी।** अमरीका में भी पूंजीपति वर्ग ने बड़े-बड़े फार्म तथा कारखाने खोल लिए तथा श्रमिकों का कार्य करने के लिए अफ्रीका से गुलाम लाए गए। इंग्लैण्ड की तकनीकी सहायता तथा मशीनों की उपलब्धि से 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वहां औद्योगीकरण बड़े पैमाने पर आरम्भ हो गया। स्वतन्त्रता के पश्चात् अमरीका में तीव्र औद्योगिक उन्नति हुई। नवीन आविष्कारों, वैज्ञानिक व तकनीकी उन्नति के कारण अमरीका उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गया। कृषि के उपकरणों को लेकर उद्योगों के लिए इस्पात, बिजली के उपकरण तथा भारी मशीनों का निर्यात होने लगा।

फ्रांस में औद्योगिक उन्नति मुख्यत : 1830 ई. से 1848 ई. के मध्य हुई। नेपोलियन के पश्चात् फ्रांस में पुनः राजतन्त्रात्मक शासन की स्थापना हुई। फ्रांस के राजा लुई फिलिप ने उद्योगपतियों व उद्योगों को प्रोत्साहित किया तथा मजदूरों के आन्दोलनों को दबाया। परिणामस्वरूप देश में उद्योग बढ़ा, रेलों का विस्तार हुआ तथा विदेशों में मशीनों का आयात किया गया। उद्योग को बढ़ाने के लिए सड़कों एवं अन्य यातायात के साधनों का विकास किया गया।

जर्मनी में औद्योगिक विकास कुछ देर से हुआ। राजनीतिक संगठन (Unification) के अभाव में औद्योगिक उन्नति होना सम्भव न था। **बिस्मार्क द्वारा 1870 ई. में जर्मनी का एकीकरण करने के पश्चात् वहां भी औद्योगिक उन्नति तीव्र गति से हुई।**

1 'The Parliamentary Reforms in England in the nineteenth century were the direct outcome of the Industrial revolution.' —*Ensor*

जर्मनी के समान रूस में भी औद्योगिक उन्नति देर से हुई। यद्यपि रूस से जार एलेक्जेण्डर द्वितीय ने कृषक दासता मुक्ति नियम पारित कर कृषकों की दशा सुधारने का प्रयास किया तथा एलेक्जेण्डर तृतीय ने देश में उद्योगों को प्रोत्साहन दिया, विदेशों में लोगों को ट्रेनिंग दिलवायी तथा बाहर से मशीनें मंगवायी, किन्तु इन सब प्रयत्नों के पश्चात् भी रूस में विशेष औद्योगिक उन्नति न हो सकी। रूस में औद्योगिक उन्नति 1917 ई. की क्रान्ति के पश्चात् ही हो सकी। कृषि दासों की मुक्ति से श्रम-समस्या भी हल हो गयी। **शीघ्र ही रूस औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक उन्नत हो गया।**

एशिया में सर्वप्रथम औद्योगिक उन्नति करने वाला देश जापान रहा। कार, रेडियो, ट्रांजिस्टर, कैमरे, घड़ियां व खिलौने बनाने में जापान आज विश्व के अग्रणी देशों में है। जापान ने बड़े उद्योग के स्थान पर छोटे उद्योगों को अधिक प्रोत्साहन दिया, जिससे बेरोजगारी की समस्या न फैल सके।

पूंजीवाद का जन्म
(RISE OF CAPITALISM)

औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप पूंजीवाद का जन्म हुआ। औद्योगिक क्रान्ति से पूंजी थोड़े-से व्यक्तियों के हाथों में ही केन्द्रित होने लगी क्योंकि बड़े-बड़े कारखानों के मालिक धनी व्यक्ति थे। कारखानों से मिलने वाले लाभ से धनी और अधिक धनी होते गए व मजदूरों का शोषण बढ़ता गया। **इस क्रान्ति के कारण मजदूरों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही जो जीविका के लिए पूर्णरूप से कारखाने के मालिकों पर ही आश्रित थे। अमीर वर्ग अथवा पूंजीपति वर्ग का ही शासन में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा।**

साम्राज्यवादिता का उदय
(RISE OF IMPERIALISM)

औद्योगिक क्रान्ति सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में ही हुई थी। अतः विश्व के अनेक देशों में इंग्लैण्ड का बना हुआ माल बिकने लगा। धीरे-धीरे इंग्लैण्ड ने विश्व के अनेक भागों पर आधिपत्य जमाकर वहां के बाजार तथा अन्य स्रोतों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। **भारत पर भी इंग्लैण्ड ने व्यापार के माध्यम से आधिपत्य स्थापित किया।** अपने माल को बेचने के लिए इंग्लैण्ड ने अनेक अविकसित भागों में अपने उपनिवेश स्थापित करने प्रारम्भ कर दिए। इससे इंग्लैण्ड को दोहरा लाभ होता था। उपनिवेशों से कच्चा माल (Raw material) सस्ते दामों पर मिलता था व तैयार माल मंहगे दामों पर वहां बिकता था।

इंग्लैण्ड के समान ही यूरोप के अन्य देशों में भी औद्योगिक क्रान्ति होने पर, उन्हें भी उपनिवेशों की आवश्यकता होने लगी। जहां-जहां इंग्लैण्ड का आधिपत्य पहले से ही था, वहां इंग्लैण्ड से मुकाबला करना सरल न था, अतः सब यूरोपीय देशों में अपने माल को अपने ही देश में बेचने की योजना के अन्तर्गत विदेशों से आने वाले सस्ते माल पर भारी आयात कर लगा दिया गया। इस प्रकार यूरोप के देशों ने अपने-अपने उद्योगों को संरक्षण प्रदान किया।

औद्योगिक उन्नति विदेशों से कच्चे माल मंगाए बिना सम्भव न थी, अतः यूरोप के प्रत्येक देश को उपनिवेशों की आवश्यकता महसूस होने लगी। अतः यूरोप के उन्नत देश अविकसित देशों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो गए तथा एशिया, अफ्रीका व दक्षिणी अमरीका में उन्होंने उपनिवेश स्थापित किए। **इस प्रकार उपनिवेशों**

के साधनों का प्रयोग पहले से ही विकसित देशों की आर्थिक उन्नति के लिए होने लगा। इस प्रकार साम्राज्यवादिता (Imperialism) की जड़ें मजबूत होने लगीं। प्रत्येक देश अधिक से अधिक उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील हो गया। इस प्रकार यूरोपीय देशों में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हुई, जिसका अन्त प्रथम व द्वितीय महायुद्धों के रूप में हुआ। फ्रेंच राजनीतिज्ञ तुर्गो ने ठीक ही कहा था, **"साम्राज्याधीन देश वृक्ष पर लगे हुए फलों के समान हैं जो पक जाने पर स्वयं ही गिर जाते हैं।"**

समाजवाद का उदय
(RISE OF SOCIALISM)

यूरोप में समाजवाद के उदय होने के विषय में जानने से पहले यह जानना आवश्यक है कि वास्तव में समाजवाद क्या है? **समाजवाद की कोई सर्वसम्मत परिभाषा नहीं है।** समाजवाद की अनेक धाराएं व अनेक अवस्थाएं हैं। जितनी परिभाषाएं हुई हैं वह किसी न किसी विशिष्ट धारा अथवा अवस्था को केन्द्रित करके की गयी हैं, अत: वे अधूरी प्रतीत होती हैं। **बर्ट्रेण्ड रसल ने समाजवाद की परिभाषा देते हुए लिखा है,** "हम समाजवाद के सार को यह कहकर व्यक्त कर सकते हैं कि वह भूमि और सम्पत्ति के सामुदायिक स्वामित्व का पक्षपाती है।" परन्तु यह कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है। इससे कुछ अधिक सार्थक परिभाषा ह्यूगन नामक अमरीकी सामाजिक विचारक ने दी है। उनके अनुसार, **"समाजवाद मजदूर वर्ग के उस राजनीतिक आन्दोलन का लाभ है जिसका उद्देश्य उत्पादन के बुनियादी साधनों को सामुदायिक सम्पत्ति बनाकर और उसकी लोकतन्त्रीय प्रबन्ध में रखकर शोषण का अन्त करना है।"** इस परिभाषा से समाजवाद की मूल विशेषता पर प्रभाव अवश्य पड़ता है, किन्तु समाजवाद की पूर्ण परिभाषा यह भी प्रतीत नहीं होती।

प्रो. रघुकुल तिलक के विचार इस विषय में उल्लेखनीय हैं।[1] उन्होंने लिखा है कि परिभाषा की अपेक्षा यदि हम कुछ ऐसे लक्षणों की ओर ध्यान दें जो साधारणतया समाजवाद की सभी धाराओं में पाए जाते हैं तो समाजवाद का स्वरूप समझाने में सहायता मिलेगी। **ऐसे प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं :**

(i) वर्तमान राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को अन्यायपूर्ण मानकर उसकी कड़ी निन्दा।

(ii) एक नवीन न्यायपूर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन।

(iii) इस बात का पक्का विश्वास कि नवीन व्यवस्था को कार्यान्वित किया जा सकता है।

(iv) यह मान्यता कि वर्तमान व्यवस्था का प्रमुख कारण हमारी भ्रष्ट संस्थाएं हैं।

(v) शैक्षिक, नैतिक व सांस्कृतिक क्षेत्रों में नवीन मूल्यों की स्थापना।

(vi) निर्दिष्ट कार्यक्रम को पूरा करने के लिए संकल्प।

ये ऐसे लक्षण हैं जो समाजवाद के प्रत्येक सम्प्रदाय में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहते हैं।

समाजवाद के चार प्रमुख सम्प्रदाय हैं। ये निम्न हैं :

(i) काल्पनिक समाजवाद अथवा यूरोपियन समाजवाद।

---
1 **लोकतन्त्र, स्वरूप और समस्याएं, पृ. 111.**

(ii) वैज्ञानिक समाजवाद अथवा मार्क्सवादी समाजवाद।

(iii) लोकतन्त्रीय समाजवाद।

(iv) कुछ अन्य समाजवादी धाराएं—उदाहरणार्थ, फेबियनवाद, श्रम संघवाद (सिंडिकेलिज्म), श्रेणी समाजवाद (गिल्ड सोशलिज्म) आदि।

औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप पूंजीवादी समाज (Capitalistic Society) को जन्म दिया, जिससे अमीर और अमीर व गरीब और गरीब होते चले गए। मजदूर वर्ग का सर्वाधिक शोषण होता रहा। राष्ट्र की सम्पत्ति का तेजी से विकास हो रहा था, किन्तु उसका मूल्य मजदूरों के स्वास्थ्य से चुकाया जा रहा था। मजदूरों को उस पूंजी का बहुत कम भाग मिलता था, जिसका वे उत्पादन करते थे। अधिकांश मुनाफ़ा कारखाने के मालिकों की जेब में जाता था। इस प्रकार मध्यकालीन सामन्तों और जमींदारों के अतिरिक्त एक नए पूंजीपति वर्ग की स्थापना हुई। मज़दूर पूर्णतया पूंजीपति वर्ग की दया पर ही निर्भर थे। स्वतन्त्र होते हुए भी वे गुलाम थे। धीरे-धीरे एक नवीन वर्ग का भी उदय होने लगा जिसे बुद्धिजीवी वर्ग कहा जाने लगा। कारखानों व मशीनों को ठीक प्रकार से चलाने के लिए तकनीकी योग्यता वालों की आवश्यकता होने लगी। कारखानों में बनने वाले सामान के वितरण, उचित हिसाब-किताब रखने, पत्र-व्यवहार करने तथा व्यापारिक नीति को निर्धारित करने के लिए **पढ़े-लिखे एवं योग्य व्यक्तियों पर पूंजीपतियों को निर्भर रहना पड़ता था।** ये शिक्षित व योग्य व्यक्ति कारखानों के मालिक न होते हुए भी उनकी आधारशिला के समान थे। इस कारण समाज में इस वर्ग को विशिष्ट सम्मान प्राप्त होने लगा। **धीरे-धीरे अपनी शिक्षा, ज्ञान और प्रभाव के कारण इनका वही महत्व हो गया जो मध्यकाल में पादरियों का था।** इस प्रकार मध्यकालीन सामन्त, पादरी व कृषकों का रूप अब पूंजीपति, बुद्धिजीवी व श्रमिकों ने ले लिया।

जिस प्रकार मध्ययुग में परिवर्तन मध्य वर्ग (Middle Class) के सहयोग से हुआ था, उसी प्रकार अब प्रेस, समाचार-पत्र व पुस्तकों की सहायता से इस बुद्धिजीवी वर्ग ने अपने विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे लोग उनके विचारों से प्रभावित होने लगे तथा समाज का नेतृत्व इसी वर्ग के हाथों में आ गया। अतः समाजवादी विचारधाराएं जोर पकड़ने लगीं। प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की सरकार की नीति उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए हस्तक्षेप न करने की थी। इस सिद्धान्त के अनुसार उद्योगपति स्वयं अपने तथा मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए उत्तरदायी होता था। इस नीति ने इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति को विकसित होने का अवसर प्रदान किया, किन्तु कालान्तर में इसके दुष्परिणामों को देखते हुए सरकार ने नीति में परिवर्तन किया। मिलों और कारखानों की आर्थिक स्थिति पर नियन्त्रण करके सरकार ने अपने दायित्व का पालन किया तथा मजदूरों की स्थिति को सुधारने के प्रयत्न प्रारम्भ हो गए।

मजदूरों व उनके नेताओं का विश्वास था कि उनका जीवन समाजवाद की स्थापना से ही सुधर सकता था। बुद्धिजीवी वर्ग के प्रभाव से समाजवाद की भावना दिन-प्रतिदिन तीव्र होती जा रही थी। यूरोप के कुछ प्रमुख बुद्धिजीवी व नेताओं (जो समाजवाद के समर्थक थे) ने मजदूरों में समाजवादी भावनाओं को सशक्त बनाया मजदूरों का विचार था कि समस्त मिलों, कारखानों व भूमि पर राज्य अथवा देश की जनता का आधिपत्य होना चाहिए, न कि कुछ व्यक्तियों का। समस्त साधनों का उपभोग जनता द्वारा किया जाना चाहिए क्योंकि उत्पादन जनता के द्वारा ही किया जाता है। अतः मजदूरों का विचार था कि लाभ भी सबको समान

ही होना चाहिए। निजी सम्पत्ति रखना श्रमिक सामाजिक अपराध समझते थे। उद्योगपति द्वारा इस विचारधारा का विरोध किया जाना स्वाभाविक ही था। **उद्योगपतियों का विचार था कि श्रमिकों को कुछ लाभांश देकर इस विचारधारा का दमन किया जा सकता है। अतः उद्योगपतियों ने कारखानों की दशा सुधारकर तथा मजदूरों की आर्थिक दशा में उन्नति कर इस विचारधारा को समाप्त करने का असफल प्रयास किया, किन्तु समाजवाद की जड़ें अत्यन्त गहरी हो चुकी थीं अतः वे और सशक्त हो गयीं।**

19वीं शताब्दी में विकसित हो रही समाजवादी विचारधाराओं को कार्ल मार्क्स ने और भी सुव्यवस्थित किया। कार्ल मार्क्स ने समाजवाद की नवीन रूपरेखा तैयार की और '**कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र**' (Communist Menifesto) में प्रकाशित की। कार्ल मार्क्स ने कहा पूंजीवाद मनुष्य को गुलामी में जकड़ने वाली एक जंजीर है, जिसे तोड़ना आवश्यक था। पूंजीवाद का विनाश करने के तरीकों को भी कार्ल मार्क्स ने स्पष्ट किया। पूंजीवादी व्यवस्था के जीवित रहते हुए, समाजवाद की स्थापनां की कल्पना भी नहीं की जा सकती। कार्ल मार्क्स का विचार था कि पूंजीवादी व्यवस्था को श्रमिक शक्ति के द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार की विचारधारा ने श्रमिकों को पूंजीवाद का विरोध करने के लिए प्रेरित किया।

इस प्रकार एक ऐसा संघर्ष प्रारम्भ हुआ जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि कोई राज्य किसी अन्य राज्य पर अधिक दिन तक अपना आधिपत्य नहीं रख सकता तथा कोई एक वर्ग सदैव दूसरे वर्ग का शोषण नहीं कर सकता। इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप, विश्व के अनेक देशों में समाजवादी अथवा साम्यवादी संघर्ष की स्थापना हो सकी।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. इंग्लैण्ड में ट्यूडर वंश के शासनकाल का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. हेनरी सप्तम की गृह एवं विदेश नीति का उल्लेख कीजिए।
3. हेनरी अष्टम की गृह एवं धार्मिक नीति पर प्रकाश डालिए।
4. हेनरी अष्टम की विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
5. एलिजाबेथ की गृह-नीति पर प्रकाश डालिए।
6. एलिजाबेथ की विदेश-नीति पर प्रकाश डीलिए।
7. स्टुअर्ट शासक जेम्स प्रथम एवं संसद के मध्य संघर्ष के क्या परिणाम हुए?
8. स्टुअर्ट शासक जेम्स प्रथमकालीन चार संसद का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
9. स्टुअर्ट शासक जेम्स व चार्ल्स प्रथम व संसद के मध्य संघर्ष का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
10. चार्ल्स प्रथम के व्यक्तिगत शासन पर प्रकाश डालिए।
11. दीर्घ संसद के कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।
12. इंग्लैण्ड में हुए गृह-युद्ध (1642-49) की प्रमुख घटनाओं का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हेनरी अष्टम द्वारा मठों के पतन के प्रभावों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. हेनरी अष्टम के जीवन चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।
3. महारानी एलिजाबेथ प्रथम के शासन काल में साहित्य एवं संगीत की उन्नति पर प्रकाश डालिए।
4. महारानी एलिजाबेथ के जीवन चरित्र एवं कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

5. इंग्लैण्ड में हुए गृह-युद्ध (1642-49 ई.) के कारणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
6. चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में इंग्लैण्ड में हुए गृहयुद्ध (1642-49 ई.) की प्रकृति पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।
7. इंग्लैण्ड में हुए गृहयुद्ध (1642-1649 ई.) के परिणामों पर प्रकाश डालिए।
8. चार्ल्स प्रथम एवं संसद के गृह युद्ध से चार्ल्स प्रथम की पराजय के क्या कारण थे? वर्णन कीजिए।
9. राजतंत्र की पुनर्स्थापना से क्या अभिप्राय है?
10. राजतंत्र की पुनर्स्थापना के क्या प्रभाव पड़े?
11. 1688 ई. की इंग्लैण्ड की वैभवपूर्ण क्रान्ति के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
12. 1688 ई. की इंग्लैण्ड की वैभवपूर्ण क्रांति के प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
13. इंग्लैण्ड के 'बिल ऑफ राइट्स' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
14. औद्योगिक क्रांति से आप क्या समझते हैं?
15. औद्योगिक क्रांति के मुख्य आविष्कारों का वर्णन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इंग्लैण्ड में यार्क वंश का संस्थापक कौन था?
2. इंग्लैण्ड में ट्यूडर वंश का प्रथम शासक कौन था?
3. हेनरी सप्तम इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर कब आसीन हुआ?
4. हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड का शासक कब बना?
5. हेनरी अष्टम ने 'ऐनेट्स अधिनियम' कब पारित किया?
6. हेनरी अष्टम ने 'पीटर्स पेन्स अधिनियम' कब पारित किया?
7. हेनरी अष्टम द्वारा पादरियों की शक्ति पर अंकुश लगाने वाले कोई दो अधिनियम लिखिए।
8. हेनरी अष्टम द्वारा पोप से सम्बन्ध समाप्त करने सम्बन्धी कोई दो अधिनियम लिखिए।
9. महारानी एलिजाबेथ प्रथम कब इंग्लैण्ड की शासिका बनीं?
10. इंग्लैण्ड में वैभवपूर्ण क्रांति कब हुई थी?
11. इंग्लैण्ड में 1688 ई. में हुई क्रांति को वैभवपूर्ण क्रांति क्यों कहा जाता है?
12. इंग्लैण्ड में 'बिल ऑफ राइट्स' कब पारित किया गया?
13. 'आद्योगिक क्रान्ति' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया था?
14. 'फ्लाइंग शटल' का आविष्कार किसने किया था?
15. 'स्पिनिंग जैनी' का आविष्कारक कौन था?
16. 'पावरलूम' का आविष्कारक कौन था?
17. अनाज को भूसे से अलग करने वाली मशीन का आविष्कारक कौन था?
18. जेम्स वाट अपने किस कार्य के लिए जाना जाता है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. हेनरी अष्टम इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन हुआ—
   (क) 1485 ई. में (ख) 1547 ई. में (ग) 1509 ई. में (घ) इनमें से कोई नहीं
2. हेनरी अष्टम ने अपना प्रथम विवाह किया—
   (क) कैथराइन से (ख) ऐन बोलेन से (ग) जेन सेमूर से (घ) इनमें से कोई नहीं
3. 'खूनी मेरी' के नाम से किसे जाना जाता है—
   (क) महारानी एलिजाबेथ (ख) मेरी ट्यूडर
   (ग) राजकुमारी क्लीब्ज (घ) इनमें से कोई नहीं

4. महारानी एलिजावेथ प्रथम इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर कब वैठीं—
(क) 1553 ई. में (ख) 1558 ई. में (ग) 1547 ई. में (घ) इनमें से कोई नहीं
5. 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना कब हुई—
(क) 1600 ई. में (ख) 1601 ई. में (ग) 1605 ई. में (घ) इनमें से कोई नहीं
6. इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट वंश का प्रथम शासक था—
(क) एडवर्ड षष्टम (ख) महारानी एलिजावेथ
(ग) जेम्स प्रथम (घ) इनमें से कोई नहीं
7. जेम्स प्रथम इंग्लैण्ड के सिंहासन पर कब आसीन हुआ—
(क) 1603 ई. में (ख) 1566 ई. में (ग) 1714 ई. में (घ) इनमें से कोई नहीं
8. 'ए काउण्टरब्लास्ट टू टोबेटो' किसकी रचना है—
(क) हेनरी सप्तम (ख) जेम्स प्रथम (ग) हेनरी अष्टम (घ) एडवर्ड षष्टम
9. इंग्लैण्ड में सप्तवर्षीय युद्ध किसके शासनकाल में हुआ—
(क) जेम्स प्रथम (ख) चार्ल्स प्रथम
(ग) हेनरी सप्तम (घ) महारानी ऐलिजाबेथ प्रथम
10. चार्ल्स प्रथम इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर कब आसीन हुए—
(क) 1603 ई. में (ख) 1625 ई. में (ग) 1649 ई. में (घ) 1644 ई. में
11. इंग्लैण्ड में वैभवपूर्ण क्रांति कब हुई—
(क) 1688 ई. में (ख) 1680 ई. में (ग) 1789 ई. में (घ) 1685 ई. में
12. इंग्लैण्ड में वैभवपूर्ण क्रांति के समय शासक कौन था—
(क) जेम्स प्रथम (ख) जेम्स द्वितीय (ग) चार्ल्स प्रथम (घ) चार्ल्स द्वितीय

[उत्तर—1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख) 5. (क) 6. (ग) 7. (क) 8. (ख) 9. (ख) 10. (ख) 11. (क) 12. (ख)]

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए—

1. औद्योगिक प्रणाली तथा श्रमिकों के स्तर में होने वाले परिवर्तनों को ही औद्योगिक क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है।
2. 'औद्योगिक क्रान्ति' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम फ्रांसीसी नेता ब्लाकी ने 1833 ई. में किया था।
3. इंग्लैण्ड में 'बिल ऑफ राइट्स' वर्ष 1605 ई. में पारित किया गया।
4. इंग्लैण्ड में गृहयुद्ध (1642-49) महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल में हुआ था।
5. इंग्लैण्ड के शासक जेम्स प्रथम ने 'टू लॉ ऑफ द फ्री मोनार्कीज' नामक पुस्तक की रचना की।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. असत्य, 5. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात एडवर्ड षष्टम इंग्लैण्ड का शासक बना, उसने 1547 ई. से ....तक शासन किया।
2. इंग्लैण्ड की शासिका मैरी ट्यूडर ने 1553 ई. से........तक शासन किया।
3. इंग्लैण्ड की शासिका........(नाम) ने एक वार इंग्लैण्ड की संसद में कहा था, "कुछ नहीं, संसार की कोई वस्तु इस सूर्य के नीचे मुझे इतनी प्रिय नहीं है जितनी प्रिय मुझे अपनी प्रजा की भलाई एवं प्रीति है।"
4. जेम्स प्रथम की 1625 ई. में मृत्यु होने के पश्चात उसका दूसरा पुत्र........(नाम) इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन हुआ।
5. भाप से चलने वाली मशीन का आविष्कार........ने किया था।

[उत्तर—1. 1553 ई., 2. 1558 ई., 3. एलिजावेथ, 4. चार्ल्स प्रथम, 5. जेम्स वाट।]

8

प्रबुद्ध निरंकुशता का युग
[THE AGE OF ENLIGHTENED DESPOTISM]

प्रबुद्ध निरंकुशता से अभिप्राय
(MEANING OF THE ENLIGHTENED DESPOTISM)

अठारहवीं शताब्दी तर्कवाद का युग था। तर्कवाद का गम्भीर प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन पर ही नहीं पड़ा, अपितु इसने राजनीतिक जीवन को भी प्रभावित किया। तर्कवादियों ने शासन-व्यवस्था में कतिपय सुधारों पर बल दिया। इससे प्रभावित होकर इस युग के प्रायः सभी शासकों ने निरंकुश व केन्द्रीकृत शासन-व्यवस्था को अपनाते हुए प्रजा के प्रति अपने उत्तरदायित्व सम्बन्धी सिद्धान्तों को स्वीकार किया। इस युग के शासकों ने अपना उद्देश्य निरंकुश उपायों एवं सार्वभौम सरकार द्वारा प्रजा का हित करना रखा। वे इस सिद्धान्त पर विश्वास करते थे कि उनका अस्तित्व प्रजा के लिए है, किन्तु वे प्रजा द्वारा चयनित नहीं हैं। एक प्रकार से राज्य के दैवी अधिकार के सिद्धान्त के साथ-साथ प्रजा के कल्याण की भावना को भी स्वीकार करना था। इस प्रकार निरंकुश रहकर प्रजाहित के सन्दर्भ में संलग्न रहने की विचारधारा ही प्रबुद्ध निरंकुशता के नाम से जानी जाती है, क्योंकि अठारहवीं शताब्दी में इस प्रकार की विचारधारा की प्रधानता शासकों में थी। अतः इस युग को प्रबुद्ध निरंकुशता के युग के नाम से जाना जाता है, यह स्मरणीय है कि इस युग के शासकों ने जनसत्ता के सिद्धान्तों को कदापि स्वीकार नहीं किया।

प्रमुख प्रबुद्ध निरंकुश शासक
(PROMINENT ENLIGHTENED DESPOTS)

अठारहवीं शताब्दी में यूरोप के प्रमुख प्रबुद्ध निरंकुश शासकों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—

(1) **फ्रेडरिक महान्**[1] (Frederick the Great)
(2) **मेरिया थिरिजा**[2] (Maria Theresa)
(3) **आस्ट्रिया का जोसेफ द्वितीय**[3] (Joseph Second of Austria)

[1] फ्रेडरिक महान् पर विस्तृत विवरण के लिए देखिए अध्याय 11—'**प्रशा का उत्थान**'।
[2] मेरिया थिरिजा पर विस्तृत विवरण के लिए देखिए अध्याय 10—'**आस्ट्रिया साम्राज्य—हैप्सबर्ग राजवंश**'।
[3] जोसेफ द्वितीय पर विस्तृत विवरण के लिए देखिए अध्याय 10—'**आस्ट्रिया साम्राज्य—हैप्सबर्ग राजवंश**'।

(4) **कैथराइन द्वितीय**[1] (Catherine Second)

(5) **पुर्तगाल का जोसेफ प्रथम** (Joseph First of Portugal)—प्रबुद्ध निरंकुश शासकों में पुर्तगाल के शासक जोसेफ प्रथम का नाम भी उल्लेखनीय है। जोसेफ प्रथम ने 1750 ई. से 1777 ई. तक शासन किया। जोसेफ प्रथम ने जहां एक ओर राजतन्त्र के अधिकारों में वृद्धि की, वहीं दूसरी ओर सामन्तों, पुरोहितों के अधिकारों को सीमित किया। मध्यम एवं निम्न वर्ग के कल्याण के लिए प्रयत्न किए। शैक्षणिक विकास की ओर भी बल दिया गया।

(6) **गस्टवस तृतीय** (Gastvas Third)—गस्वटस तृतीय स्वीडन का शासक था। इसने 1771 ई. से 1792 ई. तक शासन किया। वह परिश्रमी प्रतिभा-सम्पन्न एवं प्रबुद्ध निरंकुश शासक था। उसके शासनकाल में सामन्ती अधिकार सीमित हो गए। देश का शैक्षणिक विकास करने के लिए प्रयत्न किए गए। विद्यालयों की स्थापना की गई। कानूनी जटिलताओं को सरल करने का प्रयास किया गया। न्यायाधीशों को पहले से अधिक स्वतन्त्रता प्रदान हुई। उसने स्वीडन में अनेक वित्तीय एवं कृषि सम्बन्धी सुधार किए।

निःसन्देह वह एक प्रबुद्ध निरंकुश शासक था, किन्तु उसके सुधारों के कारण ही कट्टरवादियों ने 1792 ई. में उसकी हत्या कर दी।

(7) **स्पेन का चार्ल्स तृतीय** (Charles III of Spain)—जोसेफ द्वितीय के पश्चात् चार्ल्स तृतीय स्पेन का प्रबुद्ध निरंकुश शासक हुआ। उसने 1738 ई. से 1759 ई. तक नेपल्स के शासक के रूप में स्पेन में जहां अनेक सुधार किए, वहीं 1759 ई. से 1788 ई. तक स्पेन के शासक के रूप में स्पेन में भी महत्वपूर्ण सुधार किए। नेपल्स में उसने पुरोहितों के अधिकार पर अंकुश तो लगाया ही साथ ही सामन्तों के अधिकार भी सीमित कर दिए। पोप के अधिकारों को भी सीमित कर दिया गया तथा जनता के हित की दृष्टि से अनेक सुधार किए।

जहां तक स्पेन का सम्बन्ध है उसने स्पेन के व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। अनेक नहरों व सड़कों का निर्माण हुआ तथा कृषि को वैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया। धार्मिक न्यायालयों के अधिकारों को सीमित करने के साथ-साथ मठों की संख्या में भी भारी कमी कर दी गई। प्राइमरी एवं व्यावसायिक विद्यालय खोले गए। औपनिवेशिक व्यापार से अनुचित प्रतिबन्धों को हटा दिया गया। उच्च वर्ग को व्यापारिक क्षेत्र में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

प्रबुद्ध निरंकुशता की कमजोरियां
(WEAKNESS OF ENLIGHTENED DESPOTISM))

प्रबुद्ध निरंकुशता ने यूरोप में महत्वपूर्ण सुधारों का क्रम तो आरम्भ कर दिया, किन्तु उसके ये सुधार अस्थायी रूप में ही सामने आए, इसका सबसे बड़ा कारण प्रबुद्ध निरंकुशता की कमजोरियां थीं। दूसरे शब्दों में यदि हम यह कहें कि प्रबुद्ध निरंकुशता सफल नहीं हुई तो उसके क्या कारण थे? निःसन्देह वह प्रबुद्ध निरंकुशता की कमजोरियां ही थीं। **संक्षेप में, प्रबुद्ध निरंकुशता की कमजोरियां या उसके अन्तर्गत किए गए सुधारों की असफलता के कारण निम्नवत् थे—**

(1) **राजवंशीय हितों की प्रधानता**—प्रबुद्ध निरंकुशता की प्रथम कमजोरी राजवंशीय हितों की प्रधानता थी। वस्तुतः सोलहवीं शताब्दी से ही यूरोप की राज्य व्यवस्था कुछ ऐसी

1 कैथराइन द्वितीय पर विस्तृत विवरण के लिए देखिए अध्याय 9—'आधुनिक रूस का उत्थान'।

बन गई थी कि अनेक ऐसे राजवंशीय राज्य स्थापित हो चुके थे जिनकी सीमाएं अत्यन्त विस्तृत थीं। इन राजवंशीय साम्राज्यों में अनेक परस्पर विरोधी जातियां निवास करती थीं। **इस प्रकार के राजवंशों में बूर्बां एवं हैप्सबर्ग आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार के राजवंशीय शासकों को अपने विशाल साम्राज्य की भयंकर एवं अलग-अलग प्रान्तीय समस्याओं का सामना करने के लिए उस समय अत्यन्त कठिनाई का सामना होता था, जबकि वे सभी प्रान्तों में एक जैसी सुधार योजना लागू करने का प्रयत्न करते।** इतना होने पर ही शासकों की राजवंशीय हित की इस आकांक्षा ने सदा ही ग्रसित किया था कि वे अपने साम्राज्य का विस्तार अधिकाधिक करें। अतः प्रयत्नों के बावजूद भी उनके सुधार स्थायी सिद्ध न हुए।

(2) **शासकों की सुधारों के प्रति हार्दिक इच्छा की कमी**—अधिकांश प्रबुद्ध निरंकुश शासकों ने हार्दिक इच्छा के साथ सुधार कार्यों में अपने समय, साधन एवं अर्थ का प्रयोग नहीं किया। वस्तुतः उनका प्रथम ध्येय तो साम्राज्य विस्तार ही था। हेज के अनुसार, "**विश्व के इतिहास में पहले कोई भी युग ऐसा नहीं था जिसमें प्रबुद्ध निरंकुशता के युग से अधिक स्वार्थपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष हुआ हो।**"[1] वास्तव में, इस युग में नैतिकता के नियम का उपहास उड़ाया जाता था। प्रबुद्ध निरंकुशता की प्रतिमूर्ति एवं सर्वश्रेष्ठ शासक फ्रेडरिक महान् ने भी साइलेशिया को हस्तगत करने के लिए अनेक युद्ध किए। **यही नहीं, पोलैण्ड के विभाजन में उसका विशेष उत्तरदायित्व था।** इन युद्धों की नीति ने आर्थिक रूप से राष्ट्रों को पंगु तो बनाया ही शासकों का पूर्ण ध्यान सुधार योजनाओं में पूर्ण रूप से कभी लग भी नहीं सका। निःसन्देह शासकों का बहुत थोड़ा समय सुधार कार्यों में लगा जो कि अधिकांशतः युद्ध नीति पर ध्यान के अनुपात में मानवतावाद ही नहीं आर्थिक दृष्टि से भी अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ।

(3) **अशिक्षित प्रजा**—इतिहासकार हेज के अनुसार, "**प्रबुद्ध निरंकुशता की एक अन्य कमजोरी प्रबुद्ध शासकों की अशिक्षित प्रजा भी थी।**"[2] वास्तव में प्रबुद्ध शासकों ने अपनी अशिक्षित प्रजा से कभी भी अपने सुधारों के क्रियान्वयन के सन्दर्भ में सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया ही नहीं। उन्होंने सदा ही अपने सुधारों को जनता पर थोपने का प्रयत्न किया। अतः उनके उत्तम सुधारों को भी जनता ने स्वीकार नहीं किया। अति केन्द्रीकरण की नीति ने स्वायत्तशासी संस्थाओं के विकास के मार्ग को तो अवरुद्ध ही कर दिया। अतः इन परिस्थितियों में उनके सुधार स्थायी सिद्ध न हो सके।

(4) **अयोग्य उत्तराधिकारी**—प्रबुद्ध निरंकुश शासकों के सुधारों की असफलता का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण उसके अयोग्य उत्तराधिकारी भी थे। वास्तव में, सुधारों की सफलता व्यक्तिगत योग्यता एवं प्रतिभा पर आधारित होती है, किन्तु प्रबुद्ध निरंकुश युग भी अयोग्य उत्तराधिकारियों की दृष्टि से अपवाद सिद्ध न हुआ। **उदाहरण के लिए लुई चतुर्दश के उत्तराधिकारी लुई पंचदश व लुई षोडश, अत्यन्त अयोग्य थे।** इसी प्रकार पुर्तगाल नरेश जोसेफ प्रथम की उत्तराधिकारिणी विक्षिप्त थी। पुर्तगाल नरेश गस्टवस तृतीय का उत्तराधिकारी तो पागल था। इस प्रकार अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण प्रबुद्ध शासकों के सुधार अस्थायी सिद्ध हुए।

---

1 "No previous period in the world's history was more replete with international conflicts of a selfish and sordid enlightened despotism."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 424.

2 "Another grave weakness was the contemptuous attitude of the "enlightened" despot toward his 'unenlightend' subjects."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 424.

(5) फ्रांस की राज्य-क्रान्ति का प्रभाव—1789 ई. में फ्रांस की राज्य-क्रान्ति ने प्रबुद्ध निरंकुश शासकों को एक भयंकर चुनौती दी थी। अतः प्रबुद्ध निरंकुश शासकों ने सुधार योजनाओं के क्रियान्वयन के स्थान पर प्रतिक्रियावादी नीति को अपनाना आरम्भ कर दिया। निःसन्देह यह सुधार योजना के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ।

निष्कर्ष
(CONCLUSION)

इस प्रकार स्पष्ट है कि अठारहवीं शताब्दी का युग प्रबुद्ध निरंकुशता का युग था। इस युग में प्रबुद्ध निरंकुश शासकों ने सुधार योजनाएं लागू कीं, किन्तु उनके सुधार कार्यक्रम उनकी आन्तरिक कमजोरियों के कारण स्थायी सिद्ध न हुए और शनैः-शनैः प्रतिक्रियावादी प्रबुद्ध निरंकुशता का विघटन हो गया।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रबुद्ध निरंकुशता से क्या अभिप्राय है? इस युग के शासकों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
2. 18वीं शताब्दी में यूरोप में प्रबुंद्ध निरंकुशता के विकास का विवरण दीजिए।
3. यूरोप के प्रबुद्ध निरंकुशता के विकास में फ्रेडरिक महान् के योगदान की विवेचना कीजिए।
4. प्रबुद्ध निरंकुशता के युग से क्या तात्पर्य है? प्रबुद्ध निरंकुशता की असफलता के कारण बताइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रबुद्ध निरंकुश शासकों के सुधार स्थायी क्यों नहीं हुए?
2. प्रबुद्ध निरंकुश शासकों की कमजोरियां बताइए।
3. प्रबुद्ध निरंकुशता असफल क्यों रही?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रशा के किसी एक प्रमुख प्रबुद्ध निरंकुश शासक का नाम लिखिए।
2. स्पेन के किसी एक प्रबुद्ध-निरंकुश शासक का नाम बताइए।
3. पुर्तगाल के किसी एक प्रबुद्ध निरंकुश शासक का नाम बताइए।
4. प्रबुद्ध निरंकुशता किसे कहते हैं।
5. यूरोप में प्रबुद्ध निरंकुशता की असफलता के लिए उत्तरदायी किसी एक कारण को लिखिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्रबुद्ध निरंकुशता से अभिप्राय है—
   (क) शासन के क्षेत्र में निरंकुशता।
   (ख) जनता व शासक दोनों का पढ़ा-लिखा होना।
   (ग) निरंकुश रहकर प्रजा के हित में संलग्न रहने की विचारधारा।
   (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
2. प्रबुद्ध निरंकुशतायुगीन सुधार स्थायी सिद्ध न हुए, क्योंकि—
   (क) प्रबुद्ध निरंकुश शासकों ने राजवंशीय हितों के प्रति अधिक ध्यान रखा और सुधारों के प्रति कम।
   (ख) सुधार योजनाएं जनता के योग्य न थीं।
   (ग) सुधार योजनाएं अत्यन्त पेचीदा थीं।
   (घ) प्रबुद्ध निरंकुश शासकों की योजनाएं समय से आगे की थीं।

[उत्तर : 1. (ग), 2. (क)।]

9

आधुनिक रूस का उत्थान : पीटर एवं कैथरीन

[RISE OF MODERN RUSSIA : PETRE AND CATHERINE]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(HISTORICAL BACKGROUND)

यूरोपीय महाद्वीप के सबसे बड़े देश रूस का सोलहवीं शताब्दी से पूर्व कोई सुसंगठित राज्य नहीं था। रूस विभिन्न कबीलों में विभक्त था, जिनकी अपनी अलग-अलग संस्थाएं थीं। रूस की विशृंखलित स्थिति का लाभ तेरहवीं शताब्दी में एशियाई बर्बर मुगल तातारियों ने उठाया और रूस पर आक्रमण कर वहां लगभग 100 वर्षों तक शासन किया। रूस को आक्रमणकारियों से उस समय मुक्ति मिली जबकि पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मास्को के शासक इवान महान् ने मुगल-तातारियों की सत्ता को नष्ट कर उन्हें वहां से खदेड़ दिया। इतिहासकार हेज ने ठीक ही लिखा है, **"इवान महान् या इवान भयंकर के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही मास्को एक सुसंगठित रूसी साम्राज्य के रूप में सामने आया।"**[1]

इवान महान् द्वारा मुगल-तातारियों को निष्कासित किए जाने से रूस का सम्पर्क पश्चिमी यूरोप से टूट-सा गया। अतः इवान महान् ने पश्चिमी यूरोप के देशों के साथ सम्बन्ध बनाने का अथक् प्रयत्न किया। उसने रूस को पूरे पूर्वी यूरोप के ईसाई साम्राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करते हुए अन्तिम रोमन सम्राट का कास्टेण्टाइन ग्यारहवें (Constantine XI) की भतीजी से विवाह कर 'जार' (सम्पूर्ण रूस के सम्राट) की उपाधि धारण की। इवान ने 1462 ई. से 1505 ई. तक शासन किया।

इवान महान् की भांति ही इवान चतुर्थ या इवान भयंकर ने भी जारशाही की मर्यादा की रक्षा की। उसने 1533 ई. से 1584 ई. तक शासन किया। इवान भयंकर की मृत्यु के पश्चात् से 1613 ई. तक का काल रूस में अशान्ति का काल था। अशान्ति की समाप्ति के लिए अन्ततः रूसी सामन्तों ने 1613 ई. में एक सभा बुलाई और **माइकेल रोमानोभ को रूस का जार नियुक्त किया।** इस प्रकार 1613 ई. में रूसी सत्ता पर आसीन इस राजवंश का प्रथम जार माइकेल रोमानोभ था। उसने 1613 ई. से 1645 ई. तक शासन किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र अलेक्सिस ने 1645 ई. से 1676 ई. तक शासन किया। तदुपरान्त

1 "Under the rule of such Princess as Ivan the Great and Ivan the Terrible, Mascoby was transformed into the Russian Empire and foundation were laid for later greatness." —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 302.

अलेक्सिस के पुत्र जार थियोडोर ने 1676 ई. से 1682 ई. तक शासन किया, **किन्तु आधुनिक रूस का निर्माता तो जार थियोडोर का छोटा भाई पीटर महान् था, जिसने 1689 ई. से 1725 ई. तक शासन किया।**

पीटर महान्
(PETER THE GREAT)

संक्षिप्त जीवन परिचय

रोमानोभ राजवंश के संस्थापक माइकेल रोमानोभ के पौत्र पीटर का जन्म 30 मई, 1672 ई. में क्रेमलिन नामक नगर में हुआ। उसके पिता का नाम अलेक्सिस था। पीटर ने अपना बाल्यकाल अत्यन्त उच्छृंखलता में व्यतीत किया, परन्तु उसकी इस उच्छृंखलता के कारण ही वह बाल्यकाल से ही मास्को की विदेशी बस्ती में निवास करने वाले यूरोपियनों के काफी निकट आ गया था। उसने इन्हीं से डच एवं फ्रेंच भाषाओं का अल्पज्ञान प्राप्त किया। विज्ञान एवं गणित की जानकारी के साथ-साथ उसने उनसे मशीनों की जानकारी भी प्राप्त की। **पीटर को बाल्यावस्था से ही आक्रमण की व्यूह रचना, घेराबन्दी एवं सैन्य संगठन में विशेष रुचि थी।** अपने इन शौकों को वह अपने मित्रों के साथ खेलकर आनन्दित होता था। अपने बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् 1682 ई. में वह रूस का जार बना, किन्तु अवयस्क होने के कारण शासन की वास्तविक बागडोर उसकी बहिन सोफिया के हाथों में थी। 1689 ई. में वयस्क होते ही उसने शासन की वास्तविक सत्ता अपने हाथों में ले ली और 1725 ई. तक रूस में शासन किया।

पीटर महान् की गृह-नीति
(HOME POLICY OF PETER THE GREAT)

पीटर महान् रूस को एक सुसंगठित एवं सुदृढ़ साम्राज्य के रूप में देखना चाहता था। रूसी संस्कृति व सभ्यता का पाश्चात्यीकरण रूसी प्राचीन रूढ़िगत परम्पराओं को नष्ट करने का पक्षपाती थी। वह रूस की प्रतिष्ठा यूरोप की राजनीति में स्थापित करना चाहता था, किन्तु उसकी इन इच्छाओं अथवा उद्देश्यों की पूर्ति में कतिपय बाधाएं थीं। **अतः उसे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम बाधाओं का निराकरण करना था।**

पीटर महान् की समस्याओं का निराकरण (Removal of the Problems of Peter the Great)

(अ) स्ट्रेल्सी नामक अंगरक्षक दल—पीटर महान् की सबसे बड़ी बाधा स्ट्रेल्सी नामक अंगरक्षक दल था। यह दल पीटर के स्थान पर पीटर की बहिन सोफिया के संरक्षण में सोफिया के पुत्र अलेक्सिस को गद्दी पर बैठाना चाहता था, पीटर की 1697 ई. की विदेश यात्रा का लाभ उठाकर उसकी अनुपस्थिति में इस दल ने भयंकर विद्रोह कर दिया। विद्रोह की सूचना मिलते ही पीटर तुरन्त रूस आया और उसने अत्यन्त निर्दयता से विद्रोहियों का दमन आरम्भ कर दिया। उसने लगभग 5,000 विद्रोहियों के सिर कटवा दिए, लगभग 2,000 विद्रोहियों को फांसी के तख्ते पर लटकवा दिया। उसने स्ट्रेल्सी नामक अंगरक्षक दल को विघटित कर प्रशा के सदृश एक नई राजकीय सेना का गठन किया, इस प्रकार उसने अपनी प्रथम बाधा का निराकरण किया। हेज ने ठीक ही लिखा है **"जिस कठोरता एवं भयंकरता से उसने स्ट्रेल्सी**

का दमन एवं तुरन्त सेना का पुनर्गठन किया उससे यह स्पष्ट हो गया था कि वह प्राचीन रूसी परम्पराओं के त्यागने एवं सभी रूसियों को इस ओर बाध्य करने के लिए कृत संकल्प था।"[1]

(ब) बायर्स नामक रूसी सामन्ती सभा—पीटर महान् के उद्देश्यों की पूर्ति में दूसरी महत्वपूर्ण बाधा बायर्स नामक रूसी सामन्ती सभा थी। बायर्स नामक सामन्ती सभा अत्यन्त प्रतिक्रियावादी एवं रूढ़िवादी थी। पीटर महान् रूस का पाश्चात्यीकरण करना चाहता था। अत: इस सभा का दमन किए बिना पीटर अपने सुधार कार्यक्रम को लागू कर पाने में असमर्थ था, क्योंकि इन सामन्तों की शक्ति अत्यन्त बढ़ चुकी थी। **पीटर ने सर्वप्रथम बायर्स नामक सभा के स्थान पर एक नई सभा का गठन किया।** यह नई सभा सलाहकारिणी सभा थी। यह सभा पीटर के प्रति ही उत्तरदायी थी क्योंकि इस सभा के सदस्यों की नियुक्ति एवं पदच्युति का अधिकार भी उसी के पास था। राजभक्तों को ही इस समिति में स्थान दिया गया था। इस प्रकार पीटर ने सामन्ती सभा के स्थान पर उच्च वर्ग की एक नई सभा की स्थापना कर सामन्ती सभा की शक्ति को क्षीण कर दिया।

(स) रूढ़िवादी एवं स्वतंन्त्र रूसी चर्च—पीटर महान् के सम्मुख तीसरी महत्वपूर्ण बाधा रूढ़िवादी एवं स्वतन्त्र रूसी चर्च की थी। वह चर्च का प्रयोग अपनी निरंकुश राजशाही की सुदृढ़ता के लिए साधन के रूप में करना चाहता था। हेज के शब्दों में, "**वह वास्तव में इस बात के लिए चिन्तित था कि चर्च निरंकुश राजशाही का मित्र बने न कि शत्रु।**"[2] अत: अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने रूसी चर्च एवं रूढ़िवादी कैथोलिक धर्म के प्रति अपनी निष्ठा का प्रदर्शन किया, किन्तु 1700 ई. में रूसी धर्माध्यक्ष की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं होने दिया। नई धार्मिक संस्था '**होली सनद**' (Holy Synnd) की स्थापना की गई। पीटर स्वयं इस संस्था का सर्वोच्च अधिकारी बना। संस्था के सदस्यों की नियुक्ति एवं पदच्युति उसके हाथों में केन्द्रित थी। समिति को यह अधिकार था कि वह चर्च के कर्मचारियों की नियुक्ति एवं पुस्तकों के प्रकाशन पर नियन्त्रण स्थापित कर सकती थी। इस प्रकार जारशाही ने चर्च का प्रबल समर्थन प्राप्त किया।

इस प्रकार पीटर महान् ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति में आने वाली बाधाओं का निराकरण कर रूस को आन्तरिक रूप से सुसंगठित करने का प्रयास किया। इस हेतु उसने महत्वपूर्ण सुधार कार्यक्रम क्रियान्वित किया।

पीटर महान् के सुधार कार्य
(REFORMS OF PETER THE GREAT)

पीटर महान् ने निम्नलिखित सुधार किए :

(1) सेना एवं जहाजी बेड़े का निर्माण (Foundation. of the New army)—स्ट्रेल्सी नामक अंगरक्षक दल का दमन कर पीटर ने रूसी सेना के पुनर्गठन पर बल दिया। उससे पूर्व रूस में नियमित सेना नहीं थी। अत: उसने राजकीय सेना के निर्माण का कार्य किया। अब शहरी एवं राजकीय सेना में भरती के लिए भरती की प्रणाली का प्रयोग किया गया।

1 "The service punishment of the rebellions *Streltsi* and the immediate abolition of their military organization were clear evidence that Peren was determined both to break with the past traditions of his country and to compell all the Russian people to do like wise." —Hayes, *op. cit.*, p. 307.

2 "He was naturally anxious that the church should, become the aily not the enemy of autocracy." —Hayes, *op. cit.*, p. 308.

कृषक दोनों ही वर्ग के लोग सेना में भर्ती हो सकते थे। प्रत्येक 20 कृषक परिवारों में से एक सैनिक सेना में लिया जाता था। अभिजात्य वर्ग के सभी पुरुषों के लिए सैन्य सेवा अनिवार्य घोषित कर दी गई। जर्मनी की सेना के अनुरूप उसने सैनिकों को एक वरदी एवं प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की थी। हेज के अनुसार, **"निःसन्देह यही रूसी सेना पीटर के सुधारों एवं उद्देश्यों के क्रियान्वयन में सहायक बनी।"**[1]

सेना के गठन के साथ-साथ पीटर ने एक जहाजी बेड़े का भी गठन किया। रूसी जहाजों के प्रथम स्क्वाड्रन को 1703 ई. में प्रयोग के लिए समुद्र में उतारा गया, पीटर के शासन काल के अन्त तक रूस के पास 48 बड़े युद्धपोत, 800 गेलीपोत एवं छोटे जहाज एवं 28,000 नौ-सैनिक थे।

(2) **प्रशासनिक पुनर्गठन** (Administrative Reorganization)—प्रशासनिक व्यवस्था के पुनर्गठन के लिए पीटर ने सर्वप्रथम सीनेट की स्थापना की। सीनेट को न्याय, वित्त एवं सैन्य सम्बन्धी कार्य करने होते थे, किन्तु सीनेट को न्याय सम्बन्धी अधिकार नहीं थे। उसके इस कार्य ने सामन्ती सभा के अस्तित्व को क्षीण कर दिया। **पीटर ने प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए दूसरा महत्वपूर्ण कदम प्रिकाजों को समाप्त कर उठाया। प्रिकाज रूस के प्रशासकीय निकायों या विभागों को कहा जाता था।** इनकी संख्या लगभग 50 थी। इनमें पारस्परिक संगठन का नितान्त अभाव था और ये एक-दूसरे विभागों के कार्यों में बाधा उपस्थित करते थे। पीटर ने प्रिकाजों के स्थान पर अधिशासी मण्डल (कालेजियमों) की स्थापना की। ये केन्द्रीय प्रशासनिक संस्थाएं थीं। प्रान्तीय शासन गवर्नरों के हाथों में ही रहा, किन्तु उन पर कठोर नियन्त्रण स्थापित कर दिया गया। नियुक्ति, पदोन्नति, पदच्युति एवं महत्वपूर्ण विषयों के निर्णय का अधिकार जार के पास सुरक्षित रहा।

(3) **आर्थिक पुनर्गठन** (Economic Reorganization)—पीटर ने रूस की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने की ओर विशेष ध्यान दिया। कृषि की दृष्टि से रूस को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृषि के विकास की ओर उसने महत्वपूर्ण कार्य किए, व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग-धन्धों के समुचित विकास के लिए यथासम्भव प्रयत्न किए गए। **आलोनेन्स, तूला एवं उराल से लौह कारखानों को स्थापित किया गया। तूला का अस्त्र-शस्त्र निर्माण कारखाना प्रत्येक वर्ष हजारों की संख्या में बन्दूक व पिस्तौलों को बनाता था, रस्सियां एवं किरमिच बनाने के कारखाने भी खोले गए।** विदेशों से ढलाई, कपड़ा एवं सूत उद्योग से सम्बन्धित कारीगरों को रूस में आमन्त्रित किया गया। साइलेशियाई भेड़ों का आयात उन्नत ऊन की प्राप्ति के लिए किया गया। विदेशों से व्यापारिक सन्धियां की गईं। इस प्रकार पीटर महान् ने रूस का आर्थिक विकास करने के लिए अथक प्रयत्न किए।

(4) **शिक्षा के क्षेत्र में सुधार** (Educational Reforms)—पीटर रूसी जनता का पाश्चात्यीकरण करना चाहता था। अतः उसने रूसी समाज को यूरोपीय शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षा देने की ओर ध्यान दिया। उच्च वर्ग के लड़के व लड़कियों के लिए पढ़ना-लिखना अनिवार्य कर दिया। **उन्हें किसी एक यूरोपीय भाषा का ज्ञान भी प्राप्त करना आवश्यक कर दिया गया। मास्को में नौकाइन विद्यालय की स्थापना की गई। गणित का अध्यापन रूस में इसी विद्यालय में प्रथम बार प्रारम्भ हुआ।** कालान्तर में इस विद्यालय में सेंट पीटर्स वर्ग में स्थानान्तरित कर

1 "Indeed, it was this new army which was Peter's chief concern throughout his reign and the instrument all his reforms." —Hayes, *op. cit.*, p. 308.

दिया गया और वहां यह नौ-सेना अकादमी के रूप में सामने आया। प्रान्तों एवं ग्रामों में भी प्राथमिक विद्यालय खोले गए। **उसी के शासनकाल में सर्वप्रथम रूसी समाचार-पत्र का प्रकाशन भी आरम्भ हुआ।** रूस में अब यूरोपीय पंचांग लागू किया गया।

(5) **सामाजिक जीवन में परिवर्तन** (Change in the Social Life)—पीटर महान् रूस के सामाजिक जीवन, परम्पराओं, रीति-रिवाजों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर उसका यूरोपीयकरण करना चाहता था। अतः उसने कतिपय विज्ञप्तियां प्रकाशित कीं। उसने रूसियों को दाढ़ी बनवाना अनिवार्य कर दिया। जो व्यक्ति इस आज्ञा का उल्लंघन करता उसे कर देना होता था। **राजदरबार में यूरोपीय वेश-भूषा पर अधिक बल दिया गया। पर्दा-प्रथा समाप्त करने का प्रयत्न किया गया।** स्त्रियों को पुरुषों के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया। रूसी स्त्रियों को स्वेच्छानुसार विवाह की अनुमति प्रदान कर दी गई। पीटर के इन सुधारों का कट्टरपंथियों ने जबरदस्त विरोध भी किया। यही कारण था कि पीटर के सुधारों का पूर्ण लाभ रूस नहीं उठा पाया, परन्तु उसने उस काल में जो कुछ भी किया प्रशसंनीय था।

इस प्रकार पीटर की गृह-नीति के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि पीटर ने रूस में एक स्थायी सेना स्थापित की। मध्ययुगीन रूसी सामन्ती व्यवस्था का दमन तो हुआ, किन्तु साथ ही जारशाही को बल मिला। जारशाही के अधिकार असीमित हो गए। अब रूस पहले की अपेक्षा अधिक आधुनिक हो गया। हेज ने ठीक ही लिखा है, **''पीटर ने एक महत्वपूर्ण कार्य आरम्भ किया था जिसके परिणाम भविष्य में दिखाई दिए।''**[1]

पीटर महान् की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF PETER THE GREAT)

रूसी साम्राज्य चारों ओर से स्वीडन, तुर्की एवं पोलैण्ड से घिरा हुआ था। रूस के पास न तो कोई अलग बन्दरगाह था और न ही समुद्र तट था। अपवाद के रूप में रूस के पास केवल **आर्चेंजिल** का बन्दरगाह था, किन्तु इसका उपयोग रूस के लिए नहीं के बराबर था, क्योंकि वह अधिकांशतः बर्फ से आच्छादित रहता था। अतः पीटर महान् रूस को यूरोप का महत्वपूर्ण देश बनाने एवं रूस के व्यापार में वृद्धि के लिए काला सागर या बाल्टिक सागर में अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था। उसके इस उद्देश्य को इतिहास में **'खुली खिड़की प्राप्त करने की इच्छा'** के नाम से जाना जाता है।

खुली खिड़की प्राप्त करने में बाधा (Difficulty in getting an open window)—पीटर महान् को रूस के लिए खुली खिड़की प्राप्त करने में स्वीडन एवं तुर्की की ओर से भयंकर बाधा का सामना करना पड़ा था। यदि वह बाल्टिक सागर की ओर प्रयत्न करता तो उसे तुर्की से युद्ध के लिए तैयार होना था एवं स्वीडन से युद्ध करना पड़ता और यदि काला सागर की ओर प्रयत्न करता तो उसे तुर्की के युद्ध के लिए तैयार होना था। स्वीडन का इस समय सम्पूर्ण उत्तरी यूरोप में जबरदस्त प्रभाव था। उधर तुर्की से टक्कर लेना भी कम कठिन न था, परन्तु दृढ़ निश्चयी पीटर ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भरसक प्रयत्न किए। स्वयं पीटर ने कहा था, **''पश्चिम के साथ स्वतन्त्रतापूर्वक एवं सरलता से मिलने-जुलने के लिए यह आवश्यक**

1 **"Peter has begun a work, however which was to bear significant results in the future."** —**Hayes, *op. cit.*, p. 310.**

है कि रूस कहीं एक खिड़की खोले। तभी रूस में बाहर से प्रकाश आ सकेगा।" अतः उसका रूस व तुर्की से युद्ध होना स्वाभाविक हो गया।

खुली खिड़की प्राप्त करने के प्रयत्न

राज्यारोहण के तुरन्त पश्चात् ही पीटर ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिए। 1695 ई. में उसने तुर्की से आजोव (Azov) लेने का प्रयास किया, किन्तु वह असफल रहा। 1695 ई. में उसका आजोव को प्राप्त करने का दूसरा प्रयत्न सफल तो रहा, किन्तु पश्चात् में आजोव पर तुर्की ने अपना अधिकार बना ही लिया।

. 1697 ई. में स्वीडन के शासक चार्ल्स एकादशं की मृत्यु का लाभ उठाकर उसने स्वीडन के साम्राज्य का विघटन करने के लिए स्वीडन के विरोधी देशों का संघ बनाने का प्रयत्न किया। 1699 ई. में वह अपने उद्देश्य में सफल भी हो गया। डेनमार्क, पोलैण्ड एवं रूस इस संघ में शामिल हो गए। प्रशा फिलहाल तटस्थ बना रहा। वास्तव में रूस एवं पोलैण्ड बाल्टिक तट पर स्थित स्वीडन के अधीनस्थ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे। डेनमार्क की दृष्टि हौलस्टीन की डची पर थी। पश्चिमी पामेरेयिन पर प्रशा की दृष्टि थी। अतः संघीय देशों ने संयुक्त रूप से चार्ल्स द्वादश के स्वीडिश साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया। चार्ल्स द्वादश ने इस स्थिति का धैर्य से सामना करते हुए मई, 1700 ई. में डेनमार्क को बुरी तरह पराजित कर संघ को पृथक् होने पर बाध्य कर दिया। **तदुपरान्त चार्ल्स द्वादश ने नारवा (Narva) के स्थान पर पीटर को पराजित किया।** 1704 ई. में चार्ल्स ने पोलैण्ड को परास्त कर पोलैण्ड का शासक स्टानिस लॉस लेस्जेन्की को बनाया।

इस प्रकार 15-वर्षीय चार्ल्स द्वादश की इस अभूतपूर्व उपलब्धि ने यूरोप में उसकी धाक जमा दी, किन्तु इस सफलता ने चार्ल्स को अत्यन्त अहंकारी एवं उन्मत्त बना दिया। उसने पीटर के मैत्री प्रस्ताव को ठुकराते हुए रूस की राजधानी मास्को पर आक्रमण कर दिया। **1709 ई. में पोल्टावा के युद्ध में पीटर ने चार्ल्स को बुरी तरह पराजित किया।** चार्ल्स की सेना अस्तित्वविहीन हो गई। चार्ल्स ने कुछ सैनिकों के साथ भागकर तुर्की में शरण ली।

चार्ल्स बारहवें के बहकावे में आकर तुर्की के सुल्तान ने जार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जार पीटर ने आजोव का प्रदेश तुर्की को सौंपकर उससे मित्रता कर ली। 1711 ई. में तुर्की एवं रूस की पृथक् सन्धि होते ही चार्ल्स द्वादश स्वीडन वापस आया और अपने खोए प्रदेशों की प्राप्ति के लिए तैयारी में जुट गया। 1718 ई. में उसने नार्वे पर आक्रमण किया। इसी समय युद्ध में वह मारा गया। 1721 ई. **में नेस्टाड की सन्धि** (Treaty of Nystad) ने इस युद्ध का अन्त किया। सन्धि के अनुसार रूस को कारेलिया, लिवोनिया का प्रान्त, एस्टोविया, इंग्रिया एवं फिनलैण्ड का दक्षिणी छोर प्राप्त हो गए। कुल मिलाकर पीटर बाल्टिक सागर में खुली खिड़की प्राप्त करने में सफल हो गया, किन्तु काला सागर में खुली खिड़की वह प्राप्त न कर सका।

इस प्रकार पीटर की विदेश नीति के सन्दर्भ में माना जा सकता है कि पीटर महान् के प्रयत्नों के कारण ही रूस का उत्तरी यूरोप की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान स्थापित हो गया। उसने 1721 ई. में इसी उपलक्ष्य में रूसी सम्राट की उपाधि धारण करते हुए कहा था, **"अस्तित्वहीन होते हुए भी हमने अब अस्तित्वमान होना आरम्भ कर दिया है। अब हम विश्व राजनीतिक समुदाय में शामिल हो गए हैं।"**

पीटर महान् के चरित्र एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE CHARACTER AND ACHIEVEMENTS OF PETER THE GREAT)

इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"माइकेल रोमोनोव के पौत्र पीटर महान् को यथार्थ रूप में आधुनिक रूस का पिता कहा जा सकता है।"**[1] निःसन्देह हेज का यह कथन सत्य ही प्रतीत होता है। विशृंखलित रूस को सुसंगठित करने के लिए उसके प्रयास निःसन्देह प्रशंसनीय हैं। यह ठीक है कि उसे समकालीन व्याकरण, साहित्य, गणित, भूगोल आदि का ज्ञान नहीं था, किन्तु वह अत्यन्त परिश्रमी एवं दृढ़ संकल्प शक्ति वाला व्यक्ति था। यह ठीक है कि उसमें निरंकुशता, प्रतिशोधात्मक प्रवृत्ति, क्रोध, निर्दयता आदि उग्र रूप में विद्यमान थी, **"परन्तु उसमें अत्यधिक दृढ़ संकल्प की शक्ति थी, जिसका प्रयोग उसने सदा देश के भले के लिए ही किया।"**[2]

पीटर महान् की उपलब्धियों को उसके उद्देश्यों एवं प्रयत्नों की कसौटी पर कसने पर निष्कर्ष निकलता है कि वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति में कुछ अंश तक सफल भी रहा और असफल भी रहा, परन्तु उसके द्वारा रूस के पाश्चात्यीकरण का जो प्रयत्न किया गया वह तो प्रशंसनीय था ही। **रूसी जनता की रूढ़िवादिता के कारण उसे असफलता का आलिंगन करना पड़ा, यह एक अलग तथ्य है।** उसकी महानता इस बात से ही चरितार्थ हो जाती है कि उसके सुधारात्मक प्रयत्नों को कालान्तर में कैथरीन द्वितीय ने लागू करने का प्रयत्न किया। उसकी निरंकुशता एवं तानाशाही उस युग में रूस के अभ्युदय के लिए आवश्यक थी।

पीटर महान् की साम्राज्यवादी नीति रूस को यूरोप का प्रतिष्ठित देश बनाने की दृष्टि से तर्कसंगत थी। **व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के लिए उसकी खुली खिड़की की नीति प्रशंसनीय थी।** कालान्तर में उसकी विदेश नीति का अनुकरण कैथरीन द्वितीय ने किया। 1725 ई. में पीटर महान् का निधन हो गया, किन्तु वह रूस के लिए एक मार्ग तैयार करके गया, जिसे अब और अधिक सुसंगठित करने की आवश्यकता थी।

पीटर महान् के उत्तराधिकारी (1725 ई. से-1762 ई. तक)
(SUCCESSORS OF PETER THE GREAT)

पीटर महान् की मृत्यु के पश्चात् उसकी महारानी कैथरीन प्रथम ने 1725 ई. से 1727 ई. तक शासन किया। उसके पश्चात् पीटर महान् के पौत्र पीटर द्वितीय ने 1727 ई. से 1730 ई. तक शासन किया। पीटर द्वितीय की उत्तराधिकारी पीटर महान् के भाई इवान की पुत्री जारिना ऐन थी। उसने 1730 ई. से 1740 ई. तक शासन किया। 1740 ई. से 1741 ई. तक रूस का जार इवान षष्टम हुआ। वह जारिना ऐन का पुत्र था। 1741 ई. में पीटर महान् की छोटी पुत्री एलिज़ाबेथ ने शासन सूत्र अपने हाथ में ले लिया और 1762 ई. तक शासन किया। 1762 ई. में एलिजाबेथ की मृत्यु के पश्चात् पीटर तृतीय गद्दी पर बैठा, किन्तु वह अधिक समय तक शासन न कर सका। शीघ्र ही कैथराइन द्वितीय ने उसके विरुद्ध

1 "The Grandson of Michael Romanov was the celebrated Peter the great, who may rightfully be designated as the father of Modern Russia."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 66.

2 "But above all, he was a genius of fierce energy and will, who toiled always for what he considered the welfare of his Country."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 15.

षड्यन्त्र कर उसे कारावास में डाल दिया और 1762 ई. से 1790 ई. तक रूस का शासन अपने हाथों में केन्द्रित रखा।

कैथराइन द्वितीय (1762 ई. से-1796 ई. तक)
(CATHERINE SECOND)

कैथराइन द्वितीय का जन्म मई, 1729 ई. में जर्मनी की एक छोटी रियासत के शासक **क्रिश्चियन आगस्टस** के घर में हुआ था। कैथराइन का प्रारम्भिक नाम सोफिया था। बाल्यकाल में ही एक रोमन पादरी ने भविष्यवाणी की थी कि सोफिया आगे चलकर रानी बनेगी। सोफिया की महत्वाकांक्षा यहीं से अत्यन्त बलवती हो गयी। 1745 ई. में उसका विवाह जारीना ऐन के पुत्र पीटर तृतीय जो कि रूस का उत्तराधिकारी था, से हुआ। अब सोफिया का रूसी जीवन आरम्भ हुआ। उसने अत्यन्त लगन के साथ रूसी रीति-रिवाज, भाषा-शैली, परम्पराओं आदि के अनुरूप स्वरूप स्वतः को ढाल लिया। 1754 ई. में उसने एक पुत्र को जन्म दिया। 1762 ई. में जब पीटर तृतीय रूस का जार बना तो उसने सप्तवर्षीय युद्ध से रूस को अलग करते हुए फ्रेडरिक महान् से समझौता कर लिया। यह स्थिति रूसी सामन्तों के लिए असह्य थी। इसी वर्ष (1762 ई.) में सोफिया ने एक पुत्र को जन्म दिया। पीटर तृतीय ने इस सन्तान को अपना बताने से इन्कार कर दिया। फलस्वरूप सोफिया एवं पीटर तृतीय के सम्बन्धों में दरार उत्पन्न हो गयी। सोफिया ने असन्तुष्ट सामन्तों से मिलकर पीटर तृतीय को कारावास में डाल दिया और रूस के सिंहासन पर कैथराइन द्वितीय के नाम से आसीन हुई। उसने 1762 ई. से 1796 ई. तक शासन किया।

कैथराइन द्वितीय की गृह-नीति
(HOME POLICY OF CATHERINE SECOND)

इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"ज़ारीना (कैथराइन द्वितीय) निश्चित रूप से प्रबुद्ध निरंकुश थी एवं उद्बुद्ध निरंकुश शासकों की कोटि में अपने स्थान को निश्चित करने की पक्षपाती थी।"**[1] वह पीटर महान् की भांति निरंकुश तो थी, किन्तु आतंक उत्पन्न करने वाली नहीं। उसकी दृष्टि में सुधार योजनाएं शासक द्वारा ही लागू की जा सकती हैं। अपनी इसी महत्वाकांक्षा के कारण उसने सेना, नौकरशाही, सामन्तों एवं रूसी चर्च पर जारशाही का नियन्त्रण स्थापित कर दिया।

कैथराइन ने अपनी गृह-नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए—

(1) **सत्ता का केन्द्रीकरण** (Centralization of Power)—कैथराइन ने प्रबुद्ध निरंकुश शासक की अपनी नीति को सफल करने के लिए सर्वप्रथम सत्ता का केन्द्रीकरण किया। उसने राज्य की सम्पूर्ण शक्तियां अपने में निहित कर लीं। मन्त्रियों एवं सामन्तों के अधिकारों को अत्यन्त सीमित कर दिया, परन्तु उनकी सन्तुष्टि के लिए उन्हें उपहार भी प्रदान किए। **स्वामिभक्त सामन्तों, अधिकारियों एवं मन्त्रियों को जागीरें एवं पुरस्कार देने की उसने नीति अपनाई।** इस प्रकार कैथराइन स्वयं ही अपनी सलाहकार एवं चांसलर थी, निःसन्देह उसके शासनकाल में जारशाही अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

---

1 **"The Tsrina was certainly a despot, and she wished her contemporaries to regard her as a enlightened despot."** —**Hayes, *Modern Europe to 1870*, p. 323.**

(2) प्रशासनिक गठन (Administrative Reorganization)—कैथराइन ने जहां एक ओर शासन का केन्द्रीकरण किया, वहीं दूसरी ओर प्रशासन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए सम्पूर्ण साम्राज्य को 50 प्रान्तों में विभक्त कर दिया। प्रत्येक प्रान्त सर्कलों में विभक्त कर दिया गया एवं प्रत्येक प्रान्त व जिले में दो प्रकार की अदालतें स्थापित की गयीं। प्रथम प्रकार की अदालत सामन्त वर्ग के लिए थी एवं द्वितीय प्रकार की अदालत सामान्य जनता के लिए थी। कानून व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार करते हुए उसने 1767 ई. में एक विधि आयोग का गठन किया। इस आयोग में 564 निर्वाचित सदस्य थे। विधि आयोग का कार्य सम्पूर्ण देश में एक जैसी न्याय-व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रयत्न करना था। **उल्लेखनीय बात यह है कि** कैथराइन ने गवर्नरों एवं उप-गवर्नरों के पदों पर या महत्वपूर्ण पदों पर स्वयं ही नियुक्तियां कीं; स्वाभाविक रूप से उसके द्वारा नियुक्त अधिकारी उसके प्रति वफादार थे। कैथराइन ने प्रशासन में सामान्य जनता को भाग लेने ही नहीं दिया।

(3) भू दासों के प्रति नीति (Policy towards Slaves)—कैथराइन ने प्रबुद्ध होने के पश्चात् भी रूस की कुल आबादी के आधे के अधिक संख्या वाले भू दास वर्ग (कृषक दास) के प्रति कोई विशेष सकारात्मक ध्यान नहीं दिया। मेनफ्रेंद के शब्दों में, **"कैथराइन निःसन्देह कुलीनों की साम्राज्ञी एवं भू-स्वामी वर्ग के हितों की रक्षक थी.........उसके शासनकाल में कुलीनों के अधिकारों में तो दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती चली गयी, किन्तु भू-दासों का क्रमशः शोषण जारी रहा।"** फलतः 1773 ई. में उराल प्रदेश एवं वोल्गा घाटी में निवास करने वाले भू-दासों ने पुगाचोव के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। कैथराइन ने इस विद्रोह का कठोरता से दमन कर पुगाचोव की हत्या करवा दी। यही नहीं, उसने 1785 ई. में कुलीन वर्ग की प्रसन्नता के लिए **'अभिजातों के नाम अनुग्रह-पत्र'** भी प्रकाशित करवा दिया। इस पत्र में सामन्तों को विशेष कुलीन कहा गया और उन्हें दूसरे कृषकों को अपने अधीन रखने का भी अधिकार दिया गया।

(4) शिक्षा (Education)—कैथराइन ने प्रबुद्ध निरंकुश शासकों की श्रेणी में अपना स्थान निर्धारित करने के लिए फ्रांसीसी लेखकों एवं दार्शनिक से सम्बन्ध बनाने के प्रयास किए। दिदरो के विश्वकोष का उसने अध्ययन भी किया था। उसने दिदरो को अपने पुत्र के शिक्षक के रूप में रूस आमन्त्रित भी किया था। रूस में अनेक विद्यालय एवं अकादमियों की स्थापना की गयी, किन्तु यह स्मरणीय है कि कैथराइन का यह प्रयास मात्र यूरोप की जनता की दृष्टि में स्वतः के गौरव को प्रतिष्ठित करने के लिए ही था। सामान्य जनता के प्रति उसका कोई लगाव नहीं था। इस बात की पुष्टि मास्को के गवर्नर को लिखे उसके पत्र से हो जाती है। उसने मास्को के गवर्नर को लिखा था, **"मेरे प्रिय राजकुमार आपकी यह शिकायत व्यर्थ है कि रूसियों में शिक्षा के प्रति रुचि नहीं है। यदि मैं स्कूलों की स्थापना करती हूं तो ये अपने लिए नहीं वरन् यूरोप के लिए है जहां की जनता की दृष्टि में अपने गौरव की रक्षा करनी है, जिस दिन हमारे कृषक शिक्षित होने की इच्छा करेंगे उस दिन आप और मैं दोनों अपने पदों को खो देंगे।"**[1]

(5) अन्य सामाजिक कार्य (Other Social Works)—कैथराइन अत्यन्त ही प्रदर्शनकारी थी। उसने रूसी नगरों के सौन्दर्यीकरण पर विशेष ध्यान दिया। रूसी दरबार को वार्साय के

1 **"My dear Prince do not complain that the Russians have no desire for instruction, if I institute school, it is not for us,—it is for Europe, where we must keep our position in Public opinion. But the day when our Peasants shall wish to become enlighened, both you and I will lose our places."**

दरबार की भांति नृत्य, संगीत एवं उत्सवों का अड्डा बना दिया। उसने रूसी संग्रहालयों के सौन्दर्यीकरण में कोई कसर न छोड़ी। कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति के ज्ञान हेतु रूसी वैज्ञानिकों को इंग्लैण्ड भेजा। उसने जनता के अन्धविश्वास को दूर करने के लिए स्वयं भी चेचक का टीका लगवाया।

(6) **चर्च के प्रति नीति** (Policy towards Church)—कैथराइन ने चर्च के प्रति पीटर महान् की ही नीति का अनुकरण किया, किन्तु अब उसने चर्च की सम्पत्ति को भी राज्य के अधीन कर लिया, अब चर्च के अधिकारी राज्य पर आश्रित हो गए। उनकी आर्थिक स्वतन्त्रता का हनन हो गया, अतः अब चर्च राज्य का समर्थक बन गया।

इस प्रकार कैथराइन की गृह-नीति के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि वह सत्ता को अपने तक केन्द्रित तो करना चाहती थी, किन्तु सामन्तों की शक्ति ने उसके इस उद्देश्य में बाधा डाली। उसे सामन्तों को विशेषाधिकार एवं पुरस्कार देकर सन्तुष्ट करना ही पड़ा। फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति से घबराकर उसने भू-दासों के विद्रोह का कठोरता से दमन किया। वस्तुतः वह प्रदर्शन की भूखी थी। जन हित में उसकी विशेष रुचि न थी। **वह इतना अवश्य चाहती थी कि सामान्य जनता उससे प्रसन्न भी रहे और गुलाम भी बनी रहे तथा विदेशों में रूस एक हौवा बना रहे।**

कैथराइन द्वितीय की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF CATHERINE SECOND)

प्रायः यह कहा जाता है कि **'पीटर महान् ने रूस को एक यूरोपीय शक्ति के रूप में परिणित किया तो कैथराइन द्वितीय ने उसे महाशक्ति बना दिया।'** निःसन्देह कैथराइन की विदेश नीति के परिप्रेक्ष्य में यह कथन तर्कसंगत भी प्रतीत होता है। उसने अपनी युद्ध एवं विजय की नीति से रूस को एक महाशक्ति के रूप में खड़ा कर ही दिया। पीटर महान् ने स्वीडन को परास्त कर बाल्टिक सागर में खुली खिड़की रूस के लिए प्राप्त कर ली थी अब रूस को केवल स्वीडन से सतर्क रहने की आवश्यकता थी। इधर पश्चिमी यूरोप से रूस के सीधे सम्पर्क के लिए पोलैण्ड एवं तुर्की दीवार थे। पीटर काला सागर की ओर रूस के लिए खुली खिड़की प्राप्त न कर सका था। अतः कैथराइन का मुख्य उद्देश्य काला सागर एवं भूमध्य सागर में रूसी प्रभुत्व को स्थापित करना था, किंतु यह कार्य इतना आसान नहीं था, क्योंकि बाल्टिक सागर में रूस के प्रभाव की वृद्धि ने प्रशा की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया था। आस्ट्रिया का सीमा विस्तार भी अवरुद्ध हो गया था। इधर फ्रांस पोलैण्ड, तुर्की एवं स्वीडन से मित्रता कर रूसी प्रभाव का दमन करना चाहता था। इन परिस्थितियों में कैथराइन को अपने उद्देश्यों की पूर्ति करनी थी। **कैथराइन ने अत्यन्त कूटनीति एवं धैर्य के साथ अपने उद्देश्यों को पाने का भरसक प्रयत्न किया।**

अपनी विदेश नीति के अन्तर्गत कैथराइन ने निम्नलिखित कार्य किए—

(1) **पोलैण्ड के प्रति नीति** (Policy towards Poland)—कैथराइन द्वितीय ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सिंहासनारूढ़ होते ही सर्वप्रथम 1763 ई. में प्रशा के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए। इस समय प्रशा का शासक फ्रेडरिक महान् था, कैथराइन प्रशा का सहयोग प्राप्त कर पोलैण्ड का विभाजन करना चाहती थी। 1763 ई. में पोलैण्ड के शासक आगस्टस तृतीय की मृत्यु हो गई। प्रशा एवं रूस ने तुरन्त पोलैण्ड के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में अपनी टांग अड़ाते हुए **'स्टैनिस लॉस पोनिआटोवस्की'** को जो कि कैथरीन का प्रिय पात्र व दरबारी था, पोलैण्ड का शासक स्वीकार कर लिया रूस व प्रशा की संयुक्त शक्ति का सामना फ्रांस

व आस्ट्रिया चाहकर भी न कर सके। **पोलैण्ड की संसद को 1764 ई. में पोनिआटोवास्की को पोलैण्ड का शासक स्वीकार करना पड़ा, अब पोलैण्ड में रूस व प्रशा का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया।** पोलैण्ड के कैथोलिकों ने विदेशी प्रभाव के विरोध में एक संघ का निर्माण कर विद्रोह कर दिया। रूसी सेनाओं ने इन संघवादियों का तुर्की की सीमा में घुसकर भी दमन किया। तुर्की की सीमा में रूसी सेना के प्रवेश ने रूस-तुर्की युद्ध आरम्भ कर दिया।

(2) **तुर्की से प्रथम युद्ध** (First War with Turkey)—कैथराइन तुर्की के क्रिमिया प्रान्त एवं काला सागर में रूसी प्रभुत्व स्थापित करना चाहती थी। यही नहीं, वह रूस की दक्षिणी सीमा का विस्तार डेन्यूब नदी तक करना चाहती थी। कैथराइन की दृष्टि माल्डेविया, वालेविया एवं काकेशस पर भी थी। रूसी सेना के बिना अनुमति के तुर्की में प्रवेश करने के सन्दर्भ में कैथराइन ने तुर्की से क्षमा भी मांग ली, किन्तु फ्रांस के भड़कावे में आकर तुर्की ने 1764 ई. में रूस के विरुद्ध युंद्ध की घोषणा कर दी। यही नहीं, तुर्की ने पोलैण्ड में प्रशा व रूसी हस्तक्षेप का भी खुलकर विरोध किया। कैथराइन तो तुर्की से युद्ध कर अपने उद्देश्य को पूर्ण करना ही चाहती थी, अतः रूस व तुर्की में युद्ध आरम्भ हो गया।

रूसी सेनाओं ने आगे बढ़ते हुए आज़ोव, माल्डेविया, वालेविया एवं बुखारेस्ट पर अधिकार कर लिया। इधर रूस के उकसाने पर यूनान ने तुर्की के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। आस्ट्रिया ने तुर्की की ओर से हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किया, किन्तु प्रशा के हस्तक्षेप के कारण आस्ट्रिया को चुप रहना पड़ा। अन्ततः तुर्की को रूस के साथ **'कुचुक कैनारजी की सन्धि' (1774 ई.) करनी पड़ी।**

कुचुक कैनारजी की धाराएं

इस सन्धि की धाराएं इस प्रकार थीं—

(i) रूस का अधिकार आजोव के बन्दरगाह पर मान लिया गया। काला सागर के उत्तर के सभी प्रान्तों से तुर्की का प्रभाव भी समाप्त हो गया।
(ii) माल्डेविया, वालेविया एवं यूनान इस शर्त पर तुर्की को वापस मिले कि इन पर सुल्तान समुचित शासन-व्यवस्था स्थापित करेगा।
(iii) रूस अब कुस्तुन्तुनिया के कतिपय ईसाई चर्चों का संरक्षक हो गया। अब रूसी ईसाइयों को जेरुसलम आ-जा सकने की सुविधा प्राप्त हो गई।
(iv) रूस का कालासागर में प्रभुत्व स्थापित तो हो ही गया साथ ही अब वह तुर्की के बन्दरगाहों का भी प्रयोग कर सकेगा।

इस प्रकार कैथराइन की यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।

(3) **तुर्की के साथ द्वितीय युद्ध** (Second War with Turkey)—'कुचुक कैनारजी' की सन्धि वास्तव में रूसी सीमा विस्तार की एक महान् सीमा रेखा थी, किन्तु कैथराइन को इससे भी सन्तोष नहीं था। वह तो समस्त बाल्कान पर अपना अधिकार स्थापित कर अपने पौत्र के अधीन ग्रीक साम्राज्य की स्थापना करना चाहती थी। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने 1781 ई. में आस्ट्रिया से सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार उसने आस्ट्रिया के शासक जोसेफ द्वितीय का रूस के प्रति समर्थन प्राप्त कर लिया। 1787 ई. में जब उसने जोसेफ के साथ स्वयं क्रीमिया का निरीक्षण किया तो तुर्की के लिए यह असह्य हो गया। तुर्की ने काकेशस के भी हाथ से निकल जाने के भय से 1787 ई. में रूस के विरुद्ध युद्ध

की घोषणा कर दी। यह युद्ध 1792 ई. तक चला। अन्ततः इंग्लैण्ड, हॉलैण्ड व प्रशा के हस्तक्षेप के कारण 1792 ई. में तुर्की व रूस के मध्य सन्धि हो गई।

सन्धि के अनुसार नीस्टर नदी को रूस व तुर्की की सीमा रेखा मान लिया गया।

रूस-तुर्की युद्ध के परिणाम (Effects of Russio-Turkish War)

रूस-तुर्की युद्ध के परिणाम अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इसके परिणामों ने आगे आने वाली यूरोपीय राजनीति को अत्यधिक प्रभावित कियां। अब दक्षिण की ओर रूस की प्राकृतिक सीमा निश्चित हो गयी। रूस का काला सागर में प्रभुत्व स्थापित हो गया। हेज के शब्दों में, **"रूस ने पश्चिम की दूसरी खिड़की को प्राप्त कर लिया।"**[1] अब रूसी जहाज वासफोरस एवं डार्डेनेलीज से होते हुए भूमध्यसागर व दक्षिण यूरोप तक आने-जाने लगे। रूस तुर्की साम्राज्य की ईसाई प्रजा का संरक्षक बन गया था। काला सागर में रूस ने सदा ही तुर्की के आन्तरिक मामलों में इसी आधार पर हस्तक्षेप किया। **हीरालाल सिंह के अनुसार, "यहीं से शीघ्रता से तुर्की का पतन आरम्भ हो गया और कुचुक कैनारजी की सन्धि के पश्चात् निकट पूर्व की समस्या ने भी अपना निश्चित रूप धारण कर लिया।"**[2]

(4) **पोलैण्ड का विभाजन** (Partition of Poland)—1768 ई. से 1774 ई. तक तुर्की के साथ युद्धरत होने के कारण कैथराइन द्वितीय पोलैण्ड की ओर विशेष ध्यान न दे पाई, किन्तु उसने प्रशा से अपने सम्बन्ध मधुर बनाए रखे और 1770-71 ई. में प्रशा के शासक फ्रेडरिक महान् से पोलैण्ड के विभाजन के सन्दर्भ में वार्ता आरम्भ कर दी। 1772 ई. में **प्रशा, आस्ट्रिया एवं मध्य पोलैण्ड के प्रथम विभाजन के विषय में एक समझौता हो गया।** इस विभाजन से प्रशा को डान्जिग एवं थार्न नगरों को छोड़कर सम्पूर्ण पश्चिमी प्रशा का भाग मिल गया। अब पूर्वी एवं पश्चिमी प्रशा का एकीकरण हो गया। रूस को नीपर एवं ड्यूना नदियों के पूर्व में स्थित सम्पूर्ण भू-भाग प्राप्त हुआ। आस्ट्रिया को क्राको नगर को छोड़कर सम्पूर्ण गैलेशिया प्रान्त प्राप्त हो गया। इस विभाजन को 1773 ई. में पोलैण्ड की संसद ने रिश्वत लेकर स्वीकार कर लिया। इस प्रकार पोलैण्ड के राज्य का चौथा हिस्सा कट गया।

पोलैण्ड का प्रथम विभाजन पोलैण्ड के सामन्तों के लिए एक चुनौती बन गया। अतः उन्होंने संगठित होकर विदेशी हस्तक्षेप का विरोध किया, किन्तु रूसी सेनाओं ने इस विरोध का सामना किया। 1793 ई. **में प्रशा व रूस ने मिलकर पोलैण्ड का द्वितीय विभाजन किया।** इस विभाजन से प्रशा को डान्जिग, थार्न एवं पोसेन प्राप्त हो गए। रूस को पूर्वी पोलैण्ड प्राप्त हुआ।

पोलैण्ड में 1794 ई. में पोलैण्ड के विभाजन को लेकर भयंकर विद्रोह हो गया, परन्तु राष्ट्रवादियों के विद्रोह को रूसी सेना ने कुचल दिया। 1795 **में पोलैण्ड का तृतीय बंटवारा कर दिया गया।** रूस को ड्यूना नदी के निचले भाग के बीच का क्षेत्र प्राप्त हुआ। उसे गैलेशिया का शेष भाग भी मिला। प्रशा को वारसा नगर एवं विस्चुला नदी घाटी का भू-भाग एवं आस्ट्रिया को क्राको नगर प्राप्त हुआ।

इस प्रकार पोलैण्ड के विभाजन से रूस को सर्वाधिक लाभ हुआ और अब उसका यूरोपीय महत्व बढ़ गया। कैथराइन की सफल विदेश नीति ने पीटर महान् के कार्य को पूर्ण किया। इस दृष्टि से कैथराइन की विदेश नीति सफल मानी जा सकती है।

---

1 'Russia's recond "Window to the west" was gained.
—Hayes, *Modern Europe to 1870*, p. 326.

2 हीरालाल सिंह, आधुनिक यूरोप का इतिहास, पृ. 285.

कैथराइन द्वितीय के चरित्र व उपलब्धियों का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE CAREER AND ACHIEVEMENT OF CATHERINE SECOND)

कैथराइन द्वितीय जन्म से जर्मन थी, परन्तु 15 वर्ष की अवस्था में ही रूस के उत्तराधिकारी पीटर तृतीय से विवाह के पश्चात् उसने पूर्णतः रूसी जीवन अंगीकार कर लिया था। वह अत्यन्त खूबसूरत एवं बुद्धिमान व तेजस्वी थी। उसकी शिक्षा एवं साहित्य में विशेष रूचि थी। वाल्टेयर, दिदरो जैसे फ्रांसीसी दार्शनिकों से उसका सम्पर्क था। उसने अनेक रूसी साहित्यकारों को राजनीतिक संरक्षण प्रदान किया था, किन्तु उसने शिक्षा और साहित्य को केवल उच्च वर्ग तक ही सीमित रखने का प्रयत्न किया। वह कहा करती थी **"यदि जनसाधारण भी शिक्षा के लिए लालायित होगा तो उसका पद पर बना रहना कठिन होगा।"** कैथराइन अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहने वाली शासिका थी। वह व्यक्तिगत जीवन में दुराचारिणी थी, किन्तु उसमें संकल्प शक्ति का अभाव नहीं था। 1762 ई. में अपने पति को अपदस्थ कर उसने शासन सूत्र अपने हाथों में ले लिया था।

जहां तक उसके आन्तरिक प्रशासन का प्रश्न है वह पूर्ण सफल नहीं रही क्योंकि वह शक्तिशाली सामन्तों का चाहकर भी दमन नहीं कर पाई। रूस के आधुनिकीकरण में उसकी यूरोप में अपना गौरव प्रतिष्ठित करने की ही अभिलाषा कार्य कर रही थी, किन्तु उसकी विदेश नीति अत्यन्त सफल रही। पीटर महान् के अधूरे कार्य उसने पूरे किए। कैथराइन के ही शब्दों में, **"मैं एक गरीब लड़की की तरह तीन-चार बच्चों के साथ रूस आई थी और रूस ने मुझे बहुमूल्य उपहार प्रदान किया। अब मैं रूस को क्रीमिया, आजोव एवं यूक्रेन देकर ऋण के भार से मुक्त हूं।"** हेज ने ठीक ही लिखा है, **"यदि यह कहा जाए कि पीटर महान् ने रूस को एक यूरोपीय राज्य बनाया तो यह भी एकदम सत्य है कि कैथराइन ने रूस को एक महाशक्ति बना दिया।"**[1]

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पीटर महान् की गृह एवं विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
2. आधुनिक रूस के पाश्चात्यीकरण में पीटर महान् के योगदान का परीक्षण कीजिए।
3. कैथराइन द्वितीय के जीवन चरित्र एवं कार्यों का परीक्षण कीजिए।
4. कैथराइन द्वितीय की गृह एवं विदेश नीति लिखिए।
5. 'कैथराइन द्वितीय ने पीटर महान् के कार्यों को पूरा किया' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर की पुष्टि तर्कपूर्ण आख्या सहित कीजिए।
6. 'पीटर महान् ने रूस को एक यूरोपीय शक्ति बनाया तो कैथराइन द्वितीय ने रूस को एक महाशक्ति बना दिया'—इस कथन की समीक्षा कीजिए।
7. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (अ) पीटर महान् की खुली खिड़की की नीति, (ब) कैथराइन द्वितीय, (स) कुचुक कैनारजी की सन्धि का महत्व, (द) पीटर महान्।
8. रूस को एक महान् शक्ति बनाने में कैथराइन द्वितीय के योगदान की समीक्षा कीजिए।
9. पीटर महान् के नेतृत्व में रूस, यूरोप की महान् शक्ति कैसे बना? रूस के संस्थापक के रूप में पीटर महान् के दावे की विवेचना कीजिए।

---

1 "It is can be said for Peter that he made Russia a European power, it can be affirmed with equal truth that Catharine made Russia a great power."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 328.

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पीटर महान् का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत कीजिए।
2. पीटर महान के चरित्र एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।
3. कैथराइन द्वितीय का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत कीजिए।
4. कैथराइन द्वितीय की पोलैण्ड के प्रति नीति का वर्णन कीजिए।
5. कैथराइन के शासनकाल में हुए 'रूस-तुर्की युद्ध' के परिणामों का वर्णन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रूस के शासक पीटर महान् का जन्म कब और कहां हुआ था?
2. पीटर महान् रूस का जार कब बना?
3. धार्मिक संस्था 'होली सनद' की स्थापना किस शासक के शासनकाल में की गई थी?
4. 'होली सनद' नामक धार्मिक संस्था का सर्वोच्च अधिकारी कौन था?
5. पीटर महान की मृत्यु के पश्चात रूस के राजसिंहासन पर कौन आसीन हुआ?
6. कैथराइन द्वितीय के बचपन का नाम क्या था?
7. कैथराइन द्वितीय ने रूस में कब से कब तक शासन किया?
8. आधुनिक रूस का निर्माता किसे कहा जाता है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. निम्नलिखित में से किसे आधुनिक रूस का निर्माता कहा जाता है?
   (क) पीटर महान् (ख) कैथराइन द्वितीय (ग) इवान महान् (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
2. निम्नलिखित में से किस शासक के शासनकाल में रूस में प्रथम बार समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ?
   (क) पीटर महान् (ख) कैथराइन द्वितीय (ग) इवान महान् (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
3. निंम्नलिखित में से किस शासक के शासनकाल में रूस में सर्वप्रथम यूरोपीय पंचांग लागू हुआ?
   (क) पीटर महान् (ख) कैथराइन द्वितीय (ग) इवान महान् (घ) पीटर तृतीय
4. खुली खिड़की प्राप्त करने का अभिप्राय था :
   (क) काला सागर व बाल्टिक सागर में रूस द्वारा अपना प्रभुत्व स्थापित करना।
   (ख) फ्रांस के प्रभाव को कम करने के लिए सेना तैयार करना।
   (ग) हालैण्ड व इंग्लैण्ड से युद्ध करने के लिए नौ-सेना तैयार करना।
   (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
5. कुचुक कैनारजी की सन्धि हुई थी :
   (क) 1774 ई. में. (ख) 1775 ई. में (ग) 1776 ई. में (घ) 1777 ई. में।

निम्नांकित कथनों में 'सत्य' व 'असत्य' दर्शाइए—

1. रूस का तुर्की से प्रथम युद्ध 1764 ई. में हुआ था।
2. कैथराइन द्वितीय ने प्रबुद्ध होने के पश्चात भी रूस की कुल आबादी के आधे से अधिक संख्या वाले भू-दास वर्ग (कृषक दास) के प्रति कोई विशेष सकारात्मक ध्यान नहीं दिया।

[उत्तर—1. सत्य, 2. सत्य।]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

1. कैथराइन द्वितीय रूस के राजसिंहासन पर........ई. में आसीन हुई।
2. पीटर महान........ई. में रूस का जार बना?

[उत्तर—1. 1762, 2. 1682]

10

आस्ट्रिया-साम्राज्य : हैप्सबर्ग राजवंश

[AUSTRIAN EMPIRE : HAPSBURG CLAN]

भूमिका
(INTRODUCTION)

दक्षिणी-पूर्वी जर्मनी में डेन्यूब नदी के दोनों ओर का भू-भाग, जो कि आस्ट्रिया के नाम से जाना जाता था, तेरहवीं शताब्दी में हैप्सबर्ग वंश द्वारा शासित हुआ। पवित्र रोमन साम्राज्य के अधीन ही प्रारम्भ में हैप्सबर्ग वंश ने अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयास किया। आधुनिक युग के आरम्भ में आस्ट्रिया पर चार्ल्स V का शासन था। तीस वर्षीय युद्ध में आस्ट्रिया ने जर्मन साम्राज्य के प्रति उदासीनता प्रकट की और अपना पूर्ण ध्यान वंशानुगत राज्य के विकास की ओर लगाया। **सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में आस्ट्रिया, बोहेमिया और हंगरी आस्ट्रियन साम्राज्य में आ गए।** 1713 ई. **की यूट्रैक्ट की सन्धि के अनुसार हैप्सबर्ग सम्राट को मिलान, नेपल्स, सिसली एवं स्पेनी नीदरलैण्ड्स प्राप्त हो गए। यही स्पेनी नीदरलैण्ड्स अब आस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स के नाम से जाना गया।** इस प्रकार विस्तृत आस्ट्रियन साम्राज्य का शासक तो एक था, किन्तु वहां के पांच भू-भागों (आस्ट्रिया, हंगरी, बोहेमिया, मिलान एवं बेल्जियम) का शासन एक-दूसरे से सर्वथा पृथक् व भिन्न था। सांस्कृतिक विभिन्नता आस्ट्रियन साम्राज्य की एकता में हमेशा कठिनाई बनी रही, किन्तु हैप्सबर्ग वंश ने अपना प्रभुत्व कायम रखा, किन्तु आस्ट्रियन साम्राज्य के शासक चार्ल्स VI के पुत्रविहीन होने के कारण हैप्सबर्ग वंश को 1740 ई. से 1748 ई. तक भयंकर उत्तराधिकार के युद्ध से ग्रसित होना पड़ा।

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध (1740 ई. से 1748 ई. तक)
(WAR OF AUSTRIAN SUCCESSION)

युद्ध की पृष्ठभूमि (Background of the War)

जर्मन एवं आस्ट्रिया के शासक चार्ल्स VI के कोई पुत्र नहीं था। आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के नियम के अनुसार पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी हो सकता था, पुत्री नहीं। चार्ल्स VI के लिए यह गम्भीर समस्या थी। वह आस्ट्रिया के विस्तृत साम्राज्य पर हैप्सबर्ग वंश को बनाए रखना चाहता था तथा साथ ही साम्राज्य को विघटित भी नहीं होने देना चाहता था। अतः **चार्ल्स VI ने अपनी पुत्री मेरिया थिरिजा (Maria Theressa) को अपने पश्चात् सम्पूर्ण आस्ट्रियन साम्राज्य की शासिका बनाने के उद्देश्य से 'प्रैगमैटिक सैन्सन' (Pragmatic Sanction) नामक एक अध्यादेश जारी किया।** इस अध्यादेश के अनुसार मेरिया थिरिजा को सम्पूर्ण आस्ट्रियन साम्राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। अध्यादेश को मान्यता प्रदान करने के

लिए उसने आस्ट्रियन साम्राज्य की संसदों से इसे मान्य करवाया और यूरोप के विभिन्न देशों से भी मान्यता प्राप्त कर ली। केवल बबेरिया ने इस अध्यादेश को मान्यता प्रदान नहीं की। 1740 ई. में चार्ल्स VI की मृत्यु के पश्चात् अब सम्पूर्ण आस्ट्रियन साम्राज्य की शासिका मेरिया थिरिजा हुई।

चार्ल्स VI ने पुत्री के लिए विरासत में मात्र साम्राज्य ही छोड़ा था। साम्राज्य न तो सुसंगठित था और न ही राजकोष धन से परिपूर्ण था। प्रशा के शासक फ्रेडरिक ने इस समय टिप्पणी करते हुए कहा भी था, **''प्रागमैटिक अध्यादेश की स्वीकृति की अपेक्षा यदि चार्ल्स VI अपनी पुत्री के लिए दो लाख सैनिकों की प्रबल सेना छोड़ जाता तो वह शासिका के लिए अधिक लाभप्रद होती।''** निःसन्देह यह कथन अत्यन्त सत्य के निकट था। यह ठीक है कि प्रागमैटिक अध्यादेश की स्वीकृति मिल चुकी थी, किन्तु चार्ल्स VI की मृत्यु होते ही साम्राज्य की कमजोरी का लाभ उठाकर पड़ौसी राज्यों ने आस्ट्रियन साम्राज्य में अपने-अपने हितों की पूर्ति के लिए अभियान आरम्भ कर दिए। प्रशा के शासक फ्रेडरिक महान् ने फ्रांस को बेल्जियम एवं स्पेन को मिलान देने का वादा किया। **फ्रेडरिक महान् तो बबेरिया के राजकुमार को आस्ट्रिया का सम्राट बनाना चाहता था। अतः उसने फ्रांस, स्पेन, बबेरिया, सेवाय, सैक्सनी व प्रशा के राज्यों का एक गुट 1740 ई. में बना लिया।** इस गुट ने मेरिया थिरिजा के उत्तराधिकार को अमान्य घोषित कर दिया और 1740 ई. में फ्रेडरिक महान् की सेना ने साइलेशिया पर आक्रमण कर युद्ध आरम्भ कर दिया।

घटनाएं (Events)

1740 ई. में फ्रेडरिक महान् ने आसानी से साइलेशिया की राजधानी ब्रेसला पर अधिकार कर लिया। फ्रांस व बबेरिया की सेनाओं ने आस्ट्रिया एवं बोहेमिया पर आक्रमण किया। भयभीत होकर मेरिया थिरिजा हंगरी चली गई और मग्यार की प्रजा से सहायता की याचना की। मग्यार जनता से सहायता प्राप्त कर उसने अभियान जारी कर दिया। 1742 ई. तक फ्रेडरिक महान् ने सम्पूर्ण साइलेशिया पर अधिकार कर बबेरिया के शासक को जर्मन सम्राट घोषित कर दिया।

इधर अब इंग्लैण्ड व हॉलैण्ड युद्ध में तटस्थ न रह सके। आस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स में इंग्लैण्ड को व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त थीं। फ्रांस का बेल्जियम की ओर विस्तार इंग्लैण्ड के लिए घातक था। सेवाय को भी मेरिया ने गुट से तोड़ने में सफलता प्राप्त कर ली थी। अतः इन देशों से सहायता प्राप्त कर थिरिजा ने अत्यन्त उत्साह के साथ शीघ्र ही शत्रु पक्ष को बोहेमिया से भागने में सफलता प्राप्त कर ली। अब मेरिया ने फ्रेडरिक महान् से ब्रेसला की सन्धि (1742 ई.) कर उसे साइलेशिया का प्रदेश देने का वचन दिया और शीघ्र ही बबेरिया पर अधिकार कर लिया। अब मेरिया ने फ्रांसीसी सेना को राईन नदी की ओर भगाने में सफलता प्राप्त कर ली। **मेरिया की सफलताओं ने फ्रेडरिक को आतंकित कर दिया, अतः उसने पुनः 1744 ई. में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया।** मेरिया ने 1745 ई. में फ्रेडरिक के साथ सन्धि कर उसे साइलेशिया का सम्पूर्ण प्रान्त सौंप दिया। अब प्रशा युद्ध से अलग हो गया। अतः आस्ट्रिया एवं सार्डीनिया की संयुक्त सेना ने फ्रांस व स्पेन की सेनाओं को पराजित करने में सफलता प्राप्त की। फ्राँस किसी प्रकार आल्सेस, लाटेन एवं आस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स को बचा पाया, किन्तु अब हालैण्ड व फ्रांस के मध्य युद्ध आरम्भ हो गया। **अन्ततः 1748 ई. में 'एला-शैपल की सन्धि' ने आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध को समाप्त किया।**

एला-शैपल की सन्धि (1748)
(TREATY OF AIX-LA-CHAPPLE)

एला-शैपल की सन्धि के निर्णय निम्नवत् थे—

1. आस्ट्रियन साम्राज्य पर मेरिया थिरिजा का अधिकार मान्य हो गया।
2. साइलेशिया पर प्रशा का प्रभुत्व स्थापित हो गया।
3. मेरिया का पति फ्रांसिस ड्यूक ऑफ लारेन को जर्मन सम्राट मान लिया गया।
4. बबेरिया के विटेलवास परिवार को उसका राज्य मिल गया।

इस प्रकार एला-शैपल की सन्धि (1748 ई.) **से मेरिया को आस्ट्रिया के साम्राज्य की शासिका अवश्य मान लिया गया, किन्तु वह इससे सन्तुष्ट न थी।** साइलेशिया का प्रदेश उसके हाथ से छिन चुका था। फ्रांस को कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ, अब इंग्लैण्ड व फ्रांस के मध्य औपनिवेशिक विस्तार के लिए भयंकर प्रतिस्पर्धा आरम्भ हो गई। यही नहीं, प्रशा एवं आस्ट्रिया के मध्य जर्मन नेतृत्व के लिए भयंकर संघर्ष का श्रीगणेश हो गया। सर्वाधिक लाभ प्रशा को हुआ। अब यूरोप में प्रशा का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया। **इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि एला-शैपल की सन्धि 1748 ई. क्रान्ति का सूत्रपात स्थायी रूप से न कर सकी। महत्वाकांक्षी एवं साम्राज्यवादी देशों की पिपासा ने शीघ्र ही 'सप्तवर्षीय युद्ध' (Seven-years War) को जन्म दे दिया।**

सप्तवर्षीय युद्ध के कारण (1756 ई. से 1763 ई. तक)
(CAUSES OF SEVEN-YEARS WAR)

सप्तवर्षीय युद्ध के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारण निम्नवत् थे—

1. **मेरिया थिरिजा की महत्वाकांक्षा** (Ambitions of Maria)—आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के अन्तिम परिणाम में मेरिया थिरिजा को साइलेशिया का प्रदेश प्रशा को सौंपना पड़ा था। यह उसके लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका था। थिरिजा हैप्सबर्ग राजवंश की धूमिल प्रतिष्ठा को पुनः प्रतिस्थापित करना चाहती थी और अब यह प्रशा की शक्ति का दमन करके ही सम्भव था। इधर प्रशा भी साइलेशिया पर अपने अधिकार को कायम रखने के लिए कटिबद्ध था, अतः आन्तरिक रूप से प्रशा व आस्ट्रिया एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रखते थे।

2. **गुटबन्दी (कूटनीतिक क्रान्ति)** (Groupism)—सप्तवर्षीय युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण यूरोपीय राज्यों द्वारा अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए आपस में गुटबन्दी करना था। मेरिया थिरिजा ने फ्रांस व रूस के साथ वार्साय की सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार यदि इंग्लैण्ड और फ्रांस के मध्य युद्ध होता है तो आस्ट्रिया तटस्थ रहेगा। फ्रांस ने इसके बदले आस्ट्रिया के किसी भी क्षेत्र पर आक्रमण न करने का वचन दिया। दोनों देशों ने आपसी सुरक्षा का भी वचन दिया। **इस प्रकार इस सन्धि ने प्रशा के आस्ट्रिया पर आक्रमण होने की स्थिति में फ्रांस की सहायता का वचन प्राप्त कर लिया, परन्तु इंग्लैण्ड द्वारा फ्रांस पर आक्रमण होने की स्थिति में आस्ट्रिया फ्रांस की सहायता के लिए वचनबद्ध न था।** इस स्थिति ने फ्रांस व आस्ट्रिया को जहां एक किया वहीं अब इंग्लैण्ड व आस्ट्रिया की प्राचीन मित्रता का अन्त हुआ। 1757 ई. में रूस की शासिका एलिजाबेथ ने इस सन्धि को स्वीकार कर लिया।

इस स्थिति में इंग्लैण्ड ने अब प्रशा के साथ रक्षात्मक एवं आक्रमणात्मक सन्धि की। दोनों देशों के बीच हुई वैस्टमिनिस्टर की सन्धि के अनुसार दोनों देशों ने जर्मनी की तटस्थता की रक्षा तथा किसी भी बाहरी आक्रमण का मिलकर विरोध करने का वचन दिया। इस प्रकार

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के पश्चात् होने वाली इस गुटबन्दी ने यूरोप को स्पष्ट रूप से दो खेमों में बांट दिया। एक और फ्रांस, आस्ट्रिया व रूस थे तो दूसरी ओर इंग्लैण्ड व प्रशा। इन गुटबन्दियों ने प्राचीन मित्रता व शत्रुता के अस्तित्व को ही परिवर्तित कर दिया। अतः **इन गुटबन्दियों को इतिहास के कूटनीतिक क्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है।**

3. **आंग्ल-फ्रांसीसी औपनिवेशिक संघर्ष** (Anglo-French Colonical Rivalry)—सप्तवर्षीय युद्ध का परोक्ष कारण आंग्ल-फ्रांसीसी औपनिवेशिक संघर्ष भी सिद्ध हुआ। 1740 ई. से 1748 ई. तक दोनों देशों के मध्य भारत में कर्नाटक के युद्ध हो चुके थे। अमरीका में भी दोनों की यही स्थिति थी। 1754 ई. से दोनों देशों में प्रतिस्पर्द्धा पुनः आरम्भ हो गयी थी।

4. **व्यक्तिगत कारण** (Personal Causes)—युद्ध का व्यक्तिगत कारण फ्रेडरिक महान् एवं आस्ट्रिया, रूस एवं फ्रांस की स्त्री शासिकाओं के विरुद्ध अपनी वाक् प्रगल्भता भी था। फ्रेडरिक महान् के समय-समय पर दिए गए वक्तव्यों से मेरिया थिरिजा, एलिजाबेथ एवं प्रेमिका मदाम पोम्पादू अत्यन्त रुष्ट थीं, अतः आपसी प्रतिद्वन्द्विता ने भी आग में घी का कार्य किया।

5. **तात्कालिक कारण** (Immediate Cause)—युद्ध का तात्कानिक कारण प्रशा द्वारा युद्ध की बिना घोषणा किए ही अगस्त, 1757 ई. में सैक्सनी पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लेना बना। फ्रेडरिक की इस गतिविधि से रूस एवं स्वीडन आतंकित हो गए और शीघ्र ही दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया।

युद्ध की घटनाएं
(EVENTS OF THE WAR)

फ्रेडरिक महान् के कुशल नेतृत्व में प्रशा की सेना ने सैक्सनी पर अधिकार कर प्राग् की ओर प्रस्थान किया, किन्तु विवश होकर फ्रेडरिक को प्राग् का घेरा उठा लेना पड़ा, क्योंकि अब तक रूस, आस्ट्रिया एवं फ्रांस की सेनाओं ने प्रशा को चारों ओर से घेर लिया। रूस ने पूर्वी प्रशा पर, आस्ट्रिया ने साइलेशिया पर, फ्रांस ने पश्चिम की ओर तथा स्वीडन ने उत्तरी ब्रेण्डेनबर्ग पर आक्रमण किए। **यह समय फ्रेडरिक के लिए अत्यन्त संकट का समय था, किन्तु फ्रेडरिक ने साहस व अपनी कुशलता का परिचय देते हुए अपने शत्रुओं की व्यूह रचना को छिन्न-भिन्न कर दिया,** किन्तु अब फ्रेडरिक की सैन्य शक्ति अत्यन्त क्षीण हो गयीं थी, अतः उसे आने वाले पांच वर्षों में रक्षात्मक युद्ध करना पड़ा। 1761 ई. में रूस की जारिना एलिजाबेथ की मृत्यु हो जाने पर फ्रेडरिक का सम्बल बढ़ गया क्योंकि नया जार पीटर तृतीय फ्रेडरिक का समर्थक था। अतः रूस ने युद्ध से हाथ खींच लिया। पीटर तृतीय के पश्चात् कैथराइन द्वितीय ने भी प्रशा के प्रति उदार नीति का परिचय दिया। इससे आस्ट्रिया व रूस की मित्रता समाप्त हो गयी। इधर स्वीडन ने प्रशा से मित्रता कर ली। अब तक फ्रांस भी इंग्लैण्ड के साथ औपनिवेशिक युद्धों में इतना जर्जरित हो चुका था कि वह आस्ट्रिया की सहायता करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। **अतः विवश होकर मेरिया थिरिजा को प्रशा के साथ ह्यूबर्ट्सबर्ग की सन्धि करनी पड़ी।**

ह्यूबर्ट्सबर्ग की सन्धि, 1763 ई.
(THE TREATY OF HUBERTUSBURG, 1763)

ह्यूबर्ट्सबर्ग की सन्धि के अनुसार साइलेशिया पर प्रशा के अधिकार को स्वीकार कर लिया गया। फ्रेडरिक महान् ने भी आर्च ड्यूक जोसेफ के जर्मन सम्राट के चुनाव में समर्थन का वादा किया।

इस प्रकार 15 फरवरी, 1763 ई. की इस सन्धि ने सप्तवर्षीय युद्ध का अन्त तो कर दिया, किन्तु इसके परिणाम अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। प्रशा की प्रधानता अब सम्पूर्ण यूरोप में स्पष्ट हो गई। उत्तरी जर्मनी प्रशा के अधीन हो गया। आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग वंश की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। फ्रांस को कोई लाभ न मिला। युद्ध में उसकी असीम क्षति हुई थी। वह सैन्य व आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त निर्बल हो गया। विवश होकर उसे इंग्लैण्ड के साथ पेरिस की सन्धि करनी पड़ी। अतः इंग्लैण्ड का एकाधिकार अब समुद्र में हो गया और उसके विश्वव्यापी औपनिवेशिक साम्राज्य का द्वार निष्कंटक हो गया। यह उल्लेखनीय है कि इस युद्ध ने प्रशा व आस्ट्रिया की शत्रुता को और अधिक भड़का दिया। अतः कालान्तर में बवेरिया के उत्तराधिकार के प्रश्न पर 1777 ई. से 1779 ई. तक दोनों देशों में पुनः युद्ध हुआ, किन्तु अब यह स्पष्ट हो गया कि आस्ट्रिया का हैप्सबर्ग वंश पतनावस्था में था।

मेरिया थिरिजा के आन्तरिक सुधार
(DOMESTIC REFORMS OF MARIA THERESSA)

मेरिया थिरिजां ने अपने पति फ्रांसिस प्रथम (1745 ई. से 1765 ई. तक) के शासन काल में तथा अपने पुत्र जोसेफ द्वितीय के शासन काल के पूर्वार्द्ध (1765 ई. से 1780 ई. तक) में आस्ट्रिया के शासन की बागडोर अपने हाथों में रखी। यह ठीक है कि वह अपनी विदेश नीति में प्रायः असफल ही रही, किन्तु जहां तक आन्तरिक प्रशासन का प्रश्न था उसने प्रजा के उत्थान के लिए भरसक प्रयत्न किया। **सर्वप्रथम उसने केन्द्रीकरण के मार्ग का अवलम्बन किया। उसने वियना के मन्त्रिमण्डल को पुनर्गठित किया।** एक आस्ट्रियन सेना का निर्माण किया। साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों के लिए विभिन्न संस्थाएं स्थापित कीं। प्रान्तीय परिषदों को केन्द्रीय प्रशासन के अधीन कर दिया गया। प्रान्तीय परिषदों के अधिकार भी समाप्त कर दिए गए, वियना में सर्वोच्च न्यायालय की भी स्थापना की तथा एक विधि संकलन आयोग का गठन किया गया।

युद्ध विभाग को पुनर्गठित किया गया। सैन्य विभाग में जर्मन भाषा प्रयोग में लायी जाने लगी। सैनिकों के लिए प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की गई। सेना में अनुशासन पर विशेष बल दिया गया। **शिक्षा व्यवस्था** में सुधार के प्रयत्न किए गए। आस्ट्रिया में प्राइमरी, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालयों को सुसंगठित किया गया। संगीत एवं चित्रकला को विशेष प्रोत्साहन दिया गया। **कृषकों की स्थिति** में सुधार लाने के उसके प्रयत्न सामन्तों की स्वार्थपरता के कारण सफल न हो सके। **इतना सब कुछ होते हुए भी मेरिया थिरिजा ने कट्टर कैथोलिक होने के कारण धार्मिक सहिष्णुता की नीति नहीं अपनाई।** कैथोलिक धर्म के प्रति उसकी अपार निष्ठा थी। उसने दो जेसुएटों के दमन की नीति अपनाई तथा अन्य धार्मिक समुदायों पर भयंकर प्रतिबन्ध लगा दिए। यही कारण था कि उसके सुधार पूर्णतः सफल न हो सके।

जोसेफ द्वितीय (1765 ई. से 1790 ई. तक)
(JOSEPH SECOND)

फ्रांसिस प्रथम की मृत्यु के पश्चात् 1765 ई. में जोसेफ द्वितीय जर्मन सम्राट के पद पर आसीन हुआ, किन्तु 1780 ई. तक उसने अपनी माता मेरिया थिरिजा के साथ शासन किया। कुल मिलाकर वास्तविक शक्ति मेरिया थिरिजा के हाथों में केन्द्रित थी, किन्तु 1780 ई. में मेरिया की मृत्यु के उपरान्त वह सम्पूर्ण आस्ट्रियन साम्राज्य का शासक बना और उसने 1790 ई. तक आस्ट्रियन साम्राज्य पर शासन किया।

जोसेफ द्वितीय के आन्तरिक सुधार (Domestic Reforms of Joseph Second)

जोसेफ द्वितीय प्रबुद्ध निरंकुशता का पक्का समर्थक था। वह रूसो एवं वाल्टेयर के विचारों से अत्यधिक प्रभावित था। उसने स्वयं कहा था, **''मैंने दर्शन शास्त्र को अपने साम्राज्य का विधायक बनाया है।''** अपने उच्च आदर्शों एवं विचारों के कारण ही उसने अनेक सुधार कार्यक्रम आरम्भ किए, जिनका **संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है—**

1. **धर्म के क्षेत्र में सुधार (Religious Reforms)**—जोसेफ द्वितीय धर्मसहिष्णु शासक था। अतः उसने कैथोलिक चर्च को राज्य के अधीन करने, पोप के अधिकारों एवं अन्धविश्वासों का अन्त करने का दृढ़ संकल्प लिया। उसने तुरन्त यह विज्ञप्ति जारी कर दी कि आस्ट्रियन साम्राज्य में बिना राजाज्ञा के पोप के आदेश लागू नहीं होंगे। चर्च की सम्पत्ति राज्य के अधीन कर ली गई। बिशपों की नियुक्ति स्वयं वह करने लगा। पारस्परिक पूजा विधि का खण्डन कर मठों को नष्ट कर दिया गया। पुरोहितों को राजकीय विद्यालयों में शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। उसने कैथोलिकों, प्रोटेस्टेण्टों एवं यहूदियों को समान अधिकार प्रदान किए।

धर्म के क्षेत्र में किए गए उसके ये सुधार सफल न हो सके, क्योंकि इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों को तत्कालीन कट्टर श्रद्धालु कैथोलिक समुदाय सहन न कर सका और कैथोलिक जनता में असन्तोष व्याप्त हो गया। अतः अब उसकी आन्तरिक समस्याएं बढ़ गईं।

2. **राजनीतिक क्षेत्र में सुधार (Political Reforms)**—जोसेफ द्वितीय सत्ता का केन्द्रीकरण करना चाहता था। **अपने उद्देश्य** की पूर्ति के लिए उसने सम्पूर्ण आस्ट्रियन साम्राज्य में एक जैसी शासन-व्यवस्था लागू की। हंगरी की संसद को भंग कर दिया गया। सम्पूर्ण साम्राज्य को 13 प्रान्तों में विभक्त कर दिया गया। प्रान्तों को मण्डलों में, मण्डलों को जिलों में और जिलों को नगरों में विभक्त कर दिया गया। सत्ता का केन्द्रीकरण कर दिया गया। स्थानीय अधिकारों को समाप्त कर सम्पूर्ण अधिकार केन्द्र में निहित हो गए। वियना शासन संचालन का केन्द्र बन गया। अनिवार्य सैन्य सेवा लागू कर दी गई। कृषकों को भी निश्चित अवधि के लिए सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया। एक आस्ट्रियन सेना का गठन किया गया। तोपखाने पर विशेष बल दिया गया। सम्पूर्ण साम्राज्य की भाषा जर्मन भाषा घोषित कर दी गई।

जोसेफ द्वितीय को अपने उक्त परिवर्तनों के कारण विरोध का भी सामना करना पड़ा। नीदरलैण्ड्स, हंगरी एवं टायरोल में उसकी केन्द्रीकरण की नीति के विरोध में विद्रोह हो गया। बेल्जियम तथा टायरोल से आस्ट्रियन अधिकारियों को भगा दिया गया। बेल्जियम की संसद ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। बेल्जियम के विद्रोह के कारण ही जोसेफ तुर्की के विरुद्ध अपनी पूर्ण सैन्य शक्ति का प्रयोग न कर सका। इस प्रकार उसके राजनीतिक सुधार व्यावहारिक रूप में उसके लिए संकट बन गए।

3. **सामाजिक सुधार (Social Reforms)**—जोसेफ द्वितीय समानता का पक्षपाती था। अतः उसने सभी अर्द्धदासों की स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। अभी तक सामन्तों की आज्ञा के बिना अर्द्धदास विवाह भी नहीं कर सकते थे। न अपनी सम्पत्ति का क्रय-विक्रय कर सकते थे और न स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण कर सकते थे। बेगार से भी उन्हें धन देकर मुक्ति मिल पाती थी। जोसेफ की अर्द्धदासों की स्वतन्त्रता की घोषणा से अब अर्द्धदास बन्धन मुक्त हो गए। दूसरे शब्दों में, अब उन पर से सामन्तों का प्रभुत्व कम हो गया। जोसेफ ने सभी वर्ग के व्यक्तियों को बिना शुल्क के प्राथमिक शिक्षा की योजना बनाई। उसके इन सुधारों से सामन्त

वर्ग अत्यन्त रुष्ट हो गया। मध्यम वर्ग उसकी व्यापार व वाणिज्य में हस्तक्षेप की नीति से अत्यन्त रुष्ट हो गया।

इस प्रकार जोसेफ के सुधारों का विवेचन स्पष्ट करता है कि उसकी योजनाएं अत्यन्त प्रवुद्ध थीं, किन्तु उसे फिर भी महान् विफलताओं का सामना करना पड़ा।

सुधार योजना की विफलता के कारण (Causes of Failure)

1. जोसेफ द्वितीय की धार्मिक सुधार की नीति से कैथोलिक वर्ग असन्तुष्ट हो गया था और उसने उसकी नीतियों का विरोध आरम्भ कर दिया था। वास्तव में, वह युग कट्टर धार्मिक प्रक्रियावाद का युग था। ऐसे समय में धार्मिक समानता की बात निरर्थक सिद्ध हो गई।

2. जोसेफ द्वितीय ने कृषकों के लिए अनिवार्य सैन्य शिक्षा लागू कर दी। इससे कृषक वर्ग उससे असन्तुष्ट हो गया।

3. अर्द्धदासों की स्वतन्त्रता की घोषणा ने सामन्त वर्ग में रोष उत्पन्न कर दिया। इससे सामन्तों के सामन्ती अधिकारों का हनन होता था।

4. उद्योग-धन्धों एवं व्यापार व वाणिज्य पर राजकीय नियन्त्रण की उसकी नीति ने मध्यम वर्ग को भी रुष्ट कर दिया।

इस प्रकार जोसेफ़ द्वितीय की योजनाओं के उत्तम होते हुए भी महान् विफलताओं का आलिंगन करना पड़ा जिसने उसकी कठिनाइयों को और भी अधिक बढ़ा दिया और वह अपनी विदेश नीति को भी ठीक से सफलतापूर्वक कार्यान्वित न कर सका।

जोसेफ द्वितीय की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF JOSEPH SECOND)

जोसेफ द्वितीय आक्रामक विदेश नीति का समर्थक था। वह पूर्व में काला सागर एवं दक्षिण में एड्रियाटिक सागर की ओर आस्ट्रियन साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार करना चाहता था। इसके लिए उसे तुर्की के सीमावर्ती क्षेत्रों को जीतना आवश्यक था। यदि वह बबेरिया पर अधिकार करने में सफल हो जाता तो टायरोल व बोहेमिया से आस्ट्रिया का सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता। यही नहीं, वह जर्मन राजकुमारों पर भी अपने प्रभाव को स्थापित करना चाहता था। **अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने यूरोपीय देशों से अपने सम्बन्धों को इस प्रकार क्रियान्वित किया—**

(1) **रूस, फ्रांस एव पोलैण्ड के प्रति रुख** (Attitude towards Russia, France and Poland)—जोसेफ द्वितीय की सीमा विस्तार की नीति में सबसे प्रबल बाधा फ्रांस व प्रशा की ओर से थी। अतः प्रशा के विरोध का सामना करने के उद्देश्य से उसने उसके साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाने के प्रयास किए। फ्रांस के प्रति उसने स्वयं तटस्थता की नीति का पालन किया। जहां तक पोलैण्ड का प्रश्न था उसने अपनी माता मेरिया थिरिजा पर पोलैण्ड के विभाजन में हस्तक्षेप करने के लिए केवल इस कारण दबाव डाला कि जिससे साइलेशिया की क्षति की पूर्ति हो सके। पोलैण्ड के प्रथम विभाजन में उसने सक्रिय रूप से भाग भी लिया और आस्ट्रिया को क्राको नगर को छोड़कर समस्त गैलेशिया का प्रान्त मिला भी था।

2. **बवेरिया में प्रथम हस्तक्षेप** (First intervention in Baveria)—बवेरिया में हस्तक्षेप करने से जोसेफ द्वितीय की राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूर्ण होती। अतः जैसे ही 1777 ई. में बवेरिया के शासक मैक्सिमिलियन की मृत्यु हुई उसने बवेरिया के सीमावर्ती क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। प्रशा ने उसकी इस कार्यवाही का विरोध किया। अतः प्रशा व आस्ट्रिया के मध्य

युद्ध छिड़ गया। अन्ततः प्रशा व आस्ट्रिया में **टेशेन की सन्धि** (1779 ई.) हुई। इस सन्धि से आस्ट्रिया को बवेरिया का छोटा-सा भाग प्राप्त हो गया और पैलेटाइन के चार्ल्स थियोडोर को बवेरिया का शासक मान लिया गया।

3. **नीदरलैण्ड्स के मामले में असफलता** (Failure in Netherlands)—हॉलैण्ड एवं इंग्लैण्ड के पारस्परिक तनाव का लाभ उठाते हुए जोसेफ द्वितीय ने हालैण्ड के सीमान्त अवरोधक दुर्गों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न किया। यदि इन सीमान्त दुर्गों पर उसका अधिकार हो जाता तो आस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स का सीधा सम्पर्क समुद्र से हो जाता और आस्ट्रिया के व्यापार को पर्याप्त लाभ होता। फ्रांस ने जोसेफ की इस नीति का विरोध किया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि फ्रांस यह समझता था कि आस्ट्रिया के भय से कहीं हॉलैण्ड व इंग्लैण्ड में मैत्री न हो जाए। अतः विवश होकर जोसेफ ने हॉलैण्ड के मामले में अपने हित फ्रांस के ऊपर छोड़ दिए इसके अतिरिक्त उसने शेल्ट नदी में फ्रांसीसी जहाजों के आने-जाने को भी स्वीकार कर लिया। **यह ठीक है कि इसके बदले में उसे फ्रांस से पर्याप्त मुआवजा मिला, किन्तु 1785 ई. की यह सन्धि आस्ट्रिया की भयंकर पराजय का संकेत थी।**

4. **बवेरिया में द्वितीय हस्तक्षेप** (Second intervention in Baveria)—जोसेफ द्वितीय ने बवेरिया को हस्तगत करने का पुनः प्रयास किया। वह आस्ट्रियन नीदरलैण्ड्स के स्थान पर बवेरिया पर अधिकार करना चाहता था। उसकी इस योजना को बवेरिया के शासक ने भी स्वीकार कर लिया था, किन्तु फ्रांस व प्रशा के भय से बवेरिया के शासक ने इस योजना को मानने से इन्कार कर दिया।

5. **तुर्की से युद्ध** (War with Turkey)—जोसेफ द्वितीय डेन्यूब क्षेत्र एवं बाल्कान क्षेत्र को हस्तगत करने के लिए तुर्की से युद्ध करना चाहता था। इधर रूस की जारिना के हित भी तुर्की में थे। अतः दोनों ने आपस में समझौता कर लिया। अब आस्ट्रिया ने 1788 ई. में तुर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। 1790 ई. में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी लियोपोल्ड द्वितीय ने तुर्की के साथ सिस्टीवा की सन्धि कर ली। इस प्रकार जोसेफ का यह प्रयास भी विफल रहा।

मूल्यांकन
(EVALUATION)

जोसेफ द्वितीय (Joseph II) की गृह एवं विदेश नीति का विवरण स्पष्ट करता है कि वह एक ऐसा शासक था जिसने अपनी प्रजा के हित के लिए भरसक प्रयत्न किया, किन्तु वह प्रजा के हृदय को ज़ीतने में असमर्थ रहा। राष्ट्रीय एकता एवं धार्मिक सहिष्णुता स्थापित करने के लिए उसने पूर्ण प्रयास किया। उसने विशृंखलित देश को एक सूत्र में बांधने का अथक प्रयत्न किया। उसने विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग को भी कर देने पर विवश किया, किन्तु वह असफल रहा। विदेश नीति के क्षेत्र में भी यह असफल रहा। अपनी मृत्यु से पूर्व उसने दुःखी होकर अनेक सुधारों को समाप्त करने की आज्ञा भी दे दी और अपनी समाधि पर यह पंक्ति अंकित करवाने के लिए आदेश दिया कि **"यह उस व्यक्ति की समाधि है ज़ो अपने सुन्दर उद्देश्यों के होते हुए भी कभी किसी क्षेत्र में सफल न हो सका।"**[1]

1 "Here lies the man who, with the best intentions, never succeeded in anything."

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध के कारणों व परिणामों पर प्रकाश डालिए।
2. सप्तवर्षीय युद्ध के कारणों व परिणामों पर प्रकाश डालिए।
3. आस्ट्रियन उत्तराधिकार के युद्ध की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए इसकी घटनाओं का वर्णन कीजिए।
4. सप्तवर्षीय युद्ध के कारणों, घटनाओं एवं महत्व को इंगित कीजिए।
5. मेरिया थिरिजा ने अपने साम्राज्य के उत्तराधिकार की रक्षा किस प्रकार की? उसके सुधारों पर भी प्रकाश डालिए।
6. जोसेफ द्वितीय की गृह एवं विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
7. जोसेफ द्वितीय के सुधारों का उल्लेख करते हुए बताइए कि वह असफल क्यों रहा?
8. टिप्पणी लिखिए—

   (अ) एला-शैपल की सन्धि 1748 ई. (ब) सप्तवर्षीय युद्ध
   (स) कूटनीतिक क्रान्ति (द) ह्यूबर्ट्सबर्ग की सन्धि 1763 ई.।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एला-शैपल की संधि के विषय में आप क्या जानते हैं?
2. ह्यूबर्ट्सबर्ग की सन्धि पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. जोसेफ द्वितीय के सामाजिक सुधारों का वर्णन कीजिए।
4. जोसेफ द्वितीय की सुधार योजना की विफलता के कारणों का वर्णन कीजिए।
5. एक शासक के रूप में जोसेफ द्वितीय का मूल्यांकन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जर्मन एवं आस्ट्रिया के शासक चार्ल्स VI द्वारा जारी 'प्रैगमैटिक सैन्सन' अध्यादेश का उद्देश्य क्या था?
2. एला-शैपल की सन्धि कब हुई थी?
3. जोसेफ द्वितीय आस्ट्रियन साम्राज्य का शासक कब बना?
4. जोसेफ द्वितीय ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कब की?
5. प्रशा व आस्ट्रिया के मध्य टेशेन की सन्धि कब हुई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध हुआ—

   (क) 1740 ई. से 1748 ई. तक (ख) 1740 ई. से 1749 ई. तक
   (ग) 1740 ई. से 1750 ई. तक (घ) 1700 ई. से 1720 ई. तक।
2. सप्तवर्षीय युद्ध हुआ—

   (क) 1756 ई. से 1763 ई. तक (ख) 1757 ई. से 1764 ई. तक
   (ग) 1758 ई. से 1765 ई. तक (घ) 1759 ई. से. 1766 ई. तक।
3. 'यह उस व्यक्ति की समाधि है, जो अपने सुन्दर उद्देश्यों के होते हुए भी कभी किसी क्षेत्र में सफल न हो सका'—यह लेख किस शासक की समाधि पर अंकित है—

   (क) जोसेफ द्वितीय (ख) फ्रेडरिक महान्
   (ग) चार्ल्स द्वितीय (घ) विलियम प्रथम्।

[उत्तर : 1. (क), 2. (क), 3. (क)।]

11

प्रशा का उत्थान एवं फ्रेडरिक महान्

[THE RISE OF PRUSSIA AND FREDERICK THE GREAT]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(HISTORICAL BACKGROUND)

प्रशा के उत्थान का श्रेय निःसन्देह ब्रिण्डेनबर्ग़ के हहेनजालर्न (Hohenzollern) राजवंश के योग्य शासकों को ही है। ब्रिण्डेनबर्ग (Brandenburg) नामक छोटा-सा राज्य म्यूज एवं एल्ब नामक नदियों के बीच में स्थित था। पवित्र रोमन सम्राट द्वारा ब्रिण्डेनबर्ग के स्थानीय शासक की नियुक्ति की जाती थी। **दसवीं सदी में ब्रिण्डेनबर्ग राज्य की स्थापना स्लाव जाति के आक्रमणों से रक्षा के लिए रक्षा चौकी के रूप में की गई थी,** किन्तु शनैः-शनैः ब्रिण्डेनबर्ग के शासक ने अपनी शक्ति में वृद्धि कर ओडर तथा एल्ब नदियों के मध्य के विस्तृत प्रदेश पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। चौदहवीं सदी में तो पवित्र रोमन सम्राट ने ब्रिण्डेनबर्ग के शासक को अपने साम्राज्य का निर्वाचक भी घोषित कर दिया। 1415 ई. में **ब्रिण्डेनबर्ग के शासन का भार पवित्र रोमन सम्राट ने हहेनजालर्न वंश के राजकुमार फ्रेडरिक को सौंप दिया।**

16वीं शताब्दी में जर्मनी के भयंकर रूप से फैलने वाले लूथरवाद का प्रभाव ब्रिण्डेनबर्ग में भी पड़ा। वहां के शासक ने भी लूथर धर्म को स्वीकार कर लिया तथा कैथालिक चर्च की राजनीतिक सत्ता को वहां से समाप्त कर दिया। अब ब्रिण्डेनबर्ग का नाम उत्तरी जर्मनी के प्रमुख प्रोटेस्टेण्ट राज्यों में गिना जाने लगा। **तीसवर्षीय युद्ध से हहेनजालर्न वंश को परोक्ष रूप से विशेष लाभ हुआ।**[1] वेस्टफेलिया की सन्धि से ब्रिण्डेनबर्ग को टैल्बर्टस्टैड, मिडेन एवं मैण्डेबर्ग की विशरपिके तथा पोमेरानिया का पूर्वी भाग का आधा भाग प्राप्त हो गया, किन्तु यह तो मानना ही होगा कि **तीसवर्षीय युद्ध के कारण ब्रिण्डेनबर्ग की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी, किन्तु उसे फ्रेडरिक विलियम (Frederick William) का नेतृत्व प्राप्त हुआ, जिसने संकटग्रस्त स्थिति से ब्रिण्डेनबर्ग को निकालकर शक्तिशाली बना दिया।**

फ्रेडरिक विलियम : महान् निर्वाचक (1640 ई. से 1688 ई. तक)
(FREDERICK WILLIAM THE GREAT ELECTOR)

ब्रिण्डेनबर्ग के शासक फ्रेडरिक विलियम को इतिहास में **महान् निर्वाचक (The Great Elector)** के नाम से जाना जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि फ्रेडरिक विलियम ने ब्रिण्डेनबर्ग की तीसवर्षीय युद्ध के कारण ऐसी जर्जरित स्थिति में नेतृत्व प्रदान किया

1 **"The period of thirty years' war (1618—1648) was especially auspicious for the Hohenzollerns."**

जबकि ऐसा लगता था कि ब्रिण्डेनबर्ग का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। फ्रेडरिक विलियम ने ब्रिण्डेनबर्ग के अस्तित्व की सुरक्षा के लिए अपने सम्पूर्ण साधनों को लगा दिया और शीघ्र ही आधुनिक प्रशा के निर्माण की नींव डाल दी। हेज ने ठीक ही लिखा है कि **"महान् निर्वाचक अथक काम करने वाला था।"**[1]

फ्रेडरिक विलियम की गृह-नीति की समस्याएं
(HOME POLICY OF FREDERICK WILLIAM)

फ्रेडरिक विलियम के राज्यारोहण के समय उसके सम्मुख अत्यन्त जटिल आन्तरिक समस्याएं थीं। **राज्य सुसंगठित नहीं था, राज्य में तीन अलग-अलग इकाइयां थीं। प्रथम इकाई ब्रिण्डेनबर्ग, द्वितीय इकाई क्लीव्स एवं तृतीय इकाई पूर्वी प्रशा थी।** इन तीनों इकाइयों की परम्पराएं, रीति-रिवाज़, प्रशासनिक व्यवस्था, संसद व सैन्य संगठन एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न था। अतः इनके एकीकरण की कठिन समस्या सामने खड़ी थी। दूसरी ओर तीसवर्षीय युद्ध के कारण आर्थिक स्थिति चौपट हो गई थी। देश की जनसंख्या लगभग आधी हो गयी थी। सैन्य व्यवस्था क्षत-विक्षप्त हो चुकी थी। यूरोप में चलने वाले धार्मिक युद्धों से राज्य की सुरक्षा भी अपेक्षित थी। विलियम ने इन समस्याओं का गम्भीरता से अवलोकन कर महत्वपूर्ण सुधार किए। डॉ. ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है, **"घरेलू क्षेत्र में वह अपने राज्य को एकीकृत करना और एक सुदृढ़ एवं कुशल प्रशासन की स्थापना करना चाहता था। बाह्य क्षेत्र में उसका प्रमुख उद्देश्य राज्य के बिखरे हुए क्षेत्रों को जोड़ना और साथ ही पूर्वी प्रशा को पोलैण्ड के सामन्ती नियन्त्रण से मुक्त करना था।"**[2]

विलियम के सुधार
(REFORMS OF THE WILLIAM)

फ्रेडरिक विलियम ने गृह-नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित सुधार किए—

1. **केन्द्रीकरण की नीति अपनाना**—राजनीतिक समस्या के निदान के लिए फ्रेडरिक विलियम ने देश का राजनीतिक एकीकरण किया। प्रान्तीय सभाओं के अधिकारों को सीमित कर दिया गया। प्रान्तों को आर्थिक अधिकार उसने अपने में निहित कर लिए। स्थानीय सेना के स्थान पर एक केन्द्रीकृत सेना का निर्माण किया। बर्लिन में एक केन्द्रीय परिषद बनायी गयी और तीनों इकाइयों की परिषदों को भंग कर दिया गया। परिषदों के विद्रोह को सैन्य प्रयोग से कुचल दिया गया। सम्पूर्ण उच्च पदों पर नियुक्तियों का अधिकार स्वयं उसने अपने हाथों में ले लिया। **इस प्रकार केन्द्रीकरण कर उसने स्थानीय शक्तियों को नियन्त्रित कर दिया।**

2. **आर्थिक सुधार**—देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए विलियम ने उद्योग-धन्धों एवं कृषि-व्यवस्था को प्रोत्साहित किया। ओडर एवं एल्व नदियों को नहर द्वारा संयुक्त कर दिया गया। दलदलों को सुखाकर कृषि योग्य बनाया गया। पशु-पालन को प्रोत्साहित करने के लिए डचों को देश में विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। आयात पर से चुंगियां हटा दी गयीं। व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए कम्पनियों को प्रोत्साहित किया गया। फ्रांसीसी प्रोटेस्टेण्टों को बर्लिन में बसाने के लिए विशेष सुविधाएं दी गयीं जिससे ब्रिण्डेनबर्ग का उद्योग, व्यापार व वाणिज्य का तेजी से विकास हुआ।

---

1 "The Great Elector was a tireless worker." —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 293.

2 Dr. Ishwari Prasad. —*History of the Modern Europe*, p. 281.

3. धार्मिक सहिष्णुता—विलियम ने तीसवर्षीय युद्ध से जलते हुए यूरोप की विभीषिका को देखा था। अतः उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। उसने विदेशी प्रोटेस्टेण्टों व यहूदियों को बर्लिन में बसने दिया। इसका उसे आर्थिक लाभ हुआ। एक तो ये जातियां कुशल व्यापारी एवं कारीगर थीं, दूसरा ब्रिण्डेनबर्ग की जनसंख्या में भी वृद्धि हुई।

4. सैन्य संगठन—विलियम ने ब्रिण्डेनबर्ग की एक सुदृढ़ सेना का गठन किया। निःसन्देह उसने ब्रिण्डेनबर्ग को एक शक्तिशाली सैनिक राज्य के रूप में परिणित कर दिया। स्थानीय सेनाओं को नष्ट कर एक केन्द्रीकृत सेना का निर्माण किया गया।

इस प्रकार माना जा सकता है कि फ्रेडरिक विलियम ने ब्रिण्डेनबर्ग को राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सुदृढ़ करने का जो कार्य किया, उससे उसके उत्तराधिकारियों का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो गया।

फ्रेडरिक विलियम की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF FREDERICK WILLIAM)

फ्रेडरिक विलियम ने जिस समय ब्रिण्डेनबर्ग की सत्ता संभाली उस समय ब्रिण्डेनबर्ग में स्वीडन की सेनाएं थीं। विलियम को तो अपने राज्य को सुसंगठित करना था। **अतः उसने तुरन्त तीसवर्षीय युद्ध से ब्रिण्डेनबर्ग को तटस्थ कर स्वीडन से सन्धि कर ली।** सन्धि के अनुसार स्वीडिश सेनाएं ब्रिण्डेनबर्ग से तुरन्त हट गयीं। इधर तीसवर्षीय युद्ध के पश्चात् वेस्टफेलिया की सन्धि से ब्रिण्डेनबर्ग को मिण्डेन, हैल्बर्टस्टैण्ड, मैण्डेनबर्ग एवं पूर्वी पोमेरेविया प्राप्त हुआ।

1655 ई. में जब स्वीडन व पोलैण्ड का युद्ध हुआ तो विलियम ने परिस्थिति के अनुसार कभी एक का साथ दिया तो कभी दूसरे का। 1657 ई. में उसने पोलैण्ड से सन्धि कर ली। सन्धि के अनुसार पूर्वी प्रशा पर ब्रिण्डेनबर्ग का अधिकार पोलैण्ड ने स्वीकार कर लिया। 1660 ई. में पोलैण्ड व स्वीडन का युद्ध समाप्त होते ही दोनों ने पूर्वी प्रशा पर ब्रिण्डेनबर्ग के अधिकार को मान्यता दे दी।

जहां तक 1667-68 के डेवोल्यूशन के युद्ध का प्रश्न है विलियम ने प्रारम्भ में तो फ्रांस का साथ दिया, किन्तु लुई चतुर्दश की साम्राज्यवादी नीति से आक्रान्त होकर उसने डच युद्ध (1672 ई. से 1678 ई. तक) में हॉलैण्ड का साथ दिया। डच युद्ध की समाप्ति पर नीमब्रेजोन की सन्धि के अनुसार यद्यपि उसे पश्चिमी पोमेरोविया छोड़ना पड़ा, किन्तु प्रशा को युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में 3 लाख क्राउन मिले।

विलियम साइलेशिया पर भी अधिकार करना चाहता था, किन्तु उसे आस्ट्रियन सम्राट से इस सम्बन्ध में 1686 ई. में सन्धि करनी पड़ी। सन्धि के अनुसार उसे साइलेशिया पर आस्ट्रियन प्रभुत्व को स्वीकार तो करना पड़ा, किन्तु उसे श्वोबस का जिला प्राप्त हुआ।

इस प्रकार फ्रेडरिक विलियम की विदेश नीति का विवरण स्पष्ट करता है कि उसने अवसरानुकूल विदेश नीति अपनाकर ब्रिण्डेनबर्ग के साम्राज्य की सीमाओं में वृद्धि की और ब्रिण्डेनबर्ग को एक सुसंगठित व शक्तिशाली राज्य का स्वरूप प्रदान कर दिया। इस दृष्टि से वह निःसन्देह महान् निर्वाचक था।

फ्रेडरिक तृतीय (1688 ई. से 1713 ई. तक)
(FREDERICK THIRD)

फ्रेडरिक विलियम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र फ्रेडरिक तृतीय उसका उत्तराधिकारी बना। लेकिन उसे राजा की उपाधि न मिली। 1701 ई. में उसे 'प्रशा का राजा' स्वीकार किया

गया। 1713 ई. की यूट्रैक्ट की सन्धि में यूरोपीय राज्यों ने प्रशा को राजतन्त्र के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। फ्रेडरिक तृतीय अपने पिता के सदृश प्रतिभावान नहीं था, किन्तु उसने अपने पिता के सदृश ही आर्थिक एवं धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई।

फ्रेडरिक विलियम प्रथम (1713 ई. से 1740 ई. तक)
(FREDERICK WILLIAM FIRST)

फ्रेडरिक तृतीय के पश्चात् उसका पुत्र फ्रेडरिक विलियम प्रथम प्रशा का उत्तराधिकारी बना। **यह ठीक है कि फ्रेडरिक विलियम प्रथम संदेहशील प्रवृत्ति का व्यक्ति था, किन्तु उसने प्रशा के विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।**[1] फ्रेडरिक विलियम प्रथम में बौद्धिक प्रतिभा का अभाव था। उसका व्यंक्तित्व अत्यन्त आकर्षक नहीं था। उसमें पूर्ण व्यावहारिकता, स्पष्टवादिता एवं निर्भीकता विद्यमान थी। इतिहासकार हेज ने तो **प्रशा के उत्थान के लिए फ्रेडरिक विलियम प्रथम के प्रयत्नों को उत्तरदायी माना है।**[2]

प्रशा के उत्थान के लिए किए गए फ्रेडरिक विलियम प्रथम के कार्य
(EFFORTS OF THE FREDERICK WILLIAM I FOR THE DEVELOMPENT OF PRUSSIA)

फ्रेडरिक विलियम प्रथम ने प्रशा की राजनीतिक संस्थाओं एवं सैन्यीकरण के विकास में महत्वपूर्ण कार्य किए। वह प्रबुद्ध निरंकुश राजतन्त्र का समर्थक था। उसके स्वयं के शब्दों में, **"मोक्ष को छोड़कर सभी कार्य व अधिकार राजा के कार्य-क्षेत्र में निहित हैं।"** अपने इन्हीं विचारों के अनुरूप उसने शासन का महत्व क़ेन्द्रीकरण किया। उससे एक केन्द्रीय डायरेक्टरी की स्थापना की। डायरेक्टरी के अधीन ही अर्थ एवं सैन्य सम्बन्धी कार्य कर दिए गए। प्रान्तीय एवं स्थानीय संस्थाओं को डायरेक्टरी के ही अधीन कर दिया गया।

व्यापार एवं वाणिज्य के विकास के उद्देश्य से कच्चे माल के निर्यात पर पाबन्दी लगा दी गई। विदेशी माल पर चुंगियां लगाई गईं। **'मर्केन्टाइल'** नामक अर्थ नीति का अनुसरण किया गया। राजकोष में वृद्धि की गई, इसके लिए राजकीय खर्चों में मितव्ययता की नीति अपनाई गई। जहां तक न्याय-व्यवस्था का सम्बन्ध है, न्याय-व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए उसने अथक प्रयास किए।

किन्तु फ्रेडरिक विलियम प्रथम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रशा का एक सुसंगठित विशाल एवं शक्तिशाली सेना से युक्त करना था। इतिहासकार हेज के अनुसार, **"उसने अपने सैनिकों की संख्या 38,000 से बढ़ाकर 80,000 तक पहुंचा दी जो कि फ्रांस व आस्ट्रिया जैसे प्रथम श्रेणी के राज्यों के सदृश थी।"**[3] यही नहीं, उसने बेरोजगार एवं बेकार लोगों को सेना में भर्ती कराया। उसने अपने लिए अंगरक्षक दल भी नियुक्त किया, जिसे इतिहास में **'पोस्टडम गार्ड ऑफ गेन्ट्स'** (Postsdam Guard of Gaints) के नाम से जाना जाता है। इस दल में उसने विदेशियों को भी स्थान दिया। विलियम प्रथम ने समस्त राज्य को सैन्य दृष्टि से विभिन्न

---

1 "If he suspected a man of possessing adequate means he might command him to erect a fine residence so as to improve the appearance of the Capital."
—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 296.

2 "This rise was the result largely of the efforts of Fredrick William I (1713-1740)."
—Hayes, *Ibid*., p. 294.

3 "......King Frederick William I managed to increase his standing army from 38,000 to 80,000 men bringing it up in numbers so as to rank with her regular armies of such first rate states as France and Austria."
—Hayes, *Ibid*., p. 296.

कैण्टनों में विभक्त कर दिया। उसका सैन्य खर्च राज्य की कुल आय का 70 प्रतिशत तक था। अनुशासन एवं राज्य भक्ति ही सैनिकों का प्रमुख आदर्श था। उसने अनुशासन कायम करने के लिए सैनिक वर्दी पहनकर स्वयं सेना का निरीक्षण आरम्भ किया। अपनी सैन्य शक्ति के बल पर ही उसने स्वीडन पर आक्रमण कर स्वीडिश पोमेरानिया पर अधिकार किया था, किन्तु इतना तो स्वीकार करना ही होगा कि उसने अनावश्यक रूप से अपनी सेना को युद्ध में कभी नहां धकेला।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विलियम प्रथम ने प्रशा को सैन्य दृष्टि से सुसंगठित किया। हेज के शब्दों में, **"फ्रेडरिक विलियम प्रथम के शासनकाल में प्रशा में हहेनजालर्न वंश का शासन आर्थिक एवं सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली बन गया।"**[1] 1740 ई. में फ्रेडरिक विलियम प्रथम की मृत्यु हो गई और उसके पश्चात् उसका पुत्र फ्रेडरिक द्वितीय प्रशा का उत्तराधिकारी बना।

फ्रेडरिक द्वितीय या फ्रेडरिक महान् (1740 ई. से 1786 ई. तक)
(FREDERICK SECOND OR FREDERICK THE GREAT)

फ्रेडरिक द्वितीय, जिसे इतिहास में फ्रेडरिक महान् के नाम से जाना जाता है, का जन्म 1712 ई. में हुआ था। उसका पिता फ्रेडरिक विलियम प्रथम उसे सैन्य दृष्टि से अत्यन्त सक्षम देखना चाहता था। अतः फ्रेडरिक द्वितीय को सैन्य शिक्षा दी जाने लगी। फ्रेडरिक द्वितीय अपने पिता के अत्यन्त कठिन एवं नियन्त्रित अनुशासन वाले जीवन से अत्यन्त दुःखी था। उसकी रुचि साहित्य, संगीत एवं कला की ओर थी। वह उदार चरित्र एवं गहन चिन्तन का आकांक्षी था। उस पर फ्रांसीसी सभ्यता एवं संस्कृति का गम्भीर प्रभाव पड़ा था। **अतः बाल्यावस्था में ही उसने अपने मित्र लैफ्टिनेण्ट वन कांट के साथ प्रशा से भाग जाने का प्रयत्न किया, किन्तु अत्यन्त सजग फ्रेडरिक विलियम प्रथम ने उसके इस प्रयत्न को विफल कर दिया और उसे सैनिक व प्रशासकीय शिक्षा प्रदान की।** 1733 ई. में उसका विवाह एलिजाबेथ क्रिस्तिना से उसकी इच्छा के विरुद्ध कर दिया। 1740 ई. में पिता की मृत्यु के पश्चात् वह प्रशा के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ और 1786 ई. में अपनी मृत्यु-पर्यन्त प्रशा का शासन सूत्र अपने हाथों में रखा।

फ्रेडरिक महान् की गृह-नीति
(HOME POLICY OF FREDERICK THE GREAT)

फ्रेडरिक महान् की चारित्रिक विशेषताओं का गम्भीर प्रभाव उसकी गृह-नीति में देखा जा सकता है। फ्रांसीसी दार्शनिकों—रूसो, वाल्टेयर, माण्टेस्क्यू एवं दिदरो के विचारों से प्रभावित फ्रेडरिक महान् प्रबुद्ध निरंकुश शासक था। अपने शासन काल के पूर्वार्द्ध में युद्धों में व्यस्त रहने के कारण वह प्रशासन में सुधारों की ओर अपना ध्यान केन्द्रित न कर सका, किन्तु अपने शासन काल के उत्तरार्द्ध में उसने प्रशासन में महत्वपूर्ण सुधार किए।

फ्रेडरिक महान् के सुधार (Reforms of Frederick the Great)

फ्रेडरिक महान् ने गृह-नीति में सुधार के लिए निम्नलिखित कार्य किए :

1. **प्रबुद्ध निरंकुशता की नीति** (Policy of enlightened Despotism)—फ्रेडरिक महान् एक प्रबुद्ध निरंकुश शासक था। वह प्रशा को सुव्यवस्थित एवं सुसंगठित रूप में देखना

---
1 "Under Frederick William I financial economy, military might and divine right monarchy became the characteristics of Hohenzollern rule in Prussia."
—Hayes, *Ibid.*, p. 294.

चाहता था, किन्तु इस सन्दर्भ में उसका विचार था कि '**राजा प्रजा का निरंकुश अधिपति न होकर राज्य का प्रथम सेवक है।**'[1] स्वयं उसी के शब्दों में, "**राष्ट्र में राजा का स्थान शरीर में मस्तिष्क के सदृश है, राजा ही राज्य का सर्वप्रधान न्यायाधीश, अर्थव्यवस्था का गठनकर्ता व मन्त्री होता है। वह राज्य का प्रतिनिधि है।**" प्रबुद्ध निरंकुशता की प्रतिमूर्ति फ्रेडरिक महान् ने अपने विचारों के अनुरूप ही अपने प्रशासन का संचालन किया और महत्वपूर्ण सुधार किए।

2. **अर्थव्यवस्था में सुधार** (Reform in Economic system)—सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति तक प्रशा की आर्थिक स्थिति अत्यन्त जर्जरित हो गई थी। अतः युद्ध समाप्त होते ही उसने प्रशा की अर्थव्यवस्था को सुसंगठित स्वरूप प्रदान करने का अथक प्रयत्न किया। उसने इसके लिए सर्वप्रथम कृषि-व्यवस्था की ओर ध्यान दिया। कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया गया। बंजर व दलदल भूमि को कृषि योग्य बनाया गया, नहरों एवं सड़कों का निर्माण किया गया। युद्ध के कारण कृषकों की स्थिति खराब होने से उनके करों में कमी की गई और उन्हें बीज प्रदान किए गए। पशुओं की नस्लों में सुधार किया गया। राज्य की आय का उसने स्वयं निरीक्षण करना आरम्भ कर दिया। प्रशासकीय फिजूलखर्ची को रोकने का प्रयत्न किया।

3. **व्यापार, वाणिज्य तथा उद्योग-धन्धों का विकास** (Growth of Trade, Commerce and Industries)—उसने उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहित किया। ऊन एवं लिनेन का उत्पादन वृहद् मात्रा में किया गया। रेशम के उद्योग को प्रोत्साहित किया गया। विदेशियों को प्रशा में बसने के लिए आमन्त्रित किया गया। व्यापार में संरक्षण की नीति ने प्रशा को आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध बना दिया।

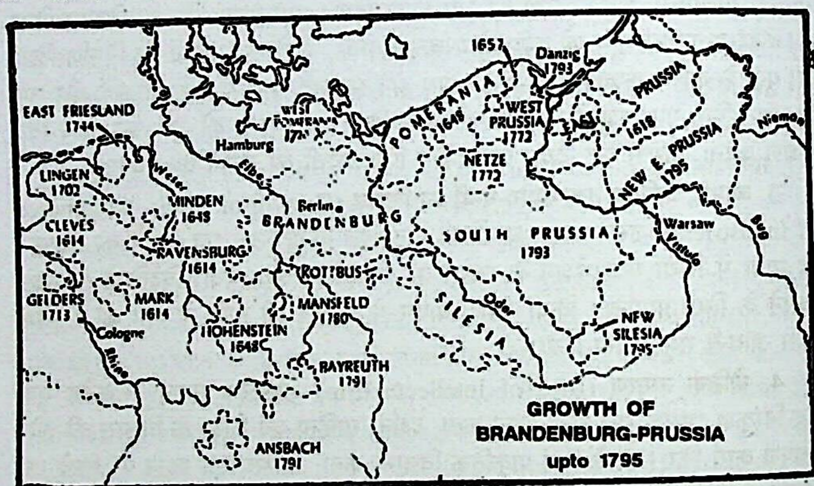
4. **बौद्धिक जागरण** (Rise of Intellectualism)—फ्रेडरिक महान् निःसन्देह एक प्रबुद्ध निरंकुश शासक था। अतः उसने कला, दर्शन; साहित्य एवं शिक्षा के विकास की ओर महत्वपूर्ण कार्य किए। उसने स्वयं प्राकृतिक विज्ञान, कला, साहित्य एवं दर्शन पर लिखे गए फ्रांसीसी ग्रन्थों का अध्ययन किया। प्रशा में प्राइमरी स्कूलों की स्थापना की गई। फ्रांसीसी विद्वानों को प्रशा में आमन्त्रित किया गया। उच्च शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। उसने एक निश्चित सीमा तक भाषण, लेखन एवं मुद्रण की स्वतन्त्रता प्रशा की जनता को दी।

5. **धार्मिक नीति** (Religious Policy)—यह ठीक है कि फ्रेडरिक महान् की निष्ठा एवं विश्वास प्रोटेस्टेण्ट धर्म के प्रति नहीं था, किन्तु उसने धार्मिक मामले में कठोर नीति का पालन नहीं किया। निःसन्देह वह बौद्धिक विचारों से प्रभावित था। स्वयं उसी के शब्दों में, "**यदि तुर्क प्रशा में बसने के इच्छुक हों तो मैं प्रशा में मस्जिदों का निर्माण करवा दूंगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुसार स्वर्ग में जाने का अधिकारी है।**" **इतना होते हुए भी वह यहूदियों के प्रति पूर्ण सहिष्णु न हो सका।** प्रशा में यहूदियों को न तो पूर्ण स्वतन्त्रता थी और न ही पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। प्रशा में बसने के लिए उन्हें पहले आज्ञा भी लेनी पड़ती थी।

6. **सेना का संगठन** (Organization of Army)—आर्थिक व्यवस्था को सुसंगठित करने से जो आर्थिक लाभ हुआ उसका प्रयोग फ्रेडरिक महान् ने कुशल सेना के संगठन में लगाया। यही कारण था कि उसकी सेना में सैनिकों की संख्या 80,000 से बढ़कर 2 लाख तक पहुंच गई। **उसकी सेना अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तो सम्पूर्ण यूरोप के लिए प्रतीक बन गई।** सैन्य व्यवस्था को अधिक सुसंगठित करने का उसका मूल उद्देश्य प्रशा का स्थान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान पर निर्धारित करना था जिसमें वह सफल भी हुआ।

1 **"The monarch is not the absolute master, but only the first servant of the state."**

7. न्यायिक सुधार (Judicial Reforms)—फ्रेडरिक महान् ने न्यायिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सुधार किए। समस्त राज्य में प्रचलित कानूनों एवं विधियों का संकलन कर उसने उन्हें और अधिक सरल बनाने का प्रयत्न किया। सम्पूर्ण प्रजा के लिए एक जैसी न्याय-व्यवस्था लागू कर दी गई। फौजदारी मुकदमों में अपराध स्वीकृति के लिए मन्त्रणा देने वाली प्रथा को समाप्त कर दिया गया। न्यायाधीशों से सत्य न्याय की अपील की गई। निर्दोष व्यक्ति को दण्ड मिलने पर यदि यह प्रमाणित हो जाता कि न्यायाधीश ने अपने कर्तव्यों का सही प्रकार से निर्वाह नहीं किया है तो न्यायाधीश को भी दण्ड दिया जाता था। उसके इस प्रयत्नों ने प्रशा को 'न्यायिक राज्य' बना दिया।



GROWTH OF BRANDENBURG-PRUSSIA upto 1795

इस प्रकार फ्रेडरिक महान् ने प्रशासन में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। उसके यह प्रयत्न प्रशंसनीय कार्य, किन्तु जनता में उसके सुधार प्रिय न हो सके। यही कारण था कि उसके ये सुधार स्थायी न हुए। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि उसने किसी ऐसी नई व्यवस्था व संस्था को जन्म नहीं दिया, जिसे उसके उत्तराधिकारी यथावत् लागू करते।

फ्रेडरिक महान् की विदेश नीति
(FOREIGN POLICY OF FREDERICK THE GREAT)

फ्रेडरिक महान् की विदेश नीति मूलतः दो बातों पर आधारित थी। **प्रथम**, जर्मनी में प्रशा के प्रभुत्व को स्थापित करना एवं **द्वितीय**, आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग साम्राज्य का पतन कर यूरोप की राजनीति में प्रशा के हहेनजालर्न वंश की महत्ता को स्थापित करना। अपने इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने साम्राज्य विस्तार की नीति अपनाई एवं समकालीन यूरोप में होने वाले युद्धों में रुचि लेते हुए भाग लिया। उसकी दृष्टि में प्रशा के हित के लिए सन्धियों की पवित्रता एवं नैतिकता कोई विशेष महत्व नहीं रखती थी। उसके स्वयं के शब्दों में, **"जो कुछ तुम प्राप्त कर सकते हो करो इसमें तुम तब तक गलत नहीं हो सकते जब तक तुम्हें कुछ वापस न लौटाना पड़े।"**[1] अपने इन्हीं सिद्धान्तों पर उसने यूरोप की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया।

1 "Take what you can, you are never wrong unless you are obliged to give back."

नीति का क्रियान्वयन (Implementation of the Policy)

1. **आस्ट्रिया के उत्तराधिकार की समस्या** (War of the Austrian Succession)—आस्ट्रिया की प्रतिष्ठा को कम करने के लिए फ्रेडरिक ने आस्ट्रिया के उत्तराधिकार की समस्या[1] में भाग लिया एवं मेरिया थिरिजा के उत्तराधिकार को चुनौती दी। 1740 ई. से पूर्व प्रशा ने यद्यपि प्रागमैटिक अध्यादेश (Pragmatic Sanction) को मान्यता दे दी, किन्तु चार्ल्स VI की मृत्यु होते ही फ्रेडरिक महान् ने इस अध्यादेश को मानने से इन्कार कर दिया और आस्ट्रिया के अधीनस्थ क्षेत्र साइलेशिया पर आक्रमण कर दिया। उसने फ्रांस, बबेरिया, सेवाय, प्रशा, स्पेन व सैक्सनी को मिलाकर एक गुट बना लिया और मेरिया थिरिजा के उत्तराधिकार को अमान्य घोषित कर दिया। इस पर 1740 ई. में आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध प्रारम्भ हो गया। **अन्ततः 1748 ई. की एला-शैपल की सन्धि** (Peace of Aix-la-Chapelle) के अनुसार उसे मेरिया थिरिजा के उत्तराधिकार को मान्यता देनी पड़ी, किन्तु प्रशा का अधिकार साईलेशिया में मान लिया गया।

2. **सप्तवर्षीय युद्ध** (Seven Year's War)[2]—मेरिया थिरिजा ने विवश होकर 1748 ई. में साइलेशिया पर प्रशा के अधिकार को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु वह साईलेशिया को प्राप्त करने के लिए पुनः लालायित हुई। अतः इस समय यूरोप की राजनीति में कूटनीतिक क्रान्ति आरम्भ हो गई। **यूरोप प्रमुख रूप से दो खेमों में विभक्त हो गया। एक खेमे में** इंग्लैण्ड व प्रशा थे, **दूसरे खेमे** में फ्रांस, प्रशा, आस्ट्रिया, स्वीडन, स्पेन, नेपल्स, सार्डीनिया आदि थे। अगस्त, 1757 ई. को फ्रेडरिक ने बिना कोई सूचना दिए सैक्सनी पर आक्रमण कर दिया। अतः यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध आरम्भ हो गया। अन्त में 15 फरवरी, 1763 ई. में प्रशा व आस्ट्रिया के मध्य ह्यूबर्ट्स की सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार साईलेशिया पर प्रशा का अधिकार मान लिया गया।

3. **पोलैण्ड का प्रथम विभाजन** (First Division of Poland)—फ्रेडरिक महान् ने प्रशा की प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए पोलैण्ड के प्रथम विभाजन में भी हिस्सा लिया और रूस व आस्ट्रिया के साथ मिलकर प्रशा के लिए अपने हित प्राप्त किए। प्रशा को डान्जिंग व थार्न के प्रदेशों को छोड़कर वह सम्पूर्ण पश्चिमी पोलैण्ड प्राप्त करने में सफल रहा।

इस प्रकार फ्रेडरिक महान् की विदेश नीति का विवेचन स्पष्ट करता है कि वह प्रशा की प्रतिष्ठा को यूरोप की राजनीति में प्रतिष्ठित करने में पूर्ण सफल रहा।

फ्रेडरिक महान् की उपलब्धियों का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE ACHIEVEMENTS OF FREDERICK THE GREAT)

फ्रेडरिक महान् की उपलब्धियों के मूल्यांकन के सन्दर्भ में इतिहासविदों में पारस्परिक विरोधाभास दृष्टिगोचर होता है। जहां एक ओर लॉर्ड एक्टन ने उसकी उपलब्धियों की समीक्षा करते हुए लिखा है कि "**प्रबुद्ध निरंकुशता के युग में फ्रेडरिक महान् प्रबुद्ध निरंकुश शासकों में सर्वश्रेष्ठ था। उसके शासन काल में धर्म के स्थान पर दर्शन को स्थान प्राप्त हुआ। वह सहिष्णु व उदार था।**"[3] वहीं दूसरी ओर गूच का मानना है कि "**प्रजा हित निरंकुशता के सिद्धान्त और**

1 विस्तृत विवरण के लिए देखिए **आस्ट्रियन साम्राज्य में आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध**, अध्याय 10 में।

2 विस्तृत विवरण के लिए देखिए **आस्ट्रियन साम्राज्य में 'सप्तवर्षीय युद्ध'**, अध्याय 10 में।

3 'In the age of the enlightenment of dispotism, the most enlightened despot was Frederick II." —Lord Acton, *Lectures on Modern History*, p. 303.

व्यवहार का श्रेष्ठ व्याख्याकार फ्रेडरिक महान् मूलतः अरचनात्मक था ऐसी व्यवस्था की सफलता निःसन्देह व्यक्तिगत योग्यता पर ही आधारित थी।"

यदि परीक्षण किया जाए तो जर्मन इतिहासकारों ने उसकी विदेश एवं सैन्य नीति की प्रशंसा की है। रान्के के अनुसार, **"फ्रेडरिक महान् ने वे विजयें ही कीं जो कि प्रशा के सम्मान व सुरक्षा के लिए नितान्त आवश्यक थीं। उसने तलवार का प्रयोग तभी किया जब उसे इसकी जरूरत ही आ पड़ी। साइलेशिया पर उसका अधिकार यथोचित था।"** ट्रीटश्के ने भी लिखा है, **"पश्चिम की ओर रूसी साम्राज्यवाद पर अंकुश लगाने के लिए फ्रेडरिक की नीति प्रशंसनीय थी। अठारहवीं शताब्दी के यूरोप में राज्य विस्तार के लिए नैतिकता साधारण नियम था। व्यावहारिक मापदण्ड से वह निःसन्देह प्रशंसा का पात्र था।"**

ठीक उसके विपरीत उसके आलोचकों का मानना है कि वह अत्यन्त आक्रामक था और इस दृष्टि से उसने समस्त यूरोप को आक्रामक कार्यावाहियों से रौंद डाला था। **मेरिया थिरिजा ने तो उसे यूरोप के लिए महान् आपत्ति कहा था।"**

इस प्रकार हम फ्रेडरिक महान् के सन्दर्भ में दो प्रकार की धारणाएं पाते हैं। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से समकालीन यूरोप को दृष्टि में रखते हुए उसके कार्य का मूल्यांकन किया जाए तो यह मानना होगा कि वह अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों में पूर्ण सफल रहा, किन्तु गृह-नीति के क्षेत्र में उसके सुधार स्थायी सिद्ध न हुए। वह उदात्त एवं प्रबुद्ध अवश्य था, किन्तु उसने अपने उद्देश्यों के अनुरूप किसी ऐसी नूतन व्यवस्था को जन्म नहीं दिया जिसे कि उसके निर्बल उत्तराधिकारी यथावत् जारी रखते। फिर भी प्रशा के यूरोप में प्रतिष्ठा को स्थापित करने के सन्दर्भ में प्रशा उसका सदा ऋणी रहेगा।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रशा के उत्थान पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
2. फ्रेडरिक विलियम (महान् विचारक) की गृह एवं विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
3. फ्रेडरिक विलियम (महान् निर्वाचक) का प्रशा के उत्थान में योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
4. इस कथन से आप कहां तक सहमत हैं कि फ्रेडरिक विलियम प्रशा का महान् निर्वाचक था? अपने पक्ष को तर्कों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
5. प्रशा के उत्थान के लिए फ्रेडरिक विलियम प्रथम के किए गए प्रयत्नों को इंगित कीजिए।
6. फ्रेडरिक द्वितीय (फ्रेडरिक महान्) की गृह व विदेश नीति पर प्रकाश डालिए।
7. फ्रेडरिक महान् के सुधारों का मूल्यांकन कीजिए।
8. फ्रेडरिक महान् के जीवन चरित्र व उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए।
9. क्या फ्रेडरिक महान् ने प्रशा के उत्थान को चरमोत्कर्ष पर पहुंचा दिया था? अपने उत्तर को सतर्क पुष्ट कीजिए।
10. 1740 ई. तक प्रशा के उत्थान पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रशा के राजा फ्रेडरिक द्वितीय की महानता के कारण बताइए।
2. फ्रेडरिक महान् की प्रबुद्ध निरंकुशता की नीति पर प्रकाश डालिए।
3. फ्रेडरिक विलियम की गृह नीति में समस्याएं बताइए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रेडरिक विलियम (महान् निर्वाचक) का शासनकाल क्या था?
2. फ्रेडरिक तृतीय को 'प्रशा का राजा' कब स्वीकार किया गया?
3. फ्रेडरिक विलियम प्रथम द्वारा अपनाई गई अर्थ नीति को किस नाम से जाना जाता है?
4. फ्रेडरिक द्वितीय (फ्रेडरिक महान्) का शासनकाल क्या था?
5. फ्रेडरिक महान प्रशा के राजसिंहासन पर कब आसीन हुए?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन प्रशा के सन्दर्भ में सही नहीं है?
   (क) दसवीं सदी में ब्रिण्डेनबर्ग राज्य की स्थापना स्लाव जाति के आक्रमण से रक्षा के निमित्त रक्षा चौकी के रूप में की गई थी।
   (ख) प्रशा का महान् निर्वाचक फ्रेडरिक विलियम था।
   (ग) 1713 ई. की यूट्रैक्ट की सन्धि से प्रशा को स्वतन्त्र राज्य के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई।
   (घ) 1748 ई. की एला-शैपल की सन्धि से प्रशा को स्वतन्त्र राज्य के रूप में मान्यता मिल गई थी।
2. "मोक्ष को छोड़कर सभी कार्य व अधिकार राज्य के कार्य क्षेत्र के अधीन हैं"—यह कथन निम्नलिखित में किसका है?
   (क) फ्रेडरिक विलियम प्रथम (ख) फ्रेडरिक महान्
   (ग) मेरिया थिरिजा (घ) लुई चतुर्दश।
3. फ्रेडरिक महान् का शासन काल था—
   (क) 1740 ई. से 1786 ई. तक (ख) 1742 ई. से 1788 ई. तक
   (ग) 1743 ई. से 1789 ई. तक (घ) 1740 ई. से 1785 ई. तक।
4. 'राष्ट्र में राजा का स्थान शरीर में मस्तिष्क की भांति है'—यह कथन निम्नलिखित में किसका है?
   (क) फ्रेडरिक महान् (ख) लुई चतुर्दश
   (ग) मेरिया थिरिजा (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।

[उत्तर : 1. (घ), 2. (क), 3. (क), 4. (क)]

12

अमरीका का स्वतन्त्रता संग्राम

[AMERICAN WAR OF INDEPENDENCE]

भूमिका
(INTRODUCTION)

इंग्लैण्ड के शासक जॉर्ज तृतीय के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं में से एक अमरीकी उपनिवेशों[1] का स्वतन्त्रता के लिए प्रयास था। **यह विद्रोह या अमरीका का स्वतन्त्रता संग्राम, केवल इंग्लैण्ड के इतिहास की महत्वपूर्ण घटना नहीं वरन् संसार के इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि इसके प्रभाव विश्वव्यापी हुए।** इस युद्ध के उत्तरदायी केवल अंग्रेज न होकर अमरीकी भी बहुत कुछ अंशों में थे। यद्यपि उपनिवेशों में भी अधिकांश अंग्रेज ही रहते थे तथापि आपस में उनके लड़ने का कारण जानना इतिहास के विद्यार्थी के लिए निश्चित रूप से रोचक विषय है। इस प्रकार की कोई भी घटना अकस्मात् घटित नहीं होती, उसके लिए अनुकूल परिस्थितियां व वातावरण पहले से तैयार हो जाता है। इसी प्रकार यह घटना भी आकस्मिक नहीं हुई, उसके लिए सामग्री पहले से तैयार की जा चुकी थी। इसका विस्फोट अवश्य आकस्मिक था। इस घटना के सम्बन्ध में वैब्स्टर का कथन उल्लेखनीय है—**"अमरीका की राज्य-क्रान्ति ने विश्व के राष्ट्रों, विशेषकर यूरोप के राष्ट्रों, का पथ-प्रदर्शन किया। इसी ने फ्रांस की राज्य-क्रान्ति को नेता प्रदान किए।"**[2]

क्रान्ति के कारण
(CAUSES OF REVOLUTION)

इस क्रान्ति के मुख्य दो कारण थे—(अ) दूरवर्ती या मौलिक, (ब) समीपवर्ती या तत्कालीन।

(अ) दूरवर्ती या मौलिक कारण (Root Causes)

(1) **अमरीकावासियों का ब्रिटेन के प्रति दृष्टिकोण** (American outlook)—जो अंग्रेज ब्रिटेन से देश निकाले के रूप में अमरीका भेजे गए थे, उनका इंग्लैण्ड की सरकार से असन्तुष्ट

---

1 अमरीका में प्रथम अंग्रेज बस्ती 1607 ई. में जेम्स टाउन में स्थापित की गई थी। यह वर्जीनिया में थी। अमरीका में तेरह उपनिवेश (बस्तियां) इस प्रकार थे—(1) न्यू हेम्पशायर, (2) मेसाचूसेट्स, (3) रोड आइलैण्ड, (4) कनेक्टिकट, (5) न्यूयार्क, (6) न्यू जर्सी, (7) पेनसिल्वानिया, (8) डेलावेयर, (9) मेरीलैण्ड, (10) वर्जीनिया, (11) उत्तरी केरोलिना, (12) दक्षिणी केरोलिना, (13) जार्जिया।

2 "The American revolution was an eye-opener to the nations of the world, in particular to those of Europe and it gave leaders to the French Revolution." —*Webster*

होना स्वाभाविक था। अतः वह अंग्रेजों के अनुचित व्यवहार को सहन नहीं करते थे तथा वहां के निवासियों को अंग्रेजों के प्रति भड़काते रहते थे। इस समय तक अमरीका के प्रत्येक क्षेत्र में विकास होने लगा था, उनमें स्वतन्त्रता की भावना शक्तिशाली होने लगी थी। अब वे स्वतन्त्रता के अभिलाषी बन गए थे। वे सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों को स्वीकारने को तैयार न थे।

(2) **अमरीकावासियों का अंग्रेज होना** (British Origin of Americans)—अमरीका के निवासियों में वही रक्त संचरित था जो ब्रिटेन निवासी अंग्रेजों में था, क्योंकि अमरीकावासी भी मूलतः अंग्रेज थे। यदि ब्रिटेन निवासी स्वतन्त्रता प्रेमी हो सकते थे तो अमरीकी भी स्वतन्त्रता के लिए उतने ही उत्सुक हो सकते थे। एक अमरीकी के शब्दों में, **'अमरीका की स्वतन्त्रता की स्थापना करने वाले अंग्रेज ही थे, अन्य कोई नहीं और उन्होंने यह कार्य अंग्रेजी इतिहास के आधार पर ही किया।'**

(3) **दृष्टिकोणों में भिन्नता** (Difference in Attitude)—इंग्लैण्ड तथा अमरीका का दृष्टिकोण अलग-अलग था। इंग्लैण्ड के लोग कुलीन राजतन्त्र के थे, किन्तु अमरीकी जनतन्त्र के समर्थक थे। उनकी दृष्टि से सभी लोग एक-समान थे। एक अमरीकी लेखक ने तत्कालीन अंग्रेजी समाज का निम्न शब्दों में वर्णन किया है, **"इंग्लैण्ड के समाज में इस समय राज्य वालों, सेनानायकों, दास-स्वामियों एवं धनी व्यापारियों जैसे धनाढ्यों का ही प्रभुत्व बना हुआ है।"**[1]

(4) **असन्तोषजनक शासन प्रणाली** (Unsatisfactory Administrature System)—उपनिवेशों की शासन-प्रणाली दोषरहित न थी। वहां की कार्यकारिणी तथा व्यवस्थापिका सभा में निरन्तर संघर्ष होते रहते थे। कौंसिल के सदस्य राजा द्वारा मनोनीत किए जाते थे। व्यवस्थापिका सभा के सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। कौंसिल के सदस्य सम्राट के प्रति और व्यवस्थापिका सभा जनता के प्रति उत्तरदायी थी। गवर्नर जनरल को लोकसभा के कानून को रद्द करने का अधिकार था। उपनिवेश अपनी सभा को शक्तिशाली मानते थे, किन्तु सरकार उसे यह मान्यता नहीं देती थी। इस प्रकार एक संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती थी।

(5) **व्यापारिक प्रणाली** (Commercial System)—दोषपूर्ण व्यापारिक प्रणाली होने के कारण अमरीका के निवासी असन्तुष्ट थे। इंग्लैण्ड समझता था कि अमरीका अंग्रेजी साम्राज्य का ही एक अंग है तथा इंग्लैण्ड की संसद को उसके विषय में कानून पारित करने का पूर्ण अधिकार है। इंग्लैण्ड की विचारधारा थी कि अमरीका इंग्लैण्ड का उपनिवेश है और सदैव उपनिवेश ही बना रहना चाहिए। साम्राज्य की एकता को बनाए रखना उनका नैतिक कर्तव्य है। इंग्लैण्डवासी यह नहीं सोचते थे कि उनकी सरकार अमरीका में शोषण तथा दमन कर रही है। अंग्रेज उपनिवेशों को धनोपार्जन का एक साधन समझते थे। अंग्रेजों की व्यावहारिक प्रणाली यथार्थ में आर्थिक शोषण का ही दूसरा रूप थी। समस्त वस्तुओं के लिए इंग्लैण्ड पर निर्भर रहने के कारण व्यापार का सन्तुलन अमरीका के विरुद्ध रहता था। अमरीका में सोने-चांदी की कमी हो रही थी व कागजी मुद्रा का प्रसार बढ़ रहा था। इंग्लैण्ड पर आश्रित होने के कारण अमरीका की आर्थिक स्थिति शोचनीय थी। अमरीका के निवासी जो मुख्यतः व्यापारी थे, अंग्रेजों के समान धनी बनना चाहते थे। अतः उन्होंने वेस्टइण्डीज से नहीं वरन् यूरोप के देशों से उच्च स्तर पर व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किए। अमरीका के जहाज किसी

1 'The English society is dominated by the aristocratic like governors, commaders, slave owners and big merchants.'

भी प्रकार से अंग्रेजों के जहाजों से कम न थे, परन्तु अंग्रेजों की नीति व प्रतिबन्धों ने अमरीकी जहाजों का विकास न होने दिया। **अंग्रेजों का उद्देश्य स्वयं को समृद्ध बनाना था न कि उपनिवेशों को।** इंग्लैण्ड का वैभव व समृद्धि उपनिवेशों के लिए ईर्ष्या का विषय थी। अमरीका के निवासियों ने अपने जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के लिए तस्कर व्यापार प्रारम्भ किया। जब अंग्रेजों ने इस तस्कर व्यापार को रोकने का प्रयास किया तो अमरीकावासियों ने इंग्लैण्ड की सरकार पर यह आरोप लगाया कि वह आयात-पत्र (Import-Duty) को समाप्त करके अमरीका की मण्डियों को अंग्रेजी सामान से भर देना चाहती है जिससे अमरीका के उत्पादकों का पूर्णरूपेण सफाया हो जाए। अतः अमरीकावासियों की यह भावना थी कि वे अंग्रेजों की साम्राज्यवादिता का शिकार बने हुए हैं।

(6) **सप्तवर्षीय युद्ध[1] का प्रभाव** (Impact of the Seven Years War)—**वार्नर-मार्टिन ने सप्तवर्षीय युद्ध को अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम का प्रमुख कारण बताया है।[2]** सप्तवर्षीय युद्ध में कनाडा पर पूर्ण अंग्रेजी अधिकार हो गया था और फ्रांस से भय सदैव के लिए अमरीकावासियों के मन से निकल गया। बाह्य संकट समाप्त होते ही उपनिवेश वालों को अपने अधिकारों के प्रति जागृत होना स्वाभाविक था। अंग्रेजों का इस बात से क्रोधित होना कोई आश्चर्य की बात न थी। यही नहीं, जब सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैण्ड को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तो ये उपनिवेश उन कठिनाइयों को दूर करने का अपना कोई दायित्व न समझते थे। इस प्रकार पारस्परिक द्वेष की अग्नि धीरे-धीरे प्रज्ज्वलित होने लगी थी। अमरीका के निवासियों को इंग्लैण्ड की समस्याओं का समाधान ढूंढना था। अमरीकी यह नहीं जानते थे कि सप्तवर्षीय युद्ध के कारण इंग्लैण्ड का राष्ट्रीय ऋण अत्यधिक बढ़ गया है। वे यह भी नहीं सोचते थे कि इंग्लैण्ड द्वारा लड़ाई में अमरीका से तो एक साधारण-सी राशि ही मांगी जा रही थी।

(7) **धार्मिक कारण** (Religious Causes)—यदि अमरीका की विभिन्न बस्तियों का इतिहास देखा जाए तो ज्ञात होगा कि बसने का मूल कारण धार्मिक ही था। स्टुअर्ट काल में अंग्रेज पादरी सरकारी धर्म से तंग आकर इंग्लैण्ड छोड़ने पर बाध्य हुए थे। वे अमरीका में बसकर अपने स्वतन्त्र धार्मिक विचारों पर चल सकते थे। वे इंग्लैण्ड की सरकार से घृणा करते थे। इन बस्तियों में प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथोलिक दोनों सम्प्रदाय के लोग थे और दोनों सम्प्रदाय इंग्लैण्ड की धार्मिक नीति के कारण ही इंग्लैण्ड से भागे थे, अतएव दोनों सम्प्रदाय अंग्रेजी सरकार के घोर विरोधी थे।

(8) **अपराध नियम** (Crime Rules)—उपनिवेश बस जाने पर इंग्लैण्ड की सरकार ने अनैतिक अपराधियों को उपनिवेश में भेजना प्रारम्भ किया। इस प्रकार से बुरे चरित्र वाले लोगों की वहां संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगी। सरकार ने 17वीं शताब्दी में यह नियम भी पारित किया कि कोई भला आदमी उपनिवेश में प्रवेश न कर सके। अतएव उपनिवेश में

---

1 यह युद्ध वास्तव में प्रशा व आस्ट्रिया के बीच लड़ा गया था। इसमें प्रशा का साथ इंग्लैण्ड ने व आस्ट्रिया का साथ रूस व फ्रांस ने दिया था। उपनिवेशों में यह युद्ध इंग्लैण्ड व फ्रांस में लड़ा गया था।

2 **'Our very success in the Seven Years' War made our position in North America one of the peculiar difficulty; with the triumph of wolfe on the Heights of Abraham, it is said, began the history of the United States.'** —*Warner-Martin*

जाने वाले प्रत्येक अंग्रेजी जहाज की तलाशी ली जाने लगी और यह प्रयत्न किया गया कि अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति उपनिवेश में बसने न पाए। इस प्रकार उपनिवेश में बसने वाला व्यक्ति या तो धार्मिक अत्याचार से तंग आकर भागा या अपराध करने पर उसे बलपूर्वक वहां ले जाया जाता था। दोनों प्रकार के व्यक्ति इंग्लैण्ड की सरकार के विरोधी होते थे और अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने का प्रयत्न करते थे।

(9) **भूमि की अधिकता तथा यातायात की कमी** (Lack of Transportation)—अमरीका में भूमि तो अधिक थी, परन्तु जनसंख्या थोड़ी थी। इस भूमि के लालच से अन्य देश के निवासी भी वहां बसने लगे। अनेक डच लोग वहां बसे। डच लोगों को इंग्लैण्ड से प्रेम होने का प्रश्न ही नहीं था। इसके अतिरिक्त, इन उपनिवेशों के मध्य यातायात की कमी थी, सड़कों का अभाव था, रास्ते में बीहड़ जंगल थे। अतएव इनमें आपसी सम्पर्क कोई विशेष न था और अंग्रेजी नियन्त्रण भी इन सब बस्तियों में पूरा न था। अतएव जब विद्रोह हुआ तो एक बस्ती का समाचार दूसरी बस्ती पर न पहुंच सका और उनके विद्रोह दबाने में कठिनाई पड़ी।

(10) **ग्रेनविल के चार आपत्तिजनक कार्य** (Four objectionable works of Grenville)—इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री ग्रेनविल (Grenville) ने चार ऐसे आपत्तिजनक कार्य किए जिनसे अमरीकावासी अत्यधिक क्रुद्ध हो उठे। ये कार्य निम्नवत् थे—

(i) अमरीका की चोर-बाजारी को दूर करने के लिए ग्रेनविल ने **'एडमिरेल्टी कोर्ट'** की स्थापना की। इससे अमरीका में हलचल मच गयी तथा उनमें सरकार के प्रति विद्वेष उत्पन्न हो गया। चूंकि ग्रेनविल ने कागज-पत्रों को पढ़कर ही चोर-बाजारी का पता लगाया था, इसलिए कहा जाता है कि **'ग्रेनविल के द्वारा कागज-पत्रों को पढ़े जाने के कारण ही इंग्लैण्ड ने अमरीका को खो दिया।'**[1]

(ii) 1763 ई. में एक अन्य कानून शीरा के निर्यात के सम्बन्ध में पारित किया गया जिसे **'शीरा कानून'** (Duty on Molasses) कहते हैं। यह भी असन्तोष का एक मुख्य कारण था।

(iii) ग्रेनविल ने एक घोषणा द्वारा मिसीसियों में बड़े-बड़े भाग रेड इण्डियन (Red Indians) के लिए सुरक्षित कर दिए। इससे भी अमरीकी ग्रेनविल के विरुद्ध हो गए।

(iv) अमरीका की सुरक्षा के लिए ग्रेनविल ने एक छोटी सेना अमरीका में रखने की घोषणा की, जिसके खर्च का 1/3 उपनिवेश निवासियों से देने को कहा गया इससे अमरीका निवासी भड़क उठे। यद्यपि, वार्नर-मार्टिन म्योर के शब्दों में, **"ग्रेनविल का यह सोचना असंगत नहीं था कि उपनिवेशों को सेना के खर्चे के लिए कुछ सहायता देनी चाहिए।"**[2] किन्तु अमरीकावासी इससे सहमत न थे।

(ब) तत्कालीन कारण (Immediate Causes)

(1) **स्टाम्प नियम** (Stamp Act)—स्वेच्छा से उपनिवेशवादी कोई आर्थिक सहायता इंग्लैण्ड को देने को तैयार न थे, अतएव संसद में ग्रेनविल ने 1765 ई. में स्टाम्प एक्ट पारित करवाया। इसके अनुसार सभी सरकारी कागजों पर सरकारी स्टाम्प लगाना आवश्यक था। अमरीकावासियों ने इसका विरोध किया। इनकी दृष्टि में सरकार को उनके आन्तरिक मामलों

1 'Grenville lost America because he read the American despatches.'

2 'Grenville was not unreasonable in thinking that the colonies themselves should contribute something towards the cost of the army.' —*Warner-Martin-Muir*

में कर लगाने का कोई अधिकार नहीं था। अतः उन्होंने एक स्वर में इसका विरोध करते हुए नारे लगाए **'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर भी नहीं'**।[1] जब यह कर वसूल किया जाने लगा तो क्रान्ति के चिह्न स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे। अतः 1766 ई. में यह समाप्त कर दिया गया।

(2) **आयात-कर अधिनियम** (Import Tax Act)—1737 ई. में पिट-मन्त्रिमण्डल ने एक आयात कर अधिनियम पास किया, जिसने शीशा, चाय, कागज तथा रंग के आयात पर कर लगा दिया। अमरीकावासियों के दृष्टिकोण से यह उनके मौलिक अधिकारों के प्रति बहुत बड़ा आघात था। इसका भी घोर विरोध हुआ।

(3) **चाय पर कर लगाने का प्रयास** (Tax on Tea)—1771 ई. में लॉर्ड नार्थ प्रधानमन्त्री था। इसने कागज तथा शीशे पर चुंगी हटा ली, किन्तु चाय पर लगी रहने दी। उसने यह गलती ही की क्योंकि इससे अमरीकावासियों का क्रोध शान्त नहीं हुआ। वे तो इंग्लैण्ड के कर लगाने के अधिकार के विरोधी थे न कि पैसे देने के।

(4) **तत्कालीन घटनाएं** (Immediate events)—1770 ई. से 1773 ई. तक ऐसी घटनाएं घटित हुईं जिससे दोनों पक्षों में तीव्र वैमनस्य उत्पन्न हो गया। इन घटनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

(i) बोस्टन शहर के निवासी ब्रिटिश रेजीमेण्टों का अपमान करने लगे थे। एक दल के कुछ सैनिकों के साथ जनता ने अभद्र व्यवहार किया। अंग्रेजों ने गोलियां चला दीं जिससे कुछ व्यक्ति मारे गए। अमरीकावासियों ने लोगों को भड़काने के उद्देश्य से इसे एक बहुत बड़े **'नर-संहार'** (The Boston massacre) का नाम दिया।

(ii) अमरीका की चोर-बाजारी को रोकने के लिए एक शाही जहाज (Graspee) भेजा गया। उपनिवेशवासियों ने इसे जला डाला। अमरीका में इससे खुशी मनायी गयी, किन्तु इंग्लैण्ड में रोष फैल गया।

(iii) **बोस्टन टी पार्टी** (Boston Tea Party)—1773 ई. में चाय अधिनियम द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सीधे अमरीका को चाय भेजने का अधिकार प्राप्त हो गया था। इसका भी विरोध किया गया और अमरीका निवासियों ने बोस्टन के बन्दरगाह पर एक-एक जहाज में प्रवेश कर 340 चाय के बक्स समुद्र में फेंक दिए। इस घटना से अंग्रेजों को काफी क्रोध आया और उन्होंने यह समझ लिया कि अब अमरीका विद्रोह अवश्य करेगा। विद्रोह शान्त करने के लिए सभी उपनिवेशों में सैनिक शासन लागू कर दिया तथा बोस्टन के बन्दरगाह को व्यापार के लिए बन्द कर दिया। यूवेक एक्ट द्वारा कनाडा की सीमा ओहियो नदी तक निर्धारित कर दी गयी। वहां के कैथोलिकों को सुविधाएं दे दी गयीं जिससे प्यूरिटन लोग और भी रुष्ट हो गए।[2] प्रारम्भ में इंग्लैण्ड की सरकार अमरीका के लोगों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करने से झिझकती थी क्योंकि अमरीका के लोगों के प्रति इंग्लैण्ड की सहानुभूति थी तथा सरकार का विचार था कि यदि वह दृढ़ रुख अपनाकर अमरीकी घटनाओं पर केवल नजर ही रखे तो पर्याप्त होगा क्योंकि यह संग्राम अधिक समय तक नहीं चल सकेगा और स्वतः

1 'No taxation without representation.'

2 यद्यपि इस अधिनियम का सम्बन्ध अमरीका से नहीं था, किन्तु अमरीका के लोगों ने समझा कि इससे इंग्लैण्ड की सरकार अमरीका व फ्रांसीसियों के मध्य झगड़ा करना चाहती थी, क्योंकि ओहियो क्षेत्र में फ्रांसीसी अधिक रहते थे।

ही समाप्त हो जाएगा, परन्तु बोस्टन (Boston) की घटना के कारण इंग्लैण्ड की सरकार कठोर कार्यवाही करने पर विवश हुई।

अंग्रेजी सरकार ने 'बोस्टन टी पार्टी'[1] की घटना को अपना अपमान समझा और अपराधियों को कठोर दण्ड दिया गया। इस दमन नीति का उपनिवेशवासियों ने विरोध किया। 1774 ई. में फिलाडेल्फिया (Philadelphia) में एक सभा हुई। इस सभा में अंग्रेजी सरकार से बातचीत करने का प्रस्ताव पारित किया गया, परन्तु जार्ज तृतीय ने विद्रोहियों से बातचीत करना उचित न समझा, अतएव अमरीका वालों ने युद्ध करने का निर्णय लिया।

घटनाएं
(EVENTS)

जार्ज तृतीय की हठ के कारण उपनिवेशों की सामूहिक प्रार्थना अस्वीकार कर दी गयी, अतएव फिलाडेल्फिया की सभा ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध 1775 ई. में युद्ध की घोषणा कर दी।

(1) **लैक्सिंगटन** (Lexington) **का युद्ध**—अमरीका के स्वतन्त्रता की सर्वप्रथम घटना 19 अप्रैल, 1775 ई. में लैक्सिंगटन के स्थान पर हुई। अंग्रेजी और उपनिवेशिक सेना में घमासान युद्ध हुआ, परन्तु हार-जीत का निर्णय न हो सका। कुछ दिनों बाद 25,000 उपनिवेशिकों ने बोस्टन को घेर लिया।

(2) **स्वतन्त्रता की घोषणा** (Declaration of Independence)—उपनिवेशिकों की एक सभा पुनः हुई, जिसमें समस्त प्रान्तों को मिलाकर **'संयुक्त राज्य अमरीका'** (United States of America) का नाम दिया गया। प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधि निश्चित किए गए, सब प्रतिनिधियों के हस्ताक्षरों से **'स्वतन्त्रता घोषणा-पत्र'** 4 **जुलाई**, 1776 **को जारी किया गया।**[2] इस घोषणा-पत्र में कहा गया था, "ईश्वर ने सब मनुष्यों को समान बनाया है। ईश्वर ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार दिए हैं, जिन्हें उनसे कोई छीन नहीं सकता। इन अधिकारों में जीवन, स्वतन्त्रता और सुख के लिए प्रयत्न शामिल हैं।" घोषणा-पत्र में यह भी कहा गया था कि चूंकि ब्रिटिश सरकार ने अमरीकावासियों पर अत्यधिक अत्याचार किए हैं अतएव, **"हम संयुक्त राज्य अमरीका के नागरिक विश्व के सर्वोच्च न्यायाधीश से यह निवेदन करते हैं कि अब हम स्वतन्त्र राज्य के निवासी हैं तथा हम ब्रिटिश सम्राट के प्रति निष्ठा से मुक्त हो चुके हैं तथा हमारे व ब्रिटेन के मध्य अब किसी प्रकार का राजनीतिक सम्बन्ध शेष नहीं है। अतः वे युद्ध, शान्ति, सन्धि, व्यापार एवं अन्य सभी मामलों में अधिकारिक रूप से निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र हैं जो कि एक स्वतन्त्र राज्य के अधिकार होते हैं।"**

(3) **बंकर्स हिल** (Bunker's Hill) **की लड़ाई**—दक्षिणी उपनिवेशों ने अपने गवर्नरों को निष्कासित कर दिया और युद्ध में सम्मिलित हो गए। बोस्टन में अंग्रेजों ने बंकर्स पहाड़ी पर अपना मोर्चा लगाया, अतएव उपनिवेशों को इस युद्ध में हारना पड़ा।

(4) **ब्रुकलिन** (Brooklyn) **की लड़ाई**—जॉर्ज वाशिंगटन के पास सीमित साधन होते हुए भी उसमें असीम उत्साह, उमंग तथा धैर्य था। यह भीषण से भीषण परिस्थितियों में भी

1 इस घटना में विद्रोहियों ने चाय की पेटियां समुद्र में फेंक दी थीं जिससे पानी का रंग चाय के समान हो गया था। इस कारण इस घटना को 'बोस्टन टी पार्टी' कहा जाता है।

2 अमरीका यद्यपि वास्तविक रूप में 1783 ई. में स्वतन्त्र हुआ था, किन्तु अमरीका का स्वतन्त्रता दिवस 4 जुलाई, 1776 ई. ही माना जाता है।

निराश न होने वाला साहसी व्यक्ति था। वह कनाडा को अपनी ओर मिलाना चाहता था, परन्तु असफल रहा। वाशिंगटन क्रामवैल के समान ही अदम्य साहसी था, उसने सेना को शिक्षित किया और पुनः ब्रुकलिन के मैदानों में अंग्रेजों का सामना करने गया, परन्तु उसे पुनः हारना पड़ा। अतः वाशिंगटन को न्यूयार्क तथा न्यूजर्सी को खाली करना पड़ा।

अमरीका की सरकार को फिलाडेल्फिया (Philadelphia) को भी खाली करना पड़ा। अमरीकी लगातार हारने से घबरा गए। अंग्रेज जनरल होय (Howe) ने भागती हुई अमरीकी सेनाओं का पीछा किया। वाशिंगटन ने पुनः सैनिकों में साहस का संचार किया और कुछ सैनिक टुकड़ियों को जनरल होय को पीछे से घेरने को भेज दिया। वाशिंगटन के इस चतराईपूर्ण कार्य का आश्चर्यजनक परिणाम हुआ। अपने पीछे भी सेना को देखकर होय घबराकर न्यूयार्क वापिस चला गया। उपनिवेशिक सेना में पुनः उत्साह की लहर आ गयी।

1777 ई. में अंग्रेजों ने अमरीकी विद्रोह को पूर्णतया कुचलने का इरादा किया। अंग्रेज जनरल बरगोयने (Burgoyne) ने कनाडा में एक सेना तैयार की और हडसन की ओर प्रस्थान किया। इधर जनरल होय भी उसकी सहायतार्थ न्यूयार्क से हडसन (Hudson) पहुंचा। फिलाडेल्फिया को अंग्रेजों ने घेर लिया। वाशिंगटन ने वीरतापूर्वक अंग्रेजों का सामना किया, किन्तु उसे हारकर फिलाडेल्फिया छोड़कर अपने सर्दियों के स्थान सूकिल (Schuyekili) के किनारे जाना पड़ा। यहीं उसने होय के कैम्प पर आक्रमण करने की योजना तैयार की। उसने अपने पत्र में अपनी कठिनाइयों का वर्णन करते हुए लिखा, **'केवल कुछ सैनिकों के पास एक से अधिक कमीजें हैं, बहुतों के पास एक ही फटी-पुरानी कमीज है और बहुतों के पास वह भी नहीं। अधिकांश जवान नंगे पांव हैं और उनके नंगे पैरों से बहते हुए रक्त द्वारा यह पता चलाया जा सकता है कि वे किधर गए हैं। इतना ही नहीं उनके पास राशन भी पर्याप्त नहीं है।'**

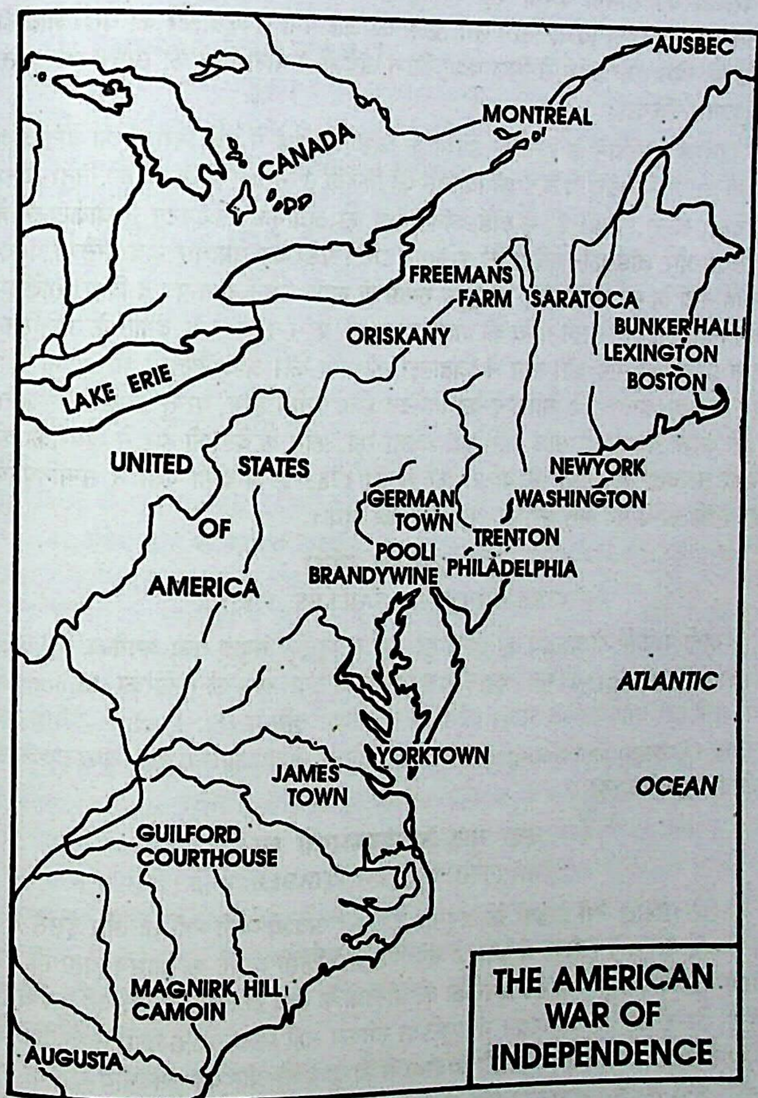
ऐसी कठिन परिस्थितियों में युद्ध करना सरल कार्य न था। इसके अतिरिक्त, सर्दी ने अनेक सैनिकों को बीमार कर दिया तथा अनेक सेना से भागने पर विवश हुए, परन्तु वाशिंगटन के समर्थक उसके साथ डटे रहे और शीघ्र ही उन्हें अपनी सफलता दृष्टिगोचर होने लगी।

(5) साराटोगा (Saratoga)—जनरल बरगोयने (Burgoyne) तथा होय जब अपने कार्य में सफल हो रहे थे तभी अमरीकी जनरल गेट्स ने आश्चर्यजनक कार्य किया। उसने आगे बढ़कर उत्तरी हडसन को घेरकर, बरगोयने के रास्ते को बन्द कर दिया। ज्यों ही बरगोयने ने गेट्स पर आक्रमण करने का विचार किया, उसने अपने पीछे जनता का अथाह समुद्र लहरें लेता हुआ देखा। युद्ध हुआ और गेट्स की विजय हुई। बरगोयने को 17 अक्टूबर, 1777 ई. को हथियार डालने पड़े। अंग्रेजों को जब यह समाचार मिला तो वे कांप उठे। लॉर्ड चैथम, जो पहले ही अमरीका से सन्धि के पक्ष में था, ने कहा, **'तुम अमरीका को नहीं जीत सकते। मैं एक अंग्रेज हूं लेकिन यदि मैं अमरीकी होता तो विदेशी आक्रमण के समय मैं कभी अपने हथियार न डालता कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं।'**[1]

अमरीका की साराटोगा (Saratoga) विजय ने अमरीकावासियों में नवीन उत्साह का संचार किया। यही नहीं, इंग्लैण्ड के पुराने शत्रुओं को भी विश्वास हो गया कि अब इंग्लैण्ड

1 'You cannot conquer America. If I were an American as I am an Englishman, while a foreign troop was landed in my country, I never would laydown my arms-never, never, never.'

हार जाएगा, उन्होंने अपने सप्तवर्षीय युद्ध में हार का प्रतिशोध लेना चाहा। फ्रांस ने 1778 ई. में **'संयुक्त राज्य अमरीका'** को स्वतन्त्र देश मान लिया और उससे सन्धि कर इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। कुछ समय पश्चात् स्पेन ने भी इंग्लैण्ड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।



यूरोप के देश रूस, डेनमार्क, स्वीडन, हॉलैण्ड तथा पर्शिया ने संगठन बनाया और अमरीका को भी युद्ध-सामग्री भेजना प्रारम्भ किया। साथ ही यह घोषणा की कि इंग्लैण्ड को किसी तटस्थ राष्ट्र के जहाजों की तलाशी लेने का कोई अधिकार नहीं।

फ्रांस तथा स्पेन की जल सेना भी अब सम्मिलित रूप से अंग्रेजी चेनल में पहुंच गयी तथा उसने अंग्रेजी तट पर उतरने की धमकी दी। इसी समय लॉर्ड चैथम ने भी मरते हुए कहा, **'क्या हम बोरबान वंश के सामने दण्डवत् करते हुए लेट जाएंगे।'**[1]

इन शब्दों ने अंग्रेजी जनता को अपने कर्तव्य का बोध करा दिया। यद्यपि अमरीका में उसे पराजय का सामना करना पड़ा, परन्तु अब देश पर आयी हुई आपत्ति का उन्होंने संगठित होकर सामना किया। स्पेन तथा फ्रांस की जल सेना ने जिब्राल्टर को घेरा। शीघ्र ही हॉलैण्ड भी स्पेन तथा फ्रांस से मिल गया, किन्तु अंग्रेजों ने तीनों देशों की संयुक्त जल-शक्ति का मुकाबला किया।

जनरल बरगोयने के हथियार डालने के कारण इंग्लैण्ड में एक निराशा का वातावरण छा गया था, किन्तु शीघ्र ही लॉर्ड कॉर्नवालिस की विजयों ने निराशा के बादलों को तितर-बितर कर दिया, किन्तु, 1781 ई. में लॉर्ड कॉर्नवालिस को अचानक वाशिंगटन ने यार्कटाउन में घेर लिया और लॉर्ड कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े। यह समाचार जब इंग्लैण्ड पहुंचा तो लॉर्ड नॉर्थ के मुंह से निकला, **'सब कुछ समाप्त हो गया।'** उसने त्याग-पत्र दे दिया। रौकिंघम प्रधानमन्त्री बना तथा उसने सन्धि की वार्ता प्रारम्भ की। फ्रांस ने भारत के, बंगाल के अतिरिक्त, समस्त प्रान्तों की मांग की। स्पेन ने जिब्राल्टर की मांग की। आयरलैण्ड ने भी अपनी सेना तैयार कर ली। इंग्लैण्ड के साम्राज्य का विघटन होता प्रतीत हुआ, परन्तु उसकी जल-शक्ति ने उसे आशा बंधाई। दो साल और युद्ध चलता रहा, फ्रांस के बेड़े की हार ने अमरीका को विदेशी सहायता की आशा से वंचित कर दिया। 1783 ई. में दोनों पक्षों ने सम्मानपूर्वक वार्साय की सन्धि पर हस्ताक्षर कर युद्ध बन्द कर दिया।

वार्साय की सन्धि
(TREATY OF VERSAILLES, 1783)

दोनों पक्षों में जो वार्साय की सन्धि हुई उसके अनुसार **'संयुक्त राज्य अमरीका'** (United States of America) को एक स्वतन्त्र देश मान लिया गया। स्पेन को मैनोरिका (Minoreca) तथा फ्लोरिडा वापिस मिल गया। फ्रांस को भी सेण्ट लूसिया (St. Lucia), टोबैगो तथा सेनीगल (Tobago and Senegal) प्रान्त मिले। कनाडा, नोवास्कोशिया तथा न्यूफाउण्डलैण्ड, इंग्लैण्ड के अधीन रहे।

क्या युद्ध अवश्यम्भावी था?
(WAS THE WAR INEVITABLE ?)

रीट (Reit) जैसे लेखकों के अनुसार यह युद्ध अवश्यम्भावी नहीं था और इससे बचा जा सकता था। यदि इंग्लैण्ड में बर्क या बड़े पिट जैसे किसी व्यक्ति का शासन होता तो कोई कारण नहीं था कि इंग्लैण्ड का अमरीका की बस्तियों के साथ होने वाला संघर्ष यह रूप धारण करता, परन्तु रीट का यह कथन भी पूर्णतया स्वीकार नहीं किया जा सकता। उपनिवेशों को तो अन्य देशों में बस्तियां बनाने की व्यवस्था से ही घृणा थी और वह सप्तवर्षीय युद्ध के बाद जबकि फ्रांस का भय समाप्त हो गया था इस व्यवस्था को सहने के लिए तैयार न थे। अधिक यही कहा जा सकता है कि जॉर्ज तृतीय और उसके मन्त्रियों की नीति के कारण युद्ध कुछ शीघ्र हो गया, किन्तु युद्ध को टाला जा सकता था ऐसा सोचना सन्देहास्पद है। इजरटन

1 'Shall we fall prostrate, before the house of Bourbon.'

(Egerton) के शब्दों में, हम कह सकते हैं कि 1765 ई. में उठाए गए कदमों ने इस संकट को कुछ जल्दी बुला लिया, परन्तु इस संकट को तो आकर ही रहना था जब तक कि इंग्लैण्ड बस्तियों के प्रति अपना दृष्टिकोण नहीं बदलता।

अंग्रेजों की पराजय तथा अमरीका की विजय के कारण
(CAUSES OF AMERICAN SUCCESS AND BRITISH FAILURE)

अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम के सफल होने के निम्न कारण थे :

(1) **अमरीका को शक्तिहीन समझना** (To consider Americans weak)—अमरीका की शक्ति का अंग्रेज सही अनुमान न कर सके। वे अपनी शक्ति पर आवश्यकता से अधिक गर्व करते थे। जनरल गेज (Gaze) का अनुमान था कि चार रेजीमेंट अमरीका पर विजय करने के लिए पर्याप्त हैं। अंग्रेज अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम को एक विद्रोह मात्र समझते थे और साधारण विद्रोह के समान उस पर विजय पाना आसान मानते थे।

(2) **अमरीका की इंग्लैण्ड से दूरी** (Distance between U. S. A. and U. K.)—अमरीका, इंग्लैण्ड से बहुत दूर था। इसके कारण युद्ध-सामग्री तथा सैनिक भेजने में बड़ी कठिनाई होती थी। अमरीकावासी अपने ही देश में लड़ रहे थे, अतः उन्हें सहायता लेने के लिए दूर जाने की आवश्यकता न थी।

(3) **यातायात की असुविधा** (Transport Problems)—युद्ध का घेरा एक हजार मील लम्बा-चौड़ा था। बस्तियों के मध्य कोई सड़क न थी। बीच में अनेक जंगल थे। बस्ती वाले इन जंगलों से परिचित थे, परन्तु अंग्रेज उनमें रास्ता भूल जाते थे। एक स्थान पर यदि अंग्रेज घिर जाते तो उसकी सूचना उनके साथियों को शीघ्र न मिल पाती थी।

(4) **अंग्रेज सेना के अयोग्य सेनापति** (Incompetent British Generals)—अंग्रेज युद्धमन्त्री जर्मेन (Germaine) एक अयोग्य मन्त्री था। उसने इस बात की कभी चिन्ता न की कि अंग्रेजों की अमरीका में क्या स्थिति है? वह अमरीका से आई डाक खोलने का कष्ट भी नहीं करता था। उसने **'पिट दि एल्डर'** की योजना पर कार्य न किया, परिणामस्वरूप फ्रांस का बेड़ा अमरीका पहुंच गया और अमरीका को उचित समय पर सहायता मिल गयी और कॉर्नवालिस को हथियार डालने पड़े।

(5) **जॉर्ज तृतीय की अयोग्यता** (Incompetent George III)—जॉर्ज तृतीय अत्यन्त हठी शासक था। वह किसी के परामर्श को स्वीकार नहीं करता था। उसने मन्त्रियों को भी अपने हाथ की कठपुतली बना रखा था। मन्त्रियों में द्वेष-भाव था और अपने स्वार्थवश वे देश की चिन्ता न करते थे। योग्य सेनापति क्लेरटाउन को हटाकर बरगोयने को रखना उचित न था। राजा का व्यक्तिगत शासन युद्ध में पराजित होने का मुख्य कारण था। वार्नर-मार्टिन म्योर के अनुसार, **"जॉर्ज तृतीय के राज्याभिषेक के समय तक बस्तियां परिपक्व हो चुकी थीं, किन्तु मातृ देश (इंग्लैण्ड) यह समझ न सका और सम्भवतः यही प्रमुख कारण था जिसकी वजह से इतनी समस्याएं उत्पन्न हुईं।"**[1]

(6) **जॉर्ज तृतीय में अंग्रेज जनता का विश्वास न होना** (Lack of faith in George III)—देश में राष्ट्रीय सरकार न होने के कारण देश में एकता का अभाव था। जॉर्ज तृतीय

[1] 'The colonies, by the time of the accession of George III, had grown up, but the mother country had faild to realize it and that was perhaps the chief cause of the difficulties.' —*Warner-Marten-Muir*

के व्यक्तिगत शासन से अनेक लोग असन्तुष्ट थे। बहुत-से लोग अमरीका की स्वतन्त्रता के पक्षपाती भी थे। लॉर्ड चेथम तथा बर्क ने जॉर्ज तृतीय को उचित सलाह देनी चाही, किन्तु जॉर्ज तृतीय ने उसकी परवाह न की। बर्क का निम्न कथन उसका अमरीका के पक्ष में होना स्पष्ट करता है, **'मैं अमरीका के विरोध से सन्तुष्ट हूं। अन्याय तथा अत्याचार के कारण अमरीकी पागल हो उठे हैं। क्या अंग्रेज इस पागलपन के लिए उन्हें सजा देंगे जिसका बीजारोपण अंग्रेजों ने ही किया।'**

(7) विदेशी शक्तियों का विरोध (Opposition by Other Countries)—इंग्लैण्ड जब अमरीका से युद्ध में व्यस्त था तो उसके विदेशी शत्रु (फ्रांस तथा स्पेन) पुरानी हार का बदला लेने के लिए युद्ध में कूद पड़े। अन्य यूरोप के राष्ट्रों ने भी जन-धन से अमरीका की सहायता की। एक प्रकार से सारा यूरोप इंग्लैण्ड के विरुद्ध था। यह भी अंग्रेजों की पराजय का प्रमुख कारण था।

(8) इंग्लैण्ड की शक्ति का विभाजित होना (Division of British Power)—इस समय इंग्लैण्ड की शक्ति आयरलैण्ड, भारत तथा यूरोप आदि देशों में बंटी हुई थी। इस कारण वे अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते थे।

(9) जॉर्ज वाशिंगटन का कुशल नेतृत्व (Leadership of George Washington)—अंग्रेजों की हार का मुख्य कारण जॉर्ज वाशिंगटन का व्यक्तित्व था। वाशिंगटन क्रामवैल के समान योग्य सेनापति था। उसने अपने देशवासियों में स्वतन्त्रता की भावना प्रज्ज्वलित कर दी। उसने विपरीत परिस्थितियों में भी साहस न खोया। उसके साहस तथा विश्वास के कारण ही अंग्रेजों की हार तथा अमरीकावासियों की विजय हुई। जैसा कि प्रसिद्ध इतिहासकार रैम्जे म्योर का कथन है, **''वाशिंगटन के नेतृत्व ने उपनिवेशवासियों के मन में विश्वास तथा साहस को उत्पन्न कर दिया था, जिसके कारण उन्हें इस महान् तथा दुष्कर संघर्ष में अन्तिम विजय प्राप्त हुई।''**[1]

'स्वाधीनता के युद्ध' के परिणाम
(RESULTS OF AMERICAN WAR OF INDEPENDENCE)

अमरीका के स्वाधीनता संग्राम के अग्रलिखित परिणाम हुए—

(1) पुरातन व्यवस्था का अन्त (End of old system)—इस युद्ध ने बस्तियों की पुरानी व्यवस्था में परिवर्तन की नींव डाली।[2] अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने समझ लिया कि उन्हें उपनिवेशों का शोषण करने की नीति को छोड़ना पड़ेगा, तभी वे अन्य उपनिवेशों को अपने अधीन रख सकेंगे। अतः अंग्रेजों की उपनिवेश नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ।

(2) जॉर्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन का अन्त (End of the Personal Rule of George III)—इस युद्ध के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड में जॉर्ज तृतीय के व्यक्तिगत शासन का अन्त हुआ, लॉर्ड नार्थ को त्याग-पत्र देना पड़ा तथा इस प्रकार अंग्रेजों को पुनः नागरिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई।

---

1 'The triumph of faith and courage which the leadership of Washington inspired in the colonies led them final victory in this great but arduous struggle.'
—*Ramsay Muir*

2 'The American Revolt knocked the bottom out of the conlonial system.'

(3) नवीन बस्तियों की खोज (Discovery of New Colonies)—इस युद्ध से इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा पर तीव्र आघात हुआ। अब उसके समक्ष अनेक ऐसी समस्याएं उत्पन्न हो गयीं। एक बड़ी संख्या में अंग्रेज भक्त अमरीकन कनाडा में जा बसे। 'उनके वहां बस जाने से कनाडा में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों में समय-समय पर झगड़ा होना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त, अब तक इंग्लैण्ड अपराधियों को अमरीका भेजा करता था, अतः अब इसे इन अपराधियों को भेजने के लिए नए स्थान की खोज करनी पड़ी। इन्हीं परिस्थितियों में अंग्रेजों ने आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में जाकर बसना प्रारम्भ कर दिया और वहां बस्तियों की स्थापना करने लगे। इस प्रकार एक नए अंग्रेजी साम्राज्य ने जन्म लिया।

(4) आयरलैण्ड को कानून बनाने की स्वतन्त्रता (Legislative Independence of Ireland)—आयरलैण्ड को भी इस युद्ध के परिणामस्वरूप कानून बनाने की स्वतन्त्रता मिल गयी। उत्तरी अमरीका में इंग्लैण्ड की पराजय का लाभ उठाते हुए, आयरलैण्ड ने **वैधानिक स्वतन्त्रता** (Legislative Independence) की मांग की, जो उसे 1782 ई. में प्राप्त हो गई।

(5) फ्रांस की क्रान्ति (The French Revolution)—फ्रांस की राज्य-क्रान्ति पर भी अमरीका के इस संग्राम का व्यापक प्रभाव पड़ा। फ्रांसीसी सेनाएं विजयी बस्तियों की ओर से लड़ने के लिए अमरीका भेजी गयी थीं। वहां से जब ये सेनाएं स्वदेश लौटीं तो उन्होंने अनुभव किया कि यदि वे दूसरे लोगों को स्वतन्त्रता प्राप्त कराने में सहायक हो सकती हैं तो क्या वह स्वयं स्वतन्त्र नहीं हो सकतीं। इन सेनाओं ने फ्रांस की क्रान्ति में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया।[1]

(6) भारत में स्थिति दृढ़ (Position in India strengthened)—यद्यपि इंग्लैण्ड को इस युद्ध के कारण अमरीका से हाथ धोना पड़ा, किन्तु उसका भारत पर अधिकार पहले से अधिक हो गया, क्योंकि उसने युद्ध के दौरान फ्रांस से भारतीय सैटिलमेण्ट्स को ले लिया था।[2]

क्या जॉर्ज तृतीय अमरीका की स्वतन्त्रता के लिए उत्तरदायी था?
(IF GEORGE III WAS RESPONSIBLE FOR AMERICA'S INDEPENDENCE ?)

किसी भी क्रान्ति के पीछे लम्बे समय से चले आ रहे अनेक कारण होते हैं और इस ज्वालामुखी का विस्फोट छोटी-सी घटना से हो जाता है। अमरीका की क्रान्ति के भी अनेक कारण थे, जिनका वर्णन किया जा चुका है। इन कारणों ने अमरीका की जनता में असन्तोष की भावना जागृत कर दी थी। इंग्लैण्ड की सरकार ने अमरीका में उत्पन्न इस भावना को समाप्त करने के लिए उन कारणों को दूर करने का प्रयास नहीं किया जिन्होंने इस भावना को जन्म दिया था। अतः यह समस्या निरन्तर जटिल होती चली गयी तथा जॉर्ज तृतीय के शासनकाल में विद्रोह के रूप में प्रस्फुटित हुई। अनेक इतिहासकारों ने जॉर्ज तृतीय को अमरीका की क्रान्ति के लिए उत्तरदायी न मानते हुए लिखा है कि साम्राज्यवादी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति से यह आशा कभी नहीं की जा सकती थी कि वह समझ सके कि अमरीका की जनता राजनीतिक दृष्टि से वयस्क हो चुकी है तथा वह साम्राज्यवादी ढांचे की पुनर्व्यवस्था एवं अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहती है। इंग्लैण्ड में अपने अधिकारों को मांगने वालों का दमन

1 लाफायते ने विशेष रूप से अमरीकी क्रान्ति की भावना को फ्रांस में जन-जन तक पहुंचाया।
2 'The American War of Independence deprived Great Britain of one Empire; but it strengthened the foundations of another.' —*Warner-Marten-Muir*

करने वाले व्यक्ति से यह आशा कैसे की जा सकती थी कि वह उपनिवेशों को अधिकार एवं स्वतन्त्रता दे देगा।

किन्तु, इस आधार पर जॉर्ज तृतीय को उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं किया जा सकता। एक शासक होने के नाते उसे इस संघर्ष के स्वरूप को समझकर शत्रुता त्याग देनी चाहिए थी। इसके अतिरिक्त, अमरीका को इंग्लैण्ड के हांथ से निकाल देने के लिए जॉर्ज तृतीय इसलिए उत्तरदायी था कि 1760 ई. से अमरीका की स्वतन्त्रता तक जितने भी मन्त्रिमण्डल बने थे, सबके पीछे जॉर्ज तृतीय ही वास्तव में कार्य कर रहा था। इस समय की संसद जॉर्ज के पूर्ण प्रभाव में थी व सदस्यों के चयन में भ्रष्टाचार का सहारा लिया गया था। जिस समय यह संकट उत्पन्न हुआ सरकार के पास न कोई नीति थी, न योजना, न दृढ़ निश्चय था और न ही सैनिक योजना। **अतः जॉर्ज तृतीय यदि पूर्ण रूप से नहीं तो आंशिक रूप में तो निश्चय ही उत्तरदायी था।**

स्वाधीनता संग्राम के नेता
(LEADERS OF THE FREEDOM MOVEMENT)

स्वाधीनता संग्राम के मुख्य नेता इस प्रकार से थे—

1. जॉर्ज वाशिंगटन (George Washington) (1732 ई. से 1799 ई. तक)

वाशिंगटन का जन्म 11 फरवरी, 1732 ई. को ब्रिज्स क्रीक (वर्जीनिया) में हुआ था। 20 जुलाई, 1749 ई. को वाशिंगटन ने भू-मापक का कार्य सम्हाला। कुछ समय पश्चात् वह सेना में सम्मिलित हो गए। उन्होंने चर्च, काउण्टी व सेना के महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया।

जॉर्ज वाशिंगटन अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति थे, किन्तु उनकी कीर्ति एक राष्ट्रपति के रूप में नहीं वरन् एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में अधिक है। उन्होंने अमरीका की स्वाधीनता के लिए अपार कष्ट सहते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। 6 नवम्बर, 1752 ई. को मेजर के पद से उन्होंने अपना सैनिक जीवन प्रारम्भ किया। 24 जुलाई, 1758 ई. को वह वर्जीनिया के प्रतिनिधि चुने गए। उनकी यह सफलता अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। 1761 ई. में उन्होंने दक्षिण राज्यों की 1887 मील लम्बी यात्रा घोड़ागाड़ी से तय की। 1774 ई. के ऐतिहासिक फ़िलाडेल्फिया सम्मेलन में उन्होंने वर्जीनिया का प्रतिनिधित्व किया। 16 जून, 1775 ई. को उत्तरी अमरीका के संयुक्त प्रान्तों के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया तथा आगामी 8-9 वर्षों में उन्होंने ब्रिटिश सेना के छक्के छुड़ा दिए। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को इस बात के लिए बाध्य किया कि वह अमरीका को मान्यता प्रदान करे। 28 मई, 1787 को उन्हें फिलाडेल्फिया में फेडरल सम्मेलन (Federal Conference) का अध्यक्ष चुना गया। जॉर्ज वाशिंगटन ने 17 सितम्बर, 1787 ई. को संविधान प्रारूप पर हस्ताक्षर किए व 30 अप्रैल, 1789 ई. को अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया।

जिस समय वाशिंगटन राष्ट्रपति बने, अमरीका की स्थिति अच्छी न थी। देश में नवीन संविधान को न तो किसी परम्परा का सहारा था और न संगठित लोकमत का ही समर्थन प्राप्त था। संविधान के निर्माण के समय दो दल बने थे वे भी एक-दूसरे के विरोधी थे। संघवादी दल वाले शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के पक्ष में थे और व्यापार तथा व्यापारिक हितों की रक्षा करना चाहते थे। संघ विरोधी दल वाले राज्यों को अधिकार देने तथा कृषि को प्रधानता देने के पक्ष में थे। इसके अतिरिक्त, नवीन शासन को संचालित करने के लिए कार्य-प्रणाली की व्यवस्था भी वाशिंगटन को स्वयं ही करनी थी। कर एकत्र नहीं हो रहे थे। न्याय-विभाग की स्थापना

न होने के कारण, कानून लागू करने की व्यवस्था न थी। सेना अत्यन्त दुर्वल थी व नौ-सेना का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। ऐसी संकटमयी स्थिति में वाशिंगटन अमरीका का राष्ट्रपति बना। उसका विवेकपूर्ण नेतृत्व कसौटी पर था।

वाशिंगटन ने राष्ट्रपति पद ग्रहण करते समय अधिकारों का निष्ठापूर्वक पालन करने व अपनी पूर्ण क्षमता से **'संयुक्त राज्य के संविधान के परीक्षण, संरक्षण और प्रतिक्षण'** का वायदा किया। जिन गुणों के कारण वाशिंगटन क्रान्ति का प्रथम सैन्निक वना था, उन्हीं गुणों ने उसे नवसंगठित गणतन्त्र का प्रथम राजनीतिज्ञ बना दिया। वाशिंगटन में भविष्य के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण योजनाएं वनाने की दूरदर्शिता और असीम कष्ट सहने की क्षमता थी। वह चतुर की अपेक्षा सरल होना पसन्द करता था। वह साहसी व पराक्रमी होते हुए भी शालीन था, गम्भीर और यथार्थतः नम्र था तथा लोगों में अपने प्रति सम्मान तथा विश्वास उत्पन्न कर लेने की उसमें अद्‌भुत क्षमता थी।

इस प्रकार जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में अमरीका ने अपना जीवन प्रारम्भ किया। उसकी योग्य नीतियों से युद्ध से उत्पन्न हुई समस्याएं सुलझने लगीं व देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगा। उत्तरी न्यूयार्क, पेनसिलवानियां और वर्जीनिया की सम्पन्न घाटियां शीघ्र ही विशाल गेहूं-उत्पादक क्षेत्रों में परिणत हो गयीं। व्यापार व उद्योग का विकास भी तीव्र गति से हुआ। मैसाचूसेट्स और रोड आइलैण्ड में कपड़े के महत्वपूर्ण उद्योग की नींव पड़ रही थी। न्यूयार्क, न्यूजर्सी और पेनसिलवानियां कागज, कांच व लोहे का निर्माण करने लगे थे। जहाजरानी इतनी बढ़ गयी थी कि समुद्र पर इंग्लैण्ड के पश्चात् अमरीका का स्थान हो गया। 1790 ई. से पूर्व ही अमरीकी जहाज समूर बेचने और वहां से चाय, मसाले और रेशम लाने के लिए चीन जाने लगे थे।

जॉर्ज वाशिंगटन 1797 ई. तक राष्ट्रपति पद पर आसीन रहे। उनके पदमुक्त होने से पूर्व सरकार संगठित हो चुकी थी, राष्ट्रीय साख जम चुकी थी, समुद्री व्यापार बढ़ रहा था, उत्तर-पश्चिम क्षेत्र पर पुनः अधिकार हो गया था और शान्ति सुरक्षित हो गयी थी।

4 जुलाई, 1798 ई. को वाशिंगटन ने ले. जनरल व प्रधान सेनापति का पद ग्रहण किया।

14 दिसम्बर, 1799 ई. को इस महान् स्वतन्त्रता सेनानी व अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति की मृत्यु हो गयी।

2. टॉमस जैफर्सन (Thomas Jefferson) (1743 ई. से 1826 ई. तक)

टॉमस जैफर्सन का जन्म 1743 ई. में हुआ था। उसके पिता का नाम पीटर जैफर्सन था, जो कि एक एस्टेट (Estate) का स्वामी था। जैफर्सन के बाग-बगीचों में अनेक दास (Salves) काम करते थे। उनका भविष्य में जैफर्सन की विचारधारा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। जैफर्सन ने 5 वर्ष की आयु से स्कूल जाना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में चार वर्ष वह अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा। नौ वर्ष की आयु में उसने लैटिन स्कूल जाना प्रारम्भ कर दिया। 16 वर्ष की आयु में उसने विलियम एण्ड मेरी कॉलेज (William and Marry College) में दाखिला ले लिया। इस कॉलेज में अध्ययन करते समय वह विलियम स्माल (Willian Small) नामक एक गणित के प्रोफेसर के सम्पर्क में आया। उनके प्रभाव से जैफर्सन की विचारधारा उदारवादी हो गयी।

अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् जैफर्सन ने वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। उसने मार्था वेल्स स्केल्टन (Martha Wayles Skelton) नामक एक विधवा स्त्री से विवाह किया। उसका विवाहित जीवन अत्यन्त सुखी था। उसके 6 बच्चे हुए थे, किन्तु जीवित केवल दो

पुत्रियां ही रहीं। दुर्भाग्यवश जैफर्सन की पत्नी की मृत्यु हो गयी। जैफर्सन ने उसके पश्चात् दूसरा विवाह नहीं किया।

1776 ई. से 1779 ई. तक वह लेजिस्लेटर रहा। 1779 ई. में जैफर्सन ने मुक्त शिक्षा प्रदान करने हेतु विधेयक पारित कराने का प्रयास किया, किन्तु वह अपने उद्देश्य में सफल न हो सका। **जैफर्सन शिक्षा को अत्यधिक महत्व देता था।**[1]

जैफर्सन ने अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। 10 मई, 1775 ई. को फिलाडेल्फिया में द्वितीय महाद्वीपीय कांग्रेस की बैठक हुई थी। इस कांग्रेस की वास्तविक प्रकृति, '**शस्त्र उठाने के कारण और आवश्यकता**' की उस उत्तेजक घोषणा से स्पष्ट हुई थी, जिसे जैफर्सन ने बनाया था। जैफर्सन ने कहा, "**हमारा कर्तव्य न्यायसंगत है। हमारी एकता सम्पूर्ण है। हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं और यदि आवश्यकता पड़ी तो विदेशी सहायता भी हम प्राप्त करेंगे। जो शस्त्र हमारे शत्रुओं ने हमें उठाने के लिए विवश किया है, उन्हें हम अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयोग करेंगे, हम दास होने की अपेक्षा स्वतन्त्र होकर मरने का एकमत संकल्प कर चुके हैं।**"

जैफर्सन स्वतन्त्र लोकतन्त्र का पक्षधर था। जैफर्सन अत्यन्त चिन्तनशील व दार्शनिक था। उसका मुख्य उद्देश्य अधिकाधिक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्राप्त करना था क्योंकि उसका विश्वास था कि संसार में '**प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जनसमूह को स्वशासन का अधिकार है।**' जैफर्सन अत्याचार व निरंकुशता का घोर विरोधी था तथा सदैव स्वतन्त्रता के विषय में सोचता था। **उसका मानना था कि सब स्वतन्त्र पैदा होते हैं तथा उन्हें स्वतन्त्र ही रहना चाहिए।**[2]

1800 ई. में जैफर्सन अमरीका का तीसरा राष्ट्रपति बना। उदारवादी विचारों के कारण उसे छोटे किसानों, दुकानदारों व अन्य कर्मकारों का समर्थन प्राप्त था। राष्ट्रपति बनने के पश्चात् उसने अपने एक मित्र को लिखा, "**हमारे पोत के दृढ़ पार्श्वों की परीक्षा हो चुकी है। हम उसे उसके गणतान्त्रिक मार्ग पर बढ़ाएंगे और अब वह अपनी मनोहर गति से अपने निर्माताओं की कुशलता को स्पष्ट करेगा।**" उसने अपने प्रथम भाषण में एक विवेकपूर्ण और मितव्ययी सरकार की स्थापना करने की प्रतिज्ञा की जो देश के निवासियों के मध्य व्यवस्था की रक्षा करते हुए उन्हें अपने उद्देश्य और विकास के प्रयत्नों को नियन्त्रित करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता देगी।

राष्ट्रपति निवास में जैफर्सन की उपस्थिति से ही प्रजातान्त्रिक प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। जैफर्सन के लिए एक साधारण नागरिक भी उतना प्रतिष्ठित था, जितना उच्चतर अधिकारी। उसने कर्मचारियों को यह सिखाया कि वे जनता के सेवक हैं। उसने कृषि व पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। यह विश्वास कर कि अमरीका उत्पीड़ितों का आश्रयदाता है, उसने नागरिकता के कानून को सरल बना दिया। सम्पूर्ण अमरीका में शीघ्र ही जैफर्सनवादी भावना की लहर प्रवाहित होने लगी। परिणामस्वरूप एक के बाद एक राज्यों ने कानूनों को उदार बनाया।

जैफर्सन का एक प्रमुख कार्य नेपोलियन से लुइजियाना को खरीदना था। इससे अमरीका का क्षेत्रफल लगभग दुगुना हो गया। मिसिसिपी नदी के पश्चिम का प्रदेश मुहाने पर स्थित

1 'I always hear with pleasure of institutions for the promotion of knowledge among my country men, the people of every country are the only safeguardians of their own rights......To avoid this (being deceived) they should be instructed to a certain degree.' —Jefferson

2 'Under the law of nature all men are born free." —Jefferson

न्यू आर्लियन्स के बन्दरगाह सहित चिरकाल से स्पेन के अन्तर्गत था। बन्दरगाह ओहायो और मिसिसिपी घाटियों में उत्पन्न अमरीकी माल के निर्यात के लिए आवश्यक था। जैफर्सन के राष्ट्रपति बनने के बाद ही नेपोलियन ने स्पेन की सरकार को विवश किया कि वह लुइजियाना नामक प्रदेश फ्रांस को वापिस कर दे। इससे अमरीका के लोग अत्यन्त क्रोधित हुए, क्योंकि अमरीका के ठीक पश्चिम में बड़ा औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नेपोलियन की योजनाओं से व्यापारिक अधिकार और भीतर की सभी बस्तियों की सुरक्षा को संकट उत्पन्न हो जाता। **जैफर्सन ने दृढ़तापूर्वक नेपोलियन के इस कार्य का विरोध किया तथा कहा कि यदि फ्रांस ने लुइजियाना पर अधिकार किया तो उसी क्षण से हम इंग्लैण्ड से गठबन्धन कर लेंगे तथा यूरोप के युद्ध में चला पहला तोप का गोला न्यू आर्लियन्स पर इंग्लैण्ड व अमरीका की संयुक्त सेना के आक्रमण का संकेत होगा।** नेपोलियन यह जानता था कि ऐमियन्ज की स्वल्पकालिक सन्धि के पश्चात् इंग्लैण्ड से एक दूसरा युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लुइजियाना उसके हाथ से निकल जाएगा। इसलिए उसने लुइजियाना को अमरीका के हाथ बेचने का निश्चय किया।

1803 ई. में अमरीका ने डेढ़ करोड़ डालर में 26 लाख वर्ग किलोमीटर से भी अधिक भूमि व न्यू आर्लियन्स का बन्दरगाह खरीद लिया। अमरीका को इससे बहुत लाभ हुआ। उसे सम्पन्न मैदानों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र मिल गया था, जो अगले 80 वर्षों के भीतर संसार का बहुत बड़ा अन्न भण्डार बनने वाला था। इसके अतिरिक्त, इसके द्वारा महाद्वीप की सभी प्रमुख नदियों पर भी नियन्त्रण रखा जा सकता था।

जैफर्सन के इस कार्य से उसकी लोकप्रियता दूर-दूर तक फैल गयी, क्योंकि लुइजियाना बहुत बड़ा उपहार था, देश सम्पन्न था और राष्ट्रपति ने सभी वर्गों के लोगों को प्रसन्न करने का कठोर प्रयास किया था। इसी कारण 1805 ई. में वह पुनः राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया व 1809 ई. तक राष्ट्रपति के पद पर कार्य करता रहा।

जैफर्सन में शिक्षा व महानता के प्रति प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। अतः 1809 ई. में पदमुक्त होने के पश्चात् भी वह वर्जीनिया विश्वविद्यालय के विकास के लिए कार्यरत रहा। उसके विचार अत्यधिक आधुनिक थे, इसी कारण उसकी विचारधारा को कुछ लोग बीसवीं सदी की मानते थे। अब्राहम लिंकन (Abraham Lincoln) ने जैफर्सन के विषय में लिखा है, **"आधुनिक समय में अमरीका का प्रत्येक दल जैफर्सन को अपना आदि पुरुष मानता है।"**[1]

विल्सन (Woodrow Wilson) ने भी जैफर्सन की प्रशंसा करते हुए लिखा है, **"जैफर्सन अपनी उपलब्धियों के कारण नहीं बल्कि मानवता के प्रति रुख के कारण अमर हैं।"**[2]

जैफर्सन ने अपनी कब्र पर लिखवाने के लिए स्वयं ही लेख (Epitaph) लिखा। जैफर्सन ने लिखा, **"यहां पर स्वाधीनता की घोषणा का लेखक, धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए वर्जीनिया की स्टेच्यू व वर्जीनिया विश्वविद्यालय का पिता टॉमस जैफर्सन दफनाया गया है।"**[3]

जैफर्सन की मृत्यु 4 जुलाई, 1826 ई. को हुई।

1 'Every party in this country today reckons Jefferson as its patron saint.' —Lincoln

2 "The immortality of Thomas Jefferson does not lie in any one of his achievements but in his attitude towards mankind." —Woodrow Wilson

3 "Here was buried Thomas Jefferson, author of the Declaration of Independence, of the statue of Virginia for religious freedom and father of the University of Virginia."

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अमरीका के स्वाधीनता संग्राम के कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. अमरीका के स्वाधीनता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए।
3. अमरीका के स्वाधीनता आन्दोलन के कारणों व परिणामों का वर्णन कीजिए।
4. अमरीका के स्वाधीनता संघर्ष में अंग्रेजों की पराजय के कारणों का वर्णन कीजिए।
5. जॉर्ज वाशिंगटन अथवा टॉमस जैफर्सन पर एक संक्षिप्त निवन्ध लिखिए।
6. जॉर्ज वाशिंगटन पर एक नोट लिखिए।
7. अमरीका के स्वतन्त्रता युद्ध के क्या कारण थे? उसकी सफलता के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बोस्टन टी पार्टी पर प्रकाश डालिए।
2. स्टाम्प नियम क्या था?
3. अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के तात्कालिक कारण बताइए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अमरीकी स्वतंत्रता संग्राम के लिए उत्तरदायी, ब्रिटिश प्रधानमंत्री ग्रेनविल, का कोई एक आपत्तिजनक कार्य लिखिए।
2. स्टाम्प अधिनियम कब पारित किया गया?
3. इंग्लैण्ड द्वारा आयात-कर अधिनियम कब पारित किया गया?
4. बोस्टन टी पार्टी घटना घटित हुई थी?
5. स्वतंत्र अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति कौन बना?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम का युद्ध किस वर्ष प्रारम्भ हुआ?
   (क) 1760 ई. (ख) 1776 ई. (ग) 1783 ई. (घ) 1780 ई.
2. बोस्टन टी पार्टी किस वर्ष हुई?
   (क) 1773 ई. (ख) 1774 ई. (ग) 1776 ई. (घ) 1782 ई.
3. अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम के समय इंग्लैण्ड का राजा कौन था?
   (क) जॉर्ज I (ख) जॉर्ज II (ग) जॉर्ज III (घ) जॉर्ज IV
4. निम्न में से कौन अमरीका के स्वाधीनता आन्दोलन का नेता नहीं था?
   (क) वाशिंगटन (ख) जैफर्सन. (ग) पिट (घ) इनमें से कोई नहीं
5. अमरीका के आन्दोलन के समय इंग्लैण्ड का प्रधानमन्त्री कौन था?
   (क) ग्रेनविल (ख) पिट (ग) डिजरैली। (घ) इनमें से कोई नहीं
6. स्वतन्त्र अमरीका का प्रथम राष्ट्रपति कौन था?
   (क) जैफर्सन (ख) जॉर्ज वाशिंगटन (ग) रूजवेल्ट (घ) इनमें से कोई नहीं

[उत्तर : 1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग), 5. (क), 6. (ख)।]

13

व्यापारिक क्रान्ति एवं वाणिज्यवाद

[COMMERCIAL REVOLUTION AND MERCANTILISM]

व्यापारिक क्रान्ति
(COMMERCIAL REVOLUTION)

सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप के विभिन्न देश अपने तक ही सीमित थे। इस समय तक विश्व एकता की सभ्यता जैसी कोई अवधारणा विद्यमान न थी, किन्तु सोलहवीं शताब्दी में विभिन्न क्षेत्रों में हुए आविष्कारों ने विश्व के एक सूत्र में बांधने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह आधुनिक युग की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता थी। यह ठीक है कि आधुनिक युग के आरम्भ में यूरोपीय देशों द्वारा भौगोलिक खोजों एवं प्रसार के आर्थिक एवं धार्मिक कारण थे, किन्तु नए व्यापारिक मार्गों की खोज आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इसने आर्थिक क्षेत्र में क्रान्ति को ला दिया। यही कारण है कि **नए व्यापारिक मार्गों की खोज एवं उसके परिणामस्वरूप जो व्यावसायिक एवं व्यापारिक परिवर्तन हुए उन्हें इतिहास में 'व्यापारिक क्रान्ति' के नाम से जाना जाता है।**

व्यापारिक क्रान्ति से पूर्व की आर्थिक स्थिति
(ECONOMIC CONDITION ON THE EVE OF THE COMMERCIAL REVOLUTION)

मध्ययुगीन यूरोप में आर्थिक व्यवस्था की नींव गिल्ड (Guilds) नामक व्यापारिक संस्थाएं ही थीं। व्यापार एवं वाणिज्य तथा कला एवं कौशल का सम्पूर्ण नेतृत्व इन्हीं संस्थाओं के हाथों में केन्द्रित था। कलाकारों की भी अपनी अलग व्यापारिक संस्थाएं थीं, किन्तु इनका कार्य-क्षेत्र अत्यन्त सीमित था। पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता एवं आन्तरिक कमजोरियों के कारण ये संस्थाएं पतनोन्मुख थीं। **इस काल में वेनिस, पिसा एवं जेनेवा नामक इटली के महत्वपूर्ण नगरों के माध्यम से ही यूरोप एवं एशिया व पूर्वी देशों से व्यापार होता था।** अतः इटली का व्यापारिक एवं आर्थिक महत्व अत्यन्त बढ़ गया था। तुर्की के विरुद्ध धार्मिक युद्ध ने तो मानो सम्पूर्ण व्यापारिक एकाधिकारों को वेनिस वालों के हाथों में सीमित कर दिया।

महान् खोजों से पूर्व यूरोप व पूर्वी देशों के मध्य व्यापार का प्रमुख केन्द्र कुस्तुन्तुनिया का राज्य था। पूर्वी एवं सुदूर पूर्वी देशों से मिर्च, गरम मसाले, हीरे-जवाहरात, रेशमी कालीन, सिल्क, सुगन्धित वस्तुएं, औषधियां एवं चीनी यूरोप के विभिन्न देशों को निर्यात होती थीं। व्यापारिक क्रान्ति से पूर्व तक भारत एवं चीन से सामान समुद्री मार्ग से फारस की खाड़ी तक आता था। उसके पश्चात् स्थल मार्ग से कुस्तुन्तुनिया होता हुआ यूरोप तक पहुंचता था। इसी समय फ्रांस, इंग्लैण्ड व इटली के नगर राज्यों का व्यापारिक सम्पर्क उत्तरी अफ्रीका के

अरबों के साथ भी हो गया, किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में पूर्वी यूरोप की ओर तुर्कों की विनाशकारी प्रगति एवं कुस्तुन्तुनिया के पतन के कारण पूर्वी देशों व यूरोप के मध्य व्यापारिक सम्बन्धों में विच्छेद आ गया। अतः यूरोप के व्यापारियों को अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ा। **इसलिए पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्धों की प्रगाढ़ता के लिए यूरोप के व्यापारियों ने नए व्यापारिक मार्गों की खोज की और अत्यन्त उत्साह दिखलाया।**

महान् खोजें[1]

महान् आर्थिक परिवर्तन या व्यापारिक क्रान्ति
(ECONOMIC CHANGES OR COMMERCIAL REVOLUTION)

महान् भौगोलिक खोजों का सीधा प्रभाव तत्कालीन अर्थव्यवस्था पर पड़ा। मध्ययुगीन अर्थव्यवस्था चरमरा गयी थी और **आर्थिक क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखायी दिए। दूसरे शब्दों में व्यापारिक क्रान्ति हो गयी।** अरबों व वेनिस के व्यापारिक एकाधिकार को भयंकर आघात पहुंचा। पूर्वी व्यापार का एकाधिकार पुर्तगाल के हाथों में और एटलांटिक का व्यापार स्पेन के हाथों में केन्द्रित हो गया। व्यापारियों एवं कारीगरों की संस्थाओं (गिल्ड) का पतन हो गया। अब वैज्ञानिक आधार पर विशाल स्तर पर व्यापार व वाणिज्य, उद्योग-धन्धों, उत्पादन क्रय-विक्रय एवं वितरण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। संयुक्त स्टॉक कम्पनियां अस्तित्व में आयीं। बैंकों की स्थापना हुई। राजकीय नियम एवं कानून राष्ट्रीय व्यापार एवं उद्योग-धन्धों के विकास एवं सुरक्षा के लिए बनाए गए। **अब एक नए युग का आरम्भ हुआ, जिसे पूंजीवाद का युग कहा गया।** उपनिवेश स्थापना की भावना को प्रोत्साहन मिला। यही भावना पश्चात् में साम्राज्यवाद के रूप में सामने आयी। नगरवासी व्यापारी एवं मध्यमवर्ग के लोगों पर से सामन्ती नियन्त्रण समाप्त हो गया। नया पूंजीपति वर्ग अस्तित्व में आया। कोल के शब्दों में, **"ये नए लोग पृथक् रूप से मध्यवर्ग के रूप में उदित हुए। आभिजात्य एवं अपने से निम्न आर्थिक स्तर के जनसमुदाय दोनों के साथ अपनी भिन्नता का अहसास रखते हुए उद्योगपतियों के इस नवोदित वर्ग ने प्रारम्भ से ही अपना पृथक् अस्तित्व बनाए रखा। इन नए लोगों में कुलीन बनने की आकांक्षा न थी, किन्तु इन्होंने स्वयं के सामूहिक मूल्यों के लिए राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास अवश्य किया।"** कृषि को बल मिला। नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार 'व्यापारिक क्रान्ति' ने यूरोप की अर्थव्यवस्था को ही परिवर्तित कर दिया। **निःसन्देह 'व्यापारिक क्रान्ति' महान् भौगोलिक खोजों का एक महत्वपूर्ण परिणाम थी।**

वाणिज्यवाद
(MERCANTILISM)

वाणिज्यवाद से अभिप्राय (Meaning of the Mercantilism)

वाणिज्यवाद[1] के विषय में इतिहासविदों एवं अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। हैने के अनुसार वाणिज्यवाद का जन्म सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के

1 विस्तृत विवरण के लिए देखिए अध्याय 1—पुनर्जागरण में पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताओं में 'महान् खोजें'।

2 वाणिज्यवाद शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एडम स्मिथ ने 1776 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में किया था। तत्पश्चात् 1883 ई. में जर्मनी के गुस्ताव वॉन, श्मालर ने अपनी पुस्तक 'फ्रेडरिक महान् की आर्थिक नीतियां' में किया।

मध्य हुआ था। अलेक्जेण्डर ग्रे ने इसका आरम्भ पन्द्रहवीं शताब्दी का आरम्भ माना है तो प्रोफेसर केनल वाणिज्यवाद की उत्पत्ति को सोलहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानते हैं। वाणिज्यवाद को फ्रांस में **कोलबर्टवाद**, जर्मनी में **कैमरालिनवाद** एवं इंग्लैण्ड में **व्यापारवाद या वणिकवाद** के नाम से जाना जाता था। प्रो. हैने के अनुसार, "वाणिज्यवाद से आशय इस विचारधारा से है जो कि सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक यूरोप के राजनीतिज्ञों में प्रिय रही।" इतिहासकार **हेज** के अनुसार, "**वाणिज्यवाद एक आधुनिक शब्द है जो कि सरकार की आर्थिक नीति विशेष रूप से व्यापार एवं वाणिज्य को नियमित करने की नीति को प्रदर्शित करता है।**"[1]

वास्तव में, यदि परीक्षण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि राजाओं एवं व्यावसायिक वर्ग को एक विश्वास था कि केवल सोने-चांदी के भण्डार से ही देश सशक्त एवं सुदृढ़ बन सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक देश ने यह व्यापारिक नियम बनाया कि आयात के अनुपात में निर्यात अधिक हो जिससे अधिकाधिक सोना व चांदी प्राप्त हो सके। **अतः कहा जा सकता है कि व्यापार एवं उद्योग को नियमित कर सोना व चांदी प्राप्त करने की नीति ही वाणिज्यवाद थी।**

वाणिज्यवाद के उदय के कारण
(CAUSES OF THE RISE OF THE MERCANTILISM)

वाणिज्यवाद के उदय के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे :

1. पुनर्जागरण (Renaissance)—वाणिज्यवाद के उदय के लिए अभूतपूर्व सांस्कृतिक जागरण जिसे पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है, उत्तरदायी था। पुनर्जागरण से पूर्व सामान्य जन-जीवन पर धार्मिक प्रभाव इतना अधिक छाया हुआ था कि स्वतन्त्र चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास ही नहीं हो पाया था। जो व्यक्ति तर्क की बात करता उसे मृत्यु का आलिंगन करना होता था, किन्तु मध्य युग की समाप्ति तक स्थिति परिवर्तित होने लगी। पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप नवचेतना का संचार हुआ। मनुष्य ने पारलौकिक जीवन के स्थान पर भौतिकवाद की ओर झुकना आरम्भ कर दिया। मनुष्य अन्धविश्वासों, कठिनाइयों व परम्पराओं का विरोध करने का साहस न कर सका। फलतः भौतिक जीवन के प्रति आकांक्षा बढ़ने लगी जिसने अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव डाला। अतः भौतिक संसाधनों की प्राप्ति हेतु शनैः-शनैः गम्भीर प्रयत्न आरम्भ हो गए जिन्होंने शीघ्र ही व्यापक आर्थिक परिवर्तन का क्रम आरम्भ कर दिया।

2. धर्म सुधार आन्दोलन (Religion Reformation)—धर्म सुधार आन्दोलन ने भी वाणिज्यवाद के मार्ग को प्रशस्त किया इसमें कोई सन्देह नहीं है। मध्य युग में चर्च ने जीवन को निस्सार बतलाते हुए आध्यात्मिक जीवन की सर्वश्रेष्ठता को प्रतिपादित किया। भौतिक सुखों को आध्यात्मिक जीवन के लिए कांटे के रूप में प्रतिपादित किया गया, किन्तु शनैः-शनैः चर्च का सर्वोच्च अधिकारी पोप एवं अन्य पदाधिकारी भौतिक सुखों में लिप्त हो गए। अतः पोप व चर्च में आई बुराइयों के विरुद्ध भयंकर प्रतिक्रिया धर्म सुधार आन्दोलन के रूप में देखी गयी। प्रतिक्रिया के रूप में जिस धर्म सुधार आन्दोलन ने जोर पकड़ा वह **'प्रोटेस्टेण्ट'** के रूप में सामने आया। प्रोटेस्टेण्टों ने पूंजीवाद के मार्ग की बाधाएं दूर करने में योगदान दिया। मितव्ययिता, समय के महत्व एवं परिश्रम एवं ब्याज लेने की प्रक्रिया पर प्रोटेस्टेण्टों ने विशेष

1 "Mercantilism is a modern word signifying governmental regulation of economic affairs, especially trade and industry." —Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 88.

योगदान दिया। अतः सामान्य जनमानस में व्यक्तिगत सम्पत्ति को जोड़ने की भावना ने जोर पकड़ना आरम्भ कर दिया।

3. **आर्थिक स्थिति** (Economic Condition)—वाणिज्यवाद के उदय के लिए आर्थिक स्थिति भी कम उत्तरदायी नहीं थी। मुद्रा के प्रचलन से व्यापार एवं वाणिज्य के क्षेत्र में व्यापकता आ गयी। नए देशों की खोज ने व्यापार को महत्व प्रदान कर दिया। स्थानीय आवश्यकता के अतिरिक्त भी अव उत्पादन करने वाले देशों में अधिक उत्पादन की आवश्यकता को बल मिला। नयी खानों व बैंकों के विकास ने विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया। अब प्रत्येक देश सोने व चांदी को प्राप्त करने की होड़ में जुट गया। अमरीका के अनेक भागों में सोने व चांदी के भण्डारों का पता लग जाने से एक नए परिवेश ने जन्म ले लिया। इन नई परिस्थितियों ने वाणिज्यवाद के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

4. **राजनीतिक स्थिति** (Political Condition)—धर्म सुधार आन्दोलन के पूर्व यूरोप की राजनीति पर भी पोप का राजनीतिक प्रभाव था। पोप की आज्ञा से कैथोलिक राज्यों के राजा का राज्याभिषेक होता था तथा पोप की आज्ञा जनता के लिए सर्वोपरि थी। इस प्रकार एक राज्य में दो तलवारों का शासन था, किन्तु आधुनिक युग के आरम्भ में निरंकुश राजतन्त्रों की स्थापना व राजा की शक्ति को सर्वोपरि मानने पर बल दिया जाने लगा। **मैकियावली** ने अपनी रचना **'दि प्रिन्स'** में राजा की शक्ति को सर्वोपरि माना और स्पष्ट कर दिया कि अन्य शक्तियों को भी राजा की शक्ति के अधीन झुकना चाहिए। अलेक्जेण्डर ग्रे के शब्दों में, **"मैकियावली ने राजनीति को सभी नैतिकता से अलग स्वतन्त्र स्वरूप प्रदान किया।"** निःसन्देह राज्य की सर्वोपरिता पर बल दिया जाने लगा। वस्तुतः इसका मूल कारण आन्तरिक स्थिति एवं वाह्य आक्रमणों का खतरा था। आन्तरिक स्थिति चौपट हो गयी थी। समस्त जनता की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी। कृषि एवं घरेलू अर्थव्यवस्था से शक्तिशाली सेना का व्यय उठाना कठिन हो गया था। इधर वाणिज्यवादी इस बात पर बल दे रहे थे कि व्यापार के माध्यम से राजकीय खजाने में वृद्धि हो सकती है अतः राजाओं ने भी नए देशों की खोज व विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन प्रदान किया।

प्रमुख वाणिज्यवादी विचारक
(MAIN THINKERS OF MERCANTILISM)

16वीं शताब्दी के अन्त तक का 300 वर्षों का समय वाणिज्यवाद का युग था। इस दीर्घकाल में अनेक वाणिज्यवादी विचारक हुए, जिन्होंने अपने विचारों से वाणिज्यवाद को प्रभावित किया। इनमें से प्रमुख वाणिज्यवादी विचारकों का संक्षिप्त विवरण अग्रवत् है :

सर टामस मन (1571 ई. से 1641 ई. तक)

सर टामस मन इंग्लैण्ड का एक प्रमुख लेखक एवं व्यापारी था। उसका जन्म 1571 ई. में हुआ था और मृत्यु 1641 ई. में हुई थी। सर टामस मन ने अपने जीवनकाल में **'इंग्लैण्ड ट्रेजर बाय फॉरिन ट्रेड'** नामक पुस्तक लिखी जो कि उसकी मृत्यु के पश्चात् सन् 1664 ई. में प्रकाशित हुई। यह पुस्तक **'वाणिज्यवाद की गीता'** के नाम से प्रख्यात है। टामस मन के अनुसार, **"अपनी समृद्धि की वृद्धि के लिए कम से कम आयात एवं अधिक से अधिक निर्यात की नीति अपनायी जानी चाहिए।"** अपने इसी सिद्धान्त के अनुसार टामस मन ने आयात की जाने वाली वस्तुओं पर अधिक कर लगाने की बात कही, किन्तु यह स्मरणीय है कि टामस

मन ने अत्यधिक धन संग्रह को उचित नहीं बतलाया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि इसे वह व्यापार सन्तुलन के लिए प्रतिकूल मानता था।

ऐण्टोनिओ सैरा (1580 ई. से 1650 ई. तक)

ऐण्टोनिओ सैरा का जन्म 1580 ई. में इटली में हुआ था। उसने अपनी पुस्तक में वाणिज्यवाद के सिद्धान्तों पर बल दिया था। देश की महत्ता को उसने सोने-चांदी के संग्रह से ही बतलाया। सैरा के अनुसार, **"कृषि में मौसम की अनिश्चितता के कारण लाभ अनिश्चित रहता है जबकि उद्योगों में तो वृद्धि का नियम ही चरितार्थ होता है। अतः उद्योगों की वृद्धि की नीति पर बल दिया जाना चाहिए।"** यह उल्लेखनीय है कि सैरा ने मुद्रा के निर्यात को नियन्त्रित करने पर बल नहीं दिया।

जीन बेपटिस्ट कोलबर्ट (1619 ई. से 1683 ई. तक)

जीन बेपटिस्ट कोलबर्ट फ्रांस का वित्तमन्त्री था। इसने वाणिज्यवाद के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कालान्तर में फ्रांस में वाणिज्यवाद को उसी के नाम के आधार पर **'कोलबर्ट'** के नाम से पुकारा जाने लगा। कोलबर्ट के अनुसार, **"सड़कों एवं नहरों का निर्माण कर घरेलू अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो सकती है। शक्तिशाली जहाजी बेड़े का निर्माण, अनाज के निर्यात पर प्रतिबन्ध, गिल्डों पर राजकीय नियन्त्रण, व्यापारिक कम्पनियों की स्थापना, औपनिवेशिक विस्तार एवं मुद्रा के सृजन के लिए उद्योगों को प्रोत्साहित करना, वाणिज्यवाद के लिए या एक देश के विकास के लिए परम आवश्यक है।"** कोलबर्ट ने फ्रांस की वित्तीय स्थिति पर नियन्त्रण पाने के लिए अपने उक्त सिद्धान्तों पर ही बल दिया था।

सर विलियम पैटी

सर विलियम पैटी को सांख्यिकी विधि (Statistical Method) **का संस्थापक माना जाता है।** सर्वप्रथम पैटी ने ही अर्थव्यवस्था में सांख्यिकी का प्रयोग किया था।

अन्य विचारक

उपरोक्त वर्णित विचारकों के अतिरिक्त जॉन लॉक, सर जोशिया चाइल्ड, जान जोकिम बैंकर्स, कैन्टीलोन विशेष उल्लेखनीय हैं। जॉन लॉक ने मांग व पूर्ति के सिद्धान्त का विकास करते हुए मुद्रा के परिणाम सिद्धान्त की ओर भी संकेत दिया। **सर जोशिया चाइल्ड** ने कम ब्याज दर की बात कही। बैंकर्स ने गिल्ड प्रणाली का समर्थन कर सट्टेबाजी को बन्द करने की वकालत की। कैण्टीलोन ने कच्चे माल (Raw material) के अधीन एवं निर्मित माल के निर्यात पर बल दिया।

इस प्रकार अनेक विचारकों ने अपने-अपने विचारों के अनुसार वाणिज्यवाद के विकास की बात कही, किन्तु कतिपय बातें ऐसी भी थीं जिन पर लगभग सभी वाणिज्यवादी विचारकों का मत एक ही था। संक्षेप में, उनके एकमत आर्थिक विचारों का वर्णन निम्नवत् है :

वाणिज्यवादियों के प्रमुख आर्थिक विचार
(MAIN THOUGHTS OF THE THINKERS OF MERCANTILISM)

1. **शक्तिशाली निरंकुश राजतन्त्रों का निर्माण** (Formation of Powerful Autocratic States)—मध्ययुगीन राजनीतिक व सामाजिक स्थिति में धर्म की प्रधानता ने पोप की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि कर दी थी। आर्थिक दबाव अत्यधिक बढ़ चुका था। अतः यह भावना घर करने लगी कि आन्तरिक अव्यवस्था से निपटने के लिए राज्य को शक्तिशाली बनना अत्यन्त

आवश्यक है। वाणिज्यवादियों ने राजा की सर्वोच्च सत्ता की वकालत की। उन्होंने राजनीतिक एकता एवं राष्ट्रीयता के विचार प्रस्तुत किए। वाणिज्यवादियों ने राजा को आर्थिक सहयोग प्रदान कर उसकी सैन्य शक्ति को भी शक्तिशाली बनाया।

2. सोने व चांदी के महत्व को स्वीकार करना (Significance of Gold and Silver accepted)—सभी वाणिज्यवादियों ने राज्य की शक्ति को बढ़ाने के लिए सोने व चांदी के महत्व को स्वीकार किया। उनका प्रमुख नारा था, **"अधिक स्वर्ण, अधिक धन एवं अधिक शक्ति।"**[1] चाइल्ड के अनुसार, **"किसी भी देश की समृद्धि का आंकलन इस बात से किया जाता है कि वहां पाए जाने वाले सोने व चांदी की मात्रा कितनी है।"** टामस मन के शब्दों में, **"जो राष्ट्र अपनी खानों से रहित हैं उन्हें सोने व चांदी प्राप्त करके धनवान बनना चाहिए।"** विलियम पैटी ने तो यहां तक लिखा है कि, **"व्यापार का अन्तिम महत्वपूर्ण प्रभाव सोना व चांदी प्राप्त करना है। यह न तो नाशवान है और न ही परिवर्तनशील। यह प्रत्येक स्थान या समय पर उपयोगी है और प्रत्येक स्थिति में सम्पत्ति है।"** इस प्रकार सभी विचारकों ने यह स्वीकार किया कि ये दोनों चीजें ऐसी हैं जिनके बदले कोई भी वस्तु प्राप्त की जा सकती थी।

3. विदेशी व्यापार को मान्यता (Foreign Trade Recognized)—वाणिज्यवादी इस बात से सहमत थे कि सोने व चांदी की अत्यधिक प्राप्ति के लिए विदेशी व्यापार में वृद्धि अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने इसे आत्मनिर्भरता एवं सम्पन्नता की कुञ्जी माना है। जोशिया चाइल्ड के अनुसार, **"उन उद्योगों को सर्वाधिक प्रोत्साहन अपेक्षित है जिनमें जहाजरानी का सर्वाधिक प्रयोग होता है।"** उसकी वृद्धि में कच्चे माल का आयात एवं निर्मित माल का निर्यात अत्यन्त महत्वपूर्ण था। देश के रोजगार में वृद्धि के लिए उन्होंने कल-कारखानों के विकास पर अधिक बल दिया।

4. अनुकूल व्यापार की अधिकता (Excessive Favourable Trade)—वाणिज्यवादियों ने अनुकूल व्यापाराधिक्य पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार इसके लिए विदेशों में निर्मित वस्तुओं के आयात पर अधिक शुल्क होना चाहिए। खाद्यान्नों के आयात पर यह बात लागू नहीं होनी चाहिए। आयात की नयी वस्तुओं के बदले में वस्तुओं को ही दिया जाना चाहिए न कि सोने व चांदी को। इस प्रकार निर्यात में वृद्धि कर व्यापार को अपने पक्ष में करना चाहिए।

5. औद्योगिक एवं व्यापारिक नियन्त्रण (Industrial and Commercial Control)—वाणिज्यवादियों ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए औद्योगिक एवं व्यापारिक नियन्त्रण पर बल दिया। उनके अनुसार, "आयात को प्रतिबन्धित किया जाना चाहिए और कुछ ही कम्पनियों को आयात की स्वीकृति मिलनी चाहिए। उद्योगों पर कर कम से कम लगाए जाने चाहिए। यातायात के साधनों का विस्तार होना चाहिए। जनसंख्या वृद्धि पर बल दिया जाना चाहिए।"

6. कृषि (Agriculture)—वाणिज्यवादियों ने यद्यपि कृषि-व्यवस्था को व्यापार की तुलना में अत्यधिक महत्व न दिया, किन्तु उन्होंने इसे कच्चे माल का प्रमुख स्रोत अवश्य माना। उन्होंने बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने पर बल दिया। उनका मानना था कि ऐसा करके वे कच्चा माल सस्ते मूल्यों पर पा सकेंगे और तैयार माल का निर्यात लाभ मूल्यों में कर सकेंगे। इस प्रकार कृषि को व्यापार के पश्चात् द्वितीय दर्जा प्रदान किया गया।

1 More Gold, More Wealth and More Power.

वाणिज्यवाद का व्यावहारिक प्रयोग
(PRACTICAL USE OF THE MERCANTILISM)

वाणिज्यवाद के सभी नियमों को यद्यपि एक साथ सभी यूरोपीय देशों ने नहीं अपनाया, किन्तु शनैः-शनैः विभिन्न देशों द्वारा वाणिज्यवाद की महत्वपूर्ण नीतियों को यूरोप के अनेक देशों ने अपनाया। संक्षेप में, इस प्रकार के प्रमुख देशों का वर्णन निम्नवत् है :

1. **फ्रांस** (France)—फ्रांस में वाणिज्यवाद का विकास करने का महत्वपूर्ण कार्य कोलबर्ट ने किया। उसके प्रयत्नों के कारण ही वाणिज्यवाद को फ्रांस में **'कोलबर्ट-वाद'** के नाम से पुकारा गया। अनेक व्यापारिक एवं औद्योगिक नियन्त्रण व्यापार की वृद्धि के लिए लगाए गए। उद्योगों का स्थानीकरण करने, उत्पादन में वृद्धि करने एवं उत्पादन में विशिष्टीकरण लागू करवाने के लिए भी कोलबर्ट ने क़ानून बनाए। इस सन्दर्भ में उपनिवेश स्थापना को लेकर फ्रांस को इंग्लैण्ड से भी संघर्ष करना पड़ा।

2. **इंग्लैण्ड** (England)—वाणिज्यवादी नीति का तीव्र विकास इंग्लैण्ड में महारानी एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल (1558 ई. से 1603 ई. तक) में देखा जा सकता है। इस काल में श्रमिकों को प्रशिक्षित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित किया गया। श्रमिकों के हितों को दृष्टि में रखकर **'निर्धन कानून'** (Poor Laws) बनाया गया। उपनिवेश स्थापना की ओर विशेष प्रयत्न किए गए।

3. **जर्मनी** (Germany)—जर्मनी में भी वाणिज्यवाद का अभूतपूर्व विकास हुआ। औद्योगिक उन्नति के लिए जर्मनी में महत्वपूर्ण प्रयास हुए। योग्य कारीगरों को जर्मनी में बसाने के लिए योजनाएं बनायी गयीं। निजी-विनियोग को प्रोत्साहित किया गया। मुद्रा एवं साख की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया।

4. **स्पेन** (Spain)—स्पेन में भी स्वर्ण एवं चांदी की प्राप्ति के लिए भरसक प्रयत्न किए गए। स्पेन ने औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार कर उपनिवेशों का अत्यन्त शोषण किया, परन्तु स्पेन ने उद्योग-धन्धों के विकास की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। अतः वे पूर्णरूप से लाभान्वित न हो सके।

वाणिज्यवाद का महत्व
(IMPORTANCE OF MERCANTILISM)

वाणिज्यवाद का व्यापार एवं उद्योग-धन्धों के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। आयात नियन्त्रण के कारण ही इंग्लैण्ड के उद्योग-धन्धों को लाभ पहुंचा। वाणिज्यवाद ने शक्तिशाली राज्यों की नींव डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। फलस्वरूप फ्रांस, इंग्लैण्ड एवं जर्मनी सदृश्य महान् राज्यों का अस्तित्व सामने आया। मुद्रा को विनिमय के माध्यम के अलावा धन संग्रह का साधन सिद्ध करने का कार्य भी वाणिज्यवाद ने ही किया। अतः प्रोफेसर स्कॉट के शब्दों में माना जा सकता है कि, **''जब वाणिज्यवादी युग की परिस्थितियों को लेकर वाणिज्यवाद का अवलोकन किया जाए तो इस व्यवस्था में दोष निकालना अत्यन्त दुष्कर हो जाता है।''**

आलोचना
(CRITICISM)

वाणिज्यवाद के महत्व को देखते हुए यह नहीं समझ लेना चाहिए कि इसकी आलोचना हुई ही नहीं। वास्तव में, सत्रहवीं शताब्दी के अन्त से ही वाणिज्यवाद को आलोचना का

शिकार होना पड़ा था। लॉक ने तो वाणिज्यवाद के मूलभूत सिद्धान्तों पर ही प्रहार आरम्भ कर दिया था। उसने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की बात कही। आलेचकों ने वाणिज्यवाद के स्वर्ण व चांदी के संचय की कटु आलोचना की और कहा कि बहुमूल्य धातुएं व्यक्ति की पेट की भूख को नहीं मिटा सकतीं इसके लिए अन्न चाहिए। एडम स्मिथ के अनुसार, **"किसी भी देश का धन तो उसकी सस्ती एवं प्रचुर मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन है। स्वर्ण व चांदी तो इन वस्तुओं में प्राप्ति के साधन मात्र हैं।"** आलोचकों ने स्पष्ट किया कि स्वर्ण व चांदी की अपेक्षा लौह एवं इस्पात पर महत्व दिया जाना चाहिए। कृषि की उन्नति व आन्तरिक व्यापार विकास के लिए अपेक्षित है। नार्थ ने यहां तक कहा है कि **"विदेशी व्यापार की महत्वपूर्ण शिलाएं आन्तरिक व्यापार एवं कृषि हैं।"** वाणिज्यवादियों के व्यापाराधिक्य की भी कटु आलोचना हुई। यह दलील दी गयी कि एक देश लगातार दूसरे देश को निर्यात करता रहे और आयात कम से कम करे, यह कैसे सम्भव हो सकता है क्योंकि प्रत्येक आयात करने वाले देश को अपनी वस्तुएं निर्यात कर लाभ का आकांक्षी रहना पसन्द करेगा। यदि सभी देश निर्यात पर ही बल देंगे तो आयात कौन करेगा? विदेशी व्यापार के क्षेत्र में यह नीति अधिक टिकाऊ नहीं हो सकती। आलोचकों ने यह भी स्पष्ट किया कि आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक हस्तक्षेप से उद्योग-धन्धों का पूर्ण विकास सम्भव नहीं हो सकता। आलोचकों ने वाणिज्यवादियों के उपनिवेश स्थापना सम्बन्धी सिद्धान्त की भी कटु आलोचना की। उन्होंने कहा कि अत्यधिक आर्थिक शोषण से एक समय उपनिवेश बौखला उठेंगे। वस्तुतः यही कारण था कि इंग्लैण्ड को अमरीका से हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार आलोचकों ने वाणिज्यवादियों को उनकी नीतियों पर परिवर्तन के लिए अपनी दलीलों को स्पष्ट किया।

वाणिज्यवाद के पतन के कारण
(CAUSES OF THE DECLINE OF THE MERCANTILISM)

वाणिज्यवाद की कटु आलोचना में एडम स्मिथ का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान था। उसने अपनी पुस्तक **'वेल्थ ऑफ नेशन्स'** (Wealth of Nations) में वाणिज्यवाद की अत्यन्त भर्त्सना की। उसके विचारों ने वाणिज्यवाद की धज्जियां उड़ा दीं। संक्षेप में, वाणिज्यवाद के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :

1. एडम स्मिथ का योगदान (Contribution of Adam Smith)—वाणिज्यवाद के पतन में एडम स्मिथ का महत्वपूर्ण योगदान था। एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक **'वेल्थ ऑफ नेशन्स'** में हस्तक्षेप न करने की नीति का प्रसार किया। उसने व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर विशेष बल दिया। अतः वाणिज्यवाद के पतन का द्वार खुल गया।

2. फ्रांस में कोलबर्ट का विरोध (Opposition of Colbert in France)—वाणिज्यवाद को गहरा धक्का उस समय लगा जबकि फ्रांस में कोलबर्टवाद का भयंकर विरोध हुआ। फ्रांस में कृषि की स्थिति अत्यन्त खराब हो गयी थी। जनता पर अत्यन्त कर लगाए जा चुके थे। अब जनता ने स्वतन्त्र व्यापार की नीति का समर्थन आरम्भ कर दिया। इसका प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा। अतः शनैः-शनैः वाणिज्यवाद का पतन होता चला गया।

3. कृषि का पतन (Decline of Agriculture)—**वाणिज्यवादियों ने व्यापार को प्रथम, उद्योग को द्वितीय एवं कृषि के प्रति नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किए।** कृषक वर्ग जो कि भूमि पर कार्य कर रहा था दो जून की रोटी के लिए तरसने लगा। कृषि-व्यवस्था में सुधार के प्रति

जमींदार वर्ग एवं प्रशासन अत्यन्त ढीला पड़ चुका था। कृषक वर्ग पर अत्याचार भी किए जाते थे और उन पर कर भी अत्यधिक था। इसी समय प्रकृतिवादियों ने कृषि की महत्ता पर बल देना आरम्भ कर दिया। उनके इस प्रयास ने वाणिज्यवाद की जड़ों को झकझोर कर रख दिया।

4. **स्वर्ण व चांदी को अत्यधिक महत्व देना** (Emphasis on Gold and Silver)—वाणिज्यवादियों ने सोने व चांदी के संग्रह को अत्यधिक महत्व दिया। सोना व चांदी प्रत्यक्ष रूप से जनता की भूख को नहीं मिटा सकते थे। अतः सामान्य जनता में उपयोगी वस्तुओं की मांग बढ़ने लगी।

5. **स्वतन्त्र व्यापार की नीति की समयानुसार अधिक आवश्यकता** (Need of Free Trade)—वाणिज्यवाद वास्तव में व्यापार एवं उद्योग की नीति का प्रारम्भिक काल था। जैसे-जैसे नए अनुसन्धान हुए उत्पादन के क्षेत्र में नई तकनीक व नई व्यवस्था की आवश्यकता महसूस हुई। अतः शनैः-शनैः व्यापार से नियन्त्रण हटाए जाने लगे। प्रतिबन्ध व निगम जो कि वाणिज्यवाद का प्रमुख सिद्धान्त था को स्वतन्त्र व्यापार की नीति ने धराशायी कर दिया।

इस प्रकार वाणिज्यवाद का शक्तिशाली गढ़ 18वीं शताब्दी में टूटना आरम्भ हो गया था।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. व्यापारिक क्रान्ति से क्या अभिप्राय है? वाणिज्यवादी क्रान्ति से पूर्व यूरोप की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए स्पष्टीकरण कीजिए कि महान् भौगोलिक खोजों का क्या प्रभाव पड़ा?
2. व्यापारिक क्रान्ति पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।
3. वाणिज्यवाद से क्या अभिप्राय है? इसके उदय के कारणों पर प्रकाश डालिए। इसे किन देशों ने अपनाया, संक्षेप में लिखिए।
4. वाणिज्यवाद के प्रमुख विचारकों का उल्लेख करते हुए वाणिज्यवादियों के प्रमुख समान आर्थिक विचारों पर प्रकाश डालिए।
5. वाणिज्यवाद की आलोचना करते हुए इसके पतन के कारणों पर प्रकाश डालिए।
6. वाणिज्यवाद के उदय के प्रमुख कारणों का उल्लेख करते हुए इसके महत्व को इंगित कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाणिज्यवाद के पतन के प्रमुख कारण बताइए।
2. कोल्बर्टवाद क्या है?
3. वाणिज्यवाद का व्यावहारिक प्रयोग बताइए।
4. सर टामसमन के विचारों पर प्रकाश डालिए।
5. व्यापारिक क्रान्ति किसे कहा गया?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यापारिक क्रान्ति मुख्यतः किसका परिणाम था?
2. किन्हीं दो वाणिज्यवादी विचारकों के नाम लिखिए?
3. इंग्लैण्ड में लिखित किस पुस्तक को 'वाणिज्यवाद की गीता' के नाम से जाना जाता है?
4. सर टामस मन द्वारा रचित किसी एक पुस्तक का नाम लिखिए।
5. मैकियावली द्वारा रचित किसी एक ग्रंथ का नाम लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. व्यापारिक क्रान्ति के सन्दर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?
   (क) व्यापारिक क्रान्ति महान् भौगोलिक खोजों का एक परिणाम थी।
   (ख) व्यापारिक क्रान्ति का सीधा सम्बन्ध सामन्तों के राजनीतिक अधिकारों से था।
   (ग) व्यापारिक क्रान्ति के कारण गिल्ड नामक संस्थाओं का पतन हुआ।
   (घ) व्यापारिक क्रान्ति ने नए युग पूंजीवाद के युग का द्वार खोल दिया।
2. वाणिज्यवाद के सन्दर्भ में निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही नहीं है?
   (क) व्यापार एवं उद्योग को नियमित कर सोना व चांदी प्राप्त करने की नीति वाणिज्यवाद कहलाती है।
   (ख) वाणिज्यवाद के उदय में पुनर्जागरण व धर्म सुधार आन्दोलन भी उत्तरदायी थे।
   (ग) सर टामस मन प्रमुख वाणिज्यवादी विचारक थे।
   (घ) वाणिज्यवाद ने स्वतन्त्र व्यापार की नीति को अपना सिद्धान्त बनाया।
3. 'दि प्रिन्स' की रचना की—
   (क) एडम स्मिथ ने (ख) मैकियावली ने
   (ग) सर टामस मन ने (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
4. 'सर टामस मन' की रचना थी—
   (क) दि प्रिन्स (ख) 'इंग्लैण्ड्स ट्रेजर बाय फारिन ट्रेड'
   (ग) वेल्थ ऑफ नेशन्स (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।
5. सांख्यिकी विधि का संस्थापक था—
   (क) सर टामस मन (ख) मैकियावली
   (ग) एडम स्मिथ (घ) सर विलियम पैटी।
6. 'अधिक स्वर्ण अधिक धन एवं अधिक शक्ति' नारा था—
   (क) वाणिज्यवादियों का (ख) समाजवादियों का
   (ग) प्रजातन्त्रवादियों का (घ) निरंकुश राजतन्त्रवादियों का।
7. वेल्थ ऑफ नेशन्स नामक पुस्तक का रचयिता कौन था?
   (क) एडम स्मिथ (ख) सर टामस मन
   (ग) मैकियावली (घ) कोलबर्ट।
8. वाणिज्यवाद को फ्रांस में किस नाम से पुकारा जाता था?
   (क) कोलबर्टवाद (ख) एंग्लिकनवाद
   (ग) लूथरवाद (घ) समाजवाद।
9. 'जब वाणिज्यवादी युग की परिस्थितियों को लेकर वाणिज्यवाद का अवलोकन किया जाए तो इस व्यवस्था में दोष निकालना अत्यन्त दुष्कर हो जाता है'—यह कथन किसका है?
   (क) प्रोफेसर स्टॉक (ख) सर टामस मन
   (ग) एडम स्मिथ (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।

[उत्तर : 1. (ख), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ख), 5. (घ), 6. (क), 7. (क), 8. (क), 9. (क)।]

14

तर्कवाद का युग
[THE AGE OF REASON]

भूमिका
(INTRODUCTION)

अठारहवीं शताब्दी की एक प्रमुख विशेषता यूरोप में बौद्धिक क्रान्ति का होना था। विज्ञान एवं दर्शन के क्षेत्र में प्रगति एवं नूतन विचारधाराओं के फलस्वरूप जो व्यापक जागृति यूरोप में देखी गई वह इतिहास में **'बौद्धिक जागृति'** के नाम से प्रख्यात है। इस जागृति ने मानव विचारों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। **'यही कारण है कि अठारहवीं शताब्दी को तर्कवाद का युग** (The age of Reason) **के नाम से जाना जाता है।**[1]

तर्कवाद के युग के प्रमुख विद्वान
(MAIN INTELLECTUALS OF THE AGE OF REASON)

तर्कवाद के युग के प्रमुख विद्वान इस प्रकार से हैं :

1. एडम स्मिथ (Adam Smith)

एडम स्मिथ का नाम आधुनिक युग के अर्थशास्त्र सम्बन्धी विचारों एवं सिद्धान्तों के लिए अत्यन्त विख्यात है। उसने 1776 ई. में **वेल्थ ऑफ नेशन्स** (Wealth of Nations) नामक पुस्तक लिखकर आर्थिक क्षेत्र में नए सिद्धान्तों को अस्तित्व प्रदान किया।

2. बेकारिया (Beccaria)

बेकारिया नामक विधि विशेषज्ञ का नाम दण्ड विधान के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, वह इटली का रहने वाला था। उसने **दण्ड विधान के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण सुधार किए वह निःसन्देह क्रान्तिकारी थे।** उसके विचारों से प्रभावित होकर ही क्रान्ति के समय फ्रांस में जूरी द्वारा निर्णय एवं अपराध स्वीकार करवाने के लिए यन्त्रणाओं के प्रयोग की विधि में मनाही आदि सुधार हुए।

3. क्वेस्ने (Quesney)

क्वेस्ने का नाम आर्थिक व्यवस्था के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह Laissez Faire नामक नीति का प्रबल समर्थक था। उसने **स्वतन्त्र व्यापार की नीति का समर्थन किया।** उसने

1 "The age of Reason, widely applied to the eighteenth century, reflects the conviction of this age that man could, by the exercise of his powers of reason, pluck the mystery out of the Universe and lead his fellows into a future of ever increasing happiness." —*John Knapton*

कृषि को राष्ट्रीय सम्पत्ति का एकमात्र स्रोत मानते हुए यह स्पष्ट किया कि कृषि पर कर लगाना चाहिए न कि उद्योग एवं व्यापार पर। उसने पूर्णतः स्वतन्त्र एवं नियन्त्रण मुक्त व्यापार एवं उद्योग नीति का समर्थन किया।

4. तूर्जो (Turgot)

तूर्जो का विस्तृत विवरण अध्याय 15 में देखिए।

5. दिदरो (Diderot, 1713 ई. से 1784 ई. तक)

दिदरो का जन्म 1713 ई. में फ्रांस में हुआ था। दिदरो का विचार था कि सत्य के ज्ञान से सुख की प्राप्ति व दुखों का निराकरण हो सकता। **अतः उसने एक 'विश्वकोष' (Encyclopeadia) की रचना की, जिसमें उसने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला।** इस विश्वकोष को 17 खण्डों में 1751 ई. तक प्रकाशित किया गया। इस विश्वकोष की रचना में विभिन्न प्रख्यात विद्वानों के लेखों को भी दिदरो ने प्रकाशित किया, जिनमें प्रमुख वोल्टेयर (Voltaire) व क्वेस्ने थे। फ्रांस की रूढ़िवादी सरकार को दिदरो की विचारधारा स्वीकार न थी, अतः उसे विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया गया। यहां तक कि दिदरो को कारागार में भी दिन काटने पड़े। विभिन्न समस्याओं का सामना करने के उपरान्त भी दिदरो अपने प्रयत्न में लगा रहा।

6. मॉण्टेस्क्यू (Montesquieu 1689 ई. से 1755 ई. तक)

मॉण्टेस्क्यू का जन्म 18 जनवरी, 1689 ई. में फ्रांस के बोर्डो (Bordeaux) नगर के समीप **'ला ब्रेड'** (La Brede) नामक गांव में हुआ था। मॉण्टेस्क्यू का बचपन में नाम **'चार्ल्स लुई डी सेकेण्ड'** था। उसने बोर्डो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की तथा 1721 ई. में वह वकील बन गया। 1715 ई. में उसका विवाह हुआ। 1716 ई. में अपने 'ताऊ' के कहने पर उसने अपना नाम मॉण्टेस्क्यू रखा। मॉण्टेस्क्यू ने लगभग 12 वर्ष तक बोर्डो के प्रधान न्यायाधीश के पद पर भी कार्य किया।

अध्ययन तथा लेखन कार्य में उसकी रुचि प्रारम्भ से ही थी, अतः उसने अपना अधिकांश समय इसी में व्यतीत किया। 1728 ई. में मॉण्टेस्क्यू ने यूरोप के अनेक देशों की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान काफी समय वह इंग्लैण्ड में भी रहा तथा इंग्लैण्ड से बहुत प्रभावित हुआ। 10 फरवरी, 1755 ई. को उसकी मृत्यु हो गयी।

मॉण्टेस्क्यू ने अपने जीवनकाल में अनेक ग्रन्थों की रचना की। मॉण्टेस्क्यू की प्रथम रचना **"द पर्शियन लैटर्स'** (*The Persian Letters*) 1721 ई. में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से मॉण्टेस्क्यू को अत्यधिक ख्याति मिली। तत्पश्चात् मॉण्टेस्क्यू ने 1734 ई. में **'रोमन लोगों की महानता और पतन के कारणों पर विचार'** (*Reflection on the causes of the Greatness and Decline of the Romans*) तथा 1745 ई. में 'सुल्ला और एक्रेटीज का संवाद' (*Dialogue of Sulla and Ecrates*) प्रकाशित किया, किन्तु उसका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ **'कानून की आत्मा'** (*The Spirit of Law*) था, जो 1748 ई. में प्रकाशित हुए। इस ग्रन्थ के दो वर्ष में 22 संस्करण छपे, जो इस पुस्तक की लोकप्रियता का प्रमाण है।

'कानून की आत्मा' नामक पुस्तक में मॉण्टेस्क्यू ने सात शासन प्रणालियों का विस्तृत वर्णन किया। मॉण्टेस्क्यू ने इंग्लैण्ड की संवैधानिक व्यवस्था की अत्यन्त प्रशंसा की तथा फ्रांस में विद्यमान **'राजा के दैवीय अधिकारों के सिद्धान्त'** (Divine Rights of the King) की कटु आलोचना की। मॉण्टेस्क्यू ने ही सर्वप्रथम विधिवत् **'शक्ति-पृथक्करण के सिद्धान्त'** (Theory of separation of powers) की स्थापना की। मॉण्टेस्क्यू का विचार था कि इंग्लैण्ड की

उत्तम शासन-व्यवस्था का कारण वहां के नागरिकों को प्राप्त राजनीतिक स्वतन्त्रता का होना था। इसी आधार पर उसने शक्ति-पृथक्करण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। **मॉण्टेस्क्यू ने बताया कि निरंकुश शासन को समाप्त करने के लिए शासन के तीन प्रमुख अंगों—कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका का अलग-अलग होना आवश्यक है।** उसने लिखा कि जब तक फ्रांस में उपरोक्त तीनों अंग एक ही व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित रहेंगे वहां सुधार की अपेक्षा करना व्यर्थ था। मॉण्टेस्क्यू के इन विचारों ने निःसन्देह 1789 ई. की क्रांन्ति के बीज बो दिए।

मॉण्टेस्क्यू के उपरोक्त विचारों के कारण ही उसे 18वीं शताब्दी के प्रमुख राजनीतिक चिन्तकों में से एक माना गया है। सेबाइन के शब्दों में, **"18वीं शताब्दी के समस्त फ्रांसीसी राजनीतिक चिन्तकों में (रूसो के अतिरिक्त) मॉण्टेस्क्यू सबसे महत्वपूर्ण है।"**[1] मॉण्टेस्क्यू के कार्यों व विचारों का मूल्यांकन करते हुए मैक्सी ने लिखा है, **"अमर व्यक्तियों में मॉण्टेस्क्यू का स्थान किसी से तुलना करके निर्धारित नहीं किया जा सकता। वह राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में प्लेटो, अरस्तू, मैकियावली और बोदां के समान विशिष्ट महत्व रखता है।"**[2]

7. वाल्टेयर (Voltaire 1694 ई. से 1778 ई. तक)

18वीं शताब्दी के राजनीतिक साहित्यकारों में प्रमुख वाल्टेयर था। हेजन ने वाल्टेयर के विषय में लिखा है, **"वाल्टेयर यूरोपीय इतिहास का एक महान् मनीषी हुआ है और उसके नाम पर एक युग का नाम पड़ गया है। जिस प्रकार लूथर अथवा इरैस्मस के युग का उल्लेख किया जाता है वैसे ही वाल्टेयर के काल की चर्चा की जाती है।"**

वाल्टेयर का जन्म फ्रांस के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उसके पिता उसे वकील बनाना चाहते थे, किन्तु उसकी रुचि साहित्य में थी। उसमें आलोचना करने की अद्भुत क्षमता थी। विभिन्न उच्च लोगों की आलोचना करने के कारण उसे अनेक बार अत्याचारों का सामना करना पड़ा था। उसे कई बार कारागार में भी रहना पड़ा। अनेक वर्ष उसे फ्रांस से बाहर रहने के लिए विवश होना पड़ा। अतः वाल्टेयर को फ्रांसीसी समाज तथा उसमें व्याप्त अराजकता का पूर्ण ज्ञान था। इसी कारण रोज ने उसके विषय में लिखा है, **"वह फ्रांसीसी विचारों का पूर्ण दर्पण था।"**[3]

वाल्टेयर मानव स्वतन्त्रता के सिद्धान्त का उग्र समर्थक था तथा स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। पुरातन-व्यवस्था के प्रति उसे अपार घृणा थी तथा किसी पर अत्याचार होते देखना उसके लिए सम्भव न था। जहां कहीं भी अत्याचार होते हुए देखता वह वहां पहुंच जाता तथा अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करता। इसी कारण उसके लिए कहा गया है कि मूलतः वह कोई राजनीतिक चिन्तक न था। शासन-व्यवस्था में व्याप्त दोषों पर उसने अपनी लेखनी से आघात किया तथा राज्य से जनता का विश्वास समाप्त कर दिया।

अत्याचार का विरोध करने के कारण ही वाल्टेयर का चर्च से भी संघर्ष हुआ। वाल्टेयर की दृष्टि में चर्च मानव स्वतन्त्रता का विरोधी तथा अन्धविश्वास उत्पन्न करने का स्थान था। चर्च

1 "Of all french political philosphers in the 18th century (other than Rousseau) the most important was Montesquieu." —*Sabine*

2 "Montesquieu's rank among the immortals is not to be determined by comparing him with other like Plato, Aristotle, Machiavelli and Bodin. He stands apart in unique and solitary eminence." —*Maxey*

3 "He was the completest mirror of the French thought." —*Rose*

को वह **'बदनाम स्थान'** (Pintamc) कहता था। अतः उसने चर्च में व्याप्त आडम्बरों व भ्रष्टाचारों की घोर आलोचना की।

इस प्रकार वाल्टेयर ने सम्पूर्ण जीवन मानवता के हित व स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने में लगा दिया। हेजन ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, **''उसके समय में उसका क्या महत्व था, इसका पता इस बात से चलता है कि लोगों ने उसे राजा वाल्टेयर का नाम दे रखा था। संसार में उससे अधिक स्वतन्त्र, निर्भीक व साहसी आत्माएं बहुत कम हुई हैं।''**

8. जीन जैकस रूसो (Jean Jaques Rousseauc 1712 ई. से 1778 ई. तक)

जीन जैकस रूसो 18वीं शताब्दी का सर्वप्रमुख राजनीतिक चिन्तक था। रूसो का जन्म 28 जून, 1712 ई. को जेनेवा में हुआ था। उसके जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उसकी मां की मृत्यु हो जाने के कारण उसका बचपन उपेक्षित व्यतीत हुआ, उसका पालन-पोषण उसके सम्बन्धियों ने किया। 16 वर्ष की आयु में वह जेनेवा छोड़कर चल दिया, इधर-उधर घूमता रहा। रूसो 14 वर्षों तक इसी प्रकार यायावर का जीवन व्यतीत करता रहा। यह चौदह वर्ष उसके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित हुए क्योंकि इन्हीं में वह दिदरो जैसे विद्वानों के सम्पर्क में आया तथा फ्रांस की निर्धन जनता को निकट से देखने का अवसर मिला।

एक लेखक के रूप में रूसो का जीवन 1749 ई. से प्रारम्भ हुआ। **उस वर्ष 'डिजोन की अकादमी'** (Academy of Dijon) **द्वारा एक 'विज्ञान तथा कलाओं की प्रगति ने नैतिकता को पवित्र किया है अथवा भ्रष्ट'** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में रूसो को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इससे रूसो को एक लेखक के रूप में प्रसिद्धि मिली। 1761 ई. में रूसो ने **'न्यू हैलोइजे'** (New Heloise) तथा 1762 ई. में **'सामाजिक समझौता'** (Social contract) व **'इमाइल'** (Emilc) की रचना की। इन ग्रन्थों से रूसो को अपार ख्याति प्राप्त हुई। इन ग्रन्थों में व्यक्त उसके क्रान्तिकारी विचारों के कारण राज अधिकारी व चर्च के अधिकारी उसके विरोधी हो गए, परिणामस्वरूप उसे फ्रांस छोड़कर जाना पड़ा। 1767 ई. में वह पुनः फ्रांस आ गया व अनेक ग्रन्थों की रचना की; जिनमें प्रमुख **'द कन्फैशन्स'** (The Confessions) **'द डाइलाग्स'** (The Dialouges) व **'द रेवरीज'** (The Reveries) हैं। 2 जुलाई, 1778 ई. को रूसो की मृत्यु हुई।

रूसो के विचार अपने समकालीन लेखकों से अधिक प्रगतिशील थे। वह समाज का नवीन ढंग से पुनर्संगठन करना आवश्यक समझता था, क्योंकि उसका विचार था कि वर्तमान व्यवस्था को सुधारना सम्भव न था, अतः एक नवीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना आवश्यक था। इसी उद्देश्य से उसने **'सामाजिक समझौता'** की रचना की। इस ग्रन्थ का पहला वाक्य ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उसने लिखा है, **''मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है, किन्तु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।''**[1] इस विचार के आधार पर ही रूसो ने एक आदर्श राज्य की रूपरेखा प्रस्तुत की। रूसो ने लिखा कि समाज का आधार उन व्यक्तियों का परस्पर समझौता होता है जिनसे मिलकर वह (समाज) बनता है। प्रभुत्व सम्पूर्ण जनता में होता है, व्यक्ति विशेष में नहीं। सभी व्यक्ति समान तथा स्वतन्त्र हैं। सरकार का प्रमुख कर्तव्य प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों व उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करना है। इस प्रकार रूसो ने दो लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों—जनता का प्रभुत्व तथा नागरिक की राजनीतिक स्वतन्त्रता की स्थापना की। व्यक्तियों को स्वतन्त्रता व समानता के अधिकारों का प्रतिपादन करके उसने लोकतान्त्रिक शक्तियों को

1 **"Man is born free and every where he is in chains."**

प्रबल बनाया। सेबाइन ने रूसो के विषय में लिखा है, **"रूसो के राजनीतिक चिन्तन में समाजवाद, निरंकुशतावाद और लोकतन्त्र सभी के बीज विद्यमान हैं।"**[1]

रूसो ही पहला विचारक था जिसने समानता, स्वतन्त्रता व जनतन्त्र के विचारों का प्रतिपादन किया तथा सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता का मूल स्रोत जनता को माना। रूसो असमानता का भी विरोधी था। उसका विचार था कि राज्य में कोई व्यक्ति इतना समृद्ध नहीं होना चाहिए कि वह दूसरे को खरीद सके और न ही कोई इतना गरीब होना चाहिए कि वह स्वयं को बेच दे।

रूसो के विचारों ने जनसाधारण को असाधारण रूप से प्रभावित किया। वेपर (Wayper) ने रूसो के विषय में लिखा है, **"आधुनिक विश्व के मस्तिष्क पर उससे (रूसो) अधिक प्रभाव डालने वाले व्यक्ति गिने-चुने हैं।"** रूसो ने अपने समय की दूषित शासन-व्यवस्था व सामाजिक व्यवस्था की कटु आलोचना की तथा समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं व शोषण को जनसाधारण के समक्ष स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर उनमें तीव्र आक्रोश व असन्तोष की भावना जागृत की। मैक्गवर्न ने लिखा है, **"रूसो की रचनाओं ने वर्तमान स्थितियों के प्रति घोर असन्तोष उत्पन्न कर दिया और यह भावना पैदा कर दी कि वर्तमान बुराइयों को दूर करने के लिए कुछ क्रान्तिकारी कदम उठाए जाने चाहिए।"**

इस प्रकार क्रान्तिकारी विचारों को जनता में प्रबल बनाने के कारण रूसो को **'क्रान्ति का मसीहा'** (Prophet of the Revolution) भी कहा जाता है।

इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के विद्वानों ने अपने मतों का प्रतिपादन कर यूरोप को राजनीतिक एवं सामाजिक क्रान्ति के कगार पर ला खड़ा किया। इन विद्वानों ने फ्रांस की क्रान्ति के नेताओं में निश्चयात्मक सिद्धान्त भर दिए तथा उन्हें कुछ सैद्धान्तिक वाक्यों तथा तर्कों से सुसज्जित कर दिया। इन विद्वानों ने फ्रांस के तृतीय वर्ग के समक्ष शक्तिशाली स्वप्न प्रस्तुत किए और उन्हें आशावादी बनाया। हेजन[2] ने लिखा है कि इन विद्वानों ने क्रान्ति के कारणों को अत्यन्त चतुरता से जनता के समक्ष स्पष्ट किया तथा उनकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। लोगों को वाद-विवाद के लिए बाध्य किया तथा पुरातन-व्यवस्था के विरुद्ध क्रोध एवं घृणा को प्रज्ज्वलित किया। इन्हीं विद्वानों ने **फ्रांसीसी जनता को स्वतन्त्रता** (Liberty), **भ्रातृत्व** (Fraternity) **एवं समानता** (Equality) **का पाठ पढ़ाया।**

तर्कवाद के युग के विद्वानों की प्रमुख विशेषताएं
(SALIENT FEATURES OF THE INTELLECTUALS OF THE AGE OF REASON)

तर्कवाद के युग के प्रमुख दार्शनिकों, विचारकों व आलोचकों की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत् इंगित की जा सकती हैं—

(1) **व्यक्तिवाद के समर्थक** (Follower of Individualism)—तर्कवाद के युग के विद्वान व्यक्तिवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक थे। उनका मुख्य आदर्श व्यक्ति के अधिकारों की प्राप्ति व मानव विकास था। मानव अधिकारों की प्राप्ति के लिए उन्होंने मानववादी आन्दोलनों पर बल दिया।

1 "Rousseau's political theory contains the seeds of Socialism, Absoliutism and Democracy."

2 पूर्वोक्त, पृ. 47।

(2) **प्रचलित व्यवस्था के विरोधी** (Against the Traditional System)—तर्कवाद के युग के विद्वान प्रायः प्रचलित सभी व्यवस्थाओं के घोर विरोधी थे। वे चर्च एवं राज्य की व्यवस्था में सुधारों के पक्षपाती थे। वे ईसाई धर्म में व्याप्त बुराइयों एवं सम्पूर्ण मध्ययुगीन संस्थाओं के विरोधी थे।

(3) **आदर्श मानव की संकल्पना** (Imagination of Ideal Human)—तर्कवाद के युग के सभी विद्वान आदर्श मानव की संकल्पना चाहते थे। समाज, शासन एवं शिक्षा को वे आदर्श मानव के विकास का साधन मानते थे। उनका दृष्टिकोण मानववादी एवं सर्वहितकारी था। उन्होंने यूनान एवं रोम की प्राचीन सभ्यता व संस्कृति को अपना आदर्श माना।

(4) **तर्कवादी** (Rationalism)—तर्कवादी विद्वान सभी मान्यताओं व परम्पराओं के प्रति तर्क को अधिक महत्व देते थे। मानव समाज का विकास वे तर्क एवं प्राकृतिक नियमों द्वारा ही सम्भव समझते थे। उनकी विचारधारा आलोचनात्मक एवं खण्डनकारी थी। ऐतिहासिकता के प्रति उनकी रुचि थी।

तर्कवाद का प्रभाव
(IMPACT OF THE AGE OF REASON)

तर्कवाद के यूरोप में पड़े प्रभाव ने यूरोप के अधिकांश राज्यों में बौद्धिक क्रान्ति को जन्म दिया, किन्तु तर्कवाद का व्यापक प्रभाव फ्रांस पर विशेष रूप से पड़ा, किन्तु हेजन व थाम्पसन जैसे इतिहासकारों ने फ्रांस पर तर्कवाद के प्रभाव को नगण्य ही बतलाया है। थाम्पसन के अनुसार, **"फ्रांसीसी दार्शनिकों व फ्रांसीसी क्रान्ति के मध्य दूर का तथा परोक्ष सम्बन्ध है। दार्शनिकता के सिद्धान्त का प्रयोग तो क्रान्ति के समय ही हुआ। दार्शनिकता की शिक्षाओं को बाद में महत्व मिला। यदि क्रान्ति के प्रारम्भ में दार्शनिक सिद्धान्तों का कोई प्रभाव पड़ा तो केवल इस कारण कि उन सिद्धान्तों ने सामाजिक व्यवस्था के प्रति एक आलोचनात्मक व सन्दर्भपूर्ण विचारधारा को जन्म दिया।"** हेजन के अनुसार, **"दार्शनिक विचारधारा ने क्रान्ति को जन्म नहीं दिया वरन् उन्होंने तो उसके कारणों को अत्यन्त चतुराई के साथ खोलने का कार्य किया।"**

किन्तु यह तो मानना ही होगा कि क्रान्ति होने से पूर्व बौद्धिक क्रान्ति जन्म ले चुकी थी। 1787 ई. के अमरीका के संविधान में माण्टेस्क्यू के शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया था। 1791 ई. में फ्रांसीसी क्रान्तिकारियों ने भी इसी सिद्धान्त को आधार बनाकर नए संविधान का निर्माण किया था। तर्कवादी विचारधारा से प्रभावित होकर ही शिक्षित जनता ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था को युक्तिसंगत मानने से इन्कार कर दिया। वाल्टेयर की विचारधारा चर्च के लिए घातक सिद्ध हुई। रूसो के चिन्तन ने फ्रांसीसी क्रान्ति को अत्यधिक प्रभावित किया। **'स्वतन्त्रता, समानता एवं भ्रातृत्व'** का फ्रांसीसी क्रान्ति का सन्देश निःसन्देह रूसो की ही देन थी।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. तर्कवाद के युग से क्या अभिप्राय है? इस युग के प्रमुख विद्वानों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. तर्कवादी युग के विद्वानों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। इस युग के विद्वानों के योगदान पर प्रकाश डालिए।
3. अठारहवीं सदी के प्रमुख दार्शनिकों के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
4. तर्कवादी युग के विद्वानों का मूल्यांकन फ्रांस की राज्य क्रान्ति 1789 ई. पर पड़े उनके प्रभाव के सन्दर्भ में कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तर्कवाद से आप क्या समझते हैं?
2. रूसो की विचारधारा बताइए।
3. मोण्टेस्क्यू की विचारधारा बताइए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. एडम स्मिथ कौन थे?
2. 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' नामक पुस्तक के रचयिता कौन थे?
3. 'बेकारिया' नामक विद्वान किस क्षेत्र का विशेषज्ञ था?
4. 'द पर्शियन लैटर्स' किस लेखक की रचना है?
5. मॉण्टेस्क्यू के बचपन का नाम क्या था?
6. 'द स्पिरिट आफ लॉ' नामक ग्रंथ किसने लिखा था?
7. वाल्टेयर कहां का निवासी था?
8. 'सोशल कॉण्ट्रेक्ट' नामक ग्रंथ किसने लिखा था?
9. रूसो द्वारा लिखित किन्हीं दो ग्रंथों के नाम लिखिए।
10. मॉण्टेस्क्यू द्वारा रचित किन्हीं दो पुस्तकों के नाम लिखिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'दि पर्शियन लैटर्स' नामक रचना निम्नलिखित में किसकी है?
(क) मॉण्टेस्क्यू (ख) रूसो (ग) वाल्टेयर (घ) दिदरो।
2. 'विश्वकोष' की रचना निम्नलिखित में से किसने की ?
(क) दिदरो (ख) मैजिनी (ग) वाल्टेयर (घ) गैरीबाल्डी।
3. 'कानून की आत्मा' नामक पुस्तक का लेखक था—
(क) दिदरो (ख) क्वेस्ने (ग) माण्टेस्क्यू (घ) वाल्टेयर।
4. 'शक्ति का पृथक्करण का सिद्धान्त' प्रतिपादित किया था—
(क) माण्टेस्क्यू ने (ख) वाल्टेयर ने (ग) रूसो ने (घ) मैजिनी ने।
5. वाल्टेयर यूरोपीय इतिहास का एक महान् मनीषी हुआ है और उसके नाम पर एक युग का नाम पड़ गया है'—यह कथन है—
(क) हेजन (ख) लूथर (ग) मैक्सी (घ) मैरियट।
6. निम्नलिखित में से किसने चर्च को बदनाम स्थान की संज्ञा दी ?
(क) वाल्टेयर (ख) मैजिनी (ग) रूसो (घ) बिस्मार्क।
7. 'मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है, किन्तु वह सर्वत्र जंजीरों से जकड़ा हुआ है' यह कथन किसका है?
(क) रूसो (ख) वाल्टेयर (ग) दिदरो (घ) माण्टेस्क्यू।
8. 'सामाजिक समझौता' नामक कृति है—
(क) रूसो (ख) वाल्टेयर (ग) दिदरो (घ) माण्टेस्क्यू।
9. 'निम्नलिखित में से कौन-सा पहला विचारक था, जिसने समानता, स्वतन्त्रता व जनतन्त्र के विचारों का प्रतिपादन किया था'—
(क) रूसो (ख) दिदरो (ग) वाल्टेयर (घ) माण्टेस्क्यू।

[उत्तर : 1. (क), 2. (क), 3. (ग), 4. (क), 5. (क), 6. (क), 7. (क), 8. (क), 9. (क)।]

15

1715 ई. के पश्चात् फ्रांस का पतन तथा फ्रांसीसी क्रान्ति

[DECLINE OF FRANCE AFTER 1715 AND REVOLUTION]

भूमिका
(INTRODUCTION)

1715 ई. में लुई चौदहवें ने अपनी मृत्यु के समय जिस फ्रांस को उत्तराधिकार के रूप में अपने प्रपौत्र लुई पन्द्रहवें के लिए छोड़ा था वह लुई चौदहवें के अनवरत युद्ध की नीति के कारण आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त जर्जरित हो चुका था। फ्रांस का राजकोष रिक्त था। फ्रांस भयंकर ऋण से ग्रस्त था। फ्रांस की सैन्य शक्ति का भी ह्रास हो चुका था। फ्रांस की इस दुरावस्था के कारण तो लुई चौदहवें ने अपने शासनकाल के अन्तिम वर्षों में समझ लिया था। अतः मृत्यु के समय उसने अपने प्रपौत्र लुई XV को शान्तिप्रिय नीति के लिए कहा था।

लुई XV (1715 ई. से 1774 ई. तक)
(LOUIS XV)

लुई XV पांच वर्ष की अल्प आयु में राजगद्दी पर आसीन हुआ था। अतः उसके वयस्क होने तक कुछ अन्य लोगों ने लुई XV के नाम पर शासन किया। 1715 ई. से 1723 ई. तक शासन की वास्तविक सत्ता आर्लेआं के ड्यूक व 1723 ई. से 1743 ई. तक कार्डिनल फ्लेरी के हाथों में रही। उसके पश्चात् तब लुई XV ने शासन-सत्ता पूर्णरूप में अपने हाथों में रखी और 1774 ई. तक अपनी मृत्यु-पर्यन्त उसने शासन किया। **इस प्रकार लुई XV के शासन-काल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग** वह जिसमें शासन की वास्तविक सत्ता आर्लेआं के ड्यूक के हाथों में रही। **यह 1715 ई. से 1723 ई. तक का काल था। द्वितीय भाग** वह था जबकि सत्ता कार्डिनल फ्लेरी के हाथों में केन्द्रित थी। **यह काल 1723 ई. से 1743 ई. तक का था। तृतीय भाग** वह था जबकि लुई XV ने सत्ता अपने हाथों में केन्द्रित की थी, **यह काल 1743 ई. से 1774 ई. तक का था।** लुई XV के शासन-काल के इन तीनों भागों का संक्षिप्त विवरण अग्रवत् है :

आर्लेआं के ड्यूक का संरक्षण काल (1715 ई. से 1723 ई. तक)
(PROTECTION PERIOD OF DUKE OF ORLEANS)

लुई चतुर्दश ने अपनी मृत्यु के समय अपने प्रपौत्र का रीजेण्ट आर्लेआं के ड्यूक (Duke of Orleans) को नियुक्त अवश्य किया था, किन्तु आर्लेआं के ड्यूक की शक्ति को सीमित करने के उद्देश्य से 15 सदस्यों वाली एक परिषद भी बनाई थी। उसकी इस व्यवस्था में बूर्बां वंश के इस सिद्धान्त की कि **'राज्य राजा की सम्पत्ति है'** रक्षा हो गई, किन्तु लुई चतुर्दश की मृत्यु के पश्चात् ड्यूक ऑफ आर्लेआं ने स्वतः को सर्वसत्ता सम्पन्न रीजेण्ट बना लिया और फ्रांस की सत्ता पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

आर्लेआं के ड्यूक की गृह-नीति (Home Policy of the Duke of Orleans)

ड्यूक ने अपनी गृह-नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए :

(1) **लुई चतुर्दश द्वारा स्थापित व्यवस्था में परिवर्तन** (Change in Louis XIV's System)—अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए सर्वप्रथम आर्लेआं के ड्यूक ने पार्लियामेण्टों की शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। उसने पार्लियामेण्ट पर अपना प्रभाव स्थापित कर लुई चतुर्दश के वसीयतनामे में परिवर्तन कराकर स्वतः को सर्वसत्ता सम्पन्न रीजेण्ट बना लिया। परिषदों की स्थापना की गई। सैन्य शक्ति को सीमित करने के लिए सेना की संख्या में भारी कमी कर दी गई। इस प्रकार आर्लेआं के ड्यूक ने बूर्बां वंश के सिद्धान्त को कि **'राज्य राजा की सम्पत्ति है'** अस्वीकृत कर लुई चतुर्दश की व्यवस्था में परिवर्तन कर दिया।

(2) **आर्थिक कार्य** (Economic Works)—अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के पश्चात् आर्लेआं के ड्यूक के समक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या फ्रांस की जर्जरित आर्थिक स्थिति थी। इसका निराकरण करने के लिए उसके एडिनबरा के निवासी जान लॉ को अपना अर्थमन्त्री नियुक्त किया। जान लॉ ने आर्थिक व्यवस्था के इस सिद्धान्त को कि **'साख धन वृद्धि का कारण है'**—अपनी अर्थ-नीति का मूल आधार बनाया। उसने उद्योग-धन्धों व कृषि की ओर विशेष ध्यान न देते हुए कागजी नोटों की भरमार द्वारा व्यापार को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न किया। उसने एक बैंक (Banque Generale) की स्थापना कर इसे कागजी मुद्रा जारी करने का अधिकार प्रदान कर दिया। इसकी प्रारम्भिक सफलता से आकर्षित होकर इसे **'रायल बैंक'** का नाम दे दिया गया, 1717 ई. **में एक मिसीसिपी कम्पनी** (Mississippi Company) **की भी स्थापना की गई जिसे लूजियाना के व्यापार का अधिकार प्रदान कर दिया गया।** कम्पनी ने शीघ्र ही अपनी स्थिति को इतना सुदृढ़ कर लिया कि इसके शेयर मुंह मांगे दामों में बिकने लगे, किन्तु स्थिति यथावत् नहीं रही। रायल बैंक के असीमित कागजी नोटों के उत्पादन से स्थिति भयावह हो गई। कम्पनी का दिवाला निकल गया। शीघ्र ही सम्पूर्ण फ्रांस आर्थिक विनाश के कगार की ओर अग्रसर हो उठा।

इस प्रकार आर्लेआं के ड्यूक का शासन-काल असफलता का शासनकाल था। उसकी गृह-नीति पूर्णतः असफल रही।

असफलता के कारण (Causes of failure)

आर्लेआं के ड्यूक की गृह-नीति की असफलता के निम्नलिखित महत्वपूर्ण कारण थे :

(1) आर्लेआं के ड्यूक ने प्रारम्भ से ही देश की शक्ति के स्थान पर अपनी शक्ति के उत्कर्ष पर विशेष ध्यान दिया। उसने व उसके चापलूस साथियों ने सरकारी धन का अपने हितों में पूर्णतः दुरुपयोग किया।

(2) पार्लियामेण्ट, जो कि उनके इन कारनामों पर अंकुश लगा सकती थी, भी अपनी दुर्बलता के कारण कुछ न कर सकी।

(3) फ्रांस में इसी समय जेसुइटों एवं जेन्सेनिस्टों के मध्य भीषण धर्म संघर्ष आरम्भ हो गया। आर्लेआं के ड्यूक ने जेसुइटों के फ्रांस से निष्कासन की नीति अपनाई। उसकी इस नीति ने फ्रांस की शान्ति-व्यवस्था के लिए संकट उत्पन्न कर दिया।

(4) आर्लेआं के ड्यूक की गृह-नीति की असफलता का प्रमुख कारण सरदारों के ऐसे दल का शक्ति सम्पन्न हो जाना भी था जो कि उसकी नीति का घोर विरोधी था।

(5) ड्यूक ऑफ आर्लेआं ने अपने शासन की असफलता से दुःखी होकर लुई चतुर्दश की निरंकुशता की नीति का पालन करने का प्रयत्न किया, किन्तु 1723 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

कार्डिनल फ्लेरी का संरक्षण काल (1723 ई. से 1743 ई. तक)
(PROTECTION PERIOD OF CARDINAL FLEURY)

ड्यूक ऑफ आर्लेआं की मृत्यु के पश्चात् फ्रांसीसी शासन की वास्तविक सत्ता का संचालन 70-वर्षीय कार्डिनल फ्लेरी (Cardinal Fleury) के हाथों में केन्द्रित हो गया। इतिहासकार हेज के शब्दों में, **"कार्डिनल फ्लेरी प्रकृति से अत्यन्त नम्र एवं मितव्ययी था और उसने अत्यन्त निष्ठा व ईमानदारी के साथ शान्तिपूर्ण विदेश नीति एवं आन्तरिक सुधारों द्वारा फ्रांस की जर्जरित आर्थिक स्थिति को सुधारने का भरसक प्रयत्न किया।"**[1] संक्षेप में, कार्डिनल फ्लेरी की गृह व विदेश नीति का विवरण निम्नवत् है :

गृह-नीति (Home Policy)

कार्डिनल फ्लेरी के सम्मुख सबसे भयावह समस्या फ्रांस की आर्थिक स्थिति थी। अतः उसने आन्तरिक क्षेत्र में अपना पूर्ण ध्यान फ्रांस की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने की ओर केन्द्रित किया। उसने राष्ट्र को प्राप्त सम्पूर्ण उपलब्ध साधनों का प्रयोग करते हुए सरकारी व्यय को कम करने एवं फ्रांस से व्यापार एवं उद्योग-धन्धों के विकास के लिए भरसक प्रयत्न किया। सरकार बजट को सन्तुलित एवं नियन्त्रित किया गया। सड़कों का निर्माण किया गया, किन्तु कार्डिनल फ्लेरी को असफलताओं का ही सामना करनां पड़ा। इसका सबसे प्रधान कारण यह था कि वह स्वयं इतना अधिक वृद्ध हो चुका था कि उसमें प्रतिकूल स्थिति का सामना करने की शक्ति नहीं रह गई थी। हेज के शब्दों में, **"वह कोई भी मूलभूत आन्तरिक सुधार न कर सका और उसने सड़कों के निर्माण में कृषकों से बेगार लेकर उन्हें अत्यन्त रुष्ट कर दिया।"**[2] इस प्रकार उसकी आन्तरिक नीति असफल रही।

---

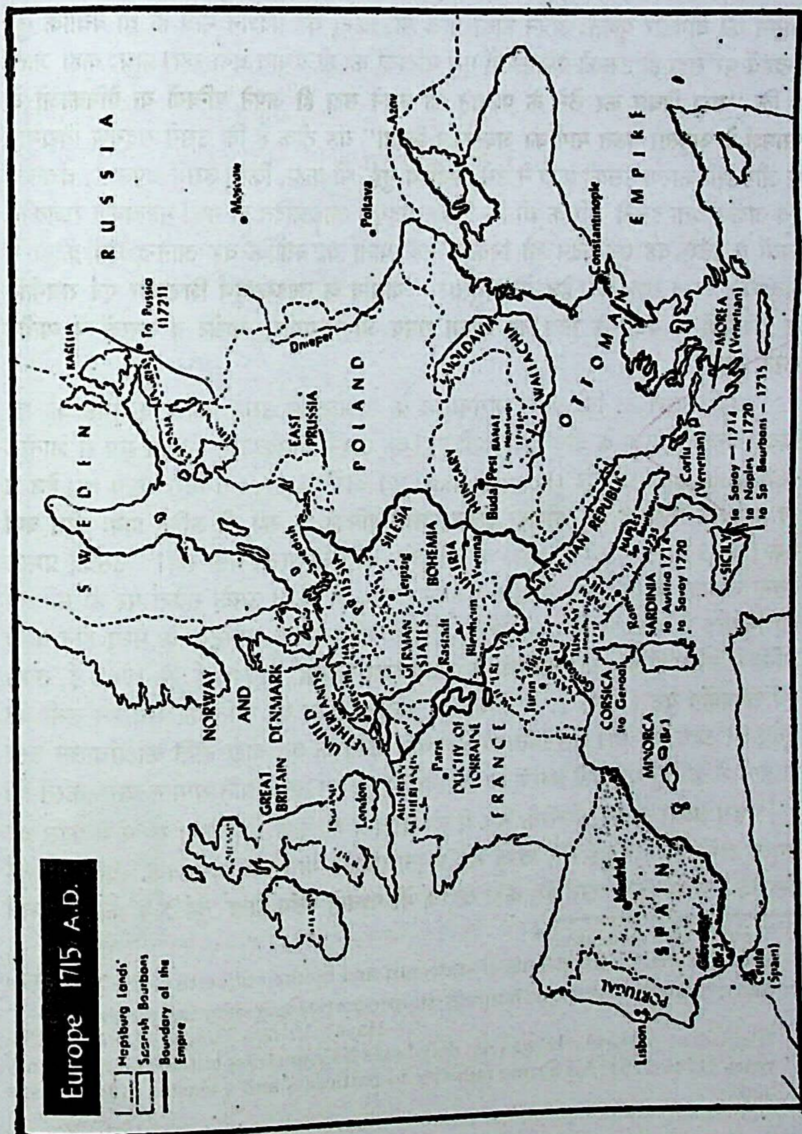
1 **"Cardinal Fleury was naturally modest and frugal, and he was sincerely anxious to assure to France a foreign peace and an internal reform which would repair the Financial damage by Louis XIV and Orleans."**

—Hayes, *Modern Europe to* 1870, p. 277.

2 **"He effected no fundamental internal reform, and by exacing forced labour from the Peasants for the construction of a fine system of commercially valuable roads he aroused angry discontent."**

विदेश नीति (Foreign Policy)

हेज के शब्दों में, "**विदेश नीति के क्षेत्र में अपनी शान्तिपूर्ण आन्तरिक इच्छा की अभिलाषा होते हुए भी वह अन्ततः बूर्बा राजवंश की महत्वाकांक्षी नीति का शिकार हुआ।**[1] फलस्वरूप उसे पोलैण्ड के उत्तराधिकार के युद्ध (1733 ई. से1738 ई.) में सक्रिय भाग लेना पड़ा। यह युद्ध 1733 ई. की वियना की सन्धि से समाप्त हुआ। इस सन्धि से फ्रांस को महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त



1 "In foreign affairs, despite his personal eagerness for peace, he found himself a victim of Bourbon Dynastic ambition."

हुए, उसके प्रत्याशी स्टेनिसलॉस को आजीवन लॉरेन की डची प्राप्त हो गई। उसकी मृत्यु के पश्चात् डची पर लुई XV के अधिकार को आस्ट्रिया ने अपनी मान्यता दे दी।

लुई पन्द्रहवें का व्यक्तिगत शासन (1743 ई. से 1774 ई. तक)
(PERSONAL RULE OF THE LOUIS XV)

कार्डिनल फ्लेरी की मृत्यु के पश्चात् 33 वर्ष की आयु में लुई XV ने 1743 ई. में शासन की बागडोर पूर्णतः अपने हाथों में ले ली, किन्तु यह प्रदर्शन मात्र ही था क्योंकि लुई पन्द्रहवें पर सदा ही उसकी प्रेमिकाओं एवं मन्त्रियों का ही प्रभाव बना रहा। प्रायः कहा जाता है कि **"सत्य विचार कर लेने के पश्चात् भी उसने सदा ही अपने मन्त्रियों या प्रेमिकाओं के परामर्श के अनुसार गलत मार्ग का अवलम्बन किया।"** यह ठीक है कि उसमें सद्गुण विद्यमान थे और इसी कारण उसकी प्रजा ने उसे **'सर्वप्रिय लुई'**[1] भी कहा, किन्तु उसमें चपलता, चंचलता एवं अकर्मण्यता इतनी अधिक थी कि उसके सद्गुण आच्छादित हो गए। महत्वपूर्ण राजकीय कार्यों के लिए वह एक दिन भी निकाल नहीं पाता था क्योंकि वह आनन्द एवं क्रीड़ा में अत्यधिक व्यस्त रहता था। **हेज** के अनुसार, **"वार्साय के आडम्बरपूर्ण शिष्टाचार एवं राजनीति के दांव-पेंचों से बचने के लिए वह अपना समय आमोद-प्रमोद, आखेट व उत्सवों में व्यतीत करता था।"**[2]

यही कारण था कि अपने शासनकाल के उत्तरार्द्ध में उसने जनता के स्नेह को खो दिया। जनता व राजा के बीच दूरी बढ़ती गई। वह अपनी प्रेमिकाओं—विशेष रूप से शातोरु (Chateauroux), पोंपादूर (Pompandour) एवं बारी (Barry) से घिरा रहता था। **हेज ने तो यहां तक लिखा है कि 'पोंपादूर केवल उसकी प्रेमिका ही नहीं थी अपितु प्रायः बीस वर्षों तक** (1745 ई. से 1764 ई. तक) वह ही फ्रांस की प्रधानमन्त्री बनी रही।'[3] उसका प्रभाव इतना व्यापक था कि राज्य में राजा एकदम नगण्य हो गया। उसके संकेत पर ही मन्त्रियों की नियुक्ति व पदच्युति निर्भर हो गई। 1756 ई. की फ्रांस व आस्ट्रिया के मध्य होने वाली सन्धि में उसका ही हाथ था। **आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध**[4] (1740 ई. से 1768 ई. तक) **एवं सप्तवर्षीय युद्ध** (1756 ई. से 1763 ई. तक) में फ्रांस की नीति का संचालन उसी की बुद्धि पर आधारित था। कुल मिलाकर देश की आन्तरिक एवं बाह्य नीति का संचालन उसी के हाथ में केन्द्रित था। यही कारण था कि विदेशी राजदूत उसके प्रति सम्मान व्यक्त करते थे।

इस प्रकार फ्रांस आन्तरिक रूप से तो खोखला हो चुका था, किन्तु यूरोप में फ्रांस की प्रभुता अभी भी छाई हुई थी, किन्तु यह प्रभुता प्रदर्शन मात्र थी। वास्तविक स्थिति को लुई पन्द्रहवें ने भी स्वीकार करते हुए कहा था कि **मेरे पश्चात् प्रलय होगा**[5] लुई XV का वह कथन

---

1 **"Louis, the well beloved."**

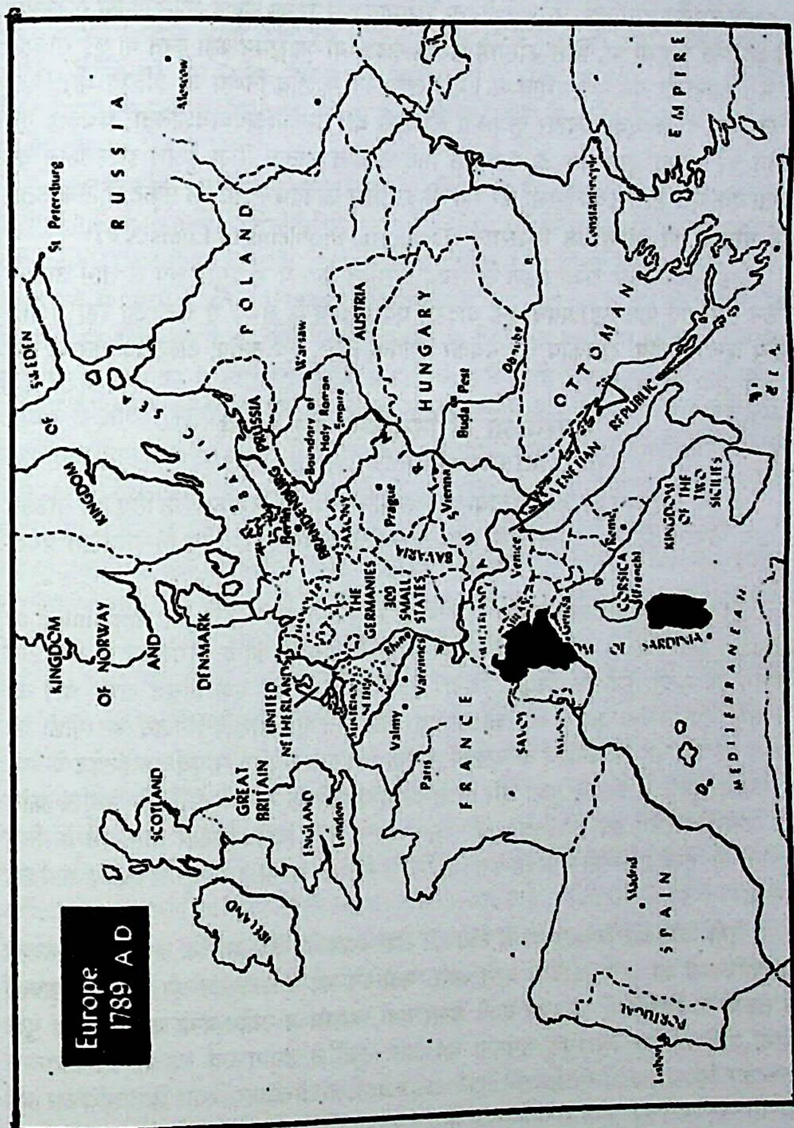
2 **"Easily bored by the details of statecraft and by the etiquette of the Versailles court, he sought escape in hunting, supper-parties and spicy indiscretions."**
—Hayes, *Modern Europe of* 1870, p. 281.

3 **"Pmpadour particularly, was not only Louis XV's mistress but for almost twenty years (1745-1764) his Prime minister in patticoats and a sinster influence she had."**
—*Ibid.*, p. 281.

4 विस्तृत विवरण देखिए—**आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध एवं सप्तवर्षीय युद्ध**, अध्याय 10.

5 **"After me, the deluge."**

नितान्त सत्य सिद्ध हुआ और लुई सोलहवें के शासनकाल में तो क्रान्ति के द्वार तक फ्रांस ही पहुंच गया।



लुई सोलहवां (1774 ई. से 1793 ई. तक)
(LOUIS XVI)

1774 ई. में लुई पन्द्रहवें की मृत्यु के पश्चात् उसका बीस वर्षीय पौत्र लुई सोलहवां फ्रांस का शासक बना। उसने 1793 ई. तक फ्रांस पर शासन किया। लुई सोलहवां सदाचारी

व सहृदय व्यक्ति अवश्य था, किन्तु उसमें संकल्प-शक्ति का नितान्त अभाव था। प्रशासन संचालन में वह अक्षम था। शिकार के प्रति उसकी अभिरुचि थी। शिक्षा भी यथोचित न होने के कारण उसमें प्रशासनिक अनुभव हीनता विद्यमान थी। **उसका विवाह आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी आन्तनेत से हुआ था, जिसे फ्रांसीसी विदेशी महिला या आस्ट्रियन कहा करते थे।** लुई सोलहवें पर मेरी आन्तनेत का पूर्ण प्रभाव था। मेरी आन्तनेत में शीघ्र निर्णय की प्रतिभा थी, किन्तु उचित न्याय-शक्ति एवं व्यवहार कुशलता की कमी थी। उसकी अपव्ययशीलता, चंचलता एवं शासन पर प्रभुत्व बूर्बां वंश के पतन के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ। इधर फ्रांस की जनता एक ऐसे शासक की आशा कर रही थी जो फ्रांस को विषम आर्थिक संकट से निकालता।

लुई षोडश की आन्तरिक समस्याएं (Domestic Problems of Louis XVI)

लुई सोलहवें को राज्यारोहण के समय विरासत के रूप में प्रमुख रूप से तीन अत्यन्त कठिन समस्याएं प्राप्त हुईं। **प्रथम**, लुई चौदहवें एवं पन्द्रहवें के समय से चला आ रहा भयंकर राष्ट्रींय ऋण। **द्वितीय**, राजकोष का भयंकर वार्षिक घाटा, एवं **तृतीय**, अत्यधिक कर के भार से दबी फ्रांस की जनता।

समस्याओं के निराकरण हेतु प्रयत्न
(EFFORTS TO FACE THE PROBLEMS)

अपनी समस्याएं जो कि अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित थीं, के निराकरण के लिए लुई सोलहवें ने अर्थ विभाग की ओर ध्यान दिया तथा समस्याओं के निराकरण हेतु निम्नलिखित प्रयत्न किये :

(1) **तूर्जो को अर्थमन्त्री बनाना** (1774 ई. से 1776 तक) (Turgot Appointed as Finance Minister)—लुई सोलहवें ने अपनी आर्थिक समस्याओं के निराकरण के लिए अर्थ विभाग का मन्त्री तूर्जो को नियुक्त किया। तूर्जो अर्थशास्त्र का एक अच्छा ज्ञाता था। वह अनुभवी एवं अत्यन्त कुशल था। वह वाल्टेयर का मित्र एवं प्रसिद्ध फिजियोक्रेट गोष्ठी का सदस्य भी था। वह विश्व कोष के लेखकों में एक था। इस नियुक्ति से पूर्व वह इंटडेंट के रूप में सफलतापूर्वक कार्य कर चुका था। निःसन्देह अर्थमन्त्री के रूप में तूर्जो की नियुक्ति फ्रांस की जनता के लिए हर्ष का विषय थी, किन्तु दूसरी ओर विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के लिए चुनौती थी। तूर्जो फ्रांस की भयावह आर्थिक स्थिति से भिज्ञ था ही उसने तुरन्त राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाया।

तूर्जो फ्रांस की अर्थव्यवस्था के ढांचे को ठीक करने के लिए आर्थिक क्षेत्र में सामन्तवादी विशेषाधिकारों का अन्त, करों में भारी कमी, यथोचित रूप में यथानुरूप कर निर्धारण, कृषकों से सड़कों के निर्माण में ली जाने वाली बेगार प्रथा, व्यापार व उद्योग-धन्धों का नियन्त्रण मुक्त करना आदि अत्यन्त आवश्यक समझता था। अतः तूर्जो ने उद्योग एवं व्यापार को नियन्त्रण मुक्त कर दिया। कृषकों से ली जाने वाली बेगार प्रथा का अन्त कर दिया। विशेषाधिकार वर्ग पर भी कर लगाकर सामान्य जनता के करों को कम किया। खाद्य पदार्थों से कर हटा दिए। राजकीय पेंशनों, उपहारों एवं सरकारी खर्च पर कटौती कर दी गई। विभिन्न विभागों पर आर्थिक नियन्त्रण स्थापित कर दिया गया। कृषि उत्पादन को प्रोत्साहित किया गया, उसके इन सुधारों से फ्रांस को एक करोड़ दस लाख फ्रैंक की वार्षिक बचत होने लगी, जबकि अब तक दो लाख फ्रैंक वार्षिक घाटा हो रहा था, किन्तु तूर्जो के इन आर्थिक सुधारों को प्रारम्भ में पार्लमां ने पंजीकृत करने से इन्कार कर दिया, किन्तु लुई सोलहवें की दृढ़ता के कारण

उसे पंजीबद्ध करना पड़ा, किन्तु विशेषाधिकार प्राप्त सामन्त व पुरोहित वर्ग तूर्जो की सुधार योजना से सन्तुष्ट न था। अतः उन्होंने **मेरी आन्तनेत का दबाव डलवाकर 1776 ई. में तूर्जो को उसके पद से अपदस्थ करवा दिया। इस प्रकार लुई सोलहवें ने तूर्जो को अपदस्थ कर फ्रांस की आर्थिक स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया।** तूर्जो निःसन्देह भयावह आर्थिक स्थिति से देश को बचा सकता था, किन्तु लुई सोलहवां अपनी पत्नी मेरी आन्तनेत के आग्रह के विरुद्ध न जा सका।

(2) **नेकर को अर्थमन्त्री बनाना** (1776 ई. से 1781 ई. तक) (Necker appointed as Finance Minister)—तूर्जो के पश्चात् लुई सोलहवें ने नेकर को अर्थमन्त्री का महत्वपूर्ण पद प्रदान किया। नेकर ने तूर्जो के उपायों का अवलम्बन तो किया, किन्तु उसने अत्यन्त सावधानी से कदम उठाते हुए राजकीय अवयवों को नियन्त्रित कर दिया। **वह क्योंकि एक कुशल बैंकर और व्यापारी था, अतः उसने कर संग्रह के लिए एक व्यवस्थित नीति को अपनाया।** इसी समय अमरीका के स्वतन्त्रता संग्राम में फ्रांस ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध अमरीकावासियों की अधिक-से-अधिक आर्थिक व सैनिक सहायता आरम्भ कर दी। अतः नेकर ने बैंकरों से राजकीय ऋण लिया। यह ऋण 40 करोड़ फ्रैंक था। अब उसने राष्ट्रीय व्यय में कटौती की तथा कर-संग्रह में सुधार किया। राष्ट्रीय आय-व्यय का लेखा-जोखा छपवाकर जनता के सामने स्पष्ट कर दिया गया। इस रिपोर्ट से फ्रांस की जनता राजकोष के गुप्त भेदों से भिज्ञ हो गई। इधर नेकर घाटे को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील था तो उधर मेरी आन्तनेत आभूषणों के क्रय एवं उपहारों का वितरण खुले हाथों से कर रही थी। सामन्त वर्ग एवं चापलूस दरबारी आय-व्यय के प्रकाशन से नेकर से अत्यन्त रुष्ट थे क्योंकि इससे सामान्य जनता के सम्मुख उनकी स्थिति स्पष्ट हो गई थी। अतः उन्होंने मेरी आन्तनेत पर दबाव डालकर नेकर को उसके पद से हटवा दिया।

(3) **केलोन को अर्थमन्त्री बनाना** (1783 ई. से 1787 ई. तक) (Kelone appointed as Finance Minister)—नेकर को जिस समय उसके पद से हटाया गया उस समय फ्रांस अमरीका के स्वतन्त्रता संघर्ष में उलझा हुआ था। अतः फ्रांस का आर्थिक संकट और अधिक गहरा गया। सर्वत्र एक ही प्रश्न था कि आय एवं व्यय को कैसे नियन्त्रित किया जाए ? इस स्थिति में भी व्यवस्था नियन्त्रित हो सकती थी, किन्तु विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग अपने आर्थिक अधिकारों को त्यागने के लिए तैयार न था। एक के बाद एक अर्थमन्त्री बदलते गए। 1783 ई. में लुई ने केलोन को अर्थमन्त्री बनाया। **केलोन उच्च वर्ग से सम्बन्धित था। अतः उसने सामन्ती उच्च वर्ग के लोगों के सन्तुष्टीकरण की नीति अपनाई।** उसने झूठी शान के लिए आवरण डालने की नीति का पालन किया। अमरीका के स्वतन्त्रता संघर्ष के पश्चात् उसने अमरीका के उपनिवेशों व इंग्लैण्ड के साथ व्यापारिक सन्धियां भी कीं। उसने राजकीय व्यय की पूर्ति के लिए अधिकाधिक ऋण लेने की नीति अपनाई। चार वर्षों में उसने लगभग 60 करोड़ डालर का ऋण ले लिया। स्थिति यहां तक आ पहुंची कि ऋण मिलना बन्द हो गया। अतः अब केलोन ने तूर्जो व नेकर की भांति कर संग्रह की नीति का अवलम्बन लिया। इस स्थिति में भी उसे उच्च वर्ग के विरोध के कारण त्याग-पत्र देना पड़ा।

(4) **लुई सोलहवें के अन्तिम प्रयास व क्रान्ति का आरम्भ** (Last Efforts of Louis XVI and the Revolution Breaks Out)—नेकर की पदच्युति समस्या का निदान न था। अतः लुई ने 1787 ई. में सामन्त, पुरोहित एवं न्यायाधीशों की प्रमुखों की सभा को

समस्या के निदान हेतु बुलाया। प्रमुखों की सभा उच्च वर्ग के अधिकारों के परित्याग के लिए तैयार न थी। **सभा ने 'स्टेट्स जनरल' के अधिवेशन बुलाने पर अधिक बल दिया और यह दलील दी कि किसी भी प्रकार का वित्तीय परिवर्तन स्टेट्स जनरल की अनुमति से ही होगा।** इस पर लुई ने सभा को विसर्जित कर सभी वर्गों पर नए कर लगाने की घोषणा की, किन्तु पेरिस की पार्लमां ने उसकी इस घोषणा का विरोध किया। लुई ने पार्लमां को बर्खास्त कर दिया, किन्तु इस पर फ्रांस की जनता का आक्रोश उमड़ पड़ा। सर्वत्र स्टेट्स जनरल के अधिवेशन की मांग होने लगी। **अन्ततः लुई ने निराश होकर नेकर को पुनः अर्थमन्त्री नियुक्त किया और स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया।** 175 वर्षों के पश्चात् 1789 ई. में **स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाना निःसन्देह दैवी अधिकारों की प्रथम पराजय थी।**

1789 ई. में **सार्वजनिक चुनाव के पश्चात् स्टेट्स जनरल का अधिवेशन आरम्भ हुआ। स्टेट्स जनरल के तीन सदन थे।** प्रथम सदन पादरी वर्ग का था। **द्वितीय** सदन सामन्त वर्ग का था। **तृतीय** सदन साधारण जनता का था। नवं-निर्वाचित संसद की समस्या यह थी कि तीनों सदन मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र की संस्था है। अतः प्रत्येक कार्यवाही संयुक्त रूप से हो। प्रथम व द्वितीय वर्ग ने इसका तीव्र विरोध किया। इस पर तृतीय सदन ने प्रथम व द्वितीय सदनों को संयुक्त वार्ता के लिए आमन्त्रित किया और दोनों सदनों के न आने पर 17 जून, 1789 ई. को स्टेट्स जनरल की राष्ट्र सभा (National Assembly) घोषित कर दिया तथा स्वयं को राष्ट्र का वास्तविक प्रतिनिधि भी घोषित किया। लुई सोलहवें ने घबराकर तृतीय सदन में ताला डलवा दिया। इस पर 30 जून, 1789 ई. को एवेसिये एवं मिराब्यू के नेतृत्व में जनता के प्रतिनिधियों ने 'टेनिस कोर्ट' में एकत्रित होकर यह शपथ ली कि जब तक वे सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए संविधान नहीं बना लेंगे, घर नहीं जाएंगे। **निःसन्देह यह क्रान्ति का आरम्भ था।**

1789 ई. की क्रान्ति से पूर्व फ्रांस
(FRANCE ON THE EVE OF THE REVOLUTION OF 1789)

मध्ययुगीन यूरोप के अधिकांश देशों में **सामन्तीय व्यवस्था** (Feudal system) विद्यमान थी। फ्रांस भी इन्हीं देशों में से एक था। आधुनिक युग का प्रारम्भ होने के साथ ही सामन्तीय व्यवस्था ओझिल होने लगी तथा उसका स्थान शक्तिशाली राजवंशों के शासन ने लेना प्रारम्भ कर दिया। फ्रांस में हेनरी IV (1589 ई. से 1610 ई. तक) एक शक्तिशाली शासक हुआ। उसने एक नवीन राजवंश की स्थापना की जिसे **बूर्बों वंश** (Bourbon Dynasty) कहा जाता है। फ्रांस का बूर्बां वंश एक शक्तिशाली राजवंश प्रमाणित हुआ, जिसने फ्रांस में लगातार दो शताब्दियों तक कुशलतापूर्वक शासन किया।

हेनरी के पश्चात् उसका पुत्र लुई XIII (1610 ई. से 1643 ई. तक) फ्रांस की राजगद्दी पर आसीन हुआ। उसने अपने योग्य मन्त्री **रिशलू** (Richelieu) की सहायता से फ्रांस को यूरोप की प्रमुख शक्तियों में से एक वनाने का यथासम्भव प्रयास किया। लुई XIII ने फ्रांस में सम्पूर्ण अधिकारों को अपने हाथों में लेने का प्रयास किया था, निरंकुशतापूर्वक शासन किया। लुई XIII का उत्तराधिकारी लुई XIV (1643 ई. से 1715 ई. तक) था जो अत्यन्त शक्तिशाली शासक प्रमाणित हुआ। वह **राजा के दैवीय अधिकारों** (Divine rights of the king) में विश्वास रखने वाला व्यक्ति था। उसने अपनी शक्ति के द्वारा यूरोप में फ्रांस को उच्च स्थान प्रदान कराया, यद्यपि ऐसा करने के लिए उसे अनेक युद्ध लड़ने पड़े।

लुई XIV अत्यन्त निरंकुश शासक था। उसका कहना था, **'मैं ही राज्य हूं'**[1] लुई XIV के युद्धों ने यद्यपि फ्रांस को यूरोप में सम्मान प्रदान किया, किन्तु उसकी इस नीति से फ्रांस को अत्यधिक आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा, जिससे फ्रांस की अर्थव्यवस्था लड़खड़ाने लगी। लुई XIV के पश्चात् फ्रांस का शासक लुई XV बना। लुई XV जब गद्दी पर बैठा तब वह मात्र पांच वर्ष का था, अत: उसने पहले तो अपने चाचा के संरक्षण में 1715 ई. से 1723 ई. तक तथा बाद में कार्डिनेल फ्लेरी के संरक्षण में 1723 ई. से 1743 तक शासन किया। 1743 ई. तक शासन किया। 1743 ई. से 1774 ई. तक लुई XV ने स्वयं शासन किया। यह फ्रांस का दुर्भाग्य था कि लुई XV ने वहां इतने लम्बे समय तक शासन किया, क्योंकि वह एक अयोग्य शासक था। उसने अपना सम्पूर्ण जीवन विलासिता में ही व्यतीत किया। लुई XV के शासन-काल में ही वास्तविक अर्थों में फ्रांस में क्रान्ति के बीज बो दिए गए थे जो कुछ वर्षों के पश्चात् 1789 ई. में अंकुरित हुए। उसकी अकुशल नीतियों व गंभीर आर्थिक स्थिति के कारण उसके उत्तराधिकारी लुई XVI (1774 ई. से 1793 ई. तक) को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ा।

इस प्रकार फ्रांस की क्रान्ति के समय वहां का शासक लुई XVI था।

अध्ययन की सुविधा के लिए क्रान्ति से पूर्व फ्रांस को निम्नलिखित शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है—(1) राजनीतिक स्थिति, (2) आर्थिक स्थिति, (3) सामाजिकस्थिति, (4) धार्मिक स्थिति, व (5) बौद्धिक क्रान्ति।

राजनीतिक स्थिति
(POLITICAL CONDITION)

1789 ई. **से पूर्व फ्रांस में जो शासन-व्यवस्था थी, उसे पुरातन-व्यवस्था** (Old Regime) **कहा जाता है। पुरातन-व्यवस्था की प्रमुख विशेषता उसमें व्याप्त अनियमितताएं थीं,** इसी कारण उसके लिए **'अपव्ययी अराजकता'** (A prodigal anarchy), तथा **'शक्तियों का कचरा'** (Debris of Powers), आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। पुरातन-व्यवस्था के अन्तर्गत समाज अनेक वर्गों में विभक्त था। **उच्च वर्ग को अनेक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिससे निम्न वर्ग को अनेक अतिरिक्त कष्टों का सामना करना पड़ता था।** तत्कालीन राजनीतिक स्थिति निम्नवत् थी :

(1) **राजा के अधिकार** (Rights of the King)—फ्रांस में क्रान्ति से पूर्व निरंकुश राजतन्त्र था, जिसका सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था। राजा, राज्य का उच्च तथा देदीप्यमान प्रमुख और राष्ट्र की शक्ति, प्रतिष्ठा तथा वैभव का प्रतीक होता था। राजा, **दैवीय अधिकारों** (Devine rights) में विश्वास करने के कारण, स्वयं को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था के प्रति उत्तरदायी नहीं मानता था तथा निरंकुशतापूर्वक शासन करना चाहता था, जैसा कि लुई XVI के कथन, **''चूंकि मैं चाहता हूं, इसलिए यह कानूनी है''** से स्पष्ट है। राजा ही कानून बनाता, वही कर लगाता, खर्च भी अपनी इच्छानुसार करता, युद्ध की घोषणा करता तथा अपनी स्वेच्छा से ही अन्य राष्ट्रों के साथ सन्धि करता। राजा किसी भी व्यक्ति को बिना अभियोग बताए बन्दी बना सकता था। यद्यपि **स्टेट्स जनरल तथा पार्लमां** (States General and the Parlement) राजा की शक्तियों पर अंकुश लगाने वाली दो संस्थाएं थीं, किन्तु स्टेट्स जनरल नियमित संस्था नहीं थी तथा राजा की इच्छा पर ही उसका अधिवेशन बुलाया

1 I am the State.

जाता था। **स्टेट्स जनरल का अधिवेशन 1614 ई. के बाद से क्रान्ति तक एक बार भी नहीं बुलाया गया था।** फ्रांस में क्रान्ति के समय जब इसका अधिवेशन आमन्त्रित करने का प्रयास किया गया तो फ्रांस में उस समय किसी को इसके संगठन व चुनाव-व्यवस्था की जानकारी न थी। अनेक कठिनाइयों के उपरान्त स्टेट्स जनरल के चुनाव कराए गए। अतः इससे स्टेट्स जनरल की महत्वहीनता स्वतः ही प्रमाणित हो जाती है। फ्रांस में दूसरी संस्था **पार्लमां** थी, जो प्रतिनिधि संस्था न होकर एक उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) के समान थी। फ्रांस में कुल मिलाकर 13 पार्लमां थीं, जिनमें सबसे शक्तिशाली पेरिस की पार्लमां थी। पार्लमां का प्रमुख कार्य, न्याय करने के अतिरिक्त राजा के आदेशों का पंजीकरण करना था। लुई XVI के शासनकाल में पार्लमां की शक्तियों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई तथा वह राजा का प्रतिरोध भी समय-समय पर करने लगी। स्टेट्स के अस्तित्वहीन होने के कारण पार्लमां ही राजा और जनसाधारण के बीच एक माध्यम थी। अतः पार्लमां का विशेष महत्व था।

(2) **राजा की विलासिता** (Lustiness of the Kings)—फ्रांस के बूर्बांवंशीय शासक अत्यन्त शान-शौकत से रहते थे तथा अत्यन्त विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। फ्रांस की राजधानी पेरिस थी, किन्तु राजा वार्साय (Versailles) में रहते थे, जो पेरिस से 12 मील की दूरी पर स्थित था। वार्साय में उनका आलीशान महल बना हुआ था, जिसे लुई XIV ने करोड़ों डालर खर्च करके बनवाया था। उस महल में सैकड़ों कमरे, गिरजाघर, नाट्यशाला, भोजन कक्ष, सत्कार-गृह, अगणित अतिथि-भवन तथा नौकरों के रहने के लिए सैकड़ों कमरे बने हुए थे। इस महल में हीं अनेक उद्यान, मूर्तियां, फब्बारे तथा कृत्रिम सरोवर बने हुए थे। राजा व राज-परिवार के लोग आमोद-प्रमोद में विलीन रहते थे। **हेजन** ने लिखा है कि **इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि इन प्रासादों के निवासी अपने को सच्चे अर्थों में 'देवानां-प्रिय' समझते थे, क्योंकि पृथ्वी पर उससे अधिक विलासिता और तड़क-भड़क कहीं अन्यत्र देखने को नहीं मिल सकती थी।**[1]

(3) **राजा की अपव्ययता** (Extravagency of Kings)—राजाओं के खर्चे भी असीमित थे। राजा तथा रानी दोनों ही कृपापात्रों एवं सेवकों को खुले हाथों से धन लुटाते थे तथा उच्च पद व पेंशन देकर राजकीय धन का अपव्यय करते थे। राजा तथा रानी के सेवक-सेविकाओं की संख्या ही 500 थी। रानी की नौकरानियों को दीपक बेचने का विशेष अधिकार था। ये दीपक केवल एक बार जलाए जाते थे लेकिन उनसे प्रत्येक बेचने वाली को डेढ़ लाख का लाभ हो जाता था। कहा जाता है कि लुई XIV ने 1789 ई. से पूर्व के 15 वर्षों में तीस करोड़ रुपए इसी प्रकार के कार्यों में खर्च किए थे। इसी कारण **हेजन** ने लिखा है, **"राजा की छत्र-छाया में फलने-फूलने वालों के लिए निःसन्देह यह एक स्वर्ण युग था।"** रानी आन्तनेत भी अत्यधिक अपव्ययी थी। कीमती चीजें खरीदने का उसे शौक था। प्रति सप्ताह वह चार जोड़ी जूते खरीदती थी। राज परिवार के लोगों द्वारा निरन्तर इसी प्रकार से अपव्यय करने का राजकोष पर गम्भीर प्रभाव होता था। इसी कारण फ्रांस में लोग राज दरबार को **'राष्ट्र की कब्र'** (Grave of the Nation) कहते थे।

(4) **अक्षम प्रशासनिक व्यवस्था** (Inefficient Administration)—फ्रांस की सरकार की स्थिति अत्यन्त खराब थी। फ्रांस की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यधिक दोषपूर्ण तथा अक्षम थी। प्रशासन में योजना व व्यवस्था का पूर्णतया अभाव था। विभागों में कार्यों का वितरण भी

1 *Op. cit.*, p. 67.

तर्कसंगत न था। अनेक ऐसे कार्य थे, जिनकी जिम्मेदारी कई विभागों में विभक्त थी, जिससे कोई भी विभाग उस कार्य को नहीं करता था। राजा को परामर्श देने के लिए पांच समितियां थीं, जो कानून बनाने, आदेश जारी करने तथा अन्य घरेलू व विदेशी कार्यों को भी करती थीं। प्रशासन की दृष्टि से फ्रांस 36 भागों में विभक्त था, जिन्हें **जिनेरालिते** (Generalities) कहा जाता था। प्रत्येक जिनेरालिते का अध्यक्ष **ऐतादां** (Intendant) कहलाता था। ऐतादां, साधारणतया मध्यम वर्ग का होता था। इनकी नियुक्ति स्वयं राजा के द्वारा ही की जाती थी। इनका काम राजधानी के आदेशों का पालन करना तथा अपने काम की आख्या राजधानी को भेजना था। ये ऐतादां, वास्तव में उस कुशासन को चलाने के साधन थे, जिनकी वास्तविक शक्ति पूर्वोक्त पांच समितियों के हाथों में थी। अतः ये भी निरंकुश रूप से ही प्रशासन करते थे।

फ्रांस में **स्थानीय स्वराज्य संस्थाएं** (Local self government institutions)—नहीं थीं। स्थानीय प्रशासन की नीतियां भी वार्साय से ही नियन्त्रित होती थीं। हेजन ने लिखा है कि वास्तविक अर्थ में राज्य भर में **लालफीताशाही** (Red tapism) का ही बोलबाला था। इस राक्षसी व्यवस्था के अन्तर्गत साधारण जनता की स्थिति मूक तथा असहाय पशुओं के समान थी, जो न तो बोल सकती थी और न ही कुछ कर सकती थी, जिधर को हांक दी जाती उधर ही चली जाती। उस समय फ्रांस में कोई ऐसी संस्था न थी जो जनता को राजनीतिक शिक्षा देती। सरकारी पदों पर नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं होती थी। उच्च वर्ग इन पदों को खरीद लेते थे तथा इस प्रकार अपनी आय व सम्मान को बढ़ाते थे। इन पदों के खरीदने व बेचने से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता था।

फ्रांस में ही अलग-अलग स्थानों के लिए अलग-अलग क़ानून थे। फ्रांस में तेरह प्रान्तों में व्यापार पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था, किन्तु अन्य प्रान्त एक-दूसरे से इस प्रकार पृथक् थे जैसे अलग-अलग देश होते हैं। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को माल भेजने पर कर देना पड़ता था।

फ्रांस में न्याय-व्यवस्था भी अत्यन्त पेचीदा व दोषपूर्ण थी। फ्रांस में लगभग 400 प्रकार के न्याय विभाग थे। **एक कार्य जो कस्बे में उचित माना जाता था, दूसरे में गैर-कानूनी माना जाता था।** लिखित कानूनों की भी अधिकांश स्थानों पर व्यवस्था नहीं थी, कानून परम्परावादी तथा सामन्तीय भावनाओं से ओत-प्रोत थे? एक ही अपराध के लिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों में अलग-अलग दण्ड का प्रावधान था। न्याय-व्यवस्था के उपरोक्त दोषों के अतिरिक्त सर्वाधिक दोषपूर्ण गैर-कानूनी गिरफ्तारियों तथा प्रतिबन्धों का प्रचलन था। राजा बिना किसी पूर्व सूचना के किसी भी व्यक्ति को बन्दी बनवा सकता था। राजा ही नहीं वरन् उसका कोई भी कृपापात्र **'लेत्रे दे शाशे'** (Letter de chachet) की सहायता से किसी को भी गिरफ्तार कर सकता था। यदि उस व्यक्ति का कोई प्रभावशाली व्यक्ति परिचित न हो तो सम्भवतः उसकी मृत्यु के समय तक भी उस केस को अदालत में प्रस्तुत नहीं किया जाता था। **वाल्टेयर तथा मिराब्यू को भी इसी कुप्रणाली के द्वारा कुछ समय के लिए बन्दी बनाया गया था। फ्रांस का मध्य वर्ग इस कुप्रणाली का घोर विरोधी था।**[1]

फ्रांस के शासक इस प्रशासनिक व्यवस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन करना नहीं चाहते थे। राजा विलासिता में ही लिप्त रहते थे। राज्य की समस्याओं की ओर ध्यान देने का

1 **"The worst terror in this legal jungle was the arbitrary power of the king and his ministers, who could imprison any citizen without warning, without trial, and without appeal."** **—Ferguson & Bruun, *op. cit.*, p. 565.**

उनके पास समय ही नहीं था। **लुई XV के शासनकाल में जब उनके कुछ योग्य परामर्शदाताओं ने उसे सुझाव दिया कि फ्रांस में सुधार किए जाने की अत्यधिक आवश्यकता है तो विलासी लुई XV ने सुधार करने के स्थान पर जवाब दिया कि वर्तमान व्यवस्था में भी उसका समय तो कट ही जाएगा।**[1] अतः स्पष्ट है कि फ्रांस के राजा अदूरदर्शी, विलासी एवं योग्य न थे। ऐसे शासकों के अधीन अक्षम व कार्यकुशलहीन प्रशासनिक-व्यवस्था का होना स्वाभाविक ही था।

आर्थिक स्थिति
(ECONOMIC CONDITION)

तत्कालीन आर्थिक स्थिति को हम निम्न तथ्यों से जान सकते हैं :

(1) **शोचनीय आर्थिक स्थिति** (Deteriorating Economic Condition)—**बूर्बों वंश के अधीन फ्रांस में 'करदाताओं की इच्छा पर आधारित कर व्यवस्था के सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं हुआ था। वित्त-प्रशासन भी न्याय प्रणाली व सरकार के अन्य विभागों के प्रशासनों के समान स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश था।**[2] फ्रांस की सरकार की योजना रहित आर्थिक नीति ने फ्रांस को आर्थिक रूप से खोखला कर दिया था। फर्गूसन व ब्रून[3] ने लिखा है कि लुई XV का भी यह दुर्भाग्य था कि उसे वैदेशिक नीति में भी सफलता नहीं मिली। यदि वैदेशिक युद्धों में ही उसे सफलता मिली होती तो सम्भवतः फ्रांस की जनता ने सन्तोष कर लिया होता। फ्रांस की जनता जानती थी कि उनका देश यूरोप के प्रमुख, धनी उर्वरक राज्यों में से एक है, किन्तु फिर भी आश्चर्य की बात है कि राष्ट्रीय कर में निरन्तर वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय आय का लगभग 50% भाग राष्ट्रीय ऋण की ब्याज देने में ही चुक जाता था। राज्य की कुल आय से खर्चा सदैव अधिक होने से पुनः सरकार को ऋण लेने के लिए विवश होना पड़ता था। **हेजन** ने लिखा है कि **राजकीय वित्त-नीति सामान्यतया उस सिद्धान्त पर चलती है कि खर्च आमदनी के अनुरूप हो, किन्तु फ्रांसीसी सरकार का सिद्धान्त उल्टा था। वह व्यय के अनुरूप आय को निश्चित करती थी।**[4] अतः ऋण का निरन्तर बढ़ना स्वाभाविक ही था।

(2) **पदों को बेचना** (Selling of the Post)—निरन्तर बढ़ते हुए ऋण से मुक्ति पाने का सरकार को एक उपाय सूझता था कि वह और अधिक ऋण ले तथा पदों को बेचकर धन एकत्र करे। इसके अतिरिक्त, एक अन्य तरीका भी फ्रांसीसी सरकार ने अपनाया। इसके अन्तर्गत धनी व्यक्तियों का एक समूह राजा को धन देता था तथा बदले में उन्हें कर वसूलने का अधिकार प्राप्त हो जाता था। इस प्रणाली को **'कर वसूलने का अधिकार'** (farming out the taxes) कहा जाता था, यह अत्यन्त दोषपूर्ण प्रणाली थी, क्योंकि वे लोग वास्तविक देय कर से अधिक कर वसूलते थे जिससे जनता प्रताड़ित होती थी तथा राज्य की आय कम हो जाती थी। फलतः सरकार को पुनः ऋण लेना पड़ता था। लुई XVI के समय में वह ऋण इतना अधिक बढ़ गया कि लोगों ने ऋण देना बन्द कर दिया, जिससे सरकार गम्भीर वित्तीय

1 "When adviser warned Louis XV that reforms were desperately needed, the pleasure loving king replied that the machine would last out his day."

2 "The principle of taxation by the will of the taxapayers was not raised in the Bourbon monarchy, and the financial administration, like and administration of justice and the government, was arbitrary and asolute."
—Leo Gershoy, *The French Revolution and Napoleon*, p. 22.

3 *op. cit*, p. 565.

4 आधुनिक यूरोप का इतिहास, पृ. 12.

संकट में फंस गयी। इस वित्तीय संकट का सामना कभी कर बढ़ाकर तथा कभी खर्च में कमी करके किया गया, किन्तु स्थिति इतनी बिगड़ चुकी थी कि उसमें कोई परिवर्तन न हुआ।

(3) बजट का अभाव (Absence of Budget)—**फ्रांसीसी वित्तीय नीति का एक अन्य गम्भीर दोष बजट** (Budget) **का अभाव था।** बजट के अभाव में राज्य का आय-व्यय का लेखा-जोखा भी ठीक से नहीं रखा जा सकता था। राजा राजकीय धन को व्यक्तिगत धन समझकर मनमाने तरीके से खर्च करते थे। वह धन जो कि राष्ट्र के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने पर खर्च होना चाहिए था, राजा की व्यक्तिगत आवश्यकताओं व विलासिता पर खर्च किया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में देश की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था।

(4) दोषपूर्ण कर-प्रणाली (Defective Taxation System)—किसी भी देश की आय का प्रमुख स्रोत कर (tax) होते हैं। फ्रांस में कर-व्यवस्था (taxation system) अत्यन्त दोषपूर्ण थी। कर दो प्रकार के होते थे—**प्रत्यक्ष** एवं **अप्रत्यक्ष।** प्रत्यक्ष कर व्यक्तिगत सम्पत्ति, आय व जागीर पर देने पड़ते थे, किन्तु अधिकांश कर ऐसे थे जिनसे सामन्त व चर्च के अधिकारी आदि जो कि **विशेषाधिकार वर्ग** (priviledged class) में आते थे, मुक्त थे, अतः करों का सारा बोझ गरीब जनता पर पड़ता था। कितने आश्चर्य की बात है कि जो वर्ग कर देने में सक्षम था, उसे कर देना ही नहीं पड़ता था और जो भूखे पेट थे, उनसे उनके शरीर की हड्डियां भी मांगी जाती थीं। यही कारण है कि उस समय फ्रांस में कहा जाता था, "**सामन्त युद्ध करते हैं, पादरी पूजा करते हैं तथा जनता कर देती है।**"[1] इसके अतिरिक्त, यदि उस वर्ग के लोगों पर कर लगता भी था तो वे आसानी से देते ही नहीं थे। इस प्रकार कर-प्रणाली पूर्णतया पक्षपात पर आधारित थी, किन्तु इसमें पक्ष सदैव सामन्तों व उच्च वर्ग का ही लिया जाता था।

फ्रांस में उस समय अनेक **अप्रत्यक्ष कर** (Indirect tax) भी थे। अप्रत्यक्ष कर वसूलने का कार्य सरकार द्वारा नहीं किया जाता था, अपितु कर वसूलने के कार्य का ठेका (Contract) दे दिया जाता था। इन ठेकेदारों का कार्य लाभ कमाना होता था, अतः वे अधिक-से-अधिक कर के रूप में वसूलने का प्रयत्न करते थे। कर वसूलने के लिए ठेकेदार अत्यन्त कठोर व निर्मम तरीकों का प्रयोग करते थे, जिससे जनता को अपार कष्ट होता था। इसी कारण हेजन ने लिखा है, "**कर वसूल करने की यह प्रणाली प्राचीन तथा आधुनिक युग दोनों में ही अत्यन्त घृणित प्रमाणित हुई।**"[2] लियो गर्शोय ने भी इस प्रणाली की अत्यधिक आलोचना की है। उन्होंने लिखा है, "**कर वसूल करने का यह तरीका भ्रष्ट व आर्थिक हानि का, सामाजिक दृष्टि से अप्रिय तथा आर्थिक दृष्टि से अप्रतिरक्षणीय था। अप्रत्यक्ष करों को वसूलने के तरीके तो अत्यन्त दुखदायी तथा पाशविक थे।**"[3] फ्रांस में अठारहवीं शताब्दी में अनेक अप्रत्यक्ष कर इस प्रकार के थे, जो कि जनता के लिए अत्यन्त कष्टप्रद थे। इस प्रकार एक कर **नमक-कर** (salts tax) था। इसके अन्तर्गत सात वर्ष से बड़े प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष में कम-से-कम सात पौंड नमक खरीदना आवश्यक था। जिन गरीबों के पास रोटी खाने के लिए धन न था, नमक कहां से

1 "The nobles fight, clergy pray, and the people pay."

2 पूर्वोक्त, पृ. 33.

3 "The methods of collection were financially wasteful and corrupt, socially offensive, and economically indefensible, in the case of indirect taxes the methods were vexatious and brutal as well." —Leo Gershoy, *op. cit.*, p. 22.

खरीदते। न खरीदने की स्थिति में उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था। इसी प्रकार की दूषित कर-प्रणाली शराब के लिए भी थी। शराब, फ्रांस का एक प्रमुख उद्योग था, किन्तु उस पर इतने कर लगा दिए गए थे कि यह उद्योग ही ठप्प होने की स्थिति में पहुंच गया। उल्लेखनीय है कि नमक व शराब पर भी कर सम्पूर्ण फ्रांस में एकसमान न थे।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक व्यवस्था के समान **फ्रांस का आर्थिक ढांचा भी असमानता, विशेषाधिकार, स्वेच्छाचारिता और अन्यायपूर्ण नियमों से ओत-प्रोत था।** नियम प्रायः परिवर्तित होते रहते थे, जिससे सदैव अनिश्चितता बनी रहती थी। अतः फ्रांस की जनता द्वारा इस उत्पीड़क व अन्यायपूर्ण नीति का विरोध करना स्वाभाविक ही था।

धार्मिक स्थिति
(RELIGIOUS CONDITION)

फ्रांस में धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं थी। बूर्बां वंश रोमन कैथोलिक चर्च का अनुयायी था, अतः इसी चर्च का फ्रांस में प्रभुत्व छाया हुआ था। कैथोलिक चर्च के पास अपार धन-सम्पदा थी तथा उसके अधिकारी अत्यन्त शान-शौकत एवं विलासिता से रहते थे। फ्रांस में बड़ी संख्या में **प्रोटेस्टेण्ट**[1] (Protestant) भी रहते थे। फ्रांस में इन्हें **ह्यूगनोट** (Huguenots) कहा जाता था। हेनरी IV ने अपने शासनकाल में इन्हें धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी, किन्तु मन्त्री रिशलू ने 'ह्यूगनोट्स' पर अत्यधिक अत्याचार किए। लुई XIV ने भी ह्यूगनोट्स को समाप्त करने के यथासम्भव प्रयास किए। 1685 ई. में ह्यूगनोट्स के सभी विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया तथा उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता को छीन लिया गया। लुई XIV के समय में यद्यपि ह्यूगनोट्स पर अत्याचार नहीं किए गए, किन्तु उन पर प्रतिबन्धों को पूर्ववत् बनाए रखा गया। यहूदियों के साथ भी फ्रांस में दुर्व्यवहार किया जाता था।

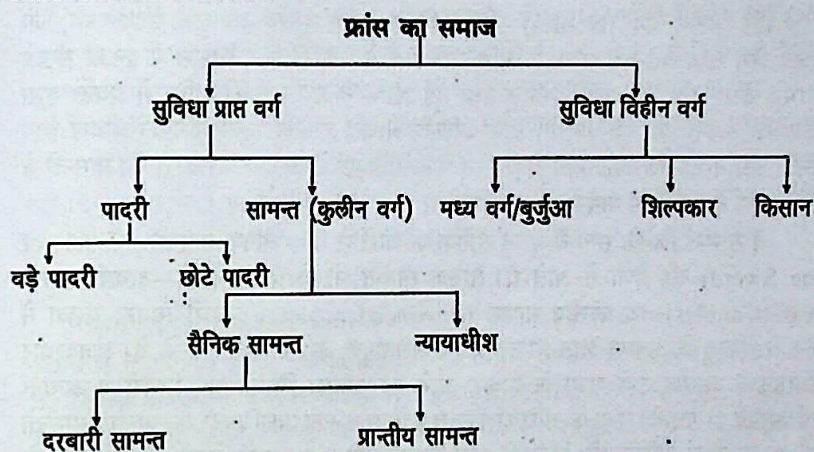
सामाजिक स्थिति
(SOCIAL CONDITION)

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस की राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति के समान ही सामाजिक ढांचा (social structure) भी अत्यन्त दोषपूर्ण एवं कष्टप्रद था। ऐसी अनेक कुरीतियां तथा बुराइयां तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान थीं, जिनका बुद्धि व जनहित से कोई सम्बन्ध न थां। इनमें से अधिकांश प्रथाएं **सामन्तीय युग** (feudal age) से चली आ रही परम्पराएं थीं जो 18वीं शतब्दी के अनुकूल नहीं थीं। तत्कालीन समाज में प्रत्येक व्यक्ति का व्यवसाय उसके जन्म के अनुसार बंटा हुआ था। जो जिस घराने में जन्म लेता था वह उन्हीं परिस्थितियों में रहता था, उसकी योग्यता अथवा अयोग्यता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए लिओ गर्शोय ने लिखा है, **"फ्रांस का सामाजिक स्वरूप व्यक्ति के जीवन, स्वतन्त्रता व प्रसन्नता को बढ़ाने वाले सिद्धान्तों को प्रोन्नत करने वाला नहीं था जब तक कि कोई व्यक्ति इतना भाग्यशाली न हो जो कि उसका जन्म उच्च वर्ग में हुआ हो।"**[2]

1 'प्रोटेस्टेण्ट' शब्द प्रोटेस्ट (Protest) से बना है जिसका अर्थ विरोध करना होता है। अतः जिन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च के पोप का विरोध किया, उन्हें प्रोटेस्टेण्ट कहा गया।

2 "The social structure of the France was itself hardly conductive to promoting men's pursuit of his inalienable and impreseriptible rights of life, liberty and happiness unless the happened to be of the fortunated few who were will born.'
—*The French Revolution and Napoleon*, p. 27

सामाजिक वर्गीकरण (Social Classification)—फ्रांसीसी समाज का वर्गीकरण इस प्रकार से किया जा सकता है :



उपरोक्त चार्ट से स्पष्ट है कि फ्रांस का समाज दो वर्गों में बंटा हुआ था। प्रथम, **सुविधा प्राप्त वर्ग** (Priviledged class), जिन्हें हर प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे। इस वर्ग में पादरी व कुलीन अथवा सामन्त आते थे। दूसरा, **सुविधाविहीन वर्ग** जिसके पास विशेषाधिकार अथवा सुविधाएं न थीं, तथा इनका जीवन अत्यन्त कष्टप्रद था। इस वर्ग में जनसाधारण आता था। सुविधा प्राप्त वर्ग भी दो भागों—पादरियों व सामन्तों में बंटा हुआ था, अतः इस प्रकार फ्रांसीसी समाज में प्रमुखतया तीन वर्ग थे।

पादरी, सामन्त (कुलीन) तथा जनसाधारण, इनको क्रमशः **प्रथम एस्टेट** (First Estate) **द्वितीय एस्टेट** (Second Estate) तथा **तृतीय एस्टेट** (Third Estate), कहा जाता था।

(1) **पादरी** (Clergy)—पादरी प्रथम एस्टेट के अन्तर्गत आने वाला वर्ग तथा इनका स्थान समाज में सर्वोच्च था। ये अत्यन्त शक्तिशाली तथा धनी थे। फ्रांस की कुल भूमि का लगभग 1/5वां भाग इनके अधीन था। इस भूमि से उन्हें अत्यधिक आय प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त, वे किसानों से **धार्मिक कर** (Tithes) भी वसूल करते थे। यद्यपि यह वास्तविक अर्थों में राष्ट्रीय कर था, किन्तु इसका लाभ धर्माधिकारी उठाते थे। चर्च के अधिकारी अपने अधीन किसानों से जागीरदारी कर भी वसूल करते थे। चर्च की वार्षिक आय लगभग दस करोड़ डालर थी, जिसे धार्मिक भवनों के निर्माण व मरम्मत, धार्मिक सेवाओं, चिकित्सालयों तथा पाठशालाओं की सहायता के लिए खर्च किया जाना चाहिए था, किन्तु वास्तविक स्थिति ऐसी न थी। फ्रांस की अन्य संस्थाओं के समान ही चर्च में भी घोर भ्रष्टाचार व्याप्त था, जिससे देश की नैतिक भावना को आघात लगा था। चर्च की आय का प्रमुख भाग बड़े अधिकारियों के व्यक्तिगत खातों में चला जाता था। इन धर्माचारियों में से कुछ का नैतिक चरित्र अत्यन्त निन्दनीय और विचारधारा निम्नस्तरीय थी।

चर्च के अधिकारियों की स्थिति में भी भारी अन्तर था। उच्च धर्माधिकारियों की स्थिति बहुत अच्छी तथा चर्च व धर्म के प्रत्येक मामले में सर्वेसर्वा था, किन्तु चर्च के छोटे अधिकारियों की स्थिति बहुत खराब थी। उनकी और साधारण जनता की स्थिति में विशेष फर्क न था।

अन्यायपूर्ण व्यवस्था से वे पूर्णतया परिचित थे, इस कारण क्रान्ति के समय इन लोगों ने जनसाधारण की सहायता की।

(2) **कुलीन वर्ग** (Nobles)—विशेषाधिकार प्राप्त दूसरा वर्ग कुलीनों का था, जो राजदरबारी तथा बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी होते थे। क्रान्ति से पूर्व फ्रांस में इनकी संख्या लगभग चार लाख थी। यद्यपि रिशलू तथा लुई XIV ने सामन्तों की शक्ति में पर्याप्त ह्रास किया था, किन्तु फिर भी यह वर्ग अभी शक्तिशाली था। फ्रांस की कुल भूमि का चौथाई भाग उनके अधीन था, जिसकी आय से ये लोग विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। सामन्तों में भी दो वर्ग थे—**सैनिक सामन्त तथा न्यायाधीश।**

वे सामन्त जिनके सम्बन्ध पुराने सैनिक परिवारों से थे—**'सैनिक सामन्त'** (Nobels of the Sword) की श्रेणी में आते थे। सैनिक सामन्त भी दो प्रकार के थे—**दरबारी सामन्त** (Court nobles) तथा **प्रान्तीय सामन्त** (Provincial nobles)। दरबारी सामन्त संख्या में कम थे; किन्तु वे अत्यन्त शान-शौकत व विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राजदरबार में रहने के कारण उन्हें राजा के निकट आने का अवसर मिलता था, जिससे वे अत्यन्त शक्तिशाली हो गए थे। राजा के अधिकांश उच्च पदों पर उनका एकाधिकार था। प्रान्तीय सामन्तों की संख्या बहुत अधिक थी, किन्तु ये इतने प्रभावशाली न थे। अपने-अपने प्रान्तों में रहने के कारण उनका राजाओं से विशेष सम्बन्ध नहीं रहता था, अतः उनके प्रभावों में वृद्धि नहीं हो पाती थी। समाज में उन्हें न तो विशेष सम्मान ही प्राप्त था, और न ही उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। **फ्रांस की जनता के हृदय में सामन्त वर्ग के प्रति जो घृणा थी वह वास्तव में स्वार्थी तथा लालची, दरबारी सामन्तों के लिए ही थी।**[1]

सामन्तों का दूसरा वर्ग **न्यायाधीशों** (Nobles of the Robes) का था। फ्रांस की पुरातन व्यवस्था में पदों को खरीदा जा सकता था। ऐसा पद खरीदने पर सरकार से उन्हें सामन्त (Noble) होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो जाता था। इस प्रकार सामन्तों के इस वर्ग का उदय हुआ था। ये लोग मध्यकालीन सामन्तों के वंशज न थे। इनमें से अधिकांश न्यायाधीश अथवा न्यायाधिकरणों के सदस्य थे अतः इन्हें **'न्यायाधीश सामन्त'** कहा जाता था। ये वर्ग, अन्य सामन्तों की तुलना में उदारवादी था तथा समय-समय पर राजा व सरकार के कानून का विरोध इन्होंने किया था, किन्तु अपने विशेषाधिकारों से इन्हें विशेष लगाव था, उन्हें छोड़ने के लिए वे तैयार न थे।

(3) **तीसरा वर्ग** (Third Estate)—पादरी व सामन्त वर्गों के अतिरिक्त फ्रांस की शेष जनता इसी वर्ग में आती थी, जिसे तृतीय वर्ग (Third Estate) कहा जाता था। इस वर्ग को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त न थे। इस वर्ग में भारी असमानता थी। धनी-से-धनी व्यक्ति अथवा प्रतिभाशाली साहित्यकार अथवा मजदूर तथा किसान, जो भी पादरी व कुलीन वर्ग में न था, इसी तीसरे वर्ग का सदस्य था। यह वर्ग भी प्रमुखतया तीन भागों में विभक्त था—मध्यम वर्ग, शिल्पकार तथा किसान।

(i) **मध्यम वर्ग** (Bourgeoisie)—फ्रांस के मध्यम वर्ग को **'बुर्जुआ'** कहते थे। इस वर्ग के लोग शहरों में रहते थे तथा धनी, शिक्षित, अध्यापक, साहित्यकार, इंजीनियर व अन्य बौद्धिक लोग थे, जिन्हें शारीरिक कार्य नहीं करना पड़ता था। इस वर्ग के लोग, अक्लमन्द, मेहनती, शिक्षित एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण, पुरातन व्यवस्था के घोर विरोधी थे। पादरी एवं कुलीन वर्ग का इनके प्रति व्यवहार अच्छा न था, जिससे वे स्वयं को हीन

1 हेजन, **आधुनिक यूरोप का इतिहास**, पृ. 37.

महसूस करते थे। मध्यम वर्ग के अनेक धनी व्यापारियों ने सरकार को कर्ज दे रखा था, लेकिन सरकार की स्थिति को देखते हुए उन्हें अपने धन की चिन्ता होने लगी थी।

उल्लेखनीय है कि फ्रांस के सर्वाधिक बुद्धिमान धनी, सभ्य तथा प्रगतिवादी लोग मध्यमवर्गीय ही थे, किन्तु उनको कोई राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे।[1] मध्यम वर्ग राजनीतिक अधिकारों को प्राप्त करना चाहता था। पुरातन-व्यवस्था में समस्त राजनीतिक पदों पर कुलीन वर्ग का आधिपत्य था, अत: पुरातन-व्यवस्था की समाप्ति किए बिना मध्यम वर्ग को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते थे। राजनीतिक अधिकारों के अभाव में मध्यमवर्गीय व्यापारियों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। राजा तथा कुलीन वर्ग स्वेच्छा से कर लगाते थे तथा नीतियों में परिवर्तन करते थे, जिसका परिणाम मध्यम वर्ग को भुगतना पड़ा था व उनके व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

मध्यम वर्ग मात्र राजनीतिक व्यवस्था में ही परिवर्तन का इच्छुक न था वरन् वे सामाजिक क्रान्ति भी चाहते थे। हेजन ने लिखा है, **"वे सुरक्षित थे, उनके मस्तिष्क उस युग के साहित्य से, जिसका वे चाव से अध्ययन करते, ओत-प्रोत थे। वाल्टेयर, रूसो, माण्टेस्क्यू तथा अनेक अर्थशास्त्रियों के विचारों ने उन्हें आन्दोलित कर रखा था। व्यक्तिगत तुलना में वे उतने ही सुसंस्कृत थे जितना कुलीन वर्ग। वे सामाजिक समता चाहते थे, उनकी प्रबल इच्छा थी कि कानून इस बात को स्वीकार कर ले कि बुर्जुआ वर्ग के लोग कुलीन वर्ग के समान हैं।"**[2]

अत: मध्यम वर्ग के हितों के लिए फ्रांस की राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होना आवश्यक था। मध्य वर्ग में अपने हितों की रक्षा करने की प्रवृत्ति बलवती होती जा रही थी। यही कारण था कि फ्रांस की क्रान्ति में मध्यम वर्ग का प्रमुख योगदान रहा।

(ii) **शिल्पकार** (Artisans)—तृतीय वर्ग (Third Estate) मध्यम वर्ग के समान ही शहरों में रहने वाला दूसरा वर्ग शिल्पकारों का था। फ्रांस में उस समय इनकी संख्या लगभग 25 लाख थी। फ्रांस में महान् क्रान्ति से पूर्व उद्योग-धन्धे पूर्णतया विकसित नहीं हो सके थे, अत: इनकी संख्या कम ही थी। शिल्पकार अनेक श्रेणियों में विभक्त थे तथा प्रत्येक श्रेणी के अपने-अपने नियम थे। श्रेणियों के पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त खराब थे तथा उनमें आपस में अक्सर झगड़े होते रहते थे। सरकार की ओर से इन शिल्पकारों को किसी प्रकार की सुविधा प्रदान नहीं की जाती थी।

(iii) **किसान** (Peasants)—फ्रांस में तृतीय वर्ग में सर्वाधिक संख्या किसानों की थी। फ्रांस में कुल मिलाकर भी किसानों की संख्या सर्वाधिक थी। फ्रांस की कुल जनसंख्या का 9/10वां भाग किसान ही थे, किन्तु फिर भी सबसे शोचनीय स्थिति उन्हीं की थी। **करों का सम्पूर्ण भाग भी इन्हीं गरीबों के कन्धों पर था।**[3] किसानों को अपनी कुल आय का आधे से भी अधिक भाग करों के रूप में देना पड़ता था। सामन्तों को उन्हें भूमि-कर तथा चर्च को **धर्मांश**

---

1 "The middle class dwellers in the towns, though better off than the peasants, were even more critical and discontented. The professional business classes, the bourgeoisie, included the most cultured, the most intelligent and the most progressive elements in the nation, yet this energetic and intelligent class was denied political power." —Ferguson and Brunn, *op. cit*, p. 564.

2 पूर्वोक्त, पृ. 39

3 "Taxation rested most heavily upon those least able to support it and curshed the peasant most crually of all." —Ferguson and Brunn, *op. cit.*, p. 265

कर (Tithes) देना पड़ता था। इन सबका परिणाम यह होता था कि किसान सदैव आर्थिक संकट से ग्रस्त रहते थे। यदि कभी प्रकृति का प्रकोप हो जाता तो किसान भूखे मरने लगते थे, किन्तु सरकार को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी। **भूख से परेशान हजारों किसान लुटेरे बन गए थे।** किसानों को हर कदम पर कर देना पड़ता था। पुलों तथा सड़कों तक का प्रयोग करने पर उनसे कर लिए जाते थे। आटे की चक्की तथा शराब बनाने के लिए कोल्हू का प्रयोग करने के लिए भी उन पर प्रतिबन्ध था कि वे अपने ही सामन्त की चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करें चाहे उसके लिए उन्हें 4-5 मील जाना पड़ता था। चक्की अथवा कोल्हू का प्रयोग करने पर कर तो उन्हें देना ही पड़ता था।

उपरोक्त कारणों से किसानों में असन्तोष की भावना बढ़ती जा रही थी। उन्हें अनुभव होने लगा था कि उनकी स्थिति में तभी परिवर्तन हो सकता है जब पुरातन-व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किया जाए। लिओ गर्शोय ने लिखा है, **"किसान इतने दुःखी हो चुके थे कि वे स्वयं ही एक क्रान्तिकारी तत्व के रूप में परिणित हो गए। उन्हें क्रान्ति करने के लिए मात्र एक संकेत की आवश्यकता थी, तथा उन्हीं की प्रमुख भूमिका ने 1789 ई. की क्रान्ति को सफल बनाया था।"**[1]

बौद्धिक क्रान्ति
(INTELLECTUAL REVOLUTION)

अठारहवीं शताब्दी की एक प्रमुख विशेषता यूरोप में बौद्धिक क्रान्ति का होना था। इस युग में फ्रांस में भी अनेक ऐसे विद्वानों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अपनी लेखनी प्रयोग करके तृतीय वर्ग की सोयी हुई आत्मा को जाग्रत किया तथा उन्हें अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इन लेखकों ने फ्रांस में व्याप्त बुराइयों की कटु आलोचना की तथा अपनी कटु शैली और आलोचना के द्वारा समाज में व्याप्त असन्तोष की कुशल अभिव्यक्ति की। कोई खराब प्रणाली ऐसी न थी जिसकी इन लेखकों ने कटु आलोचना न की हो। अठारहवीं शताब्दी के इन विद्वानों में प्रमुख **माण्टेस्क्यू** (कानून की आत्मा का लेखक), **वाल्टेयर, रूसो** (सामाजिक संविदा का रचयिता), **दिदरो, आर्लेबेयर** तथा**केने थे।** इनके अतिरिक्त, अनेक लेखकों ने अपनी रचनाओं में आर्थिक दोषों को दूर करने के लिए सरकार से अपील की।

इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस के लेखकों ने राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर फ्रांस की क्रान्ति को जन्म देने वाले **कुछ प्रमुख साहित्यकारों का वर्णन निम्नलिखित किया है—**

(1) **दिदरो** (Diderot, 1713 ई. 1784 ई.)—दिदरो का जन्म 1713 ई. में फ्रांस में हुआ था। दिदरो का विचार था कि सत्य के ज्ञान से सुख की प्राप्ति व दुःखों का निराकरण हो सकता है। अतः उसने एक **विश्वकोश** (Encyclopeadia) की रचना की, जिसमें उसने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। इस विश्वकोश को 17 खण्डों में 1751 ई. से 1772 ई. तक प्रकाशित किया गया। इस विश्वकोश की रचना में विभिन्न प्रख्यात विद्वानों के लेखों को भी दिदरो ने प्रकाशित किया, जिनमें प्रमुख वाल्टेयर (Voltaire) व क्वेस्ने थे। फ्रांस की रूढ़िवादी सरकार को दिदरो की विचारधारा स्वीकार न थी, अतः उसे विभिन्न तरीकों से

1 **"The peasants, taken as a group, had become a revolutionary clement. They required only a single to break out in revolt, and it was their active participation that made the revolutionary movement of 1789 a success."**

—***The French Revoluation and Napoleon*** **p. 51.**

प्रताड़ित किया। यहां तक कि दिदरो को कारागार में भी दिन काटने पड़े। विभिन्न समस्याओं का सामना करने के उपरान्त भी दिदरो अपने प्रयत्न में लगा रहा।

(2) **माण्टेस्क्यू** (Montesquieu 1689 ई. 1755 ई.)—माण्टेस्क्यू का जन्म 18 जनवरी, 1689 ई. में फ्रांस के बोर्डो (Bardeux) नगर के समीप **'ला ब्रेड'** (La Brede) नामक गांव में हुआ था। माण्टेस्क्यू का बचपन का नाम **'चार्ल्स लुई डी सेकेण्ड'** था। उसने बोर्डो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की तथा 1721 ई. में वह वकील बन गया। 1715 ई. में उसका विवाह हुआ। 1716 ई. में अपने 'ताऊ' के कहने पर उसने अपना नाम माण्टेस्क्यू रखा। माण्टेस्क्यू ने लगभग 12 वर्ष तक बोर्डो के प्रधान न्यायाधीश के पद पर भी कार्य किया।

अध्ययन तथा लेखन कार्य में उसकी रुचि प्रारम्भ से ही थी, अतः उसने अपना अधिकांश समय इसी में व्यतीत किया। 1728 ई. में माण्टेस्क्यू ने यूरोप के अनेक देशों की यात्रा की। अपनी यात्रा के दौरान काफी समय वह इंग्लैण्ड में भी रहा तथा इंग्लैण्ड से बहुत प्रभावित हुआ। 10 फरवरी, 1755 ई. को उसकी मृत्यु हो गयी।

माण्टेस्क्यू ने अपने जीवनकाल में अनेक ग्रन्थों की रचना की। माण्टेस्क्यू की प्रथम रचना **'द पर्शिअन लैटर्स'** (*The Persian Letters*) 1721 ई. में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से माण्टेस्क्यू को अत्यधिक ख्याति मिली। तत्पश्चात् माण्टेस्क्यू ने 1734 ई. में **'रोमन लोगों की महानता और पतन के कारणों पर विचार'** (Reflection on the causes of the Greatness and Decline of the Romans) तथा 1745 ई. में **'सुल्ला और एक्रेटीज का संवाद'** (Dialogue of Sulla and Ecrates) प्रकाशित किया, किन्तु उसका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ **'कानून की आत्मा'** (The Spirit of Law) था, जो 1748 ई. में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ के दो वर्ष में 22 संस्करण छपे, जो इस पुस्तक की लोकप्रियता का प्रमाण है।

'कानून की आत्मा' नामक पुस्तक में माण्टेस्क्यू ने सात शासन प्रणालियों का विस्तृत वर्णन किया। माण्टेस्क्यू ने इंग्लैण्ड की संवैधानिक व्यवस्था की अत्यन्त प्रशंसा की तथा फ्रांस में विद्यमान **'राजा के दैवीय अधिकारों के सिद्धान्त'** (Devine Right of the King) की कटु आलोचना की। माण्टेस्क्यू ने ही सर्वप्रथम विधिवत् **'शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त'** (Theory of Separation of Powers) की स्थापना की। माण्टेस्क्यू का विचार था कि इंग्लैण्ड की उत्तम शासन-व्यवस्था का कारण वहां के नागरिकों को प्राप्त राजनीतिक स्वतन्त्रता का होना है। इसी आधार पर उसने शक्ति-पृथक्करण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। माण्टेस्क्यू ने बताया कि निरंकुश शासन को समाप्त करने के लिए शासन के तीन प्रमुख अंगों—कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका का अलग-अलग होना आवश्यक है। उसने लिखा कि जब तक फ्रांस में उपरोक्त तीनों अंग एक ही व्यक्ति के हाथों में केन्द्रित रहेंगे वहां सुधार की अपेक्षा करना व्यर्थ है। माण्टेस्क्यू के इन विचारों ने निस्सन्देह 1789 ई. की क्रान्ति के बीज बो दिए।

माण्टेस्क्यू के उपरोक्त विचारों के कारण ही उसे 18वीं शताब्दी के प्रमुख राजनीतिक चिन्तकों में से एक माना गया है। सेबाइन के शब्दों में, **"18वीं शताब्दी के समस्त फ्रांसीसी राजनीतिक चिन्तकों में (रूसो के अतिरिक्त) माण्टेस्क्यू सबसे महत्वपूर्ण है।"**[1] माण्टेस्क्यू के कार्यों व विचारों का मूल्यांकन करते हुए मैक्सी ने लिखा है, **"अमर व्यक्तियों में माण्टेस्क्यू का स्थान**

1 "Of all french political philosophers in the 18th century (other than Rousseau) the most important was Montesquieu." —*Sabine*

किसी से तुलना करके निर्धारित नहीं किया जा सकता। वह राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में प्लेटो, अरस्तू, मैकियावेली और बोदां के समान विशिष्ट महत्व रखता है।''[1]

(3) **वाल्टेयर** (Voltaire 1694 ई.-1778 ई.)—18वीं शताब्दी के राजनीतिक साहित्यकारों में प्रमुख वाल्टेयर था। हेजन ने वाल्टेयर के विषय में लिखा है : **''वाल्टेयर यूरोपीय इतिहास का एक महान् मनीषी हुआ है और उसके नाम पर एक युग का नाम पड़ गया है। जिस प्रकार लूथर अथवा इरैस्मस के युग का उल्लेख किया जाता है वैसे ही वाल्टेयर के काल की चर्चा की जाती है।''**

वाल्टेयर का जन्म फ्रांस के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उसके पिता उसे वकील बनाना चाहते थे, किन्तु उसकी रुचि साहित्य में थी। उसमें आलेचना करने की अद्भुत क्षमता थी। विभिन्न उच्च लोगों की आलोचना करने के कारण उसे अनेक बार अत्याचारों का सामाना करना पड़ा था। उसे कई बार कारागार में भी रहना पड़ा। अनेक वर्ष उसे फ्रांस से बाहर रहने के लिए विवश होना पड़ा अतः वाल्टेयर को फ्रांसीसी समाज तथा उसमें व्याप्त अराजकता का पूर्ण ज्ञान था। इसी कारण रोज ने उसके विषय में लिखा है, **''वह फ्रांसीसी विचारों का पूर्ण दर्पण था।''**[2]

वाल्टेयर मानव स्वतन्त्रता के सिद्धान्त का उग्र समर्थक था तथा स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। पुरातन व्यवस्था के प्रति उसे अपार घृणा थी तथा किसी पर अत्याचार होते देखना उसके लिए सम्भव न था। जहां कहीं भी अत्याचार होते हुए देखता वह वहां पहुंच जाता तथा अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करता। इसी कारण उसके लिए कहा गया है कि मूलतः वह कोई राजनीतिक चिन्तक न था। शासन-व्यवस्था में व्याप्त दोषों पर उसने अपनी लेखनी से आघात किया तथा राज्य पर से जनता का विश्वास समाप्त कर दिया।

अत्याचार का विरोध करने के कारण ही वाल्टेयर का चर्च से भी संघर्ष हुआ। वाल्टेयर की दृष्टि में चर्च मानव स्वतन्त्रता का विरोधी तथा अन्धविश्वास उत्पन्न करने का स्थान था। चर्च को वह **'बदनाम स्थान'** (Pintame) कहता था। अतः उसने चर्च में व्याप्त आडम्बरों व भ्रष्टाचार की घोर आलोचना की।

इस प्रकार वाल्टेयर ने सम्पूर्ण जीवन मानवता के हित व स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने में लगा दिया। हेजन ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, **''उसके समय में उसका क्या महत्व था, इसका पता इस बात से चलता है कि लोगों ने उसे राजा वाल्टेयर का नाम दे रखा था। संसार में उससे अधिक स्वतन्त्रत निर्भीक व साहसी आत्माएं बहुत कम हुई हैं।''**

(4) **जीन जैकस रूसो** (Jean Jaques Rousseaue 1712 ई.-1778 ई.)—जीन जैकस रूसो 18वीं शताब्दी का सर्वप्रमुख राजनीतिक चिन्तक था। रूसो का जन्म 28 जून, 1712 ई. को जेनेवा में हुआ था। उसके जन्म के कुछ समय पश्चात् ही उसकी मां की मृत्यु हो जाने के कारण उसका बचपन उपेक्षित व्यतीत हुआ। उसका पालन-पोषण उसके सम्बन्धियों ने किया। 16 वर्ष की आयु में वह जेनेवा छोड़कर चल दिया व इधर-उधर घूमता रहा। रूसो 14 वर्षों तक इसी प्रकार यायावर का जीवन व्यतीत करता रहा। यह चौदह वर्ष उसके लिए

---

1 "Montesquieu's rank among the immortals is not to be determined by comparing him with others like Plato, Aristotle, Machiavelli and Bodin. He stands a part in unique and solitary eminence." —*Maxey*

2 "He was the completest mirror of the French thought." —*Rose*

अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाणित हुए क्योंकि इन्हीं में वह दिदरो जैसे विद्वान के सम्पर्क में आया तथा उसे फ्रांस की निर्धन जनता को निकट से देखने का अवसर मिला।

एक लेखक के रूप में रूसो का जीवन 1749 ई. से प्रारम्भ हुआ। उस वर्ष 'डिजोन की अकादमी' (Academy of Dijon) के द्वारा एक **'विज्ञान तथा कलाओं की प्रगति ने नैतिकता को पवित्र किया है अथवा भ्रष्ट'** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में रूसो को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इससे रूसों को एक लेखक के रूप में प्रसिद्धि मिली। 1761 ई. में रूसो ने **'न्यू हैलोइजे'** (New Heloise) तथा 1761 ई. में **'सामाजिक समझौता'** (Social Contract) व **'इमाइल'** (Emile) की रचना की। इन ग्रन्थों से रूसो को अपार ख्याति प्राप्त हुई। इन ग्रन्थों में व्यक्त उसके क्रान्तिकारी विचारों के कारण राज अधिकारी व चर्च के अधिकारी उसके विरोधी हो गए, परिणामस्वरूप उसे फ्रांस छोड़ कर जाना पड़ा। 1767 ई. में वह पुनः फ्रांस आ गया व अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिसमें प्रमुख **'द कन्फैशन्स'** (The Confessions), **द डाइलाग्स'** (The Dialogues) व **'द रेवरीज'** (The Reveries) हैं। 2 जुलाई, 1778 ई. को रूसो की मृत्यु हुई।

रूसो के विचार अपने समकालीन लेखकों से अधिक प्रगतिशील थे। वह समाज का नवीन ढंग से पुनर्संगठन करना आवश्यक समझता था, क्योंकि उसका विचार था कि वर्तमान व्यवस्था को सुधारना सम्भव नहीं है, अतः एक नवीन सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से उसने **'सामाजिक समझौता'** की रचना की। इस ग्रन्थ का पहला वाक्य ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उसने लिखा है, **"मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न होता है, किन्तु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"**[1] इस विचार के आधार पर ही रूसो ने एक आदर्श राज्य की रूपरेखा प्रस्तुत की है। रूसो ने लिखा है कि समाज का आधार उन व्यक्तियों का परस्पर समझौता होता है जिनसे मिलकर वह (समाज) बनता है। प्रभुत्व सम्पूर्ण जनता में होता है, व्यक्ति विशेष में नहीं। सभी व्यक्ति समान तथा स्वतन्त्र हैं। सरकार का प्रमुख कर्तव्य प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों व उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करना है। इस प्रकार रूसो ने दो लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों—जनता का प्रभुत्व तथा नागरिकों की राजनीतिक स्वतन्त्रता की स्थापना की। व्यक्तियों प्रबल बनाया। **सेबाइन** ने रूसो के विषय में लिखा है, **"रूसो के राजनीतिक चिन्तन में समाजवाद, निरंकुशतावाद और लोकतन्त्र सभी के बीच विद्यमान हैं।"**[2]

रूसो ही पहला विचारक था जिसने **समानता, स्वतन्त्रता** एवं **जनंतन्त्र** के विचारों का प्रतिपादन किया तथा सम्पूर्ण राजनीतिक सत्ता का मूल स्रोत जनता को मानना। रूसो असमानता का भी विरोधी था। उसका विचार था कि राज्य में कोई व्यक्ति इतना समृद्ध नहीं होना चाहिए कि वह दूसरे को खरीद सके और न ही कोई इतना गरीब होना चाहिए कि वह स्वयं को बेच दे।

रूसो के विचार ने जनसाधारण को असाधारण रूप से प्रभावित किया। वेपर (Wayper) ने रूसो के विषय में लिखा है, **"आधुनिक विश्व के मस्तिष्क पर उससे (रूसो) अधिक प्रभाव डालने वाले व्यक्ति गिने-चुने हैं।"** रूसो ने अपने समय की दूषित शासन व्यवस्था व सामाजिक व्यवस्था की कटु आलोचना की तथा समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं व शोषण को

1 "Man is born free and every where he is in chains."
2 "Rousseau's political theory contains the seeds of Socialism, Absolutism and Democracy."

जनसाधारण के समक्ष स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर उनमें तीव्र आक्रोश व असन्तोष की भावना जाग्रत की। मैक्गवर्न ने लिखा है, **"रूसो की रचनाओं ने वर्तमान स्थितियों के प्रति घोर असन्तोष उत्पन्न कर दिया और यह भावना पैदा कर दी कि वर्तमान बुराइयों को दूर करने के लिए कुछ क्रान्तिकारी कदम उठाए जाने चाहिए।"**

इस प्रकार क्रान्तिकारी विचारों को जनता में प्रबल बनाने के कारण रूसो को **'क्रान्ति का मसीहा'** (Prophet of the Revolution) भी कहा जाता है।

इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के फ्रांस के लेखकों ने राजनीतिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर फ्रांस को राजनीतिक एवं सामाजिक क्रान्ति के कगार पर ला खड़ा किया। इन लेखकों ने क्रान्ति के नेताओं में निश्चयात्मक सिद्धान्त भर दिए तथा उन्हें कुछ सैद्धान्तिक वाक्यों तथा तर्कों से सुसज्जित कर दिया। इन लेखकों ने फ्रांस के तृतीय वर्ग के समक्ष शक्तिशाली स्वप्न प्रस्तुत किए और उन्हें आशावादी बनाया। हेजन ने लिखा है कि इन लेखकों ने क्रान्ति के कारणों का अत्यन्त चतुरता से जनता के समक्ष स्पष्ट किया तथा उनकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। लोगों को वाद-विवाद के लिए बाध्य किया तथा पुरातन-व्यवस्था के विरुद्ध क्रोध एवं घृणा को प्रज्ज्वलित किया। **इन्हीं लेखकों ने फ्रांसीसी जनता को स्वतन्त्रता** (Liberty), **भ्रातृत्व** (Fraternity) **एवं समानता** (Equality) **का पाठ पढ़ाया।**[1]

फ्रांस की क्रान्ति के कारण
(CAUSES OF THE FRENCH REVOLUTION)

गूच के अनुसार, **'फ्रांस की क्रान्ति यूरोप के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी,'**[2] किन्तु वास्तव में फ्रांस की क्रान्ति केवल फ्रांस और यूरोप के इतिहास की ही नहीं; वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के इतिहास में भी महत्वपूर्ण घटना थी। इस क्रान्ति ने लोगों के समक्ष **स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व** (Liberty, Equality and Fraternity) के आदर्श विचार प्रस्तुत किए जो आज विश्व के कोने कोने तक पहुंच चुके हैं। फ्रांस की क्रान्ति सैनिक ही नहीं अपितु विचारों की भी लड़ाई थी।

क्रान्तियां कभी अचानक नहीं होतीं और संयोगवश तो कभी भी नहीं। एक छोटी-सी घटना सुरंग में चिंगारी का कार्य कर आग तो प्रज्ज्वलित कर सकती है, परन्तु सुरंग का पहले से ही बारूद से भरा होना नितान्त आवश्यक है। फ्रांस की क्रान्ति में भी ऐसा ही हुआ। क्रान्ति रूपी सुरंग तो लगभग दो शताब्दियों पूर्व से ही तैयार होनी प्रारम्भ हो गई थी, 1789 ई. में उसे केवल विस्फोटित कर दिया गया। यद्यपि उस समय यूरोप के सभी देशों की स्थिति एकसमान थी, परन्तु फ्रांस की स्थिति सर्वाधिक शोचनीय थी, और यही कारण था कि सर्वप्रथम फ्रांस में ही क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति ने फ्रांस की काया पलट दी। धनवान तथा निर्धनों का भेद-भाव ही मिटा देने का प्रयत्न किया गया, जमींदारों तथा पादरियों की सत्ता को समाप्त कर दिया गया।

फ्रांस की क्रान्ति के प्रमुख कारण अग्रवत् थे :

1 पूर्वोक्त, पृ. 47।
2 "The French Revolution is the most important event in the History of Europe."
—*Goach*

(1) राजनीतिक कारण
(POLITICAL CAUSES)

फ्रांस की क्रान्ति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे :

1. **लुई चौदहवें के उत्तराधिकारी** (Successors of Louis XIV)—फ्रांस में शताब्दियों से समस्त राजनीतिक शक्ति राजा के हाथों में ही केन्द्रित थी। फ्रांस का राजा लुई चौदहवां यद्यपि एक निरंकुश शासक था, तथापि यह एक योग्य व्यक्ति था उसके शासन काल में फ्रांस की उन्नति चरम सीमा पर पहुंच गई थी, परन्तु अन्त में अनेक युद्धों के कारण तथा **सप्तवर्षीय युद्ध** (Seven Years War) के कारण उसकी आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई थी। उसने अपने पुत्र लुई पन्द्रहवें से अपनी मृत्यु के समय निम्नलिखित शब्द कहे थे—**'मेरे बच्चे! अपने पड़ोसियों के साथ शान्तिपूर्वक रहने का प्रयत्न करना, जितना जल्दी हो सके लोगों को छुटकारा देने का यत्न करना और इस प्रकार वह कार्य पूरा करना जिसे दुर्भाग्यवश मैं पूरा न कर सका।'**

लुई पन्द्रहवां एक अयोग्य शासक प्रमाणित हुआ। सप्तवर्षीय युद्ध में फ्रांस के साम्राज्य का बहुत बड़ा भू-भाग उसके अधिकार से निकल गया तथा जनता के कष्टों में और वृद्धि हो गई। लुई पन्द्रहवें के पश्चात् लुई सोलहवां और भी अयोग्य निकला। मेडलिन ने लिखा—**'वह पैदायशी राजा नहीं था।'**[1] एक फ्रेंच इतिहासकार ने लिखा है—**'लुई चौदहवें के उत्तराधिकारियों ने राजवंश में सड़ांध पैदा कर दी और उससे जी मितला देने वाले बदबू उठने लगी थी।'** लुई सोलहवें को शासन-प्रबन्ध में विशेष रुचि न थी। उस पर अपनी पत्नी मेरी आन्तनेत (Marie Antoinette) जो कि मेरिया थरेसा की लड़की थी, का अत्यधिक प्रभाव था। मिराब्यू ने लिखा **'राजा के निकट केवल एक ही व्यक्ति है, उसकी पत्नी।'**[2] फ्रांस के लोग मेरी आन्तनेत से अत्यन्त घृणा करते थे। उसको **'दि आस्ट्रियन'** (The Austrian) या **'मैडम डेफिसिट'** (Madame Deficit) के नाम से पुकारा जाता था। वह अत्यधिक अपव्ययी थी तथा बिना आवश्यकता के जनता का धन पानी की तरह बहाती थी।

2. **दोषयुक्त शासन-व्यवस्था** (Defective Administration)—फ्रांस की क्रान्ति का एक अन्य एवं प्रमुख कारण, वहां की बुरी शासन-व्यवस्था थी। राजा देश का प्रधान था और वह स्वेच्छानुसार आचरण करता था। लुई चौदहवें का विचार था कि देश की सर्वोच्च सत्ता व्यक्तिगत रूप से उसी में है; कानून बनाने की शक्ति एकमात्र उसी में ही विद्यमान है, उसकी प्रजा का अस्तित्व उसी के साथ ही है और राष्ट्रीय अधिकार केवल उसी के हाथों में ही है। ऐसी व्यवस्था कभी भी सुचारु रूप से नहीं चल सकती थी। राजा देश के विभिन्न भागों की स्थिति देखने के लिए दौरा नहीं करता था। परिणामस्वरूप, जनता के साथ उसका कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध न था। राजा जनता के दुःखों और इच्छाओं से पूर्णतया अनभिज्ञ था। राजा अपना ध्यान राजधानी में ही लगाए रहता था, जहां देश भर से दरबार के ओछे और निरर्थक कार्यों में भाग लेने कुलीन लोग आते थे। **कहा गया था कि दरबार देश का मकबरा है।**[3] एक्टन ने लुई सोलहवें के शासन को *'The Era of Repentant Monarchy'* कहा है।

देश की शासन-व्यवस्था अत्यधिक असन्तोषजनक थी। प्रशासन की दृष्टि से किए गए देश के भागों में से अनेक भागों की सीमाएं ठीक तरह से निश्चित नहीं थीं और उनके

1 'He was not born a king.' —*Madelin*
2 'The king has only one man about him, his wife.' —*Mirabeau*
3 'Court is the tomb of the Nation.'

कार्य-क्षेत्राधिकारों का एक-दूसरे से संघर्ष होने की सम्भावना रहती थी। **देश की कानून-व्यवस्था (Legal System)** भी दोषपूर्ण थी। सम्पूर्ण देश के लिए कोई एकरूप कानून-व्यवस्था नहीं थी। देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न कानून प्रचलित थे। कानून, अत्यधिक कठोर व अन्यायपूर्ण थे तथा साधारण अपराधों के लिए कठोर दण्डों की व्यवस्था थी। अपराधी का अपराध निश्चित करने और उसको दण्डित करने की कोई निश्चित प्रणाली नहीं थी। किसी प्रभावशाली व्यक्ति की इच्छा से कोई भी व्यक्ति कैद किया जा सकता था। बन्दी बनाने के लिए मात्र **'लैटरे डी कैचे'** (Lettre de Cachet) को प्राप्त करने की आवश्यकता होती थी और इसे प्राप्त करने के पश्चात् सम्बन्धित व्यक्ति अनिश्चित काल के लिए बिना किसी अदालती कार्यवाही के जेल में बन्द रखा जा सकता था।

करों को वसूल करने की प्रणाली भी अत्यधिक दोषपूर्ण थी। राज्य स्वयं अपने अधिकारियों द्वारा कर वसूल नहीं करवाता था अपितु यह अधिकार सबसे अधिक बोली देने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। परिणामस्वरूप जहां कर वसूलने वाले व्यक्ति राज्य को एक निश्चित रकम देते थे वहां दूसरी ओर जनता से अधिक धन वसूल करने का प्रयत्न करने थे। जहां एक ओर जनता का शोषण किया जाता वहां दूसरी ओर राज्य को कोई लाभ न होता था। **चूंकि कुलीन वर्ग व पादरी कर नहीं देते थे, अतः सम्पूर्ण बोझ साधारण वर्ग पर ही पड़ता था। फ्रांस की सम्पूर्ण शासन-व्यवस्थ को ही सुधारना आवश्यक था।**

(2) सामाजिक कारण
(SOCIAL CAUSES)

फ्रांस की क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण कारण सामाजिक असमानता था। मेडलिन के अनुसार, '1789 ई. की क्रान्ति का विद्रोह तानाशाही से भी अधिक असमानता के प्रति था।'[1] फ्रांस की क्रान्ति के समय फ्रांस में समाज में अत्यधिक असमानता व्याप्त थी। **समाज दो वर्गों में विभाजित था**—विशेषाधिकार वाले वर्ग में कुलीन लोग और पादरी थे। जहां एक ओर इन्हें विशेषाधिकार प्राप्त थे वहां दूसरी ओर वे करों आदि से भी मुक्त थे। फ्रांस में प्रसिद्ध था, **'सरदार (nobles) लड़ते हैं, पादरी प्रार्थना करते हैं और जनता व्यय का भार उठाती है।'** एक ओर तो इस वर्ग के इतनी सुविधाएं प्राप्त थीं, दूसरी ओर साधारण वर्ग के लोगों की अवस्था सन्तोषजनक भी नहीं थी। किसानों की स्थिति विशेष रूप से शोचनीय थी। किसानों को जमींदार की जमीन पर सप्ताह में तीन दिन और कटाई के दिनों में पांच दिन काम करना पड़ता था। खेती की भूमि बेची जाती तो मूल्य का पांचवां भाग जमींदार को मिलता था। राजा को दिए जाने वाले करों की संख्या सबसे अधिक थी।

अनुमान लगाया जाता है कि करों को देने के पश्चात् फ्रांस के किसान के पास अपनी उपज का कुल 20 प्रतिशत भाग शेष रह जाता था। फ्रांस के कुछ भागों में किसान इन करों को चुकाने के पश्चात् किसी तरह निर्वाह कर लेते थे, परन्तु शेष भाग में उनकी दशा अत्यन्त शोचनीय थी। अच्छी-से-अच्छी फसल के उपरान्त भी वे अपना निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ पाते थे। कहा जाता है कि **'फ्रांस में जनता का 9/10 भाग भूख से और 1/10 भाग अधिक खाने से मरा।'**[2]

---

1 'The Revolution of 1789 was much less a rebellion against despotism, than a rebellion against inequality.' —*Madelin*

2 'In France nine-tenth of the population died of hunger and one-tenth of indigestion.'

यद्यपि रिशलू (Richelieu) ने सत्रहवीं सदी में नोबल्स की राजनीतिक शक्तियां समाप्त कर दी थीं, किन्तु इससे कुलीन वर्ग में साधारण वर्ग के लिए और भी घृणा उत्पन्न हो गई। **मैरियट** ने इस विषय में लिखा है, '1789 ई. **की क्रान्ति के लिए रिशलू बहुत अधिक उत्तरदायी था।'**[1]

मध्यम वर्ग के लोग भी फ्रांस के समाज के साधारण वर्ग में शामिल थे। इस श्रेणी के अन्तर्गत प्रोफेसर, वकील, साहूकार व व्यापारी, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट आदि थे। ये धनी भी थे और योग्य भी, तथा दुनिया के कई भागों में घूम चुके थे, अतः पुराने राज्य (Ancient Regime) के द्वारा दी गई नीची सामाजिक स्थिति (Inferior Status) को स्वीकार करने के लिए तैयार न थे। इसी वर्ग के लोग ही फ्रांस की ज़नता के द्वारा पुराने राज्य के विरुद्ध किए गए विद्रोह में उसके नेता बने।

(3) आर्थिक कारण
(ECONOMIC CAUSES)

फ्रांस की दयनीय आर्थिक अवस्था फ्रांस की क्रान्ति का प्रमुख कारण थी। कहा गया है कि फ्रांस की क्रान्ति को शीघ्र लाने का उत्तरदायित्व आर्थिक कारणों पर था और दार्शनिक विद्वान द्वारा तैयार किया गया बारूद आर्थिक कारणों के द्वारा भड़काया गया था। लुई चौदहवें के युद्धों ने देश की आर्थिक व्यवस्था को अत्यधिक शोचनीय बना दिया था। जिस समय उसकी मृत्यु हुई, उस समय देश की आर्थिक अवस्था अत्यन्त खराब थी। यद्यपि उसने लुई पन्द्रहवें को आर्थिक अवस्था सुधारने और युद्धों से बचने का परामर्श दिया था, किन्तु लुई पन्द्रहवें ने उसके परामर्श पर विशेष ध्यान न दिया, अपितु उसने बहुत से युद्धों में भाग लिया। राजमहल और प्रेमिकाओं पर भी बहुत रुपए नष्ट किया। जब लुई सोलहवां फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा तो उस समय फ्रांस का दिवाला निकलने वाला था, परन्तु फिर भी फ्रांस ने अमेरिका के स्वतन्त्रता संग्राम के युद्ध में भाग लिया। **इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अमेरिका के स्वतन्त्र युद्ध में भाग लेने से ही फ्रांस में वह आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ जो आगे चलकर फ्रांस की क्रान्ति का कारण बना।**

फ्रांस की अर्थ-व्यवस्था शोचनीय थी। कुलीन वर्ग के लोग और पादरी राज्य के कोष में कुछ भी योगदान नहीं देते थे। अतः आश्चर्य नहीं कि करों का सारा बोझ साधारण जनता पर पड़ता था। यह अपने में ही असन्तोष उत्पन्न करने का कारण था। राष्ट्रीय ऋण भी बहुत अधिक बढ़ गया था। सरकार की आय उसके द्वारा दी जाने वाली राष्ट्रीय ऋण के ब्याज की राशि से भी कम थी, अतः सरकार के लिए बजट को सन्तुलित रखना असम्भव ही था। एडम स्मिथ तथा आर्थर यंग ने फ्रांस को आर्थिक गलतियों का अजायबघर बताया।[2] यद्यपि तूर्जो (Turgot) जो *'No Bankruptcy, no increase in taxation, no more borrowing'* में विश्वास रखता था, ने फ्रांस को इस संकट से निकालने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया, किन्तु वह कुलीन वर्ग का सामना न कर सका। नेकर (Necker) ने भी आर्थिक संकट दूर करने की कोशिश की, किन्तु वह भी असफल रहा।

इस आर्थिक संकट को दूर करने के इरादे से लुई सोलहवें ने 1787 ई. में कुलीन वर्ग की एक सभा बुलाई। ऐसे आशा थी कि ये लोग विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग (Priviledged classes)

1 'Richelieu was largely responsible for the revolution of 1789.'
2 'A vertiable museum of economic errors.'

के लोगों पर कर लगाने के प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दे देंगे, परन्तु कुलीन वर्ग राजा पर यह कृपा करने के लिए तैयार न था। राजा ने और ऋण प्राप्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु पेरिस की संसद ने अन्य कर्ज और नए करों की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। इसने **अधिकारों का एक घोषणा-पत्र** (Declaration of Rights) तैयार किया और यह दावा किया कि धन की मांगें सांविधानिक दृष्टि से केवल **एस्टेट्स जनरल** (Estates General) के द्वारा ही स्वीकृत की जा सकती हैं। सरकार ने पेरिस की संसद के विरुद्ध कार्यवाही की और उसको समाप्त कर दिया। इससे जनता में अत्यधिक आक्रोश उत्पन्न हुआ और सैनिकों ने जजों को गिरफ्तार करने से इन्कार कर दिया। जनता ने एस्टेट्स जनरल के अधिवेशन की मांग की। इन परिस्थितियों में राजा को झुकना पड़ा और उसने 175 वर्षों (1614 ई.-1789 ई.) के बाद एस्टेट्स जनरल के निर्वाचनों के लिए आदेश जारी किए। **इस प्रकार फ्रांस की 1789 ई. की क्रान्ति प्रारम्भ हुई।**

(4) फ्रांस के दार्शनिक
(PHILOSOPHERS OF FRANCE)

पुनर्जागरण आन्दोलन ने फ्रांस में जागृति उत्पन्न कर दी थी। अनेक विद्वान तथा लेखक फ्रांस में जन्म ले चुके थे। इन विद्वानों का प्रभाव मध्यम वर्ग पर सर्वाधिक हुआ। यह वर्ग राजनीतिक में भाग लेने की तीव्र इच्छा रखता था, इस इच्छा को बढ़ाने में दार्शनिकों का विशेष हाथ था। चैट्यूब्रिआंड के अनुसार, **"भौतिक कठिनाइयों तथा बौद्धिक उफान के संयोग के कारण ही फ्रांस की क्रान्ति हुई।"**[1]

माण्टेस्क्यू, वल्टेयर और रूसो उस युग के तीन प्रमुख विद्वान थे। माण्टेस्क्यू एक प्रसिद्ध वकील था। वह अत्यन्त विद्वान और गम्भीर, पैनी बुद्धि वाला विद्यार्थी रहा था। उसकी लेखन-शैली अत्यन्त तीखी और प्रभावशाली थी। उनके लेख युक्तिसंगत, वैज्ञानिक और मध्यम मार्ग (Moderate in tone) के होते थे। उसने एक दार्शनिक आन्दोलन आरम्भ किया और समालोचना के व्यंग-बाण छोड़े जिन्होंने फ्रांस के **पुराने राज्य** (Ancient regime) की जड़ें हिला दीं। वह सांविधानिक शासन-पद्धति और कानून की सर्वोच्च सत्ता के पक्ष में था। माण्टेस्क्यू ने सरकार को चलाने वाले और नियमित करने वाले कानूनों और रीति-रिवाजों का विश्लेषण किया और इस प्रकार फ्रांस की पुरानी संस्थाओं के प्रति अन्धविश्वास को समाप्त किया।

वाल्टेयर ने गद्य, पद्य, इतिहास, नाटक, आदि सभी प्रकार की रचनाओं में प्राचीन रूढ़िवादियों, अन्धविश्वासों और कुप्रथाओं पर आक्रमण किया। वाल्टेयर दुर्लभ सर्वतोमुखी प्रतिभा, उसका तीक्ष्ण सामान्य ज्ञान, उसकी युक्तिप्रियता ने उसके देश के लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया। उसने इस दार्शनिक आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया। उसकी आलोचना का मुख्य केन्द्र फ्रांस का चर्च था। वह उसको एक कुत्सित संस्था मानता था। उसने ईसाइयों की धार्मिक कट्टरता और धर्महठता की समालोचना की। वह धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती था। उसका मानना था, **'क्योंकि हम सभी गलतियों और मूर्खताओं के शिकार हैं, इसलिए हमें आपस में एक-दूसरे की मूर्खताओं के लिए एक-दूसरे को क्षमा कर देना चाहिए।'** अपने साहित्यिक गुणों और विशेषताओं के कारण वाल्टेयर के लेख बहुत लोगों के द्वारा पढ़े गए और इसमें आश्चर्य नहीं कि उसने अपने युग में जनता को अत्यधिक प्रोत्साहित किया।

1 **'The French revolution sprang from a combination of intellectual ferment and material grievances.'** —*Chateaubriand*

फ्रांस के दार्शनिक विद्वानों में सबसे प्रभावपूर्ण **रूसो** था। उसने जनता के हाथों में राज्य की सर्वोच्च सत्ता होने (Sovereignty of the people) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति राज्य की सर्वोच्च सत्ता का अभिन्न अंग था। देश के कानून केवल मात्र सर्वोच्च सत्ता की सामान्य इच्छा (General will) की अभिव्यक्ति थे। चूंकि राज्य की सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है इसलिए कोई भी राज्य या सरकार उसे जनता से छीन नहीं सकती। जनता को सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार है। रूसो ने तत्कालीन सभी संस्थाओं की समालोचना की और उनकी नींवें हिला दीं। उसकी रचनाओं का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने जनता में स्वतन्त्र होने के लिए उत्साह उत्पन्न किया। रूसो की पुस्तक *'The Social Contract'* ने क्रन्ति की सामग्री प्रदान करने क्रान्ति की चिंगारी फूंकी। यह जैकोबिन पार्टी के लिए ईश्वर की आवाज बन गई और शैब्जबरी उस आवाज को जनता तक पहुंचाने के लिए धर्मोपदेशक (High priest) बन गया। लॉर्ड म.र्ले ने रूसो के प्रभाव का निम्न शब्दों में मूल्यांकन किया है, **"सबसे पहली बात तो यह है कि रूसो ने वे शब्द कहे जिनका प्रभाव कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता और उसने ऐसी आशा पैदा कर दी जिसको मिटाया नहीं जा सकता। पहले तो उसने अपने पवित्र और सच्चे दृढ़ विश्वास से लोगों को तत्कालीन स्थिति की बुराइयों के विरुद्ध भड़काया और मानवता के एक भारी भाग के लिए सभ्यता को तुच्छ सिद्ध कर दिया। फिर उसने अपनी तीक्ष्ण वक्तत्व शक्ति (Fluid eloquence) और दृढ़ विश्वास के गुणों से, जो उसने लोगों को भारी संख्या में भी पैदा कर दिए थे, फ्रांस में उस मृत्यु जैसी जड़ता और सुस्ती (Torpor) से जो कि उस (फ्रांस) पर शीघ्रता से काबू पा रही थी, जागने के लिए पर्याप्त शक्ति पैदा कर दी।"**

इस तीन दार्शनिक विद्वानों के साथ-साथ अन्य कई लेखकों ने जनता के सोचने के ढंग पर प्रभाव डाला। **दिड्रौट** (Diderot) एनसाइक्लोपीडिया का जिसमें बहुत-से लेखकों ने अपनी रचनाएं दी थीं सम्पादक था। वह अपने आपको अभिव्यक्ति करने में अत्यन्त जोशीला, तीक्ष्ण और विचार करने में अत्यन्त कल्पनाशील था। **हैल्वेटियस** (Helvetius) ने मनुष्य के विचारों और आचरण के स्वहित की भावना के द्वारा निश्चित किए जाने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। **हालबैक** (Holbach) ने राजाओं के दुर्गुणों और मनुष्यों की शोचनीय स्थिति की ओर संकेत किया। वह क्रान्ति का पक्षपाती था। उसके अनुसार, 'धार्मिक और राजनीतिक भूलों ने ब्रह्माण्ड को अश्रुओं के घर के रूप में परिणत कर लिया है।'

मैलेट (Mallet) के अनुसार, इन आश्चर्यजनक लेखकों के द्वारा बोए गए बीज उपजाऊ भूमि पर पड़े। मेडलिन के अनुसार, **'पहले से तैयार हथियारों को लोगों से चलवाने का काम दार्शनिकता ने किया।'**[1]

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त कारणों से क्रान्ति रूपी रेलगाड़ी को फ्रांस में बारूद से भरा गया और तीन घटनाओं ने उसमें चिंगारी उत्पन्न करने का कार्य किया—पहली घटना अमेरिका की बस्तियों का स्वतन्त्र होना, दूसरी, पेरिस की संसद द्वारा स्टेट्स जनरल की मांग, और तीसरी, 1788 ई.-89 ई. के जाड़ों में फ्रांस में भयंकर अकाल का पड़ना था।

1 "Philosophy had caused the weapons to drop from hands already over defined."
—*Madelin*

1789 ई. में क्रान्ति हो गई और राजा को बन्दी बना लिया गया। 1793 ई. में राजा तथा रानी को मौत के घाट उतार दिया गया। राजवंशीय व्यक्तियों तथा दरबारियों की हत्या कर दी गई तथा फ्रांस में प्रजातन्त्र की स्थापना की गई।

फ्रांस की क्रान्ति का प्रारम्भ होना
(THE OUTBREAK OF THE REVOLUTION)

फ्रांस की आर्थिक स्थिति लुई XVIवें के शासनकाल तक बहुत खराब हो चुकी थी। सरकार दिवालियेपन की स्थिति में पहुंच गई। अतः विवशतावश 1789 ई. में लुई सोहलवें ने स्टेट्स जनरल का अधिवेशन बुलाया। **स्टेट्स जनरल के तीन विभाग थे—(1) कुलीन वर्ग, (2) पादरी वर्ग, तथा (3) जनसाधारण वर्ग।** इन वर्गों के प्रतिनिधियों की संख्या प्रायः एक-समान थी जिसके कारण अधिवेशन में कुलीन तथा पादरी मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हितों की अवहेलना किया करते थे जिससे जनसाधारण में असन्तोष की वृद्धि होती थी, इसलिए नेकर ने राजा से मिलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों की संख्या दुगुनी कर दी, परन्तु यह निर्णय नहीं हो पाया कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित रूप से एक भवन में बैठकर विचार करेंगे तथा भिन्न-भिन्न भवनों में बैठेंगे। तीसरा सदन 90 प्रतिशत जनता का प्रतिनिधित्व करता था, यदि तीनों सदनों की एक साथ बैठक न होती और मतदान में एक व्यक्ति का मत न मानकर एक सदन का एक मत माना जाता तो तीसरे सदन की संख्या को दूना करने से कोई लाभ नहीं था।

स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन (Election of the members of States General)—1789 ई. में स्टेट्स जनरल के सदस्यों का चुनाव किया गया, इसके अन्तर्गत मत देने का अधिकार तृतीय श्रेणी के उन व्यक्तियों को भी दिया जिनकी अवस्था 25 वर्ष से अधिक थी तथा वे कोई प्रत्यक्ष कर देते थे। पेरिस में अनेक प्रतिबन्ध लगाकर निर्धनों को निर्वाचन से वंचित कर दिया गया। इस प्रकार तीनों वर्गों के प्रतिनिधियों का निर्वाचन हुआ। इन निर्वाचित सभाओं द्वारा स्टेट्स जनरल के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। इन सभी सभाओं ने सुधारों तथा शिकायतों का एक मसविदा भी तैयार किया, जिसे इतिहास में **काहिया** (Cahieys) के नाम से जाना जाता है।

स्टेट्स जनरल के निर्वाचन में मिराब्यू ने नेकर से प्रार्थना की थी कि उसको कुलीन वर्ग का प्रतिनिधि स्वीकार कर लिया जाए, परन्तु नेकर सहमत न हुआ। फलस्वरूप मिराब्यू थर्ड स्टेट्स की ओर से चुनाव के लिए खड़ा हुआ तथा एक्स (Aix) एवं मार्साई (Marseiss) नामक दो नगरों में निर्वाचित हुआ।[1]

स्टेट्स जनरल का अधिवेशन प्रारम्भ (Session of States General Starts)—5 मई, 1789 ई. को स्टेट्स जनरल की प्रथम बैठक वार्साय के विशाल भवन में हुई। इसके प्रतिनिधियों की संख्या 1200 के लगभग थी जिनमें से 600 से अधिक तीसरे सदन के सदस्य थे। सभा में निर्वाचन पुरानी पद्धति के अनुसार ही किया गया। तृतीय श्रेणी में अधिकांश व्यक्ति शिक्षित एवं मध्यम वर्ग के थे। कुछ विख्यात नेता भी इस वर्ग में थे; जैसे—मिराब्यू (Mirabeau),

---

1 मिराब्यू ने अपने निर्वाचन के सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक वाक्य कहा था—
"A mad dog ! That may be ! but elect me and despotism and privilege will die of my bite.'

सिए (Sieyes), राब्सपियर (Robespierre), जासेफ मुनिए (Jeseph Mounier), बारनाव (Barnava), विक्टर मालों (Victor Malouet), बाई (Bailly) तथा काम (Camus), आदि। उस समय इस वर्ग के प्रतिनिधियों की संख्या पहले से दुगुनी कर दिए जाने के कारण उनके उत्साह में भी वृद्धि हुई थी।

6 मई, 1789 को सर्वप्रथम वोट के प्रकार के सम्बन्ध में विवाद का आरम्भ हुआ। कुलीन एवं पादरी वर्ग चाहते थे कि **वोट भवन के अनुसार हो** (Vote by order), जबकि जनसाधारण के प्रतिनिधियों की मांग थी कि प्रत्येक **प्रतिनिधि के अनुसार वोट का आधार निश्चित हो** (Vote by head)। जनसाधारण के प्रतिनिधियों की मांग को मान लेने से सामन्तों तथा पादरियों के विशेषाधिकारों की समाप्ति हो जाती इसलिए वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। अधिवेशन में प्रथम दोनों वर्गों को अलग-अलग भवन दिए गए, किन्तु तृतीय श्रेणी को स्टेट्स जनरल का पुराना भवन दिया गया। इस प्रकार उपर्युक्त मतभेद के कारण कोई भी कार्य सुचारु रूप से चलना कठिन था। 12 जून, 1789 ई. को सिए ने प्रथम एवं द्वितीय वर्ग से जनसाधारण के वर्ग में अधिवेशन करने के लिए सम्मिलित हो जाने को कहा, लेकिन सामन्तों ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, फलतः तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों ने अकेले ही अधिवेशन करने का निर्णय लिया। इसी समय छोटे पादरी भी अपने नेता जैले (Jallet) के नेतृत्व में अपने वर्ग को छोड़कर जनसाधारण के वर्ग में प्रवेश करने लगे। **यह क्रान्ति का प्रथम चरण था।**[1] 17 जून को सिए के आग्रह पर तृतीय श्रेणी द्वारा एक प्रस्ताव पास करके अपने को **राष्ट्रीय सभा** (National Assembly) घोषित कर दिया गया। एक-दूसरे के प्रस्ताव के अनुसार राष्ट्रीय सभा ने प्रस्ताव पास किया कि राष्ट्रीय सभा की अनुमति के बिना भविष्य में कोई भी कर नहीं लगेगा। इन परिस्थितियों में भी राजा ने कोई कदम नहीं उठाया। 17 जून को पादरियों द्वारा एक प्रस्ताव पास करके तृतीय श्रेणी में मिलने का निर्णय लिया गया जिसके कारण तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों की स्थिति सुदृढ़ हो गयी। अब उसके सदस्य राष्ट्रहित में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए भी तैयार थे। मेरी आन्तनेत तथा काउण्ट आर्त्वा के आग्रह पर लुई सोलहवें द्वारा तीन श्रेणियों के सम्मिलित अधिवेशन में फिर से भाषण देने की घोषणा की लेकिन जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

टेनिस कोर्ट की शपथ (Oath of Tennis Court)—20 जून को राजा द्वारा तृतीय श्रेणी के प्रतिनिधियों के सभा भवन को बन्द करवा दिया गया और उनसे 23 जून को सम्पन्न होने वाले राजकीय समारोह तक अपना अधिवेशन स्थगित रखने को कहा गया, परन्तु 20 जून, 1789 ई. के प्रातः ही वे सभा भवन पहुंच गए वहां द्वार पर ताला मिलने एवं सुरक्षा के लिए पहरेदार तैनात होने के कारण वे समीप ही एक विशाल भवन में घुस गए जो टेनिस खेलने के काम आता था। वहां जनसाधारण के प्रतिनिधियों ने अपने अध्यक्ष बेयी को एक मेज पर खड़ा किया तथा मून्ये द्वारा प्रस्तावित ऐतिहासिक शपथ ग्रहण की जो इतिहास में **'टेनिस कोर्ट की शपथ'** के नाम से विख्यात है। यहां पर नेताओं ने घोषणा की कि वे यहां से तब तक नहीं हटेंगे जब तक कि देश के लिए एक संविधान का निर्माण न कर लें, वास्तव में यह घोषणा एक क्रान्तिकारी कदम थी।

1 "This was the first step of the Revolution." —*Madelin*

टेनिस कोर्ट की शपथ की घटना एक महान घटना थी। **डेविड टामसन** ने लिखा है कि, **इसने राजतन्त्रों की जड़ों को हिला दिया।**[1] इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि जनसाधारण के प्रतिनिधि अब राजा या उसके समर्थकों से भयभीत होने वाले नहीं हैं। इसी कारण **हेज** ने इस घटना के विषय में लिखा है—**"यह फ्रांस की क्रान्ति का वास्तविक प्रारम्भ था।"**[2]

संयुक्त अधिवेशन (Joint Session)—उपर्युक्त कार्यवाहियों से चिन्तित होकर राजा ने 23 जून को तीनों वर्गों का सम्मिलित अधिवेशन बुलाया। अपने भाषण के पश्चात् राजा ने घोषणा की कि तीनों वर्गों के प्रतिनिधि अपने-अपने भवनों में जाकर विचार-विमर्श करें, कुलीन एवं पादरी वर्ग उठकर चला गया, किन्तु साधारण वर्ग बैठा रहा, राजाज्ञा फिर दोहराई गई। मिराब्यू ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया, **"हम यहां राष्ट्र इच्छा से इकट्ठे हुए हैं, केवल ताकत ही हमें तितर-बितर कर सकती है।"**[3]

जनसाधारण की प्रथम विजय—आखिर विवश होकर राजा ने आदेश दिया कि कुलीन एवं पुरोहित वर्गीय सदन साधारण वर्ग के सदन के साथ सम्मिलित हो जाए तथा तीनों वर्गों का सम्मेलन एक साथ किया जाए, इस प्रकार राजा के हाथ से शक्ति निकलकर जनसाधारण के प्रतिनिधियों के हाथ में आ गई।

लुई सोलहवें द्वारा किए गए मूर्खतापूर्ण कार्यों के कारण विद्रोह—अभी भी क्रान्तिकारी राजा को पदच्युत नहीं करना चाहते थे, लेकिन राजा ने अपनी अयोग्यता के कारण क्रान्तिकारी नेतृत्व करने की जगह उनको दबाने का प्रयास किया। इस समय विदेशी सैनिकों की कुल संख्या 50 हजार थी। उसने जनता को भयभीत करने के लिए इन्हें पेरिस और वार्साय में तैनात करना शुरू किया। 11 जुलाई को वित्त मन्त्री नेकर को उसके पद से हटाकर वारों द ब्रेतोल (Baronc de Breluil) नामक व्यक्ति को नियुक्त किया। नेकर सुधारों का समर्थक था तथा जनता में बहुत लोकप्रिय था, इसलिए उसके पदच्युत होने से बहुत असन्तोष व्याप्त हुआ। विदेशी सैनिकों की उपस्थिति के कारण जले पर नमक छिड़कना साबित हुआ। 12 जुलाई को पेरिस में एक मीनार पर चढ़कर देमूले ने इस प्रकार के जोशीले भाषण देने प्रारम्भ किए—**"नेकर को पदच्युत कर दिया गया और शीघ्र ही राजा हमारे ऊपर आक्रमण करने की योजना बना रहा है, अतः हमको अपनी रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण करने चाहिए। यदि हम शीघ्र तैयार नहीं होंगे तो जर्मन तथा स्विस सेनाएं हमारा विनाश कर देंगी।"** देमूले का भाषण काफी प्रभावशाली रहा। लोग हथियार इकट्ठा करने लगे, शीघ्र ही 10 हजार की भीड़ इकट्ठी हो गई। इस समय तक सेना पर भी क्रान्ति का प्रभाव पड़ चुका था। अतः फ्रेंच गार्ड के असन्तुष्ट सैनिक भी इस भीड़ में सम्मिलित हो गए।

बास्तील का पतन (Fall of Bastile)—इस प्राचीन दुर्ग में यूरोप के समस्त प्रतिक्रियावादियों का गढ़ था। इसका अध्यक्ष दलाने (Delawney) था तथा इस समय इसमें केवल 7 बन्दी तथा 125 सैनिक थे। इस दुर्ग में हथियार प्राप्त करने के उद्देश्य से जनता ने 14 जुलाई को इस पर आक्रमण कर दिया क्योंकि उन्हें इतने हथियार नहीं मिल पाए थे जितना कि उनका लक्ष्य था। 5 घण्टे तक होने वाले भयंकर युद्ध में जनता के 200 प्रतिनिधि

---

1 डेविड टामसन, *यूरोप सिंस नेपोलियन*, पृ. 30.

2 "The oath of Tennis court was the true beginning of the french revolution."
—Hayes, *A Political and Social History of Modern Europe*, p. 473.

3 "We are assembled here by the national will, force alone shall disperse us."
—*Mirabeau*

मारे गए, घमासान लड़ाई के बाद भीड़ में बास्तील पर अधिकार कर लिया, उत्तेजित भीड़ ने दुर्गपाल तथा उसके सैनिकों के सिर काटकर भालों पर टांग लिए व किले की समस्त सामग्री लूट ली तथा बन्दियों को मुक्त कर दिया। इस घटना से जनता बहुत प्रसन्न हुई क्योंकि यह निरंकुश राजाओं पर जनता की शानदार विजय थी।

बास्तील के पतन का अत्यधिक राजनीतिक महत्व है, क्योंकि यह प्रजातन्त्र की निरंकुशता के ऊपर विजय थी। इस घटना से यूरोप के समस्त निरंकुश राजाओं के सिंहासन हिल गए। बास्तील के पतन का समाचार सुनकर सम्पूर्ण विश्व में प्रजातन्त्र के समर्थकों ने खुशियां मनाईं। लन्दन के चार्ल्स जेम्स फोर ने इसे विश्व इतिहास की महत्वपूर्ण घटना कहा। राजतन्त्रवादियों को यह समझते हुए देर न लगी कि अब शस्त्र द्वारा क्रान्ति का दमन नहीं किया जा सकता, इसलिए प्रतिक्रियावादियों का बेटा काउण्ट आर्त्वा (Count of Artois) फ्रांस छोड़कर भाग गया। बास्तील की घटना के महत्व के बारे में तत्कालीन अंग्रेज राजदूत डॉरसेट ने लिखा, **''इसी क्षण से हम फ्रांस को एक स्वतन्त्र देश व राजा को एक सीमित शक्तियों वाला नरेश मान सकते हैं तथा कुलीन वर्ग जैसे अपने दर्जे से गिरकर शेष राष्ट्र के साथ मिल गया है।''** प्रोफेसर गुडविन ने लिखा, **''शान्तिकाल में बास्तील के पतन जैसी बहुमुखी एवं दूरगामी परिणामों वाली अन्य कोई अकेली घटना नहीं हुई। दुर्ग का पतन केवल फ्रांस में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में स्वतन्त्रता की उत्पत्ति का परिचायक माना गया।''**

बास्तील के पतन का सम्राट पर प्रभाव—इस घटना से राजा भली-भांति समझ गया कि क्रान्ति को अब और अधिक नहीं दबाया जा सकता तथा क्रान्तिकारियों से मिल जाना ही हितकर है अतः उसने पेरिस तथा वार्साय से सेना की विदेशी टुकड़ियों को हटा दिया तथा नेकर को पुनः वापस बुला दिया। राजा स्वयं पेरिस गया तथा उसने स्थानीय शासन एवं रक्षा दल का समर्थन किया। उसने क्रान्ति के तिरंगे झण्डे को स्वीकार किया तथा क्रान्तिकारियों के कार्य की बहुत प्रशंसा की। मुसीबतों का अन्त हो गया है, परन्तु रानी तथा दरबारी राजा के इस कार्य से प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने क्रान्तिकारियों को शक्ति द्वारा कुचलने के लिए राजा पर दबाव डालना प्रारम्भ किया।

सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता का विद्रोह—14 जुलाई को बास्तील का पतन हुआ, अतः क्रान्तिकारी इसे अपनी स्वतन्त्रता की तिथि मानते थे। अब प्रत्येक प्रान्त में हत्याकाण्ड प्रारम्भ हो गए थे, ग्रामों में किसानों ने जमींदारों के मकानों, मठों तथा कागजों को जला दिया, उन्होंने बेगार करने से मना कर दिया तथा कर वसूल करने वालों को पीटा। बहुत-से जागीरदारों को मार डाला। इस घटना से भयभीत होकर अनेक जागीरदार नगरों में चले गए, कुछ विदेश भाग गए। इस परिस्थिति के सम्बन्ध में नेशनल असेम्बली के सभापति बाई (Bailly) ने कहा था, **''प्रत्येक मनुष्य आदेश देना जानता है, परन्तु कोई भी आज्ञापालन करना नहीं जानता।''**[1] इस अराजकता के विरोध में लाफायत ने त्याग-पत्र दे दिया लेकिन नेशनल असेम्बली के अन्य नेताओं के आग्रह करने पर उसने अपना त्याग-पत्र वापस ले लिया। सामन्ती व्यवस्था के विरुद्ध जनता द्वारा विद्रोह एवं हत्याकाण्ड किए जाने के फलस्वरूप सामन्तशाही प्रथा का अन्त हो गया।

पेरिस में स्थानीय शासन एवं राष्ट्रीय रक्षा दल स्थापित किया जाना—पेरिस में फैली अराजकता के कारण नगर में स्थानीय शासन (Commune) की स्थापना की गई। बाई

1 "Every body knew how to command and nobody knew how to obey."

(Bailly) को इस शासन का अध्यक्ष बनाया गया। इसके अतिरिक्त, शान्ति व्यवस्था कायम रखने के लिए तत्काल ही एक **राष्ट्रीय रक्षा दल** (National guard) की स्थापना की गई। लाफायत को इसका अध्यक्ष बनाया गया। इसकी सदस्य संख्या 200 से बढ़ाकर शीघ्र ही 48,000 हो गई। पेरिस के समान अन्य नगरों में भी राष्ट्रीय रक्षा दल एवं स्थानीय शासन स्थापित होने लगे। इस प्रकार फ्रांस से राजतन्त्र समाप्ति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे।

4 अगस्त की रात्रि का सत्र एवं विशेषाधिकारियों का अन्त—राष्ट्रीय सभा द्वारा कृषकों के इन कार्यों को नहीं रोका जा सकता इसलिए लाफायत के एक निर्धन साथी नोई[1] ने प्रत्येक वर्ग पर समान रूप से कर लगाने का प्रस्ताव रखा। नेशनल असेम्बली में यह प्रस्ताव बहुमत से पारित हो गया, दो बजे रात तक चलने वाले इस अधिवेशन में सामन्तों एवं पादरियों ने एक-एक कर खड़े होकर अपने विशेषाधिकारों को त्यागने की घोषणा की। इस प्रकार केवल 10 घण्टे के अन्दर फ्रांस में सामन्त प्रथा का अन्त हो गया। इस सम्बन्ध में एक डिप्टी ने कहा था, **"हमने कई महीनों का कार्य केवल 10 घण्टों में समाप्त कर दिया।"**[2] सामन्त प्रथा की समाप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्यों द्वारा सभा विसर्जित कर दी गई।

दरबार में पुनः कुचक्र—यद्यपि यह सारे प्रस्ताव पारित हो चुके थे, किन्तु इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी कि सामन्त वर्ग हमेशा इन प्रस्तावों के पक्ष में ही रहेगा। इधर दरबार में भी कुचक्र चल रहा था। रानी एवं दरबारीगण इन प्रस्तावों से सहमत नहीं थे, वे चाहते थे कि सेना के बल से राष्ट्रीय सभा को कुचल दिया जाए। इसलिए वे राजा को हमेशा इनके विरुद्ध भड़काते रहते थे। 1 अक्टूबर, 1790 ई. की रात्रि में वार्साय में एक शानदार दावत दी गई। जब यह समाचार पेरिस पहुंचा तो इससे वहां बहुत असन्तोष फैल गया। जनता के समक्ष यही सन्देह था कि राजा किसी प्रकार का षडयन्त्र रच रहा है। दूसरी बात यह थी कि पेरिस में अन्न की बहुत कमी थी। सेनाओं के आने से यह कमी और बढ़ जाती। मारा तथा दांते ने भी राजा के विरुद्ध जनता को भड़काया। क्रान्ति की आग को सुलगाने के लिए ये बातें पर्याप्त थीं।

पेरिस की स्त्रियों का वार्साय अभियान एवं राजा का पेरिस भागना—राजा तथा उसके दरबारियों द्वारा क्रान्ति के झण्डे को कुचलने का समाचार मिलने से जनता उत्तेजित हो उठी। बेकारी और रोटी की कमी से पेरिसवासी पहले ही उत्तेजित थे, इसी समय कुछ सैनिकों द्वारा सार्वजनिक रूप से घोषणा की गई कि वे राजा के साथ हैं तथा क्रान्ति के दमन में राजा का साथ देंगे। इस बात से विद्रोही बहुत आतंकित हो गए। इस बार स्त्रियों ने मोर्चा सम्भाला। 15 अक्टूबर को पेरिस की 8-10 हजार स्त्रियां इकट्ठी होकर **'हमें रोटी दो'** (We want bread) का नारा बुलन्द करते हुए राजा के सम्मुख प्रदर्शन करने के लिए वार्साय पहुंची। जुलूस के साथ बहुत-से क्रान्तिकारी भी सम्मिलित हो गए। 6 अक्टूबर को प्रातः भीड़ ने शाही महल के फाटक तोड़ दिए, कुछ रक्षकों को मार डाला तथा महल पर अपना अधिकार कर लिया। राजा एवं उसके परिवार को पेरिस लौटने के लिए मजबूर किया, लौटते समय जनसमूह प्रसन्न था तथा उनका कहना था—**"रोटी वाला, रोटी वाली और उनका पुत्र हमारे साथ है। अब हमें खाने की कमी नहीं रहेगी।"**[3] पेरिस में राज परिवार को **'ट्यूलरिज'** के पुराने महल में

1 Viscount of Noailles.
2 "In ten hours, we have done what might have gone on for months."
3 "We have the baker, the wife and the little cook boy. Now we shall have bread."

रखा गया। राज परिवार के साथ राष्ट्रीय सभा भी पेरिस आ गई। अब राजा पेरिस की भीड़ का बन्दी बनकर रह गया था, क्रान्ति का नेतृत्व करना उसके बूते से बाहर हो गया।

20 जून को गुप्त रूप से भेष बदलकर राजा, रानी एवं उनका पुत्र पेरिस से मेज की तरफ चल दिए, लेकिन वारेन (Vernnes) नामक स्थान में राजा को गिरफ्तार करके 25 जून को पुनः पेरिस वापस लाया गया।

राजा के भागने पर पेरिस में हुई प्रतिक्रिया—राजा के भाग जाने पर पेरिस की जनता ने उसे गद्दार कहा तथा उसे राजसिंहासन से हटाने की मांग की। अधिकांश जनता राजा को दण्डित किए जाने की मांग करने लगी, जिससे राजा की प्रतिष्ठा को धक्का लगा। लियोपोल्ड द्वितीय एवं अन्य यूरोपीय राजा अब यह समझने लगे थे कि युद्ध के बिना लुई सोलहवें का उद्धार नहीं हो सकता। जुलाई में राष्ट्रीय सभा ने राजा को दण्ड न देकर उसके सहायकों को दण्ड देने का निर्णय लिया लेकिन इस निर्णय के लागू होने से पूर्व ही राजा के सारे सहायक देश छोड़कर भाग गए।

जनतन्त्र की स्थापना की मांग हेतु जनता का प्रदर्शन (1791 ई.)—जनता ने जनतन्त्र की स्थापना की मांग को लेकर 17 जुलाई, 1791 ई. को एकत्र होकर एक विशाल प्रदर्शन किया। इसमें लगभग 6 हजार व्यक्ति एकत्रित हुए। लाफायत एवं उसके समर्थकों द्वारा इस सभा को भंग करने की आज्ञा दी गई लेकिन जनता वहां से नहीं हटी। फलतः गोली चलाने का आदेश दे दिया गया, जिसके फलस्वरूप 12 व्यक्ति मारे गए तथा अनेक घायल हुए। अतः प्रजातन्त्र के समर्थक दांते, मारा तथा देमूले, आदि फ्रांस छोड़कर भाग गए तथा प्रजातन्त्र समर्थक समाचार-पत्र भी बन्द हो गए। लाफायत के इस अनुचित कार्य में राष्ट्रीय विधानसभा की कटु आलोचना हुई, परन्तु राजा ने उसके कार्यों की प्रशंसा की। राजा ने नए संविधान का पालन करने की प्रतिज्ञा की, अतः राष्ट्रीय विधानसभा ने राजा को दण्ड से मुक्त कर दिया तथा देश छोड़कर बाहर जाने वाले कुलीनों को भी क्षमा कर दिया गया।

राष्ट्रीय संवैधानिक सभा
(NATIONAL CONSTITUENT ASSEMBLY)

जिस समय फ्रांस में क्रान्ति अपनी चरम सीमा पर थी उस समय देश में शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय संवैधानिक सभा ने महत्वपूर्ण कार्य किए। टेनिस की शपथ के अनुसार उसे एक संविधान बनाना था। **इस कार्य में बहुत कठिनाइयां थीं क्योंकि उसे राजतन्त्र के ऊपर प्रजातन्त्र स्थापित करना था।** कठोर परिश्रम एवं अनेक कठिनाइयों के उपरान्त इस सभा द्वारा एक संविधान का निर्माण किया गया तथा शासन में काफी सुधार हुए। यह सब कार्य राष्ट्रीय संवैधानिक सभा ने केवल दो वर्ष की अवधि (अक्टूबर, 1789 ई. से सितम्बर 1791 ई.) में सम्पन्न कर लिए। प्रारम्भिक वाद-विवाद के आधार पर राष्ट्रीय सभा में **दक्षिणमार्गी** एवं **वाममार्गी** दो वर्गों का उदय हुआ। दक्षिणमार्गी वर्ग के नेता एबी मारी (Abbe Maury), कैजलीज (Cazales), अबी द माण्टेस्क्यू (Abbe De Montesquieu), मालुए (Malouet), मिराब्यू (Mirabeau) थे तथा वाममार्गी नेता—लैली तालेन्दल (Lally Tollendal), तालीरॉ (Talleyrand), क्लेमां-तान (Clemnot Tonn) एवं राब्सपियर (Robespierre) प्रमुख थे।

संवैधानिक सभा के प्रारम्भिक काल में मिराब्यू द्वारा राजा एवं असेम्बली में समझौता कराने के प्रयत्न किए गए, किन्तु इन दोनों को मिराब्यू पर विश्वास नहीं था। उनका ख्याल था कि मिराब्यू का कार्य राजा का मन्त्री बनने के लिए कर रहा है। इसलिए असेम्बली ने यह

प्रस्ताव पास कर दिया कि उसका कोई भी सदस्य राजा का मन्त्री नहीं हो सकता, इस प्रस्ताव से मिराब्यू वहुत नाराज हुआ एवं स्वयं मन्त्रिमण्डल से बाहर हो गया। मिराब्यू के साथ-साथ लाफायत (Lafayette), तालीरॉ (Talleyrand) भी सदैव के लिए मन्त्रिमण्डल से बाहर हो गए।

राष्ट्रीय संवैधानिक सभा के कार्य

इस सभा द्वारा किए गए कार्यों का विवरण इस प्रकार है :

(1) **सामन्तवादिता का अन्त** (End of Feudalism)—4 अगस्त, 1789 ई. को होने वाले राष्ट्रीय सभा के अधिवेशन में सामन्तों तथा पादरियों ने अपने विशेषाधिकारों को त्याग दिया। गुडविन (Goodvin) का मानना है कि वास्तव में सामन्तों एवं पादरियों ने स्वेच्छा से अपने विशेषाधिकारों का त्याग नहीं किया था बल्कि भय के कारण उन्होंने ऐसा किया था।

4 अगस्त की रात्रि को निम्न प्रस्ताव पास किए गए :

(i) योग्यता के आधार पर सव मनुष्यों को राज्य के समस्त पद प्रदान किए जाएंगे।

(ii) चर्च का **दशांश** (Tithes) नामक कर समाप्त कर दिया गया तथा सामन्तों एवं पादरियों पर भी कर लगाए गए।

(iii) सभी व्यक्ति, एकमात्र फ्रांसीसी समझे जाएंगे कोई भी व्यक्ति समाज के किसी वर्ग के नाम से सम्वोधित नहीं होगा।

(iv) सामन्तों के विशेषाधिकार, शिकार करने, मछली पकड़ने तथा न्याय करने के अधिकार समाप्त कर दिए गए। इसके साथ ही नगरपालिकाओं, कारपोरेशन तथा प्रान्तों, आदि के विशेष अधिकार भी समाप्त कर दिए गए।

इस प्रकार 4 अगस्त को बने इस कानून से सामन्त प्रथा का अन्त हो गया यद्यपि बहुत-से प्रतिनिधियों द्वारा विशेषाधिकारों का समर्थन करने से इस प्रथा के अवशेष बने रहे।

(2) **मानव अधिकारों की घोषणा** (Declaration of Human rights)—27 अगस्त, 1789 ई. को राष्ट्रीय संवैधानिक सभा द्वारा रूसो के समझौते के सिद्धान्त के आधार पर मनुष्य के अधिकारों की घोषणा की गई जिसके अन्तर्गत प्रमुख निम्न बातें थीं :

(i) प्रत्येक मनुष्य को समानता का अधिकार प्राप्त है।

(ii) मुआवजा दिए विना किसी की सम्पत्ति का अपहरण नहीं किया जाएगा।

(iii) सभी मनुष्य अपनी योग्यता के अनुरूप सरकारी पद प्राप्त कर सकते हैं। सरकारी कर्मचारी समाज सेवा करना अपना प्रमुख कर्तव्य समझें।

(iv) धार्मिक स्वतन्त्रता के साथ-ही-साथ सबको लेखन , भाषण तथा प्रकाशन की स्वतन्त्रता प्रदान की गई।

(v) सबके लिए समान न्याय होगा। किसी को गैर-कानूनी ढंग से गिरफ्तार नहीं किया जा सकता, कानून को सामान्य इच्छा (General will) का प्रकाशन कहा गया था।[1]

घोषणा-पत्र का मूल्यांकन (Evaluation of the Declaration)—बहुत महत्वपूर्ण होते हुए भी इस घोषणा-पत्र में कुछ त्रुटियां रह गई थीं, जो इस प्रकार हैं :

(i) सर्वप्रथम त्रुटि यह थी कि अधिकारों की घोषणा के साथ कर्तव्य की घोषणा का कहीं उल्लेख नहीं था।

1 "Law was the espression of the general will."

(ii) व्यापार तथा व्यवसाय की स्वतन्त्रता का कोई उल्लेख नहीं था।

(iii) सार्वजनिक शिक्षा के बारे में कुछ नहीं कहा गया था।

(iv) नागरिकों को सम्पत्ति रखने का अधिकार सीमित मात्रा में दिया गया था। राज्य द्वारा किसी भी बहाने सम्पत्ति का अपहरण किया जा सकता था।

लेकिन इन अनेक त्रुटियों के होते हुए भी यह घोषणा-पत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण था। फ्रांस के लिए तो इसका वही महत्व है, जो **मेग्ना कार्टा** (Magna Carta) तथा **बिल ऑफ राइट्स** (Bill of Rights) का इंग्लैण्ड के लिए है और **स्वतन्त्रता की घोषणा** का अमेरिका के लिए है। हेजन का मत है कि, **"घोषणा-पत्र का समस्त संसार पर प्रभाव पड़ा है।"**[1]

(3) **चर्च की जागीरों एवं मठों का अन्त** (End of Monastries)—इस समय राज्य की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, फ्रांस की समस्त भूमि का 1/3 भाग चर्च के अधीन था। अतः तालीरॉ (Talleyarand) द्वारा 10 अक्टूबर, 1789 ई. को चर्च की जागीरें बेचने का प्रस्ताव रखा गया। मुआवजे के रूप में पादरियों को उनकी आय का 2/3 भाग नियत करना निश्चित किया गया। काफी विवाद के पश्चात् यह प्रस्ताव पास हो गया। इस प्रस्ताव के अनुसार चर्च की सम्पत्ति पर सरकार का अधिकार हो गया, बदले में पादरियों एवं निर्धनों को दान देने का उत्तरदायित्व सरकार का हो गया। फ्रांस में भिक्षुओं की संख्या बहुत अधिक होने से अनेक मठ थे। 6 फरवरी, 1791 ई. को संविधान सभा ने घोषणा की कि भविष्य में कोई भी भिक्षु, भिक्षुणी न बने तथा पुराने भिक्षु, भिक्षुणियां भी सांसारिक जीवन बिता सकते हैं। इससे कई संन्यासियों ने मठों को छोड़ दिया, इस प्रकार मठों का विनाश हो गया।

(4) **धार्मिक व्यवस्था बनाए रखने हेतु संविधान बनाना** (Constitution of Religious System)—जुलाई, 1790 ई. में राष्ट्रीय सभा द्वारा पादरियों के लिए कानून (Civil Constitution of the Clergy) पास किया गया। इसके अन्तर्गत निम्न निर्णय लिए गए :

(i) पादरियों एवं बिशपों का निर्वाचन जनता द्वारा होगा।

(ii) एक प्रान्त में केवल एक ही बिशप नियुक्त हो सकता था, इसलिए फ्रांस में 83 बिशपों की संख्या निश्चित की गई।

(iii) बिशप पोप के अधीन न रहकर राज्य के अधीन रहकर कार्य करेंगे तथा समस्त धार्मिक पदाधिकारियों को राज्य से वेतन दिया जाएगा।

(iv) नवम्बर, 1790 ई. में यह भी निर्णय लिया गया कि फ्रांस के कैथोलिक पादरियों को इस संविधान को ग्रहण करने की शपथ उठानी पड़ेगी।

पोप पायस छठा (Pious VI) पहले ही चर्च की सम्पत्ति के अपहरण एवं मठों के अन्त से बहुत क्रोधित था। शपथ उठाने के आदेश से उसके क्रोध में और अधिक वृद्धि हुई। उसने घोषणा की कि, **'कोई भी पादरी या बिशप शपथ ग्रहण न करे।'** शपथ लेने वालों को ईसाई समाज से बहिष्कृत कर दिया। असेम्बली द्वारा शपथ ग्रहण न करने वाले पादरियों को दण्डित किया गया। इस सम्बन्ध में **गर्शोय** का विचार है, **"क्रान्तिकारी विचारों को इससे अधिक हानि किसी अन्य घटना से नहीं हुई। इससे फ्रांस दो भागों में विभक्त हो गया।"**[2]

---

1 "It has been an indisputable factor in the political and social evolution of Modern world." —*Hazen*

2 "No other measure harmed the revolutionary cause so much. France was split into two." —*Gershoy*

इस घटना के पश्चात् पादरियों ने राज्य का विरोध करना आरम्भ कर दिया, वे क्रान्ति विरोधी हो गए। कई पादरियों ने देश से बाहर जाकर फ्रांस की क्रान्ति के शत्रुओं से सम्बन्ध स्थापित किए जो कि फ्रांस के लिए अहितकारी सिद्ध हुए। इस संविधान का एक यह प्रभाव अच्छा हुआ कि वे सब क्रान्ति के पक्षपाती हो गए जिन्हें राज्य से वेतन मिलने लगा तथा चर्च की अपहरण की हुई सम्पत्ति भी प्राप्त हुई।

(5) **नवीन संविधान का निर्माण** (New Constitution)—यह कार्य राष्ट्रीय असेम्बली का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। यह दो वर्ष के कठोर परिश्रम के पश्चात् 1791 ई. में तैयार हुआ था। उस समय तक यूरोप में ऐसा कोई लिखित संविधान नहीं था। इस संविधान की धाराओं को देखने से ज्ञात होता है कि **यह जनतन्त्रात्मक भावनाओं से प्रेरित होकर नहीं बनाया गया था कि बल्कि इसका निर्माण राजा के प्रति वैमनस्य से प्रेरित होकर हुआ था।**[1]

इस संविधान द्वारा निम्न व्यवस्था की गई थी :

(i) राजा के अधिकार सीमित कर दिए गए थे। उसे कर लगाने, सन्धि अथवा युद्ध करने का अधिकार न था। यद्यपि राजा प्रशासन का अध्यक्ष था लेकिन वह प्रशासन सम्बन्धी अधिकारियों की नियुक्ति नहीं कर सकता था। उनका निर्वाचन किया जाता था। राजा इन निर्वाचित पदाधिकारियों को पदच्युत भी नहीं कर सकता था। इस संविधान द्वारा राजा की स्थिति केवल नाममात्र की थी।

(ii) मन्त्रिगण सम्राट के प्रति उत्तरदायी नहीं होंगे अपितु राष्ट्रीय धारा सभा के प्रति उत्तरदायी होंगे।

इस संविधान हेतु एक भवन वाली व्यवस्थापिका सभा की व्यवस्था की गई। इसके सदस्यों की संख्या 750 थी तथा इसके सदस्यों का चुनाव केवल दो वर्ष के लिए होता था। सदस्यों का निर्वाचन परोक्ष रूप से होता था। व्यवस्थापिका सभा द्वारा नागरिकों को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया :

(अ) सक्रिय नागरिक व (ब) निष्क्रिय नागरिक। जो नागरिक कर देते थे, वे सक्रिय नागरिक कहलाए तथा उन्हें मताधिकार प्रदान किया गया। जो निर्धन एवं सम्पत्तिहीन वर्ग के व्यक्ति थे, वे निष्क्रिय नागरिक कहलाए उन्हें मत देने का अधिकार प्राप्त नहीं था।

यद्यपि मनुष्यों के अधिकारों की घोषणा में यह घोषित किया गया था कि सब मनुष्य समान हैं, किन्तु संविधान बनाते समय सिद्धान्त की हत्या कर दी गई। रूसो के सिद्धान्त के स्थान पर माण्टेस्क्यू के सिद्धान्त के अनुसार कार्य किया गया। निर्वाचन पद्धति की आलोचना करते हुए एक सदस्य ने कहा था, **"यदि आज रूसो जीवित होता तो फ्रांस की इस नवीन व्यवस्थापिका सभा का सदस्य नहीं हो सकता था।"**

इस व्यवस्था द्वारा न्यायाधीशों के पदों का क्रय-विक्रय समाप्त कर दिया गया। निर्वाचन पद्धति द्वारा न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रारम्भ की गई। न्याय निःशुल्क करने की व्यवस्था की गई तथा सभी को समान न्याय प्रदान करने की घोषणा की गई।

(6) **आर्थिक दशा सुधारने हेतु किए गए कार्य** (Works to improve Economic Condition)—देश की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु राष्ट्रीय सभा ने निम्न कार्य किए—(i) निर्धनों की सहायता करने के लिए असेम्बली ने 'चेरिटी वर्कशाप्स' की स्थापना की। (ii)

1 "They were more anxious to rule the king than to rule through him." —*Mirabeau*

पादरियों और सामन्तों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए थे, इससे वे अब किसानों से मनमाना कर वसूल नहीं कर सकते थे। (iii) किसानों पर केवल भूमि कर लगाया गया। नमक कर तथा अन्य अप्रत्यक्ष कर समाप्त कर दिए गए, व्यापार तथा उद्योग-धन्धों पर भी कर लगाए गए लेकिन अनाज का व्यापार कर-मुक्त था। स्थानीय चुंगियां तथा श्रेणियां समाप्त कर दी गईं। (iv) मजदूरों के प्रदर्शन तथा हड़ताल के अधिकार को अवैध घोषित कर दिया गया। (v) चर्च की सम्पत्ति का अपहरण किया जाना भी आर्थिक स्थिति सुधारने का एक प्रयत्न था।

राष्ट्रीय संवैधानिक सभा की त्रुटियां अथवा दोष
(DEFECTS IN THE NATIONAL CONSTITUENT ASSEMBLY)

यद्यपि इस सभा द्वारा बड़े परिश्रम के साथ संविधान का निर्माण किया गया तथा यह एक प्रगतिशील कदम था, **पर इसमें अनेक दोष थे :**

(1) नागरिकों के लिए घोषित अधिकारों में से बहुत-से अधिकार जनता को नहीं दिए गए थे।

(2) नागरिकों को सक्रिय एवं निष्क्रिय श्रेणियों में विभाजित करके निर्धन वर्ग को मताधिकार से वंचित कर दिया गया।

(3) व्यवस्थापिका व कार्यपालिका को पृथक् करने से वे एक-दूसरे की सहायक न रहकर विरोधी हो गईं।

(4) फ्रांस को 83 विभागों में तो बांट दिया लेकिन उनमें परस्पर सम्बन्ध की कोई योजना नहीं थी।

(5) पादरियों के लिए बनाए गए संविधान से धार्मिक कलह प्रारम्भ हो गया।

(6) असेम्बली द्वारा बहुत-से लोगों (Mob Rule) को प्रोत्साहन देना खतरनाक सिद्ध हुआ।

(7) विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त से स्थानीय शासन में शिथिलता आई।

(8) मध्यम श्रेणी के लोगों के हितों को अधिक प्रोत्साहन दिए जाने से कृषकों एवं मजदूरों को कोई लाभ नहीं हुआ। इस संविधान ने अपनी नीति तथा कार्यों द्वारा निर्धन, पादरी एवं सामन्त तीनों ही वर्गों को नाराज कर दिया।

(9) व्यवस्थापिका सभा के सदस्य दूसरी बार उसके सदस्य नहीं हो सकते थे जिससे प्रत्येक बार अनुभवहीन व्यक्ति उसके सदस्य बनते थे तथा व्यवस्थापिका सभा का कार्यकाल दो वर्ष ही था जो कि बहुत कम था। इतनी कम अवधि में कोई भी व्यवस्थापिका सभा अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाती थी।

राष्ट्रीय संवैधानिक सभा की समाप्ति
(END OF NATIONAL CONSTITUENT ASSEMBLY)

दो वर्ष के अपने कार्यकाल में इस सभा ने राष्ट्र के लिए एक विधान का निर्माण किया तथा 25,000 आदेश लागू किए। 21 सितम्बर को राजा ने नए संविधान को स्वीकार करके उसके अनुसार कार्य करने का वचन दिया। फलतः 30 सितम्बर, 1791 ई. को यह सभा विसर्जित कर दी गई। प्रसिद्ध इतिहासकार हेजन के अनुसार, **"अपने विसर्जन से पहले राष्ट्रीय सभा ने एक अन्तिम एवं अनावश्यक गलती कर दी। एक प्रस्ताव पास किया कि इस सभा का कोई भी सदस्य अपनी व्यवस्थापिका का सदस्य न हो सकेगा। इस प्रकार दो वर्ष के अनुभव को**

तिलांजलि देकर संविधान ऐसे लोगों के हाथ में सौंप दिया जिन्होंने उनकी रचना में कोई भाग नहीं लिया था। आत्म त्याग की यह भावना घातक सिद्ध हुई।''[1]

राष्ट्रीय सभा का मूल्यांकन
(EVALUATION OF THE NATIONAL ASSEMBLY)

राष्ट्रीय सभा के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि इनके सदस्यों को किसी प्रकार का अनुभव न होते हुए भी उन्होंने राष्ट्र के लिए एक विस्तृत विधान का निर्माण किया। कुछ मनुष्यों ने असेम्बली के कार्यों की निन्दा करते हुए कहा है कि उसने निर्माण की अपेक्षा विध्वंस अधिक किया था तथा दीर्घकालीन सभी व्यवस्थाओं का अन्त कर दिया लेकिन ये मत निराधार हैं। इस संविधान की महत्ता इस बात से प्रकट होती है कि इसने फ्रांस में बनने वाली आगामी सभी संविधानों को प्रभावित किया। इस सम्बन्ध में हेज का मत है, **''फ्रांस के तूफानी वातावरण में राष्ट्रीय संविधान सभा ने देश में शान्ति एवं सुव्यवस्था की स्थापना के लिए जो कार्य अल्पकाल में ही पूर्ण किए, उन्हें अन्य सभाएं वर्षों तक पूरा करने में सफल न हो पाई थीं।''**

फ्रांस की क्रान्ति के परिणाम
(EFFECTS OF THE FRENCH REVOLUTION)

फ्रांस की क्रान्ति एक युग परिवर्तनकारी घटना थी। इसकी उपलब्धियां एवं परिणामों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत प्रकट किए गए हैं। कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह एक जनतन्त्र-विरोधी, अप्रगतिशील तथा अराजकतावादी आन्दोलन था। इसके विपरीत अन्य लेखक व इतिहासकारों ने फ्रांस की क्रान्ति को आधुनिक इतिहास की महानतम् घटना बताया है। इतिहासकार हेजन के अनुसार, **''फ्रांस की क्रान्ति ने राज्य के सम्बन्ध में एक नई धारणा को जन्म दिया, राजनीतिक तथा समाज के विषय में नए सिद्धान्त प्रतिपादित किए, जीवन का एक नया दृष्टिकोण सामने रखा और एक नई आशा तथा विश्वास उत्पन्न किया। इन सबसे बहुसंख्यक जनता की कल्पना और विचार प्रज्ज्वलित हुए, उनमें एक अद्वितीय उत्साह का संचार हुआ तथा असीम आशाओं ने उन्हें अनुप्राणित किया।''** सामाजिक समानता, सामन्तीय विशेषाधिकारों का अन्त, निरंकुश तथा भ्रष्ट प्रशासन में सुधार, न्याय तथा करों में समानता इन्हीं उद्देश्यों को पाने के लिए क्रान्ति की शुरूआत हुई थी। इस क्रान्ति के क्या परिणाम हुए उनका अध्ययन निम्नवत् है :

(1) **सामन्तशाही का अन्त (End of Feudalism)**—फ्रांसीसी क्रान्ति की महत्वपूर्ण देन सामन्तीय व्यवस्था का अन्त करना था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत बहुत वर्षों तक सामान्य जनता का शोषण किया गया, आर्थिक शोषण तो इस व्यवस्था की चारित्रिक विशेषता थी। फ्रांस की क्रान्ति द्वारा विशेषाधिकारों का अन्त करके समानता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। इस क्रान्ति का अन्य देशों पर भी प्रभाव पड़ा कि यूरोप के अन्य देशों में भी धीरे-धीरे सामन्तशाही का अन्त हो गया।

(2) **धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना (Foundation of Secular State)**—इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोपीय देशों में धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव हुआ एवं लोगों को धार्मिक उपासना की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई एवं धर्म के सम्बन्ध में राजा का कोई हस्तक्षेप नहीं रहा।

1 सी. डी. हेजन, अनुवाद डॉ सत्यनारायण दुवे : **आधुनिक यूरोप का इतिहास**, पृष्ठ 73.

(3) **राजनीतिक स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीय बन्धुत्व की भावना का विकास** (Growth of Liberty, Equality and Fraternity)—क्रान्ति के समय क्रान्तिकारियों द्वारा इन्हीं तीन सिद्धान्तों के प्रसार को अपना ध्येय बनाया गया। क्रान्ति ने राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से प्रत्येक नागरिक को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता का अधिकार प्रदान किया। **स्वतन्त्रता** (Liberty), **समानता** (Equality) व **बन्धुत्व** (Fraternity) का प्रचार केवल फ्रांस में ही नहीं, अपितु समस्त यूरोप में किया गया।

(4) **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** (Growth of National Feeling)—इस क्रान्ति की एक महत्वपूर्ण देन नागरिकों के हृदय में अपने देश की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना था, जब विदेशी सेनाओं ने राजतन्त्र की सुरक्षा के लिए फ्रांस पर आक्रमण किया तो उस समय किसान, मजदूर एवं अन्य लोगों ने सेना में भर्ती होकर अत्यन्त वीरता के साथ विदेशी सेनाओं का सामना किया तथा विजय प्राप्त की। वह राष्ट्रीयता की भावना का ही एक ज्वलन्त उदाहरण है। राष्ट्रीयता की यह भावना यूरोप के अन्य देशों में भी व्याप्त होती गई। 1830 ई. तथा 1848 ई. की व्यापक क्रान्तियां तथा 1870-71 ई. में इटली व जर्मनी का एकीकरण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

(5) **लोकप्रिय सम्प्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन** (Principle of Democracy)—इस क्रान्ति के द्वारा राजनीतिक दृष्टि से राजाओं के **'दैवी अधिकार के सिद्धान्त'** का अन्त करके लोकप्रिय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया। कानून अब एक व्यक्ति अर्थात् राजा की इच्छा का परिणाम न होकर राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों की इच्छा का परिणाम था। वंशानुगत एवं भ्रष्ट न्यायाधीशों के स्थान पर अब निर्वाचित न्यायपालिका एवं जूरी पद्धति का प्रारम्भ हुआ। सर्वसाधारण द्वारा देश की राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा बंटाने से उनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ।

(6) **समाजवाद की स्थापना** (Growth of Socialism)—कुछ इतिहासकारों के अनुसार फ्रांस की क्रान्ति समाजवादी विचारधारा का स्रोत थी। राष्ट्रीय सभा ने मनुष्यों के आधारभूत सिद्धान्तों की घोषणा की, जिसमें प्रजातन्त्र का शिलान्यास किया गया। इस घोषणा में स्पष्ट रूप से कहा गया कि, **''सभी मनुष्य समान हैं तथा उन्नति का अवसर प्रत्येक को समान रूप से दिया जाना चाहिए'** रूसो के सिद्धान्त के अनुसार सब मनुष्य समान रूप से स्वतन्त्र जन्म लेते हैं, किन्तु सामाजिक बन्धन उनके जकड़ लेते हैं। उन बन्धनों को तोड़ने के लिए नेशनल असेम्बली ने अधिक परिश्रम किया, सभी के लिए एकसमान कानून तथा कर की व्यवस्था की गई। विशेषाधिकार युक्त वर्ग का अन्त करने के लिए 4 अगस्त, 1789 ई. को एक प्रस्ताव पास किया गया जिसके द्वारा कुलीन वर्ग का अन्त हो गया। अब कुलीन लोग भी साधारण वर्ग के समान ही थे तथा अब वे दरिद्र किसानों पर अत्याचार नहीं कर सकते थे। दास प्रथा का भी अन्त हो गया। जागीरदारों ने जनता के रुख को देखकर स्वयं ही अपने विशेषाधिकार त्याग दिए तथा फ्रांस से सामाजिक असमानता समाप्त हो गई।

(7) **शिक्षा एवं संस्कृति का विकास** (Growth of Education and Culture)—फ्रांस की क्रान्ति ने शिक्षा को चर्च के आधिपत्य से निकालकर उसे राष्ट्रीय, सार्वभौमिक तथा धर्मनिरपेक्ष बनाया साथ ही पुरातन-व्यवस्था के अन्धविश्वासों को नष्ट किया। यूरोपीय साहित्य में स्वच्छन्दतावादी आन्दोलन भी क्रान्ति का ही परिणाम था।

क्रान्ति के सम्बन्ध में लॉर्ड एल्टन का कथन है कि, **"सामाजिक समानता और व्यवस्था क्रान्ति के उद्देश्य थे, जो प्राप्त कर लिए गए। सैनिक गौरव तथा भूमि का कृषकों को हस्तान्तरण, क्रान्ति की अन्य उपलब्धियां थीं। आधुनिक फ्रांस की राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति की नींव भी क्रान्ति ने रखी।"**

क्रान्ति के स्थायी परिणाम (Permanent Results of the Revolution)—क्रान्ति के समय होने वाले भीषण रक्तपात एवं अव्यवस्था से जनता थक चुकी थी, अतः अब वह शासन सुदृढ़ हाथों में देखना चाहती थी। **इन परिस्थितियों ने नेपोलियन बोनापार्ट का मार्ग प्रशस्त कर दिया। कई वर्षों की क्रान्ति के पश्चात् नेपोलियन का एक डिक्टेटर के रूप में उदय हुआ।** नेपोलियन ने सही अर्थों में अपने को क्रान्ति का उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिखाया। यद्यपि उसके शासन में स्वतन्त्रता को स्थान नहीं था, किन्तु क्रान्ति की दो अन्य भावनाओं—समानता एवं बन्धुत्व का उसने पूर्णतया पालन किया। नेपोलियन ने इटली, जर्मनी, रूस, आस्ट्रिया व स्पेन, आदि देशों में भी इन भावनाओं को फैलाया। नेपोलियन के पतन के पश्चात् 1815 ई. में वियना की कांग्रेस में प्रतिक्रियावादी लोगों ने सन्धि करते समय इन भावनाओं का ख्याल नहीं रखा, फलतः सन्धि अस्थायी सिद्ध हुई। यूरोपवासी उस सन्धि को तोड़कर क्रान्तिकारी भावनाओं से प्रोत्साहित होकर अपने राष्ट्रों के निर्माण करने का प्रयत्न करने लगे। अन्त में सम्पूर्ण यूरोप में नवयुग का प्रारम्भ हुआ जिसका सम्पूर्ण श्रेय फ्रांस की क्रान्ति को दिया जा सकता है, क्योंकि सर्वप्रथम इसी के द्वारा नवयुगीन गणतन्त्रात्मक भावनाओं का विकास हुआ।

प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लुई पन्द्रहवें के शासनकाल का विवरण प्रस्तुत कीजिए।
2. लुई षोडश के शासनकाल का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए।
3. फ्रांस की 1789 ई. की क्रान्ति के पूर्व स्थिति की समीक्षा कीजिए।
4. फ्रांस की राज्य क्रान्ति (1789 ई.) के कारणों पर प्रकाश डालिए।
5. क्रान्ति (1789 ई.) के समय फ्रांस की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का परीक्षण कीजिए।
6. फ्रांस की क्रान्ति 1789 ई. में दार्शनिकों के योगदान का वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आर्लेआं के ड्यूक की गृह नीति पर प्रकाश डालिए।
2. कार्डिनेल फ्लेरी के संरक्षण काल की प्रमुख विशेषताएं बताइए।
3. 1789 में फ्रांस की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।
4. लुई XVI की आन्तरिक समस्याएं क्या थीं?
5. 1789 ई. में फ्रांस की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालिए।
6. 'दिदरो' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. 'माण्टेस्क्यू' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
8. 'वाल्टेयर' पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
9. 'रूसो' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
10. फ्रांसीसी क्रांति के स्थायी परिणामों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लुई पन्द्रहवें का शासनकाल क्या था?
2. लुई पन्द्रहवें के शासनकाल में 1715 ई. से 1723 ई. तक शासन की वास्तविक सत्ता किसके हाथ में रही?
3. लुई पन्द्रहवें के शासनकाल में 1723 ई. से 1743 ई. तक शासन की वास्तविक सत्ता किसके हाथ में रही?
4. लुई सोलहवां फ्रांस की राजगद्दी पर कब आसीन हुआ?
5. "चूंकि मैं चाहता हूं, इसलिए यह कानूनी है" यह कथन किसका था?
6. फ्रांसीसी क्रान्ति के समय के तीन प्रमुख दार्शनिकों के नाम लिखिए।
7. बास्तील का पतन कब हुआ था?
8. फ्रांसीसी क्रांति के समय फ्रांस का शासक कौन था?
9. 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी समाज मुख्यतः कौन-कौन से भागों में विभाजित था?
10. प्रथम द्वितीय तथा तृतीय एस्टेट में कौन-कौन से वर्ग आते थे?

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लुई पन्द्रहवें का शासनकाल था :
   (क) 1715 ई. से 1774 ई. तक (ख) 1717 ई. से 1776 ई. तक
   (ग) 1720 ई. से 1780 ई. तक (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
2. 'मेरे पश्चात् प्रलय होगा'—यह शब्द किसके थे?
   (क) लुई पंचदश के (ख) लुई षोडश के
   (ग) चार्ल्स द्वितीय के (घ) नेकर के
3. फ्रांस की 1789 ई. की क्रान्ति का आरम्भ था :
   (क) 30 जून, 1789 को टेनिस कोर्ट की शपथ
   (ख) 28 जून, 1789 को प्रथम व द्वितीय सदनों द्वारा तृतीय सदन को समर्थन
   (ग) राब्सपियरे द्वारा 27 जून, 1789 को क्रान्ति की विधिवत घोषणा
   (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
4. लेत्रे दे शाशे (Lettre de Chachet) से तात्पर्य था :
   (क) प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा बिना किसी पूर्व सूचना के किसी भी व्यक्ति को इस पत्र को दिखाकर गिरफ्तार कर सकने का अधिकार था
   (ख) सामन्त वर्ग का पादरी वर्ग के विरोध के लिए प्रमाण-पत्र
   (ग) कृषक वर्ग से लिया जाने वाला कर
   (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
5. फ्रांस की राज्य क्रान्ति 1789 ई. का नारा था :
   (क) स्वतन्त्रता, भ्रातृत्व एवं समानता (ख) स्वतन्त्रता, अधिकार एवं कर्तव्य
   (ग) स्वतन्त्रता, समानता एवं अधिकार (घ) उपरोक्त में कोई नहीं
6. निम्नलिखित में से किसे क्रान्ति का मसीहा कहा जाता है?
   (क) रूसो (ख) वाल्टेयर (ग) दिदरो (घ) माण्टेस्क्यू
7. निम्नलिखित में किस इतिहासकार ने लुई सोलहवें के शासनकाल को 'The Era of Repentant Monarchy' कहा है?
   (क) एक्टन (ख) हेज (ग) मैरियट (घ) फिशर

[उत्तर : 1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 5. (क) 6. (क) 7. (क)]

परिशिष्ट 1

यूरोपीय राष्ट्रों के प्रमुख शासक

[PROMINENT RULERS OF THE EUROPEAN COUNTRIES]

इंग्लैण्ड (England)

ट्यूडर वंश की स्थापना से पूर्व इंग्लैण्ड के शासक (The Rulers of England before the Tudors)

हेनरी VI (Henry VI)	1422-1461 ई.
एडवर्ड IV (Edward IV)	1461-1483 ई.
रिचर्ड III (Richard III)	1484-1485 ई.

ट्यूडर वंश (Tudor Dynasty)

हेनरी VII (Henry VII)	1485-1509 ई.
हेनरी VIII (Henry VIII)	1509-1547 ई.
एडवर्ड VI (Edward VI)	1547-1553 ई.
मेरी I (Marry I)	1553-1558 ई.
एलिजावेथ I (Elizabeth I)	1558-1603 ई.

स्टुअर्ट वंश (Stuart Dynasty)

जेम्स I (James I)	1603-1625 ई.
चार्ल्स I (Charles I)	1625-1649 ई.
चार्ल्स II (Charles II)	1660-1685 ई.
जेम्स II (James II)	1685-1688 ई.
विलियम III (William III)	1689-1702 ई.
मेरी II (Mary II)	1689-1694 ई.
ऐन (Anne)	1702-1714 ई.

हेनोवर वंश (Hanover Dynasty)

जार्ज I (George I)	1714-1727 ई.
जार्ज II (George II)	1727-1760 ई.
जार्ज III (George III)	1760-1820 ई.

स्कॉटलैण्ड (Scotland)

ज़ेम्स II (James II)	1437-1460 ई.
जेम्स III (James III)	1460-1488 ई.
जेम्स IV (James IV)	1488-1513 ई.
जेम्स V (James V)	1513-1542 ई.
मेरी (Mary)	1542-1567 ई.
जेम्स VI (James VI)	1567-1603 ई.

फ्रांस (France)

चार्ल्स VII (Charles VII)	1422-1461 ई.
लुई XI (Louis XI)	1461-1483 ई.
चार्ल्स VIII (Charles VIII)	1483-1498 ई.
लुई XII (Louis XII)	1498-1515 ई.
फ्रांसिस I (Francis I)	1515-1547 ई.
हेनरी II (Henry II)	1547-1559 ई.
फ्रांसिस II (Francis II)	1559-1560 ई.
चार्ल्स IX (Charles IX)	1560-1574 ई.
हेनरी III (Henry III)	1574-1589 ई.
हेनरी IV (Henry IV)	1589-1610 ई.
लुई XIII (Louis XIII)	1610-1643 ई.
लुई XIV (Louis XIV)	1643-1715 ई.
लुई XV (Louis XV)	1715-1774 ई.
लुई XVI (Louis XVI)	1774-1793 ई.

स्पेन (Spain)

	1479-1516 ई.
फर्डिनेण्ड (Ferdinand of Aragon)	1474-1504 ई.
ईसाबेला (Isabella of Castile)	1516-1556 ई.
चार्ल्स V (Charles V)	1556-1598 ई.
फिलिप II (Philip II)	1598-1621 ई.
फिलिप III (Philip III)	1621-1665 ई.
फिलिप IV (Philip IV)	1665-1700 ई.
चार्ल्स II (Charles II)	1708-1746 ई.
फिलिप V (Philip V)	

रूस (Russia)

	1533-1584 ई.
ईवान IV (Ivan IV)	1613-1645 ई.
माइकेल (Michael)	1645-1676 ई.
अलेक्सिस (Alexis)	1676-1682 ई.
थियोडोर (Theodor)	1682-1689 ई.
इवान V (Ivan V)	

पीटर I (Peter I)	1689-1725 ई.
कैथरीन I (Catherine I)	1725-1727 ई.
पीटर II (Peter II)	1727-1730 ई.
ऐन (Anne)	1730-1740 ई.
इवान VI (Ivan VI)	1740-1741 ई.
एलिजाबेथ (Elizabeth)	1741-1762 ई.
कैथराइन II (Catherine II)	1762-1796 ई.

हेप्सबर्ग सम्राट (Hapsburg Emperors)

फ्रेडरिक III (Frederick III)	1440-1493 ई.
मैक्सिमिलियन I (Maximilian I)	1493-1519 ई.
चार्ल्स V (Charles V)	1519-1556 ई.
फर्डिनेण्ड I (Ferdinand I)	1556-1564 ई.
मैक्सिमिलियन II (Maximilian II)	1564-1576 ई.
रुडोल्फ II (Rudolf II)	1576-1612 ई.
मैथियास (Matthias)	1612-1619 ई.
फर्डिनेण्ड II (Ferdinand II)	1619-1637 ई.
फर्डिनेण्ड III (Ferdinand III)	1637-1657 ई.
लिओपोल्ड I (Leopold I)	1658-1705 ई.

आस्ट्रिया (Austria)

लिओपोल्ड I (Leopold I)	1658-1705 ई.
जोसेफ I (Joseph I)	1705-1711 ई.
चार्ल्स II (Charles II)	1711-1740 ई.
मेरिजा थिरिजा (Maria Theresa)	1740-1780 ई.
जोसेफ II (Joseph II)	1780-1790 ई.

प्रशा (Prussia)

फ्रेडरिक विलियम (Frederick William)	1640-1688 ई.
फ्रेडरिक III (Frederick III)	1688-1713 ई.
फ्रेडरिक विलियम I (Frederick William I)	1713-1740 ई.
फ्रेडरिक II (Frederick II)	1740-1786 ई.
फ्रेडरिक विलियम II (Frederick William II)	1786-1797 ई.

पेपेसी (Papacy)

एलेक्जेण्डर VII (Alexander VII)	1655-1667 ई.
क्लीमेण्ट IX (Clement IX)	1667-1669 ई.
क्लीमेण्ट X (Clement X)	1670-1676 ई.
इन्नोसेण्ट XI (Innocent XI)	1676-1689 ई.
एलेक्जेण्डर VIII (Alexander VIII)	1689-1691 ई.
इन्नोसेण्ट XII (Innocent XII)	1691-1700 ई.

क्लीमेण्ट XI (Clement XI)	1700-1721 ई.
इन्नोसेन्ट XIII (Innocent XIII)	1721-1724 ई.
बेनेडिक्ट XIII (Benedict XIII)	1724-1730 ई.
क्लीमेण्ट XII (Clement XII)	1730-1740 ई.
बेनेडिक्ट XIV (Benedict XIV)	1740-1758 ई.
क्लीमेण्ट XIII (Clement XIII)	1758-1769 ई.
क्लीमेण्ट XIV (Clement XIV)	1769-1774 ई.
पायस VI (Pius VI)	1775-1799 ई.

परिशिष्ट 2

विश्व के प्रमुख युद्ध, लड़ाइयां, सन्धियां व समझौते

[IMPORTANT WARS, BATTLES, TREATIES, ALLIANCES IN WORLD]

शैटिलान की लड़ाई (Battle of Chatillon)	1453 ई.
सौवर्षीय युद्ध की समाप्ति (Hundred Years War Ends)	1453 ई.
गुलाब के फूलों का युद्ध (War of Roses)	1455 ई.
बोसवर्थ की लड़ाई (Battle of Bosworth)	1485 ई.
इटेपिल्स की सन्धि (Treaty of Etaples)	1492 ई.
स्पर्स की लड़ाई (Battle of Spurs)	1513 ई.
पिंकी की लड़ाई (Battle of Pinkie)	1547 ई.
एडिनबर्ग की सन्धि (Treaty of Edinburgh)	1561 ई.
फ्रांस में धार्मिक युद्ध (Wars of Religion begins)	1562 ई.
तीसवर्षीय युद्ध (Thirty-years War)	1618-1648 ई.
एजहिल की लड़ाई (Battle of Edgehill)	1642 ई.
वेस्टफेलिया की सन्धि (Treaty of Westphalia)	1648 ई.
डावर की सन्धि (Treaty of Dover)	1670 ई.
तृतीय डच युद्ध (Third Dutch War)	1672 ई.
निमवेगेन की सन्धि (Treaty of Nimwegen)	1678 ई.
अंग्रेजी उत्तराधिकार (War of English Succession) अथवा Or लीग ऑफ आगसबर्ग का युद्ध (War of League of Augsburg)	1689-1697 ई.
बोयेन की लड़ाई (Battle of Boyne)	1690 ई.
रिजविक की सन्धि (Peace of Ryswick)	1697 ई.
स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध (War of Spanish Succession)	1702-1713 ई.
रेमिलीज की लड़ाई (Battle of Ramillies)	1706 ई.
यूट्रैक्ट की सन्धि (Treaty of Utrecht)	1713 ई.
केप पेसारो की लड़ाई (Battle of Cape Passaro)	1718 ई.
पोलैण्ड के उत्तराधिकार का युद्ध (War of Polish Succession)	1733-1736 ई.

आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध (War of Austrian Succession) 1739-1748 ई.
जेनकिन्स के कान का युद्ध (Jenkin's Ear War) 1740 ई.
डेटिन्जेन की लड़ाई (Battle of Dettingen) 1743 ई.
एक्स-ला-शापेल की सन्धि (Peace of Aix-la-Chapelle) 1748 ई.
सप्तवर्षीय युद्ध (Seven-years War) 1756-1763 ई.
लेक्सिंगटन तथा बंकर्स हिल की लड़ाइयां (Battle of Lexington & Bxnker's Hill) 1775 ई.
वार्साय की सन्धि (Treaty of Versailles) 1783 ई.
फ्रांस की क्रान्ति/बास्तील का पतन (French Revolution/Fall of Bastille) 1789 ई.

परिशिष्ट 3

विश्व के इतिहास की प्रमुख तिथियां

[IMPORTANT DATES OF WORLD HISTORY]

1453 ई.	कुस्तुन्तुनियां पर तुर्कों का अधिकार, आधुनिक युग का श्रीगणेश, सौवर्षीयं युद्ध समाप्त, पुनर्जागरण प्रारम्भ।
1455 ई.	गुलाब के फूलों का युद्ध, (इंग्लैण्ड में) प्रारम्भ।
1461 ई.	इंग्लैण्ड में एडवर्ड IV सिंहासनारूढ़।
1483 ई.	रिचर्ड III (इंग्लैण्ड) शासक घोषित, मार्टिन लूथर का जन्म।
1485 ई.	ट्यूडर वंश की स्थापना, हेनरी VII सिंहासनारूढ़।
1492 ई.	कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज।
1494 ई.	फ्रांस द्वारा इटली पर विजय।
1498 ई.	वास्कोडिगामा द्वारा भारत की खोज।
1509 ई.	इंग्लैण्ड में हेनरी VIII शासक बना।
1511 ई.	होली लीग।
1516 ई.	चार्ल्स V स्पेन का शासक बना।
1517 ई.	धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ।
1519 ई.	सम्राट मैक्सिमिलियन की मृत्यु।
1524 ई.	जर्मनी में कृषकों द्वारा विद्रोह।
1529 ई.	फ्रांस व स्पेन में काम्ब्राई (Cambrai) की सन्धि।
1546 ई.	लूथर की मृत्यु।
1547 ई.	इंग्लैण्ड में एडवर्ड VI सिंहासनारूढ़।
1553 ई.	इंग्लैण्ड में मेरी ट्यूडर शासिका बनी।
1556 ई.	चार्ल्स V द्वारा पद-त्याग।
1658 ई.	इंग्लैण्ड में एलिजावेथ I शासिका बनी।
1560 ई.	हेनरी II की मृत्यु।
1564 ई.	शेक्सपियर का जन्म।
1577-81 ई.	ड्रेक द्वारा विश्व का जहाज द्वारा भ्रमण।
1580 ई.	स्पेन द्वारा पुर्तगाल पर विजय।
1588 ई.	स्पेनिश आर्मडा की घटना।
1589 ई.	हेनरी ऑफ नावारे फ्रांस का शासक बना।

1598 ई.	फिलिप II की मृत्यु।
1600 ई.	ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना।
1603 ई.	एलिजाबेथ प्रथम की मृत्यु, इंग्लैण्ड में जेम्स I द्वारा स्टुअर्टवंशीय शासन की स्थापना।
1610 ई.	फ्रांस में हेनरी IV की हत्या व लुई XIII शासक।
1616 ई.	शेक्सपियर की मृत्यु।
1618-48 ई.	तीसवर्षीय युद्ध।
1625 ई.	इंग्लैण्ड में चार्ल्स I शासक बना।
1642-49 ई.	इंग्लैंण्ड में गृह-युद्ध।
1643 ई.	लुई XIV फ्रांस का शासक बना।
1648 ई.	वेस्टफेलिया की सन्धि।
1649 ई.	इंग्लैण्ड के शासक चार्ल्स I को मृत्यु-दण्ड।
1649-59 ई.	इंग्लैण्ड में कामनवेल्थ व प्रोटेक्टोरेट।
1660 ई.	इंग्लैण्ड में राजतन्त्र की पुनर्स्थापना, चार्ल्स II शासक।
1683 ई.	कोलबर्ट की मृत्यु।
1685 ई.	इंग्लैण्ड में जेम्स II शासक।
1688 ई.	लुई XIV द्वारा जर्मनी पर विजय, इंग्लैण्ड में गौरवपूर्ण क्रान्ति।
1689 ई.	पीटर महान् शासक बना।
1697 ई.	रिजविक (Rsywick) की सन्धि।
1700 ई.	स्पेन के चार्ल्स II की मृत्यु।
1701 ई.	प्रशा राज्य बना, फ्रेडरिक I शासक।
1702-13 ई.	स्पेन में उत्तराधिकार का युद्ध।
1711 ई.	चार्ल्स VI सम्राट बना।
1713 ई.	यूट्रेक्ट (Utrecht) की सन्धि।
1714 ई.	इंग्लैण्ड में हेनोवर वंश की स्थापना, जार्ज I शासक।
1715 ई.	लुई XV का राज्याभिषेक।
1718 ई.	स्वीडन के चार्ल्स XII की मृत्यु।
1721 ई.	इंग्लैण्ड में कैबिनेट प्रणाली की स्थापना, वालपोल प्रथम प्रधानमन्त्री।
1725 ई.	पीटर महान् की मृत्यु।
1727 ई.	जार्ज II इंग्लैण्ड का शासक, स्पेन द्वारा जिब्राल्टर पर आक्रमण।
1739-48 ई.	आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध।
1740 ई.	आस्ट्रिया में मेरिया थिरिजा व प्रशा में फ्रेडरिक महान् का सिंहासनारोहण।
1748 ई.	एक्स-ला-शापेल की सन्धि।
1756-63 ई.	सप्तवर्षीय युद्ध।
1760 ई.	इंग्लैण्ड में जार्ज III शासक बना।
1762 ई.	रूस में कैथराइन II द्वारा पद-त्याग।

1772 ई.	पोलैण्ड का प्रथम विभाजन।
1773 ई.	**बोस्टन टी पार्टी।**
1774 ई.	लुई XVI का राज्याभिषेक।
1776 ई.	**अमरीका का स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ।**
1780 ई.	मेरिया थिरिजा की मृत्यु।
1783 ई.	**अमरीका का स्वतन्त्र होना।**
1786 ई.	फ्रेडरिक महान् की मृत्यु।
1789 ई.	**फ्रांस की क्रान्ति प्रारम्भ**, बास्तील का पतन, टेनिस कोर्ट की शपथ, मानव अधिकारों की घोषणा, वाशिंगटन अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति बने।

